CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५२२७
नवनीत - हिन्दी
डाइजेस्ट।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक....२५३८

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्र. २५३८
दिनांक ... ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

सितम्बर
१९७४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मूल्य
रु.२-५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुपम विचार रूई के साथ ही जन्म लेते हैं

डिगाइन

शानदार...जानदार...सदाबहार...
मगर स्वाभाविक जैसे सिर्फ़ सूती कपड़े

सेन्चुरी
१००% सूती कपड़ों के लिए

दि सेन्चुरी रिप. एण्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड, बम्बई-४०० ०२५

Adroit-CM-533 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

OBM-1683 HIN

किताब जुड़ गई...मुन्ना ख़ुश!
किस सफ़ाई से हुआ ये काम—फ़ेविकोल से!
देखा आपने फ़ेविकोल का कमाल!

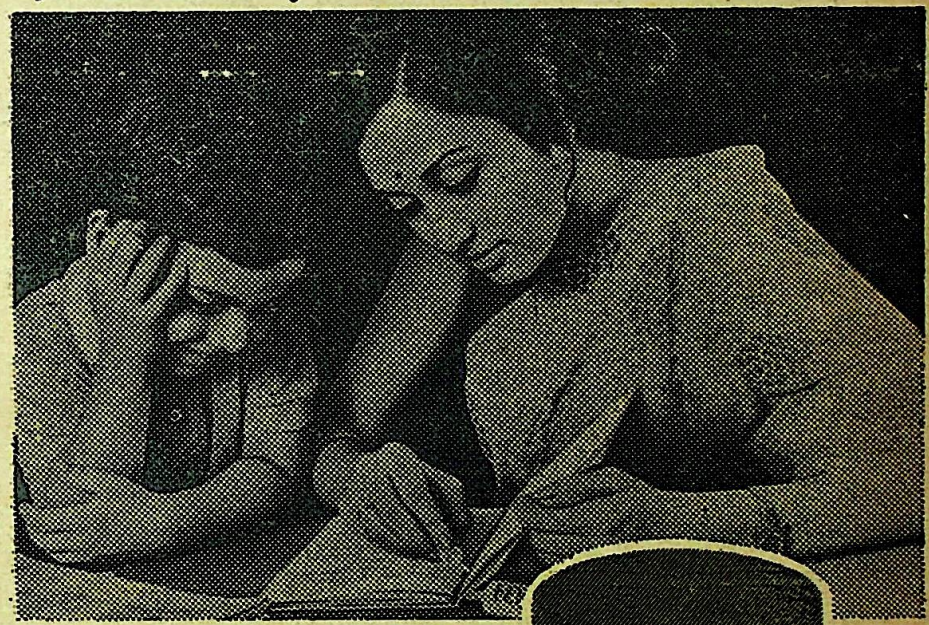

लगभग सभी जिल्दसाज़ फ़ेविकोल इस्तेमाल करते हैं। आप भी घरेलू इस्तेमाल के लिए फ़ेविकोल ला रखिए—ट्यूब या छोटा प्लास्टिक जार! पता नहीं कब ज़रूरत पड़ जाए।

कागज़ हो थर्मोकोल। लकड़ी हो या दूसरी कोई भी सतह। मतलब ये कि फ़ेविकोल सिन्थेटिक रेज़िन एड्हॅसिव सभी तरह की सतहों को जल्द और मज़बूत जोड़ता है... और हर बार, साफ़ और बढ़िया काम!

चिपकाने और जोड़ने के लिए सर्वोत्तम

फ़ेविकोल®

कारीगरों का कारगर एड्हॅसिव!

वितरक: पारेख एजेन्सीज़, पोस्ट-बॉक्स नं. ११०८४, बम्बई ४०० ०२०
अहमदाबाद • कलकत्ता • दिल्ली • मद्रास • कानपुर
निर्माता: पिडिलाइट इण्डस्ट्रीज़ प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई ४०० ०२०

फ़ेविकोल का ट्यूब या प्लास्टिक का डब्बा घर और ऑफ़िस में ज़रूर रखिए!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

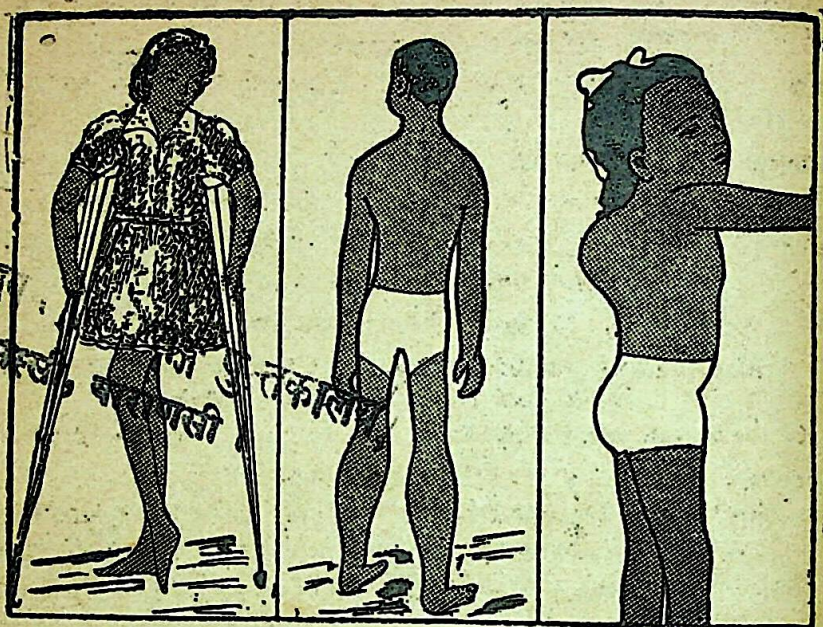

1. Polio (पोलियो) 2. Paralysis (निष्क्रिय अंग)
3. Muscular Dyslrophy (मांसपेशी दुर्बलता) 4. Cerebral Palsy (लकवा) 5. Mental Retardation (मानसिक विकार) 6. Ear, Eye and Speech Defects आंख, कान तथा वाणी दोष 7. Parkinson Disease (कंपवायु) 8. Pains (Lumbago, Arthrities, Rheumatic, sciatica) (पुराने तथा कष्टसाध्य दर्द)

रोगीजन, कविराज ओमप्रकाश एम. ए. भिषगाचार्य धन्वंतरि (जो अमेरिका से वापस आये हैं), प्रधान चिकित्सक, आर्यावर्त पोलियो आश्रम, नई दिल्ली–११००१५ (दिल्ली और महाराष्ट्र पार्ट–१ में रजिस्टर्ड) से निम्न स्थलों पर सलाह ले सकते हैं।

बंबई : १३-९-१९७४ और १४-९-१९७४, समय ९ से १२ और २ से ४ सायं, हेल्थ पैलेस, रूम नं. १, पहला माला, बिल्डिंग नं. ३, नवजीवन कालनी, लेमिंग्टन रोड (फोन : ३९४२१८, पी. पी. कविराज ओम प्रकाश)।

नागपुर : १७-९-१९७४, ३ से ६ सायं, सेंट्रल होटल, गांधी बाग, फोन : ४००७३

रायपुर : १८-९-१९७४, ९ से १२ और २ से ३ अपराह्न, माया लॉज, म. गां. रोड, फोन : २६५३

राउरकेला : १९-९-१९७४, ९ से १२ और २ से ४ सायं, होटल अप्सरा, रेल्वे स्टेशन के पास.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमशेदपुर : २०-९-१९७४, ९ से १२ और २ से ४ सायं, नटराज होटेल, बिस्टूपुर, फोन : ६०६१.

रांची : २१-९-१९७४, १० से २ और ३ से ४ सायं, राज होटेल, मेन रोड, फोन : ६१३.

कलकत्ता : २२-९-१९७४ और २३-९-१९७४, १० से २ और ३ से ५ सायं, एशियन होटल, पी-३८, प्रिंसेप स्ट्रीट, फोन : २३-९८७७।७८.

पटना : २४-९-७४ से २५-९-१९७४, ९ से १२ और २ से ४ सायं, होटल नटराज, अशोक राजपथ; फोन : २५०२८.

परामर्श शुल्क ३५ रुपये। चिकित्साव्यय अतिरिक्त।

ARYAVARTA POLIO ASHRAM ARYAVARTA BHAWAN
79—E, Kirti Nagar, New-Delhi—110015

Phone:— 584344, 589319, 585635 **Gram:— "Poliocure"**

शाखाएं : बंबई सेंट्रल, १०१।३ नवजीवन कालनी
नयी दिल्ली १०९/२७, बाराखंभा रोड और ७।बी टागोर मार्केट, कीर्तिनगर.

कविराज ओमप्रकाश एम. ए. भिषगाचार्य धन्वंतरि की लिखी सचित्र पुस्तक 'पोलियोमाइलाइटिस एंड आयुर्वेद' मूल्य ८.५० रुपये अंग्रेजी में और ८.०० रु. हिन्दी में। 'पोलियो एंड मायोपेथी' : रु. २.००; हेल्थ : रु. २.५०

सूचना : सलाह अंग्रेजी या हिन्दी में।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी
आगत क्रमांक.....१५३८.....
दिनांक.....'को र स'.....

पत्र-व्यवहार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला भारत का सर्वोत्तम औद्योगिक प्रतिष्ठान

कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप, स्टेंसिल्स, डुप्लिकेटिंग स्याही इत्यादि के निर्माता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि न्यू स्वदेशी
शुगर मिल्स लिमिटेड.
नरकटिया गंज,
जि. चंपारन, बिहार

उत्पादन :

शुद्ध दानेदार चीनी
पावर और औद्योगिक
अल्कोहल

अलाहाबाद
कैनिंग कंपनी

बमरौनी (इलाहाबाद),
उत्तर प्रदेश

उत्पादन :

डिब्बाबंद फल और सब्जी

मैक्फरलेन पेन्ट्स
कलकत्ता

उत्पादन :

उम्दा पेन्ट्स, वार्निश
वैलामॉयड रूफिंग कंपाउंड
क्रोम और पिग्मेंट

पुलगांव

मिल्स का कपड़ा हर
नागरिक के लिये, हर
प्रसंग पर उपलब्ध है।
आकर्षक रंगों की पॉपलीन,
बढ़िया किस्म की शर्टिंग,
दफ्तर में पहनने के लिए
कोटिंग्ज, पेन्टों के लिए टिकाऊ
ड्रिल्स, हर किस्म की धोतियां,
सुंदरियों की मनमोहक
साड़ियां इसके अतिरिक्त
लांग क्लॉथ और मारकीन्स

जब भी आप सूती
वस्त्र खरीदें तो यह
ट्रेड मार्क देख लें

पुलगांव
काटन मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

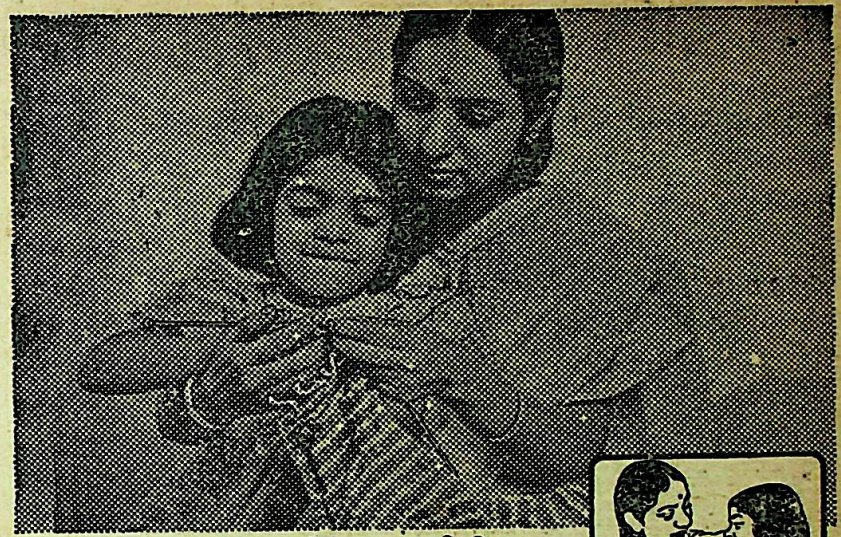

उसे फ़ोरहॅन्स की आदत भी सिखाइए

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने

और मसूढ़ों की मालिश करने से

मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

दाँतों के डाक्टर की राय में मसूढ़ों को मजबूत और स्वस्थ रखने का सर्वोत्तम उपाय है उनकी नियमित मालिश...और दाँतों को सड़ने से बचाने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है दाँतों को हर रात और सवेरे व हर भोजन के बाद नियमित रूप से ब्रश करना ताकि सड़न पैदा करनेवाले सभी अन्न कण दाँतों में फँसे न रहें।

अपने बच्चे को दाँतों के डाक्टर द्वारा खास तौर से बनाए गये फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से नियमित रूप से दाँतों को ब्रश करना और फ़ोरहॅन्स डबल एक्शन जूनियर टूथब्रश से मसूढ़ों की मालिश करना सिखाइए।

फ़ोरहॅन्स से दाँतों की देख-भाल सीखने में देर क्या, सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स
दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका* मुफ़्त प्राप्त करने के लिए २५ पैसे के टिकट (डाक-खर्च के लिए) इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-४०० ००९

नाम.....उम्र..... 06

पता.....

* कृपया किस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: हिन्दी, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल तेलगु, मलयालम, कन्नड़.

131F-162

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड

(भारत का सबसे बड़ा रेयान और सिंथेटिक फाइबर की बुनाई, रंगाई और फिनिशिंग का कारखाना)

–: उत्पादन :–

नाना रंगों और डिजाइनों के रेयान और सिंथेटिक वस्त्र पु ष और स्त्रियां, बड़े और बच्चे सभी के लिए बेजोड़ और बढ़िया वैविध्य।

बिक्री और फुटकर दुकान :–

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड

डॉ. ई. मोसेस रोड, महालक्ष्मी, बंबई ११.

टे. नं. ३९४०२१–२२

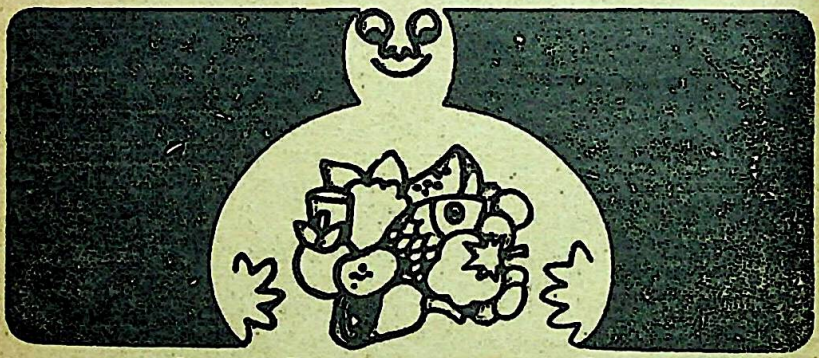

पचनोल से सब कुछ हज़म

पचनोल से बदहज़मी, सीने में जलन और पेट के पफारे से शीघ्र आराम पाइये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकाकाई, आमला, ब्राह्मी

सुन्दर बालों का सदियों पुराना रहस्य,

हेलीन कर्टिस के

टियारा शिकाकाई हर्ब शैम्पू में

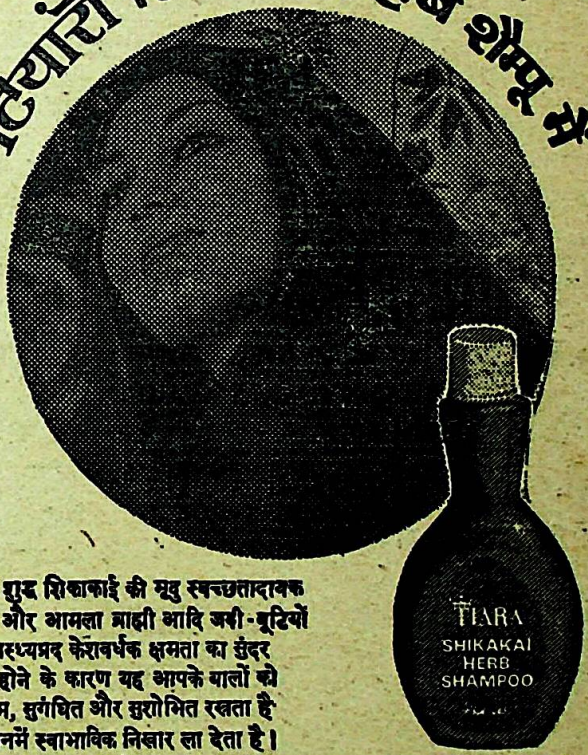

इस में शुद्ध शिकाकाई की मृदु स्वच्छतादायक सफ़ाई और आमला ब्राह्मी आदि जड़ी-बूटियों की स्वास्थ्यप्रद केशवर्धक क्षमता का सुंदर संगम होने के कारण यह आपके बालों को मुलायम, सुगंधित और सुशोभित रखता है और उनमें स्वाभाविक निखार ला देता है।

टियारा शिकाकाई हर्ब शैम्पू इस्तेमाल कीजिए और प्यार से अपने बालों की देखभाल कीजिए।

यह केवल शैम्पू ही नहीं है, एक संपूर्ण सौंदर्य प्रसाधन है।

दो साइज़ों में मिलता है
१२० मि.ली. तथा ७० मि.ली.
न टूटने वाले साफ़
प्लास्टिक की बोतल में

जे. के. हेलीन कर्टिस लि., बम्बई-४०० ००१ का एक उत्कृष्ट उत्पादन

ARMS-HC-15-706-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्योग की सेवा में

निम्नलिखित निर्माताओं के उत्पादनों के लिए हमसे सम्पर्क करें।

हिन्दुस्तान अल्युमिनियम कंपनी लि.

इंडियन टूल मैन्युफैक्चरिंग लिमिटेड

ग्रिंडबेल नोर्टन लि.

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.

युनिवर्सल केबल्स लि.

जयश्री टेक्सटाइल्स एन्ड इन्डस्ट्रीज लि.
(फ्लेक्स फायर होज)

एशियन साथकल टायर व ट्यूब

एशियन डिस्ट्रीब्यूटर्स लि.

क्वीस मेन्शन, तल मजला
प्रेस्काट रोड, बंबई–१

जेनिथ

औद्योगिक जगत में एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र इनका प्रचार हैं।

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और त्रिविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Rawsilin has arrived for those few men out there

A new suiting. For those man dwelling in the summer side of life. Men, who settle for nothing but the best. A versatile suiting, warm in winter, cool in summer, ideal for Indian climatic conditions. RAWSILIN is a suiting for those particular men with those particular tastes.

JIYAJEE SUITING

Jiyajeerao Cotton Mills Ltd. Birlanagar (M. P.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिंक चेन

❋

जिसकी एक-एक कड़ी
मजबूत, परखी हुई और
पूर्णतः विश्वसनीय है

❋

सभी उद्योगों व वाहनों
में उपयुक्त

❋

एलोय स्टील चेन
एक विशेषता

❋

इण्डियन लिंक चेन मैन्यु. लि.
भाण्डुप : बंबई. ७८

IS

दि इंडियन स्मेल्टिग
एंड रिफाइनिंग कंपनी
लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय
लालबहादुर शास्त्री मार्ग,
भांडुप, बंबई ७८ एन० बी०
केबल : 'लकी' भांडुप
फोन : ५८२४२१

सेमिस रोलिंग विभाग
नानफेरस शीत, स्ट्रिप और
फाइल, नानफेरस प्लेट और
सर्कल

एलाय और कास्टिग विभाग :
एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मैटल्स गन-
मैटल्स और ब्रोन्जेन्स, ब्रेजिग
सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स, फाइन
जिंक डाइकास्टिग एलाय्स
'इस्माक३,' अल्युमिनियम बेस्ट
डाइकास्टिग एलाय्स, ब्रास और
ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड,
फिनिश्ड कास्टिग रफ और
मशीन्ड।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

WHO MAKES THE MOST TRUSTED YARN?

CENTURY ENKA, OF COURSE!

World-famous Enkalon nylon yarn made in India to the highest international standards by **Century Enka.** Fast, flawless, fabulous—for the exciting world of fashion.

Enkalon nylon yarn is now produced in India

the quality yarn that weaves faultless fabrics

® Registered Trade Mark of AKZO N.V., Holland

Licensed users: CENTURY ENKA LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ की ममता की नहीं समानता...

उसी तरह अद्वितीय है

उषा

सिलाई मशीन

आपके परिवार को आपके स्नेह की आवश्यकता है...
अपना स्नेह और अधिक प्रकट करने के लिए
आपके लिए आवश्यक है—उषा सिलाई मशीन।

सिलाई के पैसे बचाइए व अनमोल समय भी, क्योंकि उषा सिलाई मशीन :

- श्रेष्ठ इंजिनियरों द्वारा विधिपूर्वक बनाई जाती है, और इसलिए ये लम्बे समय तक चलती है और मरम्मत भी नहीं मांगती।
- आपके पास पहुँचने से पहले दो हजार बार जाँची और परखी जाती है।
- बिक्री के उपरान्त सर्विस के लिये हर जगह प्रबन्ध है।
- हाथ, पैर, और बिजली से चलने वाले कई मनपसंद मॉडलों में मिलती है।

मूल्य रु० २५० - या अधिक

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां ब्रोच उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये ब्रोच से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
(थाना बंबई)

जब खरीदें उषा ही खरीदें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

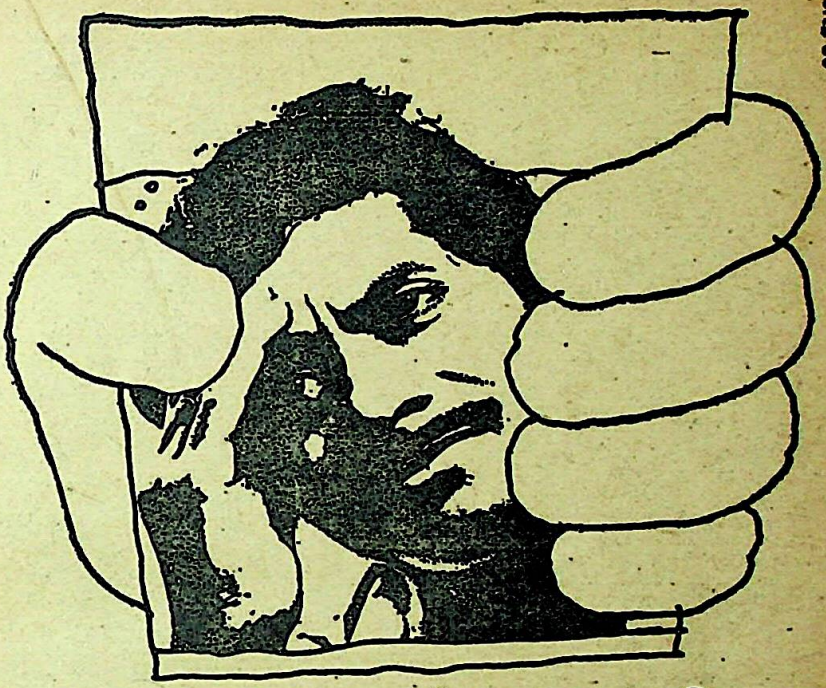

सेरिडॉन और सरदर्द

सरदर्द का मुक़ाबला सेरिडॉन से कीजिए. सिर्फ़ एक टिकिया काफ़ी है. केवल सेरिडॉन ऐसे ख़ास नुसख़े से तैयार की गयी है जो सरदर्द, शरीरदर्द, तनाव और तकलीफ़ से छुटकारा दिलाती है और आप आराम, चैन और ताज़गी महसूस करते हैं. यह है रोश का अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान जो हमेशा आपकी सेवा में लगा है.

सिर्फ़ एक **सेरिडॉन** और आपका सरदर्द ग़ायब.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर
सुखी संसार
श्रीलॉन
और
श्रीस्टर
सुंदर वस्त्रों के लिए
सुन्दर तंतु

श्रीलॉन नाइलॉन तंतु—सुरुचिसंपन्न स्त्रियों लिये सुंदर साड़ियां और लुभावने लिबास कपड़े जिससे तैयार होते हैं।

श्रीस्टर पॉलिएस्टर तंतु—आगे बढ़ते मर्दों लिए 'मॉड' सूटिंग और शर्टिंग जिससे ते हैं। इसलिए जब श्रीलॉन और श्रीस्टर लते हैं, उसका नतीजा होता है—आनंद-लास, मौज-मस्ती।

उत्पादक : श्री सिंथेटिक्स लिमिटेड, नौलखी, उज्जैन
बिक्री कार्यालय : श्रीनिवास हाउस, एच. एम्. सोमानी मार्ग,
बंबई. ४००००१.
फोन : २६६०७४; २६८२४१.

JAISONS-3451

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

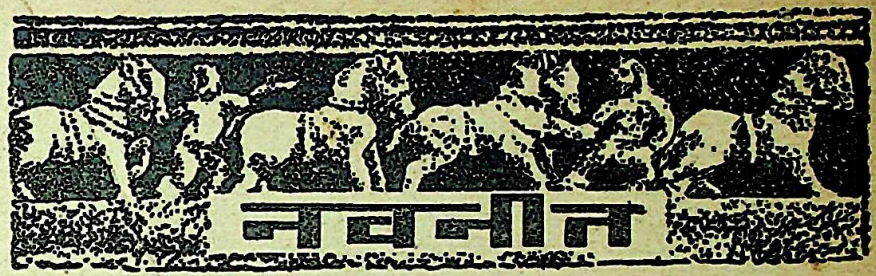

वर्ष २३ : अंक ९ * इस अंक में * सितंबर १९७४

पत्र-वृष्टि	१७	संपादक की डाक से
पृथ्वी की आकृति क्या है ?	२०	एडवर्ड फिलिप्स
संशोधन	२३	नेमिशरण मित्तल
डाकू	२९	सत्यनारायण श्रीवास्तव
मेरी आस्था	३३	रिचार्ड जेफरीस
मन का उपवास	३४	डोंगरे महाराज
मानव-कर्तव्य	३६	मूलनारायण मालवीय
दीर्घायुष्य के दो साधन	३७	भगवद्दत्त वेदालंकार
वाक्यदीप	४०	....
सोभित कर नवनीत लिये	४१	अमृत राय
मैंने शांति मांगी है	४८	पाब्लो नेरूदा
भीम बेटका	४९	डा. वि. श्री. वाकणकर
दो कविताएं	५२	शेख अयाज
अधिकारी और अनधिकारी	५३	सुरजीत
विश्व की अन्न-समस्या	५४	प्रयागनारायण
विज्ञान-बिंदु	६०	केजिता
राजाजी : प्रशासक और अनुशासक	६५	टी. एस. राजु शर्मा

संचालक	संपादक	परामर्शदाता	व्यापार-व्यवस्थापक
श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सत्यकाम विद्यालंकार	महेंद्र मेहता
प्रबंध-संचालक	सहसंपादक	सहकारी : गि. शं. त्रिवेदी	प्रबंध : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	सुरेश सिन्हा	डा. विष्णु भटनागर	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीता–सुगीता कर्तव्या	६९	अबू अब्रहाम
फिराक की कविता में रात	७१	कुलदीप तलवार
वणीठणीजी	७४	तारादत्त निर्विरोध
ओकुनी	७७	चंद्रहास जोशी
आदिमानव (हिन्दी कहानी)	८०	कृष्ण भावुक
वाक्भ्रंश क्या है?	८८	जे. सी. निगम
कार चलाने के खतरे	९१	अनंत
आबादी की सघनता	९५	....
स्मृति के अंकुर	९७	सिंह, योगेंद्रपाल, 'श्रीमयंक', वर्मा
नशे का ज्वार (बंगला कहानी)	१००	नारायण गंगोपाध्याय
गीत	१०५	सुरेश श्रीवास्तव
अब जरा हंस न लें ?	११७	पांडेय आशुतोष
गजल	१२०	जहीर कुरेशी
ऊपर कई जनम (कविता)	१२१	कुंअर
पुस्तकास्वादन	१२२	सत्यपाल विद्यालंकार
हास्य-पुरस्कार–हास्यास्पद विवाद	१२७	....
अम्मी को क्या हो गया ? (उपन्यास)	१२८	कर्तार सिंह दुग्गल
परमाणु की कहानी-२	१५५	डा. जगदीश लूथरा

चित्रसज्जा : विकी, ओके, शेणै, प्रह्लाद बेहेरा, क्रोलिस, मूर्ति

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट), ३४१ ताडदेव, बंबई-३४
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५ वेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४ फोन : ३९२८८७

चंदे की दरें : (भारत में) एक वर्ष : २४ रु.; दो वर्ष : ४६ रु.; तीन वर्ष : ६६ रु.।
विदेशों में : (समुद्री डाक से) एक वर्ष : ४५ रु.; दो वर्ष : ७५ रु.; तीन वर्ष: १०५ रु.।
(हवाई डाक से) एक वर्ष : ७५ रु.; दो वर्ष : १३५ रु.; तीन वर्ष : १९५ रु.।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ३६।४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काफी समय के पश्चात् मासिक नवनीत को पढ़ने का सुयोग मिला। इतनी सुरुचिपूर्ण ज्ञानवर्धक और चरित्र-उन्नायक सामग्री आजकल किसी पत्रिका में संग्रहीत मिल सकती है; इसकी तो मैं आशा ही नहीं करता था। नवनीत ने मन को ऐसा मोह लिया कि जब तक उसे आदि से अंत तक पढ़ नहीं लिया, तब तक छोड़ ही नहीं सका।

लेखों के ज्ञान की गहनता और भाषा की मंजुलता सराहनीय है। संपादक-वर्ग के परिश्रम की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है। नवनीत उत्तम कोटि के सामयिक साहित्य का वास्तव में नवनीत है। ऐसी सुंदर पत्रिका के द्वारा संपादक और प्रकाशक हिन्दी जगत् की जो महान सेवा कर रहे हैं, उसके लिए हम हिन्दी भाषी उनके चिर कृतज्ञ रहेंगे।

—सुरेंद्रनाथ पांडेय (सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी),
अशोक नगर, कानपुर

डा. वाकणकर का सचित्र लेख 'प्रागैतिहासिक कला वीथिकाओं का भंडार' पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। एक महत्त्वपूर्ण खोज-कार्य का प्रामाणिक और सिलसिलेवार परिचय मिला। सितंबर अंक की उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा है, जिसमें इस लख की अगली किस्त छपन वाली है।

—पद्माकर मिश्र, कानपुर

ooo

'आजकल' से अगस्त अंक में उद्धृत लेखांश 'रत्नाकर और महोदधि' के संबंध में उसके लेखक श्री क्षितीश वेदालंकार के एक पत्र का एक अंश :

'अब से कई वर्ष पूर्व श्री वासुदेवशरण अग्रवाल ने एक गोष्ठी में रत्नाकर और महोदधि के इस अर्थ (रत्नाकर=अरब सागर, महोदधि=बंग सागर) का संकेत किया था। रामेश्वरम् में जाकर उसकी पुष्टि हो गयी। पर अभी तक अन्य किसी स्थान पर उक्त बात मेरे पढ़ने में नहीं आयी। श्री वासुदेवशरणजी की बात का आधार क्या था, यह मैं नहीं जानता। शायद कहीं पुराणों में उल्लेख हो।..... यदि वे जीवित होते तो उनसे इस विषय में ऊहापोह हो सकती थी। परंतु वह अनूचान प्रतिभा तो उन्हीं के साथ चली गयी।'

—संपादक

ooo

अगस्त अंक में 'प्रज्ञापराध' (डा. अशोक वैद्य) में रोगोत्पत्ति, निदान एवं चिकित्सा का तथ्यपूर्ण आध्यात्मिक विश्लेषण पसंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया। डा. राधावल्लभ त्रिपाठी का (कलि-युगी) 'शाकुंतल का अंतिम अंक' पढ़कर मुंह से निकला—'वाह ! क्या कहने !'

'दूसरी मोना लिसा' व 'परमाणु की कहानी' भी पसंद आयीं।

—सुभाषचंद्र नरुला, दिल्ली

ooo

मैं नवनीत का नया किशोर पाठक हूं। इसमें डा. जगदीश लूथरा के 'किशोरों के लिए विज्ञान' स्तंभ से मुझे पढ़ने-लिखने का बहुत प्रोत्साहन मिलता है। बहुत बेताबी के इंतजार के बाद जुलाई अंक हाथ लगा। तुरंत पढ़ डाला। मनोरंजन की ढेर-सी सामग्री इस अंक में मिली।

इस अंक में 'यादों की महक' शीर्षक बदलकर 'स्मृति के अंकुर' रखा गया है, जो कि पहले की अपेक्षा अधिक उपयुक्त जंचता है। उपन्यास-सार 'धरती मां' बेहद अच्छा लगा। वास्तव में नवनीत नूतन-पुरातन, ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन वाली पत्रिका है। आप मूल्यवृद्धि जरूर कर सकते हैं; परंतु इसके साथ ही विज्ञापन ह्रास करने का प्रयास करें।

—अशोक, लोहरदगा, रांची, बिहार

ooo

१. जुलाई अंक में पृष्ठ १५७ पर लिखा है—'फरवरी १९६९ में दिल्ली में वीनू मांकड का अंतिम टेस्ट मैच था।' १९६९ में वीनू मांकड ने कोई टेस्ट नहीं खेला। आशा है, आप अगले अंक में संशोधन प्रकाशित करेंगे। ताकि नये पाठकों में भ्रांति न हो।

—अशोककुमार सिंह, शिवपुरी, म. प्र.

२. जुलाई १९७४ के नवनीत में प्रकाशित लेख 'मांकड-कीर्तिमानों का मेरु-पर्वत' में लेखक ने लिखा है—'आज भी वीनू अकेले भारतीय हैं, जिन्होंने टेस्ट मैचों में दो बार द्विशतक बनाये।' जहां तक मुझे याद है, मांकड के अलावा दिलीप सर-देसाई भी ऐसे भारतीय हैं, जिन्होंने टेस्ट मैचों में दो बार द्विशतक बनाये। उन्होंने एक द्विशतक न्यूजीलैंड के विरुद्ध और एक वेस्ट इंडीज के विरुद्ध बनाया था। आशा है, लेखक सही स्थिति से अवगत करायेंगे।

—शिवेंद्र गुप्त, एस. वी. रीजनल कालेज आफ इंजी. एंड टेक्नोलाजी, सूरत

ooo

नवनीत के हर अंक में नयी-नयी बातों की जानकारी पाकर मन खुशी से भर जाता है। इस पत्रिका में कुछ खास ही किस्म की चुनिंदा कहानियां और लेख रहते हैं, जैसा कि बहुत कम पत्रिकाओं में देखने को मिलते हैं। फिलहाल मेरे परिवार में नवनीत पढ़ने की रुचि सिर्फ मुझे ही है, मगर मेरी बिटिया सीमा को इसमें कार्टून देखने का या इसमें से कोई लेख सुनने का बहुत शौक है। जुलाई अंक में से मिस्त्री अब्दुल्ला की सुंदर कहानी सुनते-सुनते एक जगह (पृ. १४८) उसने मुझे टोका। मैंने उस पंक्ति को दुबारा पढ़ा—'उधर तबरेज में बादशाह का महल पूरा बन गया।' सीमा ने कहा—'महल तो शिरवां में बन रहा था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तबरेज में" गलत छपा है।' उसकी बात सही थी। —हरिमोहन पाराशर, जालंधर

* नन्ही सीमा को धन्यवाद और दुलार!

—संपादक

०००

मार्च के नवनीत में 'आचार्य के सान्निध्य में' पढ़कर मन को बड़ी पीड़ा हुई। लेखक श्री देवीरत्न अवस्थी के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि जब वे आयु-बुद्धि में छोटे थे, यानी सिर्फ पंद्रह वर्ष के बालक थे, तब हिन्दी के आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के निवासगृह में पहुंचने पर उनके पैर धोने के लिए दौलतपुर के सिवअधार नाई को हुक्म दिया गया था। अवस्थीजी को अपने पैर नापित से धुलवाने में संकोच भी हुआ। लेकिन अगर वे पैर धुलवाने से इन्कार कर जाते और इस बुरे रिवाज का विरोध करते, तो शायद द्विवेदीजी की नजर में अवस्थीजी ऊंचे उठ जाते। पैर धुलवाने की परंपरा को अवस्थीजी यह कहकर भी टाल सकते थे कि सिवअधार उम्र में मुझसे बड़े हैं, उनसे मैं अपने पैर धुलवाना मुनासिब नहीं समझता।

इस प्रसंग को पढ़ते वक्त यह खयाल भी हो जाता है कि उस काल में ताल्लुकेदार, जमींदार या ब्राह्मण-ठाकुर के जुल्मोसितम से आतंकित गांव की दीन प्रजा उचित-अनुचित सेवार्थ हाजिर हो जाती थी। सिवअधार भी मन मारकर अनिच्छा से पैर धोने आया होगा। क्या द्विवेदीजी जैसा महान सुधारक और हिन्दी साहित्य का उन्नायक इतना रूढ़िप्रिय, परंपरावादी था? खैर, जो भी हो, मेरी तरह जिस किसी नापित भाई ने इसे पढ़ा होगा, वह अपने को अपमानित अनुभव करके दुःखी होगा।

—शिवलाल आर्य, यवतमाल, महाराष्ट्र

०००

जुलाई १९७४ के अंक में छपी मिस्री कहानी 'घर वापसी' का अनुवाद राजेंद्र वोहरा ने किया था। —संपादक

★

बर्लिन के मशहूर चिकित्सक हाइन्ज़ ओसर ने बड़ी डराने वाली बात कही है—'हम सभी को कैंसर हो सकता है, बशर्ते हम लोग काफी लंबी उम्र जियें।' उन्होंने हाल में एक रिपोर्ट में अपनी इस मान्यता की पुष्टि में आंकड़े दिये हैं। उनका कहना है कि पश्चिमी औद्योगिक देशों में वातावरण के प्रदूषण में तेजी से वृद्धि होने के बावजूद विभिन्न आयु-वर्गों के मनुष्यों में कैन्सर-पीड़ितों के अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है। ५० वर्ष की उम्र वालों में कैन्सर-पीड़ितों का अनुपात १९७० में भी लगभग वही था, जो १९३५ और उससे पहले १९०० में था। यही बात ८० वर्ष की उम्र वालों में है। फिर कैन्सर से मरने वालों की संख्या में इतनी वृद्धि कैसे हो गयी है? डा. ओसर का उत्तर यह है कि एक तो कुल आबादी बढ़ी है, और आबादी में वृद्ध जनों की संख्या बढ़ी है। उनका कहना है कि बुढ़ापे में कैन्सर से मरने की संभावना प्रतिवर्ष १०,९२८ गुना बढ़ती जाती है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वी की असली आकृति क्या है?

एडवर्ड फिलिप्स

पृथ्वी की असली आकृति क्या है, यह ठीक-ठीक पता लगाना विज्ञान की सबसे पुरानी गुत्थियों में से एक रही है। छठी सदी ई. पू. के यूनानी दार्शनिक पीथागोरस ने इस विषय में चिंतन किया था और आज भी विज्ञानी इस विषय में हमारे ज्ञान का निरंतर सुधार करते जा रहे हैं।

माना जाता है कि पृथ्वी की पहली काफी अच्छी मापजोख यूनानी गणितज्ञ एरेस्टोस्थेनीस ने की थी। तीसरी सदी ई. पू. में उसने मिस्र में परस्पर काफी दूरी पर स्थित दो स्थानों पर स्थितिज पर सूर्य का कोण नापा और उस पर से पृथ्वी के व्यास का हिसाब लगाया था। मगर अगला उल्लेखनीय कदम उठाया जा सका पूरी उन्नीस सदियों के बाद।

सत्रहवीं सदी ई. में इस अटपटे तथ्य का पता चला कि फ्रेंच गायना में स्थित केयेन में गुरुत्व शक्ति उससे भिन्न होती है, जो कि पेरिस में होती है। न्यूटन ने इस तथ्य की यह व्याख्या की कि अवश्य ही पृथ्वी की अक्ष-गति के कारण विषुवत्-रेखा पर पृथ्वी अधिक उभरी हुई है और गुरुत्व-बल अक्षांश पर निर्भर हो जाता है।

इसके बाद प्रगति फिर रुक गयी; मगर इस बार सिर्फ ३०० वर्षों के लिए। हालांकि इस अरसे में भी विषुवत्-रेखा पर पृथ्वी के उभार के बारे में हमारा ज्ञान धीमे-धीमे बढ़ता रहा। सन १९५० तक आकर विज्ञानी यह कहने में समर्थ हो गये कि विषुवत्-रेखा की तुलना में उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव दोनों ही पृथ्वी के केंद्र के २१.४७ किलोमीटर ज्यादा नजदीक हैं।

प्रगति का अगला डग भरा गया १९५८ में प्रथम मानव-निर्मित उपग्रहों की उड़ान के बाद। अक्सर ग्रहों की कक्षा का हिसाब पृथ्वी के आकार और आकृति से लगाया जाता है। मगर इससे उल्टी गणना भी की जा सकती है। अर्थात् उपग्रह मार्ग का सही-सही वेध लेकर उसके द्वारा पृथ्वी

* शीर्षक के साथ : भूदेवी, अल्बर्ट विक्टर म्यूजियम, लंदन *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के माप संबंधी अपने ज्ञान का परिष्कार किया जा सकता है। विशेष कैमरों की शृंखला द्वारा लिये गये फोटोग्राफों के अध्ययन से ये वेध लिये जाते हैं।

इस दिशा में पहली सफलता तब मिली, जब सोवियत उपग्रह स्पुतनिक-२ की कक्षा का विश्लेषण किया गया। इस कृत्रिम उपग्रह का मार्ग पूर्व घोषित मार्ग से काफी हद तक भिन्न रहा। इस पर से दक्षिण इंग्लैंड स्थित रायल एयरक्राफ्ट एस्टैब्लिशमेंट के वैज्ञानिकों ने कहा कि धरती का पिचकाव १७० मीटर ज्यादा कूता गया था; दूसरे शब्दों में, ध्रुवीय व्यास विषुवतीय व्यास से ४२.७७ किलोमीटर ही ज्यादा है, न कि ४७.९४ किलोमीटर।

उसी वर्ष अमरीका में जब अमरीकी उपग्रह वैन्गार्ड-१ की कक्षा का विश्लेषण किया गया तो कुछ ऐसी गड़बड़ों का पता चला, जिनकी व्याख्या विषुवत्- रेखा पर पृथ्वी के उभार के आधार पर नहीं की जा सकती थी। स्पष्ट था कि विषुवत् रेखा के अलावा भी पृथ्वी में कहीं बेडौलपन होगा जो पृथ्वी को अपने पथ से परे खींच रहा था।

वैन्गार्ड-१ पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला पहला अमरीकी उपग्रह था और योजना यह थी कि इसकी कक्षा पृथ्वी से ५०० किलोमीटर की ऊंचाई पर पूर्ण गोलाकर होगी।

वैन्गार्ड के वेधों से पता चला कि उत्तर ध्रुव की अपेक्षा दक्षिण ध्रुव पृथ्वी के केंद्र से ४० मीटर अधिक निकट है। इसका अर्थ यह हुआ कि पृथ्वी ध्रुवों पर पिचकी हुई तो है ही, साथ ही कुछ-कुछ नाशपाती की शक्ल की भी है।

इस दिशा में नवीनतम समाचार इंग्लैंड से आया है—उसी रायल एयरक्राफ्ट एस्टाब्लिशमेंट से। और इसके लिए जो विज्ञानी उत्तरदायी हैं, उनमें से एक हैं डेस्मांड किंग हेली एफ. आर. एस.। इन्होंने १९५८ में स्पुतनिक-२ की कक्षा के अध्ययन में भी भाग लिया था। विज्ञानी जी. ई. कुक के साथ इन्होंने २७ उपग्रहों की वेधों की मदद

पृथ्वी की वास्तविक आकृति का यह नक्शा रायल एयरक्राफ्ट एस्टैब्लिशमेंट, फार्नबरो, इंग्लैंड के डी. किंग हेली और जी. ई. कुक ने तैयार किया है। कटी रेखाओं में पूर्ण वृत्त है, ठीस रेखा में पृथ्वी की नाशपातीनुमा वास्तविक आकृति।

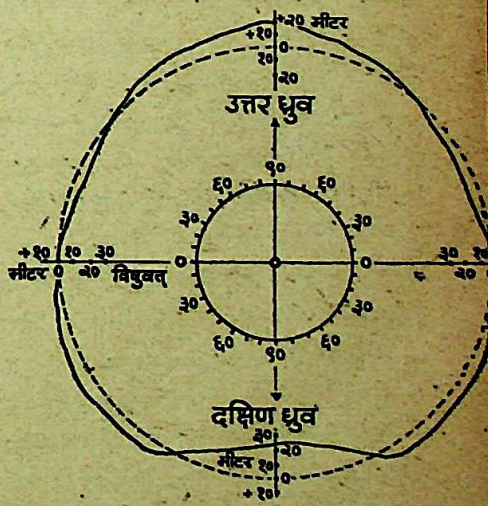

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पृथ्वी की आकृति का अधिक ब्योरेवार अध्ययन किया। इस अध्ययन से किंग हेली और कुक इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि हमारी पृथ्वी अब तक जितना समझा जाता था, उससे कहीं अधिक नाशपातीनुमा है।

अब तक पृथ्वी की जो चिपटी गोलाकृति मान्य रही है, उसकी तुलना में दक्षिण ध्रुव २५.९ मीटर अधिक निचाई पर है। उत्तर ध्रुव पर निश्चय ही नाशपाती की डंठल-सी है, जो कि चपटी गोलाकृति से १८.९ मीटर अधिक उभरी हुई है। इस प्रकार उत्तर ध्रुव की तुलना में दक्षिण ध्रुव पृथ्वी केंद्र के ४४.७ मीटर अधिक नजदीक है, न कि ४० मीटर (नक्शा देखिये।)

जब पृथ्वी की आकृति को इतनी बारीकी से परखा-मापा जा रहा है, तब यह जान लेना आवश्यक है कि आखिर मापा किसे जा रहा है। समुद्री सतह पर के धरातल को जमीन के नीचे ले जाया जाये तो पृथ्वी की जो आकृति होगी, उसकी माप-जोख उपग्रहों ने प्रस्तुत की है। किंग हेली और कुक इस बात को यों समझाते हैं। मान लीजिये कि कोई आदमी 'क' उत्तर ध्रुव पर समुद्री सतह पर तैर रहा है और उतना ही बहादुर दूसरा आदमी 'ख' दक्षिण ध्रुव पर गढ़ा खोदकर समुद्री सतह के बराबर उतर गया है। उस हालत में विषुवत्-रेखा से 'ख' की अपेक्षा 'क' ४४.७ मीटर अधिक दूर होगा।

ध्रुवों को छोड़कर शेष सर्वत्र इस नयी माप का पूर्व स्वीकृत माप से १ मीटर से ज्यादा का अंतर नहीं है। इसलिए किंग-हेली और कुक का कहना है कि ध्रुवों पर भी उनकी माप १ मीटर से ज्यादा गलत नहीं हो सकती।

वे यह भी कहते हैं कि इस माप को और भी अधिक शुद्ध बनाया जा सकता है; मगर सही कक्षा वाले उपग्रहों की कमी से इसमें अड़चन पड़ रही है।

पृथ्वी की नाशपातीनुमा आकृति से आधुनिक भूगणितज्ञों को आश्चर्य हुआ है; मगर पंद्रहवीं सदी के उस कमाल के नाविक कोलंबस को उसका सुराग मिल गया था। किंग हेली बताते हैं कि इस खोज का ब्रह्मांड विज्ञान की दृष्टि से महत्त्व है। उदाहरणार्थ इससे यह संकेत मिलता है कि पृथ्वी का अंतर्भाग कभी आज की अपेक्षा अधिक द्रव रूप था।

आजकल हमें जिस प्रकार के कागज पर नवनीत छापना पड़ रहा है, उससे हम स्वयं खिन्न हैं; परंतु परिस्थितियां हमारे बस के बाहर हैं। फिर भी अपनी ओर से हम प्रयत्नशील हैं कि अच्छा कागज प्राप्त कर सकें। यदि इसमें सफलता मिली, तो नवनीत को अधिक सुहावने रूप में पेश कर सकेंगे। छपाई आदि के व्ययाधिक्य के कारण आवरण-पृष्ठ की रूपसज्जा में भी परिवर्तन करना पड़ा है। परंतु भीतर की सामग्री अधिकाधिक रोचक एवं सारपूर्ण हो, इसके लिए हम सदा की तरह जागरूक हैं। हमारी कठिनाइयों को समझकर सहृदय पाठक-वृंद हमें क्षमा करें।

—संचालक : नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

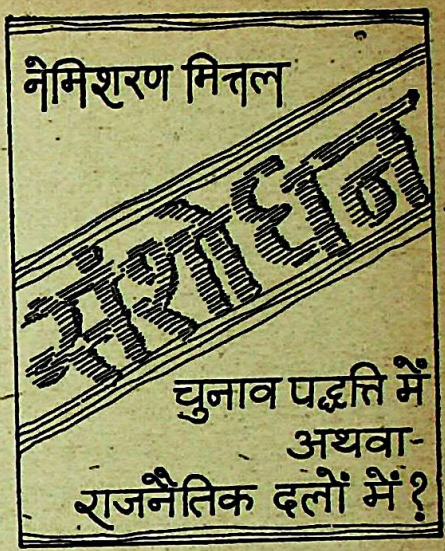

बिहार में आजकल यह चर्चा जोरों पर है कि देश से भ्रष्टाचार मिटाने और भ्रष्टाचारी शासन को समाप्त करने के लिए देश की चुनाव-प्रणाली में बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता है। कहा जाता है कि कांग्रेस बड़ी मात्रा में कालाधन इकट्ठा करके चुनाव-प्रचार पर अंधाधुंध खर्च करती है, वोट खरीदती है और सत्ता का दुरुपयोग करके निर्वाचन-केंद्रों पर जबर्दस्ती कब्जा कर लेती है, असली मतदाताओं को वोट नहीं डालने देती और नकली मतदाताओं से मतपेटी में ढेर के ढेर वोट डलवाकर बहुमत प्राप्त कर लेती है।

वास्तव में इनमें से कोई भी कार्य देश के चुनाव-कानून की निगाह में वैध नहीं है; अतः यह मानना चाहिये कि वे बुराइयां किसी दोषपूर्ण चुनाव-प्रणाली का नहीं, अपितु सत्ता के दुरुपयोग का परिणाम हैं।

मूल प्रश्न यह है कि सत्ता का दुरुपयोग क्यों हो रहा है और उसे कैसे रोका जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले चुनाव-प्रणाली के संशोधन की मांग से संबद्ध एक अन्य महत्त्वपूर्ण तर्क का भी उल्लेख आवश्यक है।

आज यह संभव हो गया है कि ३१ प्रतिशत वोट पाने वाले राजनैतिक दल को विधानसभा में बहुमत मिल जाता है और वही दल ४२ प्रतिशत मत मिलने पर लोकसभा में दो तिहाई स्थान पा लेता है। इसी आधार पर कांग्रेस निरंतर सत्तारूढ़ बनी हुई है। दूसरी ओर, बहुमत को टुकड़ों में बांटने वाले विरोधी दलों की आपसी लड़ाई ने यह संभव कर दिया है कि ३१ प्रतिशत मत पाने वाला दल सरकार बना ले। ये दल आपसी लड़ाई को मिटाने के बजाय यह मांग करने लगे हैं कि बहुमत-प्रणाली की जगह समानुपातिक मतदान-प्रणाली लागू की जाये।

इस प्रणाली में, प्रत्येक दल को आम चुनावों में जितने मत मिलेंगे, उसी अनुपात में संसद और विधान-मंडलों में स्थान प्राप्त होंगे। विरोधी राजनीतिज्ञ इस तरीके से कांग्रेस को अल्पमत में पहुंचाना चाहते हैं।

कुछ लोग यह सुझाव भी देते हैं कि चुनाव में बहुसदस्यीय निर्वाचन-क्षेत्र बनाये जायें, और सूची-प्रणाली (लिस्ट-सिस्टम) लागू की जाये। इसके बारे में विस्तार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चर्चा आगे की जायेगी।

सत्ता-दुरुपयोग के कारण व निवारण

सत्ता समूचे समाज की होती है, इसलिए उसका स्वरूप विशाल होता है। परंतु जिस व्यक्ति या समूह के हाथों में सत्ता आती है, वह अपेक्षाकृत छोटा होता है; इसलिए सत्ता पाकर उसका मन मचल उठता है और सत्ता को अपने हाथों में बनाये रखने तथा धन-वैभव की प्राप्ति के लिए वह लालायित हो उठता है। यह मनुष्य का सहज स्वभाव है। इसी स्वभाव का नियंत्रण करने के लिए लोकशाही ने संसद के भीतर सत्ता-संघर्ष की व्यवस्था कर ली है। इस व्यवस्था के अंतर्गत विरोधी दल सरकार का अनिवार्य अंग होने के बावजूद सत्ता में हिस्सा नहीं बंटाता है, वरन सत्ता के बाहर रहते हुए उस पर नियंत्रण रखता है तथा शासक दल को संसद और जनता के प्रति उत्तरदायी एवं संवेदनशील बनाये रखता है।

लोकशाही में शासक पक्ष पर दूसरा नियंत्रण रहता है लोकमत का। शासक पक्ष को भय रहता है कि उसकी नीतियों एवं कार्यों से तथा विरोधी दल की आलोचनाओं से यदि लोकमत उसके विरुद्ध हो गया, तो अगले चुनावों में वह बहुमत नहीं पा सकेगा और सत्ता उसके हाथों से निकल जायेगी।

दुर्भाग्य से, भारत में इन दोनों ही नियंत्रणों का अभाव है। पिछले सत्ताईस वर्षों में हम संसद और विधान-मंडलों में कोई सशक्त विरोधी दल नहीं बैठा पाये हैं, जो शासक पक्ष पर असली और प्रभावकारी नियंत्रण रख सके। न हम मतदाताओं के सामने कांग्रेस का कोई विकल्प ही पेश कर पाये, जिसे वे सत्ता सौंप सकें। देश के ६६ प्रतिशत मतदाता कांग्रेस के विरुद्ध मत दे रहे हैं; मगर उनके मत को अनेक दलों ने आपस में बांट-बूंटकर बिलकुल बेकार बना दिया है। परिणामतः ३१ प्रतिशत मत से बनी कांग्रेसी सरकारें सबल विरोध के अभाव में ढीठ, उच्छृंखल, लापरवाह और अनैतिक बन गयी हैं। वे स्वयं भ्रष्ट हुई हैं और उन्होंने समाज के प्रत्येक तंतु को दूषित कर दिया है।

इस स्थिति ने देश के युवावर्ग और विरोधी राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं को ही नहीं, देश के जन-सामान्य को भी हताश और कुंठित कर दिया है। यह अच्छा है कि इस हताश और कुंठा से वह निष्क्रिय नहीं हुई वरन क्रुद्ध हो उठी है, जिससे आज सर्वत्र जन-आक्रोश उभर रहा है। परंतु यह आक्रोश सरकारों को गिरा ही सकता है, बदल नहीं सकता। जहां सशक्त विरोधी पक्ष तक न हो, वहां सरकारें बदलने का प्रश्न ही नहीं उठता। सरकार तो बदलती है विकल्प के रहने पर। भारत में न तो सशक्त विरोधी पक्ष है और न वैकल्पिक पक्ष ही। यही एकमात्र कारण है भारत में सरकारों के न बदल पाने का। और अपरिवर्तनीय सरकारें नख से शिख तक भ्रष्ट हो ही जाती हैं। भारत में यही हुआ है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्तुतः लोकशाही में यह आवश्यक नहीं है कि राजनैतिक दल एक-दूसरे के प्राण-पण के शत्रु हों। वे एक-दूसरे के उच्छेदक नहीं, पूरक होते हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि वे प्रतिकूल राजनैतिक विचारधाराओं के प्रति कंठीबद्ध (कमिटेड) हों। हीगेल द्वारा प्रतिपादित तानाशाही में वाद-प्रतिवाद का द्वंद्व भले ही अनिवार्य हो, परंतु लोकशाही में द्वंद्व नहीं, प्रतिद्वंद्विता होती है—स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा। इस प्रतिस्पर्द्धा में केवल राजनीतिज्ञ और उनके गुट ही नहीं भाग लेते; बल्कि समूची जनता इसमें भाग लेती है तथा निर्णायक भूमिका निभाती है। लोकशाही में प्रतिस्पर्द्धी राजनैतिक दल अपने-अपने लक्ष्यों के लिए नहीं, समग्र राष्ट्र के लक्ष्यों के लिए कार्य करते हैं और उन्हीं के प्रति कंठीबद्ध रहते हैं।

विशेषतः स्वस्थ एवं प्रौढ़ संसदात्मक लोकशाही में, राजनैतिक दलों में एक-दूसरे को संतुलित करने और एक-दूसरे का विकल्प प्रस्तुत करने का सामर्थ्य होता है। वे एक-दूसरे के उन्मूलन के लिए नहीं, एक-दूसरे को नियंत्रित और अपदस्थ करने के लिए प्रयत्न करते हैं। उनकी यह कुश्ती बंद कमरे में अथवा गिरोह के स्तर पर नहीं होती, वरन लोकशाही के अखाड़े में जनता के प्रबंध पर, जनता की आंख-तले होती है। उनके बीच हार और जीत का निर्णय उनके भौतिक-बलाबल के आधार पर नहीं होता; अपितु उनकी लोकप्रियता के आधार पर जनता हार-जीत का निर्णय करती है।

दुर्भाग्यवश हमारे देश का राजनैतिक संदर्भ सामंती राजनीति के तत्त्वों से निर्धारित हुआ है, न कि लोकशाही की प्रवृत्ति और आवश्यकताओं से। हमारे यहां अनेक दल हैं और वे सब दल एक-दूसरे के शत्रु हैं। एक ओर एक प्रधान दल कांग्रेस है, जो पिछले सत्ताईस वर्षों से सत्तारूढ़ है। दूसरी ओर असंख्य विरोधी दल हैं, जो सत्ता के दुर्ग के गिर्द चक्कर तो लगाते रहते हैं और यत्र-तत्र सत्ता को चख भी चुके हैं, परंतु सत्ताधारी नहीं बन पाये हैं। उनका मानना है कि कांग्रेस को नष्ट किये बिना वे नहीं पनप सकते; इसलिए वे कांग्रेस को नष्ट करने के लिए शक्ति और दलीलें जुटाते रहते हैं। किंतु असल में उनकी समूची शक्ति एक-दूसरे को समाप्त करने में खर्च हो रही है। उनमें आपस में गला-काट होड़ है, जिसका पूरा लाभ कांग्रेस को मिल रहा है।

समानुपातिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न

इस होड़ ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि विरोधी दल अपने आपसे निराश हो गये हैं। इस तर्क की आड़ में कि कांग्रेस को प्राप्त ३१ प्रतिशत मतों के आधार पर उसे संसद और विधान-मंडलों में ३१ प्रतिशत स्थान ही दिये जायें, विरोधी दल वस्तुतः अपने लिए सुरक्षा खोज रहे हैं। इस सुरक्षा के दो स्वरूप हैं—एक, अपने पृथक् अस्तित्व की सुरक्षा; और दो, निर्वाचनों में प्राप्त मतों के अनुपात में संसद और विधान-मंडलों में स्थान प्राप्त करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

UPHAR (FOAM) Rs. 29.50 UPHAR (PLAIN) Rs. 28.50

पैरिस ब्यूटी®

ब्रेसियर्ज़

पेरिस ब्यूटी ब्रेसियर्ज़ आपके शरीर की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर ५० से भी अधिक आधुनिक डिज़ायनों में बनाई जाती हैं। हर डिज़ाइन पहनने में सुविधाजनक। मज़बूत सिलाई, बढ़िया इलास्टिक व स्ट्रैप.....एक बार पहन कर तो देखिए—आपके सौन्दर्य में कितना निखार आता है।

भारत में सभी प्रसिद्ध विक्रेताओं से उपलब्ध

TRENDS

पैरिस ब्यूटी सेल्स कार्पोरेशन

अजमलखां रोड, करोल बाग़, नई दिल्ली-110005

फोन : 566594

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का आश्वासन एवं प्रलोभन।

हमारा बंटा हुआ विरोधी खेमा वस्तुतः हमारी ऐतिहासिक विघटन-वृत्ति का परिचायक है। काल की मांग यह है कि भारत में राष्ट्रीय एकीकरण हो तथा राजनैतिक क्षेत्रों में ऐसी पुनर्व्यवस्था हो कि देश को मोटे तौर पर द्विदलीय प्रणाली मिल सके। समानुपातिक प्रतिनिधित्व के लागू होते ही हर छोटे-मोटे राजनैतिक दल का अस्तित्व सुरक्षित हो जायेगा और विघटन की प्रवृत्ति पनपेगी; तब एकीकरण की प्रक्रिया के चालू होने का प्रश्न ही नहीं उठेगा।

सत्ता की सौदेबाजी

यदि समानुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली अपना ली गयी, तो संसद में और राज्यों के विधान-मंडलों में बहुसंख्यक दल नाम की कोई चीज ही नहीं रह जायेगी और सरकार विभिन्न दलों के बीच निरंतर सौदेबाजी का क्षेत्र बन जायेगी। आज जो सौदेबाजी शासक दल के अंदर चल रही है, वही तब अन्य दलों के बीच चल पड़ेगी। शासक दल के भीतर दलीय अनुशासन के कारण सौदेबाजी प्रायः दबी-ढंकी रहती है; किंतु विभिन्न दलों के बीच वह निर्लज्जतापूर्वक चलेगी, क्योंकि उस पर किसी भी प्रकार का अनुशासन नहीं रह जायेगा। इस सौदेबाजी में छोटे दल संतुलनकारी सिद्ध होंगे और ज्यादा नफे में रहेंगे।

अस्थिर सरकारें

संसद और विधान-मंडलों में बहुसंख्यक दल नाम की चीज न रहने से सत्ता का समीकरण निरंतर बदलता रहेगा। उसके आधार पर बनने वाली मिश्रित सरकारें अस्थिर होंगी और असंख्य समझौतों का परिणाम होने के कारण कमजोर भी। परिणामतः राष्ट्र निर्बल होता जायेगा और बिखरता भी जायेगा। फ्रांस जैसा विकसित देश भी मिश्रित सरकारों की अस्थिरता के कारण निरंतर दिग्भ्रांत और निर्बल बना रहा तथा दोनों महायुद्धों में जर्मनी के आगे घुटने टेकने को विवश हो गया। यही कारण था कि अंततः जनरल द' गोल ने अपने प्रखर व्यक्तित्व के प्रभाव का उपयोग करके संविधान में संशोधन कराया और संसदात्मक व्यवस्था के स्थान पर राष्ट्रपतिमूलक अथवा अध्यक्षात्मक शासन-प्रणाली लागू की। भारत फ्रांस की अपेक्षा बहुत विशाल देश है और उसके चारों ओर अनेक छोटे-बड़े राष्ट्र हैं, जिनसे उसे हर क्षण खतरा बना ही रहेगा। ऐसी अवस्था में कमजोर सरकारें उसके लिए स्थायी अभिशाप सिद्ध होंगी।

नौकरशाही का वर्चस्व

जाहिर है कि मिश्रित सरकारों की अस्थिरता के कारण नौकरशाही सत्ता पर हावी हो जाती है और शासन का लोकप्रतिनिध्यात्मक अथवा लोकतंत्रात्मक तत्त्व मंद, शिथिल एवं प्रभावहीन हो जाता है। तब राष्ट्र-विकास की स्थिर योजनाएं नहीं बन पातीं। सौदों और समझौतों का पुलिंदा होने के कारण मिश्रित सरकारें न्यूनतम कार्यक्रम ही अपना सकती हैं और महत्तम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिंदु (आप्टिमम प्वाइंट) तक कभी नहीं पहुंच पातीं। इस न्यूनतम कार्यक्रम का स्वरूप भी सरकारों के बनने-बिगड़ने के साथ निरंतर बदलता रहेगा। इस तरह मंत्रिमंडलों के निर्बल हो जाने के कारण जब भ्रष्टाचार-कलुषित नौकरशाही शासन-तंत्र पर पूरी तरह हावी हो जायेगी, तब क्या होगा, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है।

हमारे यहां आज जो जातिवाद, संप्रदायवाद और प्रादेशिकतावाद जोरों पर है, उसे समानुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली से बल मिलेगा तथा राष्ट्रव्यापी राजनैतिक और राष्ट्रीय राजनीति नाम की कोई चीज ही नहीं रह जायेगी। देश में फैली राजनैतिक फूट को यह प्रणाली बढ़ावा देगी और देश की अखंडता, सुरक्षा एवं शक्तिमत्ता को संकट में डाल देगी। जब प्रादेशिक राजनैतिक दल संसद में अपने प्रतिनिधि बड़ी संख्या में भेजने लगेंगे, तब संघ का स्वरूप ही बदल जायेगा। तब राज्य स्वायत्तता प्राप्त करते जायेंगे और संघ कमजोर हो जायेगा।

निर्वाचन में प्राप्त मतों के आंकड़ों से यह सिद्ध होता है कि संघटन कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय क्रांति दल, स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ जैसे (तथाकथित) अखिल भारतीय दलों का भी कुछ निश्चित क्षेत्रों में ही अस्तित्व है और वे सच्चे अर्थों में अखिल भारतीय स्तर पर संघटित नहीं हो पाये हैं। समानुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली तो इन्हें वहीं कील देगी, जहां ये आज हैं। अंततः सिर्फ प्रादेशिक आधारों पर नहीं, भाषाई और सांस्कृतिक आधारों पर भी विभाजन होगा। इससे राष्ट्रीय एकता को ऐसा गहरा आघात लगेगा, जिससे उबरना देश के लिए संभव नहीं रह जायेगा।

सूची-प्रणाली

दो शब्द सूची-प्रणाली के बारे में भी। ऊपर से देखने में ऐसा लगता है कि सूची-प्रणाली वर्तमान जातिवाद और संप्रदायवाद की पकड़ को ढीला कर सकती है। लेकिन असली बात यह है कि यह प्रणाली नितांत अलोकतंत्रीय है। इससे उम्मीदवारों पर दल के केंद्रीय नेतृत्व की तानाशाही स्थापित हो जायेगी। उनके निजी व्यक्तित्वों का महत्त्व लुप्त हो जायेगा और जनता के साथ उनका संपर्क तो बिलकुल ही समाप्त हो जायेगा।

सूची-प्रणाली में जनता अपने प्रतिनिधियों के बारे में निर्णय न कर सकेगी। वह तो उनसे परिचित भी नहीं होगी; क्योंकि उनका चयन पूर्णतः दलीय तानाशाह करेंगे। इससे दलों की आंतरिक व्यवस्था में से लोकतंत्र का तत्त्व सर्वथा तिरोहित हो जायेगा। यह बहुत ही चिंताजनक स्थिति होगी।

वास्तव में दल-विहीन लोकशाही और सूची-प्रणाली दो 'अंत' हैं; दोनों में लोकशाही का निषेध है। दलविहीन लोकशाही व्यक्ति को दल के नियंत्रण से सर्वथा मुक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके जनता की दया पर छोड़ देती है; जबकि सूची-प्रणाली उसे जनता से काटकर पूरी तरह दल के नेताओं के अनुग्रह और नियंत्रण पर छोड़ देती है।

पिछले सौ वर्षों में संसार के विकसित लोकतंत्रात्मक देशों ने लोकशाही की रक्षा के लिए इन 'अंतों' के बीच एक मध्यमार्ग निकाला है। वह है—बहुमत के आधार पर निर्वाचन और एक सदस्यीय निर्वाचन-क्षेत्र। यही मध्यमार्ग हमारे संविधान-निर्माताओं ने हमें प्रदान किया है। इसमें दलों की गुंजाइश और आवश्यकता तो रहती है; लेकिन जन-प्रतिनिधियों पर दल का नियंत्रण नहीं, केवल अनुशासन ही रहता है। साथ ही, हमारे संविधान में दलों की महत्ता स्वीकार नहीं की गयी है; संविधान ने प्रभुता जनता को दी है और उसे ही निर्णायक माना है—दलों को नहीं। सूची-प्रणाली से दलों की तानाशाही कायम होगी, जो लोकशाही की मूल आस्था और धारणा के सर्वथा प्रतिकूल है।

प्रतिनिधियों का प्रत्यावर्तन

इस आंदोलन में यह बात भी जोर देकर कही जा रही है कि जनता को अधिकार होना चाहिये कि यदि वह अपने प्रतिनिधियों को भ्रष्ट समझती है, तो उन्हें 'वापस बुला' सके और उनके स्थान पर नये व्यक्तियों को चुन सके। यह तर्क सुनने में जितना आकर्षक प्रतीत होता है, व्यवहार में उतनी ही घिनौनी स्थिति को जन्म दे सकता है।

हमारा देश विशाल है तथा हमारे यहां लोकसभा के ही नहीं, विधानसभाओं के भी निर्वाचन-क्षेत्र बहुत लंबे-चौड़े हैं। अगर कहीं सूची-प्रणाली के हिमायतियों की बन आयी, तब तो बहुसदस्यीय निर्वाचन-क्षेत्र प्रायः जिलों की सीमाओं को भी पार करने लगेंगे। साथ ही, हम अभी राग-द्वेष-पूर्ण राजनैतिक स्वभाव, वृत्ति और प्रवृत्ति से भी नहीं उबर पाये हैं। ऐसी स्थिति में 'वापस बुलाने' (प्रत्यावर्तन) की प्रक्रिया बहुत विषम और विषमय सिद्ध होगी।

यही नहीं, निर्वाचन के पश्चात् कोई भी प्रतिनिधि अपने कार्यकाल के विषय में आश्वस्त नहीं रह सकेगा। प्रत्यावर्तन की संभावना और प्रक्रिया उसे निरंतर मानसिक तनाव और दबाव में रखेगी। वह अपने निर्वाचन-क्षेत्र के प्रत्येक प्रभावशाली व्यक्ति

डाकू

डाकुओं का आत्मसमर्पण
जयप्रकाश या विनोबा के
प्रयासों का फल नहीं है।
सच तो यह है कि
वे डाकू खुद ही
शर्म से पानी-पानी हो गये,
यह देखकर कि
उनसे भी कहीं ज्यादा घातक
और बड़े
डाकू फैले पड़े हैं—
'सचिवालय' से 'संसद' तक!

—सत्यनारायण श्रीवास्तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और समूह को प्रसन्न रखने में ही व्यस्त रहेगा; यदि उसने ऐसा नहीं किया, तो कभी भी इनमें से कोई भी उसके विरुद्ध उठ खड़ा होगा और प्रत्यावर्तन का चक्र चालू हो जायेगा। ऐसी स्थिति में कोई भी प्रतिनिधि स्थिरता और निश्चिंततापूर्वक न तो विधायक कार्य कर सकता है, न उसके लिए आवश्यक चिंतन कर सकता है, न विरोधी पक्ष की जिम्मेदारियां ही निभा सकता है। कोई आश्चर्य नहीं कि अनेक स्थानों पर चुनाव के परिणाम की घोषणा के साथ ही प्रत्यावर्तन की तैयारी भी आरंभ हो जाये।

प्रत्यावर्तन की यह व्यवस्था सार्वजनिक जीवन को इतना कलुषित कर देगी और राजनैतिक छीछालेदर व बैर इतना उग्र हो जायेगा कि कोई भी शरीफ आदमी राजनीति में टिकने को तैयार नहीं होगा। (शरीफ आदमियों का उसमें प्रवेश तो न जाने कब का बंद हो चुका है।) उसमें वे ही लोग टिक पायेंगे, जो सत्ता की दौड़ निर्लज्जतापूर्वक दौड़ते रह सकते हैं।

प्रत्यावर्तन की मांग का समर्थन आज यह कहकर किया जा रहा है कि देश की जनता की सारी छटपटाहट के बावजूद सत्ताईस वर्षों में सरकारें नहीं बदली हैं। राजनैतिक नेताओं तथा विशेषतः विरोधी दलों की ओर से जब प्रत्यावर्तन-व्यवस्था की मांग उठती है, तो बहुत आश्चर्य होता है। वे एक बुनियादी बात को भूल जाते हैं:

सरकारें प्रत्यावर्तन से नहीं बदलेंगी और प्रत्यावर्तन का आतंक विधायकों पर अंकुश नहीं रख सकेगा। वरन प्रत्यावर्तन की व्यवस्था से भ्रष्टाचार बढ़ेगा; क्योंकि अभी तो राजनीतिज्ञों को चुनाव लड़ने के लिए ही धन की आवश्यकता होती है, प्रत्यावर्तन की व्यवस्था हो जाने पर प्रत्यावर्तन की कार्रवाई का समना करने अथवा अपने प्रतिद्वंद्वी को प्रत्यावर्तन की चुनौती देने के लिए भी पैसे की आवश्यकता होगी।

यही नहीं, संघ और राज्यों पर भी प्रत्यावर्तन की व्यवस्था के खर्च का भारी बोझ पड़ेगा एवं निर्वाचन-आयोग को भी निरंतर निर्वाचन-प्रत्यावर्तन की व्यवस्था करने के लिए अपनी काया का बहुत बड़े पैमाने पर विस्तार करना होगा। इससे सरकारी खर्च बढ़ेगा तथा पहले ही महंगी सरकार और भी अधिक महंगी हो जायेगी। यह एक विषवृत्त है।

विधायकों पर अंकुश रखने का काम तो लोकशाही में दल करते हैं। बहुत सीधी-सादी बात है, जब तक संसद और विधान-मंडलों में सशक्त, संघटित और एकीभूत विरोधी पक्ष नहीं होगा, तब तक शासक दल पर नियंत्रण नहीं रखा जा सकता। कहा जाता है कि आज तो विरोधी दलों के विधायक भी जनता के सुख-दुःख के प्रति संवेदनशील नहीं रहे हैं। यह सच है। परंतु इसका कारण यह है कि वे इतने अल्पमत में हैं कि सरकार पर प्रभाव डालने में अपने को नितांत असमर्थ एवं असहाय पाते हैं और अपने अस्तित्व की रक्षा ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कठिनाई से कर पा रहे हैं। इस सबके बावजूद हमें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि उन्होंने समय-समय पर सरकार की जनहित-विरोधी नीतियों का भंडाफोड़ किया है और जनता के कष्टों को विधानमंडलों और संसद के सदनों में प्रतिध्वनित किया है।

दलीय संविधान बदलें

प्रत्यावर्तन की व्यवस्था संविधान का अंग नहीं होनी चाहिये; हां, उसे दलों के विधानों में शामिल करना चाहिये। लेकिन उससे भी पहले राजनैतिक दलों में यह व्यवस्था करनी होगी कि विधान-सभाओं और लोकसभा के लिए उनके उम्मीदवारों का चयन उस-उस निर्वाचन-क्षेत्र में उस-उस दल के प्रारंभिक सदस्य गुप्त मतदान द्वारा वरीयता प्रणाली के आधार पर दो तिहाई मतों से करें। फिर प्रत्यावर्तन के लिए भी यही विधि अपनायी जा सकती है। दल के भीतर यह प्रक्रिया सीमित रहने पर दलीय अनुशासन उसे नियंत्रित, मर्यादित और परिसीमित रखेगा और वह दावानल का रूप धारण नहीं करेगी।

आज तो प्रत्यावर्तन की मांग कुंठा में से उपजी है। भले ही यह कहा जाये कि वह लोकशक्ति का ही एक उपकरण है; किंतु वास्तव में यह महज एक शास्त्रीय एवं बौद्धिक व्यायाम है। उसे भारतीय लोकजीवन की वास्तविकताओं के संदर्भ में रखकर देखा जाये, तो उसके परिणाम भयंकर होंगे। उससे आरोप-प्रत्यारोप और प्रतिशोध का ऐसा दुष्चक्र निर्माण होगा, जिसमें फंसकर राजनीतिज्ञ दम तोड़ देगा।

श्री जयप्रकाश नारायण और उनके सर्वोदयी साथी जब प्रत्यावर्तन की व्यवस्था की मांग करते हैं, तब यह बात समझ में आती है; क्योंकि वे सब तो सौगंध खाकर संसद और विधान-मंडलों से बाहर बैठ गये हैं और बाहर से ही राजनीति में हस्तक्षेप कर रहे हैं। लेकिन राजनीतिज्ञों को तो सोच-समझकर बोलना चाहिये। प्रत्यावर्तन की व्यवस्था से भारत में लोकशाही का संचालन असंभव हो जायेगा तथा शासन की वास्तविक शक्ति राष्ट्रपति और राज्यपालों के हाथों में चली जायेगी, जो जन-प्रतिनिधि नहीं होते।

सच हो तो भी होगा कैसे?

समानुपातिक मतदान प्रणाली तथा प्रत्यावर्तन की मांगों को सही मान भी लें, तब भी यह प्रश्न सहज ही उठता है कि क्या कांग्रेस बिहार के आंदोलन से घबराकर संविधान में इन चीजों की व्यवस्था करेगी? कांग्रेस यदि विवेक खो भी बैठे—जैसे कि इस समय उसकी मनःस्थिति है—तो भी वह ऐसा हर्गिज नहीं करेगी; क्योंकि इसमें उसका अहित है। तब जाहिर है कि इन सुधारों के लिए विरोधी दलों को सत्ता हाथ में लेनी होगी। सत्ता तब तक हाथ में नहीं आयेगी, जब तक कि वे एक दल के अंतर्गत संघटित न हों; क्योंकि जनता महागठबंधन (ग्रैंड एलायन्स) और संविद सरीखे विफल प्रयोगों की पुनरावृत्ति पसंद नहीं करेगी। वह इन चीजों से ऊब गयी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उन्हें अविश्वास की दृष्टि से देखती है।

यदि विकल्प बनाकर बहुसंख्या के आधार पर सुघटित और सुस्थिर सरकार एक बार बना ली गयी, तो समानुपातिक प्रतिनिधित्व की चाह ही समाप्त हो जायेगी और उसकी मांग अप्रासंगिक बन जायेगी। यही बात सूची-प्रणाली और प्रत्यावर्तन के बारे में भी होगी।

मूल समस्या परिवर्तन की है

भारतीय राजनीति की मूल समस्या प्रत्यावर्तन की नहीं, परिवर्तन की है। सत्ताईस वर्षों में सरकार नहीं बदली। गुजरात में जनता ने सरकार को गिरा दिया; मगर सरकार नहीं बदली। गिरना और बदलना दो भिन्न बातें हैं।

सरकार को गिराने से सरकार नहीं बदलेगी। सरकार तो तब बदलेगी, जब लोकतांत्रिक विरोधी राजनैतिक दलों के बीच खिंची दीवारें गिर जायें और उनके नेता एवं कार्यकर्ता उन लाक्षागृहों को छोड़कर एक नये दल में संमिलित और संघटित हों।

दीवारें तोड़ने का काम युवाशक्ति के महातांडव से ही होगा और नये दल का सर्जन देश के वरिष्ठ राजनीतिज्ञों, सज्जनों और मेधावी एवं देशभक्त नागरिकों को पूरा करना होगा। लेकिन यह काम पूरा होगा तभी, जब जन-शक्ति उन्हें इसके लिए विवश करेगी और वे स्वयं भी पहचानेंगे कि क्षुद्र से निकलना धर्म है और विराट् में प्रवेश करना उससे भी बड़ा धर्म है।

यदि हम नाना नामों व रूपों वाले विरोधी दलों के ईमानदार और देशभक्त मेधावी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को एक मंच पर इकट्ठा करके नये नाम और प्रतीक दे सकें, तो निश्चित है कि वह दल अगले निर्वाचनों में सरकार को बदल सकेगा और सत्ता पर कांग्रेस के एकाधिकार से जनित बुराइयों की छंटाई शुरू हो जायेगी।

लेकिन शुरूआत कौन करे? बिहार। बिहार के तेजस्वी, मेधावी और बलिपंथी युवक संघटित होकर जनमत तैयार करें और प्रबुद्ध जनमत का दबाव इन दलों पर डालें, जिससे कि विकल्प बने। यदि बिहार १९७४ में विकल्प बना सका, तो १९७५ के मध्य तक देश के समस्त प्रदेश अपने-अपने लिए विकल्प बनाने के कार्य में जुट जायेंगे।

इसमें से ही राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प का उदय होगा और १९७६ के लोकसभा-निर्वाचनों में वह अपने मंच पर ६६ प्रतिशत बहुमत को एकत्र करके भारत के भाग्य को बदलेगा।

कांग्रेस रहे, वह स्वच्छ और सशक्त बने; उसका विकल्प बने, वह भी स्वच्छ और सशक्त बने—यही इस राष्ट्र की राजनीति की मांग है। वैकल्पिक दल बनने में जितनी देरी होगी, अराजकता उतनी ही बढ़ेगी। अराजकता की कोख से सदा तानाशाही का दैत्य ही जन्म लेता है, लोकशाही का देव नहीं। आइये, विकल्प बनायें तथा कुंठा और अराजकता से बचें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान, मनोरंजन

मेरी आस्था

मेरा हृदय इस आस्था पर दृढ़ और स्थिर हो गया है कि अंततः धूप और वसंत, फूल और नीलगगन मानव के अस्तित्व के ताने-बाने में गुंथ जायेंगे। मनुष्य उनके तमाम सौंदर्य को समो लेगा, उनकी भव्यता का आनंद उठायेगा। तभी तो फूल मेरे लिए डंठल और पंखड़ियों से बहुत कुछ अधिक है। जब मैं दर्पण में झांकता हूं, तो देखता हूं कि मेरे मुखड़े की हर लकीर का अर्थ निराशा है। परंतु बावजूद अपने चेहरे के—अर्थात् बावजूद अपने अनुभव के—मैं आशावादी बना हुआ हूं।

दुःख-शोक बिना रुके-थमे हम पर से बहते रहते हैं, जैसे सागर के खुर तटों को रौंदा करते हैं। सो हम अपने आपको नहीं, आगे को देखें और पत्तियों से, खेतों से शक्ति लें। सचमुच पामर है वह आदमी, जो आगे की ओर, जीवन के आदर्श की ओर नहीं देख सकता। वैसा न करना अपने जन्मसिद्ध मानसिक दाय से मुकरना है।

— रिचार्ड जेफ़रीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन का उपवास

डोंगरे महाराज

कई वैष्णव अपने व्यापार-धंधे के स्थानों पर द्वारिकानाथ का चित्र लगाते हैं; पर द्वारिकानाथ हमेशा उपस्थित हैं, ऐसा समझकर व्यवहार नहीं करते।

ग्राहक को लूटते समय वे यह मानते हैं कि भगवान तो बहरे हैं, और फिर अपना धंधा करते रहते हैं। किंतु भगवान की आंखों के सामने ही भगवान के दूसरे बालक को धोखा देना क्या संभव है ?

व्यापार करते समय यदि अपने ग्राहक में परमात्मा के दर्शन करोगे, तो तुम्हारा धंधा ही परमात्मा की प्राप्ति का साधन बन जायेगा।

भक्ति का इत्र

भक्ति प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, वह तो हृदय से परमात्मा को जीतने की विधि है। भक्ति को प्रकट मत करो, उसे गुप्त रखो। नहीं तो वह इत्र की तरह उड़ जायेगी।

तुम भजन-कीर्तन में संमिलित होकर तो खूब उछल-कूद करते हो, किंतु अपने घर के किसी कोने में परमात्मा के सामने एकांत में उन्हें रिझाने के लिए कभी नाचते-कूदते हो ?

बाहर चाहे कितना भी नाच-गान करो, किंतु यदि प्रभु के निकट बैठकर अंतर के भावों को नहीं जगा पाते, तो तुम्हारी यह भक्ति परमात्मा के निमित्त नहीं है, मात्र लोगों को दिखाने के लिए है।

तीर्थयात्रा

तीर्थ में जाकर कद्दू छोड़ने का कोई अर्थ नहीं है। वहां तो काम-क्रोध आदि विकारों को छोड़ना चाहिये। परमात्मा के लिए, प्रिय वस्तु का त्याग करोगे, तो ही उसकी प्रीति प्राप्त कर सकोगे।

तुम यदि यह कह सको कि मैंने अमुक तीर्थ की यात्रा करके काम का त्याग किया या अमुक तीर्थ की यात्रा करके क्रोध का परित्याग किया, तभी तुम्हारी तीर्थयात्रा फलदायी बन सकती है।

श्राद्ध और पिंडदान

श्रद्धापूर्वक किये गये सत्कर्म द्वारा जीवन को परमात्मा और परोपकार के साथ जोड़ देना ही सच्चा श्राद्ध है। प्रभु के लिए इस मानव-शरीर के पिंड को प्रभु के प्रीत्यर्थ सेवा-कार्य में बिता देना ही सच्चा पिंडदान है।

इस प्रकार श्रद्धापूर्वक श्राद्ध और पिंड-दान की आकांक्षा ही न रखनी पड़े।

वैसे पुत्र द्वारा किये गये बेमन श्राद्ध और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना प्रेम के दिये पिंडदान से मृत पिता का जन्म-मृत्यु से छुटकारा नहीं हो सकता, यह निश्चित बात है।

मन का उपवास

उपवास का अर्थ है प्रभु के उप=समीप, वास=निवास करने की प्रक्रिया। जिस सत्कर्म से जीवन प्रभु के समीप पहुंचे, उसका नाम उपवास है।

जो मनुष्य सात्त्विक मन से प्रभु के स्मरण एवं चरण में रहता है, उसका उपवास ही सच्चा है। बाकी तो स्वाद-लालसा को पोषण देने वाला स्वादिष्ट फलाहार खाकर किया गया उपवास सच्चे अर्थों में उपवास नहीं है, बल्कि प्रभु से दूर (अप) करने वाला अपवास है।

केवल शरीर का उपवास इसमें काम नहीं आता। मन का उपवास है—मन को

चित्र : ठाकोर राणा

किसी भी प्रकार की इंद्रियवृत्ति एवं उसकी लोलुपता में फंसने से रोकना। मन का उपवास है—मन को संपूर्ण सात्त्विकता से प्रभु के समीप रखना।

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तु तृतीया गतिर्भवति॥

—धन की तीन गतियां होती हैं: दान, भोग, और नाश। जो न दूसरों को दे, न स्वयं भोगे, उसके धन की तीसरी गति होती है।

कृपणेन समो दाता न भूतो न भविष्यति।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति॥

—कृपण से बड़ा दाता न कोई हुआ है, न होगा; क्योंकि वह तो हाथ छुआये बिना ही सारा धन दूसरों को दे जाता है।

—भर्तृहरि

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानव-कर्तव्य

मूलनारायण मालवीय

जब भीष्मपितामह शरशय्या पर पड़े हुए मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने उनसे पूछा कि मनुष्य को अपने कल्याण के लिए क्या करना चाहिये ?

भीष्मपितामह ने कहा कि निम्नानुसार आचरण करने से ही मनुष्य का कल्याण संभव है :

प्राणातिपातं स्तैन्यं च परदारानथापिच ।
त्रीणि पापानि कायेन सर्वतः परिवर्जयेत् ।।

दूसरों के प्राण का नाश करना, चोरी करना और परस्त्री से संसर्ग रखना ये तीन प्रकार के शारीरिक पाप हैं, इनसे बचे ।

असत्यलापं पारुष्यं पैशुन्यमनृतं तथा ।
चत्वारि वाचा राजेंद्र न जल्पेन्नानुचिंतयेत् ।।

मुख से बुरी बातें कहना, कठोर बोलना, चुगली खाना और झूठ बोलना ये चार प्रकार के वाणी के पाप हैं, इन्हें कभी जिह्वा पर नहीं लाना चाहिये ।

अनभिध्या परस्वेषु सर्वसत्त्वेषु सौहृदम् ।
कर्मणां फलमस्तीति त्रिविधं मनसाचरेत् ।।

दूसरों के धन को लेने का उपाय न सोचना, समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव रखना, कर्मों का फल अवश्य मिलता है यह भाव—इन तीनों का मन से आचरण करे।

तस्माद् वाक्कायमनसा नाचरेदशुभं नरः ।
शुभाशुभान्याचरन् हि तस्य तस्याश्नुते फलम् ।।

इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि वह मन, वाणी और शरीर से कभी अशुभ कर्म न करे, क्योंकि वह जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसका वैसा फल उसे भोगना पड़ता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीर्घायुष्य के दो साधन

भगवद्दत्त वेदालंकार

वेदों में मनुष्य की सामान्य आयु एक सौ वर्ष की बतलायी गयी है और वहां यह भी निर्देश मिलता है कि मनुष्य इस सौ वर्ष की आयु को स्वयं घटा-बढ़ा सकता है। प्रत्येक मनुष्य चाहता तो दीर्घायुष्य है, पर वह ऐसे कार्य कर बैठता है कि जिससे आयु क्षीण हो जाती है। इसके विपरीत दृढ़ संकल्प वाले कई ऐसे भाग्यशाली पुरुष होते हैं कि वे अपनी क्षीण आयु को भी कर्ममहिमा व साधनाबल से दीर्घायुष्य में परिणत कर देते हैं।

वेदों में दीर्घायुष्य की प्राप्ति के अनेक साधन बताये गये हैं। उनमें से एक आत्मशंसन (ऑटो सजेस्चन) है; दूसरा है शंसन (सजेस्चन), जो कि अन्य व्यक्ति द्वारा किया जाता है।

आत्मशंसन व शंसन संबंधी साधनों को भी दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक वे साधन हैं, जिनमें दीर्घायुष्य की प्रार्थना है; दूसरे साधन मनुष्य की आयु को क्षीण करने वाले शत्रुओं के विनाश की प्रार्थना वाले हैं।

शतायु बनने के लिए आत्मशंसन-संबंधी अनेक मंत्र वेदों में हैं। प्रातः-सायं संध्या में बोले जाने वाले एक मंत्र से हम सूर्य भगवान से सौ वर्ष तथा इससे भी अधिक के आयुष्य की याचना करते हैं। मंत्र इस प्रकार है :

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ।।

—देवों का हितकारी अथवा दिव्यस्वरूप भगवान द्वारा ऊर्ध्व आकाश-मंडल में स्थापित शुद्ध व तेज-स्वरूप, सबका चक्षु यह सूर्य सामने उदित हुआ है। इसे हम सौ वर्ष तक देखें, इसकी कृपा से सौ वर्ष तक जियें,

गुनार क्रोलिस का लिनोकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौ वर्ष तक सुनें, सौ वर्ष तक बोलें, सौ वर्ष तक अदीन होकर जियें, और सौ वर्ष से भी अधिक की आयु प्राप्त करें।

इस मंत्र में यह बात ध्यान देने की है कि वेद 'अदीन' होकर (अर्थात् दीन न बनकर) सौ वर्ष जीने का निर्देश करता है। परंतु आजकल स्थिति यह है कि मनुष्य ज्यों ही ७५-८० वर्ष का होता है, वह दीन व पराश्रित हो जाता है। उसके आंख, कान, आदि अवयव जवाब दे देते हैं।

अतः 'अदीन' होने के लिए एक-एक अवयव का स्मरण करके शक्तिप्राप्ति के लिए प्रार्थना की जाती है।

वाङ्मम आसन् नसोः प्राणः चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः। अपलिताः केशाः अशोणाः दन्ता बहुबाह्वोर्बलम्। ऊर्वोरोजो जंघयोर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा। अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः।

—मेरे मुख में वाक्शक्ति हो, नासिका में घ्राणशक्ति, आंखों में दृष्टिशक्ति, कानों में श्रवणशक्ति हो। मेरे केश असमय श्वेत न हों, दांत भुरभुरे न हों, मेरी बाहुओं में बहुत बल हो, ऊरुओं में ओज, पिंडलियों में वेग हो। मेरे पैर दृढ़ता से पड़ें। मेरा सारा शरीर हिंसित व भ्रष्ट न हो।

शंसन (सजेस्चन) का प्रयोग वैद्य, डाक्टर, मनोविज्ञानी तथा योगी व देव-पुरुष करते हैं। रुग्ण व्यक्ति पर इसका प्रयोग किया जाता है और इसका बहुत उत्तम प्रभाव होता है। योगी व देवपुरुषों के शंसन का तो चमत्कारी प्रभाव होता है। शंसन संबंधी कुछ मंत्र हम यहां उद्धृत करते हैं :

जीवतां ज्योतिरभ्येहि अर्वाङ् आ त्वा हरामि शतशारदाय। अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्ति द्राघीय आयुः प्रतरं दधामि। (अथर्व ८.२.२)

—हे रोगी ! तू जीवित व्यक्तियों सदृश ज्योति को प्राप्त कर। मैं तुझे सौ वर्ष के जीवन के लिए ले चलता हूं। तेरे मृत्युपाशों को तथा अप्रशस्त निकृष्ट बातों को तुझसे छुड़ाता हूं। तेरी आयु को दीर्घ और विस्तृत करता हूं।

मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गेभ्यो अङ्गज्वरं तव॥ (अथर्व ५.३०.८)

—डर मत, तू मरेगा नहीं, मैं तुझे (अपने मानस-बल व औषध-बल के प्रभाव से) वृद्धावस्था तक पहुंचने वाला बनाता हूं। तेरे एक-एक अंग से यक्ष्म (रोग, अंग-ज्वर) को निकाल बाहर करता हूं।

योगी व दिव्यपुरुष अपने हाथ के स्पर्श से भी भयंकरतम व्याधियों को दूर कर देते हैं।

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥ (अथर्व ४.१३.६)

—यह मेरा हाथ बड़ा भाग्यवान है, यह दूसरा हाथ तो इस पहले हाथ से भी अधिक भाग्यशाली है। यह मेरा हाथ समग्र रोगों के लिए औषधतुल्य है और यह स्पर्श करते ही कल्याण करने वाला है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैद्य रोगी को आश्वस्त करता है :

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो
यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमाहरामि निर्ऋतेरुपस्थात्
अस्पार्शमेनं शतशारदाय ।।
(अथर्व ३.११.२)

—यदि इसकी आयु क्षीण हो गयी है, यदि यह असाध्य हो गया है अथवा मृत्यु के ही पास पहुंच चुका है, तो अपने दिव्य प्रकाश से मैं इसे निर्ऋति की गोद से बाहर खींच लाता हूं और सौ वर्ष तक जीने के लिए इसको स्पर्श करता हूं।

एक और मंत्र में मनुष्य से कहा गया है :

स च त्वानुह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः।

—तुझे मैं आह्वान करता हूं और निर्देश करता हूं कि तू बुढ़ापे से पहले मत मर।

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः।
उत्त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा
भरामसि ।।
(अथर्व ८.१.३)

—तेरे प्राण, आयु, मन आदि यहीं रहें। मैं निर्ऋति के पाशों से दिव्य वाणी द्वारा तेरा उद्धार करता हूं।

वेद कहते हैं, दीर्घायुष्य के लिए ब्रह्म को परिधि बनाओ :

सोऽरिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा
बिभेः।
न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः।।
सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेनं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् ।।
(अथर्व ८.२.२४, २५)

—हे अहिंसित पुरुष ! डर मत। तू नहीं मरेगा, नहीं मरेगा। वहां आदमी मरते नहीं हैं और न ही अधम कोटि के तम में प्रवेश करते हैं। और वहां तो गौ, अश्व, पुरुष तथा अन्य पशु सब जीवित रहते हैं।

वहां यानी कहां ? जहां कि ब्रह्म को अपने जीवन की परिधि बना लिया जाता है।

वस्तुतः आत्मशंसन एवं अन्य व्यक्ति द्वारा किया जाता हुआ शंसन वहीं सफल होता है, जहां कि ब्रह्म का स्थान होता है। उसी की वाणी व मन में ओज होता है। ऐसे ओजस्वी पुरुष के संकल्प से तथा वाणी द्वारा कथन मात्र से दीर्घायुष्य की प्राप्ति सामान्य बात है।

['गुरुकुल-पत्रिका' से साभार]

स्व. गुरु गोलवलकर वैद्य रामनारायण शास्त्री के यहां ठहरे हुए थे कि एक सज्जन ने मजाक में कह दिया—'शास्त्रों में वैद्य के काम को अच्छा नहीं कहा गया है।' गुरुजी यह सुनकर हंस पड़े। बोले—'वैद्य और श्मशान की संगत से जीवन के प्रति मोह तथा भय कम होता है, यह भी शास्त्रों में कहा गया है।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्यदीप

जो सचमुच प्रेम करता है, उस मनुष्य का हृदय धरती पर साक्षात् स्वर्ग है; ईश्वर उस मनुष्य में बसता है, क्योंकि ईश्वर प्रेम है। —लेमेन्नाइस

प्रेम ईश्वर की प्रतिमा है और निष्प्राण प्रतिमा नहीं, अपितु दैवीय प्रकृति का जीवंत सार, जिससे कल्याण-गुण छलकते रहते हैं। —लूथर

प्रेम कभी बेकार नहीं जाता। यदि उसे प्रतिदान नहीं मिलता, तो वह लौट आता है और हृदय को मृदु एवं पावन बनाता है। —वाशिंग्टन अविंग

वासनाएं अंधी हो सकती हैं; परंतु प्रेम को अंधा कहना सरासर अपमान और असत्य है। —डब्ल्यू. एच. डेविस

मने संसार के सुख का आनंद भोगा है; क्योंकि मैं जिया हूं और मैंने प्रेम किया है। —शिलर

प्रेम बहस नहीं करता, अपितु भरपूर देता है; अविचारी उड़ाऊ पूत की तरह अपना सर्वस्व देता है और फिर थरथर कांपने लगता है कि शायद उसने बहुत कम दिया है। —हना मोर

इंजील ने रहस्यमय पाप की चर्चा की है, जिसे क्षमा नहीं मिल सकती; वह महान अक्षम्य पाप है—किसी मनुष्य में 'प्रेम-जीवन' की हत्या कर डालना। —इब्सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे बाप-दादे भी कैसे घामड़ थे जो मक्खन खाते थे। बताइये, मक्खन भी कोई खाने की चीज है ! खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं। पेट तूंबे की तरह फूल जाता है और गुड़गुड़ाने लगता है कि जैसे अली अकबर सरोद बजा रहे हों, या कोई भूत पेट के भीतर बैठा हुक्का पी रहा हो। और वायु तो इतनी बनती है, इतनी बनती है कि चाहो तो उससे पवन-चक्की चला लो ! क्या फायदा ऐसी चीज खाने से। दो ही चार महीनों में शरीर फूलकर कुप्पा हो जाता है—और अच्छा भला आदमी मिठाई वाला नजर आने लगता है, ढाई मन गेहूं के बोरे जैसी तोंद और मुग्दर जैसे हाथ-पांव। सिर्फ नजर आने की बात हो तब भी कोई बात नहीं। मुश्किल तो तब पैदा होती है, जब पांच कदम चलते ही दम फूलने लगता है, जो इस बात की अलामत है कि दिल के लिए अब इस पहाड़-जैसी लहास को ढो पाना कठिन है। और अगर तब भी आदमी न चेता तो दिल थककर बैठ जाता है। उसी का नाम हार्ट-फेल है।

कहने का मतलब यह कि मक्खन खाने और हार्टफेल का सीधा संबंध है। तभी तो डाक्टरों ने मक्खन खाने पर एक सिरे से रोक लगा दी है। कोई समझदार आदमी अब मक्खन नहीं खाता। जब तक पेट-शेट की गड़बड़ी तक की ही बात लोगों को मालूम थी, तब तक फिर भी थोड़ी-बहुत छूट थी; लेकिन दिल का मामला तो आप जानते ही हैं बहुत संगीन होता है। किसे अपनी जान भारी है जो मक्खन खाने जाये ! लेकिन आदत छूटते-छूटते भी काफी समय लगा। वह तो अब यहां-वहां सौ-पचास हार्दिक दुर्घटनाएं हुईं, तब असल में लोगों के कान खड़े हुए। और अब तो यह हाल है कि पढ़े-लिखे लोग दूर से ही मक्खन को प्रणाम करते हैं—ना बाबा, अपना मक्खन अपने पास ही रखो, हमें नहीं खाना कोई मक्खन-वक्खन !

बिलकुल ठीक बात है। मक्खन एक तरह का मीठा जहर है। उसके पास भी नहीं फटकना चाहिये। बड़ी भयानक चीज है। बम-गोले की मार से आप एक बार बच भी सकते

* अमृत राय *

सोमित कर नवनीत लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, मक्खन के गोले की मार से नहीं बच सकते। भूलकर भी उसे मुंह नहीं लगाना चाहिये। वह खाने की चीज है ही नहीं। पता नहीं कब और कैसे, किस शैतानी प्रेरणा से, दुनिया में मक्खन खाने का चलन हो गया। अपने शास्त्रों और पुराणों में तो मुझे कहीं इसका कोई प्रमाण मिला नहीं। यहां तक कि सूरसागर में भी नहीं, जिसकी मैंने खूब-खूब डुबकी लगायी और यही सोचकर लगायी कि हमारे लीलावतार भगवान श्रीकृष्ण का नाम अविच्छिन्न रूप में माखन-चोरी के साथ जुड़ा है, तो जहां उनकी और सब लीलाएं बतायी गयी हैं, वहीं कौन जाने उनके मक्खन खाने के बारे में भी कोई प्रमाण मिल जाये। मगर मुझे तो कहीं कुछ भी नहीं मिला। दूध-दही खाने का तो बार-बार मिलता है, जैसे यही देखिये, जसोदा मैया कन्हैयाजी को दूध पीने के लिए फुसला रही हैं :

कजरी कौ पय पियहु लाल, जासौं तेरी बेनि बढ़ै।

सो कन्हैयाजी कजरी का दूध पीने लगते हैं। मगर बेनी-वेनी कुछ बढ़ती नहीं, तो एक रोज वे अपनी मां को उलाहना देते हैं :

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी।

फिर एक जगह कन्हैयाजी दही-रोटी की फरमाइश करते भी दिखाई देते हैं:

गोपालराइ दधि मांगत अरु रोटी।

कन्हैयाजी और बलराम दोनों भाई एक जगह सवेरे-सवेरे झगड़ा करते भी दिखाये गये हैं :

कनक-कटोरा प्रातहीं, दधि घृत सु मिठाई
खेलत-खात गिरावहीं, झगरत दोउ भाई।

दूध के बाद मामला दही पर पहुंचा, फिर दही से घी और मिठाई पर पहुंचा; लेकिन मक्खन का कहीं नाम नहीं। यहां तक कि जहां उनके कलेवे का विस्तृत वर्णन है, वहां भी नहीं :

उठिए स्याम, कलेऊ कीजै। मनमोहन मुख निरखत जीजै।
खारिक, दाख, खोपरा, खीरा। केरा, आम, ऊख रस, सीरा।
श्रीफल मधुर, चिरौंजी आनी। सफरी चिउरा, अरुन खुबानी।
घेवर-फेनी और सुहारी। खोवा सहित खाहु बलिहारी।
रचि पिराक लाडू दधि आनौ। तुमकौं भावत पुरी संधानौं।
तब तमोल रचि तुमहिं खवावौं। सूरदास पनवारी पावौं।

कैसी लंबी-चौड़ी सूची है, जिसमें कितने तरह के मेवे, मिठाइयां, फल-फलारी, यह-वह सभी कुछ हाजिर है, यहां तक कि मुखशुद्धि के लिए पनवाड़ी सूरदास अपना पान लेकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी मौजूद हैं। लेकिन आप भी चाहें तो बांच जायें ऊपर से नीचे तक, मक्खन का कहीं नाम भी नहीं।

उस दिन कन्हैयाजी की मनपसंद कुछ चीज़ें छूट गयी थीं कलेवे में, तो अगले रोज वे भी पेश की गयीं :

खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्वल गरी बदाम।
सफरी, सेव, छुहारे, पिस्ता, जे तरबूजा नाम।
अरु मेवा बहु भांति भांति हैं, षटरस के मिष्ठान।

लेकिन इस नयी सूची में भी मक्खन का कहीं अता-पता नहीं। चलिये, मैं यह भी माने लेता हूं कि कन्हैयाजी को कलेवे में मक्खन खाना नहीं पसंद था—यों, सही या गलत, दुनिया में चलन इसी का ज्यादा है—वे लंच के साथ मक्खन लेना पसंद करते थे। लेकिन इसका भी कोई प्रमाण नहीं मिलता। सब जानते हैं कि जसोदाजी अपने लाड़ले को हमेशा उसकी रुचि की चीजें जुटाकर उसके आगे परोसती थीं; मगर मक्खन का तो यहां भी कहीं नाम नहीं :

चलौ लाल कछु करौ बियारी
निबुआ, सूरन, आम, अथानो और करौंदनि की रुचि न्यारी
बार-बार यों कहति जसोदा, कहि ल्यावै रोहिनि महतारी।

चलो, जाने दो, उस दिन के मेनू में मक्खन न रहा होगा। लीजिये और एक दिन का मेनू-कार्ड :

कमल-नैन हरि करौ बियारी।
लुचुई, लपसी, सद्य जलेबी, सोई जेंवहु जो लगै पियारी।
घेवर, मालपुआ, मोतिलाडू, सघर खजरी, सरस संवारी।
दूध, बरा, उत्तम दधि बाटी, दाल मसूरी की रुचि न्यारी।
आछौ दूध औटि धौरी कौ, लै आई रोहिनि महतारी।
सूरदास बलराम स्याम दोउ जेंवहु जननि जाइ बलिहारी।

इस गहरी छानबीन से मुझे यह तो अच्छी तरह पता चल गया कि कन्हैयाजी की सबसे मनभावन चीजें कौन-कौन-सी हैं। किसी दिन वे मेरे मेहमान हुए तो मैं वही-वही चीजें उन्हें पेश करूंगा—अभी-अभी कड़ाह से निकली हुई जलेबियां, घेवर, मालपुआ, मोतीचूर का लड्डू, पूरी, लपसी, खूब औटाया हुआ अधावट का दूध और इस सब तर माल के साथ करौंदे की चटनी और मसूर की दाल। लेकिन मक्खन बेचारे की यहां भी कहीं गिनती नहीं !

पता नहीं, कन्हैयाजी के बारे में यह प्रवाद कहां से फैल गया कि उन्हें मक्खन खाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत अच्छा लगता था, जब कि खुद बेचारे ने मुजरिम के कठघरे में खड़े होकर और निश्चय ही गीता हाथ में लेकर जसोदामैया के सामने बार-बार इसका प्रतिवाद किया है :

मैया, मैं नहिं माखन खायो।

लेकिन जसोदामैया भी कुछ ऐसी भोली तो थीं नहीं कि गीता हाथ में लेने से ही उनकी बात को सच मान लेतीं। उन्होंने जरूर आगे बढ़कर जवाब तलब किया होगा—तूने मक्खन नहीं खाया, तो यह तेरे मुंह में कैसे लगा है ?

तब लीलावतार कन्हैयाजी ने उनको पूरी बात बतायी, कैसे क्या हुआ :

खयाल परै ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो।

जसोदामैया निरुत्तर हो गयीं। लाल बिलकुल ठीक कहता है। किसी के मुंह में मक्खन पोत देना कोई मुश्किल काम तो हैं नहीं।

वह दिन था और आज का दिन है, कन्हैयाजी के मुंह के इर्द-गिर्द वह मक्खन ज्यों का त्यों पुता हुआ है और लाखों-करोड़ों लोग माने बैठे हैं कि उन्हें मक्खन खाना अच्छा लगता था, जब कि इसका कहीं कोई प्रमाण नहीं है।

यह ठीक है कि उन्हें गोपियों के घर-घर जाकर मक्खन चुराना अच्छा लगता था; पर मक्खन चुराना और मक्खन खाना दो अलग क्रियाएं हैं, उन्हें गड्डमड्ड करना ठीक नहीं। कन्हैयाजी मक्खन चुराते थे; क्योंकि उन्हें जवान अल्हड़ गोपियों के साथ छेड़छाड़ करना अच्छा लगता था, इसलिए नहीं कि उन्हें मक्खन खाना अच्छा लगता था। उन्हे गोपियों से मलतब था, उनके मक्खन से नहीं; मक्खन तो महज एक बहाना था—जैसे कोई भी बहाना जो हम-आप आये दिन अपनी सजनी और अपने साजन के साथ छेड़छाड़ करने के लिए काम में लाते हैं—कहीं किसी ने किसी की टोपी या जूता लेकर छिपा दिया, कोई किसी की अंगिया दाबकर बैठ रहा। बस, इससे ज्यादा कोई महत्त्व उस माखनचोरी का नहीं है।

मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि कन्हैयाजी को मक्खन खाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था—यहां तक कि अगर कभी नंद-जसोदा की जोर-जबर्दस्ती के कारण बेचारे को मक्खन खाना ही पड़ गया तो उसकी जान पर बन आयी :

खीझत जात माखन खात।
अरुन लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जंभात।

इससे ज्यादा कोई और कर ही क्या सकता है अपनी घोरतम अनिच्छा और अरुचि को व्यक्त करने के लिए ! लेकिन कैसी अंधेर है कि लोग इतने पर भी अपना वही पुराना बेतुका राग अलापे जाते हैं। धोखे से कभी उनके मुंह में भी मक्खन लग गया हो, यानी लगा दिया गया हो तो और बात है, वरना उनकी प्रसिद्धि तो यही है—सोभित कर नवनीत लिये !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ २ ॥

इस तरह अब कोई दो मत इसके बारे में नहीं हैं कि कन्हैयाजी हाथ में नैनू का लोंदा लिये घूमा करते थे—अमुल की तो बात ही छोड़ो, तब तक पोल्सन भी नहीं निकला था, वरना उनके भी हाथ में पोल्सन का डब्बा होता, जैसा नये युग के नये लीलावतारों के हाथ में होता है। जो हो, मक्खन का उचित उपयोग तो उन्होंने बता ही दिया, और बता ही नहीं दिया करके दिखा दिया। सच तो यह है कि उनकी माखनचोरी भी गोपियों को मक्खन लगाने का ही एक ढंग है। जिसके घर वे मक्खन चुराने पहुंच जाते, वह फूली-फूली फिरने लगती :

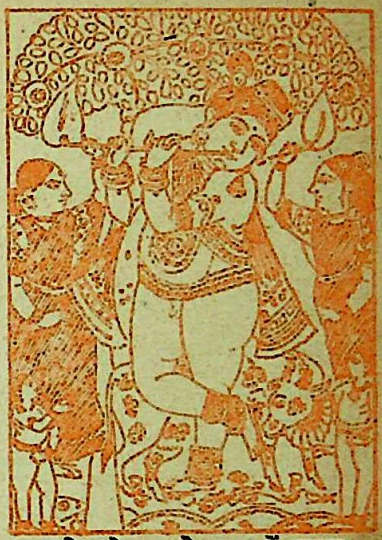

वेणुगोपाल के रूप में कृष्ण
(ग्लास पेंटिंग, मैसूर)

फली फिरति ग्वालि मन में री।
पूछति सखी परस्पर बातें,
पायो पर्‌यौ कछू कहुं तें री ?
पुलकित रोम रोम गदगद मुख बानी कहत न आवै।
ऐसो कहा अहि सो सखि री, हमकौं क्यों न सुनावै।

क्या कहे क्या सुनाये बेचारी, उसका तो खुशी के मारे हाल बेहाल है। और कन्हैयाजी तो कन्हैयाजी, अंतर्यामी, सो आज इसके घर तो कल उसके घर मक्खन चुराने पहुंच जाते हैं—और किसी कारण से नहीं, उन्ही गोपियों का मन रखने को :

प्रथम करी हरि माखनचोरी।
ग्वालिनि मन इच्छा करि पूरन, आपु भजे ब्रज खोरी।

लेकिन इतने से न तो गोपियों का जी भरता था और न कन्हैयाजी का, तो फिर कन्हैयाजी उन्हीं गोपियों का मक्खन चुराकर उनको मक्खन लगाने लगे—लगाने क्या लगे, भरपूर चुपड़ने लगे दोनों हाथों से।

गोपियां थीं सब जैसी थीं, भली भी बुरी भी, जैसा भगवान ने उन्हें बनाया था—कोई भदभद कोई छरहरी, किसी की आंखें छोटी किसी की बड़ी, किसी की कमर मोटी किसी की पतली, किसी की नाक खड़ी किसी की चपटी, और हां वे भी किसी के कैसे किसी के कैसे। लेकिन कन्हैयाजी उन सभी को ऐसे मक्खन लगाते थे कि जैसे उन्होंने रीतिकालीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवियों के साथ बैठकर विधिवत् नायिकाभेद का पारायण किया हो ! फिर क्या पूछना है, उस मक्खन के लेप से वे सभी गोपियां पद्मिनी नायिकाएं बन जाती थीं—किसी के बाल भौंरे जैसे किसी के काजल जैसे, किसी की आंखें मछलियों जैसी किसी की हिरनियों जैसी, नाक सबकी सुग्गे की ठोर, दांत सबके दाड़िम, किसी की गर्दन सुराहीदार और किसी की शंख जैसी, नितंब सबके भारी-भारी चिकने घड़े, कमर सबकी नदारद, जांघें जैसे केले के खंभे, बस कुछ पूछो मत, मक्खन का कुछ ऐसा ही चमत्कार है।

॥ ३ ॥

क्या कहना है, कन्हैयाजी दुनिया को रास्ता दिखा गये, मक्खन के सदुपयोग का। पहले तो एक अकेले वही थे, आज जिसे देखो वही सोभित कर नवनीत लिये। घरों में बाजारों में, दफ्तरों में कारखानों में, सब तरफ उसी की चलत-फिरत है। बीवी नाराज हो, साहब की नजर टेढ़ी हो, नौकरी के लिए मारधाड़ मची हो, अपना माल बेचने को आप गली-गली मारे-मारे फिर रहे हों, बाबूलोग वर्क-टु-रूल कर रहे हों यानी हाथ पर हाथ धरे बैठे हों, प्रेमिका रूठ गयी हो, किसी ऊंची या नीची कुर्सी वाले से कोई लैसन-परमिट निकलवाना हो, फ्रीडम फाइटर वाली पेंशन लेनी हो, रेलगाड़ी में अपनी सीट या बर्थ आरक्षित करनी हो, राशन की दुकान से अपना राशन उठाना हो, बैंक से रुपया निकालना हो, परीक्षा में नंबर बढ़वाने हों, डाकखाने से रजिस्टरी करानी या छुड़ानी हो—सबकी एक अचूक दवा मक्खन है।

मक्खन जिस जीवन-दर्शन का नाम है, वह न किसी काम को छोटा मानता है और न किसी को बड़ा। स्थितप्रज्ञ होने के नाते मक्खन समदृष्टि होता है। अंतर केवल मक्खन की मात्रा में होता है—कहीं तोला-भर और कहीं दो किलो, जहां जैसी जरूरत हो। उसी प्रकार आदमियों के प्रति वह अपनी एक्स-रे दृष्टि से काम लेता है—आदमी के पार वह केवल उसकी कुर्सी को देखता है। कैसा भी चपरगट्टू वहां बैठा हो, वह मक्खन का अधिकारी है; क्योंकि अधिकारी है। इस तरह यह भी कहा जा सकता है कि मक्खन आदमी को नहीं उसकी कुर्सी को लगाया जाता है, आसन को, जो जिसका प्रिय आसन हो ! मक्खन की सार्वभौम विजय का रहस्य भी यही है कि वह और किसी टंटे-बखेड़े में न पड़कर अपनी ऋजु दृष्टि से केवल कुर्सी के सत्य को देखता है। इतिहास ने जाने कितने साम्राज्यों का उत्थान-पतन देखा होगा, पर मक्खन का चक्रवर्ती साम्राज्य अनादि काल से चला आ रहा है और शायद अनंत काल तक चलेगा—और कैसे न चले, जब मक्खन आगे-आगे रास्ते को चिकना बनाता चलता हो !

क्या गजब का जादू है इस मक्खन की गोली में ! जो काम बंदूक की गोली भी नहीं कर सकती, वह यह नन्ही-सी मक्खन की गोली करती है। यहां तक कि जहां चांदी का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जूता भी नहीं चलता, वहां मक्खन का लेप काम कर जाता है। बस, एक शर्त है कि उसका ढंग आना चाहिये, जो किसी उस्ताद से गंडा बंधवायें बगैर मुश्किल है। आप जो यह सोचें कि मक्खन तो मक्खन, लाओ चाहे जैसे उसका पलस्तर चढ़ा चलें तो उससे काम नहीं बनने का—बनना तो दूर रहा, बिगड़ भी जा सकता है। मक्खन लगाना कोई गोबर पाथना नहीं है, लिया और चाहे जैसे फूहड़ हाथों से पाथ दिया—वह एक ललित कला है, जैसे चित्र में रंग लगाना। उसके लिए हल्की-फुल्की कलात्मक उंगलियां चाहिये और चाहिये गहरी अंतर्दृष्टि।

हर चित्र के लिए कलाकार की जैसे अलग रंग-योजना होती है, वैसे ही हर व्यक्ति के लिए इस कलाकार की अलग स्नेह-योजना होती है। एक ही लाठी से सबको नहीं हांका जाता। गहरी मनोवैज्ञानिक सूझबूझ से पहले आदमी को परखा जाता है, फिर यह तय किया जाता है कि उसे किधर से और क्योंकर मक्खन लगाना सर्वाधिक गुणकारी होगा। वैसे इतना तो आप गंठिया ही लें कि ऐसा आदमी आज तक जनमा ही नहीं जिस पर मक्खन काम न करे। हां, कुछ लोग बड़ा बिदकते हैं उससे, मगर अच्छे मक्खनबाज के लिए इसमें घबराने की कोई बात नहीं—एक न एक पेंच से सब चित हो जाते हैं, और वे बिदकने वाले शायद सबसे पहले। लेकिन उसके लिए जरूरी है कि खिलाड़ी को सब पेंच आते हों।

मुद्दे की बात उसमें इतनी ही है कि यह भी एक बड़ा नर्म और नाजुक खेल है, कुछ वैसा ही जैसा जेब कतरना। वह हाथ की सफाई कि पता भी नहीं चला और मक्खन लग गया जिसे लगना था और ऐसा भरपूर लगा कि उसकी चिकनाई चेहरे पर उतर आयी और आंखों में एक नशा-सा छा गया और मुखड़े पर एक अदद मुस्कराहट जो छिपाये नहीं छिपती। अब मांग लो जो कुछ मांगना हो। —१७, हेस्टिंग्स रोड, इलाहाबाद

पोषण की तलाश में मनुष्य अब पशुओं के भोजन पर भी ललचायी नजर डालने लगा है। आल्फाल्फा पशुओं के चारे के लिए उगायी जाने वाली एक घास है। इसके रस में ९० प्रतिशत भाग प्रोटीन का होता है। अमरीका की नेशनल ज्योग्रैफिक सोसायटी की एक ताजी रिपोर्ट के अनुसार यह प्रोटीन अन्य खाद्य पदार्थों के साथ मिलाकर खायी जा सकती है। अमरीकी कृषि-विभाग ने ऐसी विधि निकाली है, जिससे आल्फाल्फा के हरे रस से एक सफेद और लगभग स्वादहीन चूर्ण बनाया जा सकता है। यह चूर्ण लगभग शत प्रतिशत प्रोटीन है। कवि भर्तृहरि ने साहित्य-संगीत-कला-विहीनों को 'पुच्छ-विषाण-हीन पशु' बताते हुए कहा था कि वे घास नहीं खाते यह पशुओं का सौभाग्य है। मगर अब वह सौभाग्य उनसे छिनने की नौबत न आ जाये—यह खतरा पैदा हो गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने शांति मांगी है

□ पाब्लो नेरूदा

अब वे मुझे शांति से छोड़ दें, और
मेरी अनुपस्थिति में फले-फूलें।
मैं अपनी आंखें बंद करने जा रहा हूं।
चाह है मुझे सिर्फ पांच चीजों की
—पांच आकांक्षाएं!
एक तो सनातन-अंतहीन प्यार!
दूसरा, देखना पतझड़
उड़ती-लहराती पत्तियां यदि धरती पर न
गिरती हों,
तो अस्तित्व ही नहीं है मेरा कहीं।
तीसरा, गुरु-गंभीर शीत।
वर्षा से प्यार है मुझे; बेधती ठंड में
अग्नि की सुखद तपन!
चौथी चीज है गर्मी—रसभरे तरबूज-सी!
और पांचवीं, तुम्हारी आंखें:
मातिल्दा, मेरी प्रिये!
तुम्हारी आंखों के बिना मैं सो नहीं सकूंगा,
तुम्हारी निर्निमेष आंखों के अतिरिक्त
मेरी कोई पहचान नहीं।
मैं तुम्हारी आंखों के सान्निध्य के लिए
वसंत को मनचाहा बदल सकता हूं।
साथियो, यही मेरी चाह का सत्त्व है—
कोई किसी के बाद नहीं;
सब एक-दूसरे में समाये
वे यदि चाहें, तो जा सकते हैं अब।
उस दिन मैं अपनी पूर्णता में जीवित रहूंगा
जब प्रयत्नपूर्वक वे मुझे भूलेंगे,
कालपट्ट से मेरा नाम मिटायेंगे।
मेरे हृदय ने पस्ती जानी ही नहीं।
मैंने खामोशी चाही है तो
यह कदापि नहीं कि
मैं मरने जा रहा हूं—बल्कि सत्य
इसके विपरीत है:
मैं जीवित रहने की तैयारी कर रहा हूं।
—अधिक सार्थक और अधिक पूर्ण।
यदि बालियां पकती न हों, और
पृथ्वी का अंधकार भेदकर अंकुर नये
प्रकाश तलाशते न हों, तो मैं
अस्तित्व हीन हो जाऊंगा।
इस पृथ्वी का अंधेरा मातृतुल्य है
और मेरे भीतर भी कहीं गहरा अंधेरा है।
मैं एक ऐसा कुआं हूं,
जिसके जल में रात्रि अपने
सितारे डुबा देती है, और मैं
मैदान पार करता अकेला चला जाता हूं।
इतना जीवन जी चुकने पर भी,
मैं और जीना चाहता हूं
मैंने अपनी आवाज इतनी स्पष्ट
पहले सुनी नहीं थी,
और न कभी स्वयं को
चुंबनों से भरा महसूस किया था।
सदा की भांति यह प्रभात का समय है—
जैसे मधुमक्खी के छत्ते से
किरणें फूट रही हों।
आज के दिन के साथ
मुझे अकेला छोड़ दो।
मैं प्रस्तुत हूं फिर से जन्म लेने के लिए।

अनुवाद: कुमार प्रशांत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीमबेटका में आदिमानव की अस्थियां

* डा. वि. श्री. वाकणकर *

भीम बेटका के उत्खनन में प्राचीन शवागार मिले हैं। इनमें चार ऐतिहासिक युग के हैं, एक संभवतः आद्यैतिहासिक युग का है, तथा दो प्रागैतिहासिक युग के हैं। ऐतिहासिकयुगीन शवों के साथ उनका लौह परशु तथा पानी पीने के लिए एक हंडा रखा रहता है। इन शवों के लिटाने की कोई निश्चित दिशा नहीं होती। कुछ तो अंशतः जलाये भी गये थे।

प्रागैतिहासिक शवों में एक तो मेसोलिथिक काल का और बड़ा ही अस्त-व्यस्त है। उसका सिर, हाथ, पसलियां व ैर की कुछ हड्डियां ही मिली हैं। किंतु जो शव इससे प्राचीन है, वह बहुत महत्त्व का है। संभवतः वह भारत में मानवास्थियों के प्राचीनतम प्रमाणों में से है। यह ८ से १० वर्ष के बालक का शव है।

वह बालक पता नहीं किस कारण से मरा था; परंतु लगता है कि उसे गाड़ने का कार्य समारंभपूर्वक किया गया था। मृत्यु के पश्चात् उसके शरीर को रंग लगाया गया होगा; क्योंकि गेरू तथा वह पत्थर जिस पर गेरू घिसा गया था, शव के साथ मिले हैं। शव को गाड़ने के पूर्व उसके चारों ओर गोल पत्थर रख दिये गये थे तथा बाद में उस पर मिट्टी डाल दी गयी थी। बालक के गले में हड्डी का एक लोलक था, जो उसी के साथ गाड़ा गया था।

इस शव से भी प्राचीन एक अस्थि-पंजर इसी गुफा में पाया गया है। यह अस्थि-पंजर उत्तर पुराश्म युग (अपर पैलियोलिथिक एज (१५ से २० हजार वर्ष पूर्व) से संबंधित है तथा प्राज्ञ मानव (होमो सेपियन) वंश का है। यह भारत में प्राप्त प्राचीनतम मानव अस्थि-पंजर है। इसकी शिरोस्थियां पर्याप्त मोटी हैं, कपाल ीछे की ओर झुका हुआ है, जबड़ा काफी मोटा है तथा दांत जंगल के फल-मूलादि खाने के कारण घिस गये हैं। इसके गले में सजिरा पत्थर का एक मनका भी था; अर्थात् उस समय के मानव अलंकार का प्रयोग करते थे। इसी युग के शुतुरमुर्ग के अंडे के बने मनके पाटणे नामक स्थान में उत्खनन में मिले हैं।

भीम बेटका में मानवास्थि की इस खोज ने आदिमानव की अस्थियों के संशोधन में एक नया प्रकोष्ठ खोल दिया है।

मुझे जिला नरसिंहपुर (म. प्र.) के वरमान घाट तथा देवाकचार नामक स्थानों से भी आद्यमानव-अस्थियां मिली हैं। अभी उनका विस्तार से अध्ययन होना शेष है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

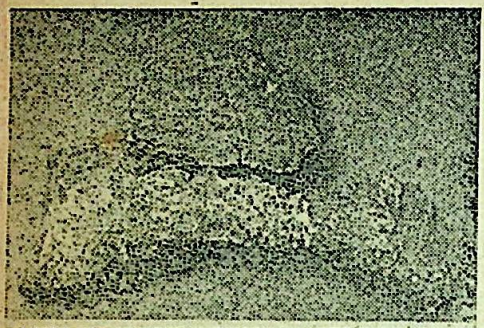

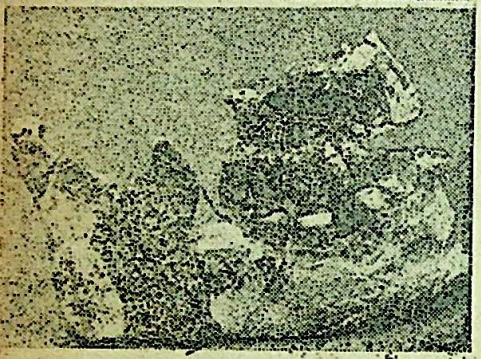

भारत में प्राचीनतम मानव का भीम बेटका से प्राप्त कपाल (ऊपर) और जबड़ा (नीचे)।

स्विट्जरलैंड के बासेल विश्वविद्यालय की कु. सूजन हास मेरे ही साथ उत्खनन कर रही हैं। उन्हें ऐतिहासिक युग का एक अस्थि-पंजर एक शैलाश्रय में मिला है। उसका भी अभी पूर्ण अध्ययन नहीं हो पाया है।

भीम बेटका उत्खनन की दो उपलब्धियां महत्त्वपूर्ण हैं। डेक्कन कालेज के डा. वी. एन. मिश्रा को III एफ-२३ में मध्याश्म युग की एक दीवार के आसार मिले हैं। शैलाश्रयों में उपकक्ष बनाने के लिए ये दीवारें खड़ी की गयी थीं। ऐसी ही एक दीवार मुझे III ए-३० में पूर्व से पश्चिम दिशा में तथा शैलाश्रय की समानांतर स्थिति में मिली हैं। यह विश्व की प्राचीनतम वास्तुओं में एक मानी जायेगी। अश्युलीय युग के अर्थात् आज से पचास हजार से एक लाख वर्ष पूर्व के ऐसे वास्तु अवशेष यूरोप व अफ्रीका में भी मिले हैं। भारत की यह प्रस्तर दीवार भी इसी युग की है।

मुद्राएं

१. आडिटोरियम III एफ-२४ निखात-दो में दो आहत ताम्रमुद्राएं मिली हैं, जो मौर्यकाल की हैं।

२. विनायका में बाबा शालिग्राम दासजी के भवन की नींव के लिए खोदे गये गड्ढे से भोपालशाही की आठ ताम्रमुद्राएं मिली हैं।

३. निखात III ए-३० में प्रथम स्तर में ऐसी ही दो मुद्राएं मिली हैं।

४. निखात III ए-२८ के प्रथम स्तर से मांडू के सुलतानों की मुद्राएं मिली हैं। निखात III ए-२८-२९ तथा ३० में परमारोत्तर काल की पर्याप्त कौड़ियां मिली हैं, जो निश्चय ही विनिमय के साधन के रूप में काम में लायी जाती थीं।

मनके

उत्खनन में प्राचीनतम अस्थि-लोलक III ए-२८ में बालक की अस्थियों के साथ मिला है। ताम्राश्म स्तरों से सभी निखातों से स्टीएटाइट के मनके मिले हैं। ऐतिहासिक स्तरों से शंख, कांच व धातु के मनके प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए हैं। वनवासियों में मनकों के आभूषणों के प्रति बड़ा आकर्षण होता है और यह ४,००० वर्ष पूर्व भी वैसा ही था।

उत्खनन में उत्तर पुराश्म युग तक के स्तरों में हिरन, सांभर, सूअर, मोर आदि की अस्थियां मिली हैं। वन्य फल-मूल के अलावा प्राणियों का शिकार करके उन्हें भूनकर खाना भी इन मानवों के भोजन का भाग रहा होगा। किंतु जिस पैमाने पर हड्डियां मिली हैं, उससे तो यही प्रतीत होता है कि मांस-भोजन नैमित्तिक ही रहा होगा।

नृत्यचित्रों एवं वेशभूषायुक्त आकृतियों को देखने पर लगता है कि इन चित्रों तथा वर्तमान गोंड, कोरकू भील, मारिया-उरांव नागा, टोडा आदि वनवासियों के लोक-नृत्यों के अध्ययन से तत्कालीन समाज-जीवन का अध्ययन किया जा सकता है।

भीम बेटका के शैलाश्रयों में अंकित चित्र मानो प्रागैतिहासिक मानव के आत्मचित्र हैं। उनका अध्ययन करते हुए हम मानो अश्मयुग में पहुंच जाते हैं। तब प्रागैतिहासिक जीवन की गुत्थियां हमारे समक्ष सुलझने लगती हैं। क्योंकि अश्मोपकरण जो कहानी नहीं कह सकते, उसें कहने में भित्तिचित्र समर्थ हैं।

इन चित्रों का सही मूल्यांकन किये बिना भारतीय कला का गौरवशाली इतिहास पूरा ही नहीं होगा। इन आद्य कलाकारों की कृतियों का हमारे कला-समीक्षकों ने अपनी कला-पुस्तकों में विवेचन नहीं किया है। आशा है, भविष्य में कला-समीक्षक, कला-इतिहासकार एवं पुराविद मानव की आद्यतम अनुभूतियों के इन चित्रणों की उपेक्षा नहीं करेंगे।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
भवन—भारती भवन, उज्जैन, म. प्र.
वाराणसी।
२५३

अय्यूब खां और मैं सैंडहर्स्ट में साथ थे और हम दोनों को कमिशन भी एक ही दिन मिला। मगर अचरज की बात है कि सेना में नियुक्ति के बाद मैंने उन्हें फिर तब तक नहीं देखा, जब तक वे पाकिस्तान के कमांडर-इन-चीफ नहीं बन गये। लंदन में एक समारोह में हमारी मुलाकात हुई। शिष्टाचार-वार्ता के बाद उन्होंने कुछ मजाक में और कुछ गंभीरता के साथ कहा कि भारतीय सेना की दिक्कत यह है कि उसे राजनीतिज्ञों को हैंडल करना नहीं आता। इस फब्ती का मेरे पास स्पष्ट उत्तर था—'भारत पाकिस्तान से ज्यादा अच्छी किस्म के राजनीतिज्ञ पैदा करता है।'

इसके कुछ ही सप्ताह बाद अय्यूब ने तमाम राजनीतिज्ञों की छुट्टी करके और देश की बागडोर हाथ में लेकर अपने सिद्धांतों को चरितार्थ भी कर दिया।

—जनरल जयंतनाथ चौधरी (निवृत्त)

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेख अयाज़ की दो कविताएं

पाकिस्तान में 'जिये सिंध' आंदोलन के प्राण हैं कवि शख अयाज़। उन्हें जेल के सींखचों के पीछे बंद करके चुप कराने की भरसक कोशिश पाकिस्तान सरकार ने की और आज भी वे यातनामय जिंदगी के दौर से गुजर रहे हैं।

शेख अयाज़ का स्वर बगावत का है। उनकी रचनाओं में विद्रोह और विस्फोट है, सिंध को मुक्त कराने की अदम्य लालसा है। वे एक उत्कट देशभक्त हैं, जिन्हें देश-द्रोही समझा जाता है। वही ओज, वही भाव-संसार शेख अयाज़ के पास भी है, जो नजरुल इस्लाम के पास था।

सीखचों के बाहर

सर्दी के मौसम में संगीनों से लैस
वर्दीधारी बूट वाले आते हैं,
उनके नापाक कदमों की आवाज
दूर से ही पहचान में आती है,
वे देहरी तक आ रुक जाते हैं,
डरे हुए, सहमे हुए
आतंकित और संदेहग्रस्त चेहरे (परिवार)
थरथर कांपते हैं।
वे दरवाजे पर दस्तक देते हैं निरंतर।
मैंने तो पहले ही कहा था 'बाबा' (पत्नी)
और बहरे आंसू गिरने लगते हैं,
'ऐसे गीत क्यों लिखते हो'
जो तुम्हें हथकड़ियों से जकड़ देते हैं,
तुम्हें देशद्रोही कह झूठे और कायर लोग
बक-बक करते हैं
उधर वे दरवाजे पर दस्तक देते हैं निरंतर।
दस्तक देते हैं .....

सृजन के कैद क्षण

दिवस ऊंट सदृश झक गया था,
ऊंट पर रखा जीन चमक रहा था।
घर से बाहर खसखस के फूल खिले थे,
उनकी लालिमा
आंखों को अपनी ओर
आकर्षित कर रही थी,
आकाश पर छाये
बादलों के देश में मैंने अपना
तंबू तान लिया था
बादलों में खो गया था;
आह, उसी वक्त खुली हथकड़ियां ले
वे कायर—आये; ऐ मेरे दोस्त
कैसे भूलूं उस यातना के क्षण को
उस पीड़ा को ?
लगा, सामने किसी खाई ने
अपना विशाल जबड़ा खोल लिया है,
किसी मगर ने उछलकर झपट्टा मारा है—
कल तक मदहोश
लाल-लाल खसखस के फूल
निमंत्रित करते थे, किंतु आज
रिसते घाव-से लगते हैं;
शाम याद दिलाती है
संध्या की उस हथकड़ी की,
जब अनुपम सृजन की घड़ी
कैद की गयी थी।

अनुवाद : पुरुषोत्तम अनासक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिकारी और अनधिकारी

सुरजीत

एक बार एक महात्मा किसी राजा की नगरी में आये। बड़े ज्ञानी और तपस्वी थे वे। सारी नगरी को उन्होंने अपने उपदेशों से मोह लिया था। धीरे-धीरे उनकी ख्याति राजमहल तक भी पहुंची। राजा दर्शनार्थ आया। उसने महात्मा से निवेदन किया—'महाराज, मुझे भी उपदेश दें।' महात्मा बोले—'आप राजा हैं; साधारण ढंग से तो आपको उपदेश नहीं दिया जा सकता। आप ऐसा एक मकान बनवाइये, जिसका एक ही द्वार हो।'

राजा ने आदेश जारी कर दिया और मकान बनाया जाने लगा। जब मकान पूरा हो गया, तो राजा ने महात्मा से कहा—'महाराज! मकान तो तैयार हो गया है। अब कृपया अपना वचन पूरा करें।' इस पर महात्मा बोले—'अभी कुछ काम बाकी है। कारीगरों को मेरे पास भेज दें।'

कारीगर आये। महात्मा ने उनसे कहा कि सारे मकान में इस तरह खंभे लगा दें कि उनके बीच बहुत थोड़ा-थोड़ा फासला हो। महात्मा का आदेश होते ही खंभे बना दिये गये।

फिर महात्मा ने राजा से कहा—'राजन्, अब आप इस मकान में विराजिये, ताकि मैं आपको उपदेश दे सकूं।'

राजा ने कहा—'महाराज! यह मकान, तो भीतर से खंभों से भरा पड़ा है। मैं इसमें कहां बैठ सकूंगा?'

महात्मा बोले—'इसी प्रकार राजन्, आपका मन भी भीतर से विषय-विकारों और राज-काज की चिंताओं से भरा पड़ा है। वहां किस प्रकार हमारा उपदेश बैठ सकता है? इसलिए जैसे इस मकान में बैठने के लिए कुछ खंभे गिराने आवश्यक हैं, उसी तरह पहले आप अपने मन को साफ करके उपदेश लेने के अधिकारी बनने का प्रयत्न करें। जब आपके मन के भीतर उपदेश के लिए स्थान बन जायेगा तो कोई भी उपदेश स्वयं ही उस स्थान में निवास कर लेगा—उपदेशक चाहे मैं होऊं, चाहे अन्य कोई हो।'

—सी-३४, सुदर्शन पार्क, मोती नगर,
नयी दिल्ली-१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व की अन्न-समस्या

देश में अनाज का जितना टोटा पड़ता है, उसे हम अक्सर विदेश से अनाज मंगाकर पूरा करते रहे हैं। कल्पना कीजिये, कल यदि विदेशी मंडियों के अन्न-गोदाम खाली हो गये, तो क्या होगा ? वस्तुतः अब यह निरी कल्पना की बात रह भी नहीं गयी है। अंतरराष्ट्रीय खाद्य-विशेषज्ञ दुनिया के तेजी से खाली हो रहे अन्नभंडारों को लेकर चिंताग्रस्त हैं। उनका कहना है कि यदि यही हालत चलती रही, तो सारी दुनिया में खाद्य-समस्या अत्यंत विकराल रूप धारण कर लेगी और मुमकिन है कि दुनिया के कई हिस्सों में लाखों लोग भूख से मर जायें। यह अलग से कहने की आवश्यकता नहीं कि इन अकालों की सबसे डरावनी छाया एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के निर्धन देशों के गरीब वर्गों पर पड़ेगी।

अन्न की कमी का संकट एकदम नया तो नहीं है। दुनिया की ४ अरब आबादी में से ४० करोड़ लोग तो पर्याप्त और संतुलित भोजन न मिलने के कारण पहले से ही कुपोषण के शिकार हैं। भोजन में विटामिन ए की कमी के कारण भारत तथा पूर्व एशियाई देशों में लगभग १ लाख बच्चे हर साल आंखों की रोशनी खो बैठते हैं, और दक्षिण अमरीका में आधे से अधिक बच्चे रक्त की कमी से पीड़ित रहते हैं। इसके अतिरिक्त भारत-सहित विभिन्न एशियाई-अफ्रीकी देशों में सूखा, अन्नाभाव और अकाल जब-तब नर-बलि लेते रहते हैं। पश्चिम अफ्रीका के सहेल क्षेत्र में भयानक अकाल से लोगों के मरने का सिलसिला बड़े पैमाने पर राहत-कार्यों के बावजूद अभी पूरी तरह थमा नहीं है।

इन कठोर सचाइयों के बीच यदि दुनिया के खाद्य-विशेषज्ञ अन्न-समस्या के प्रति अब तक असावधान रहे, तो उसका एक ही कारण था—हरित-क्रांति पर जरूरत से ज्यादा भरोसा। सन १९६१ से ७० तक के दशक में अधिकांश विशेषज्ञ यह आशा लगाये बैठे थे कि खाद्य के मामले में पराश्रयी एशियाई, अफ्रीकी, दक्षिण अमरीकी देशों को रासायनिक उर्वरकों और आधुनिक कृषि-उपायों की सहायता से कुछ ही वर्षों में आत्मनिर्भर बना दिया जा सकेगा और इस तरह अन्न-समस्या सदा के लिए हल हो जायेगी।

इस बीच खाद्य-संकट की विशेष चिंता करने की जरूरत भी नहीं थी; क्योंकि दूसरे महायुद्ध के उपरांत से अनाज का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पादन जनसंख्या की तुलना में अधिक तेज रफ्तार से बढ़ रहा था। उदाहरण के लिए, १९५१-६० वाले दशक में विकसित तथा विकासशील देशों में अनाज का उत्पादन औसतन ३·१ प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ा और १९६१-७० में यह औसत दर २·७ प्रतिशत रही।

लेकिन १९७२ तक, भावी अन्न-संकट की छाया उभरने और काफी-कुछ डरावना रूप धारण करने लगी थी। वर्षा की कमी के कारण दुनिया-भर में फसलें तबाह हुईं। महायुद्ध के बाद पहली बार सारे विश्व में अन्न-उत्पादन में जबर्दस्त कमी हुई और खाद्य की दृष्टि से अत्यंत नाजुक स्थिति पैदा हो गयी।

इस अन्न-संकट के कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कारण भी थे। उदाहरण के लिए, अन्न-

लेखक : प्रयागनारायण

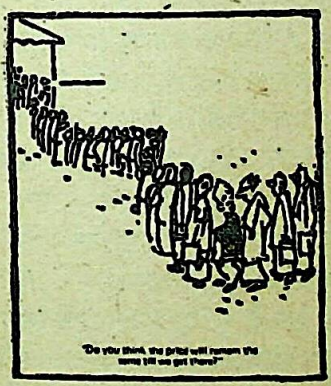

क्या हमारे वहां पहुंचने तक दाम यही बने रहेंगे? (मूर्ति : 'डेक्कन हेराल्ड' में)

कहवत है—दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम। मगर आज करोड़ों लोगों को अपने नाम वाले दाने कहीं नजर नहीं आते।

उत्पादन-वृद्धि की दर का अंतरराष्ट्रीय औसत वस्तुस्थिति पर परदा डालने वाला था।

वस्तुतः उत्पादन यूरोप-अमरीका के धनी देशों में ही तेजी से बढ़ा था। घरेलू मांग से अधिक उत्पादन होने से अनाज के भावों में होने वाली गिरावट को रोकने के लिए इन धनी देशों ने कम अनाज उपजाने की नीति अपनायी। संयुक्त राज्य अमरीका में तो किसानों को अपनी जमीन परती रखने के लिए बड़ी-बड़ी रकमें दी गयीं। दूसरी ओर, एशिया-अफ्रीका के विकासशील देशों में बहुत कोशिश करने पर भी उत्पादन-वृद्धि की दर लड़खड़ाती रही। जोर्डन, कांगो आदि छह विकासशील देशों में तो उत्पादन घट ही गया। दूसरे ३६ विकासशील देश १९६१-७० की अवधि में अपने यहां हुई जनसंख्या-वृद्धि के अनुपात में अन्न-उत्पादन बढ़ा नहीं पाये।

यह स्थिति राष्ट्रसंघ के खाद्य-कृषि संघटन की 'निर्देशात्मक विश्व योजना' में रखे गये लक्ष्य से कितनी भिन्न थी! उस योजना में कहा गया था कि मानव-समाज को कुपोषण तथा अल्पपोषण के गंभीर खतरों से बचाने के लिए १९६३ से १९८५ के बीच अन्न-उत्पादन में सालाना ३·८ प्रतिशत की दर से वृद्धि करनी पड़ेगी। लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९७० तक यह स्पष्ट हो गया कि एशिया-अफ्रीकी देश इस लक्ष्य को क्रियान्वित नहीं कर पाये हैं। सच तो यह है कि १९५९ के बाद इन देशों में प्रतिव्यक्ति अन्न-उत्पादन में शायद ही कोई उल्लेखनीय वृद्धि हुई हो।

ऐसी स्थिति में १९७१-८० के दशक के लिए तय किया गया सालाना ४ प्रतिशत उत्पादन-वृद्धि का लक्ष्य तो और भी मुश्किल लगने लगा। तभी तो १९७२ के अंत में राष्ट्रसंघ के खाद्य-कृषि संघटन के महानिदेशक एद्देके बायर्मा यह चेतावनी देने को विवश हुए कि १९७१ और ७२ में अन्न-उत्पादन में कुल मिलाकर २ प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हुई है, जबकि इन दो वर्षों में जनसंख्या ५ प्रतिशत से अधिक बढ़ी है। कोई चमत्कार हो जाये तो बात दूसरी है, वरना कृषि के क्षेत्र में राष्ट्रसंघ के 'दूसरे विकास दशक' के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य का पूरा होना अब संभव नहीं है।

एद्देके बायर्मा की चेतावनी तथ्य-संमत थी। १९७२ में ही अन्न-उत्पादन निर्धारित लक्ष्य के अनुसार २·५ करोड़ टन बढ़ने के बजाय ३ करोड़ टन कम हो गया था। गनीमत यह थी कि तब तक धनी देशों की मंडियों में निर्यात के लिए काफी अनाज था। सो १९७१ के १० करोड़ ८० लाख टन की तुलना में उस साल १३ करोड़ टन अनाज धनी देशों ने निर्यात किया। और रूस ने इस निर्यात का एक चौथाई अन्न खरीदकर अपने पास जमा कर लिया; क्योंकि उसने संभावित अन्न-संकट का अंदाज लगा लिया था। इस सब का नतीजा यह निकला कि अंतरराष्ट्रीय गोदामों में दुनिया की केवल एक महीने की खपत के लायक अनाज रह गया, जबकि पहले अक्सर तीन महीने की खपत के लिए पर्याप्त अन्न रहता था।

भाग्यवश १९७३ में फसलें अच्छी हुईं। विश्व का अन्न-उत्पादन १९७१ की तुलना में ५ करोड़ टन बढ़कर १ अरब २५ करोड़ टन हो गया। १९७३ में उत्तर अमरीका तथा रूस में तो गेहूं की फसलें अच्छी उतरीं ही, समुचित वर्षा के कारण पूर्व एशिया में भी भरपूर चावल हुआ। तो भी अनेक अफ्रीकी देशों में पैदावार घट गयी। समस्त विकासशील देशों की दृष्टि से देखें, तो वे १९७३ में अच्छी फसल के बावजूद प्रति-व्यक्ति अन्न-उत्पादन में १९७० की तुलना में पिछड़ गये थे।

सन १९७० के अन्न-उत्पादन तथा खपत के आंकड़े दुनिया के गरीब और अमीर देशों के बीच की विषमता को खोलकर रख देते हैं। १९७० में विकासशील गरीब देशों के प्रति नागरिक ने औसत ४२० पौंड अन्न खाया। इसकी तुलना में विकसित अमीर देशों के औसत नागरिक ने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से करीब १ टन अन्न खपाया। वस्तुतः उसने खुद तो सिर्फ १५० पौंड ही अन्न खाया, लेकिन बाकी अन्न उसने दूध, मांस और अंडे आदि के लिए जानवरों व मुर्गियों को खिलाया। दूसरे शब्दों में,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूरोप-अमरीका के धनी देशों के जानवरों ने भारत तथा चीन की समूची आबादी की ज्यादा अन्न खाया।

सच तो यह है कि धनी देशों में रहने वाले दुनिया के कुल एक तिहाई नागरिक सारी दुनिया की अन्न-उपज का आधे से अधिक हिस्सा खपा देते हैं। विश्वव्यापी अन्न-संकट के गहरा होने पर भी ये ही धनी देश फायदे में रहते हैं; क्योंकि उनके नागरिक अधिक धन-संपन्न होने के कारण ऊंचे से ऊंचे भावों पर भी अपने लिए और अपने जानवरों के लिए अन्न खरीद सकते हैं, जबकि एशिया-अफ्रीका के गरीब देशों के बच्चे भूख से सिर्फ बिलबिला सकते हैं।

सन १९७२ के आरंभ से इस वर्ष के शुरू तक अंतरराष्ट्रीय मंडियों में अनाज के भावों में जो तेजी आयी, वह इस बात को और भी स्पष्ट कर देती है। इस अवधि में अमरीकी गेहूं का निर्यात-भाव ६० डालर प्रति टन से बढ़कर २२० डालर प्रति टन और पीली मक्का का निर्यात-भाव ५१ डालर प्रति टन से बढ़कर १३१ डालर प्रति टन हो गया। इसी तरह थाइलैंड के चावल का निर्यात-भाव १३१ डालर प्रति टन की जगह ५९५ डालर प्रति टन हो गया।

अनाज के भावों में यह भयंकर वृद्धि यों तो सभी देशों के नागरिकों को काटती है; परंतु हमसे २० से लेकर ४० गुना ऊंचे जीवन-यापन-स्तर और बीसियों गुना अधिक प्रतिव्यक्ति आय वाले धनी देशों के बाशिंदे इसे आसानी से बर्दाश्त कर सकते हैं,

[चित्र : व्यंग्य-चितेरे विकी की तूलिका से]

जबकि हमारे जैसे निर्धन देशों के औसत नागरिकों के लिए यह साक्षात् जीवन-मरण का प्रश्न बनता जा रहा है।

ऊर्जा और तेल का विश्वव्यापी संकट भी इस समस्या को विकटतर बनाने में हाथ बंटा रहा है। ऊर्जा-तेल-संकट के कारण माल-ढुलाई की दरें पांच गुना तक बढ़ गयी हैं। अमरीका से कलकत्ता पहुंचने में ही ५० से ६० डालर प्रति टन का ढुलाई-भाड़ा अनाज के भावों में जुड़ जाता है।

यही नहीं, इस संकट के कारण भारत आदि सभी विकासशील देशों में डीजल से चलने वाले आधुनिक कृषि-उपकरणों और सिंचाई-यंत्रों का चलना मुश्किल हो रहा है। कारखानों में रासायनिक खाद का भी पूरा उत्पादन नहीं हो पा रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में जितना रासायनिक उर्वरक उपलब्ध है, वह अमरीका और रूस के खेतों में पैदावार बढ़ाने के काम आ रहा है। चढ़ते दामों पर उर्वरक खरीदना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्धन देशों के बूते के बाहर होता जा रहा है। उर्वरकों और डीजल के अभाव ने हमारे अपने देश में पिछली फसल कमजोर कर दी; मौजूदा फसल की भी हालत कोई बहुत अच्छी नहीं है।

इसी बिगड़ती परिस्थिति को दृष्टि में रखकर इस वर्ष नवंबर में रोम में राष्ट्रसंघ के खाद्य-कृषि संघटन के तत्त्वावधान में विश्व खाद्य-संमेलन हो रहा है। इसमें कृषि-उत्पादन तथा संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञ विश्वव्यापी खाद्य-संकट के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे व आसन्न संकट के तात्कालिक तथा स्थायी समाधान सोचेंगे।

कुछ अध्ययनों के अनुसार, सन १९८५ तक विश्व का खाद्य-संकट काफी विकट रूप धारण कर सकता है। बात यह है कि इस बीच एक ओर विश्व की जनसंख्या औसतन २ प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ती रहेगी; दूसरी ओर खाद्य की मांग में भी सालाना २.५ प्रतिशत की वृद्धि होती रहेगी। इस मांग को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष २४ करोड़ टन अनाज, २० करोड़ टन मांस व दूध और २० करोड़ टन फल-सब्जियों आदि की अतिरिक्त आवश्यकता पड़ेगी।

यह भी अनुमान लगाया गया है कि इसी अवधि में खाद्य-उत्पादन में औसतन २.७ प्रतिशत की वृद्धि होगी। विकसित तथा धनी देशों में उत्पादन में २.८ प्रतिशत वृद्धि होगी, मगर अन्न की मांग सिर्फ १.६ प्रतिशत बढ़ेगी; इसकी तुलना में विकासशील तथा निर्धन देशों में मांग ३.७ प्रतिशत बढ़ेगी, जबकि उपज में सिर्फ २.६ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि होगी। यानी आने वाले दस-बारह वर्षों में थाइलैंड आदि कुछ एक अन्न-निर्यातक विकासशील देशों को छोड़कर शेष सभी विकासशील देशों को प्रतिवर्ष कुल मिलाकर औसतन ८॥ करोड़ टन से लेकर १० करोड़ टन तक अनाज बढ़े-चढ़े भावों पर विदेशों से खरीदना पड़ेगा।

रोम में होने वाला विश्व खाद्य-संमेलन इस सारे मसले का कारण-विवेचन और उपचार-विधान करेगा। लेकिन कुछ बातें अभी से स्पष्ट और सर्वसंमत हैं। उदाहरणार्थ, भारत-सहित अधिकांश विकासशील देशों में कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान की सरासर उपेक्षा हुई है। १९६५-६६ के भयानक दुष्काल तक तो हमारे आयोजक मानते रहे कि अकेले औद्योगीकरण के माध्यम से देश की सारी समस्याएं हल हो जायेंगी।

इस नीतिदोष के कारण बड़ी अटपटी स्थिति पैदा हुई है। चीन को छोड़कर शेष विकासशील देशों में विश्व-भर की आधी कृषियोग्य भूमि है, फिर भी इन देशों में विश्व-भर के सिर्फ १७ प्रतिशत कृषि-वैज्ञानिक हैं; और ये देश कृषि-अनुसंधान पर सारी दुनिया में खर्च होने वाली रकम का सिर्फ ११ प्रतिशत खर्च करते हैं। इससे भी दुःख की बात यह है कि इस रकम का भी काफी बड़ा हिस्सा विकसित देशों की कृषि-पद्धतियों की आंख मूंदकर नकल करने में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खर्च हो जाता है।

ओटावा के इंटरनेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर के डा. बेरी नेसल ने इसी विसंगति का उल्लेख करते हुए कहा है—'हम लोग अक्सर (विकासशील देशों के) कृषकों की समस्याओं के सुलझाव के लिए नयी तकनीकों का विकास करने के बजाय विकसित देशों की तकनीकों को (इन) कृषकों के अनुरूप ढालने की ही कोशिश करते रहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ विकासशील देशों में विभिन्न फसलों में रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल के बावजूद अच्छी उपज नहीं हुई। कारण, जब फसलों में दूसरी और तीसरी बार उर्वरक देने का समय आता है, तब तक इन देशों के गरीब काश्तकारों के पास उर्वरक खरीदने के लिए पैसे ही नहीं बच पाते!'

विकासशील देशों में कृषि की वर्तमान अवनत दशा के दो और महत्त्वपूर्ण कारण कृषि-विशेषज्ञ बताते हैं:

१. इन देशों में खेती अभी भी व्यवसाय के बजाय जीवन-निर्वाह का ढंग है। परिणामतः ज्यादातर छोटे किसान अभी भी भरण-पोषण जितनी जमीन बोने की ही बात सोचते हैं। उनके सीमित साधन भी इसके लिए उन्हें विवश करते हैं।

२. अधिकांश विकासशील देशों में सरकारें किसानों की तुलना में शहरी व्यापारियों तथा मध्यवर्ग के हितों को तरजीह देती हैं। परिणामस्वरूप, न तो किसानों को समय पर उर्वरक मिल पाता है और न बीज! इतना ही नहीं, लालफीताशाही के कारण इन देशों का प्रशासनतंत्र विश्वखाद्य-कृषिसंघटन से मिलने वाले परामर्श पर भी यथासमय और दृढ़तापूर्वक अमल नहीं करता।

निःसंदेह ये सब मानवीय भूलें हैं और अन्न-उत्पादन में वृद्धि के लिए इनका निवारण होना चाहिये। लेकिन कतिपय ऋतु-विशेषज्ञों ने जो भविष्यवाणियां की हैं, वे तो काफी भयावह हैं। इन विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले ५० वर्षों में पृथ्वी का मौसम अन्न-उत्पादन बढ़ाने में सहायक रहा है; परंतु मुमकिन है कि अगले ५० वर्षों में वह इतना अनुकूल न रहे। यदि यह अनुमान सही है, तो निश्चय ही अन्न-संकट परमाणु-संकट से कम खतरनाक नहीं रहेगा।

आशंकाओं के इस घोर आतंककारी वातावरण में संतोष की बात सिर्फ इतनी कि ऋतु-विशेषज्ञों की भविष्यवाणियां प्रायः गलत निकला करती हैं।

★

शाम को अपने बॉय फ्रेंड के साथ किसी पार्टी में जाती हुई बेटी से मां ने कहा—'आठ बजने से पहले घर लौट आना।'

'तुम तो खामख्वाह डर रही हो मां, अब मैं बच्ची नहीं हूं।'

'इसीलिए तो कह रही हूं कि आठ बजे तक घर आ जाना।' मां बोली।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केजिता

विज्ञान-बिंदु

आदमी की उम्र बढ़ जाने पर दूसरी बहुत-सी चीजों के साथ उसकी याददाश्त भी उसका साथ छोड़ने लगती है। आदमी तो बूढ़ा होता ही है, उसके साथ-साथ उसकी याददाश्त भी बूढ़ी होने लगती है। आखिर इसकी वजह क्या है ?

इसका एक उत्तर प्रस्तुत किया है जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कालेज (मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़) के शरीररचना-शास्त्र विभाग के प्रो. मेहदी हसन तथा पश्चिम जर्मनी के गाटिंगजेन विश्वविद्यालय के प्रो. पाल ग्लीस ने। इन खोजकर्ताओं का कहना है कि वृद्धावस्था में मनुष्य के मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार का रसायन जमा हो जाता है, जो दिमाग की सक्रियता को कम कर देता है। उन्होंने इस पदार्थ का नाम रखा है—'एज पिग्मेंट'।

डा. हसन हाल में भारत लौटे हैं। वे बताते हैं कि परीक्षण के दौरान दिमाग के हिपोकैम्पस भाग में 'एज पिग्मेंट' बड़ी मात्रा में जमा पाया गया है। दिमाग का यही भाग याद करने और याद रखने का काम करता है। रासायनिक विश्लेषण से यह बात सामने आयी है कि 'एज पिग्मेंट' का एक मुख्य अवयव है—लिपिड-प्रोटीन-काम्पलेक्स। डा. हसन के अनुसार, यह अवयव मस्तिष्क और हृदय की अविभाजी कोशिकाओं में रहने वाला एक निष्क्रिय कण मात्र है। समय पाकर यह अपशिष्ट (वेस्ट मैटर) के रूप में जमा होता जाता है। इस पदार्थ को आसानी से वहां से हटाना मुमकिन नहीं है और बढ़ती उम्र के साथ यह मस्तिष्क के दूसरे हिस्से में भी फैलना शुरू कर देता है।

इस हानिकारक पदार्थ को नष्ट करने के प्रयत्नों में एक आश्चर्यजनक औषध की खोज हो सकी है। इसका नाम है—डाईमेथिल एमीनो-एथिलक्लोरोफिनोक्सी एसीटेट अथवा हिलफरजिन। इसे अनेक पशुओं पर लगातार आठ सप्ताह तक आजमाया गया और उसके पश्चात् उनकी स्मरण-शक्ति के अनेक परीक्षण किये गये। उनसे यह बात साबित हो चुकी है कि दवा माकूल असर करती है और उससे स्मरण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति में सुधार होता है।

पश्चिम जर्मनी के हमबेट फाउंडेशन ने डा. हसन को चार लाख रुपये की कीमत के वैज्ञानिक उपकरण पुरस्कार-स्वरूप प्रदान किये हैं, ताकि वे इस विषय पर शोधकार्य को आगे बढ़ा सकें।

ध्वनि-अपध्वनि

अति हर चीज की ही बुरी होती है। आवाज बहुत धीमी हो तो सुनना मुश्किल, अगर बहुत तेज हो तो जीना हराम। जी हां, तेज ध्वनि-तरंगें मनुष्य की मृत्यु तक का कारण बन सकती हैं। यह बात प्रो. ई. एच. ग्रौल ने हाल ही में एक चिकित्सा-शास्त्रीय पत्रिका में कही है। प्रो. ग्रौल मारबर्ग विश्वविद्यालय के 'हास्पिटल फार न्यूक्लियर मेडिसिन' के अध्यक्ष हैं।

डा. ग्रौल के मुताबिक ८० डेसिबेल तक की ध्वनि-तरंगों को आदमी बरदाश्त कर सकता है। यानी इस सीमा तक उसे किसी प्रकार के नुक्सान का खतरा नहीं है। पर १५० डेसिबेल की तरंगें आदमी को बहरा बना सकती हैं; १५५ डेसिबेल की तरंगें उसकी त्वचा को जला सकती हैं और १८० डेसिबेल की तरंगें उसकी मौत का कारण बन सकती हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि अनेक बड़े देशों ने ऐसे ध्वनि-हथियारों का निर्माण कर लिया है, जो २०० डेसिबेल की ध्वनि-तरंगें पैदा कर सकते हैं। यानी नरसंहार के लिए जो भी सामान मिल सके, उसे जुटाया जा रहा है।

दूसरी तरफ ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने एक और ही कमाल का काम किया है। उन्होंने एक ऐसे उपकरण का विकास कर लिया है, जिसकी सहायता से वे अपध्वनि (एन्टि साउंड) पैदा करके ध्वनि के हानिकारी प्रभाव को बेकार कर सकते हैं। इसे अब पेटेंट भी कराया जा चुका है।

इस आविष्कार के लिए पहले तो हानिकारी ध्वनि-तरंगों की रूप-रचना (शेप) का विस्तृत अध्ययन किया गया। फिर एन्टी साउंड जेनरेटर (अपध्वनि जनित्र) का विकास किया गया, जो ठीक विपरीत रूप-रचना वाली ध्वनि-तरंगें पैदा कर सके। इस प्रकार ये दोनों तरंगें एक-दूसरे के विपरीत स्वभाव की होने के कारण एक-दूसरे को प्रभावहीन बना देती हैं।

फाल-आउट से छुटकारा

परमाणु-विस्फोटों का एक खतरनाक पहलू है, उनसे निकलने वाला फाल-आउट। यह पदार्थ रेडियो-सक्रिय होने के कारण मानव-जाति ही क्या, प्राणिमात्र के लिए हानिकारक है। इस पदार्थ को कैसे निपटाया जाये, यह प्रश्न वैज्ञानिकों के लिए काफी समय से चुनौती बना हुआ है। एक सुझाव यह सामने आया था कि क्यों न फाल-आउट को इन चंद्रमा आदि पिंडों पर भेजकर उससे छुटकारा पा लिया जाये। परंतु इसका यह कहकर विरोध किया गया कि अन्य ग्रहों अथवा उपग्रहों को दूषित करने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है। दलील में वजन था और इसलिए यह विचार छोड़ दिया गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रो. ब्लैकेट के कार्य

प्रो. पैट्रिक ब्लैकेट को 'विल्सन अभ्रकक्ष के विकास और न्यूक्लीय भौतिकी एवं ब्रह्मांड-विकिरण के क्षेत्र में खोजों के लिए' १९४८ में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

न्यूक्लीय भौतिकी में प्रायोगिक अनुसंधान का दारोमदार रहता है विद्युतीय परमाणु-कणों द्वारा गैस में (जिसमें से वे गुजरते हैं) आयनीकरण पर। इस तथ्य के आधार पर सबसे पहले आविष्कार हुआ गाइगर-गणक (गाइगर काउंटर) का, जिससे परमाणु-कण गिने जा सकते हैं। फिर १९११ में ब्रिटिश विज्ञानी विल्सन ने अभ्रकक्ष बनाया। अभ्रकक्ष में गैस भरी हुई होती है और इसमें से विकिरण गुजारा जाता है। कक्ष के अचानक विस्तार से गैस ठंडी होती है, जिससे विकिरण द्वारा उत्पन्न आयनों के मार्ग पर तत्काल जलकण बन जाते हैं। इन्हें समुचित प्रकाश डालकर देखा और इनका चित्र लिया जा सकता है।

ब्लैकेट का कार्य मुख्य रूप से विकिरण में पाये जाने वाले भारी कणों से संबंधित है। उन्होंने १९२५ में नाइट्रोजन पर एल्फा कणों के प्रहार से उत्पन्न प्रोटान का प्रथम चित्र लिया, जो पिछले पचास वर्षों में छपी लगभग सभी भौतिकी की पुस्तकों में पाया जाता है।

सन १९३२ में ब्लैकेट को ब्रह्मांड-किरणों में रुचि जागी। अमरीकी विज्ञानी एंडरसन ने उन्हीं दिनों कुछ ऐसे कणों के मार्गों (ट्रैक) के चित्र लिये थे, जिनसे मुक्त 'धनात्मक इलेक्ट्रान' के अस्तित्व की संभावना प्रकट होती थी। 'धनात्मक इलेक्ट्रान' (वर्तमान नाम-पॉजिट्रान) की ऋणात्मक इलेक्ट्रान से संयुक्त होने की अत्यधिक प्रवृत्ति होने से, पॉजिट्रान के अस्तित्व को दृढ़तापूर्वक स्वीकारना कठिन था।

ब्लैकेट ने अपने सहयोगी ओचालिनी के साथ स्वयंचलित अभ्रकक्ष का निर्माण किया। (वैज्ञानिक उपकरण रचने की अद्भुत क्षमता उनमें थी।) इस अभ्रकक्ष में उन्होंने दो मार्ग देखे। चुंबकीय क्षेत्र में ये मार्ग दो प्रतिकूल दिशाओं में मुड़ जाते थे, जिससे सिद्ध हुआ कि उनका आवेश परस्पर विरोधी है। कक्ष की दीवार इन मार्गों का स्रोत जान पड़ती थी। ब्रिटिश विज्ञानी सर जेम्स चैडविक के सहयोग से ब्लैकेट ने प्रस्थापित किया कि कठोर गामा किरणों से दो प्रति-आवेशित इलेक्ट्रान उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार पॉजिट्रान का अस्तित्व (जिसकी संभावना ब्रिटिश विज्ञानी डिराक ने अपने इलेक्ट्रान-प्रमेय के आधार पर पहले ही बतायी थी) असंदिग्ध रूप से सिद्ध हुआ। ब्लैकेट के इस कार्य का अत्यधिक महत्त्व है। इसके द्वारा उन्होंने दरशाया कि प्रकाश (गामा किरणों के रूप में) को पदार्थ (कण) में बदला जा सकता है। इससे उलटी क्रिया भी संभव है।

बाद में ब्लैकेट ने चट्टानों में चुंबकत्व का अध्ययन किया, जिससे इस संभावना को बल मिला कि महाद्वीप एक दूसरे से दूर हो रहे हैं। उनकी खोजों का भूगर्भशास्त्रीय सिद्धांतों पर गहरा प्रभाव है।

—डा. मोहन रामचंदानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे तरीके सोचे जाने लगे। एक रास्ता सुझाया है क्लीवलैंड (ओहियो, अमरीका) के नेशनल एरोनाटिक्स एंड स्पेस सेंटर के अध्यक्ष राबर्ट हाइलैंड ने। उनका कहना है कि परमाणु विस्फोट के अपशिष्ट पदार्थों को एक अंतरिक्ष-वाहन द्वारा अपने सौर मंडल के बाहर भेज देना अब असंभव नहीं रह गया है। इस संभावना पर काफी अध्ययन किया गया है और उसी के आधार पर हाइलैंड ने यह बात कही है। उम्मीद है, १९८० तक यह व्यवस्था शुरू की जा सकेगी।

इस शताब्दी के अंत तक अकेले संयुक्त राज्य अमरीका के पास लगभग १० टन परमाणु-अपशिष्ट जमा हो जायेंगे। इस बढ़ते हुए भंडार से चिंतित होकर ही अमरीकी परमाणु-ऊर्जा आयोग ने 'नासा' के वैज्ञानिकों से इस बात की जांच-पड़ताल करने के लिए कहा था। उसकी बनायी योजना के अनुसार, पहले इस सामग्री को एक उच्च कक्षा में रखा जायेगा, फिर सौर-कक्षा में भेजा जायेगा, और अंत में वहां से इसे सौर मंडल के बाहर फेंक दिया जायेगा।

एक वाहन में लगभग २० किलोग्राम अपशिष्ट भेजा जा सकेगा। अनुमान है, १९९०-९५ के बीच प्रतिवर्ष ५० से लेकर १०० तक अपशिष्ट-वाहक अंतरिक्ष-वाहन पृथ्वी से रवाना करने पड़ेंगे।

स्वस्थ विकसित बच्चे

मानसिक रूप से अल्पविकसित बच्चे मां-बाप और समाज दोनों के लिए समस्या

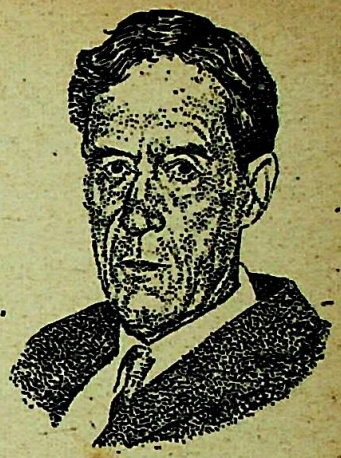

विख्यात ब्रिटिश विज्ञानी प्रो. ब्लैकेट (मृत्यु: १३ जुलाई १९७४) भारत के विशिष्ट मित्रों में थे। भारत सरकार की विज्ञाननीति के विकास में उनका हाथ था। एक बार एक मित्र ने उनका फोटो देखकर कहा था कि इसमें आप बहुत ही गंभीर दिखते हैं। उनका उत्तर था – 'हां, बहुत गंभीर आदमी हूं।' बिना गंभीरता के शायद मौलिक अनुसंधान हो भी नहीं पाता।

बने रहते हैं। ऐसे बच्चों को अपना अधिकांश जीवन जिस ढंग से बिताना पड़ता है, वह स्वस्थ और सामान्य व्यक्तियों जैसा नहीं होता। चिकित्सा-विज्ञान का असाधारण विकास भी उनकी विशेष मदद नहीं कर पाया है।

तीन भारतीय आयुर्वेद शोधकर्ताओं ने हाल में एक बयान में घोषणा की है कि वे एक ऐसी औषधि का विकास करने में सफल हो गये हैं, जो अल्पविकसित बच्चों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की स्थिति में सुधार लाने में सहायक है। मंडूलिकापर्णी (सेन्टेला एशियाटिका) नामक पौधे से यह दवा प्राप्त की गयी है।

मद्रास के वालन्टरी हेल्थ सर्विसेज मेडिकल कालेज से संबद्ध डा. एम. वी. आर. अप्पाराव, कंचन श्रीनिवासन् तथा डा. टी. कोटेश्वर राव ने अपने प्रयोगों के दौरान तीस अल्पविकसित बच्चों पर परीक्षण किये। उनका कहना है कि बारह सप्ताह तक लगातार इस दवा का सेवन कराने के पश्चात् बच्चों की सामान्य योग्यता और उनके व्यवहार के पैटर्न में काफी सुधार पाया गया। ये बच्चे सात और अठारह वर्षों के बीच की आयु के थे और मानसिक रूप से अल्पविकसित बच्चों के एक सुधारालय में रहते थे। इनमें से आधे बच्चों को मंडूलिकापर्णी से तैयार की गयी दवा की आधे ग्राम की एक टिकिया रोज दी गयी थी। शे आधे बच्चों को सिर्फ स्टार्च दिया गया, जिसमें उक्त दवा संमिलित नहीं थी।

प्रारंभ में और फिर दवा देने के छह सप्ताह पश्चात् बच्चों की बौद्धिक क्षमता, का मूल्यांकन किया गया। पहले वर्ग के बच्चों में प्रगति की मात्रा ७·६ प्रतिशत थी, जब कि दूसरे वर्ग के बच्चों में केवल ३ प्रतिशत प्रगति देखी गयी।

शोधकर्ताओं का कहना है कि दवा के प्रभाव से कुल मिलाकर बच्चों में जो सुधार दिखाई दिया, वह काफी उत्साहजनक कहा जा सकता है। जो बच्चे बहुत शरमीले थे और गुमसुम रहते थे, वे दूसरों से मिलने-जुलने और बातचीत करने में रुचि लेते पाये गये। इसके अलावा कुछ बच्चे ऐसे थे, जो हमेशा उत्तेजित और अशांत रहते थे और आपस में लड़ते-झगड़ते देखे जाते थे। मंडूलिकापर्णी के सेवन से उनकी प्रकृति-प्रवृत्ति में काफी फर्क देखने में आया। उनमें पहले की तुलना में परस्पर सहयोग और मेलजोल की भावना अधिक पायी गयी।

यदि डा. अप्पाराव और उनके साथियों के शोधकार्य के परिणामस्वरूप मानसिक रूप से अल्पविकसित बच्चों का मानसिक-बौद्धिक सुधार करके उन्हें सहज-स्वस्थ बच्चों जैसा बनाया जा सके, तो यह मानव-जाति की बहुत बड़ी सेवा होगी।

ड्राइवर बड़ी सावधानी से कार चला रहा है। मगर पीछे से दूसरी कार आकर टक्कर मार देती है और दुर्घटना हो जाती है। देखा गया है कि अमरीका में होने वाली कुल मोटर दुर्घटनाओं में २५ प्रतिशत इसी तरह होती हैं। इसलिए अमरीकी कंपनी आर. सी. ए. ने एक ऐसे राडार उपकरण का नमूना तैयार किया है, जो आगे चल रही कार का हिसाब रखता है और जब दो कारों के बीच का अंतर सुरक्षा की दृष्टि से ठीक न रहे तो खतरे की घंटी बजा देता है। यह उपकरण डैश-बोर्ड पर लगाया जाता है और दो कारों के बीच की दूरी को अंकों में भी दिखाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजाजी : प्रशासक और अनुशासक

टी. एस. राजु शर्मा

डा. राजन् मद्रास की राजनीति में काफी लोकप्रिय और प्रभावशाली थे। सावरकर के साथ रहकर आतंकवादी आंदोलन का संचालन मद्रास प्रांत में उन्हीं ने किया था। फिर आतंकवाद छोड़कर गांधीवादी नीति ग्रहण करके वे राजाजी के शिष्य हो गये थे। राजाजी उन्हें बहुत मानते थे और उन्होंने तिरुच्चि जिले में कांग्रेस का कार्य डा. राजन् पर छोड़ रखा था। परंतु संस्था का अनुशासन उन्हें राजन् से भी प्यारा था।

एक बार तिरुच्चि म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन के निर्वाचन में प्रदेश कांग्रेस ने जो निर्णय दिया, वह राजन् को तथा और भी बहुतों को न्यायपूर्ण नहीं लगा। राजाजी ने सबको समझाया कि अप्रिय होते हुए भी संस्था की आज्ञा सबको माननी ही पड़ेगी। अन्य कांग्रेसी तो मान गये, परंतु डा. राजन् किसी की भी अनीति और अन्याय सहने को तैयार न थे। उन्होंने कांग्रेसी उम्मीदवार के विरुद्ध अपना उम्मीदवार खड़ा किया और उसे जिता भी दिया।

सबने, स्वयं डा. राजन् ने भी यही सोचा कि राजाजी अधिक नाराज नहीं होंगे और निर्वाचित अध्यक्ष को कांग्रेस की ओर से मान्यता दे देंगे। परंतु दूसरे दिन समाचार-पत्रों में राजाजी का यह वक्तव्य छपा :

क. तमिलनाडु कांग्रेस के अध्यक्ष के नाते मैं डा. राजन् को कांग्रेस के विरुद्ध कार्य करने के अपराध में संस्था से अनिश्चित काल के लिए सस्पेंड करता हूं।

ख. डा. राजन् का संस्था की आज्ञा का उल्लंघन करना इस बात का प्रमाण है कि संस्था को मेरे नेतृत्व में विश्वास नहीं रहा। अतः मैं न केवल कांग्रेस के नेतृत्व से, अपितु राजनैतिक कार्यों से भी अलग हो रहा हूं। तमिलनाडु कांग्रेस के अध्यक्ष-पद का त्याग-पत्र भी भेज दिया गया है।

कांग्रेस का सारा कार्यभार छोड़कर

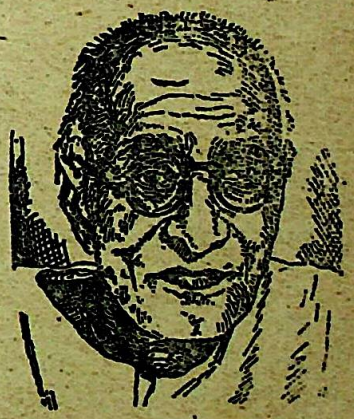

स्व. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजाजी तिरुच्चेन्गोडु की खादी संस्था में रचनात्मक कार्यों में लग गये। पर १९३६ के आम चुनाव से भी वे अलग ही रहे। सत्यमूर्ति आदि अन्य नेताओं ने चुनाव अभियान का संचालन किया। कांग्रेस ने बहुमत पाया और सरदार पटेल के प्रबल अनुरोध के कारण राजाजी ने पुनः कांग्रेस का नेतृत्व ग्रहण किया और मद्रास के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने पहला काम यह किया कि राजन् पर से संस्था का बंधन हटा दिया और उन्हें पुनः कांग्रेसी बनाकर अपने मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य-विभाग की जिम्मेदारी सौंपी।

ooo

राजाजी अपनी कड़ी नीति और संस्था से संबंधित कटु व्यवहार के कारण मद्रास कांग्रेस के अनेक नेताओं में अप्रिय थे। सत्यमूर्ति इन नेताओं के अग्रणी थे। राजाजी के मुख्यमंत्री बनने के थोड़े ही दिन बाद उन पर उंगली उठायी जाने लगी कि संस्था द्वारा चुनाव के दौरान जनता को दिये वचनों की राजाजी परवाह ही नहीं करते। इन वचनों में से एक था सन १८५७ के विद्रोह को कुचलने में क्रूरता का अपकीर्तिमान स्थापित करने वाले कप्तान नील की शिला-प्रतिमा को मद्रास नगर के मुख्य राजपथ से हटाना। जब मंत्रिमंडल के बनने के कई महीने बाद भी इस दिशा में कोई कदम न उठाया गया, तो जनता में असंतोष फैला और विरोधी नेताओं ने राजाजी पर आरोप लगाने आरंभ कर दिये।

फिर एक दिन सवेरे लोगों ने उठकर देखा कप्तान नील की प्रतिमा राजपथ पर नहीं थी। पिछली रात को बारह बजे तक कारें, गाड़ियां, ट्रामें उस मूर्ति का चक्कर काटकर गुजरती रही थीं। उसके चारों ओर सैकड़ों भिखारी बैठे थे। इतनी बड़ी मूर्ति और उसकी चौकी कैसे गायब हो गयी? किसी को इसका खुलासा न मिला।

फिर सप्ताह-भर बाद समाचार मिला कि सन ५७ के 'अनन्य वीर' कप्तान नील मद्रास म्यूजियम में भूसा-भरे शेरों, बाघों, मगरों आदि के बीच प्रतिष्ठित हैं। स्थान-परिवर्तन के समय उनकी मूर्ति को किसी तरह की चोट नहीं लगी।

ब्रिटेन की पार्लमेंट में भी प्रश्न उठाया गया। राजाजी का उत्तर था—'मद्रास राज्य सरकार के कामों में दखल देने का साहस कौन करेगा? अंग्रेज सरकार को तो हमारा ऋणी होना चाहिये कि नील की मूर्ति को वर्षा, धूप आदि की आफत से बचाकर प्राचीन व ऐतिहासिक वस्तुओं के संरक्षण-विभाग में सुरक्षित कर दिया गया है।'

ooo

राजाजी की चिंतनशीलता, कुशाग्र-बुद्धि, भविष्य की समस्याओं को काफी समय पूर्व देख लेने वाली पैनी दृष्टि का सिक्का तो सब मानते थे; परंतु उनके ब्राह्मण कुल में जनमे होने के कारण तमिल प्रदेश में बहुतों को उनके प्रत्येक कार्य में अब्राह्मण-अहित की बू आती थी। उनके प्रबल विरोधी थे श्री रामस्वामी नायकर, जो पहले कांग्रेस में अब्राह्मण विचार के अग्रणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे, फिर जस्टिस पार्टी के प्रचारक, तदनंतर स्वाभिमान संस्था (सेल्फ रेस्पेक्ट पार्टी) के आंदोलन के प्रवर्तक हुए और अंत में द्रविड कषगम के प्रवर्तक।

उन्हीं दिनों मदुरै के वैद्यनाथ ऐयर ने जो हरिजन सेवा संघ के धुरंधर सेवक थे, मदुरै में हरिजन सेवकों का एक संमेलन बुलाया। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू इसकी अध्यक्ष थीं। मुख्यमंत्री की हैसियत से राजाजी भी आमंत्रित थे। यहां जोरदार मांग की गयी कि राजाजी हरिजनों के मंदिर-प्रवेश आंदोलन पर ध्यान दें। रामस्वामी नायकर को तो मानो पाशुपत अस्त्र ही मिल गया। कांग्रेस के अंदर और बाहर विरोधियों ने अपने अस्त्र सान पर चढ़ाने शुरू कर दिये। मगर राजाजी चुप रहे।

इसी समय श्री वैद्यनाथ ऐयर हरिजनों का एक दल लेकर मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में दर्शनार्थ प्रविष्ट हो गये। उस समय के कानून के अनुसार उन पर और हरिजनों पर कार्रवाई की जानी चाहिये थी। परंतु उसी रात को मद्रास सरकार के स्पेशल गजट में हरिजन मंदिर-प्रवेश को अनुमति देते हुए अध्यादेश जारी हो गया, जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी। राजाजी के सामयिक कानूनी कदम ने विरोधियों को निहत्था कर दिया।

०००

उन दिनों मद्रास का पुलिस इंस्पेक्टर जनरल अंग्रेज था। कांग्रेस-आंदोलन को दबाने में उसने कप्तान नील को भी मात कर दिया था। सत्यमूर्ति जैसे बड़े तक का उसने अपमान किया था। मद्रास में कांग्रेस ने अपनी चुनाव-घोषणा में इस इंस्पेक्टर जनरल को पदच्युत करने का वचन दिया था। अब पार्टी के अंदर तूफान उठा। इंस्पेक्टर जनरल प्रतिदिन राजाजी से मिलता है और राजाजी उसके मोहपाश में फंस गये हैं, इसीलिए उसे हटा नहीं रहे हैं।

उधर इंस्पेक्टर जनरल ने राजाजी को मौन देखकर कल्पना कर ली कि मुख्यमंत्री उसके हिमायती हैं। यों भी अंग्रेज अफसरों पर भारतीय मुख्यमंत्री का अधिकार नहीं चल सकता।

फिर एक दिन इंस्पेक्टर जनरल जब दौरे पर कोयमुत्तूर में था, राजाजी का तार मिला कि तुरंत मद्रास आकर मुझसे मिलो। वह मद्रास आया और अपने कार्यालय में गया। वहां पता चला कि उसका सारा अधिकार छीन लिया गया है और उसके दफ्तर पर मुख्यमंत्री ने ताला और मुहर लगवा दी है। राजाजी से मिलने का साहस तो उसे न हुआ, पर वह अंग्रेज गवर्नर से मिला। गवर्नर ने सूखा जवाब दे दिया कि मुख्यमंत्री की कार्रवाइयों में दखल देने का साहस मुझमें नहीं है। अब साहब बहादुर क्या करे?

अपनी मेम साहिबा को लेकर रात के समय वह राजाजी से उनके घर पर मिलने गया। शिष्टाचार के पक्के राजाजी ने पति-पत्नी से कुशल-वार्ता पूछी और उन्हें विदा कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगले दिन इंस्पेक्टर जनरल को मुख्य-मंत्री के निजी कक्ष में तलब किया गया। मुख्यमंत्री के हाथ में उसके अपराधों की लंबी सूची थी।

इंस्पेक्टर जनरल साहब दौरे पर जाते समय स्पेशल सेलून में जाते हैं; प्रांत सरकार से दौरे का खर्चा पाकर भी रेल्वे को नहीं देते।

इंस्पेक्टर जनरल साहब के नाम पर बैंकों में उनके सेवा-काल के वेतन से सैकड़ों गुना अधिक रुपये जमा हैं, जो रिश्वत के रूप में मिले हैं।

अगर इंस्पेक्टर जनरल साहब स्वयं ही त्यागपत्र दे दें, तो इन अपराधों के लिए उन पर मुकद्दमा नहीं चलाया जायेगा।

बेचारे ने त्यागपत्र दे दिया और एक ही सप्ताह के अंदर विलायत की राह पकड़ ली। गवर्नर जनरल ने भी यह विवरण सुना और सहानुभूति के दो आंसू बहाकर मौन हो रहे।

०००

द्वितीय विश्वयुद्ध अभी छिड़ा नहीं था। जर्मनी के एक वायुयान ने भारत पर से उड़ने की अनुमति मांगी। भारत सरकार ने अनुमति प्रदान कर दी थी और प्रांतों की सरकारों के मुख्यमंत्रियों के पास सूचना भेजी। जिन प्रांतों पर से यान उड़ने वाला था, उनमें मद्रास भी एक था। जब राजाजी के पास सूचना आयी, उन्होंने भारत सरकार के निर्णय के विरुद्ध अपनी संमति दी और लिखा कि हम किसी भी कारण से मद्रास प्रांत के आकाश में जर्मन यान को उड़ने देना नहीं चाहते।

राजाजी का आक्षेप देखकर भारत सरकार भी सचेत हो गयी और उसने अपनी अनुमति रद्द कर दी।

कुछ ही सप्ताहों के अंदर द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ गया। और भारत को उसकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध में घसीटे जाने के विरोध में कांग्रेस ने प्रांतीय मंत्रिमंडलों से पद - त्याग कर दिया।

फिर १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में जब राजाजी जेल गये, तो जर्मन रेडियो ने अपने समाचार बुलेटिन में कहा कि राजा आफ गोपालपुर, जो मद्रास के मुख्यमंत्री थे, जेल भेज दिये गये हैं। राजगोपालाचार्य को उसने 'राजा आफ गोपालपुर' बना दिया था।

—२८ सुब्बराम अय्यर स्ट्रीट, वेल्लूर-४, तमिलनाडु

★

* सत्य आधुनिक कहानियों से अधिक विचित्र ही नहीं, अधिक शालीन भी होता है।
* हममें से अधिकांश उदार दृष्टि वाले हैं; बहस के दौरान में हम दोनों पक्षों के दृष्टि-कोण देखते हैं—दूसरे पक्ष का गलत दृष्टिकोण, और अपना सही दृष्टिकोण।
* जो इतिहास बनाते हैं, उनके पास इतिहास लिखने का समय नहीं होता!
* ऐसी हर औरत आदर्श पत्नी है, जो आदर्श पति से ब्याही गयी है। —टार्किनाटन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीता - सुगीता कर्त्तव्या

अबू अब्रहाम

यह आकाशवाणी है। अब संस्कृत में समाचार सुनिये। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति-पद के कांग्रेसी उम्मीदवार श्री फखरुद्दीन अली अहमद को एक पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने कहा है :

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायोह्यकर्मणः।
शरीरयात्राऽपि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः॥
अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

श्री राजनारायण ने राष्ट्रपति-पद के संभावित विरोध-पक्षीय प्रत्याशियों की एक सभा में बोलते हुए कहा :

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रिया पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥
अथ चेत् त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥

श्री जयप्रकाश नारायण ने एक समाचार-गोष्ठी में घोषणा की :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥

उन्होंने यह भी कहा कि

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।

बिहार विधानसभा में मुख्यमंत्री श्री गफूर ने चेचक की महामारी की चर्चा करते हुए कहा :

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।

श्री होमी शेठना, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग ने संसदीय सलाहकार समिति के सदस्यों को बताया कि

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ।।
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।।
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्यात् भासस्तस्य महात्मनः ।।

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि इस पर संसद-सदस्य श्री उण्णिकृष्णन् ने कहा:

..... पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपं
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिम् .....

['इंडियन एक्सप्रेस' से साभार अनूदित]

हाल में हमने एक पुराना मकान खरीदा, जो काफी खस्ता हालत में था। उसमें हमें क्या-क्या सुधार करना है, इसकी हम फेहरिस्त बनाने लगे। हमने देखा कि फेहरिस्त लंबी ही लंबी होती चली गयी। मकान को ठीक हालत में लाने के लिए हम पति-पत्नी इतनी सख्त मेहनत कर रहे थे कि हम चिड़चिड़े हो उठे। बात-बेबात बच्चों पर भड़क उठते थे और मकान को सुधारने का काम खत्म होने में नहीं आ रहा था।

एक रोज हमारी एक पारिवारिक मित्र हमसे मिलने आयीं, जो इस मकान की हालत से पहले से परिचित थीं। बोलीं—'तुम लोगों ने तो इतने कम समय में मकान का कायाकल्प ही कर डाला है! कैसे कर सके यह सब?'

मैं कहने ही वाला था कि अभी तो हम कुछ भी नहीं कर पाये हैं; मगर जाने क्यों रुक गया। वे मेरे साथ घूम-घूमकर कमरे, दालान आदि देखती रहीं और बताती गयीं कि कौन-सी जगह पहले क्या खराबी थी और अब वह जगह कितनी अच्छी हो गयी है।

उनके जाते ही हम पति-पत्नी ने वह फेहरिस्त फाड़कर फेंक दी। बल्कि एक नयी फेहरिस्त बनायी, जिसमें हमने लिखा कि क्या-क्या सुधार हमने किये हैं। प्रतिदिन यह सूची लंबी होती गयी और अब हमें महसूस हुआ कि हमने कितना कुछ कर डाला है!

जीवन में भी प्रायः यही होता है। हम जितना समझते हैं, उससे कहीं ज्यादा हमने किया होता है। अगर हम अपनी सफलताओं का हिसाब लगाने बैठें, तो पता चलता है कि हमारी विफलताएं न बहुत बड़ी हैं, न बहुत ज्यादा। —बेवरली डिकर्सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

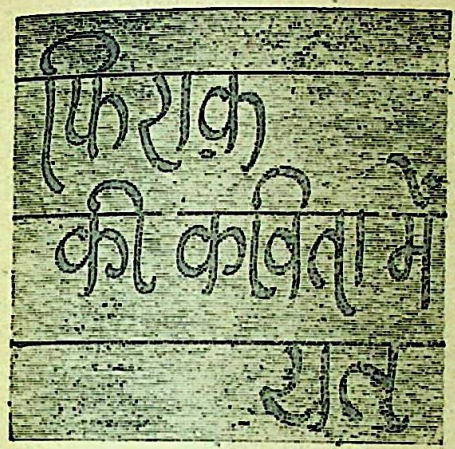

कुलदीप तलवार

फिराक़ उर्दू शायरी के वह महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं, जिनके लिए यह कहा जाता है कि उर्दू शायरी में फिराक़ न होते तो शायद उसका रंग कुछ और ही होता। इस सदी में उर्दू का कोई शायर स्थायी रूप से उनके जितना लोकप्रिय नहीं हो सका।

उनकी आवाज़ में रस है, इतनी नरमी और इतनी लय है, जो दूसरे शायरों में कम देखने को मिलती है। उन्होंने नरम से नरम और सरल से सरल और साथ ही रुचिपूर्ण भाषा में सच्ची से सच्ची गंभीर बातें कही हैं। उर्दू शायरी में इतनी सुंदर उपमाएं फिराक़ से पहले देखने या सुनने में नहीं आयी थीं। हमारी बोली के शब्द और हमारी बोली के टुकड़े फिराक़ की शायरी में नया जन्म लेते हैं। उनके नगमे बार-बार गुनगुनाये जायेंगे। आने वाली पीढ़ियां सदियों तक इन नगमों से अपनी प्यास बुझाती रहेंगी।

फिराक़ की शायरी को पढ़ते हुए सबसे ज्यादा जो चीज़ उभरकर सामने आती है, वह है 'रात'। फिराक़ की शायरी में दिन की रोशनी से ज्यादा रात के धुंधलके मिलते हैं। उनकी शायरी की परी रात के सन्नाटे में चुपचाप उभर आती है और दिल और दिमाग पर छा जाती है। वे इस घेराव से निकल नहीं पाते। वे रात से प्रभावित होते हैं, इस खामोशी में सारी सृष्टि से बातचीत करते हैं, जिससे कभी उनको चैन मिलता है और कभी-कभी बेचैनी।

फुरकत की ग़मगीं रातों को
याद में तेरी रो लें हैं
तारों को जब नींद आये है
हम भी घड़ी भर सो लें हैं।

मीर के रंग में लिखा हुआ यह शेर इस बात की गवाही देता है कि फिराक़ अपनी

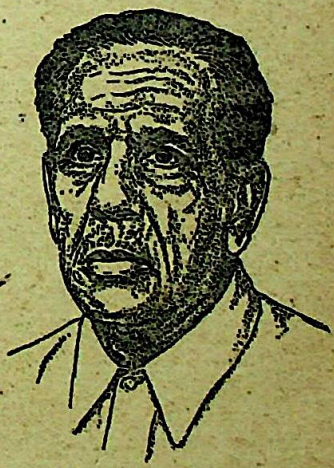

फिराक़ गोरखपुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पना में किसी प्रेमिका को बसाये उसकी याद में कभी रो लेते हैं; जब तारों को नींद आ जाती है, तो वे दम-भर के लिए सो लेते हैं।

यह एक ऐसा आलम है, जिसका पूरी तरह आभास इसमें से निकलने के बाद ही हो सकता है, केवल पढ़ने या सुनने से नहीं।

फिराक़ की रातें उदास क्यों हैं? कुछ विद्वानों का विचार है कि वे शेरो-शायरी के उन बदनसीब ताजदारों में से हैं, जिन्हें रात का वास्तविक आनंद न मिल पाया। इसका कारण—फिराक़ अपने जीवन-साथी से जो आशाएं लगाये बैठे थे, वे पूरी न हो सकीं और यही कारण है कि रात फिराक़ की आंखों में आंसुओं के मोती भर देती है।

जब दिल की वफात हो गयी है
हर चीज की रात हो गयी है।

हो सकता है कि यह कथन ठीक हो। लेकिन पिछले दिनों जब हम फिराक़ साहब से मिले और इस संबंध में बातचीत की, तो वे कहने लगे—'अभी मैं बच्चा ही था, जवान नहीं हुआ था, रात मेरे लिए दुनिया का रहस्य बन गयी थी। मुझे बचपन में जबर्दस्ती चारपाई पर लिटा दिया जाता था, लेकिन नींद नहीं आती थी। चारपाई पर पड़ा-पड़ा रात की बढ़ती हुई स्याही और उसकी गहराई को देखता रहता। मेरे मन में विचार पैदा होता कि इस समय आदमी काम नहीं कर रहा है और यही बात मुझे बहुत प्रभावित करती।'

फिराक़ का रात से प्रभावित होने का कारण कुछ भी हो, लेकिन एक बात स्पष्ट है कि फिराक़ जितने रात से प्रभावित हुए, शायद ही किसी और चीज़ से हुए हों। लेकिन फिराक़ ने इन रातों को बेकार नहीं जाने दिया। उन्होंने रात में शायरी को जन्म दिया।

छेड़ते ही गज़ल बढ़ते चले रात के साये
आवाज मेरी गैसू-ए-शब खोल रही है।

फिराक़ ने लगभग साठ-सत्तर हजार अशआर लिखे हैं। ऐसा कहा जाता है कि इनमें पचहत्तर प्रतिशत रात में ही लिखे गये हैं। फिराक़ ने रात की खामोशी में कभी-कभी एक गज़ल तीस-चालीस पंक्तियों की भी लिख डाली है। साधारणतया एक गज़ल छः-सात पंक्तियों से ज्यादा नहीं कही जाती। इसका कारण जो समझ में आता है, वह यही है कि पहाड़-जैसी रात को काटने के लिए फिराक़ ने ऐसा किया है।

फिराक़ की ऐसी ही एक प्रसिद्ध लंबी गज़ल है, जिसमें रात पर कई अशआर मिलते हैं:

आंखों में जो बात हो गयी है
एक शरा-ए-हयात हो गयी है
इस दौर में जिंदगी बशर की
बीमार की रात हो गयी है
वह चाहें तो वक्त भी बदल दें
जब आये हैं रात हो गयी है
इक्का-दुक्का सदा-ए-जंजीर
जिंदा में रात हो गयी है
जीती हुई बाज़ी-ए-मुहब्बत
खेला हूं तो मात हो गयी है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुद्दत से खबर न मिली दिल की
शायद कोई बात हो गयी है।

वे स्वयं रात में उदास रहते हैं; इसलिए उन्होंने गम को प्रकट करने के लिए रात का सहारा ही नहीं लिया, बल्कि रात के द्वारा आम आदमी के दुःख को भी सामने लाये हैं। आज की जिंदगी की उपमा बीमार की रात से जिस अंदाज़ से दी है, वह केवल फिराक़ का ही हिस्सा है। यह शेर लाखों शायरों के दीवान पर भारी है।

कहा जाता है कि हर दुःखी आदमी गम के शिकंजे से निकलने के लिए कोई न कोई फरारी का रास्ता निकालता है, ताकि उसका बचाव हो सके। फिराक़ ने भी इन सुरक्षित तरीकों से सहायता ली है। उन्होंने अपनी रातों को संवारने के लिए किसी दूसरी प्रेमिका से इश्क कर लिया है और इस तरह उन्होंने अपने जीवन-साथी का बदल तलाश कर लिया है। हो सकता है, वह खयाली ही हो। बहरहाल उन्होंने रात के सन्नाटे में बहुत कुछ लिख डाला है।

यह रात फलक पे थरथराता-सा गुबार
शीशे पे नरम-नरम पड़ती है फव्वार
या बैठ के माहे-नौ में देवी कोई
छेड़े हुए रागिनी बजाती है सितार।

ooo

खुशबू देती है रातरानी तेरी
कटती हुई रात है कहानी तेरी
तारों के भी पड़ चले हैं मोती ठंडे
चटकाती है उंगलियां जवानी तेरी

ooo

कट जाती है अब भी कटने को
लेकिन एक वह भी जमाना था
जब रात रात सी होती थी
जब सुबह सुबह सी होती थी
वह रात फिराक है याद मुझे
अब तक वह सुबह नहीं भूली
जो कटते कटते कटती थी
जो होते होते होती थी

ooo

यह निकहतों की नरम रवी यह हवा यह रात,
याद आ रहे हैं इश्क को टूटे ताल्लुकात
एक उम्र कट गयी है तेरे इंतजार में,
ऐसे भी हैं कि कट सकी जिनसे न एक रात
हम अहले इंतजार के आहट पे कान थे
ठंडी हवा थी, गम था तेरा ढल चुकी थी रात
क्या नींद आये उसको जिसे जागना न आये
जो दिन को दिन करे वह करे रात को भी रात।

सच तो यह है कि फिराक़ ने रात का हर दृश्य देखा है। वे रात में मुस्कराये भी हैं और रोये भी। उन्होंने रात में प्रेमिका का इंतजार भी किया है और उसकी याद भी।

तबीयत अपनी घबराती है जब सुनसान रातों में
हम ऐसे में तेरी यादों की चादर तान लेते हैं।

—३५९ कीर्तन वाली गली, गाजियाबाद

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रजीठ्ठीजी

तारादत्त निर्विरोध

कहा जाता है कि किशनगढ़ राज्य की स्थापना जोधपुर के राजा उदयसिंह के आठवें पुत्र किशनसिंह ने १६०९ ई. में की। किंतु राजस्थान के मध्य भाग में जोधपुर, जयपुर, अजमेर और शाहपुरा की सीमाओं से घिरे इस छोटे-से राज्य की लोकप्रियता एक युवराज कवि द्वारा कोरे गये चित्रों और उसकी लेखनी से निःसृत उन कवित्तों के कारण है, जो एक प्रणय-गाथा से संबद्ध हैं।

किशनगढ़ के राजा वल्लभकुल संप्रदाय के अनुयायी थे। इस संप्रदाय में भक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्त करना मानव जीवन का लक्ष्य माना जाता है और यह भी कि भक्ति में जो महिमा कीर्तन की है, वही चित्र-दर्शन की भी। कहते हैं, वल्लभस्वामी स्वयं चित्रकार थे और उनकी परंपरा के अनुसार चित्रकला में निपुण होना भक्ति का ही एक अंग था। इस कारण किशनगढ़ के सभी शासकों के कार्यकाल में कलाओं को समुचित संरक्षण और प्रोत्साहन मिला।

इसी क्रम में किशनगढ़ चित्रशैली का प्रारंभ किशनगढ़ के महाराज मानसिंह (१६५८-१७०६ ई.) के समय हुआ और यह शैली क्रमशः सातवें महाराज राजसिंह (१७०६-१७४८) तथा आठवें महाराज सावंतसिंह उपनाम 'नागरीदास' (१७४८-१७६४) द्वारा चरम विकास तक पहुंची। नौवें राजा सरदारसिंह (१७६४-६६) के काल में निहालचंद नामक एक कलाकार हुआ और उसके पश्चात् किशनगढ़ चित्र-शैली में बदलाव आया। राजसिंह के एक और पुत्र बहादुरसिंह ने भी इस शैली को बनाये रखा।

राधाओं से सर्वथा भिन्न

राजस्थान और मध्य भारत की देशी चित्रकला में जो मुगलशैली के प्रभावस्वरूप अनेक मिनिएचर चित्रशैलियों का जन्म हुआ, उसमें किशनगढ़ शैली की पृथक् भूमिका रही। १७ वीं से १९ वीं शताब्दी के मध्य तक देश में मेवाड़, बूंदी, कोटा, जयपुर, अलवर, जोधपुर, किशनगढ़, मालवा और दक्षिण में प्रमुख चित्रशैलियों के केंद्र विकसित हुए। इनमें किशनगढ़ शैली के रंग सहज ही पहचाने जा सकते हैं।

लंबा ऊंचा उठा हुआ ललाट, भौंहों की ओर उठी हुई आंखें, वक्षस्थल के आभूषणों में मोती की दुलड़ियां-तिलड़ियां, शोख रंग के कपड़े आदि उसकी विशेषताएं हैं। राधा-कृष्ण-विषयक इन चित्रों में राधा का रूपाकार अन्य चित्रशैलियों की राधा से सर्वथा भिन्न रहा है। वह देखते ही पहचानी जा सकती है।

भवानीदास, निहालचंद, अमरचंद, नानगराम एवं गौरधन जोशी और वर्तमान में शहजादअली शीरानी जैसे किशनगढ़-शैलीकारों ने राधा की आकृति को और भी परिष्कृत कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राधा की आकृति में पतली नासिका और लंबी आंखों के साथ पतली लचीली कमर है।

राधा बनाम बणीठणीजी

किशनगढ़ की राधा किसी पूर्ववर्ती आकृति की अनुकृति या विकसित रूप नहीं है। वह एक जीवित माडल के जीवन-काल में अंकित सजीव रेखानुकृति है। यह माडल युवराज सावंतसिंह (कवि नागरीदास) की प्रेरणा-स्रोत थी, जिसने युवराज से राधा-कृष्ण की लीलाओं पर कवित्त लिखवाये और जो स्वयं उसके चित्रों में राधा की प्रतिरूपा होकर उतर आयी। यह कोई और नहीं, राधा-कृष्ण की प्रणय-लीला के गीतों की गायिका कवि नागरीदास की चित्रप्रिया अर्थात् वह रूपसी थी, जो 'बणीठणीजी' के नाम से विख्यात रही।

कहते हैं, एक दिन कल्पनाओं में खोये-से कवि नागरीदास (युवराज सावंतसिंह) जनाना महल के पास से गुजर रहे थे कि एक स्वरलहरी उनके कानों से टकरायी। वे उससे बंधे-से जनानी ड्योढ़ी में पहुंच गये। भीतर उनकी सौतेली मां बंकावतजी का दरबार लगा था और उसमें एक रूपसी गा रही थी। स्वर उसी का था। दीपशिखा-सी झिलमिलाती, रूप-सुरभि बिखेरती और अपने लावण्य से सभी की दृष्टियां बांधती वह कामिनी कवि की विमाता की गायिका थी।

कवि नागरीदास दबे पांव वहां से लौट गये। मन मगर वहीं कहीं भटकता रह गया था, मन की एकाग्रता भंग हो चुकी थी।

फिर शुरू हुई दुतरफा आंखमिचौनी और हेराफेरी। एक दिन कवि नागरीदास ने अवसर पाकर पीछे से गायिका-रूपसी की बांह पर हाथ रख दिया और वह उनके पाश में सिमट आयी।

मुलाकातें होने लगीं, कभी कुंजों में, कभी एकांत स्थलों पर। दोनों राधा-कृष्ण की लीलाओं की चर्चाएं करते। फिर राधा की प्रतीक वह गायिका और कृष्ण के प्रतीक कवि नागरीदास प्रणय-लीलाएं करने लगे। नित्य मिलन की आतुरता लिये बणीठणीजी वहां आतीं और प्रतीक्षा - निरत कवि नागरीदास उसे पाकर सुधबुध खो बैठते।

कभी बणीठणीजी कविता लिखतीं और

बणीठणीजी : कविप्रिया बनाम कनुप्रिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

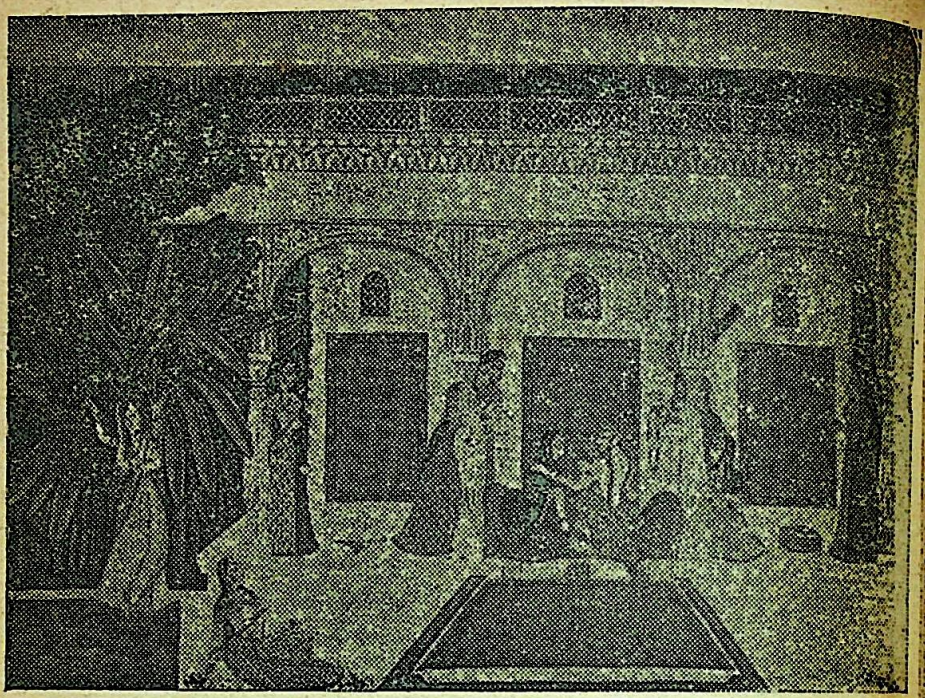

कविप्रिया के साथ युवराज कवि की प्रणयलीला

उसका कवि नागरीदास पाठ करते। कभी नागरीदास लिखते और उसे बणीठणीजी गातीं।

प्रणय का वृक्ष बढ़ता गया। सौतेली मां ने इसका विरोध भी किया, किंतु यह संबंध और सुदृढ़ होता चला गया।

और इस तरह किशनगढ़ शैली के चित्रों में राधा के रूप में बणीठणीजी और कृष्ण के रूप में नागरीदास चित्रित हुए। यहीं से किशनगढ़ शैली की राधा में मौलिकता आयी। —द्वारा एम-७, डाकतार कालोनी, सी स्कीम, जयपुर

लासेन (स्विट्जरलैंड) में संसार के विभिन्न देशों के विद्यार्थियों से पूछा गया कि उनकी नजर में सबसे सुंदर लड़की कैसी होनी चाहिये। विद्यार्थियों की मतदान-समिति के मुखिया पाल गेलिस ने बताया कि आदर्श सुंदर लड़की में निम्नलिखित गुण होने चाहिये:

अंग्रेजी रंग-रूप, आयरिश मुस्कराहट, फ्रांसीसी गोलाइयां, स्पेनी चाल, इतालवी बाल, मिस्री आंखें, यूनानी नाक, अमरीकी दांत, वियेनाई आवाज, जापानी हंसी, अर्जेंटाइनी कंधे, थाई गरदन, स्विस हाथ, स्कैंडेनेवियाई टांगें, चीनी पांव, और आस्ट्रेलियाई वक्ष।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी रूढ़ियों तथा परंपराओं की रक्षा करना जापानियों के राष्ट्रीय स्वभाव का अंग है। यह शुभ प्रवृत्ति नृत्य तथा नाट्य क्षेत्र में भी परिलक्षित होती है। इसी कारण वे अपने रंगमंच की १,३०० वर्ष पुरानी विशिष्ट परंपरा को समस्त पाश्चात्य एवं औद्योगिक प्रभाव के बावजूद आज तक जीवित रख सके हैं।

* चंद्रहास जोशी *

जापान की पारंपरिक नाट्यविधाओं में आद्य है 'नो' नाटक, जिसे प्राचीन काल के रूढ़िवादी नाटकों का महत्त्वपूर्ण अवशेष माना जाता है। इसमें उस युग का प्रतिबिंब दिखाई देता है, जब औपचारिक सौंदर्य को भावनात्मक विषय-तत्त्व से अधिक मूल्यवान समझा जाता था। 'नो' नाटक की सजधज आंखों को लुभाती है। उसमें दर्शक को बुद्धिपरक, कल्पनाशील और सूक्ष्म काव्यात्मक सौंदर्य की झांकी मिलती है। आज भी 'नो' नाटक में वही पुराने तौर-तरीके, वही पुराने वस्त्राभूषण, वही पुराने कथानक तथा चेहरे देखने को मिलते हैं। दर्शक ऐसा अनुभव करता है, जैसे वह सदियों के अंतर को लांघकर अतीत में पहुंच गया हो। बात यह है कि नो नाटक के वंशानुगत संरक्षकों ने उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होने दिया है।

लेकिन 'नो' नाटक के अलावा जापान में एक और नाट्यविधा भी है, जो समय के साथ बदलती रही है। तथा जिसमें जनसाधारण की रुचि का खयाल रखकर पर्याप्त स्वतंत्रता से काम लिया जाता रहा है। उसका नाम है 'काबुकी'। माना जाता है कि इसका आरंभ सन १५८६ में एक विचित्र घटना से हुआ है।

एक दिन एक शितो धर्मोपदेशिका भगवान बुद्ध की आराधना कर रही थी। नदी के सूखे पाट पर प्रार्थनागीत गाते-गाते वह धार्मिक नृत्य में मग्न हो गयी थी। उसके नृत्य में अद्भुत लय

'काबुकी' की जन्मदात्री

ओकुनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी और गीत में सुमधुर धुन। उसके भाव-पूर्ण गीतनृत्य ने शिष्यों को मुग्ध कर लिया। कहते हैं, इसी घटना से काबुकी का जन्म हुआ और उसकी जन्मदात्री थी वही धर्मोपदेशिका—ओकुनी।

ओकुनी बहुत ही रूपवती थी और उतनी ही सुंदर थी उसकी लिखावट। उसे फूलों से प्यार और चंद्रमा से स्नेह था। बर्फानी संध्या और चांदनी में नहाते वृक्षों के दृश्य से उसे गीतों की प्रेरणा मिलती थी। ऐसे जादुई वातावरण में वह गुनगुनाने और नाचने लगती थी।

ओकुनी के नृत्य को नेम्बुस्ती-ओदोरी कहते थे। उस नृत्य का मूल स्रोत बौद्ध धर्म के धार्मिक नृत्य में था। ओकुनी की नृत्या-राधना से सामान्य दर्शकों की तरह उसका प्रियतम नागोया सैन्जाएमोन भी आकृष्ट था; इतना कि उसने उसे तत्काल 'नो' नृत्य की शिक्षा देना शुरू किया और साथ ही साथ लोकप्रिय लोकनृत्य शैली को भी आत्मसात् करने को प्रेरित किया।

ओकुनी के गीत सुंदर थे। वास्तव में वे बौद्ध धर्म के प्रार्थनागीत थे, न कि प्रेम गीत। लेकिन उनमें भावनाओं का गूढ़ गुंजन होता था। उन गीतों में ऐसी गति होती थी कि उनकी चरम परिणति का आभास दर्शकों को पहले ही हो जाता था।

उसके एक मनपसंद गीत का भावा-नुवाद इस प्रकार है :

संसृति के स्थायी क्रम में
हम अपने को धकेलकर
गाते हैं.....नाचते हैं.....
वर्तमान की मस्ती में.....
भूत के अनस्तित्व में.....
भविष्य की विस्मृति में.....
संसार तो केवल एक स्वप्न
खोने दो हमें अपने को उसमें
रहेगा स्वप्न वह अटूट
यद्यपि मेघगर्जना की
सत्यता जगा रही है.....
इस एकांत नींद में,
कितनी है खामोशी
मेरे साथ न है कोई बातचीत के लिए
मैं अकेली.....मैं अकेली.....
अरी मेरी प्यारी सिरहनी
तू ही आ जा मेरे पास.....
तुझसे ही कर लूं मैं कुछ तो वार्त्तालाप
अरी.....लेकिन यह क्या.....
तू भी पड़ी है चुपचाप.....

कुछ दिनों बाद ओकुनी ने अपनी एक स्वतंत्र नाट्य मंडली तैयार की, जिसमें कुछ स्त्रियां थीं तथा कुछ पुरुष थे। आश्चर्य की बात यह है कि इसमें स्त्री भूमिकाएं पुरुष करते थे, पुरुष भूमिकाएं स्त्रियां करती थीं। नाट्यवस्तु के लिए पौराणिक गाथाओं तथा जन-जीवन से संबंधित नृत्य-कथाओं को चुना जाता। इससे उन्हें संगीत-नाट्य का रूप प्राप्त हो गया और ओकुनी का यह काबुकी-रंगमंच जन-मनोरंजन का प्रिय साधन बन गया।

आरंभ में ओकुनी अपने 'काबुकी' नाट्य प्रयोग परंपरागत 'शिबाई' रंगमंच पर प्रद-

* शीर्षक के साथ तोयोकुनी के एक चित्र की अनुकृति *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शित करती थी। शिबाई-रंगमंच एक प्रकार का खुला रंगमंच ही था। जिसमें नदी के सूखे पाट पर बैठकर दर्शक नाटक का रसास्वादन करते थे। इस प्राकृतिक रंगमंच पर ओकुनी अपनी मंडली के साथ मोहक अंग-संचालन करती हुई मधुर कंठ से गीत की तान छेड़कर दर्शकों को मुग्ध करती रहती थी।

अब ओकुनी की साधना पूरी हो गयी थी। उसका आत्मविश्वास भी बढ़ गया था। उसकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी थी। १५९६ में उसने अपनी मंडली के साथ सारे जापान में भ्रमण किया और काबुकी नाटक के प्रयोगों से सबका मन मोह लिया। उसे ६ मार्च १५९६ को क्योटो के राजमहल में निमंत्रित किया गया। इस प्रकार उसकी कला को राजकीय संमान मिला।

अब ओकुनी ने काबुकी के प्रदर्शन की स्थायी व्यवस्था करने का संकल्प किया और २३ अक्टूबर १६०५ को क्योटो में रंगमंच बनाकर अपना मनोरथ पूरा किया। इसी दिन उसने पांच दिन का 'कान्जिनी-काबुकी' यानी धर्मार्थ प्रयोग आरंभ किया और उससे प्राप्त धन इंजुमो नामक गांव के बौद्ध-विहार को दान कर दिया।

'काबुकी की जन्मदात्री' ओकुनी वास्तविक नहीं बल्कि कल्पित व्यक्ति थी, ऐसी भी एक धारणा है। जो भी हो, उसका नाम काबुकी के इतिहास के साथ गुंथ गया है। एक दूसरे के बिना उन दोनों की कल्पना नहीं की जा सकती। —५८, गंगापुरी,

देवकुले वाडा, वाई (सातारा)

★

चावल मिलों के अहातों में आपने धान की भूसी के पहाड़ देखे होंगे। इसी भूसी का कुछ उपयोग तो ईंट बनाने के भट्ठों में होता है; कुछ भूसी जलाकर उसकी राख उर्वरक के रूप में खेतों में छिड़की जाती है। मगर ज्यादातर भूसी को जलाकर नष्ट कर दिया जाता है।

श्री पी. कुमार मेहता नाम के एक युवा इंजीनियर ने इस बारे में काफी सोचा कि इस भूसी का कोई तो उपयोग होना चाहिये। बहुत सोचकर उन्होंने एक खास प्रकार की भट्ठी बनायी है। इसमें नियंत्रित आंच पर भूसी को जलाया जाता है। इस प्रकार प्राप्त हुई राख में सिलिका का प्रतिशत काफी ऊंचा होता है। इस राख के साथ चूना मिलाकर सुंदर काली सीमेंट तैयार की जा सकती है। जो कि पोर्टलैंड सीमेंट से किसी प्रकार भी घटिया नहीं होती; बल्कि इसमें चूने की मात्रा कम होती है।

कांगड़ा में जनमे श्री मेहता अमरीका में बर्कले विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। उन्होंने हिसाब लगाया है कि भारत प्रतिवर्ष धान की भूसी से २० लाख टन सीमेंट तैयार कर सकता है। सामान्य सीमेंट का जितना बड़ा कारखाना ३।। करोड़ रुपये से बनता है, उतना ही बड़ा भूसी-सीमेंट कारखाना सिर्फ ७ लाख रुपये में बन सकता है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही कोई छह-साढ़े छह बजे सुबह का समय होगा। रोज की तरह मैं शौच से निवृत्त होकर सीढ़ियों से उतर रहा था। मेरे एक हाथ में किनारे से पिचका हुआ टीन का डिब्बा था और दूसरा हाथ सीढ़ियों की मुंडेर पर सरक रहा था। तभी मेरी दृष्टि उस पर पड़ी। पता नहीं इतनी सावधानी से सीढ़ियां उतरने पर भी मेरे पैर कैसे डगमगा उठे और मैं गिरते-गिरते बचा। एक क्षण को तो मस्तिष्क सुन्न हो गया और आंखें फटी की फटी रह गयीं, जैसे किसी भूत को देख लिया हो।

भूत को देखने से कितना और कैसा डर लगता है, यह तो मैं नहीं जानता; किंतु एक जीते-जागते हाड़-मांस के पुतले को देखकर और वह भी उसे अपनी ओर एकटक घूरते देखकर मैं पहले कभी इतना अधिक नहीं डरा था। यह तो शुक्र हुआ, दिन निकल आया था।

सामने वाले घर के एक कोने से उसका वहशी चेहरा झांक रहा था—काला-स्याह चेहरा, जिस पर बदनुमा दागों की चित्रकारी थी। दो आंखें अंदर की ओर धंसी होने पर भी बेहद चमक रही थीं। उन्हें देखकर मैं यही समझता कि कोई खिसियायी बिल्ली मार-पीट किये जाने पर आंखें निकालकर गुर्रा रही है। पर तभी उसके ककड़ी-जैसे हाथ उठे थे और घास-सरीखे रूखे बालों को खुजलाने लग पड़े थे। सुबह मस्तिष्क के परदों पर जालंधर में श्मशान-भूमि के पिछवाड़े पाखाने के लिए बैठा वह अंधा आदमी अपने पैशाचिक शरीर के साथ मूर्तिमंत हो गया था, जिसे देखते ही मैं साइकल से उतर पड़ा था और मेरे मुंह से एक चीख निकलते-निकलते बची थी। कई महीनों तक मैं वह चेहरा नहीं भूल पाया था। जब तक मैं नीचे उतरता रहा, तब तक मुझे यह नया चेहरा दिखता रहा। दाढ़ी बेतहाशा बढ़ी हुई और गंदी-काली उंगलियां उसी दाढ़ी के कांटों में उलझी-उलझीं।

आज भी मैं बाहर-भीतर सहमकर रह गया हूं। घर के काम-काज करते हुए सुबह के देखे उस नरपिशाच के नैन-नक्श को 'हान्ट' करने से नहीं रोक सका हूं। पता नहीं किस आधुनिक चित्र में मैंने ऐसा चेहरा और हाथ-पैर देखे थे! वहां जालंधर में तो मुझे केवल एक बार उस चेहरे से साक्षात्कार करना पड़ा था। यहां किराये पर लिये इस नये घर में तो .....। सोच-सोचकर मेरा बहिरंतर पथराता जा रहा है। उसके शरीर के विषम अनुपात वाले कुरूप अंग रह-रहकर मेरी चेतना में कुलबुला उठते हैं। नहीं, नहीं—यह नया मकान

कृष्ण भावुक
की हिन्दी कहानी

आदिमानव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'क्या?.....खून?.....' चाय का कप मेरे हाथ में थरथरा उठा।

'हां..... लंबी-लंबी लाठियां लेकर गये थे। जब लौटे, तब एक लंबे-से लड़के ने नीचे नल पर बाल्टी में खून-सने हाथ धोये थे। राम-राम कहां आ फंसे! सुना है, विद्यार्थियों की कल भिड़ंत हुई थी पुलिस से। माल रोड पर डाकखाने को भी आग लगायी है इन्होंने।' पत्नी फूलती हुई सांसों में कठिनाई से पूरी बात उगल पाती है।

एक क्षण तक मौन दोनों के बीच तना रहता है।

'बड़े दंगई लड़के हैं.....' उसने कहा। मुझे लगा, वह भूमिका बना रही है मकान बदलने की बात कहने के लिए।

'किसी पुलिस वाले को मारा होगा.....' वह टुकड़ों में अपने को खोलती है।

'हूं....' मैं अपने भीतर किसी चेहरे को

ठीक नहीं है। कुछ भी हो, इसे जल्दी ही बदलना पड़ेगा।

चाय पीते समय पास के कमरे से कालेज के विद्यार्थियों की आवाजें आनी शुरू हुईं, तो पत्नी बोली—'एक बात तो मैं आपको बताना ही भूल गयी! कल दोपहर को ये लड़के किसी का खून करके आये हैं.....'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परे हटा रहा हूं।

'जब से आये हैं, तब से सुबह-शाम इन्हें कमरे में मीटिंगें ही करते देख रहे हैं। मुझे तो यूनियन वाले लगते हैं ये सब.....' पत्नी बात आगे बढ़ा रही है।

बात यह है कि हमें मकान बदले एक सप्ताह ही हुआ है और घर का छोटा-बड़ा सामान ढोते-ढोते और खोलकर लगाते-लगाते शरीर थककर इतने चूर हो चुके हैं कि इस मकान को छोड़कर फिर दूसरा मकान तलाशने और सामान की उठाई-धराई की बात सोचने की भी हिम्मत नहीं हो रही है। पत्नी इसीलिए मन के अभिप्राय को बार-बार टटोल रही है। शायद कोई और युक्ति निकल आये और मकान बदलने की कोफ्त से बच जायें।

'आप मकान-मालिक से बात तो करें कि जैसे भी हो इन लड़कों को यहां से निकाले और .....' पत्नी कहते-कहते चुप हो गयी है। शायद उसे मकान-मालिक की वे प्रशंसाभरी बातें याद हो आयी हैं, जो वह इन किरायेदार लड़कों के बारे में कहता रहा है। लड़के तो कुल तीन ही हैं, किंतु उनके और दूसरे साथी भी तो आये-गये रहते हैं। शीघ्र ही पत्नी को अपनी ही मुक्ति की असारता डंसकर रह गयी है। तभी वह बोलते-बोलते भीतर की अंधेरी सीढ़ियां उतरने लग गयी है। चेहरे पर स्याहियां हैं।

मुझे कल से घर-भर में ऊपर-तले छाये हुए मौन का अर्थ मिल गया है और मैं उस अर्थ की परतों में धंसता जा रहा हूं। इन लड़कों के बहुत-से अहसान मकान-मालिक पर हैं, इसलिए वह उन्हें कमरा छोड़ने के लिए कम से कम अपने मुंह से तो कह ही नहीं सकता। फिर ..... फिर ..... फिर क्या होगा ? यहां रहना भी तो कितना मुश्किल है। पास ही इतना गुल-गपाड़ा, उस पर यह खून वाला रहस्य, छिपाओ तो कहीं पुलिस हमें ही तंग करे, और थाने में रिपोर्ट करें तो ये लड़के हमें कच्चा ही चबा जायेंगे। आगे कुआं, पीछे खाई।

'देखो, आप ही इन लड़कों को समझाने की कोशिश करो। मामले का भी कुछ अता-पता चल जायेगा। आखिर बात करने में क्या हर्ज है.....?'

'मैं ?.....' अपने ही भीतर बिदककर कई कदम पीछे उछल जाता हूं – 'नहीं-नहीं, मुझे क्या जरूरत है ? इन पचड़ों में आखिर रखा ही क्या है ? लड़के जानें या फिर मालिक जाने.....'

पत्नी फिर मौन हो गयी है।

खिड़की से देखता हूं। अभी-अभी दो-तीन लड़के ऊपर आये हैं और पास वाले कमरे के कपाट जरा-सा खुलकर फिर बंद हो गये हैं। अब कमरे से फुसफुसाने की ध्वनि आ रही है। कभी-कभी बदला, खून, स्ट्राइक, प्रोग्राम जैसे शब्द ऊंचे स्वर में स्पष्ट सुनाई देते हैं। शायद अगली भिड़ंत की स्कीम बन रही है। भला मैं इन लोगों से क्या बात करूं ? इनका कमरा है, पूरा किराया दे रहे हैं। चाहे जो भी करें। किसी को इनके कामों में हस्तक्षेप करने की क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरूरत है ? ये लोग अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं, लड़ते रहें। आम जनता को क्या है ?

किंतु 'तटस्थता' ही तो जनता का कर्तव्य नहीं है। ये लोग बसों को आग लगा रहे हैं, इमारतें-दुकानें फूंक रहे हैं। जनता की संपत्ति का सत्यानाश किया जा रहा है। आखिर जनता चुपचाप टुकुर-टुकुर देख भी तो नहीं सकती। मेरा कर्तव्य क्या है ? मुझे क्या करना है ? सोच-सोचकर मस्तिष्क सुन्न होता जा रहा है। कभी सरकार दोषी नजर आती है, तो कभी छात्र।

इधर यूनिवर्सिटी जाने का समय हो जाता है। पत्नी कोयलों के स्टाल पर जाने की तैयारी कर रही है। कल प्रातः से शाम तक लाइन में खड़े रहने के बाद एक पर्ची लेकर लौट आयी थी, जिस पर नंबर ५७५ लिखा था। पूछा तो बोली—'वहां तो सारी दुनिया इसी पर्ची के लिए पागल हो रही है। पता है न कि पर्ची बन गयी तो कोयले भी मिल ही जायेंगे.....'

'कब मिलेंगे कोयले ..... ?' मैं खीज उठा था। बात यह थी कि कल पत्नी निरंतर आठ घंटे लाइन में धक्के खाने के बाद केवल एक छोटी-सी पर्ची लेकर आयी थी। पीछे बच्चे स्कूल से आकर भूखे बैठे थे और उनके मुंह में एक कौर तक नहीं गया था। मैं यूनिवर्सिटी से लौटा, तो बच्चे रो रहे थे। पत्नी को बुखार चढ़ा हुआ था, इसलिए आते ही वह बिस्तर पर औंधे मुंह गिर गयी। रोज लौटते ही चाय मिल जाती थी, सो वह भी न मिली।

'आज मिल जायेंगे.....' पत्नी ने खोयी-खोयी नजरों से बच्चों की ओर ताका।

'लेकिन तुम बुखार में कहां जाओगी ? मा ो गोली कोयलों को.....' कहने को तो मैं भावावेश में कह गया, किंतु तत्काल मुझे ध्यान आया कि बोरी में कोयले समाप्त हो गये हैं और मिट्टी का तेल तो एक महीने से मार्केट में नहीं आ रहा है। इस बार सरकारी डिपो से राशन का ५ लिटर तेल भी नहीं मिला है। यदि तुरंत कोयले घर में न आये तो क्या होगा ? लोग तो बाजार से खा-पी लेते हैं, हमें तो बाजार का भोजन रास ही नहीं आता। अब क्या होगा ?

'मैं उधर डिस्पेंसरी से दवा भी लेती आऊंगी .....' पत्नी का चेहरा तपा हुआ है। उसकी आंखें जैसे कह रही हैं कि इसके सिवा कोई और चारा भी तो नहीं है। एकदम मुझे कोई उत्तर नहीं सूझता, जैसे विचार-शक्ति कुंठित हो गयी हो। पत्नी बच्चों को स्कूल भेज देती है और सिर ढांपकर पिछले कमरे से राशनकार्ड और रुपये निकाल लाती है। मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं फूटता और मैं यूनिवर्सिटी चल पड़ता हूं। मस्तिष्क में अनगिनत विषैली फुंफकारें भर गयी हैं। आंखें ऊपर की ओर चढ़ी जा रही हैं, जैसा कि बेहद जुकाम में महसूस हुआ करता है। भीतर के अखाड़े में कोई दंगल हो रहा है।

× × ×

यूनिवर्सिटी पहुंचा तो चारों ओर पुलिस ही पुलिस नजर आयी। पता चला कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छात्रों ने एक बिल्डिंग के शीशे तोड़ डाले हैं और एक दफ्तर में घुसकर सारी फाइलों पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी है। तत्काल यूनिवर्सिटी को 'अनिश्चित काल' के लिए बंद करने की घोषणा हो गयी है।

चूंकि सरकार की ओर से कुछ ही दिन पूर्व यह घोषित हो गया था कि हिंसात्मक स्थिति में पुलिस शिक्षण-संस्थाओं में प्रवेश कर सकती है, इसलिए चारों ओर विद्यार्थियों से अधिक पुलिस की वर्दियां और जीपें घूम रही हैं। एक भयावह पंजा सड़कों, इमारतों, लानों और दफ्तरों को जकड़े हुए है। केवल दनदनाती हुई जीपों की आवाजों से यूनिवर्सिटी की शांति भंग हो रही है। एक दमकल भी कुछ क्षण पूर्व आकर उठते हुए धुएं की ओर घूम गयी है। जिन सड़कों पर विद्यार्थियों के कहकहे गूंजा करते थे और पुस्तकें हाथों या बगलों में दिखाई देती थीं, वहीं अब चमचमाती पेटियां, तमगे, पिस्तौलें और राइफलें नजर आ रही हैं, जिससे इस 'शांतिनिकेतन' का चेहरा ही बदल गया है।

मैं काफी देर तक इधर-उधर घूमता रहता हूं। घूमते समय मुझे अपनी चाल में एक अभूतपूर्व कंपन महसूस होता है। कभी-कभी मुझे ऐसी अनुभूति होती है, जैसे अभी-अभी मेरा पैर किसी आड़े-तिरछे लेटे शरीर से टकरा जायेगा और मैं गिरते-गिरते बचूंगा। जिस दफ्तर को आग लगी थी, वह कोई एक तिहाई मील पर था; अतः धुएं की गंध आने का प्रश्न ही नहीं उठता। पास ही एक लान था, जिसमें भांति-भांति के फूल राइफलों की तरह सिर-ताने खड़े थे।

पता नहीं क्यों, बार-बार मैं जेब से रूमाल निकालकर नाक पर रख लेता हूं और फिर अपनी मूर्खता का ध्यान करके रूमाल वापस जेब में ठूंस लेता हूं। जालंधर में हरनामदासपुरा के पीछे बने श्मशान के पास से गुजरते हुए भी मैं इसी तरह नाक पर रूमाल दबोच लिया करता था। वहां खुले स्थान पर लोग हाजत के लिए बैठे रहते थे। कई बार कितने बेमौके। गलत तरह की स्मृतियां चेतना के स्तर पर उछल आती हैं। हरा-भरा पार्क पीछे छूट गया है और साफ-सुथरी सड़कों पर चलते हुए नाक पर अनायास यंत्रवत् रूमाल रखते और अपने आपसे झेंपकर वापस जेब में ठूंसते हुए मैं पलटकर चारों तरफ देखता हूं कि कहीं किसी ने मुझे इस तरह नाक पर रूमाल रखते हुए देख तो नहीं लिया।

कभी-कभी कोई कौआ ऊपर से नीचे लपकता है, तो मुझे भ्रम होता है कि वह कोई गिद्ध है और मेरी ओर झपट रहा है। देखते ही देखते उस पक्षी और मेरे भीतर थरथराने वाले भय दोनों का आकार छोटा हो जाता है। एक बार तो सड़क की पटरी से उतरते हुए मुझे लगा, जैसे मैं एक सीढ़ी नीचे उतरा हूं और तभी भीतर धंसी काली स्याह आंखों वाला एक चेहरा मेरी आंखों में पारे-सा थरथराकर रह गया।

मैं घर की ओर बढ़ रहा हूं। कदमों में तेजी आती ही नहीं है। जैसे युद्धभूमि से पीछे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखाकर आये किसी पराजित योद्धा की चाल हो, या श्मशान में किसी आत्मीय को जलाकर लौट रहे शोकग्रस्त बंधु की शारीरिक और मानसिक थकान हो। क्यों है यह टूटन ? मैंने तो कोई युद्ध नहीं लड़ा। मैं तो केवल एक तटस्थ दर्शक हूं। हो सकता है, यह थकान, यह टूटन केवल निर्लिप्तता के कारण ही हो। मन खीज और आक्रोश से फनफना रहा है। आकाश में बादल भर गये हैं। लगता है, घर पहुंचते-पहुंचते खुलकर बरस पड़ेंगे।

× × ×

मैं अपने कमरे में प्रविष्ट होकर जूते उतार रहा हूं। पत्नी अभी तक नहीं लौटी है। पास के कमरे में स्टोव जलने की आवाज आ रही है। तभी सीढ़ियों से दो युवक धड़-धड़ाते ऊपर आते हैं और कमरे का द्वार जरा-सा खुलकर बंद हो जाता है। कुछ क्षण सन्नाटा खिंचा रहता है। अनायास मेरे नथुनों में एक फड़कन शुरू हो जाती है। कुछ भी हो, आज मैं इन लड़कों से बात करके ही रहूंगा। आखिर यह शरीफों का घर है, कोई सराय तो नहीं है। क्या समझ रखा है इन्होंने ? सारी लफंगई निकालकर रख दूंगा।

'हाय ..... म ..... राऽऽ ..... आ ..... आ'

एक बारीक-सी चीख हवा में बांहें फैला देती है। लो ! पता नहीं इन मुस्टंडों ने आपस में ही चाकू-छुरा चला दिया हो। अभी देखता हूं। न एक-एक को पुलिस के हवाले किया तो .....। मैं लपककर बंद किवाड़ों को धक्के से खोलकर भीतर घुस जाता हूं। 'नमस्ते ..... बाबूजी.....!' दो सरदार चारपाइयों से उठ खड़े होते हैं। उनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही हैं।

'आइये .....बैठिये.....' बड़ी हुई दाढ़ी वाला एक लंबा-तड़ंगा हिन्दू लड़का कुर्सी छोड़कर एक ओर सकुचाया-सा खड़ा हो जाता है।

चारपाई पर अधलेटा लड़का हाथ जोड़ने की चेष्टा में कराहकर तकिये पर गिरता नजर आता है। मेरी आंखों के सामने हजारों मटमैले धब्बे चक्राकार घूमते चले जाते हैं। पलंग की पाटी पर बैठा हुआ लड़का हल्दी-चोकर-फिटकरी वाला रुई का फाहा लेटे हुए साथी की बांह पर फिर से रखता है और फिर से 'हाय ..... मार डाला .....' की कराह उभरती है। मैं कुर्सी पर बैठा आंखें फाड़-फाड़कर उसे देखता हूं। एक बड़ा-सा लाल-सुर्ख जख्म एक पल के लिए दिखकर फाहे के नीचे छिप जाता है।

कोने में खड़ा हिन्दू लड़का बार-बार मेरी दृष्टि की परिधि में खिंच आता है। अभी तक वह कई महीनों की बढ़ी हुई दाढ़ी में अपनी उंगलियों से ब्रुश-सा कर रहा है और करता ही जा रहा है।

'यह क्या हुआ..... ?' सुन्न होते हुए मस्तिष्क से मैं केवल तीन शब्द अटक-अटककर निकाल पाता हूं।

'वो.....कल .....एक थानेदार ने.....' लेटा हुआ लड़का दर्द की शिद्दत से आंखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूंदते हुए वाक्य को हवा में अधूरा लटका देता है। पलंग की पाटी पर बैठे लड़के ने मैले कपड़े से उसकी बांह पर पट्टी बांधकर बांह धीरे से फटी-पुरानी रजाई के भीतर कर दी है और आंखों में अपार दर्द उड़ेलकर मुझे ताकते हुए कहता है – 'बाबूजी, कल थानेदार ने गोली चला दी थी, जो इसकी बांह को जख्मी करती हुई निकल गयी थी।

अब मुझे कमरे के दूसरे लड़के भी चेहरे पर हाथ फेरते नजर आ रहे हैं। दो-तीन क्षण तनाव में गुजर जाते हैं। मेरी स्मृति में रक्त-सने हाथ बालटी के पानी में साफ करने का दृश्य हिलने-डुलने लगा और अधरों से फूटता है – 'ओ.....ह..... तो किसी डाक्टर के पास ले जाओ न इसे.....।'

'.....डाक्टर ..... ?' एक कड़वा शब्द बेतहाशा बढ़ी दाढ़ी वाले हिन्दू लड़के के मुंह से फूटता है – 'उंह ! ..... बाबूजी, पुलिस हमारे पीछे लगी है। वह तो इसे भी धकेलकर जीप में चढ़ा रही थी, हम जैसे-तैसे इसे खींच लाये। किसी डाक्टर के पास जाने के लिए एक तो पैसे चाहिये और दूसरे अगर उसने थाने में रिपोर्ट कर दी या किसी और ने हमारे इस ठिकाने का पता पुलिस को बता दिया तो.....' कहते-कहते एक खूनी चमक उस सिक्खनुमा हिन्दू लड़के की आंखों में कौंध उठती है। मुझे लगा, मैंने इस लड़के को कहीं देखा है। पता नहीं कहां ?

'अच्छा.....' एक व्यर्थ-सा शब्द उगल-कर झन्नाती हुई टांगों पर मैं खड़ा हो जाता हूं। कमरे से निकलते-निकलते मैं एक और सिक्ख लड़के को अपनी दाढ़ी पर हाथ सहलाते हुए देखता हूं। मुझे लगा, उसकी आंखें धौंकनी बन गयी हैं। कमरे की घुटन में मुझे किसी घने बीहड़ जंगल में जा फंसने की जो अनुभूति हो रही थी, वह धीरे-धीरे कम हो रही है।

× × ×

पत्नी लौट आयी है। उसके हाथ में दवा की शीशी तो भरी हुई है; परंतु कोयले नहीं मिले हैं, यह बात वह आते ही मुझे बताती है। वह इतने घंटे आज फिर लाइन में गिरती-पड़ती रही। डिपो वाले कंट्रोल रेट पर कोयले दे तो रहे थे, किंतु बीच-बीच में बिना पर्ची वाले कुछ लोग भी आ जाते थे और डिपो वाले को कोने में ले जाकर गांठ लेते थे और डिपो वाला ब्लैक में कोयले सप्लाई करता रहा। सारी जनता उसे गालियां निकालते-निकालते क्रोध की जुगालियां करती रही। बीच-बीच में वे लोग कोयलों में आधा चूरा मिलाकर जनता की पर्चियां भी निपटाते रहे। दो-तीन औरतों ने तो दो दिन की मेहनत से मिले कोयले में चूरे की मिलावट देखकर सारा कोयला वहीं पलटवा दिया और उन लोगों से लड़ते-झगड़ते चली गयीं। मैं उसके हाथ से ५७५ नं. की पर्ची छीनकर टुकड़े-टुकड़े कर देता हूं।

पत्नी थकी-हारी बिस्तर पर गिर पड़ी है। मैं लपककर उसे दवा की एक खुराक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिलाता हूं। काफी देर तक दोनों में कोई संवाद नहीं होता। कुछ क्षण मेरी ओर ताकने के बाद वह कहती है—'सारा बाजार बंद हो गया था। मैंने डाक्टर की दुकान बहुत तलाश की, पर.....'

और वाक्य सदा की तरह अधूरा छोड़कर वह मुझे पढ़ने लगती है। पता नहीं, अब किस बात की भूमिका बना रही है वह।

'कोई दुकान ही नहीं मिली।'

'हूं...' मैं हुंकारा भरता हूं। आंखों में अथाह जलन किरकिरा रही है।

'आखिर एक ही डाक्टर की दुकान खुली मिली।'

'हूं...' मैं अपने अधर काट रहा हूं।

'और क्या करती ?' पत्नी सफाई-सी देते हुए बोली—'मेरा बदन बहुत टूट रहा था। जी तो किया दवाई वहीं फेंक आऊं.....'

'कितने पैसे लिये उसने ?' मैं एकदम फट पड़ा।

'पांच रुपये,' पत्नी के अधर फड़फड़ाकर रह गये हैं। आधा क्विंटल कोयले लेने को वह पांच-पांच के दो नोट लेकर गयी थी।

मैं आईने के सामने यंत्रवत् आ खड़ा हुआ हूं। यद्यपि मैंने कल ही शेव की थी, मुझे अपनी दाढ़ी कई हफ्तों की बढ़ी हुई जान पड़ती है। हद हो गयी, कितने कांटे उभर आये हैं ! मेरी आंखों में एक काला सूरज उल्लू की तरह स्थिर बैठा है। अपने आप ही मेरी उंगलियां दाढ़ी के कांटों को सहलाने लगती हैं। और सहलाती ही चली जाती हैं। मुंह से कोई शब्द नहीं फूटता। धीरे-से आकार चारपाई पर पत्नी के सिरहाने बैठकर उसका सिर दबाता हूं। पत्नी आश्चर्य से मेरी ओर देखती है और कुछ पूछने की हिम्मत भी नहीं कर पाती। मैं उठते समय फिर बढ़ी दाढ़ी पर उंगलियां फेरता हूं और बाहर निकल आता हूं।

अब मेरी नजरें इधर - उधर घूम रही हैं। छत, मुंडेर, सीढ़ी, कनस्तर, ड्रम, बिछी हुई चारपाई, कपड़े सुखाने के तार और उनसे भी आगे पड़ोस के पिछले घर पर जा टिकती हैं। वहां वही सुबह वाला चेहरा दिखाई देता है। कुछ क्षण वह मुझे उसी भयानक मुद्रा में घूरता है, जैसे कच्चा ही चबा जायेगा। मैं तारों के नीचे से निकलकर उसकी ओर बढ़ता हूं और उसके काफी समीप जा खड़ा होता हूं। सहसा मेरे अधरों पर एक मुस्कान तैर जाती है, जिसे देखकर वह चेहरा भी नर्म पड़ जाता है। अब मुझे उसके हंसते हुए दांत दिखते हैं और फिर वह उसी तरह मुड़कर बरसाती में चला जाता है।

मैं पुनः फूली हुई सांसों से छत पर टहलने लगता हूं—एक बंद भिंची मुट्ठी से खुली हथेली पर आघात करता हुआ, या फिर दाढ़ी के कांटे सहला-सहलाकर भीतरी आक्रोश को कम करता हुआ एक अकथ छटपटाहट में पोर-पोर धंस जाता हूं।

—६४/४, कुदरत निवास, तोपखाना रोड,
पटियाला, पंजाब

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्भ्रंश क्या है?

जे. सी. निगम

मस्तिष्क का हमारे शरीर में अत्यधिक महत्त्व है। हमारे जीवन के समस्त महत्त्वपूर्ण कार्यों का संचालन मस्तिष्क ही करता है। इस छोटे-से भाग में ऐसे अनेक स्थल हैं, जिनके द्वारा बोलने, सुनने, लिखने, समझने, गाने एवं गणित के प्रश्न हल करने आदि कार्यों का संपादन होता है।

प्रसिद्ध विज्ञानी गाल ने सन १८०० में यह प्रतिपादित किया था कि मस्तिष्क के अग्रभाग में ललाट के पीछे बौद्धिक शक्तियां रहती हैं, मध्यभाग में नैतिक गुणों का निवास होता है, और पाशविक प्रवृत्तियां पृष्ठभाग में रहती हैं। गाल ने मस्तिष्क के शीर्षस्थान में श्रद्धा और लघुमस्तिष्क में काम-प्रवृत्ति (सेक्स) का अधिष्ठान माना था।

पाल ब्रोका ने सन १८६१ में यह स्थापना प्रस्तुत की कि प्रांतस्था (कार्टेक्स) के एक विशेष भाग में किसी प्रकार की चोट लगने पर मनुष्य बोलना बंद कर देता है। फ्रीश तथा हिटजिक के प्रयोगों (सन १८७०) से यह पता चला कि प्रांतस्था के विशेष भागों में विद्युत-संवेदना पहुंचाने से शरीर के विभिन्न भागों में गतियां उत्पन्न होती हैं।

आधुनिक विज्ञान में इन पुराने सिद्धांतों का बोलबाला कम होता जा रहा है और यह सही-सही पता करना कठिन हो गया है कि मस्तिष्क में विभिन्न अंगों से प्राप्त सूचनाओं का संयोजन कहां होता है। इन अंगों की सीमाओं का पता लगाने के लिए अभी बहुत अनुसंधान अपेक्षित है।

वाक्भ्रंश (एफेसिया), जो ज्यादातर स्तंभन पक्षाघात (पेरैलिसिस) के कारण उत्पन्न होता है, आजकल बहुत देखने में आता है। इस रोग में रोगी की वाक्-शक्ति एवं भाषा का उपयोग करने की क्षमता आंशिक या पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है।

रोग के लक्षण

यह एक विचित्र कठिनाई है। इसमें रोगी को सार्थक या सुसंबद्ध वाक्य बोलने तथा बोली हुई बात का अर्थ समझने में कठिनाई होती है। लिखित मजमून पढ़ने व समझने में भी उसे दिक्कत होती है। पक्षाघात के कारण रोगी प्रायः लिखने की भी शक्ति खो बैठता है। अचानक ऐसी हालत उत्पन्न होने पर रोगी एवं उसके समस्त परिवार को चिंता होना स्वाभाविक है।

रोगी में शारीरिक शक्ति कम हो जाती है। परिणामतः उसका दायां पार्श्व, विशेषतया हाथ एवं पैर बेकार हो जाते हैं। दूसरी ओर, बोलने तथा भाषा-संबंधी क्षति के कारण उसकी मानसिक एवं शारीरिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दशा में बहुत गिरावट आ जाती है। वह अपनी ज्ञानबुद्धि भी खो बैठता है।

प्रायः इन सभी रोगियों में वाक्भ्रंश के दो स्वरूप पाये जाते हैं। पहला है बोध-संबंधी वाक्भ्रंश; और दूसरा है चेष्टा-संबंधी वाक्भ्रंश। बोध-संबंधी वाक्भ्रंश में रोगी को भाषा सुनकर समझने में एवं लिखी या छपी इबारत को देखकर समझने में कठिनाई होती है। चेष्टा-संबंधी वाक्भ्रंश में मुंह से शब्दों का उच्चारण करने, उन्हें वाक्यों के रूप में बोलने एवं शब्दों या वाक्यों को लिखने में कठिनाई होती है। इस प्रकार के रोग में ज्यादातर पूर्वचेष्टाधिष्ठान (प्री मोटर एरिया) के निचले भाग में आघात का होना पाया जाता है।

भाषा-संबंधी क्रियाओं का नियंत्रण मस्तिष्क के एक ही गोलार्ध में होने के कारण वाक्भ्रंश का स्थान भी प्रांतस्था (कार्टेक्स) में एक ही ओर होता है। यह स्थान साधारणतया बायें गोलार्ध में होता है। दायें गोलार्ध पर चोट आने से भाषा एवं वाणी-संबंधी क्षमताओं पर कोई असर नहीं पड़ता।

वाणी-संबंधी कठिनाइयों के अलावा कुछ अन्य लक्षण भी इन रोगियों में प्रकट होते हैं। रोगी शारीरिक स्पंदनों को भली प्रकार परस्पर संबद्ध नहीं कर पाता। उदाहरणतः, उसे ताला खोलने, माचिस जलाकर सिगरेट सुलगाने आदि में परेशानी होती है। इस प्रकार की कठिनाई को चेष्टारोध (एप्राक्सिया) कहते हैं। इसमें प्रायः हाथ से किसी प्रकार का कार्य करने की शक्ति घट जाती है या नष्ट हो जाती है।

दूसरे प्रकार की कठिनाई को प्रज्ञारोध (एग्नॉसिया) कहते हैं। इसमें सुनी या देखी हुई वस्तु में भ्रम पैदा हो जाना, ठीक से सुन व देख न पाना, वस्तु को पहचान न पाना, आकारों एवं रंगों में भेद न कर पाना आदि लक्षण रोगी में दिखाई देते हैं।

मस्तिष्क की प्रांतस्था (कार्टेक्स) के किसी क्षेत्र में आघात लगने पर इन भागों का संयोजन बिगड़ जाता है। रोगी में संयोजन एवं बुद्धिपूर्वक व्यवहार करने की क्षमता किस सीमा तक कुंठित होगी, यह आघात की तीव्रता पर निर्भर होता है।

रोगी की देखभाल एवं उपचार

ये शक्तियां या तो धीरे-धीरे अपने आप कुछ समय में वापस आने लगती हैं, या फिर वाक्-चिकित्सक द्वारा दिये गये विशेष ढंग के प्रशिक्षण से रोगी में वाणी एवं भाषा का पुनः संघटन किया जा सकता है। शारीरिक

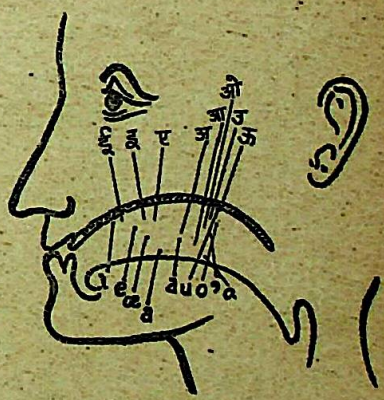

उच्चारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

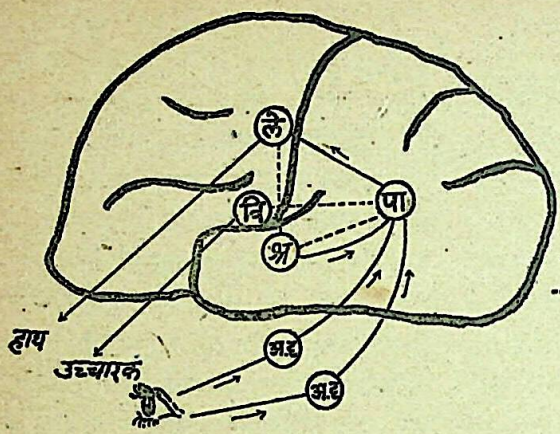

चिकित्सा करने वाला डाक्टर इन लक्षणों को दूर करने में खास सहायक नहीं हो सकता। हां, वह रक्तचाप की जांच, मधुमेह की रोकथाम तथा हृदय या अन्य रोगों की चिकित्सा करके रोगी को राहत दे सकता है।

वाक्-चिकित्सक एवं भाषा-चिकित्सक ऐसे रोगियों के साथ बड़ी नरमी और मधुरता से बातचीत करना आरंभ करता है। रोगी के परिवार के लोगों को वह इस बात का पूरा ज्ञान करा देता है कि रोगी के साथ वे सभी बहुत अच्छा व्यवहार करें और उसके साथ खुलकर बातचीत करें। स्वजनों का मैत्रीपूर्ण व्यवहार रोगी की वाक्-शक्ति को वापस लाने में सहायक होता है।

उचित यही है कि रोगी अन्य सभी कार्य यथापूर्व करता रहे। जैसे कि यदि वह चलने-फिरने योग्य है, तो चलकर किये जाने वाले कार्य स्वयं ही करे। इस प्रकार उसका सामाजिक जीवन विच्छिन्न नहीं होगा।

रोगी की स्मृतियों के टूट जाने, उसकी धारणा-शक्ति के कमजोर पड़ जाने या घट जाने, पुनः याद करने या पहचानने की असमर्थता जैसी कठिनाइयों को धीरे-धीरे दूर करके उसे सामान्य अवस्था में वापस लाने का प्रयास किया जाता है। चारों ओर से भिन्न-भिन्न उत्तेजनाएं देकर उसकी ज्ञानेंद्रियों को सजग बनाया जाता है। धीरे-धीरे पढ़ने, सुनने तथा देखकर वस्तुओं को छूने तथा चखने से पूर्व ज्ञात चीजों को स्मरण करने की शक्ति में सहायता मिलती है।

इस प्रकार यदि रोगी को प्रोत्साहित किया जाये, तो वह कुछ दिनों में अपने आपको बदला हुआ अनुभव करेगा। उसके बोलने में थोड़ा-सा भी जो सुधार हो, उसकी सराहना करना बहुत आवश्यक है। इससे धीरे-धीरे रोगी समझना एवं बोलना आरंभ कर देता है।

—प्रवर वाक् - चिकित्सक, आल इंडिया इंस्टिटयूट आफ मेडिकल सायंसेज, अंसारी नगर, नयी दिल्ली-१६

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार चलाने के खतरे

अनंत

कार चलाते समय जरा यह ध्यान रखिये कि आपकी कार कहीं आपको मरघट की ओर तो नहीं ले जा रही है। बात बहुत बड़ी है, मगर यदि आप भरोसा करें तो है बहुत सही। यों मरघट की ओर तो देर-सवेर से सबको जाना ही है, लेकिन अपनी ही कार पर चढ़कर और खुद उसे चलाकर मरघट पहुंचना कोई अक्लमंदी की बात तो नहीं।

सच मानिये, यह कार है बड़ी जालिम चीज। इसे सड़कों पर चलाते ही यह आपकी जिंदगी को छोटा करना शुरू कर देगी। दुर्घटना की बात जाने दीजिये, क्योंकि आप कार चलाने में बहुत होशियार हैं और भाग्य के वली भी। दूसरी बात यह भी है कि दुर्घटनाएं रोज तो होतीं नहीं, लेकिन जिस कार को आपने शोरूम-कंडीशन में रखा है, उसने आपको लगातार तनावों और चिंताओं में जीने के लिए विवश कर दिया है।

आपकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो सकती है और संभव है कार पर होने वाला खर्च आपको नागवार न गुजर रहा हो और उस तरफ से आपको किसी किस्म की चिंता न हो। यह भी संभव है कि आप-में काफी धीरज हो, फिर भी आप कहां तक बर्दाश्त करेंगे। देखिये न! जो कार अभी तक आपके दायीं ओर खड़ी थी, तेजी से आपका रास्ता काटकर बायीं ओर मुड़ गयी। आपने तुरंत ब्रेक न दबाया होता तो दुर्घटना होने में भला कसर ही क्या रह गयी थी।

कार-दुर्घटना तो नहीं हुई, लेकिन एक और अधिक भयंकर दुर्घटना हो गयी। भयंकर इसलिए कि उसका असर आपने फौरन महसूस नहीं किया, मगर कालांतर में वह आपकी जिंदगी को छोटा करके ही रहेगी। जिस समय वह कार रास्ता काटकर बायीं ओर मुड़ी थी और उसके बाद थोड़ा आगे बढ़ने पर आपके सामने से आने वाली

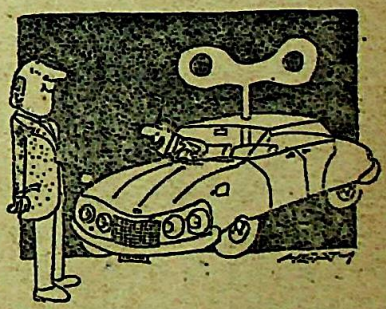

'पेट्रोल महंगा होता हो तो हो, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता.....' (हीथ 'स्पेक्टेटर' में)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार आपके दाहिने तरफ अपना गलियारा काटकर आपके गलियारे में घुस आयी थी, तब उन दोनों मौकों पर आपके दिल और दिमाग की नसें तन गयी थीं और यही तनाव आपकी जिंदगी को छोटा कर बैठा।

सिर्फ उस समय ही नहीं, जब चौराहे पर लाल बत्ती हो जाने के कारण आप कतार में बहुत पीछे रह गये थे, इतना पीछे कि चौराहे की बत्ती हरी होने पर आपके आगे की सब कारें पार हो गयीं और ज्यों ही आपकी कार चौराहे पर पहुंची, त्यों ही बत्ती फिर से लाल हो गयी। आपने देखा नहीं उस समय आपकी आंखें भी लाल हो गयी थीं और आप अधीरता तथा खीज से भर उठे थे। आपको याद होगा अधीरता से उस समय आपकी उंगलियां बड़ी बेताबी से स्टीयरिंग व्हील पर नाचने लगी थीं और ब्रेक पर रखा आपका पांव बेहद तनाव की हालत में था।

विश्वास कीजिये, कार चलाने से चिंता, क्रोध और अधीरता का जन्म होता ही है। आप उन्हें टाल नहीं सकते और उनका आपके स्वास्थ्य पर निहायत खराब असर पड़ता है। वैज्ञानिकों ने इस बारे में काफी छानबीन की है। पश्चिम जर्मनी में बोन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक हस्मन हौफमां ने प्रयोगों के आधार पर यह पता लगाया है कि कार चलाते समय होने वाली चिंता और अधीरता चालक के हृदय के माप, रक्तचाप और उसकी नाड़ी की गति में असाधारण परिवर्तन कर देती है। लंदन की इंस्टिटयूट आफ डायरेक्टर्स में चिकित्सा-अनुसंधान शाखा के निदेशक डा. बेरिक राइट ने भी यह चेतावनी दी है कि कार चलाने वालों का स्वास्थ्य खतरे में है।

डा. राइट ने कहा है कि कार के अविवेकपूर्ण व्यवहार से जिंदगी छोटी होने का खतरा बना रहता है। सड़क के तनावों के कारण कार चलाने वालों को कारोनरी थ्राम्बोसिस का रोग होने की संभावना रहती है। शारीरिक श्रम करने वालों की अपेक्षा कुर्सी में बैठकर काम करने वाले लोग इस तनाव से ज्यादा पीड़ित होते हैं।

कार चलाने वालों की व्याधियां आधुनिक सभ्यता की देन हैं। एक जमाना था जब आदमी खाने की तलाश में मीलों पैदल चलता और शिकार के पीछे सरपट दौड़ता था, मगर आज हालत यह हो गयी है कि यदि केवल आध मील दूर जाना होतो भी कार वाले कार बिना नहीं जा सकते।

जो काफी देर तक या काफी तनाव की हालत में कार चलाते हैं, उनकी दायीं टांग और दायें पांव के सुन्न होने का खतरा हमेशा बना रहता है। डाक्टरों ने इस बीमारी का नाम 'मोटरिस्ट्स फुट' रखा है। आजकल बड़े शहरों में सड़कों पर काफी भीड़भाड़ रहने लगी है, जिससे कार-चालकों को काफी परेशानी होती है। मान लीजिये, एक सज्जन बड़े इत्मीनान से टहलते हुए सड़क पार कर रहे हैं। आपके लाख हार्न बजाने का उन पर कोई असर नहीं पड़ा, लेकिन क्या आप पर भी इसका कोई असर नहीं पड़ा है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा कैसे हो सकता है, आप खीज उठे हैं और भले ही ठहाका लगाकर आपने अपनी खीज को छिपा लिया हो, मगर वह आपको नुक्सान पहुंचा चुकी है। इस उत्तेजना से आपकी समस्त आंतरिक ग्रंथियां अतिरिक्त द्रव्यों का स्राव करने के लिए विवश हो गयी हैं। यदि आप खाली पेट हैं तो शीघ्र ही आंतों में जलन और दर्द महसूस करेंगे, किंतु यदि भोजन करके निकले हैं तो आपके पेड़ू में ऐंठन शुरू हो जायेगी। आपकी पाचनशक्ति बिगड़ रही है और आप कुछ नहीं कर सकते; क्योंकि आप कार चलाना नहीं छोड़ सकते।

कार चलाने वालों को अपने मुकाम पर पहुंचकर भी गहरे तनाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप दिल्ली या बंबई जैसे शहर में हों तो कार खड़ी करने की समस्या आसानी से हल नहीं की जा सकती। आपके पास समय कम है और कार खड़ी करने के लिए जगह मिल नहीं रही है, फिर अंत में जगह मिल भी गयी तो जहां आपको जाना है, वहां से आधा मील दूर। ऐसी स्थिति में परेशान होना और तनाव महसूस करना स्वाभाविक है।

कुछ लोग सोचते हैं कि धीमी गति से चलने की अपेक्षा तेज रफ्तार से कार चलाने वाले लोगों को अधिक तनाव होता होगा, लेकिन ऐसा नहीं है। वैज्ञानिकों ने परीक्षण करके यह पता लगाया है कि खुली सड़क पर ६० मील प्रति घंटा की रफ्तार से कार चलाने वालों को इतना तनाव नहीं होता,

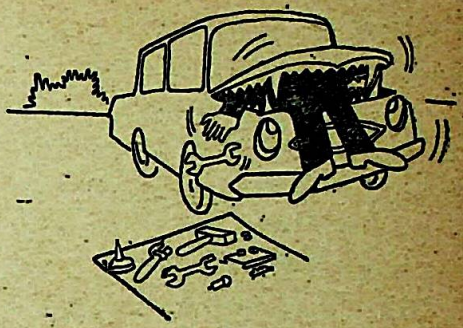

स्टीलयुग का उपहार

जितना कि भीड़-भाड़ वाली सड़क पर २० या ३० मील प्रतिघंटा की गति से चलाने वालों को।

आम तौर पर यह देखा गया है कि जो लोग कार चलाने के आदतमंद हो जाते हैं, उनमें आलस्य की मात्रा बढ़ जाती है और वे धीरे-धीरे मोटे होते जाते हैं, जिससे उनकी उम्र कम होती जाती है। वैज्ञानिक जांच से ज्ञात हुआ है कि तीस वर्ष की उम्र में जो दुबले-पतले होते हैं, उनमें से नब्बे प्रतिशत साठ बरस तक आदमी-से जी लेते हैं, लेकिन जो लोग इस उम्र में मोटे हो जाते हैं उनमें से केवल दो तिहाई ही साठ की ड्योढ़ी छू पाते हैं।

घंटों तक स्टीयरिंग व्हील थामे रहने वाले व्यक्ति की कमर अनायास ही झुक जाती है। एक वर्ष तक कार चलाने के बाद आपके पेड़ू के पुट्ठे सिकुड़ जायेंगे और कंधे ढलकने लगेंगे। पेड़ू के पुट्ठे सिकुड़ने से आंतों पर दबाव पड़ेगा और आप कब्ज से पीड़ित रहने लगेंगे। डाक्टरों का मत है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार चलाने वाले लोगों में से अधिकांश गैस की बीमारी से पीड़ित रहते हैं।

ब्रिटेन जैसे विकसित देशों के डाक्टरों का कहना है कि उनके ७५ प्रतिशत मरीज कार चलाते हैं और वे सबके सब निरपवाद रूप से प्रशांतकों तथा शरीर को साधे रखने वाली दवाओं की मांग करते रहते हैं। अच्छे डाक्टर उन्हें दवा देने के बजाय विश्राम की सलाह देते हैं।

वे कहते हैं कि जिस तरह धुलने के बाद सिलवटें निकालने के लिए कपड़े पर इस्त्री की जरूरत होती है, उसी तरह कार चलाने से होने वाली थकान का सामना करने के लिए चालक के शरीर को पूरी तरह रिलैक्स करके उसकी सिलवटें निकालनी होती हैं।

जाहिर है कि लोग कार चलाना बंद नहीं कर सकते, इसलिए इन तनावों के प्रभावों को कम करने का एक ही रास्ता है कि कार चलाते समय मानसिक और शारीरिक तौर पर प्रसन्न तथा ढीला रहा जाये। लंदन-ट्रांसपोर्ट के मेडिकल ऑफीसर डा. लेसली नारमन का विचार है कि कार चलाने वालों की अपेक्षा बस-चालक अधिक स्वस्थ रहते हैं और इसका कारण यह है कि वे आम तौर पर अधिक सहनशील तथा खुश रहने के अभ्यस्त हो जाते हैं। डा. नारमन कहते हैं कि लंदन ट्रांसपोर्ट के सत्रह सौ ड्राइवरों में से अधिकांश खुश रहते हैं और उन्होंने अपना एक दर्शन बना लिया है कि 'मुकाम पर पहुंचना है, कोई जान थोड़े ही देनी है।'

आपने कभी देखा है कि जब आप अपनी कार से उतरकर जमीन पर खड़े होते हैं, तो आपके पांव सीधे नहीं पड़ते और जब आप चलने लगते हैं, तो प्रायः काफी देर तक और दूर तक आपके कदम सीधे नहीं पड़ते, आप लड़खड़ाते-से जाते हैं। मालूम है क्यों? कार चलाने से आपकी टांगों पर बेहद तनाव पड़ा है और आपके शरीर की उस समूची नाड़ी-व्यवस्था पर भी जो आपको संतुलित रखती है।

आगे से जब आपको किसी दूसरे कार-चालक पर गुस्सा आये या आप सामने की कार से आगे निकलने की चेष्टा करने लगें, तो जरा अपनी नाड़ी की गति पर भी ध्यान दीजियेगा। कहीं वह बहुत तेज न हो जाये। अच्छा तो यही है कि आप बस-चालकों के 'जियो और जीने दो' सिद्धांत पर अमल कर सकें, इससे आपकी उम्र छोटी नहीं होगी। शायद आपने किसी स्कूटर-टैक्सी के पीछे लिखा देखा हो—'जियो और जीने दो'।

* ईमानदारी-भरी गरीबी ऐसा हीरा है, जिसे अपनाकर कोई बादशाह भी गर्व अनुभव कर सकता है; लेकिन मैं उसे बेचना चाहता हूं। —मार्क ट्वेन
* यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी बातें पूरी ईमानदारी से कहने का प्रयत्न करे, तो वह किसी से बातचीत कर ही न सकेगा। —डिसरायली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

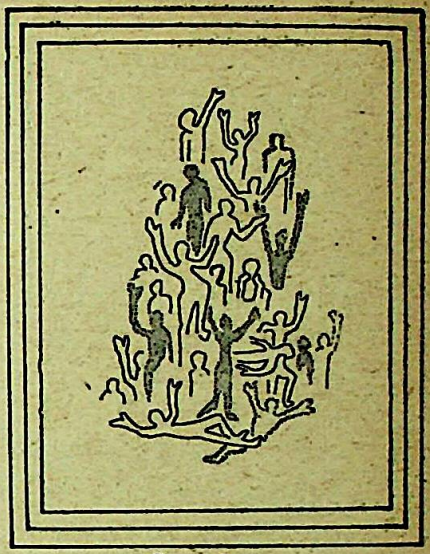

आबादी की सघनता

आबादी की सघनता का मनुष्यों के व्यवहार पर क्या प्रभाव होता है, इस विषय में आजकल तरह-तरह के परीक्षण किये जा रहे हैं, जिनके परिणाम बहुधा परस्पर विरोधी भी होते हैं।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की मानसशास्त्री चैल्सा लू ने चार-पांच वर्ष के बच्चों की दो टोलियां बनायीं। दोनों में तीन-तीन लड़कियां थीं और तीन-तीन ही लड़के थे। खेलकूद के ४८ मिनिट के वर्ग में दोनों टोलियों को अलग-अलग दो कमरों में बंद किया गया। एक कमरा ९० वर्गफुट का था, दूसरा २६५ वर्गफुट का। देखा गया कि बड़े कमरे में लड़के ज्यादा आक्रामक रहे, छोटे में वैसे ही रहे; जबकि दोनों ही कमरों में लड़कियों के व्यवहार में विशेष अंतर नहीं था।

सन १९६६ में 'नेचर' पत्रिका में हट और वेजी नामक दो वैज्ञानिकों के प्रयोगों का वर्णन छपा था। जिसमें यह परिणाम निकाला गया था कि भीड़-भरे स्थान पर आक्रामकता बढ़ती है।

मानसशास्त्री लू का कहना है कि दोनों परीक्षणों में बुनियादी अंतर था। उनका अपना यह परीक्षण 'स्थानगत सघनता' से संबंधित था, जबकि १९६६ वाले परीक्षण का संबंध 'सामाजिक सघनता' से था। आदमी तो उतने ही रहें, मगर जगह कम हो जाये, यह है स्थानगत सघनता में वृद्धि। लू का कहना है कि इस स्थिति में लोग दूसरों को अपनी कठिनाइयों के लिए दोष नहीं देते, बल्कि मानते हैं कि हम सभी अपने से बड़ी एक शक्ति (भौतिक परिस्थिति) के हाथ के खिलौने हैं। इसके विपरीत जब स्थान उतना ही रहे, मगर आदमी बढ़ जायें यानी सामाजिक सघनता बढ़ जाये, तो लोग नवागंतुकों को अपनी तमाम तकलीफों के लिए दोषी ठहराने लगते हैं।

मानसशास्त्री लू ने पाया कि भीड़ वाले कमरे में बच्चे अलग-अलग अपने आप ही खेलने लगते हैं—शायद इसलिए कि वहां ज्यादा आक्रामक किस्म के खिलौनों के उपयोग के लिए स्थान नहीं होता। वे मानती हैं कि इस प्रकार परिस्थितिवश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दबने वाली आक्रामकता ज्यादा देर तक दबी नहीं रहती। दूसरी ओर यह भी संभव है कि दीर्घकाल में लोग भीड़ जैसी लाचारी के अनुकूल अपने को ढाल लें और उसके नकारात्मक प्रभावों से छुटकारा पा लें।

अमरीका के ही वाटर लू और नार्थ केरोलिना विश्वविद्यालयों के चार मानस-शास्त्रियों ने आठ पुरुषों और आठ स्त्रियों की दो टोलियों को पहले एक छोटे कमरे (४५ वर्गफुट) और फिर एक बड़े कमरे (१३४ वर्गफुट) में बैठाकर उनसे चर्चा की। दोनों बार कमरे से निकलने के बाद सबसे एक-एक पर्चा भरवाया गया, जिसमें उन्हें अपने तथा दूसरों के बुद्धिमत्ता, लोकप्रियता, कल्पनाशक्ति, स्वार्थीपन आदि गुण-दोषों के बारे में नंबर देने थे।

देखा गया कि बड़े आकार के कमरे में पुरुषों ने अपने आपको व दूसरों को अधिक गुणवान अनुभव किया और सद्गुणों के अंक ऊंचे दिये। इसके विपरीत स्त्रियों ने छोटे कमरे में अपने को और दूसरों को अधिक गुणी पाया। प्रयोगकर्ता वैज्ञानिकों ने उसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि आपस में एक-दूसरे के बीच की स्थानगत दूरी कम होने पर पुरुषों को बेचैनी अनुभव हुई, जबकि स्त्रियों को दूरी बढ़ने से बेचैनी हुई।

न्यू मेक्सिको विश्वविद्यालय (अमरीका) की नृतत्त्वशास्त्री पैट्रीशिया ड्रेपर ने कालाहारी रेगिस्तान (दक्षिण अफ्रीका) के किनारे पर रहने वाले कुंग बुश्मन कबीलों का अध्ययन किया है। इन लोगों की आबादी १ आदमी प्रति १० वर्गमील है। फिर भी वे अपना शिविर इस तरह लगाते हैं कि जगह की बड़ी तंगी रहती है और कई बार तो एक कमरे में ३० मनुष्य तक रहते हैं। फिर भी देखा गया है कि कुंग बुश्मन उन शारीरिक लक्षणों से बिलकुल मुक्त थे, जिन्हें तनाव-दबाव से उत्पन्न माना जाता है। उनका रक्तचाप नीचा था, उम्र के साथ उनके रक्तचाप में वृद्धि नहीं देखी गयी। उनके रक्त में कोलेस्टेल-स्तर भी दुनिया में सबसे नीचा पाया गया।

विज्ञानी ड्रेपर को इस सिलसिले में दो बातें बहुत महत्त्वपूर्ण लगीं। एक यह कि कोई भी व्यक्ति या परिवार अपनी इच्छा से शिबिर छोड़कर दूसरे शिबिर में जा सकता है—इस बारे में किसी किस्म की रोकटोक नहीं होती। दूसरे शिबिर भले तंग हों, मगर दो शिबिरों के बीच प्रायः १५ मील की दूरी रहती है, जिससे इन लोगों का अपरिचितों से संबंध बहुत ही कम होता है। शहरों में इससे उलटी बात है; वहां 'अजनबियों की सघनता' बहुत अधिक होती है।

प्रत्येक मां यह आशा करती है कि उसकी बेटी को उसके पति से अच्छा पति मिलेगा। लेकिन वह विश्वस्त रूप से जानती है कि उसके बेटे को उतनी अच्छी पत्नी नहीं मिलेगी, जितनी कि उसके पति को मिली थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल्की बूंदाबांदी हो रही थी और मैं धनबाद से झुमरीतिलैया के लिए ठीक बारह बजे रात को कार से रवाना हुआ। जी.टी. रोड पर ट्रकों-बसों और कारों को रोककर लूटने की घटनाएं बराबर होती रहती हैं; लेकिन मैंने सपने में भी न सोचा था कि मेरे साथ भी इस प्रकार की दुर्घटना घट सकती है।

धनबाद से करीब ४० मील आगे आया था कि देखा, सड़क पर मोटे-मोटे पत्थर और वृक्ष की शाखाएं रखी हैं और रास्ता बंद है। न आगे बढ़ सकते थे, न पीछे हट सकते थे। मैंने ड्राइवर को कांपते देखा, तो धीरे-से कहा—'गाड़ी रोक दो और तुम लोग अंदर ही बैठे रहो।' गाड़ी के रुकते ही लाठी, भाले और बंदूकों से लैस दस-बारह आदमी जंगल से निकलकर सामने आ गये। बादलों से ढंकी चांदनी रात में उनके अस्त्र साफ दिखाई दे रहे थे। सबने अपना सिर और मुंह कपड़े से ढंक रखा था।

'पहले मेरी बातें सुन लीजिये, फिर जो मन में आये करें।' यह कहता हुआ मैं गाड़ी का दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। बोला—'मुझे शायद आप लोगों ने पहचाना नहीं। मैं हूं शंकर दयाल सिंह, एम. पी., यह सब काम बाहर वालों के साथ भले करें, अपने लोगों को तो छोड़ दें।'

वे सबके सब खामोश थे। करीब तीन मिनिट इसी खामोशी में बीते। मेरा डर और बढ़ गया। फिर भी मैं हिम्मत करके बोला—'अगर अब भी आपको लूटना ही है, तो जो सामान है ले लीजिये और मुझे जाने दीजिये। सवेरे से ही मेरा प्रोग्राम है। नहीं तो रास्ता ख़ाली करवा दीजिये।'

'खैर आप हैं तो जाइये।' एक उसांस लेकर उनका सरदार बोला और उसने अपने सहायकों को जल्दी-जल्दी पत्थर और लकड़ी हटाकर रास्ता साफ कर देने के लिए कहा।

रास्ता खुलते ही मैंने भगवान का नाम लिया और उन्हें धन्यवाद देता हुआ गाड़ी पर बैठकर चल दिया। लेकिन गाड़ी बढ़ते-बढ़ते मैंने उनमें से एक की आवाज सुनी—'उस्ताद, यह पहला माल था, छोड़ना नहीं चाहिये था, यात्रा खराब हो गया।'

—शंकर दयाल सिंह, नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये जननेता !

पिछले वर्ष अप्रैल का महीना होगा, मैं कुछ किताबें खरीदने दिल्ली गया और सदा की तरह अपने जीजाजी के यहां ठहरा। अगले दिन मैं किताबें खरीदने के बाद शाम को उन्हीं के साथ वापस घर लौटते हुए नार्थ एवेन्यू में एक संसद-सदस्य (एम.पी.) के यहां गया। जीजाजी तो अंदर चले गये और मैं बाहर ही खड़ा रहा। कुछ देर बाद मुझे भी अंदर बुलवा लिया गया। वहां एक सज्जन और बैठे थे। शायद वे एम. पी. महोदय के निकट के संबंधी होंगे। थोड़ी देर बाद एम. पी. महोदय पान खाते हुए अंदर से आये। कुछ देर तक तो किसी आवश्यक कार्य के विषय में जीजाजी से बातें होती रहीं। जब बातें समाप्त हुईं, तो बैठे हुए सज्जन ने उनसे कहा कि आपके सोफे का कवर कुछ अच्छा नहीं है। इस सोफे को सरकारी स्टोर में जमा कराकर इसके बदले अच्छा सोफा निकलवा लें। इस पर एम. पी. महोदय ने फरमाया कि इसे क्यों, कोई टूटा-फूटा सोफा जमा कराकर नया निकलवा लेंगे। बड़ी वेदना हुई कि जन-नेता का चरित्र इस हद तक गिर सकता है!

—योगेंद्रपाल सिंह, सवाई माधोपुर, राज.

ooo

दायित्वबोध

मैं स्थानांतरित होकर इस स्कूल में नया ही आया था। उन दिनों मुझे पढ़ने का बेहद शौक था। जो भी किताब-पत्रिका हाथ लगती पढ़ने बैठ जाता। स्थान-काल किसी का भी खयाल न करता। अक्सर स्कूल के समय में पढ़ता रहता था।

एक बार प्रधानाध्यापक ने मुझे कुछ छात्रों से एक काम कराने को कहा। मैंने छात्रों को काम बता दिया और खुद कुर्सी पर पसरकर बैठ गया, टांगें टेबल पर फैला-कर एक पत्रिका पढ़ने लगा। मुझे पढ़ने में डूबा देख छात्रों ने काम की जगह आपस में धींगामुश्ती करनी शुरू कर दी।

इसी बीच प्रधानाध्यापक उधर से गुजरे और स्थिति को देखकर स्वयं उस काम में जुट गये। इससे सब छात्र भी शांत होकर काम में लग गये। थोड़ी देर पहले का कोला-हल एकाएक शांत होने से मेरा ध्यान भंग हो गया। देखा, प्रधानाध्यापक स्वयं काम में जुटे हैं और छात्र भी। मैं शर्म से पानी-पानी हो गया। लेकिन प्रधानाध्यापक ने मुझसे इतना ही कहा—'अपने दायित्व को समझना चाहिये।' जीवन-भर के लिए एक नसीहत मिल गयी।

—बाबूलाल 'श्रीमयंक', जीरन,
मंदसौर, म.प्र.

ooo

दिल का दौरा

२८ अगस्त १९६८ की मध्य रात्रि। अचा-नक नींद में ही पीड़ा का आभास और नींद खुलते ही असहनीय पीड़ा। दिल के दौरे का मेरा यह प्रथम अनुभव था। रोग का निदान होने में और उपचार प्रारंभ होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में समय नहीं लगा; क्योंकि डाक्टर निकट ही थे। उनके इंजेक्शन लगाने के साथ ही मुझे नींद आ गयी। दूसरे दिन जब आंख खुली; तो मौत से बचकर जिंदा रहने का अपूर्व अनुभव हुआ, क्योंकि वही रात की पीड़ा मृत्यु बन सकती थी।

दूसरे दिन उपचार के लिए मुझे अस्पताल में भर्ती करा दिया गया।

कुशल डाक्टरों की चिकित्सा व योग्य नर्सों के उपचार के अतिरिक्त मित्रों-संबंधियों की प्रार्थना और प्रेम एक और अचूक दवा थी, जो मौत को आने से बचाती रही। मित्रों के आने का तांता तो लगा ही था; क्योंकि यह वह समय था, जब कि सारे संबंध समान हो जाते हैं और समाजवाद का इससे बेहतर नमूना मिलना कठिन है। जो लोग मतभेदों के कारण दूर थें, वे भी निकट आ गये। उच्छृंखलताओं, द्वेष और क्षुद्रता के सभी आधार ढह गये। प्रेम और परमेश्वर में आस्था जिंदगी के लिए बड़ी दवा है।

इसी घटना से जुड़ी हुई एक दूसरी घटना है। मेरे एक मित्र जो मेरे साथ ही शासकीय नौकरी में थे, दिल के दौरे में ही लगभग पांच साल पहले चल बसे। उनका इकलौता जवान बेटा (पुकार का नाम लालजी) मेरे सुपुर्द था। वह भी एक शासकीय पद पर था। मेरे लड़कों और मित्र के बेटे में कोई भेद-भाव नहीं था। मेरी बीमारी में इस लड़के पर भी चिंता की छाया थी; क्योंकि वह इसी बीमारी में अपने पिता को खो चुका था।

मुझे अस्पताल में लगभग २७ दिन हो चुके थे और मैं कमरे में चलने-फिरने लगा था। मैंने लालजी के बीमार होने की बात सुनी। यह भी ज्ञात हुआ कि उसे अस्पताल में दाखिल करना आवश्यक है। प्राइवेट वार्ड खाली नहीं थे। मुझे छुट्टी मिलने में अभी ४-५ दिन शेष थे। मैंने लालजी के लिए अपना कमरा खाली करने की अनुमति मांगी और वह मिल गयी। मैं घर आ गया और नित्य मेरे स्वास्थ्य में सुधार होने लगा।

लालजी के विषय में मुझे बताया गया कि उसे भी दिल का दौरा पड़ा है, परंतु चिंता का कोई कारण नहीं है। कुछ समय और बीतने पर मुझे कहा गया कि उसकी अवस्था गंभीर है। जब मैंने उसे देखना चाहा, तो बताया गया कि मानसिक आवेग से मुझे बचाने के लिए डाक्टरों ने मुझे वहां जाने की मनाही की है। फिर बताया गया कि लालजी की मत्यु हो गयी। जब मैं पूर्णतः स्वस्थ हुआ, तो पता चला कि लालजी तो अस्पताल में भर्ती करने के अगले दिन ही चल बसा था। डायबिटीज की बीमारी के कारण उपचार कारगर नहीं हुए। मुझे सदमा न पहुंचे इसके लिए सारी बातें मुझे किस्तों में बतायी गयी थीं।

अपने जिंदा रहने की खुशी लालजी के मरने से मुरझा चुकी थी। लेकिन मैं कह सकता हूं कि मौत के करीब जाकर भी जिंदा रहने की संभावना से मैं ओतप्रोत था। यह जिंदगी का दूसरा दौर है।

—रघुवीरशरण वर्मा, भोपाल

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला कहानी :

नशे का ज्वार

नारायण गंगोपाध्याय

आखिरी बस भी चली गयी ! अधिक लोग नहीं थे; जो थे, वे भी झांककर देख गये एक बार। पर कोई क्या कर सकता है ! भगवान की मार !

भगवान की मार। लेकिन उस मार की अवधि अभी तक खत्म नहीं हुई है। अभी भी सामने पूर्णिमा बाकी है। उसके भरे ज्वार में न जाने क्या होगा, कोई नहीं जानता। पानी बढ़ रहा है—बढ़ता ही जा रहा है। अभी पानी कहीं सड़क से एक हाथ नीचे है—कहीं दो हाथ। आज नवमी है—और छह दिन सामने हैं। यदि इसी के अंदर ही पद्मा में भाटा नहीं आया तो पूर्णिमा से पहले ही यह सड़क भी नहीं रहेगी—तब इस ओर उस ओर दोनों ओर का पानी एक हो जायेगा, पद्मा बिलकुल हहराती हुई जाकर टूट पड़ेगी भागीरथी पर। उसके बाद न जाने क्या होगा.....

उसके बाद क्या होगा, सोचने की भी जरूरत नहीं है। शायद भागना पड़ेगा रंगीपुर की ओर। पर क्या वहां भी आश्रय मिलेगा ? पूरे विश्वास के साथ कुछ भी नहीं कहा जा सकता। पद्मा के पानी से मिलती हुई भागीरथी भी कांप उठी है, रंगीपुर में भगदड़ शुरू हुई है।

कुछ न सोचना ही अच्छा है। ऐसे ही चुपचाप बैठा रहा जाये। बिलकुल बेफिक्र।

सामने अभी भी पूर्णिमा पड़ी है। और नवमी है। अब भी छह दिन हैं !

पहले तिथि नहीं गिनता था बुड्ढा। अब गिननी पड़ती है। हर रोज पानी बढ़ रहा है—थोड़ा-थोड़ा।

लगभग एक हफ्ते से बरखा हो रही है। कल से पानी तनिक घटा है। आज सुबह से धूप निकली है, कोई भरोसा नहीं, फिर भी उजाला देखने से तनिक शांति मिलती है। लगता है, आफत थोड़ी घट गयी है। फिर भी पद्मा का पानी बढ़ा है, सांझ के समय कोई कह रहा था—'और चार उंगली बढ़ गया है जी !'

रात कितनी बाकी है ? लगभग दो पहर। बादल फट-फटकर आकाश के कोने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोने में बिखर गये हैं; चांद चमचमा रहा है, मंजे हुए कांसे की तरह। बुड्ढे को हंसी आती है। ऐसी हालत में भी हंसी आती है। तीस-बत्तीस साल पहले भी चांद की ओर निहारकर उसके मन में गीत फूट पड़ते थे :

प्राण-पपीहा
क्यों करे पीव-पीव सारी रात ?

चांद इस तरफ के आकाश से हटकर दूसरी तरफ के आकाश की ओर चला जाता है। उस आकाश के नीचे बीतते भादों का कुहरा फैलना शुरू हुआ है, नन्हीं-नन्हीं बूंदों में। धान की बालियों में और अधिक मीठा होकर दूध जमा है। हहराती पद्मा में दो-एक पालों की चमचमाहट। परदेसी मल्लाह के गले में वही गीत बजता है :

संगी का घर और मेरा घर
बीच में मान का घेरा
हाथ बढ़ाये कोई न थामे...

बुड्ढे की तंद्रा टूटी। इस तरफ के पानी में छप-छप की आवाज। कोई चीज तैरकर सड़क पर आयी है। सियार ? नहीं—लाल-काला धब्बेदार एक कुत्ता। न जाने कैसी सधी हुई आंखों से चारों ओर देखा कुत्ते ने—बदन झाड़ा, चांदनी में झिलमिलाती हुई झड़ गयीं पानी की बूंदें। कुत्ते की दोनों आंखें नये पैसे की तरह चमक रही हैं। वह बैठ जाता है और बदन चाटना शुरू कर देता है।

चित्र : कमलाक्ष शेणै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विटामिन और खनिज पदार्थ आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिये बहुत ज़रूरी हैं

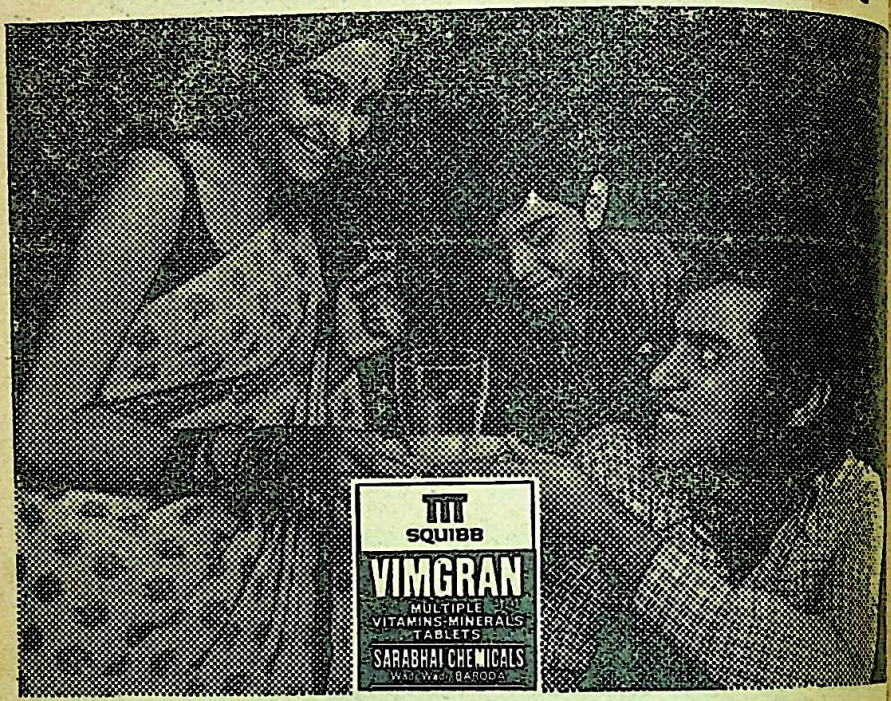

क्या उन्हें ये ज़रूरत के मुताबिक़ मिल रहे हैं?

विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी से आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य गिर सकता है. थकान, ठंड और जुकाम, भूख की कमी, कमजोरी, चमड़ी तथा दाँतों के रोग अधिकतर जरूरी विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी के कारण होते हैं.

इन की कमी, भोजनों में भी रह सकती है. इस बात के विश्वास के लिये कि परिवार के सभी लोगों को ये जरूरी पोषकतत्व उचित मात्रा में मिलें, उन्हें रोज़ विमग्रान दीजिये.

विमग्रान में आवश्यक ११ विटामिन और ८ खनिज मिले हैं. लोहा — खून बढ़ाने और फुर्ती लाने के लिये, कैल्सियम— हड्डियों और दाँतों को मजबूत रखने के लिये, विटामिन सी— ठंड और जुकाम रोकने और शक्ति बढ़ाने के लिये, विटामिन ए—चमकदार आँखों और स्वस्थ त्वचा के लिये, विटामिन बी१२— भूख बढ़ाने के लिये तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिये दूसरे जरूरी पोषक तत्व! आज से ही रोज विमग्रान!

विमग्रान®

विविध विटामिन एवं खनिजयुक्त गोलियाँ
११ विटामिन + ८ खनिज पदार्थ

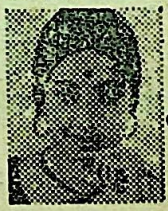

SQUIBB®
SARABHAI CHEMICALS PVT. LTD.

®ई. आर. स्क्विब एंड सन्स इन्क. रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है जिसके उपयोगकर्ता हैं—एस. सी. पी. एल.

केवल एक विमग्रान आपको दिन भर स्फूर्तियुक्त रखता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न जाने किस बाढ़ से डूबे गांव से आया हो, कौन जाने!

एक बीड़ी मिल जाती तो अच्छा होता—बुड्ढा सोचता है। रिलीफ-दफ्तर थोड़ी दूर पर बना है। वहां चावल-गेहूं तो दो-एक मुट्ठी देते हैं—बीड़ी नहीं देते। वैसे एक बीड़ी की दुकान भी उठकर आयी है सड़क की बगल में; लेकिन उसकी भी वैसी ही स्थिति है, जैसी दूसरों की—कभी खुली रहती है और कभी बंद—बीड़ी खैरात में बांटने की उसकी सामर्थ्य नहीं है। और इस रात में वह भी सो गया है—दुःख-तकलीफ चाहे जितनी भी हो, तनिक आराम-विश्राम की जरूरत तो सभी को पड़ती है।

लेकिन एक बीड़ी मिल जाती तो बहुत काम बनता अभी। सहसा एक दुर्जेय लोभ ने आ दबोचा बुड्ढे को। आखिरी बस भी चली गयी है, नवमी की चांदनी में सभी नींद में मौन पड़े हैं। जो दो-तीन नावें बंधी हुई हैं पानी में, उनमें से एक में एक बत्ती टिमटिमा रही थी, वह भी बुझ चुकी है अब। अभी दोनों ओर नींद का राज्य है, नींद निस्तब्ध पड़ी है! बैलगाड़ियों के पहियों से, इक्के के पहियों से गिरकर बिखरे हुए कीचड़ के लोदे अपने ऊपर बिछाये तारकोल की सड़क भी अभी चांदनी में नींद में मग्न है। सिर्फ यह कुत्ता जागा हुआ है उसकी तरह, और लगातार अपना बदन चाटे जा रहा है। अगर वह धीरे से उठकर दुकान से एक कट्ठा बीड़ी और एक माचिस चुरा लाये, तो कोई जान नहीं पायेगा। कुत्ता जरा भी शोर नहीं मचायेगा, उसे क्या गरज पड़ी है—परदेसी कुत्ता चोर-मालिक में फर्क क्या जाने।

सोचते ही बुड्ढा शर्म से मर जाता है। छिः-छिः, यह सब क्या सोच रहे हो, जी! भगवान की मार खाकर अभागे आदमी घर-द्वार छोड़कर, सब कुछ गंवाकर जैसे-तैसे सरकारी सड़क की ऊंची जमीन पर थोड़ी-सी जगह पा सके हैं, और यह जगह भी सामने आ रही पूर्णिमा के ज्वार में टिक पायेगी या नहीं, इसमें भी संदेह है—उन आदमियों के दुःख में भागीदार होकर, उस थोड़ी-सी जगह में सिर छिपाये अपने ही जैसे एक जने के घर में सेंध लगाने की बात सोच रहा हूं! इतने बड़े पाप की बात भी सोच सकता है कोई! सिर के ऊपर भगवान की आंखें क्या फूट गयी हैं!

बुड्ढे ने अपने दोनों सूखे ओंठों को चाटा। 'तुम बड़े हरामी हो'—खुद को ही कोसते हुए बड़बड़ाया वह। घर नहीं, भरोसा नहीं, धान-वान सभी कुछ पानी के नीचे हैं, मुट्ठी-भर मिट्टी को जकड़े रहकर किसी भी तरह टिके रहना, अपने डूबे हुए गांव की ओर एकटक देखते रहना—ओह, वहां मेरा धान है—उस पानी के नीचे; और—और औरत-बच्चों का विलाप, मर्दों का माथा ठोकना—और इन सबके बीच भी बीड़ी पीने का शौक! अपनी जीभ उखाड़कर फेंक दो, बुड्ढे हरामी कहीं के!

अपने आपको धिक्कारते हुए उसने जी-जान से बीड़ी की बात भूलने की चेष्टा की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी सोचा, चलूं मैं भी सो जाऊं चोली के किसी कोने में सिमटकर; लेकिन सोने की बात उसके मन-मिजाज को नहीं भायी। बुड्ढा बरगद की जड़ पर टिककर बैठा रहा—बैठा ही रहा। सामने नवमी का चांद जल रहा है, कुत्ता लगातार बदन चाट रहा है।

कुत्ता बदन चाट रहा है, कुत्ते के पास

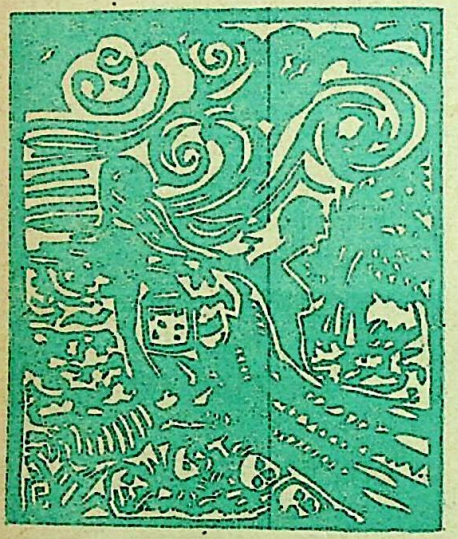

'साइक्लोन' : प्रह्लाद बेहेरे

फिक्र करने जैसा कुछ नहीं है। किसी डूबे हुए गांव से आया है और कहीं और चला जायेगा। उसका धान नहीं डूबा है, पाट नहीं डूबा है; नहीं डूबा है उसका घर-द्वार; नहीं डूबी है सगुन की पिटारी, नहीं डूबा है तुलसी चौरा। किसी भी ओर चला जायेगा, दूसरे चार कुत्तों से लड़ेगा-भिड़ेगा; और चार से उसकी दोस्ती हो जायेगी; कहीं परदेश में दूसरों की जमीन पर जाकर किसी गृहस्थ के घर का बचा-खुचा खाकर, किसी हलवाई की दुकान की जूठी पत्तलें चाटकर, जब तक जीवन है इसी तरह जीता रहेगा।

लेकिन आदमी ऐसा नहीं कर सकता—बुड्ढा सोचता है। इस रास्ते की बगल में आश्रय लेकर अभी भी दिन-भर डबडबायी हुई आंखों को मलकर उस ओर निहारता रहता है, जहां अभी उस दिन तक मिट्टी थी, आमन-धान की बालियां पोढ़ा रही थीं, गाढ़े हरे रंग के नये पाट के पौधे सिर उठाये पनप रहे थे। खेत में परवल था; लहलहा रही थी खाड़ाभाजी—लालभाजी; मुंह पर खोंचा बंधे हुए बैल देर से पनपे हुए 'आउस' धान पर घूम-घूमकर उसे बिदह रहे थे। चिउड़ा कूटा जा रहा था ढेंकी में। अभी वहां पद्मा के पानी के अलावा और कुछ नहीं है, सिर्फ आम-जामुन के पेड़ों के ऊपरी भाग, कहीं-कहीं डूबे घरों की टीन की चालियां और कहीं अधडूबी पाट की खेती। उस तरफ देखकर बुड्ढे की उसांसें निकलती हैं, आंख से पानी गिरता है; फिर से अपनी डेहरी में, उसी धान-पाट के खेत में, उसी खाड़ाभाजी-लालभाजी के खेतों की ओर लौट जाने की बात सोचता है, और छाती के भीतर से ढेंकी कूटने-जैसी आवाज उठती है। वह कुत्ता बदन चाटना खत्म करता है, थोड़ी देर सोकर कहीं भी चला जायेगा। लेकिन मनुष्य नहीं जा सकता, रिलीफ के बाबुओं के कहने पर भी गांव की चौहद्दी छोड़कर नहीं जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकता—पद्मा के पानी में पैठकर उसका मन खोये मोती ढूंढ़ता है।

एक बीड़ी मिल जाये तो.....

धत् तेरे की ! सब कुछ सत्यानाश हो गया रे, मनुष्य के कष्टों का पारावार नहीं है। बुड्ढे होकर मरने चले हो, पर तब भी तुम्हारा बीड़ी का लालच नहीं गया ! तुम भी क्या हो ! क्या अक्ल घास चरने गयी है तुम्हारी !

बीड़ी की फिक्र से मन को हटाकर बुड्ढा अच्छी तरह पेड़ से पीठ टिकाकर बैठ गया। आवाज सुन पड़ रही है, बहुत दूर से मोटर की रोशनी आती है, कीचड़ के लोंदों से भरी तारकोल की सड़क पर, दोनों तरफ बाढ़ के पानी में टीन की चालियों पर वह रोशनी झलक जाती है। कौन आ रहा है इतनी रात में ?

एम. एल. ए. बाबू लोग दौरा करके गये हैं सवेरे, हाकिम-हुक्काम जैसे कुछ बाबू लोग भी देख गये हैं। इतनी रात में फिर कौन आ रहा है ? बुड्ढा एकटक आंखें गड़ाये रहा। रोशनी बढ़ती है, रास्ता, पानी और चालियां और अधिक झिलमिलाते हैं, आवाज और ज्यादा बढ़ती है, गाड़ी आगे बढ़ती आती है।

आगे बढ़ आयी एक जीप गाड़ी। बहुत-से आदमियों का सिर दिखाई देता है, गाड़ी रुकी नहीं, आगे बढ़ गयी—तेज रफ्तार से। जैसे इस रात से डर लगता है, पद्मा से डर लगता है। लगता है—सड़क के एक हाथ नीचे ही पानी है, और वह जैसे फूलता जा

गीत

काजल कौन उछार गया,
जीवन के सूरज-रंगों पर
बोली मार गया।
कागज पर फैली है स्याही
दिखती नहीं सदेह गवाही,
ऐसे नागवार मौसम में
झूठ गढ़ रहे शब्द-सिपाही;
चौराहे पर जैसे कोई
नाम उचार गया।
तम की जात बड़ी वैसी है
कुछ-कुछ अहंकार जैसी है,
जहर दूध के दांत तले हों
सुविधा भी कैसी-कैसी है;
उजलापन दुविधा के मारे
खोल उतार गया।
सपनों का सतरंगा होना
लगता जैसे जादू-टोना,
बिजली तैर गयी सागर पर
अब भी शेष बचा क्या खोना ?
अवसर बड़ा क्रूर अपराधी
साफ नकार गया।
काली गगरी में गोरा जल
छल के साथ और कैसा छल ?
एक अलाव जले छाती पर
भीतर नहीं तनिक भी हलचल;
हर रंग की माटी अपनाकर
हार कुम्हार गया।

—सुरेश श्रीवास्तव
सेंट्रल स्कूल, गिल नगर, मद्रास—१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीमेदारों के लाभ के लिए

अपने वारिसों के नाम तुरंत दर्ज़ करा लीजिये।

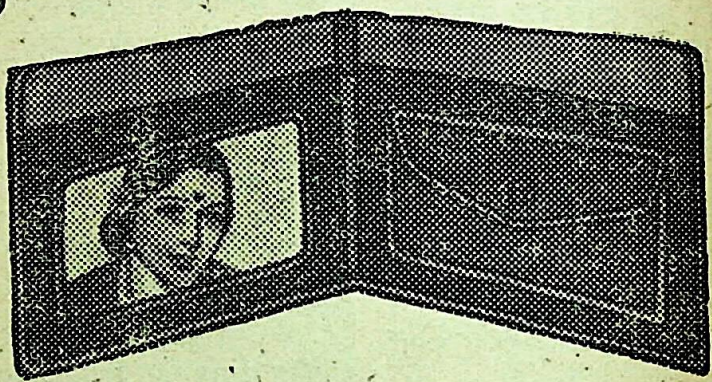

इससे दावों के निपटारे में मदद मिलती है

यदि बीमेदार की मृत्यु हो जाए तो पालिसी का धन किसको दिया जाए ? आपने हिताधिकारी के रूप में किसका नाम लिखा है ? यदि आप हिताधिकारी का नाम देना भूल गये हों, तो यह काम करने के लिए अब भी समय है—अब विलम्ब न कीजिए। निगम के कार्यालय से नामन का फार्म ले आइए। उसमें अपनी पत्नी या बच्चे या किसी अन्य सज्जन, इनमें से जिसको आप चाहें, उसी के नाम पर पालिसी का पृष्ठांकन कीजिए जिससे आपके न रहने पर निगम पालिसी की धनराशि उसी व्यक्ति के नाम तुरंत भेज सके।

विलम्ब को टालने तथा बीमे के दावे के शीघ्र निपटारे के लिए आप इन कदमों को उठाएं: अपनी आयु का प्रमाण भेजकर पालिसी पर आयु प्रमाणित कर लीजिए। पते के हेरफेर की सूचना निगम को दीजिए। प्रीमियमों का भुगतान समय पर और सही कार्यालय में कीजिए।

जिससे आपने बीमा पालिसी ली थी उसी जीवन बीमा एजेंट से सहायता लीजिए या निकटतम निगम के कार्यालय से सम्पर्क प्रस्थापित करके यकीन कर लीजिए कि आपकी पालिसी पूर्ण रूप से चालू है या नहीं।

लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया

RADEUS/LIC/AS-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है, पूर्णिमा के ज्वार की आशा से—न जाने कब इस सड़क को पोंछ डाले। यहां से भाग खड़े होना ही अच्छा है—जी-जान से, दम साधकर भाग खड़े होने की जरूरत है।

बुड्ढा पहचान जाता है। फरक्का की गाड़ी है। राजसी ठाठ-बाट है वहां का। कितने लोग, कितने घर, कितनी रोशनी! वहां उन्होंने बस में कर लिया है पद्मा को। लेकिन यहां पद्मा पागल है, किनारा तोड़ चुकी है, गांव को डुबा चुकी है, धान-पाट सब कुछ डुबा चुकी है; इस पद्मा से वे डरते हैं।

देखते ही देखते कितनी दूर चली गयी है जीप! दौड़ लगा रही है जैसे!

बेवजह ही बुड्ढे को हंसी आती है। उसके बाद ही जगमगा उठती हैं दोनों आंखें। कुछ-एक हाथ दूर पर ही, रास्ते की बगल में घास के भीतर सिगरेट का एक टुकड़ा जल रहा है, चांद की रोशनी में दिखाई दे रहा है, धुआं धीरे-धीरे उठ रहा है उससे। चलती जीप से किसी ने फेंका है। जली तंबाकू की गंध तैरती आ रही है हवा में।

एक दुर्जेय लोभ से बुड्ढे के समूचे बदन में सिहरन दौड़ गयी। टूट पड़ने की इच्छा हो रही है सिगरेट के टुकड़े पर। ये सब बाबू अक्सर पूरी सिगरेट नहीं पीते—आधी पीकर ही फेंक देते हैं; यह सिगरेट भी काफी बची हुई है—शायद अभी भी चार-पांच कश खींचे जा सकते हैं। आज शाम के बाद से उसने एक भी बीड़ी नहीं पी है!

जलती सिगरेट की ओर उठकर जाते ही बुड्ढा फिर धप् से बैठ गया। अरे राम-राम, उसे क्या हो गया इस तीन कोड़ी सात बरस की उम्र में! वह कुत्ता जो पाता है बटोरकर खाता है—जूठा-सुच्चा। उसकी भी वही हालत हुई है। न जाने, किसके मुंह के थूक से सनी सिगरेट—अरे, छिः छिः!

अच्छा बिंदाबन की दुकान से चुपचाप एक बीड़ी उठा लाऊं तो कैसा रहेगा? एक अदद—सिर्फ एक। बिंदाबन भी बाढ़ का मारा आदमी है, बहुत आंधी-पानी झेलकर किसी तरह दुकान का कुछ सामान बचा पाया है, वह अपना ज्यादा नुक्सान नहीं करेगा। एक अदद—केवल एक अदद बीड़ी लेने से क्या हो जायेगा बिंदाबन का? समझ भी नहीं पायेगा।

चुप रहो!—फिर अपने आपको धमकाया बुड्ढे ने। फिर नजर चली गयी कुत्ते की ओर। पीछे की एक टांग को उठाये हुए है हुक्का खींचने की मुद्रा में, कट-कट करते हुए काट रहा है अपनी नाभि को। उसी कुत्ते के दल में ही शामिल हो गये हो क्या तुम? नहीं—उससे भी ज्यादा अधम। कुत्ता सिर्फ फेंका हुआ खाता है। तुम तो चोर हो गये जी! सो भी बीड़ी के लिए। छिः छिः!

हवा से जलती हुई सिगरेट की गंध तीखी होती जा रही है, नवमी की चांदनी में धुआं और ज्यादा चक्कर मारकर उठ रहा है, बुझ जायेगी कुछ देर बाद ही। खुद को जी-जान से धमकाकर भी बुड्ढे के मन का लोभ हटना नहीं चाहता, नाक सिकोड़कर वह जली तंबाकू की गंध खींचता है। ओंठों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोल करके सोचता है, जैसे उसके ओंठों में बीड़ी दबी हुई हो।

पानी की आवाज बढ़ती है। तनिक सामने ही पानी की निकासी के लिए बनी पुलिया के नीचे से तेज धारा बह रही है पागल-जैसी—इस तरफ की पद्मा कूद पड़ने जा रही है उस तरफ की भागीरथी में। बीच रास्ते में घर-द्वार, खेत-खलिहान जो पाती है, बहाती-डुबाती चली जा रही है सब कुछ! पूर्णिमा के ज्वार में क्या होगा, कोई नहीं जानता। इसी बीच अगर पद्मा में भाटा न आये, अगर पानी और बढ़े—और अधिक बढ़ जाये, तो यह सड़क, वहां का वह रिलीफ-दफ्तर, स्कूल की उस मिट्टी की चाली और उसमें शरणार्थियों की भीड़—वे सब नहीं रहेंगे, सर्वथा नहीं रहेंगे। सिर्फ पानी ही पानी फैला होगा। पद्मा और भागीरथी एक हो जायेंगी—आदमी क्यों, कुत्ते का भी, इस कुत्ते का भी कहीं कोई चिह्न नहीं रहेगा तब। तब सिर्फ रह जायेगा गांव की बाट की ओर देखते रहना, रह जायेगा सिर्फ आशा-भरोसा—सहसा अगर पानी हट जाये, दो फसलें अगर बच जायें!

पानी बढ़ रहा है? नहीं तो इतनी आवाज क्यों? या अभी तक अच्छी तरह समझ में नहीं आ रहा है। रात जितनी गहराती जा रही है, उतनी ही अधिक जोरदार आवाज सुनाई पड़ रही है। बुड्ढा आंखें मूंदकर पद्मा को याद करने की चेष्टा करता है एक बार। उसका कोई कूल-किनारा नहीं है—फेन बिखेरता हुआ दौड़ रहा है उसका पानी, किनारा तोड़कर। अभी ही तो कोई जैसे कह रहा था, औरंगाबाद के राजमहल जैसे सभी बड़े-बड़े मकान समा जा रहे हैं पद्मा के पेट में। फरक्का के बाबू लोग बहुत सारी रोशनी जलाकर अनेक मकान बनाकर, अनेक गाड़ियां दौड़ाकर, अनेक छोटे-बड़े कारोबार करके बस में कर रहे हैं पद्मा को। पर क्या वह बस मानती है? क्या कभी इस नदी ने किसी का बस माना है?

उसके बचपन में, इतना ही नहीं, अभी उस दिन भी जब वह आलापकर गीत छेड़ रहा था—'प्राण-पपीहा रे .....' उस दिन कितनी दूर थी नदी! देखते-देखते कहां आ गयी कुछ ही दिनों में। कितने गांव, कितने खेत, कितने तालाब, कितने बाग—न जाने कहां बहा ले गयी!

एम. एल. ए. बाबू लोग कह रहे थे; बस फरक्का का बांध बंध जाने पर .....'

पर कब? कब? क्या होगा उसके पहले?

बुड्ढा धुंधलायी आंखों से चारों ओर देखता है। रास्ते के दोनों ओर—सिर्फ रास्ते को छोड़कर—बाढ़ के पानी से कहीं एक हाथ तो कहीं दो हाथ ऊंचाई पर कतार की कतार छोटी-छोटी झोपड़ियां। घर छोड़कर आने के समय कोई पुआल की चाली खोलकर लाया है, कोई टीन की चाली, उसी को तंबू की तरह लगाकर, उसी के भीतर पेटी-पिटारे, पोटले-पोटली ठूंसकर मर्द, औरत और बच्चे एक-दूसरे पर ढेर-से पड़े हुए हैं। दिन के समय दुःख करना, रोना-धोना,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवानी के साथ-साथ दर्द और तकलीफ़ की परेशानी भी आती है

तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपके आड़े समय काम आती है

आप अपने कॉलेज का कोई भी उत्सव छोड़ना नहीं चाहतीं। परन्तु आज जबकि कॉलेज में एक शानदार फ़िल्म-शो होने वाला है, आप कमर के दर्द, बेचैनी और बेआरामी के कारण मुरझाई हुई-सी हैं। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन ऐसे ही नाज़ुक अवसरों पर काम आती है।

एनासिन बहुत गुणकारी है, क्योंकि यह केवल दर्द से आराम नहीं दिलाती बल्कि दर्द के साथ होने वाली उदासीनता को भी दूर करती है। एनासिन आपको जल्दी आराम और चैन दिलाती है और आपके चेहरे पर फिर वही मुस्कान आ जाती है।

अपने नाज़ुक दिनों में दर्द की बेचैनी और बेआरामी से पड़े रहना पुराने ज़माने की बात है। आज ज़माना बहुत आगे जा चुका है। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपको जल्दी आराम दिलाती है। और आप अपना रोज़ का काम-काज आराम से कर सकती हैं।

लड़की होना भी कभी-कभी एक मुसीबत मालूम होती है। परन्तु आप ऐसे आड़े समय एनासिन से काम लेकर अपनी उलझन दूर कर सकती हैं, और जीवन का पूरा आनन्द ले सकती हैं। ज़रूरत के समय के लिए अपने पर्स में हमेशा एनासिन रखिए— यह बहुत बड़ी सुविधा है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर धुनना, रिलीफ लेने जाना या कभी जड़ होकर बैठे रहना या कभी आंख मलते हुए छोड़कर आये हुए डूबे गांव की ओर देखकर पानी के नीचे खोये हुए मोती को ढूंढना, या कभी सपने देखना—कल सुबह पानी नहीं रहेगा, बिलकुल नहीं रहेगा.... फिर से धान के खेत हंस पड़ेंगे, गाढ़े हरे पाट के खेत हवा से झूमेंगे, खुशी से धूप को अपने ऊपर मलेंगे लालभाजी के पौधे, खाड़ाभाजी के पौधे, ढेंकी से चिउड़ा कूटने की आवाज आयेगी। उसके बाद रात होने पर, काफी रात बीतने पर सोचते-सोचते सब भावनाएं हैरान हो जायेंगी, मन मुंह के बल गिर पड़ेगा—मुर्दे की तरह नींद से अवश हो जायेंगे सभी मनुष्य।

ठीक वैसे ही। ठीक वैसे ही अभी सभी सो रहे हैं, मुर्दे की तरह सो रहे हैं। यदि अभी ही, पूर्णिमा के ज्वार के आने के पहले ही, पद्मा सहसा हहराती आवाज के साथ कूदकर दौड़ती आये, तब एक भी आदमी जागने का समय नहीं पायेगा—तिनके की तरह सब जाने कहां से कहां बह जायेंगे। कुछ-एक जो नावें हैं यहां, उनका भी पता नहीं रहेगा तब।

पिछले बरस भी कहीं ऐसा हुआ था न? उसी जलपाईगुड़ी में? या कूचबिहार में?

लेकिन सोचकर क्या होगा? एम.एल.ए. बाबू लोग कह रहे थे—'बस अगर फरक्का का बांध बंध जाये तो ....'

लेकिन वह कब बंधेगा? उससे पहले? उससे भी पहले?

सभी सो रहे हैं—मुर्दे की तरह सो रहे ह सभी। बुड्ढे की भी लेटने की इच्छा होती है, बेटे की बगल में, या नाती-नातिन के पैर के पास कहीं सिमटकर। लेकिन नींद नहीं आ रही है—नींद नहीं आयेगी। शाम से उसे एक भी बीड़ी नहीं नसीब हुई है। अगर कहीं से सिर्फ एक बीड़ी मिल पाती.....

बिंदाबन क्या ताड़ सकेगा? क्या एक-एक बीड़ी उसके हिसाब में रहती है?

बुड्ढा एक बार थरथराकर कांप उठता है। तनिक दूर के एक झोंपड़े से सहसा कराह की आवाज के साथ किसी औरत के रोने की आवाज सुन पड़ती है।

झोंपड़ी के भीतर मिट्टी-तेल की एक ढिबरी जल उठी, बाहर उसकी रोशनी पड़ती है। आदमी के गले की आवाज सुन पड़ती है। उसके बाद एक आदमी छाती के बल रेंग-रेंगकर उसके नीचे से निकलकर बाहर आकर चांदनी में आ खड़ा होता है—उसका लंबा बदन सीधी लकड़ी की खूंटी जैसा दीखता है।

बुड्ढा पुकारता है—'अरे क्या कह रहे हो नरहरि?'

नरहरि चौंकता है—'कौन बुला रहा है जी?' उसके बाद बुड्ढे की ओर उसकी आंखें जाती हैं—'अरे, क्या मामा हो?'

धीरे-धीरे नरहरि आगे बढ़कर बुड्ढे के पास आता है—'इतनी रात गये, यहां क्यों बैठे हो मामा? सोने नहीं गये?'

'नींद नहीं आ रही है।'

'नींद किसी को भी नहीं आ रही है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Zenlon

विविध किस्मों के
प्राकृतिक, रासायनिक व
मानव-निर्मित

बुनाई के सूत

परदे, गाड़ियां व कवर बनाने के लिए मुलायम और बहुरंगी • क्रोशेसेटों के लिए सुंदर और चमकदार • वसन्त में लचीले और नमीसोख

स्टेपल फाइबर विभाग

बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.

९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता—७०० ००१

आओ — एक सौदा को

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि
गोलागोकर्णनाथ, जि. खीरी, उ.प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नरहरि बुड्ढे के सामने बैठ जाता है—'इतने पानी में किसे नींद आ सकती है?'

कराह की आवाज कानों में पड़ती है, जनाना गले के बतियाने की आवाज आती है। थोड़ी देर चुप रहकर बुड्ढा फिर पूछता है—'क्या कहती है?'

'दुल्हिन को फिर दर्द उठा है। दो जान से है न।'

'अरे दादा! ऐसे समय में क्या जचगी होगी?'

'नहीं—समय नहीं हुआ है। उसे दो-एक महीने पहले से ही कभी-कभी दर्द उठता है। दुल्हिन कह रही थी। अगर जचगी हो ही जाये तो क्या किया जा सकता है। निबाहना तो पड़ेगा ही।'

'हूं ... निबाहना तो पड़ेगा,' शह देकर बुड्ढा सोचता है। लेकिन सामने अभी पूर्णिमा का ज्वार है। पानी बढ़ रहा है—बढ़ ही रहा है। शायद पद्मा अपने आपको समेट लेगी सहसा, पानी उतर जायेगा देखते-देखते, भरे-पूरे धान धूप में नहायेंगे, पाट का खेत और ज्यादा मजबूत और ज्यादा घना हो उठेगा। सब बचेंगे, नया शिशु भी जी जायेगा, चांदी का तावीज गढ़वा दिया जायेगा उसके लिए। और नहीं तो—और नहीं तो।

सहसा नरहरि ने पुकारा—'मामाजी!'

'हूं?'

'उस पार से रिफूजी आ रहे हैं। आपको मालूम है?'

'क्यों नहीं मालूम!'

'घर-द्वार छोड़कर आ रहे हैं। पद्मा ने हम लोगों को भी वही हालत दी है।'

'ठीक।' एक बार नहीं, दो बार नहीं, अबकी तीसरी बार। पद्मा की बाढ़ से तीन-तीन बार पीछे हटना पड़ा है।

'हुंह, हम लोग भी रिफूजी हो गये।' बुड्ढा सिर झुकाकर बड़बड़ाता है। झोपड़ी के भीतर वह रोने की आवाज अब नहीं सुन पड़ती, मिट्टी-तेल की ढिबरी भी बुझ जाती है, शायद औरतों ने हाथ-वाथ फेर-कर, कुछ जनानी तरकीब से दर्द बंद कर दिया है। कुछ क्षण तक दोनों जने कान खड़े करके पानी की आवाज सुनते हैं। आवाज बढ़ रही है—जैसे और बढ़ रही है। कहां से आता है इतना पानी? दुनिया में जहां जितना पानी है, क्या वह सब पद्मा बटोर-कर लायी है?

नरहरि उठ खड़ा होता है—'अब चलता हूं मामा।'

'अच्छा।'

उठ पड़ता है नरहरि, जम्हाई लेता है।

'बेटी का ब्याह होने वाला था न पिछले महीने! क्या ब्याह हो गया?'

'अब भी ब्याह की बात सोच रहे हो!'

जाने के लिए कदम बढ़ाता है नरहरि, पीछे से बुड्ढा उसे हांका लगाता है।

'नरहरि, हो?'

'क्या?'

'तुम्हारे पास एक बीड़ी है क्या?'

'नहीं, बीड़ी तो मैं नहीं पीता हूं।' नर-हरि आगे बढ़ जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डेट धुलाई की टिकिया

साबुनों के मुक़ाबले
१½ गुनी ज़्यादा शक्तिशाली
—खारे पानी में भी.

डेट धुलाई का पाउडर

कई साइज़ के पैक में मिलता है. कपड़ों को इसके घोल में भिगोइये और धो लीजिये. हाथों को मुलायम भी रखता है.

एन-डेट

दाग़-धब्बे नाशक एनज़ाइमयुक्त धुलाई का पाउडर, सक्रिय लेकिन हानिरहित.

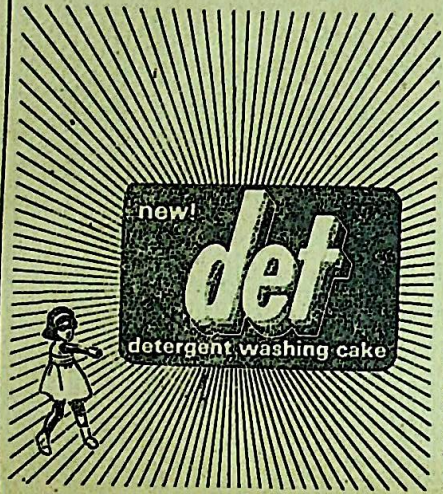

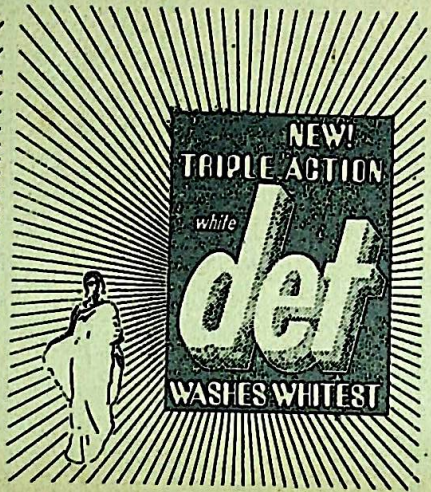

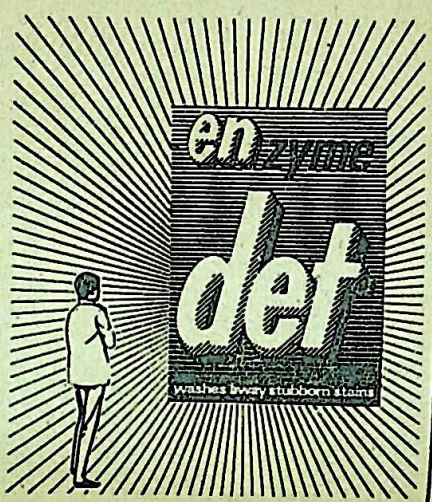

न कभी थी, न मिलेगी; ऐसी सफ़ेदी—डेट उत्तम पदार्थों से

Shilpi HPMA 6A/74 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद आ जाता है बुड्ढे को, बहुत निराश होता है वह। चारों ओर फिर नींद उतर आयी है। नरहरि उकड़ूं होकर अपनी टीन की चाली में घुस जाता है, अब उसे भी निढाल कर देने वाली नींद आयेगी, वह भी मुर्दे की तरह निश्चल हो जायेगा। चौतरफा तबाही मचाती हुई, हहराती हुई पद्मा के आने पर एक भी मनुष्य फिर जागेगा नहीं।

बुड्ढा आंखें फैलाये देखता रहता है। नींद नहीं आती, नींद नहीं आयेगी। वह भी अगर सो पाता तो बच जाता, कुछ सोचना नहीं पड़ता, उसके बाद सब कुछ निगलती हुई पद्मा जब दौड़ती हुई आती, तब वह भी तिनके की तरह बह जाता सबके साथ, जागने का समय भी नहीं पाता एक बार। लेकिन एक बीड़ी न मिली, तो उसे नींद नहीं आयेगी।

नींद नहीं आयेगी। जितनी रात बढ़ती जा रही है, दिमाग उतना ही गर्म होता जा रहा है।

सोचकर कुछ फायदा नहीं, कोई नहीं सोच रहा है। यदि अचानक पानी न आये, यदि पानी थोड़ा-थोड़ा बढ़ते हुए रास्ते पर चढ़ने लगे, तब-तब फिर यहां से हट जाना होगा, कहीं और दूर, जहां ऊंची जगह मिल जाये, वहीं। चाहे रंगीपुर हो, राधापुर स्टेशन की ओर हो, कासिम बाजार-भगवान गोला की ओर ही हो। जब घर ही चला गया है, तब सब जगह एक बराबर है—जिस तरह बेफिक्र होकर वह कुत्ता चला आया है, उसी तरह सब छोड़-छाड़कर किसी भी जगह चला जाना पड़ेगा। बुड्ढा भी सोचा करता, वह भी सो जाया करता।

सो जाया करता। सिर के अंदर खून नहीं दौड़ता। याद नहीं आती धान की बात, पाट की बात, साग-सब्जियों के खेत की बात; महक न आती नया धान उबालने की, छाती में ढेंकी न कूटता कोई; खयाल न आता एक दिन पद्मा के पानी में पाल लगी नौका में, झरती चांदनी का वह गीत—'संगी का घर और मेरा घर, बीच में मान का घेरा।' याद न आता अपने ब्याह का दिन, वही अगहन का महीना घर में नयी पुआल, नया धान, जिस घर का बैठका आज पद्मा के पेट में जाकर समा गया है, उस बैठके की दीवारों पर पद्म-लताएं बनाना।

'हम सब भी रिफूजी हो गये। एक बार नहीं—दो बार नहीं—तीन-तीन बार।'

'फरक्का बांध बस बंध जाये, तब फिर...'

नींद नहीं आती। एक अजीब तकलीफ हो रही है अभी। जब कोई नहीं सोच रहा है, तब उसे सोचना पड़ रहा है; जब कोई नहीं जगा हुआ है, तब अकेला जगा हुआ है वह। जैसे सभी का दुःख, सभी की फिक्र कांटे की तरह उसके बदन में बिंधी हुई है। वही तकलीफ जाग पड़ी है—जो जगी थी एक बार लड़कपन में, जब एक बबूल का कांटा उसके पैर में आर-पार हो गया था।

सिर्फ एक बीड़ी मिल जाती तो उसे नींद आ जाती। एक बीड़ी का भी हिसाब रखता है क्या बिंदाबन? बुड्ढा उठकर खड़ा होने की कोशिश करता है। लेकिन तुरंत ही उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौंककर रुक जाना पड़ता है। उसके हृत्पिंड में भय की एक लहर दौड़ जाती है।

इतनी देर तक याद ही नहीं आया था, देख ही नहीं सका था वह। अब नवमी की चांदनी में वे झिलमिला रही हैं, कुछ दूर पर। आंखें—पांच जोड़ी, सात जोड़ी, दस जोड़ी आंखें। वे आंखें जैसे उसी को देख रही हैं—एक साथ टकटकी बांधे देख रही हैं उसे।

क्षण-भर के लिए निढाल होकर बुड्ढा सहसा हंस पड़ा, धीमी आवाज में।

'धत्! क्या हो गया है मुझे!'

झुंड-भर गायों की आंखें बाढ़ग्रस्त लोगों की संपत्ति। एक जगह पर वे सब बंधी हुई हैं। उनकी आंखों में भी नींद नहीं है। क्या वे भी सोच रही हैं बाढ़ की बात, पानी की बात, पद्मा के जिन टापुओं पर वे घुटने बराबर ऊंची घास चरने जाती थीं, उन्हीं की बात? क्या गायें सोचती हैं?

चूल्हे में जायें। उसे एक बीड़ी की जरूरत है। एक बीड़ी न मिली तो बुड्ढे को नींद नहीं आयेगी। और समूची रात, समूची रात-भर—उसके माथे के भीतर आग दौड़ती रहेगी।

उसे भी सोना होगा। उससे पहले एक बीड़ी की सख्त जरूरत है।

गायों की आंखें चांदनी में उसकी ओर नजर गड़ाये हुए हैं। लेकिन गायें कुछ नहीं सोचतीं; कुछ भी नहीं सोचतीं; गायें बात नहीं करतीं—टापुओं पर उगी घुटने-घुटने-भर लंबी घास की बात सोचकर वे रोना नहीं जानतीं।

सिर्फ एक बीड़ी उठा लेने पर क्या भी पायेगा बिंदाबन?

लेकिन भांप गया बिंदाबन—इस पानी के किनारे किसी की आंख में नींद आती है जी? बुड्ढे ने ही गलत समझा था। मुर्दे की तरह निढाल होकर भी कान खड़े कर रखे थे सभी ने—सोते हुए भी पानी की आवाज सुन रहे थे, प्रतीक्षा कर रहे थे पूर्णिमा के ज्वार की।

'चोर-चोर' की एक गगनभेदी चीख सुन पड़ी बिंदाबन की। उसके बाद वह फेंक कर मारता है बांस की जड़ का एक टुकड़ा। बिलकुल सिर पर आकर लगता है। पानी के किनारे एक बार चौंककर रुक जाता है बुड्ढा, नवमी के चांद को क्षण-भर के लिए किसी ने जैसे दोनों हाथों से दबाकर, तोड़-ताड़कर सारे आकाश पर बिखेर दिया हो। फिर उस रात में पागल हो उठा पद्मा के अतल का अंधेरा जैसे उसे धरती से पोंछ लेता है। तीन-एक डग पीछे हटकर बुड्ढा छपाक से गिर पड़ता है पानी में।

'कौन है हो, कौन है?'

'पानी में गिर गया क्या वह आदमी?'

अब कुछ सुन नहीं पा रहा है बुड्ढा। अब 'प्राण-पपीहा रे ...' गाने की धुन से जैसे उसके दोनों कान भर उठे एक बार और फिर गिर पड़ता है निकासी-पुल के नीचे से बहती तेज धारा के बीच, पलक झपकते ही पद्मा की धारा उसे धरती से पोंछकर बहाये लिये जा रही है, भागीरथी की ओर। **अनुवाद: सोमनाथ द्विवेदी**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब जरा हंस लें?

पांडेय आशुतोष

एक ने तांगे वाले से पूछा—'क्योंजी, राजभवन चलोगे?'

तांगे वाला बोला—'नहीं हुजूर!'

पूछा—'क्यों?'

वह बोला—'हुजूर, असल में वहां मिनिस्टरों को देखकर मेरा घोड़ा हिनहिनाने लगता है।

० ० ०

एक सज्जन को मंत्री बने कुछ ही वक्त हुआ था। एक दिन उनके सेक्रेटरी ने कहा—'सर, मैं नोट फाइल में रखकर घर पर दे आया हूं।' घर लौटकर उन्होंने फाइल मंगाकर पूरी तरह खोजा और दुःखित होकर सामने बैठे सज्जन से बोले—'देखिये न, लोग कितने चोर हो गये हैं। आपके सामने ही सेक्रेटरी के बच्चे ने कहा कि फाइल में नोट रख दिया है। कहां का नोट और कहां की फाइल! मुझे बिलकुल बेवकूफ समझते हैं!'

० ० ०

एक बार एक धोबी ने एक वकील पर अपनी धुलाई के बकाया तीस रुपये का दावा करते हुए मुकद्दमा किया। न्यायाधीश ने धोबी को बड़े जोर से डांटा—'क्या बकता है? इस वकील ने कभी धुले हुए कपड़े पहने भी हैं?'

० ० ०

एक वकील ने अपने मुंशी से पूछा—'क्या तुमने मुवक्किल को सारा हिसाब समझा दिया?'

'जी, हां!'

'फिर उसने क्या कहा?'

'हिसाब देखकर उसने कहा—जहन्नम में जाओ। इसके बाद मैं आपके कमरे में चला

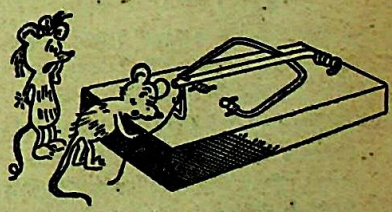

'तुम मुझसे शादी करो, नहीं तो मैं...'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ते बचपन का साथी - इनक्रिमिन*!

ये छलकता उत्साह, ये चुस्ती, ये फुर्ती...ये हंसते खेलते तन्दरुस्त बच्चे...इन दिनों जब इनका शरीर दिन दुगनी रात चौगुनी गति से बढ़ता और विकसित होता है, इन्हें इनक्रिमिन जरूर दीजिये। लाभदायक विटामिन, लोहतत्व और आवश्यक अमीनो एसिड्स युक्त इनक्रिमिन बढ़ते बच्चों के लिये बहुत आवश्यक है।

इनक्रिमिन*

इनक्रिमिन टॉनिक - बढ़ते बच्चों के लिये वरदान!

डॉक्टरों का विश्वासपात्र नाम (Lederle) सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग।

* अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PATA'S-ING-B NOL

आया।' मुंशी बोला।

० ० ०

कवि-गोष्ठी में जब एक कवि काव्य-पाठ कर रहे थे। लोग हंसने और हल्ला मचाने लगे। पास बैठे सज्जन ने उठकर एक लड़के को डांटा—'तुमसे बढ़कर महामूर्ख यहां दूसरा कोई नहीं।' गोष्ठी के अध्यक्ष से नहीं रहा गया—'भई, आप यह क्यों भूलते हैं कि मैं भी यहां बैठा हुआ हूं!'

० ० ०

डाक्टर की पत्नी—'आपका वह मरीज तो ठीक हो गया है। फिर आप इतने परेशान क्यों हैं?'

'दरअसल मुझे मालूम नहीं है कि वह किस दवा से ठीक हुआ है।' डाक्टर ने कहा।

० ० ०

एक सज्जन अस्पताल देखने के लिए गये तो एक रूपसी नर्स को देखकर बोले—'भगवान करे, मैं किसी दुर्घटना में घायल होकर आपके ही वार्ड में भर्ती होऊं।'

नर्स ने मुस्कराते हुए कहा—'दुर्घटना नहीं कोई चमत्कार ही आपको मेरे पास ला सकता है; क्योंकि मैं मेटरनिटी वार्ड में हूं।'

० ० ०

एक ने दूसरे से पूछा—'बाढ़ आने पर मछलियां कहां चली जाती हैं?'

दूसरे ने झट उत्तर दिया—'पेड़ पर!'

तीसरे से नहीं रहा गया, बोला—'तुम सब बेवकूफ हो! मछलियां क्या गाय-भैंस हैं, जो पेड़ पर चढ़ जायेंगी!'

० ० ०

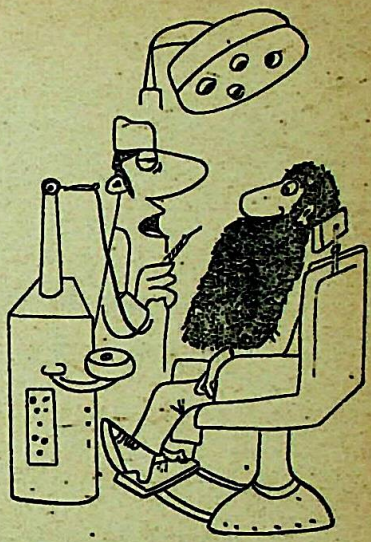

'आप अब मुंह खोलने को कह रहे हैं डाक्टर! मैंने तो कब से मुंह खोल रखा है।'

युवक से हसीना ने कहा—'अगर छेड़-छाड़ करोगे तो मैं बहुत जोर से चिल्ला पड़ूंगी।'

युवक बोला—'इस वियाबान में कौन तुम्हारी सुनेगा?'

लड़की बोली—'यह तो मैं जानती हूं, फिर मैं अपनी आत्मा को तसल्ली तो दे सकूंगी।'

० ० ०

'तुम इस कुत्ते को कुछ सिखा सकोगी, ऐसा मुझे तो नहीं लगता।' पति ने पत्नी से कहा।

'कैसी बात करते हो! मैंने तो तुम्हें भी बहुत कुछ सिखाया है।'

—नरईपुर, मलकौली, प. चंपारण, बिहार

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग़ज़ल

हम दिले-मायूस को समझा-बुझाकर रह गये।
ज़िंदगी में हर कदम पर मात खाकर रह गये।

कौन-सी नाकामियों का बोझ था दिल पर जो हम,
खुल के हंसना था जहां, बस मुस्कराकर रह गये।

जो हमारी ज़िंदगी के ख्वाब की ताबीर थे,
वो फ़कत दो चार दिन ख्वाबों में आकर रह गये।

प्यास बुझनी थी जहां अपनी छलकते जाम से,
हम वहां दो चार क़तरों से बुझाकर रह गये।

जब किसी के संगे-दिल पर चोट करनी थी हमें,
हम वहां भी दिल पे अपने चोट खाकर रह गये।

— ज़हीर कुरेशी —
पारदी मोहल्ला, लश्कर, ग्वालियर (म. प्र.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर कई जनम

ऊपर-ऊपर मुस्कानें हैं
भीतर-भीतर गम
जैसे शोकपत्र के ऊपर शादी का अलबम !
समय-मछेरे के हाथों का
थैला है जीवन
थैले में जिंदा मछली-सा
उछल रहा है मन
भीतर-भीतर कई मरण हैं
ऊपर कई जनम
जैसे शोकपत्र के ऊपर शादी का अलबम !
अपना-अपना दृष्टिकोण है
अपना-अपना मत
लेकिन मेरे मन में हम सब
बिना पते के खत
सुंदर अक्षर में लिखा है
जहां दुःखों का क्रम
जैसे शोकपत्र के ऊपर शादी का अलबम !

—कुंअर—

सुक्खीमल मोहल्ला, डासना गेट, गाजियाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकास्वादन

***आवारा मसीहा * लेखक: विष्णु प्रभाकर; पृष्ठसंख्या : ४७०; मूल्य : पैंतालीस रुपये; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।**

बंगला के मूर्धन्य उपन्यास-लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की ऐसी विस्तृत एवं प्रामाणिक हिन्दी जीवनी का छपना हिन्दी-जगत् के लिए गौरव की बात है।

मृत्युशय्या पर पड़े शरतबाबू ने कहा था—'मेरा जीवन अंततः मानो एक उपन्यास ही है। इस उपन्यास में सब कुछ किया, पर छोटा काम कभी नहीं किया। जब मरूंगा, निर्मल खाता छोड़ जाऊंगा। उसके बीच स्याही का दाग कहीं भी नहीं होगा।' (आवारा मसीहा, पृ. ४५९)

चार सौ सत्तर पृष्ठ की यह बृहत् जीवनी, जिसमें छियालीस प्रामाणिक चित्र हैं, अपने आप में एक सरस उपन्यास है; शरतबाबू का एक सर्वांगीण जीवन-वृत्त तो यह है ही।

श्री विष्णु प्रभाकर ने ग्रंथ की सामग्री जुटाने में १४-१५ वर्ष खपा दिये। वे वहां भी गये, जहां शरतबाबू के यौवन-काल का अधिकांश व्यतीत हुआ। शरतबाबू के जन्म-स्थान देवानंदपुर की उन्होंने यात्रा की। किशोरावस्था की क्रीड़ा-स्थली भागलपुर गये और कलकत्ता की काफी खाक छानी, जहां वह महान कलाकार प्रचंड सूर्य की तरह तपा और अस्त हुआ। इतना श्रम-साध्य-व्ययसाध्य ग्रंथ समाप्त करके वे कालिदास की परंपरा में कहते हैं—'मैं जानता हूं पाठकों की प्रशस्ति ही मेरा एकमात्र वह पुरस्कार होगी।'

एक समय शरतबाबू को नोबेल-पुरस्कार मिलने की चर्चा बड़े जोर से छिड़ी थी। तब एम. एन. राय ने कहा था—'रवि बाबू की तुलना में शरत की प्रतिभा किसी भी कदर कम नहीं है।' (आवारा मसीहा)

रवींद्रनाथ ठाकुर को शरतबाबू अपना साहित्यिक गुरु मानते थे। उनके विचार में 'महर्षि व्यास के बाद रवींद्रनाथ ही सर्वश्रेष्ठ कवि हुए हैं।' रवींद्रनाथ के हृदय में भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरतबाबू के प्रति एक गहरा वात्सल्य और आदर-भाव था। फिर भी, उन दो समकालीन महाप्रतिभाशाली कलाकारों के बीच मनोमालिन्य के अवसर कम नहीं आये। विशेषतः शायद इसलिए कि बीच के कुछ लोग दोनों के कान एक दूसरे के विरुद्ध भरते रहते थे। श्रद्धा और ईर्ष्या में जो निरंतर संघर्ष चलता रहा, प्रभाकरजी ने 'आवारा मसीहा' में उसका बड़ा सजीव चित्रण किया है। एक उदाहरण :

'एक बार वैथून कालेज के एक प्रोफेसर उनसे मिलने के लिए आये। बातों ही बातों में वे बोले – आप जितना सुंदर लिखते हैं, उतना ही स्पष्ट भी। आपकी रचनाएं हम लोगों की समझ में अच्छी तरह आ जाती हैं। पर रवींद्रनाथ ऐसी अस्पष्ट और उलझी हुई शैली में लिखते हैं कि कुछ भी ठीक से समझ में नहीं आता। वे बड़े कवि हो सकते हैं, परंतु मैं रहस्यवादी कवि की कोई रचना नहीं समझ सकता। उनके जीवन-देवता का रहस्य अभी भी अभेद्य है।

'शरतचंद्र ने तत्काल उत्तर दिया– प्रोफेसर महाशय, मैं आप लोगों के लिए लिखता हूं, किंतु रवींद्रनाथ हमारे लिए लिखते हैं। हम उनके पाठक हैं। हमें कहीं अस्पष्टता दिखाई नहीं देती।'

'आवारा मसीहा' के लेखक की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी तटस्थता। परंतु तटस्थता सरल साधना नहीं है। रवींद्रनाथ और शरतचंद्र के पारस्परिक मनोमालिन्य का चित्र खींचते समय वह तटस्थता अनायास लेखक के हाथ से छूट गयी है। उस चित्र को जरा बारीकी से देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि रवींद्रनाथ के प्रति लेखक में मोह है। रविबाबू के 'चार अध्याय' पर शरत की व्यंग्यात्मक कटु टिप्पणी ज्यों की त्यों उद्धृत कर दी गयी है; उनकी राजनैतिक मान्यताओं के खिलाफ शरत के तीव्र आक्रोश का भी संपूर्ण उल्लेख है; परंतु जिस क्षण रवींद्रनाथ के हृद्गत मालिन्य पर से परदा उठाने का अवसर आया, लेखक का हाथ संकोच से जड़ हो गया।

शरत की अभिनंदन-सभाओं में पधारने का निमंत्रण रविबाबू ने अनेक बार ठुकराया। एक बार तो निमंत्रण स्वीकार करके भी वे नहीं पधारे। पर लेखक ने इस समूचे प्रसंग का एक ही पंक्ति में समाहार कर दिया–'किसी कारण रविबाबू नहीं आ सके।' शरत की एक बहुचर्चित कृति की भूमिका लिखने के लिए रविबाबू से अनुरोध किया गया और उन्होंने इन्कार कर दिया। वहां भी प्रभाकरजी की कलम से मात्र इतना ही निकल सका–'किसी अज्ञात कारण से रविबाबू भूमिका नहीं लिख सके।'

इस मनोमालिन्य की चर्चा में लेखक ने तालस्ताय और तुर्गनेव का दृष्टांत दिया है; परंतु वे यह बताना भूल गये हैं कि तुर्गनेव के मनोमालिन्य का रूप अपेक्षाकृत अतिस्थूल था और वह करीब-करीब इकतरफा भी था।

शरत शुरू-शुरू में बंधु-बांधवों तथा समाज से तिरस्कृत रहे। भागलपुर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने मामा के घर से एक अवांछित व्यक्ति की भांति उन्हें निकलना पड़ा। अंग्रेजी के कवि शैले को भी तिरस्कृत होकर अपनी बहन का घर छोड़ना पड़ा था। परंतु शरत का मूल स्वभाव संयम और शुचिता का था; सेक्स के मामले में शैले की उच्छृंखलता का शतांश भी उनमें नहीं था; 'ऑन लवली ग्रीन ग्रास अंदर द टू राउंड मांउड्स' जैसी नग्न पंक्ति शरत-साहित्य में ढूंढ़े भी नहीं मिल सकती। तब शरत और शैले का उल्लेख एक सांस में कर जाना खतरनाक गलतफहमी पैदा कर सकता है। शायद यह लेखनी का प्रमाद है।

प्रभाकरजी की लेखन-कला का निखार 'आवारा मसीहा' में अद्भुत रूप से सशक्त होकर उतरा है। उन्होंने घटनाओं को इस तरतीब में सजा दिया है कि वे खुद बोलती हैं और सिनेमा रीलों की तरह शरतचंद्र के चित्र को स्पष्ट से स्पष्टतर करती चली जाती हैं। अनेक प्रकरणों में भरपूर नाटकीयता है।

शरतबाबू की द्वितीय पत्नी हिरण्यमयी देवी का पहला नाम मोक्षदा था। उसमें न रूप का उत्कर्ष था, न विद्या का। उसके अतीत जीवन के साथ किंचित् प्रवाद भी जुड़ा था। (परंतु मोक्षदा के सरल-निर्मल हृदय और सहज सेवाभाव से प्रभावित शरत विवाह के बाद बोले—तुम खालिस सोने की हो, अतः आज से तुम हिरण्यमयी हुई।) मोक्षदा के पिता कृष्णदास बंगाल से रंगून आये थे—पैसा कमाने के लिए और अपनी बेटी को प्रवाद से दूर रखने के लिए। उन्होंने बड़ी कोशिश की कि रंगून में बंगाली समाज से कोई उपयुक्त वर मोक्षदा के लिए मिल जाये; पर नहीं मिला। उनके अनुरोध पर शरत ने भी बड़ी खोजबीन की; परंतु असफल रहे। कृष्णदास की इच्छा थी कि शरत स्वयं हामी भर दें। ऐसा नहीं हुआ।

'एक दिन लौटकर शरत ने मोक्षदा से कहा—आज मैंने तुम्हारे लिए एक वर ढूंढ़ लिया है।

'मोक्षदा हठात् शरत की ओर देखती रह गयी। बोली—इस तरह की बातें करते हुए आपको अच्छा लगता है?

'शरत ने कहा — ना-ना, मैं परिहास नहीं कर रहा। तुम्हें बुरा भी नहीं मानना चाहिये। आखिर तुम्हें विवाह तो करना ही है। जो व्यक्ति मैंने तुम्हारे लिए ढूंढ़ा है वह तुम्हारा आदर करता है, और तुम्हारे प्रति सदय भी है।

'मोक्षदा और भी विस्मित हो उठी। अटक-अटककर उसने कहा—मैं इस बारे में कुछ नहीं जानती। वह व्यक्ति कौन है? बिना जाने मैं उसके बारे में क्या कह सकती हूं?

'शरत ने शरारत से मुस्कराते हुए कहा—तुमने उसे देखा है।

'क्या?

'हां, बहुत बार देखा है।

'जैसे मोक्षदा के मस्तिष्क में प्रकाश उभरने लगा। फिर भी अनजान बने रहते उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा—मैं कुछ नहीं जानती।

'शरत बोला—मुझे नहीं जानतीं ?

'मोक्षदा ने एकाएक दृष्टि उठाकर शरत की ओर देखा। अविश्वास और विस्मय से भरी वह दृष्टि शरत के अंतर में भर गयी। फिर सहसा भरी हुई बदली की तरह वह नीचे झुकी कि शरत के चरण पकड़ ले, लेकिन बीच ही में रोककर शरत ने कहा—क्या तुम्हें वह व्यक्ति स्वीकार है ?'

शरतबाबू के स्वभाव और चरित्र के जितने भी पहलू हैं, सभी को 'आवारा मसीहा' में खूबसूरती के साथ उभारा गया है। हर पहलू के साथ उसके वजन के मुताबिक पूरा न्याय किया गया है। उनका फक्कड़ और उदार स्वभाव, उनकी उदात्तता, उनका पशु-पक्षी-प्रेम, मजलिसी मिजाज, असहयोग आंदोलन में क्रियात्मक उत्साह—कुछ भी तो छूटा नहीं। खासकर उनकी 'अजगरी वृत्ति' का चित्र तो बड़ा सशक्त बन पड़ा है।

एक बार शरत ने रंगून में चाय की दुकान भी खोली। सुनिये उसका किस्सा:

'दफ्तर बंद हो जाने के बाद आग्रहपूर्वक वह दो-चार मित्रों को अपनी चाय की दुकान पर ले गया। घर के पास ही एक लकड़ी के मकान में सचमुच ही चाय की एक दुकान थी। एक मित्र ने कहा—शरतबाबू, अब तो आपको नौकरी छोड़ देनी होगी। चाय की दुकान पर स्वयं न बैठने से दो दिन में सब कुछ समाप्त हो जायेगा।

'शरत ने उत्तर दिया—नहीं रे, बैठना नहीं होगा। जानते हो, मैंने क्या बंदोबस्त किया है ? एक टिन दूध में कितनी चीनी मिलानी होगी, उससे कितने प्याले चाय तैयार होगी, यह सब मैंने हिसाब लगा लिया है। सवेरे दूध का एक टिन खरीद दूंगा, सारा दिन जितना दूध खर्च होगा, संध्या को उसी के हिसाब से पैसे ले लूंगा।

'यह गणित कहने में जितना सरल था, व्यवहार में उतना ही कठिन प्रमाणित हुआ। वह दुकान बहुत जल्दी समाप्त हो गयी।' (पृष्ठ. १४३)

शरत की रुचियां बहुमुखी थीं। उन्हें निशानेबाजी और शिकार का शौक था, विज्ञान में रुचि थी, घर को सजाकर रखने तथा दो-तीन खूबसूरत कलमें अपनी लिखने की मेज पर सहेजने की तो खब्त ही थी। कृतिकार तो वे थे ही। उनके प्रिय लेखक थे—मिल, स्पेंसर, कांट। 'स्पेंसर की सहज-सरल अभिव्यक्ति पर वे मुग्ध थे। उनकी मान्यता थी कि सत्य की सहज उपलब्धि के बिना अभिव्यक्ति सहज नहीं हो सकती।' (पृ. १२५)

नपे-तुले शब्दों में बड़ी बात कह जाने में श्री विष्णु प्रभाकर को कमाल हासिल है। चौदह वर्ष की बाल-विधवा निरुपमा देवी के माधुर्य व मुग्धता का वर्णन उन्होंने इतने में कर दिया है—'उस समय न जाने कहां से आकर एक भिरड़ ने निरुपमा को काट लिया। शायद शहद के आकर्षण से ही वह वहां आ गयी थी।'

इसी प्रकार, अंग्रेजी के कुछ शब्दों व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहावरों का हिन्दी में चुस्त अनुवाद ध्यान आकृष्ट किये बिना नहीं रहता। जैसे, 'आज यह मीमांसा करना व्यर्थ है कि उन्नीस-वर्षीय शरत ने नर्तकी कालीदासी के संपर्क में आकर वर्जित फल का स्वाद लिया था या नहीं।' (पृ. ६८)

प्रभाकरजी की लेखनी की सजगता और संयमप्रियता के कारण ऐसे बृहदाकार ग्रंथ में ऊब अथवा पिष्ट-पेषण का नाम तक नहीं। शायद, यही कारण है कि तनिक-सा प्रमाद बेतरह खटक जाता है। अंग्रेजी की लोकोक्ति है—ह्वेन द कैट इज़ एवे द माइस मस्ट प्ले। प्रभाकरजी की स्मृति ने उन्हें धोखा दिया, और वे लिख गये—कैट इज़ आउट लेट माउस प्ले। (पृष्ठ २५)

इसी प्रकार शरत के जन्म की तारीख बताते हुए (पृ. ३७) वे लिखते हैं—'१५ सितंबर १८७६ ईसवी, तदनुसार ३१ भाद्र १२८३ बंगाब्द, आश्विन कृष्णा द्वादशी संवत १९३३, शकाब्द १७९८, शुक्रवार की संध्या को शरत का जन्म हुआ।' हमारा अनुमान है कि यदि उस महापावन संध्या-काल के मिनिट और सेकेंड की सूचना उन्हें मिलती, तो वे उसका भी उल्लेख करते!

शरत की कला एवं उनके चरित्र के प्रति श्रद्धा से ओत-प्रोत होते हुए वे 'विप्रदास' के बारे में कह गये—'निस्संदेह यह एक प्रतिक्रियावादी रचना है।' (पृ. ३१०)

हमारा नम्र निवेदन है कि 'प्रतिक्रियावादी' और 'प्रगतिवादी' जैसे चलतू शब्दों के प्रयोग का एकाधिकार तृतीय स्तर के लेखकों को ही है। यों भी प्रभाकरजी के संस्कारी व्यक्ति 'विप्रदास' के भावनात्मक पक्ष से स्वयं गद्गद न हुआ हो, इसका विश्वास नहीं होता। शरत की रचनाओं की दार्शनिक विवेचना तो 'आवारा मसीहा' का मूल स्वर नहीं है। फिर क्या जरूरत थी इस टिप्पणी की।

ग्रंथ समाप्त करते-करते शरत की कला-साधना का ही नहीं, उनके निजी चरित्र और स्वभाव का भी एक भव्य चित्र हृदय पर अंकित हो जाता है। ग्रंथ की सफलता का निकष है यह।

एक बार रविबाबू ने शरत से अनुरोध किया था कि वे आत्मकथा लिखें। शरत का उत्तर था—गुरुदेव! मुझे यदि मालूम होता कि एक दिन मैं इतना बड़ा आदमी बन जाऊंगा, तो जीवन को मैं दूसरे ही ढंग से जीता।' ऐसा ही अनुरोध कभी प्रकाशकों ने भी शरत से किया था। तब शरत ने उत्तर दिया था—'मैं इतना बहादुर नहीं कि अपना जीवन-चरित्र लिखने बैठ जाऊं।'

शरतबाबू की अपने ही प्रति 'निर्मम निर्लिप्तता' के ऐसे कई मुखर रेखाचित्र 'आवारा मसीहा' में हैं, जो शरत की निर्भीकता और साफगोई को उभारकर रख देते हैं।

इतने बड़े ग्रंथ में प्रूफ की गलती ढूंढ़ने भी शायद नहीं मिलेगी। निर्दोष मुद्रण, बढ़िया कागज और पुख्ता जिल्द पर शरत बाबू का भावपूर्ण चित्र भी इस ग्रंथ को 'संग्रहणीय' विशेषण का अधिकारी बनाते हैं।

—सत्यपाल विद्यालंकार

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हास्यपुरस्कार-हास्यास्पद विवाद

अमरीका में हमारे भूतपूर्व राजदूत स्व. गगनविहारी महेता को इस बात का अफसोस था कि राष्ट्रसंघ ने कोई विश्व-हास्य-संघटन नहीं स्थापित किया। मानो उनकी शिकायत दूर करने के लिए गये साल जून में अमरीका के कई धनी-मानी सज्जनों ने 'एसोसिएशन फार द प्रोमोशन आफ ह्यूमर इन इंटर नेशनल एफेयर्स (ए-पी-एफ-आइ-ए) नामक संस्था कायम की और उसकी ओर से प्रतिवर्ष एक विश्व हास्य-पुरस्कार देने की योजना बनायी। प्रथम वर्ष के पुरस्कार के लिए ब्रिटेन के विख्यात हास्य-लेखक जार्ज मीकेश का नाम संस्था के कर्ताधर्ताओं के ध्यान में आया।

जब मीकेश से प्रस्ताव किया गया, तो उन्होंने शर्त रखी कि पुरस्कार की रकम काफी अच्छी होनी चाहिये। उनका कहना था—'नोबेल पुरस्कार की इतनी प्रतिष्ठा उसे देने वाली स्वीडिस अकादेमी के संमान के कारण नहीं, ४० हजार पौंड की रकम के कारण है। पुरस्कार की रकम कम से कम १,००० पौंड रहनी चाहिये।'

आयोजकों का कहना था—'पुरस्कार कितने का हो यह हमें तय करना है, न कि श्री मीकेश को। वे इस बारे में इतनी तीव्रता से महसूस करते हैं, हमें निराशा हुई है।'

मीकेश की प्रतिक्रिया—'धनिकों को पैसे को महत्त्व न देने की नसीहत गरीब लेखकों को देते देख मुझे मतली और ऊब होने लगी है। मैं इस मामले में तीव्रता से इसलिए महसूस करता हूं कि खूब शानदार भोज के अंत में दिये गये पुरस्कार की रकम महज ५७ पौंड ८ सेंट निकले, तो सारी चीज मजाक बनकर रह जायेगी। मैं कोई अदना-सी रकम स्वीकार करूं, तो यह साथी हास्य-लेखकों के प्रति अपकार होगा।'

संस्था के एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी श्री डेविडसन का उत्तर—'सच कहूं तो मुझे इस रवैये पर आश्चर्य है। इससे श्री मीकेश का संमान नहीं बढ़ता। महत्त्व विचार का होना चाहिये, न कि रकम का। आर्ट बुकवाल्ड (प्रसिद्ध अमरीकी हास्य-लेखक) ने एक ऐसा पुरस्कार स्वीकार किया था जिसमें कोई भी रकम नहीं थी और न जिसका कोई बहुत नाम-धाम ही था; फिर भी अभिमानपूर्वक "हू इज हू" में उन्होंने उस पुरस्कार का जिक्र किया है।'

मीकेश का नहले पर दहला—'ठीक है, मैं भी "हू इज हू" में अभिमानपूर्वक, लिखवाने को तैयार हूं कि मुझे प्रथम ए-पी-एफ-आइ-ए पुरस्कार "आफर" किया गया था, मगर मैंने उसे अस्वीकार कर दिया, क्योंकि रकम पर्याप्त नहीं थी।' कहते हैं, मीकेश ने यह भी कहा—'मैं पार्टी के अंत में छोड़ी गयी टिप नहीं लिया करता।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्मी को क्या हो गया ?

दो किस्तों में कर्तार सिंह दुग्गल का लघु उपन्यास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मध्यवय के उस मौसम में पहुंच चुकी थी, जहां पर जीवन का ढांचा टूटने-सा लगता है; जीवन का सूत्र हाथ से छूटता-सा महसूस होता है। उसे सूझ नहीं रहा था कि वह अपने जीवन को किस नये सांचे में ढाले ..... क्या दुनियावी जिंदगी में गोता लगा दे, नये प्रेम रचाये और भटका करे; अथवा चित्त को प्रभु के पावन चरणों की ओर मोड़े ? अंततः उसने .....

'अम्मी को क्या हो गया ?' शांता ने शशि से पूछा।

शशि ने कोई जवाब नहीं दिया। शशि को स्वयं कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पहले तो कभी-कभी वह इसके बारे में सोचा करती थी; परंतु अब जब से उसके बी. ए. के इम्तहान शुरू हो गये थे, उसे सोचने की कभी फुरसत ही नहीं मिली थी।

शांता को अपने मायके आये हुए कुछ ज्यादा दिन नहीं हुए थे। पता नहीं क्यों, इस बार उसे अपनी मां कुछ बदली-बदली लग रही थी। उसने अपने मायके में कदम ही रखा था कि उसे महसूस हुआ, जैसे वातावरण कुछ का कुछ हो गया है। फिर उसने सोचा कि शायद उसका यह भ्रम हो, इतने दिनों के बाद वह दिल्ली आयी थी। लेकिन नहीं, दो दिन, चार दिन—और अब उसे विश्वास हो गया कि यह उसका भ्रम नहीं था। जरूर कोई बात थी।

लेकिन क्या बात थी ? यह शांता को समझ में नहीं आ रहा था।

सुबह-तड़के पति-पत्नी सोकर उठते और सैर को निकल जाते, जैसे हमेशा से वे करते आये थे। सर्दी हो, गर्मी हो। सैर करके लौटते तो पति पूजा-पाठ में लग जाता, पत्नी उसका नाश्ता तैयार करती। यों नौकर-चाकर थे; पर अपने घरवाले का खाना वह खुद ही तैयार किया करती थी। नाश्ता करके वह दफ्तर चला जाता। जब तक उसकी मोटर चल न पड़ती, वह उसके लिए कुछ-न-कुछ करती रहती। कभी रूमाल भूल जाता था, कभी ऐनक, कभी दफ्तर की चाबियां, कभी मोटर की। उसे विदा करके वह दोपहर के खाने की तैयारी शुरू कर देती। फिर शाम की सैर, फिर उसके पति का संध्या-वंदन, फिर रात का खाना और फिर अपने-अपने पलंग पर वे पड़ जाते। अपने माता-पिता की यह दिनचर्या वह अपने बचपन से देखती आ रही थी। यही दिनचर्या आजकल थी।

लेकिन शांता को लगता कि कुछ फर्क जरूर है; उसके भीतर की औरत महसूस करती कि जैसे उसकी अम्मी की आंखों में एक अद्भुत लौ हो—सारी रात जलते रहे दिये की लौ। वैसी ही मीठी बोली थी, लेकिन शांता को लगता जैसे उसमें कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द घुला हुआ हो। उसके कोमल-कोमल, सारी उम्र के संभाल-संभाल रखे अंग जैसे दुःख-दुःख रहे हों।

एक नजर और शांता ने सब कुछ भांप लिया। और फिर उसका अनुमान पक्का होता गया।

उस दिन तो जैसे उसके कलेजे म तीरों का गुच्छा आ चुभा हो। पूरनमासी की शाम, मां-बेटी मंदिर गयी थीं। भगवान की मूर्ति पर ताजा चुनी हुई कलियां चढ़ाते हुए जब उसकी अम्मी ने सिर झुकाकर माथा टेका, नीचे फूलों की कलियां, उसके छम-छम आंसुओं से भीग गयीं। ये ओस के मोती नहीं थे। उस समय शाम को ओस कहां ?

शांता सोचती कि यह क्या हो गया है अम्मी को ! दुनिया की हर चीज उसे सुलभ थी—हर एक चीज। पति था, वह कहे तो उसके लिए जान दे दे। इतना उसका खयाल रखता था। लाख मुसीबतें झेल लेता, लेकिन अपनी पत्नी को कभी कोई कष्ट नहीं होने देता। दो बेटियां थीं। एक ब्याही जा चुकी थी, दूसरी ब्याही जायेगी, जब उसके इम्तहान खत्म होंगे। और बेटा डिफेंस अकादमी में ट्रेनिंग ले रहा था। अपनी कोठी थी, खुले कमरे, खुले लान, मोटर, नौकर-चाकर, सहेलियां, रिश्तेदार, सगे-संबंधी।

औरत को और क्या चाहिये ? उसके पति की सेहत अच्छी थी। उसकी अपनी सेहत ऐसी थी, जैसे भरी पिटारी हो। वही गोरे-गोरे गुलाबी गाल, ऊंचा-लंबा कद। तीन बच्चों की मां थी, जवान-जवान तीन बच्चों की मां; परंतु अभी तक कंचन-सी काया, जैसे उसने अपने आपको वैसे का वैसा संभाल-संभाल रखा हो। बाल कहीं-कहीं से भूरे-भूरे थे। भूरे होकर और अच्छे लगते थे। उम्र के साथ उसके पहरावे में जितनी सादगी आ रही थी, उतनी ही वह और आकर्षक होती जा रही थी। क्या शांता और क्या शशि, अपनी अम्मी को देखकर उन्हें अपना सौंदर्य फीका-फीका लगता था। और उन्हें अपनी अम्मी पर बेहद प्यार आने लगता। शांता का पति तो उसे प्रायः छेड़ा करता था—'मैंने इश्क तेरी अम्मी से शुरू किया था। उन्हें देखकर मुझे लगा, जब मां इतनी सुंदर है, तो बेटी कैसी होगी ?'

और शशि को कई बार बड़ी खीझ आती। उसके कालेज के लड़के, अड़ोस-पड़ोस के नौजवान मिलने तो उससे आते और घंटों उसकी अम्मी के पास बैठकर चल देते। बेचारी शशि उन्हें शरबत घोल-घोलकर पिलाती रहती। काफी बना-बनाकर पेश करती रहती। पान लगा-लगाकर खिलाती रहती।

शांता को जब उस शाम की मंदिर वाली घटना याद आती, तो उसके दिल को कुछ हो जाता। जैसे कोई नौलखा हार टूट जाये, इस तरह आंसुओं के मोती माथा टेकते हुए बरस पड़े थे। वह तो सीतामढ़ी वाले अंकल मिल गये और बचाव हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माथा टेककर परिक्रमा के लिए उसने पीठ मोड़ी और आगे अंकल खड़े थे। और फिर अम्मी उनसे बातें करने लगीं। उसके चेहरे पर एकदम रौनक आ गयी। कैसे उसने अपनी भीगी पलकों को छिपाया था।..... शांता सोचती और हैरान होती रहती।

बेचारे सीतामढ़ी वाले अंकल कितने प्यारे थे। इतने बड़े कलाकार, देश-भर में उनके चित्रों की चर्चा थी। उनकी बनायी हुई एक-एक तस्वीर दस-दस हजार में बिकती। जब भी अम्मी से मिलते, यही कहते—मुझे आपका चित्र बनाना है। और अम्मी हंसकर टाल देतीं।

शशि एक दिन बैठे-बैठे शांता से कहने लगी—'कुछ महीने हुए, मेरे इम्तहान से पहले की बात है, एक शाम मैं सीतामढ़ी वाले अंकल के चित्रों की नुमाइश देखने गयी। टाउन-हाल में उनकी नुमाइश हो रही थी। उनके ताजा बनाये हुए एक चित्र को मैंने देखा और एक क्षण के लिए मैं पसीना-पसीना हो गयी। मुझे लगा, जैसे अम्मी खड़ी हों—अलफ नंगी, गज-गज लंबे बालों से जैसे अपने आपको ढांक रही हों। लेकिन वह चित्र तो एक आबशार का था। किसी पहाड़ी के नुकीले पत्थरों पर से एक नदी जैसे मुंह के बल नीचे कूद पड़ी हो। मैं कितनी देर उस चित्र को देखती रही। पता नहीं क्यों, मुझे बार-बार अम्मी की झलक दिखाई देने लगती उस चित्र में!'

उस शाम अकेले अपने लान में टहल रही शांता ने देखा, सामने सड़क पर सीतामढ़ी वाले अंकल अपनी मोटर में जा रहे थे। शांता ने देखा और उन्होंने अपना हाथ हिलाया।

'कौन था?' अंदर से आती अम्मी ने शांता से पूछा।

'सीतामढ़ी वाले अंकल थे। मैंने इशारा तो किया, मगर वे रुके नहीं।'

'अच्छा ही हुआ, तेरे डैडी घर पर नहीं हैं। मुझे यह आदमी अजीब लगता है। हमेशा उसकी एक ही रट—मैं आपकी तस्वीर बनाऊंगा। कोई बात भी हुई!'

और शांता अपनी अम्मी के मुंह की ओर देखती रह गयी।

फिर शांता के डैडी आ गये। दफ्तर में आज फिर उन्हें देर हो गयी थी। पत्नी अपने पति के कामों में जुट गयी। पहले उसने उसके बूटों के तसमे खोले। सारा दिन काम करते-करते कितना थक जाता था। फिर उसके कपड़े उतारने में मदद की। गुसलखाने में उसके नहाने के लिए तौलिया, बनियान-जांघिया पहले ही टंगे थे। वह नहाने के लिए गया। गुसलखाने के बाहर खड़ी वह इंतजार करती रही कि अंदर से किसी चीज के लिए आवाज न दे। यों तो गुसलखाने में स्वयं सब रख देती थी, लेकिन जितनी देर उसका पति नहाकर बाहर न आ जाता, गुसलखाने के पास से एक क्षण के लिए न हटती। कहीं उसे किसी चीज की जरूरत न पड़ जाये। सारा दिन दफ्तर में काम करके लौटा मर्द—थके-मांदे मर्द का मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहा-धोकर शांता के डैडी बाहर टहलने के लिए निकल गये। अम्मी की तबीयत कुछ ढीली-सी थी। उधर वे सैर के लिए निकले, इधर टेलिफोन की घंटी बजने लगी।

'कौन ? ..... ओह ! अच्छा आप हैं।' अम्मी टेलिफोन सुन रही थी। 'ये तो अभी बाहर निकले हैं—टहलने गये हैं..... मैं नहीं गयी, यों ही .....नहीं, तबीयत तो भली-चंगी है। तबीयत को क्या होगा भला। आप बातें ही करते हैं, कभी आते तो नहीं..... क्या काफी ? पिलाऊंगी। आपसे काफी महंगी है। सुना है, आप इधर से गुजर जाते हैं, हमारे यहां नहीं आते ..... नहीं कोई कह रहा था। गलत होगा। ... अच्छा, कब आयेंगे आप ? पक्का वायदा .....फिर टेलिफोन करके माफी मांग लेंगे..... मैं आपको जानती हूं..... मैं इंतजार करूंगी। अच्छा !'

साथ के कमरे में शृंगारमेज के सामने खड़ी शांता सुन रही थी। सामने आईने में उसने देखा, जैसे वह मुस्करा रही हो—एक शरारत-भरी मुसकान। यही है, यही है, जिसने अम्मी के जीवन में एक नया रंग भर दिया है। लेकिन यह कौन है ?

जो कोई भी है, आज-कल में इनके यहां आयेगा। शांता सोचती कि एक नजर—और वह उसे पहचान लेगी। मोहब्बत जैसी चीज किसी से छिपायी नहीं जाती। शांता ने भी तो मोहब्बत की थी।

बेचारी अम्मी ! शांता को अपनी मां पर तरस आने लगा। हाय, मोहब्बत कोई न करे। मोहब्बत में तो औरत तिनके जैसी हल्की हो जाती है। और शांता को वे दिन याद आने लगे, जब वह स्वयं किसी से मोहब्बत कर रही थी। तौबा-तौबा जैसे सारा जमाना उसका बैरी हो गया हो। यही अम्मी, जिसने कितने लाड़-प्यार से उसे पाला था, शांता को एक नजर देखना नहीं चाहती थी। उठते-बैठते झल्लाती-चिल्लाती रहती।

'अम्मी मोहब्बत की नहीं जाती, हो जाती है।' एक दिन शांता ने खीजकर कहा था।

'गैरजिम्मेदार लोगों ने अपनी कमजोरी का नाम मोहब्बत रख लिया है।' अम्मी ने शांता को डांटा था—'मोहब्बत एक के साथ हो सकती है, तो किसी दूसरे के साथ भी हो सकती है। औरत की असली मोहब्बत अपने बच्चे के साथ होती है—और उस बच्चे के पिता के साथ। मोहब्बत एक साझेदारी है। एक ही चीज के दो मालिक; एक मालिक और दूसरे मालिक में उस चीज की साझेदारी। मेरी एक सहेली थी, हर समय उस पर मोहब्बत का भूत सवार रहता था—कभी इसके साथ, कभी उसके साथ। एक वक्त केवल एक मर्द को प्यार करती, लेकिन रहती हमेशा इश्क में डूबी हुई। एक और थी। सारी उम्र उसे मोहब्बत की जुस्तजू लगी रही। और आखिर पता चला कि मोहब्बत तो वह अपने आपसे करती थी। अपने जैसी मोहब्बत कोई किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से नहीं करता। मोहब्बत बीमारी है। जैसे जुकाम होता है।

'एक और सहेली थी मेरी। कहती—कभी-कभी मुझे मोहब्बत का बुखार चढ़ता है। मैं इसका इलाज कर लेती हूं। जब बिल्ली अपनी मखमली पीठ को आपकी पिंडलियों के साथ आकर रगड़ती है, तो बिल्ली को आप अच्छे नहीं लग रहे होते; बिल्ली को अपने आपको आपकी पिंडलियों के साथ रगड़ना अच्छा लग रहा होता है। जाड़े में सूरज की हल्की-हल्की धूप अच्छी लगती है। गर्मियों में सूरज की उसी धूप से बचने के लिए आदमी लाख उपाय करता है। लोग हाथ जोड़-जोड़कर, माथा रगड़-रगड़कर वर्षा मांगते हैं और फिर कभी वर्षा होती है, बाढ़ आती है, गांव के गांव बह जाते हैं।

'मोहब्बत खुशी है, मोहब्बत खिल-खिल जाना है; कोई खांसी से मोहब्बत नहीं करता, खुजली से मोहब्बत नहीं करता। बेकार है वह मोहब्बत जो किसी चलते राही को आंच पहुंचाये। हमारे गांव का ज्वाला ताऊ, जब उसे किसी बच्चे पर लाड़ आता, उसे चांटा दे मारता था। और फिर हैरान होकर बच्चे को सीने से लगा लेता। हमेशा अपनी घरवाली को भद्दी-सी गाली देकर बुलाता। लेकिन बच्चा हर साल उनके होता। मोहब्बत, मोहब्बत, मोहब्बत।

'जिस दिन तुम पैदा हुईं, अस्पताल में जच्चाखाने में मेरे साथ एक ईसाई औरत थी। प्रसूति-पीड़ा में अपने होने वाले बच्चे के पिता को लाख-लाख गालियां बक रही थी। इतनी गंदी और इतनी भद्दी गालियां! उसने भी तो मोहब्बत की होगी। मोहब्बत के बिना कोई किसी बच्चे की मां बन सकती है? जंगल में फूल खिलते हैं, रंग बिखेरते हैं, खुशबू लुटाते हैं, मुरझाकर मर जाते हैं किसकी मोहब्बत में?'.....

शांता की अम्मी यों बोलती जा रही थी, और उधर शांता सो गयी थी। खर्राटे लेने लगी तो कहीं उसकी अम्मी खामोश हुई। खीजी-खीजी, हारी-हारी, शर्मिंदा-शर्मिंदा।

शांता अपने महबूब के बारे में कहती—'अम्मी, इस लड़के का कोई कसूर नहीं। नौजवान है, सुंदर है, पढ़ा-लिखा है, अच्छे खाते-पीते घर का है—इसका कसूर बस यही है कि इसने मुझसे मोहब्बत की है।'

'और यह कसूर काफी नहीं तुम्हारी नजर में?' अम्मी हमेशा यह कहकर उसे खामोश कर देती।

और उसकी अम्मी ने तब तक सांस नहीं ली, जब तक शांता ने अपने महबूब को, अपनी जिंदगी में से बुहारकर बिलकुल बाहर नहीं फेंक दिया।

शांता को याद था कि उस दिन वह कैसी रोयी थी, कैसी तड़पी थी। तकिये में मुंह छिपाकर सारी रात वह सुबकती रही थी, पर उसकी अम्मी की जिद बुरी थी।

और वही अम्मी अब आप जैसे हाथ लगाने से फूट पड़ेगी, यह हालत थी अम्मी की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

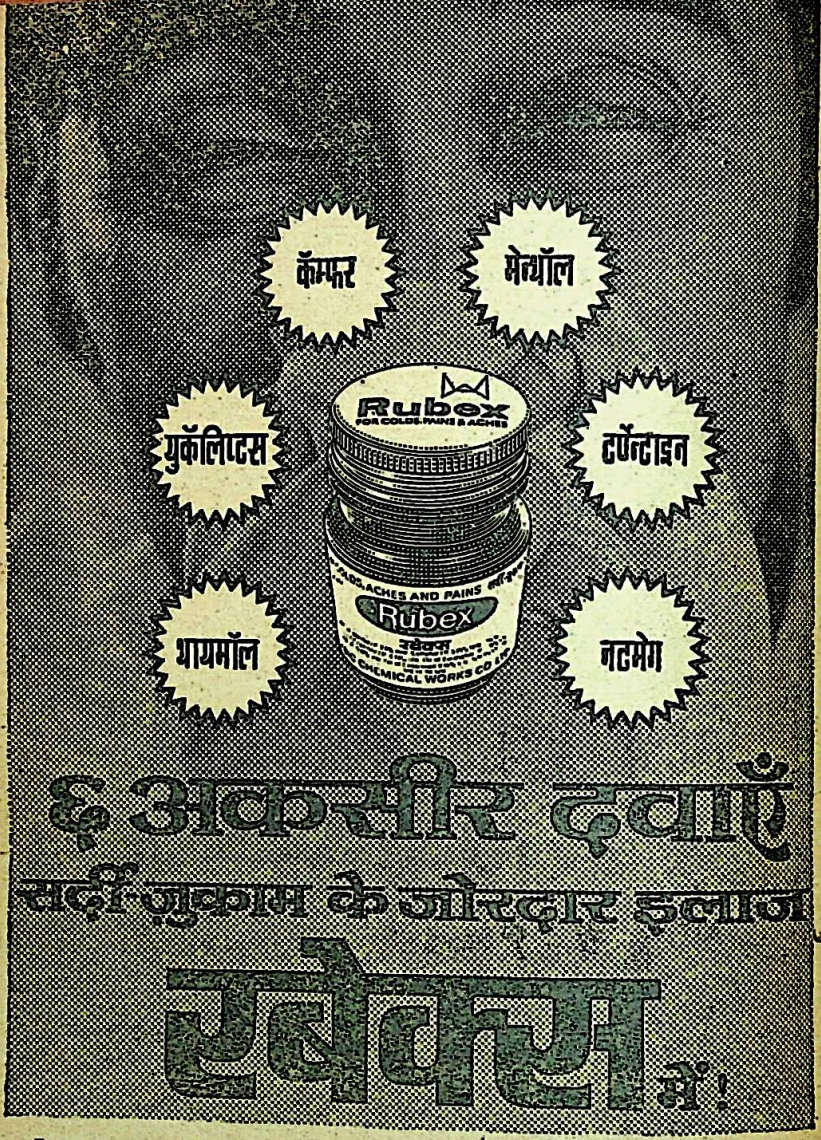

रबेक्स एक ऐसे फॉर्म्यूले से बना है जो बंद नाक खोलता है, छाती में जमा बलगम दूर करता है और शरीर में स्फूर्तिभरी गर्माहट लाता है.

सर्दी-जुकाम जब करे हमला, तब मलें रबेक्स.

२० और ६५ ग्राम की शीशियों व ६ ग्राम की डिब्बी में मिलता है.

कॅम्फर–कपूर; नटमेग–जायफल; युकॅलिप्टस–नीलगिरी का तेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[२]

शांता इंतजार करती रही, कब वह काफी पीने वाला कोई आयेगा। एक दिन दो दिन, सात दिन, दस दिन बीत गये। न अम्मी ने काफी बनायी, न कोई काफी पीने का शौकीन आया। शांता इतने दिन बाहर नहीं निकली।

संक्रांति का दिन था। सुबह तड़के उठकर अम्मी ने स्नान किया। फिर रसोई में जाकर वह हलवा बनाने लगी। सिक्खों की बेटी, हिन्दुओं के घर ब्याही; अम्मी मंदिर भी जाती थी, गुरुद्वारे भी। संक्रांति का दिन, आज वह गुरुद्वारे जायेगी। कड़ाह-प्रसाद में कोई बादाम और पिस्ते नहीं मिलाता। लेकिन अम्मी का हलवा किशमिश, छुहारों और ढेर-सी छुट-पुट के साथ सजाया होता। हलवा बनाते अम्मी की आंखें सजल हो रही थीं। शांता ने अम्मी की ओर देखा और उसके दिल को कुछ होने लगा।

'अम्मी! आप हटिये मैं हलवा बनाऊंगी। रसोई में कितना धुआं है। आपकी आंखें लाल हो रही हैं।' शांता ने अम्मी से खुरचनी लेते हुए कहा।

'नहीं बेटी नहीं, अब धुआं नहीं रहा।' अम्मी की आवाज भर्रायी हुई थी। यदि धुआं था तो उसकी आंखों को लगता, उसका गला क्यों रुंधा हुआ था।

आजकल अम्मी अकेली खुश रहती है। सुबह तड़के उठ जाती। इससे पहले कि घर का कोई और व्यक्ति जागे, ढेर-सा काम खत्म कर लेती। कभी शांता की आंख खुल जाती, तो वह अम्मी का हाथ बंटाने लगती। सफाई का अम्मी को हमेशा बड़ा खयाल रहता था। लेकिन आजकल तो यह एक सनक बन गयी थी। हर रोज कपड़ों की गठरी लेकर बैठ जाती। हर रोज अपने बालों को धोती। और सारा दिन उसके बाल कंधों पर फैले सूखते रहते। अभी तक शरफा दाई उसकी मालिश करने आया करती थी। छत पर बरसाती में चटाई बिछाकर घंटों मालिश करवाती रहती। मालिश करते हुए शरफा दाई उसे लोक-गीत सुनाने लगती। गीत की धुन नीचे शांता को सुनाई देती।

बट्टियां बटा रख दी, मेरे जालिमा!
दीवा बले सारी रात

(बत्तियां बट-बटकर रखती हूं ओ मेरे जालिम! दिया सारी रात जलता है।)

शरफा दाई जब भी शांता को देखती, हमेशा कहती—'हुबहू अपनी मां है। तेरी मां बिलकुल तेरी शक्ल की थी, जब पहली बार मैं इस घर में आयी थी।' इतने सालों से वह अम्मी की सेवा करती रही थी। 'अब भी उसका क्या बिगड़ा है!' शरफा दाई को इस बात पर नाज था, जैसे उसकी मालिश ने ही अम्मी का रूप-रंग वैसे का वैसा बनाये रखा हो।

मालिश करवाकर अम्मी गुसलखाने में घुस जाती। कपड़े धोती, नहाती, कभी किसी गीत के बोल गुनगुनाती तो कभी किसी गीत के। बेटियां जवान थीं, अपने कपड़े वे आप धो लेतीं; पर नहीं, अम्मी कहती अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर में तुम्हारे कपड़े मैं धोऊंगी। तुम अपने-अपने घर जाकर चाहे जो करना। जैसे अभी तक वे दूध पीती बच्चियां हों। वैसे ही उनका खयाल रखती। अपने सामने बैठाकर खिलाती।

'आजकल की लड़कियों को यह फाके करने की बुरी आदत पड़ गयी है।' अम्मी इस तरह का कोई बावलापन अपनी बेटियों को नहीं करने देती। हफ्ते में कम से कम एक दिन, उनके केश खुद धोती, अपने हाथ से उन्हें तेल लगाती और फिर कंघी से बाल सुलझाकर छोड़ देती, जैसे उनकी मर्जी हो अपनी-अपनी चोटी बना लें। लड़कियों की निजी पसंद में कभी दखल न देती।

बस एक शांता के इश्क के मामले में अम्मी अड़ गयी थी। कितने महीने घर में हंगामा मचा रहा। शांता टेलिफोन नहीं सुन सकती थी। पहले नौकर टेलिफोन सुनता, टेलिफोन करने वाले का नाम पूछता, फिर जिसका टेलिफोन होता उसे बुला देता। शांता बाहर लान में अकेली नहीं बैठ सकती थी।

अड़ोस-पड़ोस में, चारों ओर घरों में जवान-जवान लड़के थे। सड़क पर सारा दिन आवा-जाही लगी रहती थी। शांता न चिट्ठी लिख सकती थी, न उसके नाम कोई चिट्ठी आ सकती थी। उसके प्रेमी का इस घर में आना कब से बंद था। शांता तड़प-तड़पकर थक गयी, रो-रोकर हार गयी। कई-कई दिन उसने अनशन किया। जब वह अम्मी की ओर आंखें उठाकर देखती, तो उसकी आंखों में एक फरियाद होती। लेकिन उसकी अम्मी का दिल नहीं पसीजा।

और फिर शांता ने हार मान ली। जब तक शांता ने हार नहीं मानी, अम्मी ने उसे मुंह नहीं लगाया।

फिर शांता का अम्मी के चुने हुए लड़के से ब्याह हो गया। सब कुछ उसमें था, लेकिन ब्याह से पहले शांता ने उससे मोहब्बत नहीं की थी। और अब, जब उसके होने वाले बच्चे का पिता उसे अच्छा लगता, बहुत अच्छा लगता, तो शांता का रोम-रोम अपनी अम्मी के प्रति कृतज्ञता से भर उठता।

शांता खुश थी। तो भी जब उसे उन दिनों की याद आती, जब उसकी अम्मी ने उसके महबूब को यों कुचला था, उसकी फरियादों की रत्ती-भर परवाह नहीं की थी, तो शांता के मुंह का स्वाद कसैला-कसैला हो जाता। उठते-बैठते हमेशा कहती-'मोहब्बत कोई चीज नहीं। मोहब्बत आदमी की अपनी कमजोरी होती है।'

और अब वही अम्मी खुद जैसे मोहब्बत का पुतला हो, किसी की बांहों में ढेर होने के लिए ललक रही हो।

लेकिन वह कौन था?

शांता की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

न शशि की। शशि को तो बस यही लगता, जैसे अम्मी कुछ और की और होती जा रही हो। कुछ बदली-बदली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले अधिक समय वह सब्जियों की क्यारियों में व्यस्त रहती थी। अब वह कोठी के आंगन में अधिक समय फूलों की क्यारियों में गुजारती। पहले अधिक समय उसका रसोई में कटता था, अब गोल कमरे में। पहले अधिक समय नौकर-चाकरों के साथ, अड़ोसी-पड़ोसियों के साथ गुजरता था; अब वह अकेली खुश होती या फिर कोई किताब लेकर बैठ जाती। कभी कोई उपन्यास, कभी कोई कहानी-संग्रह।

शशि की एक सहेली ने अपने बाल कटवा लिये थे। उठते-बैठते शशि उसका जिक्र करती रहती—कितनी प्यारी लगने लगी है, कितनी सुंदर लगने लगी है। और फिर एक दिन अम्मी ने उससे कहा—'तुम्हारा जी चाहता है तो तुम भी कटवा लो।' शशि ने सुना और खिल-सी गयी। कई दिनों से उसका जी चाह रहा था, पर उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि अम्मी को अपने मन की कह सके। उसे याद था, जब शांता अपने बाल कटवाना चाहती थी, तो सिक्ख मां-बाप की बेटी अम्मी ने कैसे उसे डांटा था। उसका मुंह ही तो नोच लिया था। और अब खुद टेलिफोन करके हेयर ड्रेसर के साथ उसकी एपाइंटमेंट करवा दी थी। और कभी उससे कहती, इस तरह के बाल बनवाना; कभी कहती, उस तरह के बाल बनवाना। शांता अम्मी के मुंह की ओर देख-देखकर हैरान होती रहती।

कहां वह अम्मी और कहां यह!

एक दिन डाक्टर अंकल के साथ मजाक करने लगी—'डाक्टर साहब! आजकल तो औरतों ने लंबे बाल रखने बंद कर दिये हैं। आपने यह मुसीबत क्यों पाल रखी है?'

डाक्टर अंकल अम्मी के गांव के थे। अम्मी के साथ पढ़े थे। पढ़े-लिखे, पर अपने धर्म के पूरे-पाबंद थे। क्या मजाल जो सिगरेट का धुआं भी उनके पास से गुजर जाये।

'आखिर सिक्खों की बेटी मैं भी हूं।' अम्मी उन्हें छेड़ती।

'औरत का धर्म उसके घरवाले का धर्म होता है।' डाक्टर कहते—'घरवाले का या चाहने वाले का।'

'क्या मतलब?' अम्मी को जैसे डाक्टर अंकल की बात समझ में न आ रही हो।

और फिर डाक्टर अंकल ने यों अम्मी की ओर देखा, जैसे कोई सारी उम्र की अपनी दर्दे-कहानी किसी से कह गया हो।

कम से कम शांता को यों लगा था। उसने भी मोहब्बत की थी। ब्याह भी किया था। एक बच्चे की मां भी बनने जा रही थी। उसे भी तो कुछ इन बातों की समझ थी।

और आजकल डाक्टर अंकल अक्सर उनके घर आ जाते। बेचारे अकेले थे। पहले उनकी मां उनके साथ रहती थी। छह महीने हुए वह भी मर गयी थी। और अब वे अकेले थे। सारी उम्र उन्होंने ब्याह नहीं किया था। सारी उम्र उन्होंने अकेले काट ली थी। और अब जैसे सूना आंगन उन्हें खाने को दौड़ता था। प्रायः उनके घर आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, संदावहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियों पर चांदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चांदी वाली
हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड लंदन-बर्लिन का उत्पादन
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहां मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD., 12A Gunbow Street, P. B. No. 396, Bombay-400001

दुनिया का कोना-कोना, घूमे करोना

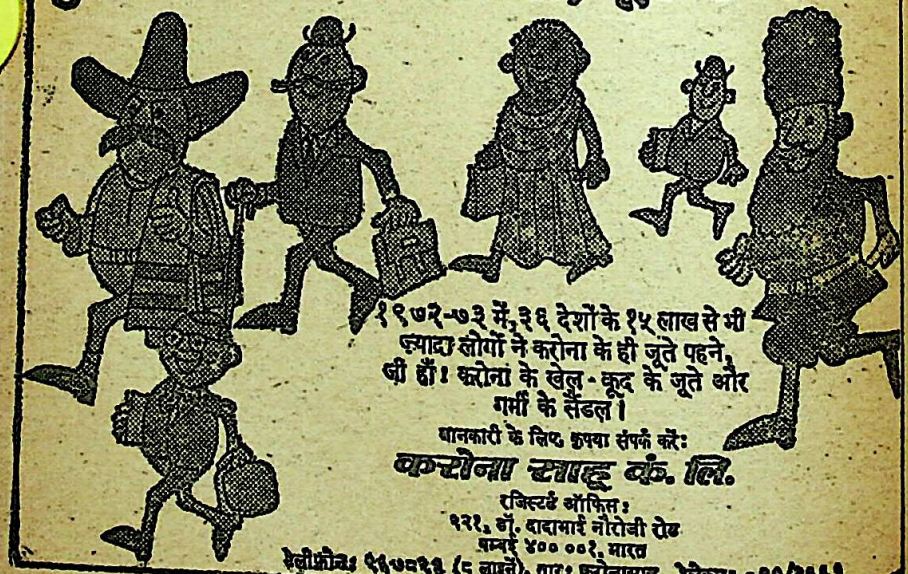

१९७२-७३ में, ३६ देशों के १५ लाख से भी ज़्यादा लोगों ने करोना के ही जूते पहने, जी हाँ! करोना के खेल-कूद के जूते और गर्मी के सैंडल।

जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

करोना साहू कं. लि.

रजिस्टर्ड ऑफिस:
१२१, डॉ. दादाभाई नौरोजी रोड
बम्बई ४०० ००१, भारत
टेलीफोन: ९१७२१ (८ लाइनें), तार: करोनासाहू, टेलेक्स: ०११/२११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते। अम्मी उनकी खातिर भी कितना करती थी। स्कूल-कालेज में वे इकट्ठे पढ़े थे। फिर वे डाक्टरी पढ़ने के लिए चले गये और अम्मी का एक-दो साल के बाद ब्याह हो गया। कई मामलों में उनकी साझेदारी थी। घंटों बैठे पिछले दिनों की बातें करते रहते।

उस दिन तो जैसे शांता के पांव-तले से जमीन खिसक गयी हो। हल्का-हल्का अंधेरा-सा हो रहा था। शांता अपने कमरे में से बाहर बरामदे में आयी, तो उसे लगा कि जैसे सामने लान के कोने में चमेली की बेल के नीचे डाक्टर अंकल और अम्मी एक-दूसरे को बांहों में जकड़े, प्यार कर रहे हों। लेकिन अगले ही क्षण खाने के कमरे की बत्ती जली और शांता पानी-पानी हो गयी। अम्मी तो अंदर कोठी में थी। मेज पर बरतन लगा रही थी। चमेली-तले डाक्टर अंकल जरूर थे। बांहें उठा-उठाकर कलियां तोड़ रहे थे। चमेली की बेलें उन पर झुकी हुई थीं। शांता की अम्मी तो अंदर थी। खुले बाल। शाम को उन्होंने केश धोये थे। अभी सूखे नहीं थे। कमर-कमर तक लंबे, रेशम के लच्छे से उनके सुंदर बाल! शायद डाक्टर अंकल खाना खायेंगे, इसलिए खुद बरतन लगा रही थी। जब डाक्टर अंकल शाम को आते, जरूर उन्हें खाना खिलाकर भेजती। एक आदमी के लिए वे घर जाकर क्या खाना बनवायेंगे। और फिर अकेले बैठकर खाना खाना! अम्मी कहती—'मैं तो भूखी रह लूं, लेकिन अकेले मुझसे खाया नहीं जाता। जब बच्चे स्कूल-कालेज होते हैं, बाबूजी दफ्तर, तो मैं इधर-उधर मुंह मारकर गुजारा कर लेती हूं। अकेली खाना खाने बैठूं तो कौर मेरे गले में अटक जाता है।'

'खाना खाते हुए आप सोचने लगती हैं।' शांता कहती—'अम्मी, मैं कहती हूं आप इतना सोचा न करें।'

'कोई सोचे कैसे नहीं?' डाक्टर अंकल कहते—'मैं तो इंजेक्शन लगाते हुए, मरीज के सूई चुभोकर सोचने लग जाता हूं।'

'तौबा! तौबा! किसी की बांह सूई में पिरोकर आप सोचने लगते हैं?' शांता के पसीना छूटने लगा। मैं तो कभी इस आदमी से टीका न लगवाऊं, वह अपने आप से कह रही थी। और उसे मनोविज्ञान की किताब में पढ़ा किसी डाक्टर का वह केस याद आने लगा। टीका लगाते हुए अक्सर वह सूई को बीमार के बाजू में तोड़ देता था; और हर बार आपरेशन करके सूई को निकालना पड़ता। उस डाक्टर को अपना इलाज करवाने के लिए मनोविश्लेषक के पास जाना पड़ा। मनोविश्लेषक ने निदान किया कि डाक्टर को ब्याह कर लेना चाहिये। जब तक उसका ब्याह नहीं होगा, उसकी सूई रोगी की बांह में टूटती रहेगी।

और डाक्टर अंकल कई दिनों से अम्मी को टीके लगा रहे थे। कभी एक दिन छोड़कर, कभी दो दिन छोड़कर—कभी किसी चीज के टीके, कभी किसी चीज के।

शांता को यों लगा, जैसे उसे चक्कर आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे हों। जहां खड़ी थी, वहीं की वहीं वह कुर्सी पर ढेर हो गयी।.....अंधेरा, अंधेरा। उसके सामने जैसे अंधेरे की दीवारें खड़ी हो रही हों। कितनी देर एक अजीब बवंडर में जैसे वह खो गयी हो।

[३]

एक दिन पता नहीं क्या बात हुई, पिताजी अचानक नौकर पर बरसने लगे। गोपाल सामने हक्का-बक्का खड़ा था और पिताजी उसे डांटे जा रहे थे। अत्यंत भोलेपन से जब नौकर ने यह कहने की कोशिश की कि उसका कोई कसूर नहीं, तो क्रोध में आकर पिताजी ने उसे एक चांटा दे मारा। उसके चांटा लगते ही, सामने सोने के कमरे की खिड़की में खड़ी अम्मी के आंसू गालों पर ढुलक आये।

नौकर का कसूर बिलकुल नहीं था। रसोई का नल अम्मी ने स्वयं खोला था। जानबूझकर खोला था। पिताजी कह रहे थे कि गोपाल हमेशा नल खोलकर फिर बंद करना भूल जाता है। सारी रात नल बहता रहता है। तभी तो पिछली बार पानी का बिल इतना ज्यादा आया था। वास्तव में बात यह हुई कि पिछली रात रसोई का नल अम्मी ने खोला था, ताकि बाहर सब्जी की क्यारियों को रात-भर पानी मिलता रहे। खुद ही तो पिताजी ने कहा था—पानी के बिना सब्जियां सूखती जा रही हैं। यह और बात थी कि बीच में नाली टूटी होने के कारण पानी क्यारियों तक नहीं पहुंच पाया था और आंगन में पानी-पानी हो गया था। लेकिन इसमें आफत क्या आ गयी? गर्मी के दिनों में आंगन में अगर कीचड़ हो गया था, तो थोड़ी देर में सूख जायेगा। अम्मी बार-बार सोचती कि बाहर निकलकर कहे कि गोपाल का कोई कसूर नहीं; लेकिन पिताजी जिस तरह खफा हो रहे थे, उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। और फिर पिताजी ने गरीब नौकर के मुंह पर थप्पड़ दे मारा। पांचों की पांचों उंगलियां उसके गाल पर उभर आयीं। गोरे-गोरे लाल-लाल, पहाड़ी नौकर के गाल!

पिताजी सोचते, इसमें अम्मी के रोने की क्या बात है?

अम्मी सोचती, वह रो थोड़े ही रही है। उसकी तो सांस जैसे ऊपर की ऊपर रह गयी हो। और फिर उसके गालों पर आंसू ढुलक आये थे।

सुबह-सुबह ही आज घर में बदमजगी हो गयी थी।

पिताजी तो थप्पड़ मारकर, खफा होकर, सैर को निकल गये; लेकिन पीछे अम्मी की समझ में नहीं आ रहा था कि वह रसोई में कैसे जाये।

बेचारा गोपाल! सुबह से जो काम में लगता तो कहीं रात गये दम लेता। हर वक्त रसोई में सिर दिये रहता। बाकी नौकरों की तरह कोई बुरी आदत नहीं थी उसमें। थोड़ा खाता, थोड़ा सोता। मजाल है घर की कोई चीज इधर-उधर हो जाये! तीन साल उसे इनके यहां आये हुए हो गये थे। पीछे अपने घर नहीं गया था। बाकी नौकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो हर साल अपने गांव चल देते हैं। एक तो महीना-भर मुफ्त का वेतन दो, और फिर नौकर के बिना मुसीबत अलग। बस, सिनेमा का शौकीन था। हफ्ते, दस दिन के बाद सिनेमा देखने जरूर जाता। कभी दोपहर का शो, कभी देर रात का शो, ताकि बीबीजी को कष्ट न हो। सिनेमा देखकर आता, तो अपने आप बीबीजी को पिक्चर की कहानी सुनाने लगता। अपने आप ही बोलता जाता। रसोई में काम कर रही बीबीजी कभी उसकी कहानी की ओर ध्यान देतीं, कभी उनका ध्यान पता नहीं कहां होता!

कभी-कभी गोपाल फिल्मी गाने गाया करता। खास तौर पर उन दिनों, जब साहब दौरे पर होते। दिन को जब बीबीजी घर में अकेली होतीं, गुसलखाने में कपड़े धोते हुए थापी के ताल के साथ वह गाने लगता:

तू कौन-सी बदली में मेरे चांद है आ जा।

अम्मी सोचती, किस चांद को बुलाता है यह? हमेशा यही गाना गाता है। इसका चांद कहां छिपा हुआ है? हर किसी का कोई चांद होता है!

शांता अम्मी से कहती—'यह आपका गोपाल कितना सुंदर गाता है! इसे तो रेडियो में भरती करवा देना चाहिये।'

वही गोपाल मालिक का थप्पड़ खाकर अब फिर रसोई में काम कर रहा था। रात के जूठे बरतन धो रहा था। इनमें वह प्लेट भी होगी, जिसे बाबूजी ने जूठा किया था। नाहक बेचारे को थप्पड़ मारकर, सैर करने चल दिये थे। इस तरह भी कभी किसी की सेहत बनी है? तभी तो उन्हें हमेशा कुछ न कुछ लगा रहता है।

सोचती-सोचती अम्मी कांपने लगी। यह वह क्या सोच रही थी?

और फिर उसके भीतर से जैसे किसी ने विद्रोह किया हो। 'मैं सोचूंगी जो मेरा दिल चाहेगा!' किसी ने पुकारकर कहा। और अम्मी सामने पलंग पर निढाल होकर जैसे ढेर हो गयी।

अम्मी सोच रही थी:

गोपाल का कद बाबूजी के कद से ऊंचा है। हां! ऊंचा है, इसमें छिपाने की क्या बात है? उस दिन हवा से परदे की डंडी परदे-सहित ब्रेकिट से नीचे आ गिरी थी। बाबूजी एड़ियां उठाकर उसे फिर टांगने की कोशिश करते रहे; उनका हाथ नहीं पहुंच रहा था। सामने खड़े देख रहे गोपाल ने परदे की डंडी उनके हाथ से ले ली और बिना एड़ियां उठाये ही परदा टांग दिया। उसने खुद देखा था। और हैरान रह गयी।

वह इतने दिन तक बाबूजी को कद नौकर से ऊंचा समझती रही थी। हर वक्त नीचे बैठे, बरतन साफ कर रहे, चूल्हे में सिर दिये खाना तैयार कर रहे, हर आवाज पर कभी किसी कमरे की ओर और कभी किसी कमरे की ओर दौड़ रहे गोपाल का क़द जितना छोटा उसे लगता था, उतना छोटा बिलकुल नहीं था।

इसका मतलब यह हुआ कि गोपाल इस घर में सबसे ऊंचा है! गोपाल का घर वालों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...देखिए तो सही, सफलता के लिए कैसे कपड़े पहनता है!

MAFATLAL GROUP

सचमुच, मफतलाल ग्रुप के कपड़े अनुपम होते हैं!

AIYARS-M.161 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से क्या मुकाबला !

अम्मी पानी-पानी हो गयी।

लेकिन नहीं, पल-भर में वह फिर सोचने लगी।

गोपाल का रंग गोरा है। गोरा और लाल ! बाबूजी का रंग मटमैला है। मटमैला क्यों, सांवला। सांवला क्यों, काला। उस रंग को काला कहना चाहिये। गोपाल का रंग गोरा है, इसलिए कि वह पुंछ का रहने वाला है। कश्मीर के झरझर बहते झरनों का उसने पानी पिया है। कश्मीर के फलों पर वह पला है। बेरों की तरह वहां लोग सेव खाते हैं। और सैकड़ों मील पैदल चलकर नीचे मैदानों में रोजगार के लिए मारे-मारे फिरते हैं। पुंछ के लोग, कांगड़ा के लोग, अल्मोड़ा के लोग। ये पहाड़िये सच्चे मोतियों जैसे नीचे आते हैं, धुआंखे हुए, खस्ता हाल, बीमारियां लेकर अपने देस लौटते हैं। अम्मी को लगा, जैसे रसोई में गोपाल खांस रहा हो। इसका भी वही हाल होगा। और वह पसीना-पसीना हो गयी।

लेकिन नहीं, ये तो बाबूजी थे। बाबूजी खांस रहे थे। सैर से लौटे। मुंह में दातौन लिये, आंगन में खड़े गला साफ कर रहे थे।

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई .....' साथ वाली कोठी में रेडियो से आवाज आ रही थी। कोई मीरा का भजन गा रहा था। मीरा का पद जब कोई मर्द गाता, तो अम्मी को हमेशा अजीब लगता। मर्द क्या और औरत क्या ? जीवात्मा, सारी सृष्टि स्त्री है; पुरुष केवल एक परमात्मा है। उसके आलिंगन के लिए तड़प रही, उसमें खो जाने के लिए विह्वल है सारी सृष्टि।

उस सुबह अपने घरवाले के लिए नाश्ता तैयार करवाते, उसके लिए मेज पर नाश्ता लगवाते, नाश्ते के बाद सामने कार्नेस पर रखी शीशी में से विटामिन-बी कम्पलेक्स की गोलियां निकालते, बार-बार अम्मी के ओंठों पर 'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई' तैरने लगता।

उधर बाबूजी नाश्ते से निबटे, इधर नौकर ने उनकी मोटर साफ कर दी थी। और वे मोटर में बैठकर दफ्तर की ओर चल दिये। मोटर कोठी में से निकली ही थी कि अम्मी ने फिर गुनगुनाना शुरू किया—मेरे तो गिरिधर गोपाल.....

'गोपाल !'

'गोपाल !' कोठी के अंदर शशि नौकर को आवाज दे रही थी।

और अम्मी के मुंह पर जैसे किसी ने चांटा मार दिया हो। कितनी ही देर जहां थी, वहीं खड़ी रही। जैसे हिमवत् हो गयी हो। जैसे संगमरमर का बुत !

'अम्मी ! आप कैसे खड़ी हैं ?' कुछ देर बाद शांता ने आकर उससे पूछा—'क्या बाबूजी लौटकर आ रहे हैं ?'

'नहीं तो।' अम्मी को जैसे सपने में से झंझोड़कर उठा दिया गया हो—'नहीं तो, वे क्यों लौटकर आयेंगे ? वे तो गये।' और वह बेटी के साथ अंदर कोठी में चली गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्मी सोचती, अभी उसका नौकर आयेगा और कहेगा—'बीबी, मैं जा रहा हूं। इतने साल मैंने आपकी नौकरी की है, अब मैं और नौकरी नहीं करूंगा। आदमी नौकरी करता है आबरू के साथ जीने के लिए। पेट भरने के तो और भी कई उपाय हैं। पेट तो जंगल में पैदा होने वाले पेड़-पौधे भी भर सकते हैं। सड़क पर बैठा भिखारी भी पेट भरता है, कोठे पर बैठी वेश्या भी पेट भरती है।'

लेकिन वह तो काम कर रहा था, जैसे हर रोज जी-जान लगाकर करता था।

अम्मी ने सोचा, कुछ देर बाद आकर वह उनसे शिकायत करेगा।

सारी सुबह गुजर गयी, दोपहर गुजर गयी। शाम को डिपो से दूध लेकर जब वह जल्दी-जल्दी लौटा और चाय बनाने लगा, तो अम्मी रसोई में गयी और उसने चाय के बरतन ट्रे में इकट्ठे करने शुरू किये। इसके बाद जो काम गोपाल को करना होता, उससे पहले उस काम को वह खुद करना शुरू कर देती। चाय तैयार करके अंदर कमरे में छोड़ आयी। लौटती बार नौकर के लिए गिलास में चाय भर लायी। जब वह चाय पी रहा था, अम्मी ने उड़द की धुली हुई दाल चूल्हे पर चढ़ा दी। फिर सब्जी काटने लगी। गोपाल हाथ पर हाथ धरे, पटड़े पर बैठा बीबीजी की ओर देख रहा था। ऊंचे-लंबे बुत की ओर, सुंदर पहरावे की ओर, सुगढ़पन की ओर। किस सफाई से उसका हाथ चलता था। एकटक देखे जा रहा था—उसके खुले बालों की ओर, जैसे रेशम के लच्छे हों। इतने में बाबूजी उधर आये, एक नजर रसोई में फेंककर, ठक-ठक अपने कमरे में चले गये।

आज पहली बार शायद दफ्तर से लौटे बाबूजी का स्वागत करने के लिए अम्मी प्रतीक्षा नहीं कर रही थी। बूटों के फीते खोलने में, मोजे उतारने में, उनकी मदद नहीं कर रही थी। कपड़े बदलकर, गुसलखाने में से हाथ-मुंह धोकर, अकेले इंतजार करते हुए बाबूजी ने आखिर हारकर आवाज दी—'शशि! शांता! तुम्हारी मां कहां डूब गयी हैं?'

[४]

अगरबत्ती का धुआं अपने सामने से हटाते हुए अम्मी ने शशि को आवाज दी—'बेटी! रशीद साहब के यहां साग की एक कटोरी पहले दे आओ। उनके खाने का समय हो गया है।'

पूजा करते हुए अम्मी को ध्यान आया कि रशीद साहब को खट्टा साग बहुत अच्छा लगता है, और उस दिन इनके यहां वही साग बना था। अम्मी ने खुद बनाया था, खुद पकाया था। इससे पहले कि रशीद साहब खाना खा चुकें, अम्मी उनके यहां साग पहुंचाना चाहती थी।

शशि को समझाकर अम्मी फिर पूजा में लीन हो गयी। पाठ करेगी, हाथ जोड़ेगी, माथा रगड़ेगी। फिर टीका लगायेगी। जिस दिन वह अपने माथे पर टीका लगाती, शांता से मां के चेहरे की ओर देखा न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता। गोरे-गोरे मुखड़े पर सिंदूर का टीका ..... शांता को अपनी जवानी, अपना रूप फीका-फीका-सा लगने लगता।

पड़ोसियों के घर खट्टे साग की कटोरी ले जाते हुए शशि ने उनकी कोठी के गेट में कदम ही रखा था कि उसने देखा—सामने रशीद अंकल, एक हाथ में मुर्गी पकड़े, दूसरे हाथ में छुरी लिये, मोटर गैरेज की ओर जा रहे थे। मुर्गी को हलाल करने के लिए जा रहे होंगे। शशि ने अनुमान लगाया।

'क्या लायी हो बेटी ?' रशीद अंकल ने दूर से शशि से पूछा।

'अम्मी ने खट्टा साग आपके लिए भेजा है,' और रशीद अंकल सुनकर खिल-से गये।

साग रशीद आंटी को बावर्चीखाने में पकड़वाकर शशि लौट आयी। रशीद आंटी जल्दी में थीं। खाने को देर हो रही थी। बेगम रशीद खाना अपने हाथ से पकाती थीं। मेज पर खाना भेजने से पहले बावर्चीखाने में हर पकवान को अपने हाथ से परोसती थीं।

बहुत देर नहीं हुई कि रशीद साहब मुर्गी को हलाल करके लौटे। खाने की मेज पर पड़ोसन का दिया हुआ साग नहीं था। और सब कुछ था, लेकिन खट्टा साग जो उन्हें बहुत पसंद था, दस्तरखान पर नहीं लगाया गया था।

उन्होंने सोचा- कि शायद बेगम भूल गयी हैं। बातों-बातों में उन्होंने साग का जिक्र किया—'कई दिन हो गये हैं, हमारे यहां खट्टा साग नहीं बना।'

तो भी उनकी बीवी टस-से-मस नहीं हुई।

'जैसा साग हमारे पड़ोसियों के यहां बनता है, हमारे यहां कभी नहीं पका।' कुछ देर के बाद रशीद साहब ने फिर इशारा किया। लेकिन बेगम चुप्पी साधे रहीं।

बेचारी बेगम रशीद को नहीं पता था कि रशीद साहब शशि को रास्ते में मिले थे और साग की कटोरी उन्होंने अंदर ले जाते हुए उसे खुद देखा था। रशीद साहब का जी तो चाहता था कि मुर्गी को वैसा का वैसा छोड़कर, साग की कटोरी सुड़क जायें। लेकिन वे रुक गये थे। पड़ोसियों की जवान-जवान लड़की क्या सोचेगी।

खाना खा चुकने के बाद हाथ धोते हुए रशीद साहब ने अपनी बीवी की ओर कहर-भरी नज़रों से देखा और कहा—'बेगम! तू बड़ी कमज़ात है।'

बेगम रशीद ने कोई जवाब नहीं दिया।

और रशीद साहब ठक-ठक क़दम मोटर में बैठकर दफ्तर चले गये।

दफ्तर में काम करते हुए, बार-बार उन्हें खयाल आता कि उनकी बीवी ने ऐसा क्यों किया था ? इसलिए कि उसे शक था कि उनकी पड़ोसिन उन पर डोरे डाल रही है, या फिर वे खुद ही उस पर लट्टू हो गये हैं।

उस शाम दफ्तर से लौट, रशीद साहब नहा-धोकर पड़ोसियों के यहां चले गये। कितनी देर खट्टे साग के लिए धन्यवाद देते रहे। बैठे-बैठे फिर ताश की बाजी लग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये !

चाँदनी

साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

'औरमो' छाप अमोनिया कागज़

(पैरा - डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर छपाई
- बरतने और रखने में टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परिणाम
- कम खर्च और सस्ता.

स्टैंडर्ड साइज के रोल और शीटस हर प्रकार की मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की स्पीड्स में मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव के लिये पोलीथीन के ट्यूब और रेपरों में पेक किया हुआ होता है. यह देर तक खराब न होने वाला अच्छी क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी किया हुआ है, क्योंकि औरमो का बेस पेपर भी ओरियंट पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड
ब्रजराज नगर, उड़ीसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी। बेगम रशीद को कई बार संदेश भेजा गया, शशि खुद भी गयी, मगर वे नहीं आयीं। घर के काम-धंधे में वे व्यस्त थीं। ताश खेलते-खेलते रात हो गयी। उस रात रशीद साहब ने खाना भी पड़ोसियों के यहां खाया। पहले वे जीत रहे थे, फिर हारने लगे। ताश में हारे हुओं का यों खेल बीच में छोड़कर जाना उचित नहीं समझा जाता। और फिर पड़ोसिन जीत रही थी। बार-बार कहते—आज पड़ोसिन जीत रही है। आज तो चाहे कपड़े उतरवाकर जाना पड़े, कोई चिंता नहीं।

और इस तरह कितनी रात बीत गयी।

पहले शशि को नींद आयी। वह उठकर अपने सोने के कमरे में चली गयी। फिर शांता ऊंघने लगी। अगली बार उसने भी ताश के पत्ते नहीं लिये और आंखें मलती रशीद अंकल को शब-बखैर कहकर चल दी। शांता के बाबूजी तो कब के सो चुके थे। उन्होंने कभी ताश नहीं खेली। कौन बेकार समय बरबाद करे! जितनी देर घर होते, अगर उन्हें करने को कुछ और न होता, तो सो जाते। छुट्टी के दिन, सुबह-शाम सोये रहते।

अम्मी, का क्या था! अम्मी को कोई ताश खेलने वाला मिल जाये तो वह दिन-रात ताश खेलती रहे—न थके न हारे। न खाने की सुध, न आराम की फिक्र। मस्त, ताश के पत्ते बांटती। उन्हें मिलाती और बाजी पर बाजी जीतती जाती, हारती जाती। कोई समय था, जब अम्मी के घर हर रोज ताश की बाजी जमा करती थी। कालोनी के अफसर, बड़े तीसमारखां बन-बनकर आते, लौटते समय उनकी जेबें खाली होतीं। हर कोई कहता—'ताश में अक्ल भी चाहिये; लेकिन शांता की अम्मी के पास पत्ते ही बढ़िया आते हैं, कोई करे तो क्या?'

और वह अपनी बेटियों को समझाती रहती—यह बड़ा मनहूस खेल है, इसकी इल्लत कभी न पाल बैठना। लेकिन लड़कियां कब रुकने वाली थीं। और कोई न होता तो आपस में ही पत्ते बांटकर बैठ जातीं। तो भी अम्मी का मुकाबला नहीं कर सकती थीं। अम्मी तो जैसे ताश की दीवानी हो। एक-एक पत्ता ताश का जैसे उसका पहचाना हुआ हो। छूकर ही जैसे उसे पता चल जाता, कौन-सा पत्ता है? आंख के इशारे से जैसे जिस पत्ते को चाहती, अपनी ओर खींच लेती।

और फिर एक दिन बाबूजी नाराज हुए तो उसने ताश खेलना बंद कर दिया। लोग मिन्नतें करते रहते, मगर वह ताश को हाथ न लगाती। कई वर्ष बीत गये। आजकल फिर कभी-कभार खेल लेती थी। घर वालों के साथ या किसी निकट संबंधी के संग।

आज रशीद साहब के साथ खेल रही थी। यों ही साग के लिए धन्यवाद देने आये और बातें करने बैठ गये। बातों-बातों में ताश की बाजी लग गयी। खाना भी ताश की मेज पर हो गया। और अभी बाजी चल रही थी। टाऊनहाल का घड़ियाल बारह बजा रहा था। लड़कियां सो चुकी थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

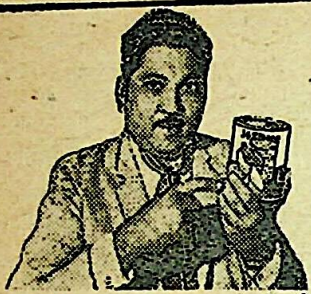

केलामीक्स

आपके प्यारे नन्हे-मुन्नों के लिये
नई प्राकृतिक हैल्थ टानिक

डाक्टर जिस की सिफारिश करते हैं।
अधिकांश टानिक सिन्थैटिक पदार्थों से बने होते हैं। लेकिन 'केलामीक्स' चुने पक्के, ताज़े, मज़ेदार केलों से तैयार किया जाता है। शरीर विकासक प्रोटीन्स, रोगावरोधी विटामिन्स और शक्तिवर्धक कार्बोहाईड्रेटस् के अतिरिक्त यह कैलशियम, फ़ासफ़ोरस, लोहतत्त्व, फ़ैट, रिबोफ़्लेविन, नियासिनेमाईड से समृद्ध है। बच्चों को भाने वाली, बड़ों को मज़ा देने वाली, अति स्वादिष्ट, सुगम पाच्य और विविध उपयोगी 'केलामीक्स' ठन्डे या गरम दूध; आईसक्रीम, सैन्डविचे और मिठाई इत्यादि के साथ सेवन किया जा सकता है।

'केलामिक्स
जैसी नैसर्गिकता,
मधुरता और विविध
उपयोगिता भारत में आपको
किसी टानिक में कहां मिलेगी?

केलामीक्स शक्ति और स्वास्थ्य का कुदरती खजाना

उत्पादक :-
गेडन फुड प्रा. लि.
सूरत-२ (भारत)
वितरक :- परान लिमिटेड
उद्योग मन्दिर नं. १, ७-सी, पीताम्बर लेन,
माहीम, बम्बई ४००. ०१६.

तीन महीने
से बड़ी उमर
के बच्चों को
'केलामिक्स'
दीजिये और

उन्हें शक्ति,
स्फूर्ति, चुस्ती
से उछलता
कूदता
रखिये।

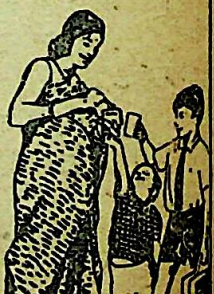

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रशीद साहब को अचानक ध्यान आया कि उन्होंने तो सुबह मुर्गी हलाल की थी। उनकी बेगम ने मुर्गी भूनी होगी और उनकी हंसी छूट गयी।

ताश के पत्ते बांटते हुए अम्मी ने उनकी ओर देखा। यह आदमी हारता ही जा रहा था। कोई हाथ तो जीते भला। पहले कैसे जीता था ?

लोग कहते कि वह पहले जानबूझकर जिताती थी, ताकि फिर मूंड सके। उसके सामने नोटों का ढेर लगा हुआ था और अब रशीद साहब आइ ओ यू की पर्चियां लिख-लिखकर उसे दे रहे थे। हर बाजी पर उन्हें नयी चिट भरनी पड़ती।

वह बार-बार उन्हें याद करवा रही थी—'रशीद भाई ! ताश खेलते हुए मैं तो कभी थकती नहीं। आपको नींद आने लगे, तो मेहरबानी करके बता दीजियेगा।'

और फिर उन्हें लगा, जैसे बाहर बरामदे में कोई हो। किसी के कदमों की आहट थी। पहले रशीद साहब को सुनाई दी, फिर अम्मी ने भी सुना।

इस समय कौन हो सकता था ? आगे-पीछे सब लोग सो चुके थे। सामने सड़क पर कभी-कभी कोई मोटर गुजर जाती। सिनेमा देखकर लौटे, या होटल-क्लबों से फारिग हुए शौकीन लोग। ठंड कितनी थी बाहर ! सामने अंगीठी में वह एक और लकड़ी झोंकने लगी, तो रशीद साहब ने कहा—'बस मीरा बहन ! अब बंद करते हैं, रात ज्यादा हो गयी है।'

'बस एक बाजी और,' उसने कहा और पत्ते बाटन लगी। और फिर एक के बाद एक, कई बाजियां और लग गयीं।

ताश के पत्तों की बहशत, सामने धधक रही अंगीठी की हल्की-हल्की आंच, जाड़े की मस्त उनींदी रात। शांता की अम्मी के चेहरे पर अपूर्व सौंदर्य छलक रहा था। पिछले कई क्षणों से उसके दुपट्टे का पल्लू सिर से खिसककर गर्दन पर ढेरी हुआ पड़ा था। पशमीने के शाल को वह बार-बार अपने कंधों पर कसकर लपेटती, पर सिर को ढांकने का जैसे उसे ध्यान ही न आ रहा हो। शाल को जितना वह अपने ऊपर लपेटती, उतना ही उसका जोबन जैसे छलक-छलक पड़ता।

एक से दूसरी बार, रशीद साहब की नजर जैसे उचककर उस पर पड़ी। और अपने हाथ के पत्तों को वैसे का वैसा फेंककर वे उठ खड़े हुए—'बस, मीरा बहन ! यों हारते-हारते पता नहीं क्या कुछ गंवा बैठूंगा।' और उठकर चले गये।

पड़ोसी के जाने के बाद वह अपने कमरे में गयी। बाबूजी गहरी नींद में सो रहे थे। सामने खिड़की खुली रह गयी थी। बाहर ठंड कितनी थी ! वह आगे बढ़कर खिड़की बंद करने लगी। और शांता की अम्मी की ऊपर की सांस ऊपर, और नीचे की सांस नीचे रह गयी। यह वह क्या देख रही थी ? रात घुप अंधेरी थी; किंतु सड़क पर बिजली के खंभे की रोशनी जामुन के पत्तों से छन-छनकर उनके बरामदे में पड़ रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि अवध शुगर मिल्स लि.

हरगांव

जि. सीतापुर, उ. प्र.

शुद्ध दानेदार चीनी और
उत्तम स्पिरिटों के निर्माता

* * *

बरार आयल इंडस्ट्रीज

वनसदा पेठ

अकोला (महाराष्ट्र)

वनसदा ब्रांड वनस्पति
के निर्माता

* * *

हरगांव आइल प्रॉडक्ट्स

सीतापुर, उ. प्र.

मूंगफली के तेल
साल्वेंट एक्स्ट्रैक्टेड आइल
और तेल विमुक्त खली
के निर्माता

दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चरर्स लि.

१०१ सायन रोड, सायन,
बंबई—४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स;
कटर्स; टैप्स; टूल बिट्स
और माइक्रोमीटर्स

* डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स

* डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

I T

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रशीद साहब अपनी दोनों बांहों में, तख्ते की तरह अपनी बेगम को उठाये ले जा रहे थे। यों लगता था, जैसे बेगम रशीद सारी रात बाहर बरामदे की सीढ़ियों पर आकर बैठी रही थीं। बैठी-बैठी जाड़े में अकड़ गयी थीं।

यह क्या हो गया था ? वैसी की वैसी, खिड़की की सलाखों को थामे वह अचल खड़ी रह गयी। रशीद साहब अपने घर पहुंचे। अपने बरामदे में, फिर अपने कमरे में गायब हो गये। उनकी बांहों में बेगम रशीद थीं—जैसे कोई लाश को उठाये ले जा रहा हो।

यह हो क्या गया था ?

अम्मी की आंखों के सामने अंधेरे के चक्कर घूमने लगे। कुछ देर, और अंधेरे की एक दीवार जैसे उनके सामने आकर खड़ी हो गयी। घुप अंधेरा। और उसका दम घुटने लगा।

[५]

पिछले रोज से बड़े दिनों की छुट्टियां शुरू हो गयी थीं। शांता की मम्मी में जैसे जान न हो। सारी रात उसकी आंखों में कटी थी। उसे लगता था, जैसे हल्का-हल्का बुखार हो। और वह पलंग से न उठ सकी। कोई बीमारी नहीं थी, फिर भी वह बीमार थी। कभी शांता उसकी गोरी कलाइयों को हाथ में ले-लेकर देखती, कभी शशि उसकी कोमल बांहों को अपनी उंगलियों से छूती। कोई दुःख नहीं था, लेकिन अम्मी दुःखी थी। उसका अंग-अंग पीड़ित था। एक रात में कितनी कमजोर हो गयी थी। अच्छी भली ताश खेलते हुए उसे छोड़कर वे सोयी थीं। पहले शशि और फिर शांता। रात को कैसे खुश-खुश बहक रही थी और अब अम्मी का क्या हाल हो रहा था ?. जैसे पीली जर्द हो गयी हो। जैसे उनके शरीर का सारा खून किसी ने चूस लिया हो।

सुबह से अम्मी ने कुछ नहीं खाया। पानी का घूंट तक उसके कंठ से नीचे नहीं उतरा था। बाबूजी दफ्तर चले गये थे। औरों को चाहे छुट्टियां हों, पर उन्होंने कभी छुट्टी नहीं ली थी। बस एक इतवार को छुट्टी मनाते थे। बाकी सारा सप्ताह नियमपूर्वक वे काम पर चले जाते। हमेशा यही कहते—आदमी को हफ्ते में एक छुट्टी आराम के लिए काफी होती है।

दोपहर के खाने का वक्त हो गया। शशि मिन्नतें करती रही। शांता ने भी बार-बार कहा। लेकिन अम्मी का किसी चीज की ओर देखने को जी नहीं चाहा।

उदास-उदास, रुआंसी-रुआंसी, चिंताओं में डूबी। जैसे हाथ लगते ही फूट पड़ेगी, जैसे रोने का बहाना ढूंढ़ रही हो। जैसे किसी का कुछ खो गया हो। खाली-खाली आंखें शून्य में देखती जा रही थीं। न किसी की मां, न किसी की पत्नी। न किसी घर की मालकिन। न पूजा का होश, न पाठ का। सुबह का अखबार सामने अनछुआ पड़ा था। अभी-अभी डाकिया बेटे की चिट्ठी दे गया था। पहले एक बहन ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ी, फिर दूसरी ने। लिफाफा अम्मी के सिरहाने पड़ा था, लेकिन उसने उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा था। कल शाम अम्मी ने कितना सुंदर जूड़ा बनाया था। अब उसके बाल रूखे-रूखे, उलझे-उलझे, अनसंवारे-अनसंवारे लगर हे थे।

शशि से अम्मी की ओर देखा न जाता। अपने कमरे में वह औंधी लेटी सुबुक-सुबुक रो रही थी। 'इसमें रोने की क्या बात है?' शांता ने आकर शशि को समझाया। लेकिन शांता की अपनी आंखों में आंसू छलक रहे थे। फिर दोनों बहनें फूट पड़ीं। एक-दूसरे के गले लगकर रोने लगीं।

'अम्मी को क्या हो गया?' बार-बार शशि अपनी बहन शांता से पूछती। और शांता अर्थ-भरी नजरों से बार-बार उसकी ओर देखती। कहने-सुनने की कोई बात हो तो कोई करे।

और शांता को अपनी मोहब्बत के दिन याद आने लगे। एक दिन वह सामने वाले खंभे से लगकर रोयी थी, जिस खंभे के साथ खड़ा उसका प्रेमी आखिरी बार उसे मिला था। अम्मी ने उसका इस घर में आना बंद कर दिया था। न उसे इस घर में आने दिया जाता, न शांता को इजाजत थी कि वह उसे कहीं मिले। और शांता की शराफत, अपनी मां के प्रति उसकी श्रद्धा, उसने अपने मन को समझा लिया। एक बार वह उसके कालेज में मिलने आया था। वह ऐसे उससे मिली, जैसे जान-पहचान ही न हो। 'आपको यों किसी लड़की से मिलने नहीं आना चाहिये', ये शब्द शांता के ओंठ से निकले, जैसे बर्फ के झरने में से बर्फ के डले सरक-सरक कर गिर रहे हों। और उलटे कदम वह लौट आया था। और फिर उसने शांता से मिलने की कभी कोशिश नहीं की।

एक बार सड़क पर उससे भेंट हो गयी। वह ऐसा गुजरा, जैसे कोई अजनबी हो। जाड़े की बर्फीली हवा का रूखा झोंका। उस दिन शाम को घर लौटी शांता बेजान, पलंग पर औंधी जा गिरी। उससे न कुछ खाया जाता, न पिया जाता। अगली सुबह हल्का-हल्का बुखार हो गया। उससे बिस्तर में से उठा न जाता। 'निक्के निक्के दुःख माहिया, बन जांदियां मर्जा नीं।' लोकगीत के बोल बार-बार उसके कानों में थरथराने लगते। और शांता कांप-कांप जाती। यह तो अच्छा हुआ, कुछ दिन के बाद अम्मी ने उसके लिए लड़का ढूंढ़ लिया था। चट-मंगनी, पट ब्याह। शांता सब कुछ भूल-भाल गयी। अब तो उसे कभी ध्यान भी नहीं आता था उन दिनों का।

शशि आजकल जब अम्मी की ओर देखती, तो उसके जी को कुछ-कुछ होने लगता। कभी अम्मी की ओर झांक रही कोई आंखें उसे याद आने लगतीं। कभी कोई बांहें उसके लिए ललक रही महसूस होतीं। कभी कोई ओंठ उसे कुछ कहने के लिए उतावले-से लगते। यों सोचते हुए शशि को कभी अपना-आप मैला-मैला लगता। यों सोचते हुए शशि कभी खिल-सी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती। यों सोचते हुए उसके पसीने छूटने लगते। 'हाय शशि! तुम्हारी अम्मी कितनी खूबसूरत है।' उसकी सहेलियां जो उससे मिलने घर पर आतीं, हमेशा यही कहतीं, 'तुम्हारे लिए लड़का ढूंढ़ने में कोई मुश्किल नहीं होगी।' एक सहेली उसे छेड़ा करती—'तुम्हारे लिए लड़का ढूंढ़ने में कोई मुश्किल नहीं होगी। जिसकी मां इतनी सुंदर हो उस लड़की के लिए लड़का ढूंढ़ने में दिक्कत नहीं होती।'

और शांता का घरवाला प्रायः उससे बहस किया करता था। जवानी के चार दिन तो जवानी के नशे में कट जाते हैं, औरत के हुस्न की तो मर्द को तब जरूरत होती है, जब जवानी ढल जाती है। मर्द-औरत का अधिक समय तो औरत की इस अवस्था में कटता है। बच्चे बड़े होकर ब्याह करके अपने-अपने घर बसा लेते हैं।

शशि को एक पड़ोसिन आंटी की वह बात हमेशा याद आने लगती। एक दिन शाम को बाहर लान में बैठी वह चाय पी रही थी। किसी काम से जब अम्मी अंदर गयी तो पड़ोसिन ने शशि से कहा—'कमबख्त ने तीन बच्चे जनकर भी अपने को वैसे का वैसा संभालकर रखा हुआ है!' और जब शशि ने सामने से कहा—'कहां आंटी! अम्मी के ढेर-सारे बाल सफेद हो गये हैं,' तो पड़ोसिन ने अपने ओंठों में मीठा शहद भरकर कहा था—'लड़की, तुझे क्या पता, तेरी अम्मी में क्या जादू है! इसके डसे अभी तक पानी नहीं मांगते।' पता नहीं, अभी वे और क्या कुछ कह जातीं! लेकिन सामने पानदान उठाये अम्मी लौट रही थी। और उस शाम शशि खुद बार-बार अम्मी की ओर देखने लगती। पान लगाती, पान खिलाती, पान खाती उसकी अम्मी सचमुच बड़ी सुंदर थी। सौंदर्य शरीर का और सौंदर्य सुघड़ता का, इन दो सुंदरताओं का एक अत्यंत सुंदर मेल!

यह तीसरी बार नौकर ने शशि से आकर कहा था—'बीबीजी ने सुबह से कुछ नहीं खाया।' कितना चिंतातुर लग रहा था!

'इसे क्या मुसीबत आयी हुई है?' शशि ने चिढ़कर शांता से कहा।

'अम्मी का चहेता है,' शांता ने सामने से जवाब दिया।

नौकर सुबह से कई बार अम्मी के कमरे में हो आया था। दरवाजे पर कुछ देर खड़ा होकर लौट आता। खामोश नजरों से उसकी ओर देख लेता, और बस। मुंह से कुछ न बोलता, पर उसके अनबोले शब्द उसके चेहरे की परेशानी में स्पष्ट दिखाई दे रहे होते।

बाहर बरामदे में टेलिफोन की घंटी बज रही थी। न शांता सुनने के लिए उठी, न शशि। नौकर रसोई में काम कर रहा था। रसोई का नल खुला था, इसलिए शायद घंटी उसे सुनाई नहीं दे रही थी। कुछ देर घंटी बजती रही और फिर शांता और शशि दोनों नौकर पर दहाड़ीं—'तुम्हें टेलिफोन की घंटी सुनाई नहीं देती?' नौकर को तो इनकी डांट भी सुनाई नहीं दी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अपने ध्यान में काम कर रहा था।

'इसके तो आज होश ठिकाने नहीं।' फिर शांता उड़ती हुए उठी और टेलिफोन सुनने लगी।

वही बात, शांता ने चोंगा उठाकर हैलो कहा कि उधर से टेलिफोन बंद कर दिया गया। सुबह से तीसरी बार यह हो चुका था। कोई कमबख्त टेलिफोन मिलाता था, इधर से आवाज सुनकर बंद कर देता था। यदि नंबर गलत होता, तो इतना तो कह देता—भाई माफ करना, गलत नंबर मिल गया है।

और फिर रशीद साहब और बेगम रशीद आ गये। किसी के यहां खाने पर जा रहे थे कि उन्होंने सुना कि पड़ोसिन की तबीयत ठीक नहीं है। मोटर रोककर उन्होंने सोचा कि खड़े-खड़े हाल पूछते जायें। रात को भली-चंगी थी। आधी रात तक ताश खेलती रही थी। रशीद साहब और बेगम रशीद कैसे खुश-खुश चहकते हुए उसके कमरे में आ घुसे थे। बेगम रशीद सुबह-सवेरे बाजार से बाल सेट करवाकर आयी थीं; खुशबुओं से लदी हुई, अम्मी के पलंग पर आ बैठीं। रशीद साहब खड़े थे। क्षण-भर के लिए तो आये थे। शांता बार-बार कुर्सी की ओर इशारा करती—'रशीद अंकल, आप बैठ जाइये।' लेकिन वे वैसे के वैसे खड़े थे। खड़े-खड़े अनुमान लगा रहे थे कि पड़ोसिन को क्या हो गया है। और फिर उन्हें विश्वास हो गया कि गर्म-सर्द हो गयी थी। आधी रात तक अंगीठी के पास बैठी ताश खेलती रही थी। और फिर वैसी की वैसी उठकर सोने के कमरे में आ गयी थी।

'ताश तो आप भी खेलते रहे थे—अंगीठी के पास बैठकर। और आप तो बाहर भी गये थे।' शांता ने कहा।

'हमारी और बात है बेटी।'

और अम्मी बिट-बिट कभी शांता की ओर देखती, कभी रशीद साहब की ओर और कभी बेगम रशीद के रंगे हुए ओंठों की ओर।

और फिर हंसते-हंसते रशीद साहब और बेगम रशीद चले गये। दावत को उन्हें देर हो रही थी। कमरे से निकलते हुए रशीद साहब ने बेगम रशीद के कंधे पर हाथ रख लिया। और यों खुश-खुश वे अपनी मोटर में जा बैठे। रशीद साहब हार्न बजाते दूर बहुत दूर निकल गये।

रशीद साहब और बेगम रशीद की मोटर ने उनकी सड़क का मोड़ काटा ही था कि शांता ने देखा, अम्मी उठकर गुसलखाने गयी। गुसलखाने से लौटी, उसने शशि से चाय का प्याला मंगवाया। और फिर वह अपने नित्य के नियम में लग गयी।

शाम को बाबूजी के घर लौटने से पहले अम्मी भली-चंगी थी। जैसे उसे कभी कुछ हुआ ही न हो। उस रात खाने के बाद शांता और शशि ताश खेलने की सोच रही थीं। सारा घर उन्होंने छान मारा, ताश के पत्ते उन्हें दिखाई नहीं दिये। सुबह कार्नेस पर पड़े थे, पता नहीं कहां उड़ गये थे! [क्रमशः]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किशोरों के लिए विज्ञान :

परमाणु की कहानी - २

डा. जगदीश लूथरा

पिछले लेख में तुमने परमाणु की संरचना के बारे में पढ़ा। आओ, अब जरा यह देखें कि परमाणु-अभिक्रिया (रीएक्शन) क्या चीज है और उसमें परमाणुओं पर क्या बीतती है। इसे समझने के लिए हम पहले यह देखें कि हम सबकी जानी-पहचानी अभिक्रिया यानी कोयले के जलने में क्या होता है।

कोयला मुख्यत: कार्बन के परमाणुओं का बना होता है। जब हम उसे जलाते हैं, तब कोयले (कार्बन) का एक परमाणु हवा में व्याप्त आक्सिजन के दो परमाणुओं से जुड़कर कार्बन डाइआक्साइड का एक अणु बन जाता है। (चित्र-१)। यदि कोयला जलने के लिए हवा नहीं है, तो यह अभिक्रिया नहीं हो पाती।

जब कार्बन डाइआक्साइड का अणु बनता है, उसमें स्थित कार्बन और आक्सि-

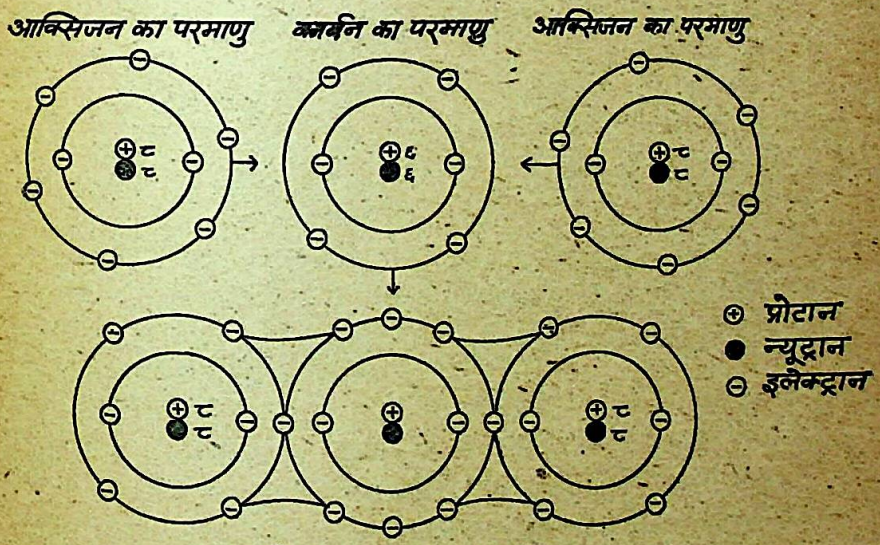

चित्र - १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

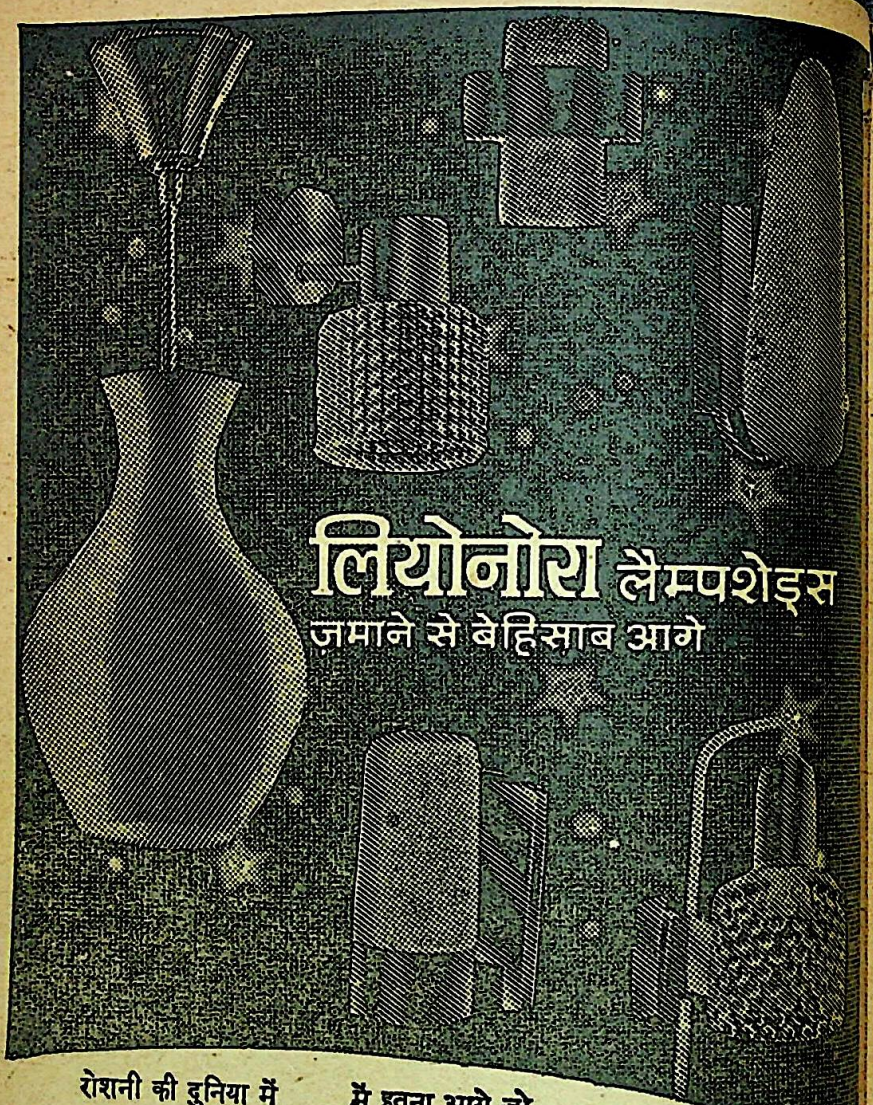

रोशनी की दुनिया में फ़िलिप्स बेपनाह ख़ूबसूरती पेश करते हैं— लियोनोरा श्रृंखला में तरह-तरह के काँच शेड्स. डिज़ाइन, ख़ूबसूरती और निर्माणकौशल में इतना आगे जो कल्पना को भी पीछे छोड़ जाए. काँच, रंग और कल्पना का अपूर्व इन्द्रधनुषी मेल. रोशनी और रंग-रूप में एक अभिनव अनुभव.

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

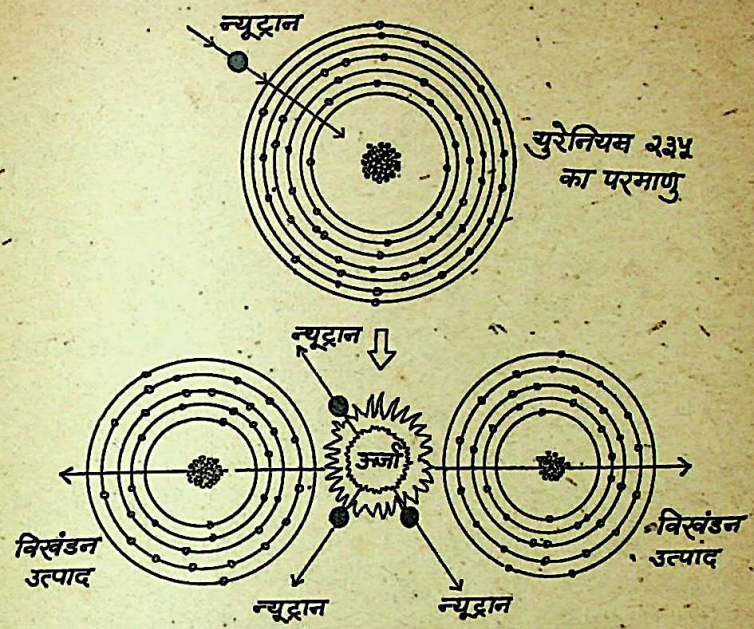

चित्र - २

जन के परमाणु के अपने-अपने न्यूक्लियस (नाभिकों) में कोई हेर-फेर नहीं होता। अलबत्ता, उनके इलेक्ट्रान अपने परमाणु के चारों ओर चक्कर काटने के बजाय समूचे अणु के चारों ओर चक्कर काटने लगते हैं।

अब हम जरा यह भी देखें कि कोयला जलने पर ऊष्मा क्यों उत्पन्न होती है। यह ऊष्मा कहां से आती है? एक प्रकार से ऊष्मा भी ऊर्जा ही है। ऊर्जा के कई रूप हैं, जो एक दूसरे में बदले जा सकते हैं। तुम जानते हो कि जब तुम अपनी हथेलियों को रगड़ते हो, वे गर्म हो जाती हैं। असल में तुमने किया क्या था? यांत्रिक ऊर्जा को ऊष्मा (गर्मी) में बदल दिया।

हर परमाणु में ऊर्जा की कुछ मात्रा होती है। इस ऊर्जा का कुछ अंश विद्युत-ऊर्जा है, जो विद्युत-आवेशों के कारण है। और कुछ अंश गति के कारण है; क्योंकि इलेक्ट्रान गतिमान होते हैं। इस सारी ऊर्जा को मिलाकर परमाणु की संपूर्ण ऊर्जा कहते हैं। यहां पर संपूर्ण ऊर्जा में उसके द्रव्यमान का भी योग है।

तुमने यह सुना होगा कि पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है। यानी द्रव्यमान और ऊर्जा एक दूसरे में बदली जा सकती हैं। इस बारे में आइंस्टाइन ने एक मशहूर समीकरण बनाया है। इस समीकरण के अनुसार द्रव्यमान (m) के तुल्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

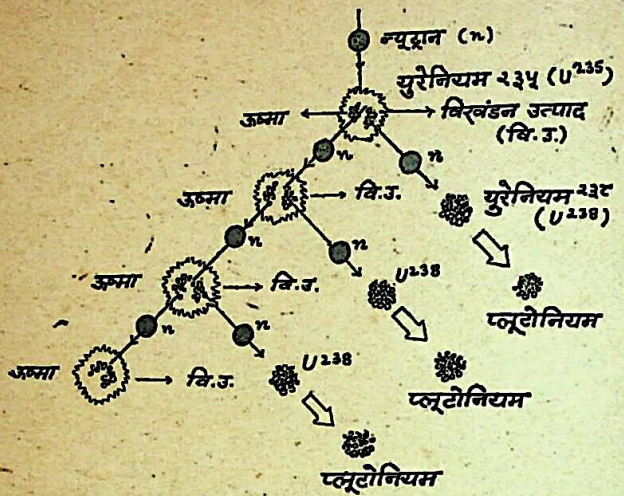

चित्र - ३

विखंडन का अर्थ है-तोड़ना। इसमें भारी तत्त्व को तोड़ने से ऊर्जा मुक्त होती है। परमाणु-बम बनाने में इसी क्रिया का उपयोग किया जाता है।

युरेनियम का विखंडन न्यूट्रान के जरिये किया जाता है (चित्र-२)। अगर कोई भूला-भटका न्यूट्रान युरेनियम के चारों ओर चक्कर काटने वाले इलेक्ट्रानों के आवरण को भेदकर उसके न्यूक्लियस तक पहुंच जाये, तो वह उसे तोड़ सकता है और लगभग बराबर दो छोटे न्यूक्लियसों में बांट सकता है। (इन छोटे न्यूक्लियसों को 'विखंडन उत्पाद' कहते हैं।) इन दो टुकड़ों की संमिलित ऊर्जा युरेनियम की संपूर्ण ऊर्जा से कम होती है। और ऊर्जा का यह जो अंतर

ऊर्जा (E) होगी mc^2, जहां c प्रकाश का वेग है। यदि द्रव्यमान १ ग्राम है तो तुल्य ऊर्जा 9×10^{20} अर्ग होगी।

हमने ऊपर बताया कि कार्बन के एक परमाणु और आक्सिजन के दो परमाणु मिलने से कार्बन डाइआक्साइड का अणु बनता है। लेकिन उसके अणु की ऊर्जा उसे बनाने वाले तीन परमाणुओं (२ आक्सिजन परमाणु + १ कार्बन परमाणु) की संपूर्ण ऊर्जा के जोड़ से कुछ कम होती है। इसे सीधे शब्दों में यों कह सकते हैं कि जब कोयला जलता है, तो ऊर्जा का यह अंतर ताप (गर्मी) के रूप में बाहर निकलता है।

अब देखें कि न्यूक्लियस के विखंडन में अपार ऊर्जा किस प्रकार मुक्त होती है।

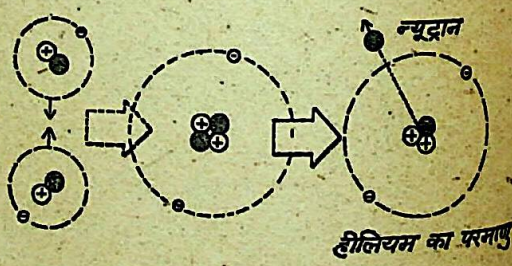

चित्र - ४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है वह ताप के रूप में प्राप्त होता है।

असल में यह अतिरिक्त ऊर्जा न्यूक्लियस के उन दोनों टुकड़ों को बहुत ही तीव्र वेग से चलाती है और जब ये टुकड़े आस-पास के परमाणुओं से टकराते हैं, तो इनकी गतिज ऊर्जा ताप में बदल जाती है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात है—विखंडन में नये न्यूट्रानों का निकलना। कभी एक, कभी दो और कभी तीन न्यूट्रान निकलते हैं—औसतन प्रत्येक विखंडन में अढ़ाई न्यूट्रान। परंतु असल में आधा न्यूट्रान नाम की कोई चीज नहीं होती; वह तो औसत निकालने पर आया है।

ये नये न्यूट्रान युरेनियम के ढेर में और भी परमाणुओं का विखंडन कर सकते हैं। इस तरह ताप और नये न्यूट्रान प्राप्त करने का सिलसिला चलता रहता है और विखंडनों की संख्या बढ़ती जाती है। हर विखंडन में ऊर्जा (ताप) पैदा होती है, यह सारी क्रिया इतने थोड़े समय में हो जाती है और उससे इतनी ज्यादा ऊष्मा पैदा होती है कि विस्फोट हो जाता है। यही सब परमाणु-बम में भी होता है।

कागज के एक कोने को आग छुआ दें, तो यह आग धीरे-धीरे सारे कागज पर फैल जायेगी। इसी तरह विखंडन एक बार शुरू हो जाये, तो वह भी अपने आप जारी रहेगा। अगर तुम कागज की आग को बुझाना चाहो, तो उस पर पानी डाल दोगे। इसी तरह विखंडन के सिलसिले (न्यूक्लीय अभिक्रिया) को रोकने के लिए कुछ ऐसी व्यवस्था करनी पड़ेगी कि विखंडन में निकलने वाले न्यूट्रानों को किसी तरह जज्ब कर लिया जाये, जिससे वे और विखंडन न कर सकें।

इसका अर्थ यह हुआ कि अगर हम न्यूट्रानों के निकलने और जज्ब किये जाने के सिलसिले पर नियंत्रण रख सकें, तो हम ऊर्जा की मुक्ति भी नियंत्रित रूप से कर सकेंगे। परमाणु-भट्ठी (रीएक्टर) में ऐसा ही होता है।

यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है। हमने पिछले लेख में देखा था कि युरेनियम के दो आइसोटोप होते हैं—युरेनियम-२३५ और युरेनियम-२३८। विखंडन और ताप का विसर्जन केवल युरेनियम-२३५ में होता है। युरेनियम-२३८ न्यूट्रान को पकड़ लेता है और खुद प्लूटोनियम में बदल जाता है। यह प्लूटोनियम भी विखंडनशील पदार्थ है (चित्र-३ देखिये)।

तो यह हुई विखंडन से ऊर्जा प्राप्त करने की विधि। इससे उलटी एक और विधि है। उसमें भी भारी मात्रा में ऊर्जा प्राप्त होती है। उसे संलयन कहते हैं। संलयन का अर्थ है—दो परमाणुओं को मिलाकर एक बड़ा परमाणु बनाना।

पिछले लेख में हमने बताया था कि हाइड्रोजन के तीन आइसोटोप होते हैं। इनमें से एक को भारी हाइड्रोजन (ड्यूटेरियम $_2H^1$) कहा जाता है। यदि हम भारी हाइड्रोजन के दो परमाणुओं को किसी तरह उच्च वेग पर आपस में टकरायें, तो जानते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वाराणसी पुस्तकालय,
वाराणसी

हो क्या होगा ? पहले तो दोनों के न्यूक्लियस मिलकर एक नया न्यूक्लियस बनायेंगे। यह उसी क्षण टूट जायेगा और एक नये न्यूक्लियस और एक न्यूट्रान में बदल जायेगा (चित्र-४)। इस तरह हमारे पास भारी हाइड्रोजन के दो परमाणुओं के बजाय, हीलियम का १ परमाणु और १ न्यूट्रान प्राप्त होंगे।

विखंडन की बात करते हुए हमने संपूर्ण ऊर्जा के नियम की चर्चा की थी। उसी नियम को संलयन की अभिक्रिया में लागू करें, तो हमें पता लगेगा कि हीलियम के परमाणु बनने के दौरान काफी बहुत ऊर्जा मुक्त होगी।

इसी तरह की अभिक्रिया करना काफी मुश्किल काम है; क्योंकि इसमें परमाणुओं को बहुत ऊंचे वेग पर एक दूसरे से टकराना पड़ता है। इसका एक तरीका है—उनका तापमान बढ़ाना। कोयले को जलाने के लिए भी तो हमें उसे गर्म करना पड़ता है। मगर जब कि कोयला तो कुछ ही सौ अंश तापमान पर जल उठता है, वहां संलयन के लिए करोड़ों अंश तापमान की जरूरत पड़ती है।

तुम स्वयं सोच सकते हो कि इतने ऊंचे तापमान पर काम करना और उसे संभालना कितना कठिन काम है। इस विधि पर बहुत-से देशों में शोध हो रहा है, ताकि इससे बिजली का उत्पादन आदि कार्य हो सकें।

इस तरह मोटे तौर पर परमाणु की कहानी खतम होती है। अगले लेख में हम इस पर चर्चा करेंगे कि परमाणु भट्ठी क्या होती है और उससे किस प्रकार बिजली प्राप्त की जाती है। —१२ ए, अल्मोड़ा, अणुशक्तिनगर, बंबई—४००२०१

बगल के चित्र में जिन सज्जन का चेहरा आप देख रहे हैं, उन्हें दांतों का कोई कष्ट नहीं है। उनका असली कष्ट था उनका वजन—३२० पौंड ! बारह बार उन्होंने 'डायटिंग' की, मगर वजन नहीं घटा। अंत में वे दांतों के एक सर्जन के पास गये। सर्जन ने उनकी दोनों दंतपंक्तियों को चांदी के शिकंजे में जकड़ दिया और शिकंजे को सीमेंट की मदद से इस तरह जकड़ दिया कि उखाड़ा न जा सके। अब दांतों के बीच इतनी ही जगह रह गयी कि सिर्फ तरल पदार्थ पिये जा सकें, ठोस चीज न खायी जा सके। परिणाम ? चंद हफ्तों में वजन में ७० पौंड की कमी !

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर रेयन के २६ गौरवशाली वर्ष

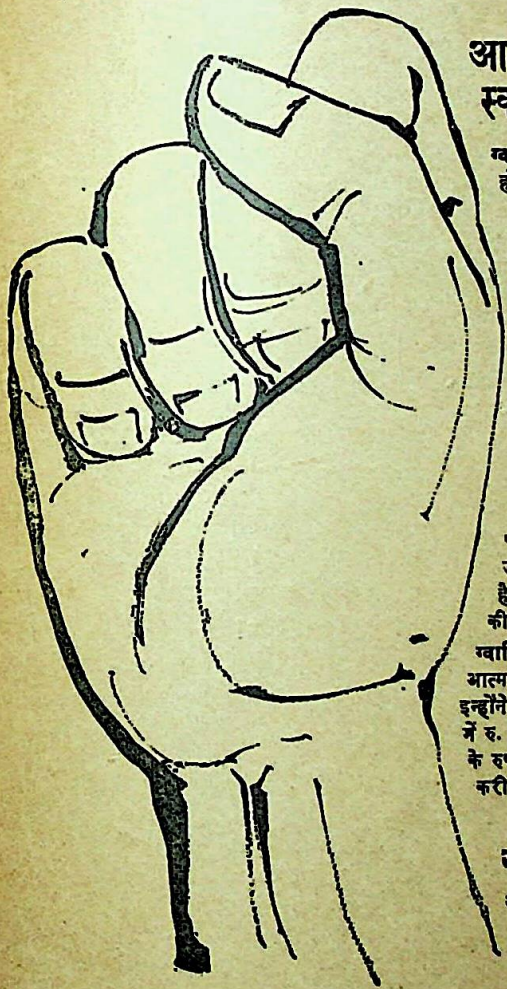

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आज़ाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, स्टेपल रेशे, रेयन–ग्रेड पल्प और रेयन स्टेपल रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य सस्त लकड़ियों से रेयन–ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित प्लांटों की आधुनिक मशीनों के अग्रगण्य निर्माता हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशों का उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासियों की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा का है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से रूई की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रूप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन

जहां राष्ट्र की प्रगति ही एकमात्र उद्देश्य है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मेन्यु. (वीविंग) कं. लि. विरलाग्राम, नागदा (म. प्र.)

Sobhagya GR 74-2-Hin

वार्षिक मूल्य रु. २४) (मूल्य रु. २–५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रोपॅक®
स्वीटीज

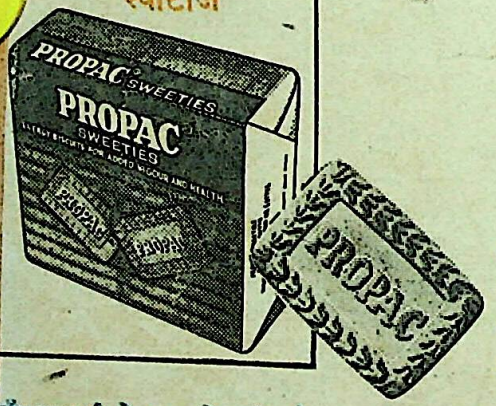

दफ़्तर में दिन भर काम और फिर थकाने वाले घरेलू धन्धे। इतने परिश्रम के बाद आपको प्रोटीन चाहिए। और प्रोटीन के लिए प्रोपॅक सबसे अच्छे हैं। प्रोटीन के लिए अच्छा पौष्टिक भोजन हो या फिर सबसे अच्छे प्रोपॅक बिस्किट!

साधारण बिस्किटों से
तीन गुने प्रोटीन
दस गुने विटामिन
और कई गुने कैल्शियम और आयरन से भरपूर

हल्के आसानी से हजम हो जाने वाले प्रोपॅक बिस्किट स्फूर्तिदायक प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम और आइरन से भरपूर हैं।

कुरकुरे, स्वादिष्ट प्रोपॅक बिस्किट सुबह के नाश्ते, दोपहर की कॉफ़ी या शाम की चाय के साथ लीजिए।

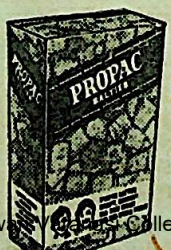

आपकी प्रिय
प्रोपॅक
साल्टीज
अब नए
किफ़ायती टिन्नों
में मिलती हैं

मुनिकेम का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जुलाई
१९७४

मूल्य
रु. २-५०

[illegible] पुस्तकालय
भारती भवन, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुपम विचार रुई के साथ ही जन्म लेते हैं

डिज़ाइन

शानदार...जानदार...सदाबहार...
मगर स्वाभाविक जैसे सिर्फ़ सूती कपड़े

सेन्चुरी
१००% सूती कपड़ों के लिए

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड, बम्बई-४०० ०२५

Adroit-CM-533 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर
सुखी संसार
श्रीलॉन
और
श्रीस्टर
सुंदर वस्त्रों के लिए
सुन्दर तंतु

श्रीलॉन नाइलॉन तंतु – सुरुचिसपन्न स्त्रियों के लिए सुंदर साड़ियां और लुभावने लिबास के कपड़े जिससे तैयार होते हैं।

श्रीस्टर पॉलिएस्टर तंतु — आगे बढ़ते मर्दों के लिए 'मॉड' सूटिंग और शर्टिंग जिससे बनते हैं। इसलिए जब श्रीलॉन और श्रीस्टर मिलते हैं, उसका नतीजा होता है—आनंद-उल्लास, मौज-मस्ती।

उत्पादक : श्री सिंथेटिक्स लिमिटेड, नौलखी, उज्जैन

विक्री कार्यालय : श्रीनिवास हाउस, एच. एम. सोमानी मार्ग, बंबई ४००००१.

फोन : २६६०७४, २२८२४१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि अवध शुगर मिल्स लि.
हरगांव
जि. सीतापुर, उ. प्र.

शुद्ध दानेदार चीनी और
उत्तम स्पिरिटों के निर्माता

❀ ❀ ❀

वरार आइल इंडस्ट्रीज
वनसदा पेठ
अकोला (महाराष्ट्र)

वनसदा ब्रांड वनस्पति
के निर्माता

❀ ❀ ❀

हरगांव आइल प्रॉडक्ट्स
सीतापुर, उ. प्र.

मूंगफली के तेल
साल्वेंट एक्स्ट्रैक्टेड आइल
और तेल विमुक्त खली
के निर्माता

यांत्रिक प्रगति का
अनुपम प्रतीक

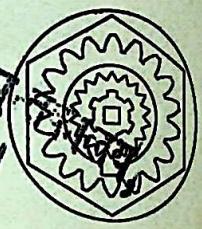

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां ब्रोच उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये ब्रोच से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
थाना (बंबई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालकों को सर्वाधिक प्रिय...

ADVEND

ज्ञान भारती बाल पॉकेट बुक्स

का २४ वाँ सेट...

- एक लड़की जो प्रधानमंत्री बनी
- कुदाल पंडित • कहो न मम्मी
- बुरे लोग • हा हा ! हू हू !

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १·१०

हास्य लघु कथाएँ

- तेनाली राम के नये लतीफे
- गोपाल भांड के लतीफे
- गोनू झा के लतीफे
- दीलचिल्ली की शेखियाँ
- दिल्ली में कौवे
- बात में बात

रोचक कथाएँ

- चांद जादो
- दंत्य की बेटी
- चार चोर चौरासी बनिए
- और फिर
- तीन छेल की नगरी
- हो न हो
- आटे का लड़का
- बूंखार बकरे

प्रेरक कथाएँ

- व्यास जी ने कहा था
- कहानी चार खरगोशों की
- कहानी चार दोस्तों की
- सरल कथाएँ
- बदला
- पुल का जूता
- हातिमताई का घोड़ा
- कमांडर की बेटी

हास्य बाल उपन्यास

- फर्राटी जां
- आलसी राम का सपना
- छोटू, मोटू, लम्बू

रोचक बाल उपन्यास

- पाताल लोक की यात्रा
- कुर्सी का रहस्य
- कुबड़े की कहानी
- लोहे का दानव
- बर्फ की देवी
- निष्प्रभ देश का रहस्य
- काले पहाड़ की जादूगरनी
- परियों का शहजादा
- सुनहरे हंस
- लुटेरे पिशाची
- लहू के प्याले
- देवी दास या विचित्र राजकुमार ?
- आखिरी छलांग
- सुनहरा बाल
- अंतरिक्ष में हंगामा
- फूल कुमारी
- समुद्री खजाना
- आँख की चोरी
- समुद्र का शैतान
- भयानक योगी
- अब्दुल्ला की नौकरी

प्रेरक बाल उपन्यास

- कमल और कमाल
- सुनहरे दिन भारत के
- सिंह सपूत अमर शहीद भगत सिंह
- फुटपाथ से महल तक
- जगत गुरु शंकराचार्य

जरूर अवश्य पढ़िये... ३५ सेट की पुस्तकें

• मोटू की होली • तरुण शहीद • नू का बेटा जू • विचित्र न्याय • ताइको और अणुबम

ज्ञान भारती का विज्ञान अंक मुफ़्त मंगाने के लिये पत्र लिखें

ज्ञान भारती बाल पॉकेट बुक्स (च) विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया का कोना-कोना, घूमे करोना

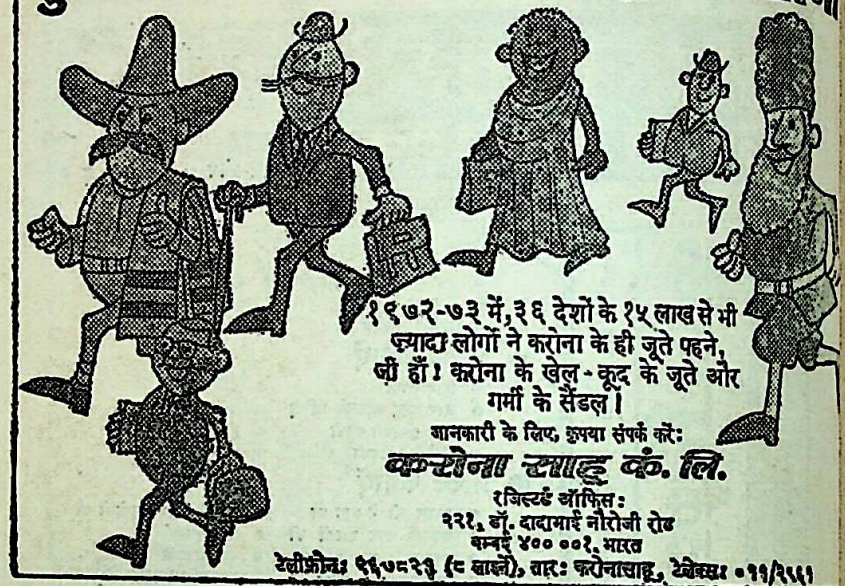

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड

(भारत का सबसे बड़ा रेयान और सिन्थेटिक फाइबर की बुनाई, रंगाई और फिनिशिंग का कारखाना)

–: उत्पादन :–

नाना रंगों और डिजाइनों के रेयान और सिन्थेटिक वस्त्र पुरुष और स्त्रियां, बूढ़े और बच्चे सभी के लिए बेजोड़ और बढ़िया वैविध्य।

बिक्री और फुटकर दुकान :–

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड

डॉ. ई. मोसेस रोड, महालक्ष्मी, बंबई.

टे. नं. ३९४०२१–२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युनिट-संबद्ध विमा योजना

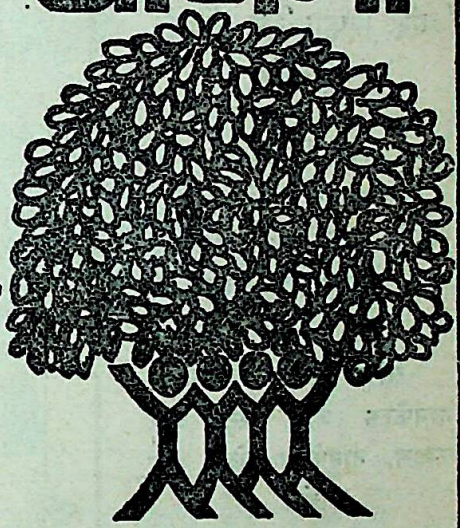

1971-72

फायदा मिळालेले विमेदार : 503

व्यवहार : 0.41 कोटि रुपये

1972-73

फायदा मिळालेले विमेदार : 1312

व्यवहार : 1.07 कोटि रुपये

केवळ वर्षभरांतच संख्येमध्ये दुप्पट वाढ !
पण, मुळांत योजनाच इतकी चांगली
आहे, की, जनतेचा हा
प्रतिसाद निदान 20 पटींनी
तरी जास्तच असायला हवा होता.

UNIT TRUST OF INDIA

युनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया

मुंबई • कलकत्ता • नवी दिल्ली • मद्रास

Camp 74/68.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय
लालबहादुर शास्त्री मार्ग,
भांडुप, बंबई ७८ एन० बी०
केबल : 'लकी' भांडुप
फोन : ५८२४२१

सेमिस रोलिंग विभाग
नानफेरस शीत, स्ट्रिप और फाइल, नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग :
एंटिफ्रिक्शन वेयरिंग मैटल्स गन-मैटल्स और ब्रोन्जेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स, फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स 'इस्माक३', अल्युमिनियम वेस्ट डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड.

पुलगांव

मिल्स का कपड़ा हर नागरिक के लिए, हर प्रसंग पर उपलब्ध है।

आकर्षक रंगों की पॉपलीन, बढ़िया किस्म की शर्टिंग, दफ्तर में पहनने के लिए कोटिंग्ज़, पेन्टों के लिए टिकाऊ ड्रिल्स, हर किस्म की धोतियां, सुंदरियों की मन-मोहक साड़ियां इसके अतिरिक्त लांग क्लॉथ और मारकीन्स

जब भी आप सूती वस्त्र खरीदें तो यह ट्रेड मार्क देख लें।

पुलगांव

कॉटन मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेरिडॉन और शरीरदर्द

शरीरदर्द का मुक़ाबला सेरिडॉन से कीजिए. सिर्फ़ एक टिकिया काफ़ी है. केवल सेरिडॉन ऐसे ख़ास नुसख़े से तैयार की गयी है जो शरीरदर्द, सरदर्द, तनाव और तकलीफ़ से छुटकारा दिलाती है और आप आराम, चैन और ताज़गी महसूस करते हैं. यह है रोश का अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान जो हमेशा आपकी सेवा में लगा है.

सिर्फ़ एक सेरिडॉन और आपका शरीरदर्द ग़ायब.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

WHO MAKES THE MOST TRUSTED YARN?

CENTURY ENKA OF COURSE!

World-famous Enkalon nylon yarn—made in India to the highest international standards by **Century Enka.** Fast, flawless, fabulous—for the exciting world of fashion.

Enkalon® nylon yarn is now produced in India

the quality yarn that weaves faultless fabrics

® Registered Trade Mark of AKZO N.V., Holland

Licensed users: CENTURY ENKA LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

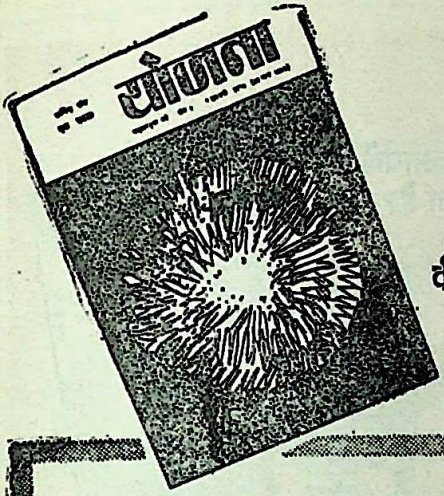

योजना

योजना आयोग की ओर से प्रकाशित सचित्र पाक्षिक पत्रिका

★ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विकास कार्यों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

★ देश में विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति की झांकी

★ देश की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर निष्पक्ष चर्चा

★ विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी

आज ही ग्राहक बनें

वार्षिक :	8 रु०
द्विवार्षिक :	14 रु०
त्रिवार्षिक :	20 रु०

विशेष छूट

विद्यार्थियों, अध्यापकों (प्रमाण-पत्र देने पर) एवं पुस्तकालयों को योजना के चन्दे पर 25 प्रतिशत की विशेष छूट।

योजना के ग्राहकों को हमारी 5 रुपये या अधिक मूल्य की पुस्तकें क्रय करने पर 20 प्रतिशत की छूट। बृहद सूची-पत्र के लिए लिखें।

व्यापार व्यवस्थापक
प्रकाशन विभाग
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001

davp 73/600

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह आवश्यक नहीं कि
किसी टॉनिक के द्रव्य
क्या हैं —
आवश्यक बात यह है कि आपके
शरीर को उससे क्या मिलता है?

आपके शरीर को बहुत कुछ देता है

सिंकारा

सिंकारा में आवश्यक विटामिनों और खनिज पदार्थों के साथ ही १४ जड़ी, बूटियां विशेषकर सम्मिलित हैं जिनसे पाचन शक्ति अच्छा कार्य करती है और जिनकी सहायता से आपका शरीर सिंकारा में सम्मिलित विटामिनों आदि को बहुत तेज़ी से अपने अन्दर समा लेता है। आहार भली-भांति शीघ्र हज़म हो कर आपके शरीर को बहुत अच्छी शक्ति प्रदान करता है।

हमदर्द

MDC-3035 A-H

'को र स'

पत्र-व्यवहार की आवश्यकताओं
की पूर्ति करने वाला भारत का
सर्वोत्तम औद्योगिक प्रतिष्ठान

कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप,
स्टैंसिल्स, डुप्लिकेटिंग स्याही इत्यादि के निर्माता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेखक/प्रकाशक ध्यान दें

हिन्दी पुस्तकों की खरीद

देश के अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की संस्थाओं में तथा हिन्दी सीखने की इच्छुक विदेशी जनता में निःशुल्क वितरण के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी की मौलिक तथा हिन्दी में अनूदित पुस्तकें खरीदने का निश्चय किया है। हिन्दी के प्रकाशक / लेखक अपने प्रकाशन खरीद के लिए विचारार्थ 31 अक्तूबर, 1974 तक निदेशालय को भेज सकते हैं।

इस सम्बन्ध में निर्धारित नियम आदि प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित पते पर सम्पर्क कीजिए :

सहायक शिक्षा अधिकारी (वितरण),
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
पश्चिमी खण्ड 7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली–110022.

davp /74115

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिंक चेन

❀

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है।

❀

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

❀

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

❀

इण्डियन लिंक चेन मैन्यु. लि.

भाण्डुप : बम्बई.

उद्योग की सेवा में

निम्नलिखित निर्माताओं के उत्पादनों के लिए हमसे सम्पर्क करें।

हिन्दुस्तान अल्युमिनियम कंपनी लि.

इंडियन टूल मैन्युफैक्चरिंग लिमिटेड

ग्रिंडवेल नोर्टन लि.

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.

युनिवर्सल केबल्स लि.

जयश्री टेक्सटाइल्स एन्ड इन्डस्ट्रीज लि. (फ्लेक्स फायर होज)

एशियन सायकल टायर व ट्यूब

एशियन डिस्ट्रीब्यूटर्स लि.

क्वींस मेन्शन, तल मजला

प्रेस्कास्ट रोड, बंबई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

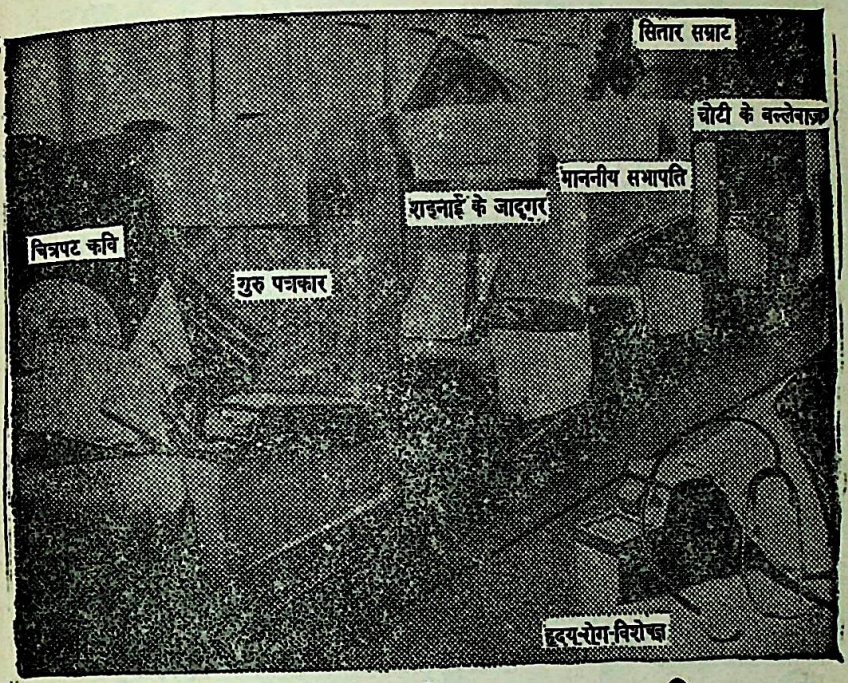

एयर-इंडिया के महान यात्री

आप उन्हें जानते हैं, हम उन्हें हवाईसफ़र कराते हैं.

कौन हैं ये एयर-इंडिया के महान यात्री?

आप तो इन्हें जानते ही हैं. वे जिन्होंने दुनिया के औद्योगिक नक्शे में अपने देश को एक विशिष्ट स्थान दिलाया है; जिनके स्वर्गीय संगीत ने विदेशियों को भी मंत्रमुग्ध किया है; जिन्होंने चलचित्रों में नयी काव्यात्मक शैली की रचना की है; जिनके तालमय नृत्य पर समग्र संसार के कलाप्रेमी झूम उठते हैं; जो खेल-कूद, विज्ञान और तंत्रज्ञान में अग्रणी हैं. ये हैं एयर-इंडिया के महान यात्री जिन्हें अपने देश पर नाज़ है और जो अपनी स्वदेशी एयरलाइन से ही यात्रा करना पसंद करते हैं.

एयर-इंडिया से यात्रा करते समय आप अपने देशवासियों के साथ सफ़र करते हैं, अपनी संस्कृति और अपने राष्ट्रीय ध्वज के साथ-साथ चलते हैं.

वास्तव में जब आप एयर-इंडिया से सफ़र करते हैं तो मानो अपनी ख़ास एयरलाइन से ही सफ़र करते हैं.

AI. 6127 J

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ओरमो' छाप अमोनिया कागज़

(पैरा-डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर छपाई
- बरतने और रखने में टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परिणाम
- कम खर्च और सस्ता.

स्टैंडर्ड साइज़ के रोल और शीटस हर प्रकार की मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की स्पीड्स में मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव के लिये पोलीथीन के ट्यूब और रेपरों में पैक किया हुआ होता है. यह देर तक खराब न होने वाला अच्छी क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी किया हुआ है, क्योंकि ओरमो का बेस पेपर भी ओरियंट पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड

ब्रजराज नगर, उड़ीसा

दि इंडियन टूल मैन्युफैक्चरर्स लि.

१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई—४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स; कटर्स; टैप्स; टूलबिट्स और माइक्रोमीटर्स

* डॅगेलाय कार्बाइड टूल्स और टिप्स
* डॅगर-साके गियर हॉब्स और गियर शेपिंग कटर्स

I T

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय बचत संगठन

अब अधिक ब्याज देता है

1 अप्रैल 1974 से लागू

प्रतिभूतियों और खातों के नाम	पुरानी दरें प्रतिवर्ष	बढ़ी हुई दरें प्रतिवर्ष
डाकघर बचत बैंक*	4%	5%
7-वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र द्वितीय और तृतीय निर्गम*	5%	5%
7-वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र चतुर्थ और पंचम निर्गम	7.5% (चक्रवृद्धि)	8.25% (चक्रवृद्धि)
डाकघर सावधि जमा		
1-वर्षीय	6%	6.75%
2-वर्षीय और 3-वर्षीय	7%	7.5%
5-वर्षीय	7.25%	8%
5-वर्षीय डाकघर आवर्ती जमाखाता	6.75%	7.25%
10-वर्षीय डाकघर बढ़ने वाला सावधि जमाखाता**	4.75%	5.25%
15-वर्षीय लोक भविष्य निधि खाता**	5.3%	5.8%

* ब्याज की राशि करमुक्त होती है।

** इन खातों पर करों में छूट मिलती है और ब्याज की राशि करमुक्त होती है।
अन्य योजनाओं पर 3,000 रु. प्रतिवर्ष तक ब्याज करमुक्त होता है। इस राशि में दूसरी निर्दिष्ट स्कीमों के अन्तर्गत कमाया गया ब्याज शामिल है।

आज बचाइये अधिक बचाइये

राष्ट्रीय बचत संगठन

पो. बा. नं. 96, नागपुर

davp 74/78

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवानी के साथ-साथ दर्द और तकलीफ़ की परेशानी भी आती है

तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपके आड़े समय काम आती है

आप अपने कॉलेज का कोई भी उत्सव छोड़ना नहीं चाहतीं। परन्तु आज जबकि कॉलेज में एक शानदार फ़िल्म-शो होने वाला है, आप कमर के दर्द, बेचैनी और बेआरामी के कारण मुरझाई हुई-सी हैं। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन ऐसे ही नाज़ुक अवसरों पर काम आती है।

एनासिन बहुत गुणकारी है, क्योंकि यह केवल दर्द से आराम नहीं दिलाती बल्कि दर्द के बाद होने वाली उदासीनता को भी दूर करती है। एनासिन आपको जल्दी आराम और चैन दिलाती है और आपके चेहरे पर फिर वही मुस्कान आ जाती है।

अपने नाज़ुक दिनों में दर्द की बेचैनी और बेआरामी से पड़े रहना पुराने ज़माने की बात है। आज ज़माना बहुत आगे बढ़ चुका है। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपको जल्दी आराम दिलाती है। और आप अपना रोज़ का काम-काज आराम से कर सकती हैं।

लड़की होना भी कभी-कभी एक मुसीबत मालूम होती है। परन्तु आप ऐसे मौके समय एनासिन से काम लेकर कठिनाई उलझन दूर कर सकती हैं, और जीवन का पूरा आनन्द ले सकती हैं। अचानक के समय के लिए अपने पर्स में हमेशा एनासिन रखिए—यह बहुत बड़ी सुविधा है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. Trade Mark of T.M. Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवेकानन्द साहित्य

(दस खंडों में स्वामी विवेकानन्द की सम्पूर्ण कृतियाँ)

डबल डिमाई १६ पेजी साइज में; पृष्ठसंख्या प्रति-खंड लगभग ४५०; मजबूत और आकर्षक सजिल्द प्रति-खंड का मूल्य १२ रु.; सम्पूर्ण सेट ११२ रु.। पूरा सेट रेल द्वारा मंगाने से रेल-खर्च नहीं लगेगा।

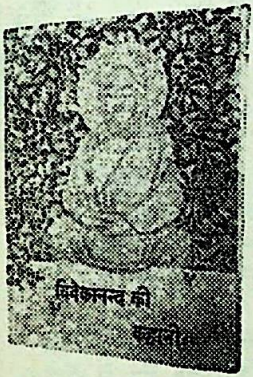

विवेकानन्द की कहानी

६४ रंगीन चित्रों के साथ
बच्चों के लिए।

पृष्ठ ७२; मूल्य ४.५० रु.।

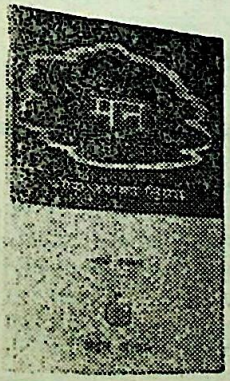

मन और उसका निग्रह

लेखक : स्वामी बुधानन्द
अनुवादक : स्वामी आत्मानन्द

पृष्ठ १५०; मूल्य २.५० रु.।

अद्वैत आश्रम

५ डिहि इन्टाली रोड
कलकत्ता–७००–०१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे फ़ोरहॅन्स की आदत भी सिखाइए

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

दाँतों के डाक्टर की राय में मसूढ़ों को मजबूत और स्वस्थ रखने का सर्वोत्तम उपाय है उनकी नियमित मालिश...और दाँतों को सड़ने से बचाने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है दाँतों को हर रात और सवेरे व हर भोजन के बाद नियमित रूप से ब्रश करना ताकि सड़न पैदा करनेवाले सभी अन्न कण दाँतों में फँसे न रहें।

अपने बच्चे को दाँतों के डाक्टर द्वारा ख़ास तौर से बनाए गये फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से नियमित रूप से दाँतों को ब्रश करना और फ़ोरहॅन्स डबल एक्शन जूनियर टूथब्रश से मसूढ़ों की मालिश करना सिखाइए।

फ़ोरहन्स से दाँतों की देख-भाल सीखने में देर क्या, सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स

दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका* मुफ़्त प्राप्त करने के लिए २५ पैसे के टिकट (डाक-ख़र्च के लिए) इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००११, बम्बई-४०० ००१

नाम.....उम्र..... 06

पता.....

*कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़.

130F-162

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

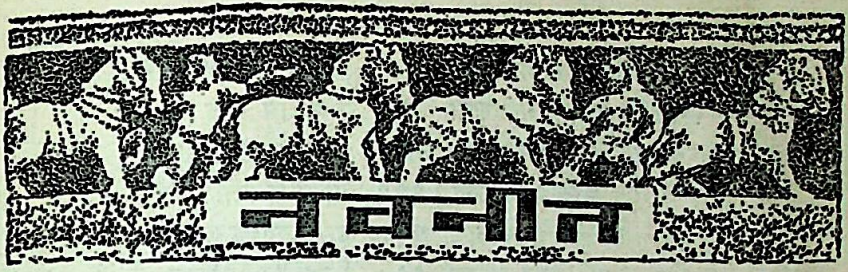

वर्ष २३ : अंक ७ ❋ इस अंक में ❋ जुलाई १९७४

पत्र-वृष्टि	२१	संपादक की डाक से
पाकिस्तान का न्यूक्लीय कार्यक्रम	२३	डा. जगदीश लूथरा
विली ब्रांट : पदत्याग-कथा	२७	अवधनंदन
सौभाग्य	३३	मार्कस एंटोनियस
समस्याएं और सुलझाव	३४	चार्ल्स रॉथ
शिवाजी	३६	जयचंद्र विद्यालंकार
साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता	४१	स्व. रामधारीसिंह दिनकर
आम–सुधा का जाम	४५	डा. सुरेश व्रत राय
औद्योगिक विष अनुसंधान-केंद्र	४८	मुकुलचंद पांडेय
वाक्यदीप	५२	जी. के. चेस्टरटन
ध्यान और विज्ञान	५३	पीटर फेन्विक
कविताएं	५६	भवानीप्रसाद मिश्र
विज्ञान-बिंदु	६१	केजिता
एशिया का आभूषण	६५	सावित्री रामराव
विनोदी कवि	७०	....
आर्काट के राम-लक्ष्मण	७२	रा. वीलिनाथन्
प्याज	७८	डा. मानवेंद्र सिंह
घर-वापसी	८०	नवाल अल सादैन

संचालक	संपादक	परामर्शदाता	व्यापार-व्यवस्थापक
श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सत्यकाम विद्यालंकार	महेंद्र मेहता
प्रबंध-संचालक	सहसंपादक	सहकारी : गि. शं. त्रिवेदी	प्रबंध : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	सुरेश सिन्हा	डा. विष्णु भटनागर	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविताएं	८५	सक्सेना, 'शशि', मयंक', रहमान
जापानियों का प्रतिशोध	८६	लारेंस वान डेर पोस्ट
मन तौ शुदम तौ मन शुदी	९२	मेवाराम गुप्त
धरती मां (उपन्यास-सार)	९६	चंगेज एतमातोफ
भावना का सत्य	१११	नीला चावला
सोनार	११३	डा. जगदीश लूथरा
भालू	११५	मिखाइल प्रिश्विन
पुस्तकास्वादन	११६	मंत्री, दत्त, सिन्हा
मास्को की कतार	१२०	जी. गोरिन
मनोलोक	१२५	शशिरंजन
क्रांति	१२७	....
स्मृति के अंकुर	१२९	शर्मा, त्रिवेदी, व्यास
सुलह (हिन्दी कहानी)	१३२	सूर्यवाला
फूल गुलमुहर के (कविता)	१३६	ज्योति प्रकाश सक्सेना
अब जरा हंस न लें ?	१४१	जोजफ आर्थर
कविताएं	१४४	'कमल', गुप्ता
मिस्त्री अब्दुल्ला	१४५	....
लिंकन : कुछ प्रसंग	१४९	....
बटन की कहानी	१५१	....
मांकड : कीर्तिमानों का मेरु-पर्वत	१५२	शाहिद अब्बास अब्बासी

आवरणचित्र : गिलहरियां

चित्रसज्जा : अर्न्टे, अबू, ओके, शैणै, सतीश चव्हाण, जोजफ आर्थर, भटनागर

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट), ३४१ ताडदेव, बंबई-३४.
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५ बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८८७

चंदे की दरें : (भारत में) एक वर्ष : २४ रु.; दो वर्ष : ४६ रु.; तीन वर्ष : ६६ रु.।
विदेशों में : (समुद्री डाक से) एक वर्ष : ४५ रु.; दो वर्ष : ७५ रु.; तीन वर्ष : १०५ रु.।
(हवाई डाक से) एक वर्ष : ७५ रु.; दो वर्ष : १३५ रु.; तीन वर्ष : १९५ रु.।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा निर्णयसागर प्रेस, ४५। डीई, ऑफ टोकरसी जीवराज रोड, शिवरी, बंबई-१५ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

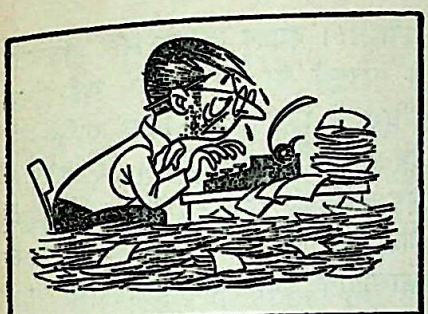

पत्र-वृष्टि

आपका संपादकीय लेख 'परमाणु-क्लब में भारत' (जून अंक) पढ़ा। लगता है, आप यह मानकर चले हैं कि यह शांतिमय परमाणु-परीक्षण भारत के न्यूक्लीय शक्ति बनने के प्रयास का अंग है। भारत सरकार का इरादा भारत को न्यूक्लीय शक्ति बनाने का नहीं है। इस बात को लेकर आपने गांधीजी और बुद्ध की दुहाई दी है और देश की गरीबी का रोना रोया है। यदि हम मिर्जा गालिब के नाम पर लाखों रुपये फूंक सकते हैं, तुलसी-रामायण की चतुःशती पर करोड़ों रुपये खर्च करने का इरादा रखते हैं, छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक की तीन सौवीं तिथि पर ३ करोड़ खर्च कर सकते हैं, क्रिकेट के नाम लाखों रुपये की दुर्लभ विदेशी मुद्रा खर्च कर सकते हैं, तो मेरी समझ में नहीं आता कि यदि परमाणु ऊर्जा-आयोग ने चंद लाख रुपये इस महत्त्वपूर्ण परीक्षण पर खर्च कर दिये, तो इतनी हाय-तोबा क्यों?

युद्ध की विभीषिका को शांति-शांति चिल्लाकर कम नहीं किया जा सकता; उसे तो संभावित आक्रमण के प्रति प्रतिरोधी क्षमता का विकास करके ही कम किया जा सकता है; उसी प्रकार गरीबी को भी भूख-भूख चिल्लाकर हटाया नहीं जा सकता। गरीबी एक अभिशाप है, उसे दूर करने के लिए हमें अपने उद्योगों और कृषि-फार्मों इत्यादि के विकास पर बल देना होगा। इसके लिए सबसे पहले हमें अपने भीतर विश्वास जगाना होगा। यदि १८ मई के परमाणु-परीक्षण के परिणामस्वरूप देश में यह भावना उदय हो कि 'हम भी कर सकते हैं', तो परमाणु ऊर्जा विभाग पर किया गया पूरा खर्च गरीबी हटाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण है। —जगदीश लूथरा, बंबई

(२)

जून अंक में प्रकाशित 'परमाणु-क्लब में भारत' में लेखक ने भारत के परमाणु-बम परीक्षण को हमारे जैसे गरीब देश के लिए अनावश्यक बताया है। लेखक ने यह बहुकथित बात कि परमाणु-शस्त्र बेहद खर्चीले होते हैं, दोहरायी है। मैं आपका ध्यान प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सुब्रह्मण्यन् स्वामी के निष्कर्षों की ओर खींचना चाहता हूं।

डा. स्वामी ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कार्य करते समय रूस और अमरीका द्वारा परमाणु-ऊर्जा पर किये गये खर्च का विस्तृत अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि परमाणुशस्त्र समान प्रहारक्षमता वाले परंपरागत शस्त्रों से सस्ते पड़ते हैं। देश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

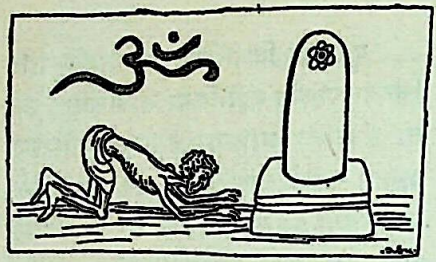

(अबू : 'इंडियन एक्स्प्रेस' में)

को धनी राष्ट्रों द्वारा फैलाये भ्रम में डालना हमारे यहां के शिक्षित समाज का कर्तव्य-सा है ! —मोहन रामचंदाणी, बंबई

० ० ०

श्री मारुती चितमपल्ली का लेख 'कपोत-वृत्ति' ज्ञानवर्धक था। किंतु ज्ञान-मंडल, वाराणसी द्वारा प्रकाशित बृहत् हिन्दी कोश (तृतीय संस्करण, संवत् २०२०) पृष्ठ २५१ पर 'कपोत' शब्द के प्रसंग में 'कपोत-वृत्ति' का अर्थ दिया गया है—'संचय न करने की वृत्ति'। श्री चितमपल्ली इससे बिलकुल उलटा अर्थ बताते हैं।

—चंद्रेश्वर शुक्ल, कलकत्ता—१९

* श्री मारुती चितमपल्ली ने अपने बताये हुए अर्थ के पक्ष में महाभारत के निम्नलिखित श्लोकों का हवाला दिया है;

अतिथिव्रती क्रियावांश्च कापोतीं वृति-
मास्थितः।
सत्रमिष्टीकृतं नाम समुपास्ते महातपाः॥
सपुत्रदारो हि मुनिः पक्षाहासे बभूव ह।
कपोतवृत्या पक्षेण व्रीहिद्रोणमुपार्जथ॥—सं.

० ० ०

मई अंक में श्री घनश्यामदास बिरला का भाषण-सार 'मेरे युवा मित्रो' नाम से छपा था। भाषण अनुभव और बुद्धि से परिपूर्ण था। मैंने उसमें कई जगह पेंसिल से निशान कर दिया, ताकि मेरे पुत्र-पौत्र पढ़ें, तो ध्यान दें। बिरलाजी ने एक उपनिषद्-मंत्र उद्धृत किया है। उसमें 'आशिष्ठः' का अर्थ श्रीशंकराचार्यजी ने 'आशावान' नहीं किया है। 'आशा' शब्द और 'इष्ठन्' प्रत्यय के मेल से 'आशिष्ठ' रूप बन भी नहीं सकता। यह मंत्र तैत्तिरीयोपनिषद् (गीता प्रेस संस्करण) की ब्रह्मवल्ली से लिया गया है। वहां शिक्षार्थी युवक को उपदेश दिया गया है कि वह अतिशिष्ट (आसमन्तात् शिष्टः आशिष्ट) होना चाहिये, उसमें दृढ़ता होनी चाहिये, उसे बलशाली होना चाहिये, पढ़ने में मन लगाने वाला होना चाहिये। यहां आशा की कोई बात नहीं। (थियोसाफिकल सोसायटी, अडयार, मद्रास द्वारा प्रकाशित दस मुख्य उपनिषदों के अनुवाद की पुस्तक में इसे 'आशिष्ट' का अर्थ 'डिसिप्लिन्ड' दिया है।)

वैसे उपनिषद् तो आशा और आनंद के संदेश के प्रेरणास्रोत हैं। परंतु वह आशा ऐश्वर्यसुख से भिन्न है। वह तो आत्मा और परमात्मा के ऐक्य को जान लेने से मिलती है, जिसके बाद कबीर के शब्दों में मनुष्य मस्त घूमता है:

हरिरस पीया नानियां नाहिन मिटै खुमार।
मैमंता घूमत फिरै नाहिन तन की सार॥

परंतु यहां प्रसंग दूसरा है, यहां शिष्टता पर बल दिया गया है।

—चंद्रभाल ओझा, गोरखपुर

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकिस्तान का न्यूक्लीय कार्यक्रम

डा. जगदीश लूथरा

कुछ समय पूर्व छपी एक रिपोर्ट के अनुसार न्यूक्लीय शक्ति के मामले में संसार के विभिन्न राष्ट्रों की स्थिति इस प्रकार थी :

क. पांच न्यूक्लीय राष्ट्र, जिनके पास अपने डिलिवरी-संकाय हैं—अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन;

ख. सात लगभग न्यूक्लीय राष्ट्र—कनाडा, चेकोस्लोवाकिया, पश्चिम जर्मनी, भारत, इटली, जापान, स्वीडन;

ग. नौ अन्य राष्ट्र, जो प्लूटोनियम का उत्पादन कर रहे हैं या शीघ्र करने वाले हैं—बेल्जियम, पूर्व जर्मनी, इस्रायल, हालैंड, नार्वे, पाकिस्तान, स्पेन, स्विट्जर्लैंड, युगोस्लाविया।

भारत ने गत १८ मई को शांतिमय न्यूक्लीय विस्फोट करके परमाणु-क्लब में छठा स्थान तो पाया है; परंतु न्यूक्लीय शक्ति का दर्जा नहीं पाया है। फिर भी हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान को बेहद बौखलाहट हुई है और उसके प्रधान-मंत्री भुट्टो ने अपने न्यूक्लीय प्रोग्राम में हेरफेर करने का इरादा प्रकट किया है। आइये, जरा पाकिस्तान के न्यूक्लीय प्रोग्राम का जायजा लें।

पाकिस्तान परमाणु-ऊर्जा आयोग के अनुसार—'पाकिस्तान में बिजली की खपत १३० किलोवाट घंटे प्रतिव्यक्ति है, जो कि संसार में न्यूनतम है। इसका कारण है, परंपरागत ऊर्जा-स्रोतों की कमी। पाकिस्तान का फासिलीय (जीवाश्मी) ईंधन-भंडार, जो गैस के रूप में पाया जाता है, ८० करोड़ टन कोयले के बराबर है। इसलिए पाकिस्तान के पास न्यूक्लीय ऊर्जा से बिजली प्राप्त करने के सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं है।'

पाकिस्तान में न्यूक्लीय बिजली-उत्पादन संयंत्र (तारापुर बिजली स्टेशन की तरह का) कराची के निकट है और जुलाई १९७३ से काम कर रहा है। उसकी लागत ५० करोड़ रुपये आयी थी। उसका नाम है कराची न्यूक्लियर पावर प्लांट (कानुप)। उसे बनाने का काम कनाडा की जी. ई. कंपनी ने किया। (तारापुर अमरीकी जी. ई. ने बनाया है।) और अब वह पाकिस्तानी कर्मचारियों द्वारा चलाया जा रहा है। उसकी क्षमता १३७ मेगावाट है। सितंबर १९६६ में उसका निर्माण-कार्य शुरू हुआ था और अगस्त १९७१ में वह क्रांतिक (क्रिटिकल) हुआ। उसका औपचारिक उद्घाटन श्री भुट्टो ने नवंबर १९७२ में किया। आजकल वह स्टेशन १२५ मेगावाट शक्ति कराची ग्रिड को दे रहा है।

इसमें उप-उत्पाद (बाइ-प्राडक्ट) के रूप में प्रतिवर्ष इतना प्लूटोनियम प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है, जो २० किलोटन क्षमता वाले तकरीबन ३० बमों के लिए पर्याप्त है। यह बात ध्यान में रखिये कि पाकिस्तान के पास अभी तक ईंधन-छड़ों से प्लूटोनियम को अलग करने का कोई संयंत्र नहीं है और अभी तक तो ऐसा संयंत्र बनाने का उसका कोई इरादा नहीं है।

अपने प्रथम न्यूक्लीय बिजलीघर की सफलता देखकर पाकिस्तान वैसा दूसरा न्यूक्लीय बिजलीघर बनाने पर विचार कर रहा है। यह पाकिस्तान के उत्तरी भाग में बनाया जायेगा। उत्तरी क्षेत्र में मंगला बांध से ८०० मेगावाट बिजली प्राप्त होती है और २,२०० मेगावाट बिजली तारावेला बांध से प्राप्त होगी; फिर भी यह उस क्षेत्र की बिजली-मांग की तुलना में बहुत कम है। इसलिए ५०० मेगावाट का न्यूक्लीय बिजलीघर उसी क्षेत्र में लगाया जायेगा और वह १९८० तक बन जायेगा। पाकिस्तान का इरादा अगले १७ वर्षों में १५ न्यूक्लीय बिजलीघर बनाने का है। इस कार्यक्रम के अनुसार, २००० तक उस देश की कुल उत्पादित बिजली का १/३ भाग न्यूक्लीय शक्ति से प्राप्त होगा। अगर पाकिस्तान इस कार्यक्रम को क्रियान्वित कर ले, तो २००० ई. में उसके पास भारत से अधिक न्यूक्लीय बिजलीघर होंगे।

इसके अलावा उसका परमाणु-ऊर्जा आयोग एक ऐसे दुहरे उद्देश्य वाले न्यूक्लीय बिजलीघर की संभाव्यता पर कार्य कर रहा है, जो ४०० मेगावाट बिजली और प्रतिदिन १०० करोड़ गैलन ताजा पानी मुहैया कर सके। कराची के आस-पास के क्षेत्रों को ताजा जल और बिजली की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति इस संयंत्र का उद्देश्य है। इस काम में उसे अंतरराष्ट्रीय परमाणु-ऊर्जा आयोग (आइ. ए. ई. ए.) और अमरीका की ओकरिज नेशनल लैब तकनीकी सहयोग प्रदान करेंगे। आशा है, यह संयंत्र १९८० तक बन जायेगा।

सिंध और पश्चिम पंजाब की खुशहाली कृषि पर निर्भर है। इन दोनों प्रदेशों में भूगर्भ में खारे पानी के भंडार हैं। उन्हें उपयोग में बनाने के लिए पाकिस्तान का परमाणु-ऊर्जा आयोग कृषि-रिएक्टर (एग्रिकल्चरल रिएक्टर) लगाने के कार्यक्रम पर विचार कर रहा है, जिनकी सहायता से खारा पानी भूमि से निकालकर उसे खारेपन से मुक्त किया जा सकेगा। सैकड़ों मील लंबे मकरान की तटीय पट्टी में शक्ति-कृषि औद्योगिक संमिश्रों की स्थापना का प्रश्न भी विचाराधीन है।

किसी भी देश के परमाणु-ऊर्जा प्रोग्राम में न्यूक्लीय खनिजों की सप्लाई का प्रश्न भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इस बात को पाकिस्तान ने बखूबी समझा है। पाकिस्तान परमाणु-ऊर्जा आयोग न्यूक्लीय खनिजों का पता लगाने और उन्हें उपयोग में लाने की दिशा में काफी सक्रिय है। सिंध नदी की रेत में और डेरा गाजी खां की रेत में सक्रिय रेत में युरेनियम, जिरकान और अन्य उपयोगी खनिज पाये गये हैं। सुलेमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

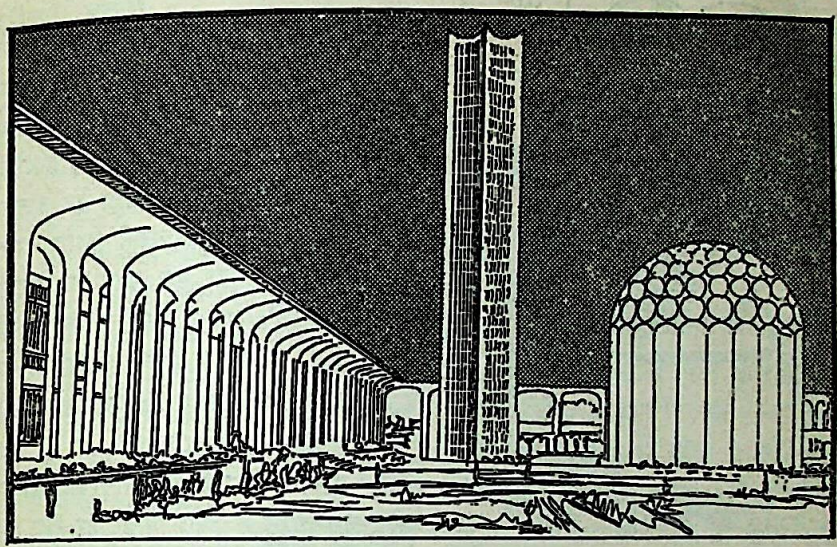

पिन्सटेक, जिसका रिएक्टर 'पार–I' पांच मेगावाट की क्षमता का है।

पर्वतमाला के पादगिरि (फूट हिल्स) में युरेनियम के भंडार पाये गये हैं। इस खोज-कार्य में पाकिस्तान को चेकोस्लोवाकिया का सहयोग प्राप्त हुआ।

अभी हाल में कनाडा ने घोषणा की है कि पाकिस्तान के प्रस्तावित युरेनियम ईंधन-निर्माण संयंत्र के लिए वह २ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा उधार देगा। यह संयंत्र बनाने में ३॥ करोड़ रुपये का खर्चा आयेगा और इसमें कानुप के लिए ईंधन-छड़ों का निर्माण होगा।

किसी भी देश के न्यूक्लीय कार्यक्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं उसके कर्मचारी। आइये, जरा उनके बारे में भी जानें। पाकिस्तान ऊर्जा आयोग द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, १९७२ में पाकिस्तान ऊर्जा आयोग के पास ३०० से अधिक प्रशिक्षित वैज्ञानिक, इंजीनियर और तकनीकी कर्मचारी थे। प्रत्येक कर्मचारी अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ है और न्यूक्लीय ऊर्जा संबंधी विज्ञान से परिचित। ज्यादातर कर्मचारियों ने अमरीका, ब्रिटेन और यूरोपीय देशों में प्रशिक्षण पाया है।

भारतीय परमाणु-ऊर्जा विभाग की तरह पाकिस्तान भी एक रिएक्टर स्कूल चलाता है, जो पाकिस्तान इंस्टिटयूट आफ न्यूक्लियर सायंस एंड टेक्नोलाजी (पिन्सटेक) में स्थित है। इसका संचालन इस्लामाबाद विश्वविद्यालय और पाकिस्तान परमाणु-ऊर्जा आयोग मिलकर करते हैं। सफल छात्रों को न्यूक्लियर टेक्नोलाजी में एम. एस. की डिग्री दी जाती है। विदेशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'आप अपने ही क्लब के सदस्य को तो निराश नहीं करेंगे, है न ?' (भारत के परमाणु-विस्फोट पर अमरीकी व्यंग्यचित्रकार हरब्लाक की टिप्पणी।)

छात्रों को भी इस स्कूल में दाखिला मिल सकता है। इसकी पढ़ाई का स्तर भारत के परमाणु-ऊर्जा के ट्रेनिंग स्कूल जैसा ही है।

भारत के भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, ट्रांबे (बंबई) की तरह पाकिस्तान का अपना एक उच्च वैज्ञानिक संस्थान है—पाकिस्तान इंस्टिट्यूट आफ न्यूक्लियर सायंस एंड टेक्नोलाजी (संक्षेप में पिन्सटेक) अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला का रूप ग्रहण कर रहा है और पाकिस्तान ऊर्जा आयोग के तकनीकी कार्यों के लिए सहयोग प्रदान कर रहा है। जगत्प्रसिद्ध वास्तुकार एडवर्ड डुरेल स्टोन ने इसकी इमारत का आकल्पन किया है। यहां पर न्यूक्लियर भौतिकी, इंजीनियरी, रसायनिकी इत्यादि के क्षेत्रों में शोध होता है। यहां पर अत्याधुनिक वैज्ञानिक यंत्रोपकरण आदि प्राप्त हैं। अप्सरा रिएक्टर की तरह का इसका अपना रिएक्टर पार-*I* (पाकिस्तान रिसर्च रिएक्टर-*I*) है, जो ५ मेगावाट क्षमता का है। (अप्सरा १ मेगावाट क्षमता का है।) यह रिएक्टर दिसंबर १९६५ में क्रांतिक हुआ। इसका उपयोग आइसोटोप-उत्पादन और अनुसंधान के लिए किया जा रहा है।

पिछले दस वर्षों में पाकिस्तान ने अपने १५ शोध और विकास केंद्रों पर तकरीबन ५० करोड़ रुपये खर्च किये हैं। लाहौर के केंद्र में १४ एम. ई. वी. न्यूट्रान जनरेटर और १ प्राकृतिक युरेनियम हल्के जलमंदित प्रणाली है। फलों और फसलों की नस्ल सुधार के लिए १९६५ में लायलपुर में एक विकिरण आनुवंशिकी संस्थान (रेडिएशन जेनेटिक इंस्टिट्यूट) और १९६३ में टन्डोजान में परमाणु-ऊर्जा कृषि अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गयी।

विकिरण-उपचार के चार केंद्र कराची, लाहौर, जमशोरो और मुलतान में स्थापित किये गये हैं। दो और केंद्र पेशावर और क्वेटा में स्थापित किये जायेंगे।

१२ए, अल्मोड़ा, अणुशक्ति नगर, बंबई-85

❀

हमें इसका हार्दिक खेद है कि प्रेस की कठिनाइयों के कारण यह अंक बहुत विलंब से छपा है। पाठक कृपापूर्वक क्षमा करें।

—प्रबंध-संचालक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विली ब्रांट की पदत्याग-कथा

अवधनंदन

पश्चिम जर्मनी की विदेश-नीति को सर्वथा नयी दिशा देने वाले चांसलर (प्रधान-मंत्री) विली ब्रांट ने मई के प्रथम सप्ताह में इस्तीफा दे दिया। यह कोई साधारण त्यागपत्र नहीं था। अप्रैल के अंतिम दिनों से ही, यूरोप के इस सर्वाधिक युवा-हृदय नेता के गिर्द विवादों, अफवाहों और प्रश्नचिन्हों और राजनयिक कुचक्रों की घटा घिर आयी थी। सबसे आश्चर्यजनक निर्मम व्यंग्य तो यह था कि जिस पूर्व जर्मनी के साथ संबंध सुधारने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया था, उसी के जासूस-तंत्र के कारण उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा।

चांसलर ब्रांट का एक विश्वस्त सहायक कर्मचारी पूर्व जर्मनी का जासूस होने के आरोप में गिरफ्तार हो गया था। ब्रांट और उनकी सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के विरोधियों ने इसे लेकर बवंडर खड़ा कर दिया। ब्रांट ने इस सारे प्रसंग के लिए अपनी 'राजनैतिक जिम्मेदारी' स्वीकार करके पदत्याग कर दिया।

चांसलर के जिस सहायक को लेकर यह सब कांड घटा, वह है गुंटर गिलामे। पूर्व जर्मनी से आये एक शरणार्थी के रूप में वह पचासे वाले दशक से ही पश्चिम जर्मनी में था और सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी की राजनीति में सक्रिय रुचि लेता था। धीरे-धीरे पार्टी के नेताओं से उसका घनिष्ठ संपर्क हो गया था। छह वर्ष पूर्व सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी पश्चिम जर्मनी में सत्तारूढ़ हुई, उसके बाद उसका सितारा तेजी से बुलंद हुआ और वह चांसलर ब्रांट का सहायक नियुक्त हुआ।

असाधारण सूझबूझ और कार्यदक्षता के बल पर गिलामे चांसलर ब्रांट का विश्वास-पात्र बन गया। इतना कि गत आम चुनाव में प्रचार-अभियान में ब्रांट ने उसे सदैव साथ रखा। फिर पिछली गर्मियों में वे छुट्टी बिताने गिलामे को भी अपने साथ लेते गये। इन दिनों गिलामे को चांसलर का सभी राजकीय पत्राचार निकट से देखने का अवसर मिला।

गिलामे (बायें) और विली ब्रांट

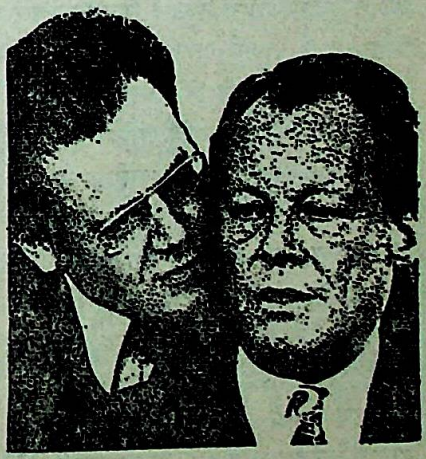

('न्यूजवीक' के मुखपृष्ठ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हीं दिनों अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन ने ब्रांट को एक गोपनीय निजी पत्र भेजा। इसमें उन्होंने पश्चिम यूरोप के विभिन्न देशों की सरकारों के साथ अमरीकी सरकार के मतभेदों की विस्तार से चर्चा की थी। गिलामे ने यह सभी जानकारी पूरे विस्तारपूर्वक पूर्व जर्मनी भेज दी।

छुट्टी-प्रसंग के बाद तो गिलामे इतना निश्चित हो गया कि चांसलर के विदेश-नीति संबंधी सलाहकार इगोन बहर की सुंदर सेक्रेटरी के साथ प्रणय-लीला में व्यस्त हो गया। इस प्रेमिका को लेकर वह फ्रांस भी गया।

फ्रांस में ही उसे पता चला कि पश्चिम जर्मनी के गुप्तचर उसका पीछा कर रहे हैं। हड़बड़ी में वह बोन लौट आया और पूर्व जर्मनी भागने की तैयारी करने लगा। लेकिन भाग पाये इसके पहले ही, ताक में बैठे गुप्तचर-विभाग ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

इस गिरफ्तारी के साथ ही पश्चिम जर्मनी के वे समाचारपत्र सक्रिय हो गये, जो ब्रांट के विरोधी थे। सर्वाधिक उत्साह दिखाया एक्सेल स्प्रिंगर के समाचारपत्रों ने। यह समाचारपत्र-समूह साम्यवादी देशों से सहयोग की नीति का कट्टर विरोधी रहा है और ब्रांट को साम्यवाद के आगे घुटने टेकने वाला एवं पश्चिम जर्मनी के न्यायपूर्ण दावों के प्रति विश्वासघातक मानता-कहता आया है। सो अवसर मिलते ही उसने चांसलर ब्रांट के बारे में एक के पीछे एक अफवाह फैलानी शुरू कर दी।

सबसे बड़ी अफवाह तो यही थी कि गिलामे को ब्रांट के निजी जीवन की छिटपुट प्रणय-प्रसंगों की बहुत-सी बातें पता थीं, जिन पर से वह कभी भी उन्हें ब्लैकमेल कर सकता था। यह भी कहा गया कि परायी औरतों के साथ ब्रांट के प्रेम-प्रसंगों के चंद अंतरंग फोटो उसने खींच लिये हैं।

दूसरी अफवाह के अनुसार, पचास वाले दशक के मध्य में पूर्व जर्मनी ने सुश्री सीवर्स नाम की एक युवती को विली ब्रांट पर जासूसी करने के लिए पश्चिम जर्मनी भेजा था। लेकिन सीवर्स खुद ब्रांट की मोहकता की शिकार होकर उनसे प्रेम करने लगी। पूर्व जर्मनी लौटकर भी जब उसने कोई जानकारी नहीं दी, तो उसे बारह वर्ष की कैद की सजा मिली। स्प्रिंगर के अखबारों का आरोप था कि सजा काटने के बाद सीवर्स पश्चिम जर्मनी लौट आयी और उसने ब्रांट संबंधी अपने संस्मरणों पर एक पुस्तक लिखने की घोषणा भी की। उसका मुंह बंद रखने के लिए ब्रांट की सरकार ने उसे १,१२,५०० डालर की भारी रकम दी।

विली ब्रांट ने त्यागपत्र के बाद कभी टेलिविजन पर दिये गये अपने भाषण में इन अफवाहों का खंडन किया। उन्होंने बड़ी अनुद्विग्नता से कहा—'यह कहना बेतुका है कि किसी भी जर्मन चांसलर को ब्लैकमेल किया जा सकता है। मुझे तो निश्चय ही नहीं किया जा सकता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लकिन उनके पदत्याग के बाद भी अनुदार-पंथी समाचारपत्र चुप नहीं हुए। उनका कहना था कि ब्रांट ने निकट भविष्य में प्रकाश में आने वाली जानकारियों से डरकर ही पदत्याग किया है।

यह कथन सर्वथा निराधार भी नहीं था। इन समाचारपत्रों और विरोधी दलों (क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन तथा क्रिश्चियन सोशल यूनियन) के पास इतनी कुछ जानकारी थी कि सोशल डेमोक्रैट हैरत में पड़ गये। गिलामे की गिरफ्तारी के बाद समूचे प्रकरण की छानबीन के लिए जो संसदीय समिति बनी, उसके सोशल डेमोक्रैट सदस्य यह जानकर परेशानी में पड़ गये कि सरकारी वकील के पास जितने तथ्य हैं, उससे भी अधिक तथ्यों की जानकारी विरोधी दलों के सदस्यों को है।

चांसलर के कार्यालय में पिछले कई वर्षों में जो कुछ घटा था, उसका क्रमवार विवरण विरोधी सदस्य पेश कर रहे थे और ब्रांट के विरोधी समाचारपत्र सरकार द्वारा सर्वथा गुप्त रखे गये तथ्यों को धड़ल्ले से प्रकाशित कर रहे थे। कैसे संभव हुआ यह सब ?

कारण एक ही था। पश्चिम जर्मनी का गुप्तचर-विभाग विरोधी दलों तथा सरकार-विरोधी समाचारपत्रों से मिला हुआ था। अर्थात् स्वयं विली ब्रांट की सरकार का घरेलू गुप्तचर-विभाग और विदेशी जासूस-विरोधी विभाग अपने चांसलर (प्रधान-मंत्री) के विरुद्ध ढेर सारे तथ्य जुटाते रहे थे और चांसलर के संकट में पड़ते ही ये दोनों विभाग अनुदारपंथी समाचारपत्रों तथा विरोधी दलों को सारी जानकारी देने में जुट गये।

अर्थात्, पश्चिम जर्मनी में जो कुछ हुआ वह वाटरगेट का विलोम था। मई के पहले-दूसरे सप्ताह में पश्चिम जर्मन गुप्तचर सेवा के इतने लोगों ने समाचारपत्रों से संपर्क किया कि ब्रांट-विरोधी तथ्यों और अफवाहों की मिजी-जुली खिचड़ी कहां पक रही है, इसके बारे में किसी को भी कतई संदेह नहीं रहा।

ब्रांट के विगत जीवन के निजी तथ्य विरोधियों को असल में मिले बावेरिया से। म्यूनिख के निकट पुलाश में स्थित संघीय

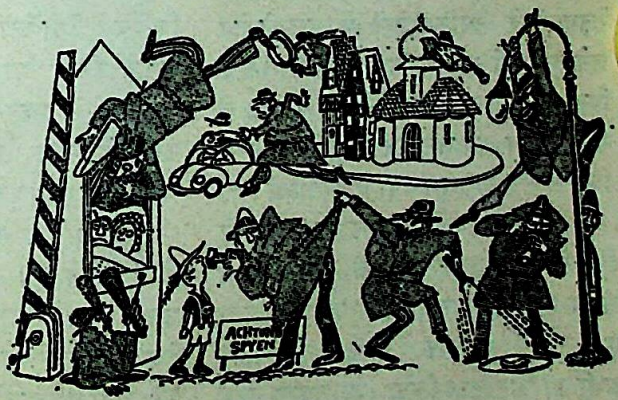

पश्चिम जर्मनी में जासूस-भीति ('टाइम' से साभार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

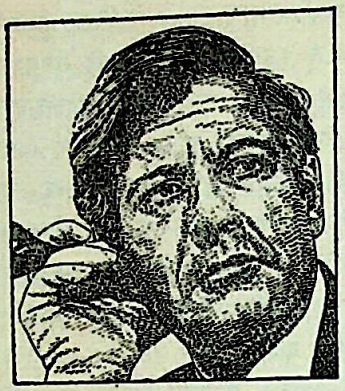

नये चांसलर श्मिट्

गुप्तचर सेवा के कतिपय असंतुष्ट अधिकारियों ने ये तथ्य अपनी फाइलों से निकालकर क्रिश्चियन सोशल यूनियन के नेता फ्रोंज जोसेफ स्ट्रॉस को दे दिये।

अब तो ब्रांट के निकटवर्तियों ने भी यह कबूल किया है कि देश की संघीय गुप्तचर सेवा ही चांसलर पर जासूसी कर रही थी। उदाहरण के लिए, जब चुनाव-अभियान पर निकले चांसलर की विशेष रेलगाड़ी के टेपरिकार्डरों में माइक्रोफोन लगे हुए पाये गये, तो यह कहा गया कि वे गिलामे ने लगाये होंगे। परंतु वस्तुतः ये माइक्रोफोन चांसलर पर जासूसी करने के लिए संघीय गुप्तचर सेवा ने लगाये थे।

तभी तो विली ब्रांट ने शिकायत की है—'संघीय गुप्तचर सेवा के लोग जितना समय मुझ पर जासूसी में लगाते थे, उसका एक अंश भी वे गिलामे पर लगाते, तो वह कभी का गिरफ्तार किया जा सकता था।'

गुंटर गिलामे के जासूस होने की बात पश्चिम जर्मनी के गुप्तचर-विभाग को काफी पहले से पता थी। लेकिन उसने उसे चांसलर से दूर रखने के बजाय, स्वयं ही पिछली गर्मियों में उन्हें सलाह दी कि वे गिलामे को भी अपने साथ नार्वे ले जायें। उसकी दलील यह थी कि वरना गिलामे को शक हो जायेगा और छानबीन का काम अधूरा रह जायेगा। सिर्फ यही नहीं, गुप्तचर विभाग ने चांसलर के गोपनीय कागजों को गिलामे की पहुंच से परे रखने के लिए भी कोई कार्रवाई नहीं की।

कहीं ऐसा तो नहीं था कि गुप्तचर-विभाग गिलामे को तब तक पकड़ना नहीं चाहता था, जब तक चांसलर को इस्तीफे के लिए विवश करने लायक तथ्य न जुट जायें? और जैसे ही उन्होंने पदत्याग किया, गुप्तचर-विभाग में बीयर की बोतलें खुल गयीं। स्वयं चांसलर के कार्यालय में ही कई कक्षों में उत्सव का वातावरण बन गया!

पश्चिम जर्मनी में अनुदारवादी क्रिश्चिय डेमोक्रैटों ने कोई बीस वर्ष तक शासन किया था। युद्धोत्तर सैनिक एवं असैनिक गुप्तचर-विभागों का गठन भी उन्हीं ने किया था। ये क्रिश्चिय डेमोक्रेट जर्मनी को महायुद्ध-पूर्व की अर्थात् १९३७ की स्थिति तथा सीमा-क्षेत्र में वापस लाने को प्रतिबद्ध हैं। यही स्वाभाविक था कि उनकी उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा का देश के गुप्तचर-विभागों के कर्मचारियों पर भी गहरा प्रभाव हो।

शुरू से ही ये लोग पूर्व जर्मनी के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छे संबंध बनाने पर बल देने वाले सोशल डेमोक्रैटों को देशद्रोही मानते थे। १९६९ में विली ब्रांट और सोशल डेमोक्रैट पार्टी की विजय को उन्होंने राष्ट्रीय संकट माना। सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप के देशों के साथ समझौता उनकी दृष्टि में सोवियत दबाव के आगे आत्मसमर्पण था।

सोशल डेमोक्रैट भी इस स्थिति से सर्वथा अपरिचित नहीं थे। सत्तारूढ़ होते ही उन्होंने संघीय गुप्तचर सेवा के कट्टर-पंथी तत्त्वों की छंटनी करने की भी कोशिश की थी। इसमें वे पूरी तरह सफल नहीं हुए; इससे कट्टरपंथी गुप्तचर अधिकारी विली ब्रांट तथा उनके दल के और भी पक्के दुश्मन बन गये। इनमें से कई ने क्रिश्चियन सोशल यूनियन के नेता स्ट्रॉस से निकट संपर्क स्थापित किया और १९७० में विली ब्रांट की पूर्वी नीति से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण दस्तावेज भी समाचारपत्रों को दे दिये।

इस प्रकार, विली ब्रांट के राजनैतिक जीवन की समाप्ति एक ऐसे राजनेता की कहानी है, जो सब ओर से जासूसों से घिर गया था; जिसे शत्रु देशों के ही नहीं, अपितु स्वयं अपने देश के जासूसों ने भी नहीं बख्शा और मौका पाते ही उसके राज-नैतिक जीवन का पटाक्षेप कर दिया।

किंतु यह विली ब्रांट का निजी पराभव ही है; उनकी नीतियों का पराभव नहीं। विली ब्रांट के उत्तराधिकारी, नये चांसलर हेल्मट श्मिट ने ठीक ही कहा है कि सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ तनाव-रहित संबंध की नीति एक विशिष्ट परि-स्थिति की अनिवार्य परिणति है, व्यक्तियों के बदलने से वह नीति नहीं बदलेगी।

*

डा. गोविंददासजी का जीवन निष्ठा का उज्ज्वल उदाहरण था। वे देश के बुजुर्ग राजनेता एवं स्वतंत्रता-संग्राम के धीर योद्धा थे। संसदीय जीवन की दीर्घता में वे चर्चिल व लायड जार्ज के समकक्ष थे। साहित्य-कार के रूप में उनका सृजन-कार्य विपुल और नानारूप था। सबसे बढ़कर वे हिन्दी के हितों के निर्भीक और जागरूक प्रहरी थे। उनके देहांत (१८ जून १९७४) से देश के सार्वजनिक जीवन के सत्व और शोभा में कमी आयी है। नवनीत-परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निवेदन

प्रिय बंधु,

कागज दिनो-दिन महंगा और अधिक दुर्लभ होता जा रहा है; इसकी चर्चा आप अखबारों में भी पढ़ रहे हैं। इस दोहरी मार का आर्थिक बोझ नवनीत-जैसी सीमित साधनों वाली तथा किसी पत्र-पत्रिका-समूह से न जुड़ी हुई स्वतंत्र पत्रिका के लिए बहुत दुर्वह है। विशेषतः इसलिए कि स्थिति शीघ्र सुधरेगी, इसके कोई आसार नहीं हैं।

इसलिए विवश होकर हमें जुलाई १९७४ से नवनीत की प्रत्येक प्रति का मूल्य २.५० रु. (ढाई रुपये) करना पड़ रहा है; और आठ पृष्ठ भी घटाने पड़ रहे हैं। वार्षिक चंदे की दर में जो परिवर्तन किया जा रहा है, वह इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है।

हमें आशा है, परिस्थिति की अनिवार्यता को देखते हुए आप इस मूल्यवृद्धि को स्वीकार करेंगे और नवनीत को पूर्ववत् आपकी सेवा करते रहने का अवसर देंगे।

—श्रीगोपाल नेवटिया
संचालक - नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान, मनोरंजन

सौभाग्य

अंतरीप की तरह हो जाओ, जिस पर आ-आकर लहरें टकराती-टूटती रहती हैं, मगर जो अचल खड़ा रहता है और सब ओर के पानी के आवेश को शांत करता रहता है।

क्या मैं इस बात से खिन्न हूं कि मेरे साथ यह सब हुआ ? नहीं तो ! बल्कि मैं तो प्रसन्न हूं कि यद्यपि यह सब हो गुजरा फिर भी मैं दुःखमुक्त बना हुआ हूं—न वर्तमान से पीड़ित, न भविष्य से आतंकित।

तो क्या यह सब जो हो गुजरा है, वह तुम्हें न्यायपूर्ण, उदारहृदय, संयत, विवेकी तथा दूसरों की निष्ठुरता-भरी राय और झूठ से अप्रभावित बने रहने से रोकेगा ?

यह भी याद रखो.....अपने को व्यग्र व चिंतित करने वाले प्रत्येक अवसर पर तुम्हें यह नियम लागू करना है—जो हुआ वह दुर्भाग्य नहीं है; बल्कि उसे शान से झेल लेना सौभाग्य है।

—मार्कस एंटोनियस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्याएँ और मुक्तज्ञान

चार्ल्स रॉथ

समस्याओं का आकार-प्रकार उतना ही होता है, जो हम उन्हें देते हैं। एक दृष्टांत से यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

मान लो कि मेज पर वीस चश्मे रखे हैं, जिनके लेन्स अलग-अलग किस्म के हैं—कोई चीज को बड़ा दिखाता है, कोई छोटा। वीस आदमियों से कहा जाता है कि एक-एक चश्मा अपनी आंखों पर चढ़ाइये और सामने का कपड़ा हटाने पर जो चीज दिखाई दे, उसका वर्णन कीजिये।

अव क्या होगा? ठीक कहा। हर एक चश्माधारी उस वस्तु की लंबाई-चौड़ाई आदि अलग-अलग बतायेगा—अपने-अपने चश्मे के हिसाव से।

जीवन का भी यही ढंग है। चश्मा है हमारी चेतना; वर्णनीय पदार्थ है समस्या। समस्या हमें कितनी बड़ी दिखाई देती है, यह हमारी चेतना पर निर्भर है—हमारे सोचने के ढंग पर, हमारे भय या विश्वास पर, हमारी निजी मानसिक प्रतिक्रिया पर।

अव जरा फिर उसी दृष्टांत पर वापस लौटें। अगर तुमने ऐसा चश्मा चुना है, जो चीज को बहुत बड़ा करके दिखाता है और उससे संत्रास होता है, तो तुम क्या करोगे भला? ठीक कहा, चश्मा बदल लोगे।

ठीक यही ढंग है अपनी वर्तमान समस्या की विशालता को घटाने का—अपनी चेतना को बदल डालो; अपने विचारों को, अपनी मनोवृत्ति को बदल डालो।

आओ, अपनी मानसिक दृष्टि को, अपनी मनोवृत्ति को बदल डालें। आओ, यह बात अपने को फिर से याद दिलायें कि हमें इसमें विश्वास है कि अवश्य कोई ऐसी ज्ञानपूर्ण सत्ता है, जिसने इस सारे चराचर संसार का सृजन किया है और यह ज्ञानपूर्ण सत्ता सदा सर्वत्र विद्यमान है—मुझमें भी विद्यमान है।

हम यह भी अपने को याद दिलायें कि यह ज्ञानपूर्ण सत्ता सर्वथा मंगलमय है; यह विनाशक नहीं, अपितु रचनात्मक शक्ति है; और यह सदा ही व्यवस्था, संतुलन, सौंदर्य, समरसता, शांति और स्वस्थता को जन्म देती है।

फूलो, फलो मेरे बिरवे!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन सत्यों को स्मरण करने के बाद हम अपनी वर्तमान समस्या को उन सत्यों से जोड़ें। अगर पहले हम यह सोचते थे कि हमारी सहायता करने वाला कोई नहीं है, तो अब हमें याद आयेगा कि यह ज्ञानपूर्ण सत्ता और शक्ति तो हमारी मदद करने को मौजूद है।

यीशु ने इसी सत्ता, शक्ति और सहायक को ही तो याद किया था और इसी को तो उन्होंने 'अंतस्थ पिता' कहा था।

अब तुम एक असहाय, एकाकी और असमर्थ मनुष्य की नजरों से नहीं देख रहे होगे अपनी समस्या को। अब तुम अपनी समस्या को उस चेतना के माध्यम से देख रहे होगे, जिस चेतना में यह आस्था भी निहित है कि कोई सर्वोपरि सत्ता है, जो सर्वत्र स्थित है और जो हमारी समस्या को सुलझाने में, हमारी सहायता करने में समर्थ है।

यह विश्वास भले राई के दाने जितना छोटा क्यों न हो, मगर यह समस्या को तुम्हारे जवाब का आरंभ है; क्योंकि जैसे यीशु ने कहा था, नियम यह है कि 'तुममें जितनी आस्था होगी, उतना ही तुम्हारे लिए किया जायेगा।'

मगर अक्सर होता क्या है ? हम कह तो देते हैं कि हमें ईश्वर में विश्वास है; मगर हम उसी तरह चिंता कर-करके अपने आपको असमय में कब्र के कगार पर पहुंचा लेते हैं, जैसे कि दुनिया में ईश्वर नाम की कोई चीज हो ही नहीं, जैसे हमारी मदद करने वाली और हमारी समस्या को सुलझाने वाली कोई सत्ता हो ही नहीं।

हम कहते हैं—'मुझे ईश्वर में विश्वास है, मगर वह मेरी सहायता क्यों नहीं करता? देखो, मैं कितनी मुसीबतों में फंसा हूं।'

यह कह देना आसान है कि मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं। मगर क्या तुम सचाई के साथ यह भी कह सकते हो कि 'ईश्वर में मैं इस हद तक विश्वास रखता हूं कि मुझे पूरा यकीन है कि उसकी शक्ति और उसका ज्ञान इस समस्या में भी मेरे भले के लिए काम कर रहे हैं, हालांकि यह समस्या डरावनी नजर आती है।' अगर तुम इस प्रकार का विश्वास अपने में विकसित करना शुरू करोगे, तो तुम्हारे देखते-देखते पहाड़-सी बड़ी समस्याएं गलकर राई के बराबर हो जायेंगी।

नियम यह नहीं है कि 'तुम आस्था की जितनी बात करोगे, उसी हिसाब से तुम्हारे लिए किया जायेगा।' नियम तो यह है कि 'जितनी तुममें आस्था होगी, उतना ही तुम्हारे लिए किया जायेगा।'

तो अपने में यह विश्वास विकसित करो कि ईश्वर तुम्हारी समस्या को सुलझाने में तुम्हारी सहायता कर रहा है। अपने दिल में यह बात खूब अच्छी तरह बैठा लो। और तुम देखोगे कि पंद्रह मिनिट पहले तुम जिस समस्या से जूझ रहे थे, वह छोटी और आसान हो गयी है। या कहीं इस बीच तुम्हारा ही आध्यात्मिक कद तो नहीं बढ़ गया ?

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जयचंद्र विद्यालंकार

सत्रहवीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण का प्रेरक

शिवाजी

शिवाजी का उदय भारत के राजनैतिक इतिहास में जिस नवजीवन को सूचित करता है, उसका आरंभ धार्मिक संशोधन से हुआ था, यह बात स्व. महादेव गोविंद रानडे के समय से सुपरिचित हो चुकी है। शिवाजी से पहले हिन्दुओं का स्वभाव आत्मरक्षा-मात्र-परक बन गया था। शिवाजी के समय से वे फिर विजेता बनते और आगे बढ़ने लगते हैं।

तब तक भारतीय साम्राज्य का ध्येय भारत में किसी के सामने था तो मुगलों के। सांगा के समान व्यक्ति को हिम्मत नहीं होती कि भारत के साम्राज्य का दायित्व अपने कंधों पर उठा ले। उसके पास दिल्ली जीतने का मौका आता है, तो उसे मानो झिझक होती है और वह बाबर के पास काबुल संदेश भेजता है कि आधा हिस्सा तुम ले लो और आधा मैं ले लूं! बाबर को पूरा लेने में झिझक नहीं होती। पर अकबर के सामने जो ध्येय था, वह एक तरफ भारत के सुदूर दक्षिण कोने तक जीतने का और दूसरी तरफ अपने पुरखों की भूमि तूरान को उजबकों से वापस लेने का। वह ध्येय उसके वंशजों को विरासत में मिला और वे बराबर उसके अनुसार चेष्टा करते रहे।

चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी के धार्मिक संशोधन के बाद हिन्दू पहले की तरह ठोकरें खाने को तैयार न थे। उनमें उदार शासन की मांग थी, और वैसा शासन उन्हें मिल गया। लेकिन इसके आगे उनके सामने अपना कोई राजनैतिक ध्येय न था। वे बल्ख और कंदहार जीतने जा सकते थे और गौहाटी और गोल-

जुलाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंडा पर चढ़ाई कर सकते थे; परंतु कुछ भी अपनी प्रेरणा से नहीं! वह विजयों और साम्राज्य की कल्पना मुगल सम्राटों की थी। राजपूतों की अपनी मनोवृत्ति तो ऐसी थी कि वे वहां तक भी जाने को तैयार न थे, जहां तक सांगा ने जाने की हिम्मत की थी।

खानवा की लड़ाई में बेहोश होने के बाद सांगा को जब चेतना आयी, तब वह इस बात पर झुंझलाया कि उसे युद्धक्षेत्र से दूर क्यों लाया गया, उसने प्रण किया कि बाबर को जीते बिना चितौड़ न लौटूंगा। उसके साथियों ने देखा कि उसके पीछे उन्हें भी चैन नहीं मिलेगा और इसलिए सन १५२८ के शुरू में जब सांगा बाबर को रोकने के लिए कालपी की तरफ बढ़ रहा था, उन्होंने विष देकर उसका काम तमाम कर डाला!

एक जाति के अर्थ में 'राजपूत' शब्द हमारे इतिहास में पहले-पहल १६ वें शतक में बरता जाने लगता है, और उस युग में हमारे समाज के जो वर्ग राजपूत कहलाने लगते हैं, उनके चरित्र की झलक इस घटना से मिलती है।

किंतु सत्रहवें शतक के मध्य में आकर हिन्दुओं में राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा फिर जाग उठती है, और उसे जगाने का श्रेय शिवाजी को है। जहां तक हिन्दू और मुस्लिम धर्मों के साथ-साथ रहने का प्रश्न है, शिवाजी अकबर की उदार नीति का अनुयायी और प्रशंसक था, उसने इस्लाम को दबाने की नहीं सोची। किंतु उसने पुराने आर्यावर्तियों में नया राजनैतिक जीवन फूंक दिया, नयी महत्त्वाकांक्षा जगा दी; और वह आकांक्षा केवल अपनी रक्षा की नहीं, विजय की थी।

यों तो कुंभा, कपिलेंद्र और सांगा में भी वह विजय की भावना मौजूद थी; वे भी केवल आत्मरक्षा के लिए नहीं लड़े, प्रत्युत खोयी हुई या नयी जमीनों को जीतने के लिए भी लड़ते रहे। उस दिशा में उनकी और शिवाजी की मनोवृत्ति में केवल मात्रा का भेद था—शिवाजी की उमंग उनसे अधिक ऊंची थी। इसके अतिरिक्त शिवाजी की विजय-भावना ने हिन्दुओं के बड़े भाग में नया जीवन जगा दिया, जिसे वे न जगा सके थे; इसलिए यह स्पष्टतः नयी लहर थी।

पानीपत की दूसरी लड़ाई (१५५६) के बाद एक शताब्दी तक मुगल साम्राज्य का गौरव बढ़ता ही गया था। मुगल सेना तब अजेय मानी जाती थी और मुगल राज्य-सीमाएं अनुल्लंघनीय। शिवाजी ने उस धाक को तोड़ दिया।

प्रचलित विश्वास है कि औरंगजेब की धर्मांध नीति की प्रतिक्रिया के रूप में हिन्दुओं की यह उत्थानचेष्टा जागी। घटनाओं का पौर्वापर्य ही इस विश्वास को भ्रममूलक सिद्ध करता है। शिवाजी १६४६ ई. में अपना कार्य आरंभ करता है, औरंगजेब

प्रस्तुत प्रसंग लेखक की पुस्तक 'भारतीय इतिहास की मीमांसा' से अनुमतिपूर्वक उद्धृत है। शीर्षक के साथ है धारवाड (कर्नाटक) के उत्तर में यादवाड में स्थित शिवाजी-प्रतिमा की ओके द्वारा अनुकृति।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके तेरह बरस बाद गद्दी पर बैठता है। यदि दोनों बातों में कारण-कार्य-संबंध जोड़ना हो, तो उलटे शिवाजी की उत्थान-चेष्टा को औरंगजेब का धर्मोन्माद भड़काने का कारण कहना चाहिये।

पर यह सच है कि दोनों बातों ने यद्यपि एक-दूसरे को उत्तेजित किया, तो भी दोनों में से कोई एक भी दूसरे का कारण नहीं थी। शिवाजी की चेष्टा का मूल कारण हिन्दुओं में नवजीवन का जाग उठना है। औरंगजेब के अपने पड़दादा से ठीक उलटा रास्ता पकड़ लेने के भी कुछ स्वाभाविक कारण थे।

महाराष्ट्र से पुनरुत्थान की भावना किस प्रकार भारत के दूसरे प्रांतों में पहुंची, सो देखना चाहिये। घटनाओं के पौर्वापर्य पर ध्यान देने से हम कारण-कार्य-संबंध को ठीक टटोल सकेंगे।

शिवाजी ने अपनी लड़ाई १६४६ ई. में शुरू की। आरंभ में वह बीजापुर के खिलाफ थी; १६५७ में उसने मुगलों से युद्ध छेड़ दिया। १६६५ में पुरंदर की संधि हुई, जिसके फलस्वरूप अगले बरस वह आगरा गया। वहां वह कैद हो गया, पर उसी साल कैद से भागकर तीन बरस उसने नयी तैयारी और संघटन में बिताये, और १६७० में फिर युद्ध छेड़ा, जो १६८० में उसकी मृत्यु होने तक जारी रहा। यों १६४६ से १६६५ तक शिवाजी के संघर्ष की पहली मंजिल है, और १६६६ से १६८० तक दूसरी।

उत्तर भारत में जो पहले छिटपुट विद्रोह हुए—व्रज में गोकला जाट का (१६६९), नारनौल में सतनामियों का (१६७२), पंजाब में गुरु तेगबहादुर का (शहादत १६७५)—वे सब शिवाजी के दूसरी मंजिल में अग्रसर हो चुकने के बाद ही हुए। छत्रसाल शिवाजी से सन १६७१ में मिलता है, और शिवाजी की शिक्षा के अनुसार बुंदेलखंड आकर लड़ाई छेड़ता है। शिवाजी की मृत्यु के समय तक वह भी बुंदेलखंड में एक छोटा-सा 'स्वराज्य' स्थापित कर लेता है।

छत्रसाल के पिता चंपतराय का संघर्ष (१६३९-४२, १६५९-६१) और पंजाब में गुरु हरगोविंद का संघर्ष (१६०६-४४) शिवाजी के उदय से पहले की घटनाएं हैं; पर वे आरंभिक बलिदान हैं, जिन्होंने धार्मिक संशोधन के साथ मिलकर पुनरुत्थान की भावना को जगा दिया था। पुनरुत्थान की संघटित चेष्टा पहले-पहल शिवाजी ने ही शुरू की, और भारत के दूसरे प्रांतों में उसी की प्रतिध्वनि हुई।

बुंदेलखंड के नेता ने शिवाजी से सीधी प्रेरणा पाकर १६७१ में लड़ाई छेड़ी थी। व्रजभूमि के जाटों की पहली संघटित चेष्टा सन १६८५ में सिनसिनी और सोगर गांवों के राजाराम और रामचेहरा के नेतृत्व में प्रकट हुई। राजाराम १६८८ में मारा गया, पर व्रज की यह पहली लड़ाई १६९०-९१ तक जारी रही।

सन १६८९ में संभाजी मारा जाता है और १६८९ से ९२ तक मुगल साम्राज्य अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंच जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीजापुर और गोलकुंडा की सल्तनतें जीती जाती हैं (१६८६–८७)। उत्तर-पश्चिम सीमांत पर पठानों ने १६७२-७७ में घोर विद्रोह किया था; उनका नेता खुशालखां खटक भी १६९० में पकड़ा जाता है। व्रज के विद्रोही गढ़ जीते जाते हैं और छत्रसाल को भी दबा दिया जाता है।

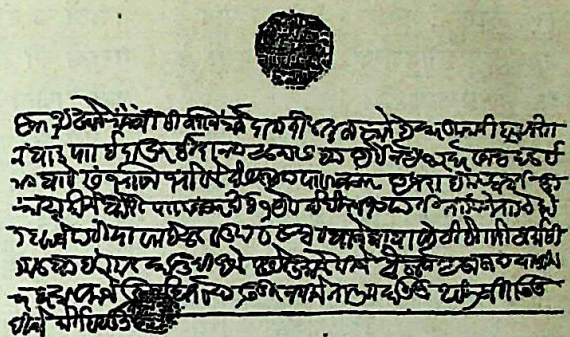

शिवाजी की हस्तलिपि तथा राजमुद्रा

परंतु महाराष्ट्र के छह-सात गढ़ औरंगजेब के काबू में नहीं आते और महाराष्ट्र के नेता स्वतंत्रता-युद्ध छेड़ देते हैं, जो सन १६९० से १७०७ ई. तक जारी रहता है। और मुगल साम्राज्य के चरम उत्कर्ष के समय जब १६९२ ई. में संताजी घोरपडे मुगल सेनाओं को परास्त करना शुरू करता है और अगले तीन बरस में उसके और धनाजी जाधव के नाम की धाक बैठ जाती है, तब समूचे भारत में उन विजयों की प्रतिध्वनि होती है। छत्रसाल धामुनी और कालंजर लेकर फिर लड़ाई छेड़ देता है, राजाराम के भतीजे चूड़ामन के नेतृत्व में व्रज के लोग फिर उठ खड़े होते हैं, और पंजाब में गुरु गोविंद-सिंह सिक्खों को सैनिक संप्रदाय बना देता है (१६९५)।

सिक्खों की यह पहली संघटित लड़ाई जो १७०१ ई. तक जारी रही, तथा बुंदेलखंड और व्रज की दूसरी लड़ाई जो १७०५-०७ तक जारी रही, स्पष्ट ही संताजी के कार-नामों से जगी थी। बंगाल-बिहार में शोभा-सिंह और रहीमखां का विद्रोह भी दक्षिण की घटनाओं का फल था।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसका छोटा बेटा आजम, शाहू को जाने देकर मराठा युद्ध को समाप्त करता है और पीछे आजम का भाई बहादुरशाह भी उस स्थिति को स्वीकार करता है। बहादुरशाह पंजाब में गुरु गोविंदसिंह से समझौता कर उसे अपनी सेवा में लेता है (१७०७), और राजपूतों, छत्रसाल और चूड़ामन से भी समझौता करता है। छत्रसाल और चूड़ामन भी शाही सेवा में आना स्वीकार करते हैं (अप्रैल-मई १७१० ई.)। २२ मई १७१० ई. को उसका राजपूतों से समझौता होता है, पर उसी दिन सिक्ख सरहिंद के फौजदार को मार डालते हैं, जिसकी खबर बादशाह को अजमेर में ३० मई को मिलती है।

बंदा के नेतृत्व में सिक्खों की यह दूसरी स्वाधीनता की लड़ाई छह बरस तक जारी रहती है। यह उस कसक के कारण थी, जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहली लड़ाई में अधिक कुछ न कर पाने के कारण गुरु गोविंदसिंह और सिक्खों के दिलों में रह गयी थी।

मराठे इस बीच अपने घरेलू युद्ध में लगे थे, और बुंदेले और व्रज वाले भी अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे। सैयद हुसेनअली के साथ दिल्ली आकर मराठे अपने 'स्वराज्य' को स्वीकार करवा लेते हैं, तो छत्रसाल और चूड़ामन भी फिर लड़ाई छेड़ देते हैं। चूड़ामन की आत्महत्या के बाद व्रज तो कुछ समय के लिए शांत हो जाता है, पर छत्रसाल को बाजीराव की प्रत्यक्ष सहायता मिलती है। उत्तर भारत पर मराठा बाढ़ आने पर सन १७३५ ई. के आस-पास सिक्खों के दल फिर सिर उठाने लगते हैं।

इसके बाद जब महाराष्ट्र पानीपत की भारी चोट खाने के बाद पेशवा माधवराव के नेतृत्व में फिर उठ रहा था, ठीक उसी समय हम पंजाब में सिक्खों को और नेपाल में गोरखों को राज्य स्थापित करते देखते हैं। अंत में, अंग्रेजों के मुकाबले में मराठों की हार का प्रभाव रणजीतसिंह पर इतना पड़ता है कि जब कभी उसके सरदार उसे अंग्रेजों से लड़ने को उकसाते हैं, वह उनसे कहता है—मराठों के दो लाख भाले कहां गये? और मराठों की असफलता का उदाहरण देकर उन्हें रोकता है।

इस सबसे प्रकट है कि नवजीवन की इस लहर में नेतृत्व बराबर महाराष्ट्र का था। लहर शुरू वहां से होती और बुंदेलखंड और व्रजभूमि होकर पंजाब और नेपाल तक पहुंचती थी।

किंतु यह बात ध्यान देने योग्य है कि 'गंगा के कांठे, सिंधु, गुजरात, आंध्र और तमिल मैदानों में—अर्थात् भारत के सर्वोत्तम उपजाऊ प्रांतों में—वह पुनरुत्थान प्रकट नहीं हुआ और इन्हीं प्रांतों में अंग्रेजों को पहले पहल पैर जमाने का अवसर मिल गया। जिन प्रांतों में पुनरुत्थान नहीं हुआ, वहां दिल्ली साम्राज्य के टुकड़े कुछ समय पीछे तक बचे रहे। यदि फ्रांसीसी और अंग्रेज बीच में न आ पड़ते, तो वे भी मराठों या सिक्खों के हाथ आने को थे।'

क्यों यह पुनरुत्थान की लहर महाराष्ट्र से बुंदेलखंड और व्रजभूमि होकर पंजाब और नेपाल तक पहुंची तथा दूसरे प्रांतों को इससे प्रभावित नहीं किया, यह प्रश्न अवश्य विवेचनीय है।

*

राजस्थानी वीरगीत

हूं बलिहारी राणियां भ्रूण सिखावण भाउ।
नालौ बाढ़ण री छुरी झपट्या जाण्यौ भाउ॥

—वह स्त्री धन्य है, जिसका पुत्र उत्पन्न होते ही नाल काटने वाली छुरी पर यह समझकर झपटे कि तलवार है, इसी से मुझे एक दिन काम लेना है।

प्रेषक : स्वामी ओंकारानंद

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म के साथ असहिष्णुता का संबंध मेरे विचार से तो बिलकुल नहीं बैठता। जो आदमी धार्मिक है, वह असहिष्णु कैसे हो सकता है? धर्म पुण्य है, असहिष्णुता पाप है। जो आदमी असहिष्णुता से ऊपर नहीं उठा है, वह अभी ठीक-ठीक धर्म के मार्ग पर भी नहीं आया है।

फिर भी इतिहास गवाही देता है कि धर्म के नाम पर जितना रक्तपात हुआ है, उतना रक्तपात जमीन के लिए नहीं हुआ, औरत के लिए नहीं हुआ है। दुनिया ऐसे-ऐसे अंधे युगों से गुजरकर आधुनिक काल में पहुंची है, जब आदमी एक हाथ में अपना धर्मग्रंथ और दूसरे हाथ में तलवार उठाये हुए फौज सजाकर चलता था और दूसरे धर्म वालों से कहता था कि अपना धर्म छोड़ो और हमारा धर्म स्वीकार करो, नहीं तो हम तुम्हारी गर्दन उड़ा देंगे।

धर्म के नाम पर गर्दनें यूरोप में भी उड़ायी गयीं और यहां हिन्दुस्तान में भी काटी गयीं। और हिन्दुस्तान में यह काम केवल मुसलमानों ने ही नहीं किया, बल्कि कुछ भ्रांत वेदवादियों ने भी जैनों और बौद्धों को काटा तो नहीं, फिर भी काफी कष्ट दिया। फिर भी भारत की मूल विचारधारा धार्मिक उत्पीडन के खिलाफ रही है और भारतवासी कभी भी तलवार उठाकर कहने को आगे नहीं बढ़े कि हमारा मत अगर नहीं मानोगे, तो हम तुम्हें जान से मार डालेंगे।

भारत आरंभ से ही धर्म को अहिंसा से संयुक्त मानता आया है और अहिंसा का

स्व. रामधारी सिंह 'दिनकर'

परम विकास यहां जैन धर्म के अनेकांतवाद में हुआ। अनेकांत की नयी व्याख्या मैं यह करता हूं कि कौन आदमी सत्य के मार्ग पर है और कौन नहीं है, इसका फैसला करना आसान नहीं है; किंतु एक लक्षण स्पष्ट है कि जो आदमी सत्य के मार्ग पर आ जाता है, वह किसी सीधी बात के लिए दुराग्रह नहीं करता। वह जहां भी होता है, उसके मन में चारों ओर एक पतली-सी शंका मंडराया करती है कि संभव है कि मैं गलत होऊं और मेरा प्रतिपक्षी ही ठीक हो।

इस सत्य के समझ लेने के कारण ही हिन्दू धर्म को कभी यह सूझा ही नहीं कि वह भी तलवार उठाकर दूसरों से कहे कि तुम हिन्दू बन जाओ, नहीं तो हम तुम्हारी गर्दन उड़ा देंगे। जबर्दस्ती दूसरों का धर्म-परिवर्तन करने में जो मूर्खता और वहशीपन है, उसे इस देश के लोग आरंभ से ही जानते रहे हैं। और भारत के इस मूल विश्वास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का प्रभाव यहां के साहित्य पर खूब पड़ा है।

चंदवरदाई पृथ्वीराज चौहान के मित्र और राजकवि थे। जब मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज का वध किया होगा, तब निश्चय ही चंदवरदाई को गोरी पर क्रोध हुआ होगा, उससे घृणा हुई होगी; किंतु जब चंदवरदाई अपना रासो ग्रंथ लिख रहे थे, उनके हृदय में इस्लाम के प्रति घृणा नहीं, प्रेम था; केवल प्रेम ही नहीं, वही श्रद्धा थी, जो श्रद्धा उन्हें अपने धर्म पर थी।

रासो के आमुख में चंदवरदाई ने बड़े ही अभिमान के साथ लिखा है कि इस ग्रंथ में मैं केवल पुराणों के ही नहीं, कुरान के सत्य का भी निरूपण कर रहा हूं।

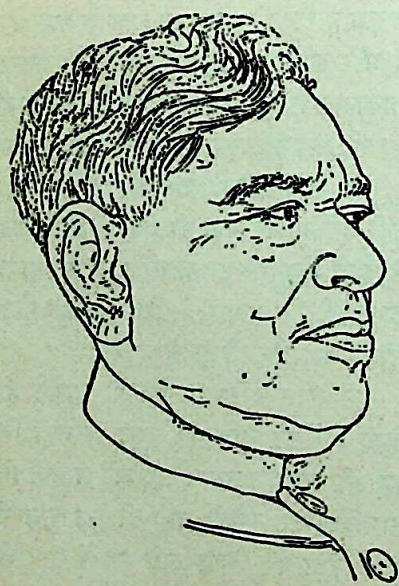

स्व. दिनकर
(चित्र : 'प्रकाशित मन' से साभार)

उक्ति धर्म विशालस्य राजनीति नवं रस
षट भाषा पुराणं व कुरानं कवितं मया।

सहिष्णुता का यह गुण केवल हिन्दू धर्म ने ही प्रदर्शित नहीं किया, बल्कि उसकी प्रतिध्वनि इस्लाम के हृदय से भी बहुत शीघ्र उठने लगी। राजा पृथ्वीराज का निधन सन ११९२ में हुआ था। उसके ठीक ६१ वर्ष बाद भारत में अमीर खुसरो का जन्म हुआ, जो भारतवर्ष के सर्वप्रथम राष्ट्रवादी मुसलमान थे। वे उच्च कोटि के सूफी साधक थे और शुद्ध अध्यात्म की स्थिति को पहुंच गये थे। जो साधक अध्यात्म के धरातल पर पहुंच जाता है, उसके लिए धर्म बेमानी हो जाता है, उसे एक धर्म और दूसरे धर्म में कोई भेद दिखाई नहीं देता।

खुसरो ने भारत की भूरि-भूरि प्रशंसा लिखी है और कहा है कि आदम और हौवा जब स्वर्ग से निकाले गये थे, तब वे इसी देश की जमीन पर उतरे थे। भारत के सामने खुसरो ने बसरा, तुर्की, चीन, खुरासान, समरकंद, मिस्र और कंदहार सबको तुच्छ बताया है। फिर उन्होंने यह भी लिखा है कि कोई मुझसे पूछ सकता है कि तू मुसलमान होकर हिन्दुस्तान की इतनी बड़ाई क्यों करता है? मेरा जवाब होगा कि सिर्फ इसलिए कि हिन्दुस्तान मेरी जन्मभूमि है और पैगंबर साहब का यह हुक्म है कि तुम्हारा जन्मभूमिप्रेम तुम्हारे धर्म में शामिल होगा।

जब भारत में धार्मिक विद्वेष बड़े जोर पर था, ठीक उसी समय यहां धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक एकता का आंदोलन भी बढ़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोर का उठा था। जैसा कि सबको विदित है, इसके आदि प्रवर्तक कबीरदास थे।

भारत में हिन्दू-मुस्लिम एकता के तीन बड़े नेता कबीरदास, सम्राट् अकबर और महात्मा गांधी हुए हैं। अकबर और गांधीजी का संबंध राजनीति से था, अतः वे किसी भी धर्म की आलोचना नहीं कर सकते थे। इन दोनों नेताओं ने अपनी कल्पना के धर्म में सभी धर्मों को स्थान दिया। अकबर ने दीने-इलाही का आविष्कार किया, जिसमें सभी धर्मों का सार रखा गया था। और गांधीजी ने अपनी प्रार्थना में सभी धर्मों की प्रार्थनाओं को स्थान दिया। किंतु कबीर तथा अन्य सैकड़ों संतों को राजनीति की तनिक भी परवाह नहीं थी। उन्होंने हिन्दूधर्म और इस्लाम, दोनों की खुल्लमखुल्ला आलोचना की और कहा कि ये दोनों ही धर्म के जाल में फंसकर रह गये हैं।

असली धर्म तो निगम धर्म है जिस पर सभी धर्मों को जाना चाहिये। निगम वह मूल है, जहां से सभी धर्मों का जन्म होता है। मगर आगम मूल का नहीं, शाखाओं का नाम है। जब तक मनुष्य निगम यानी धर्म के मूल में था, तब तक धार्मिक द्वेष का कहीं नामो-निशान नहीं था। जब से शाखाएं उत्पन्न हुईं और आदमी मूल छोड़कर शाखाओं पर बैठने लगा, तभी से संसार में धार्मिक कलह का आरंभ हो गया। इसलिए उपाय यह है कि आदमी शाखाओं से उतरकर मूल पर आ बैठे, क्योंकि मूल पर जाकर सभी धर्म एक हो जाते हैं। स्वामी दादू दयाल ने इन सारी बातों को केवल दो पंक्तियों में कह दिया :

अलह कहो, चाहे राम कहो।
डाल तजां, सब मूल गहो॥

और दादू से पूर्व खुद कबीर कह गये थे :

मूल गहै ते सब सुख पावे,
डाल पात में मूल गंवावे।

डालों और शाखाओं की कोई महिमा नहीं है। धर्म की सारी महिमा उसी मूल में है, यह उपदेश हिन्दी के मुस्लिम सूफी कवि चारी साहब ने भी दिया था :

मूल की खबरि नाहिं जासों यह भयो मुल्क,
वाको बिसारि भोंदू डारन अरुझायो है।

धर्म के नाम पर लड़ने वालों को भोंदू उपाधि स्वयं कबीरदास ने ही दी थी :

कहै कबीर सुनो रे भोंदू।
बोलनिहारा तुरुक न हिन्दू॥

कबीर साहब की तो महिमा ही अपार है। आज से पांच सौ साल पूर्व उन्होंने जान लिया था कि धर्म अध्यात्म से बहुत नीचे की चीज है। धार्मिक बनने से मनुष्य का पूरा विकास नहीं होता। पूरा विकास उसका तब होगा, जब वह अध्यात्म पर पहुंचेगा। अल्लाह और राम को लेकर लड़ते रहना धर्म का वितंडावाद है। आदमी वहां पहुंचने की हिम्मत क्यों नहीं करता, जो मुकाम अल्लाह और राम से भी ऊपर पड़ता है ?

सुर, नर, मुनि ओ औलिया
ये सब बलें तीर।
अलह राम की गति नहीं
तहं घर किया कबीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कबीर साहब कहते हैं कि मैं हदों को तोड़कर बेहद हो गया हूं। सीमाओं से निकलकर निस्सीम हो गया हूं; इसलिए धर्मों के ढांचों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। मैं सभी धर्मों से निकलकर सच्चे अध्यात्म की भूमि पर आ गया हूं, जहां बड़े-बड़े मुनि भी नहीं पहुंच सकते।

हद्द छाड़ि बेहद भया, किया मुन्नि असनान।
मुनि जन महल न पावई तहां किया विश्राम।।
हद्द छाड़ि बेहद भया, रहा निरंतर होय।
बेहद के मैदान में रहा कबीरा सोय।।

निस्सीमता का यही क्षेत्र, बेहद का यही मैदान ही तो धर्म-साधना का असली लक्ष्य है।

मध्यकालीनता की निंदा का रिवाज अब इस कदर आम हो गया है कि हम जिसकी भी भरपेट बुराई करना चाहते हैं, उसे 'मध्यकालीन' कह देना काफी समझते हैं। तब भी वे संत मध्यकालीन थे, जिन्होंने विज्ञान के उदय के बहुत पूर्व धर्म के किसी भी ढांचे में रहने से इन्कार कर दिया था और खुली घोषणा कर दी थी कि परम सत्य तक पहुंचने के लिए हिन्दू या मुसलमान बनकर जीने की कोई आवश्यकता नहीं है। गोरखनाथ ने कहा था :

हिन्दू ध्यावे देहरा, मूसलमान मसीत।
जोगी ध्यावे परम पद जहं देहरा न मसीत।।

और स्वामी दादू दयाल ने लिखा था :

दादू ना हम हिन्दू होंहिंगे ना हम मूसलमान।
षट दर्शन में हम नहीं, हम राते रहिमान।।

कबीर ने जो सपना देखा था, वह सपना नये युग में आकर स्वामी विवेकानंद को दिखाई पड़ा। इसीलिए उन्होंने कहा था कि यह काफी नहीं है कि हम सभी धर्मों को बर्दाश्त करें; उचित तो यही है कि हम सभी धर्मों को अपना ही धर्म समझें। कबीर के स्वप्न को विश्वकवि रवींद्रनाथ ने ठीक समझा था। इसीलिए उन्होंने घोषणा की थी कि धर्म को पकड़े रहो, अधर्म छोड़ दो। क्योंकि सभी धर्मों का सार आध्यात्मिकता है, इसलिए एक धर्म से दूसरे धर्म को भिन्न समझना निरी मूर्खता की बात है। धर्म तभी तक सही है, जब तक वह एक वचन है; बहुवचन होते ही वह झूठ हो जाता है। और जो कुछ कबीर, विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा, उसी के आधार पर डॉ. राधा-कृष्णन् ने अपनी आत्मा के धर्म की कल्पना प्रस्तुत की है।

महायोगी श्रीअरविंद ने मनुष्य की सभी समस्याओं पर गंभीर चिंतन किया था और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि सारी समस्याओं का मूल कारण यह है कि मनुष्य अपने मन का कैदी हो गया है। मनुष्य का उद्धार तब होगा जब वह मन के बंधन से छूट जाये, मन की सीमा लांघकर अतिमन की अवस्था में पहुंच जाये। अभी तो मनुष्य का धर्म भी मन के धरातल पर ही पड़ा हुआ है। जिस दिन मनुष्य मन की सीमा को लांघ जायेगा, उस दिन उसका धर्म भी रह रहकर अध्यात्म बन जायेगा और धार्मिक असहिष्णुता और विद्वेष से मनुष्य की सदा के लिए मुक्ति हो जायेगी।

('आकाशवाणी' से)

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'वसुंधरा का निर्माण करने के पश्चात् जब भगवान ब्रह्मा ने नाना अन्नों, फलों और फूलों के बीज बनाकर धरती पर छिड़क दिये, तब मनु महाराज को आगे करके पृथ्वीवासियों ने उनसे निवेदन किया कि प्रभो, मधुर रस वाले किसी ऐसे फल की सृष्टि कीजिये, जिसमें फलों की मिठास, फूलों की सुगंध और अन्नों की पौष्टिकता का समावेश हो और जो राजा-रंक सभी को सुलभ हो। ब्रह्माजी ने "एवमस्तु" कहा और अपने कमंडलु से एक बूंद जल देवताओं की परम-प्रिय भारतभूमि पर टपका दिया। तत्काल उस पुण्यभूमि में आम की नन्ही-नन्ही कोंपलें निकल आयीं। धरती के नर-नारियों ने आनंदोत्सव मनाया। इसलिए जो आम के वृक्ष रोपता है, वह इहलोक में रसना-सुख भोगकर मृत्यु के अनंतर ब्रह्मलोक में बिराजता है.....'

मुझे विश्वास है कि अष्टादश पुराणों के कर्ता भगवान वेदव्यास यदि 'पादप-पुराण' लिख पाते, तो उसके आम्रखंड का आरंभ कुछ ऐसे ही शब्दों में करते।

सचमुच आम भगवान बुद्ध के 'बहुजन-हिताय, बहुजनसुखाय' मंत्र का मूर्तिमंत रूप है। चमन के अंगूर, कंदहार के अनार, कश्मीरी सेब, नागपुरी संतरे खास लोगों के फल हैं; किंतु जब आमों की बहार आती है, तो इस देश का निर्धनतम नागरिक भी उससे वंचित नहीं रहता। इसीलिए मेरे एक रसज्ञ मित्र कहते हैं—'आम होना ही आम की खूबी है; मगर चमत्कार यह है कि आम होने पर भी वह दीवानेखास में तख्तेताऊस पर बैठने वाला फलों का शहंशाह है।'

आम से मनुष्य का प्रेम-परिचय बहुत पुराना है। लगभग ६,००० वर्षों से आम की कृषि हो रही है। संस्कृत के आदिकवि वाल्मीकि ने लंका के 'लताशतसमन्वित' 'आम्रवणों' (अमराइयों) का बड़ा मनोरम वर्णन किया है। वन्य अवस्था में आज भी बिहार-बंगाल में कहीं-कहीं आम के जंगल हैं। शृंगार-रसराज कालिदास ने पके फलों वाले आम्रवन से आच्छादित आम्रकूट पर्वत को धरती का पीला स्तन कहा है (मेघदूत १.१८)। आम्रकुंज ऋषि-मुनियों के आश्रमों का अपरिहार्य अंग होता था।

वस्तुतः आम वह फल है, जिसकी रसात्मकता ने हमारे साहित्य और हमारी कला को सबसे अधिक सराबोर किया है। वसंत-वर्णन तो आम और उसकी डाली पर कूजती कोयल की चर्चा के बिना पूरा हो ही नहीं

स्वर्ग से आया सुधा का जाम

डा. सुरेश व्रत राय

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकता। आम्र-मंजरी को कामदेव के पंच-बाणों में गिना गया है। कालिदास, अश्व-घोष, भारवि, माघ, बाणभट्ट, श्रीहर्ष आदि सभी संस्कृत कवि मानो आम की चर्चा के लिए बहाने ढूंढ़ते रहते हैं। मध्यकालीन हिन्दी कवि भी आम के संमोहन के वशीभूत रहे हैं। भारतेंदु-युगीन कवि 'प्रेमघन' तो आम के रस और बौर की सुगंधसे मदहोश हैं:

...किलकात कोइलैं मंजु रसालन
मंजरी सोर सुहात न सों,
घन प्रेम भरी तरु तैं लपटी
लतिका लदि नूतन पातन सों,
मन बौरें न कैसे सुगंध सने
इन बौरे बसंत की बातन सों।

सांची और भरहुत के पैनलों में तथा अजंता के भित्तिचित्रों में आम के फल का कलात्मक एवं मोहक चित्रण मिलता है। अमीर खुसरो कहा करता था कि आम हिन्दुस्तान के फलों का बादशाह है, जिसे कच्चा, पक्का अथवा किसी भी हालत में जायके के साथ खाया जा सकता है।

उद्यानों के व्यसनी मुगल बादशाह स्वभावतः इस फल पर न्योछावर थे। उन्होंने आमों के बड़े-बड़े बाग लगवाये। इस शाही शौक के कारण आम की कलमें काटने-मिलाने की कला में विकास हुआ और आम की अनेक नयी किस्मों ने जन्म पाया। अबुल फजल की 'आईने अकबरी' (१५९०) के अनुसार, अकबर को आम से इतना अधिक प्रेम था कि दरभंगा (बिहार) में उसने विविध जातियों के आमों के एक लाख वृक्ष लगवाये। इस उद्यान ने 'लाखीबाग' नाम से देश के सबसे बड़े आम्रकुंज के रूप में प्रसिद्धि पायी। 'आईने अकबरी' में आम के रूप, रंग, गुण आदि का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

गोवा के पुर्तगाली शासकों को भी आम ने विशेष रूप से आकृष्ट किया था। पश्चिम भारत की उम्दा किस्मों में से एक 'पायरी' उन्हीं के कलमीकरण-कौशल की देन है। और अल्फांसो (हापुस) के विकास का श्रेय दे अल्फांसो नामक एक फ्रांसीसी को है।

आज तो आम अंतरराष्ट्रीय फल बन गया है। ३२७ ई. पू. में सिकंदर को सिंधु की घाटी में आम की जानकारी मिली थी। पश्चिम का आम से शायद यही प्रथम परिचय था। १३३१ ई. के आस-पास अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी किनारे पर सोमाली प्रदेश में आम रोपे जाने लगे। १६ वीं शताब्दी तक आम की कलमें फारस की खाड़ी के तटवर्ती प्रदेशों में पहुंच गयी थीं। अगली सदी के अंत में वे यमन पहुंचीं। १६९०ई. में उन्होंने इंग्लैंड में पदार्पण किया। १८ वीं शताब्दी में पुर्तगाली लोग इसकी कलमें अपने साथ ले गये और उसी सदी में दक्षिण अमरीका के ब्राजील देश में आम के वृक्ष लगाये जाने लगे। सुदूर पूर्व में आम १६०० ई. में फिलिपाइंस पहुंचा।

स्पेनी व्यापारियों ने १७७८ ई. में आम की बागवानी शुरू की और मेक्सिको में इसके बड़े-बड़े बाग लगाये। १८३३ और १८६२ ई. के बीच इसकी कलमें फ्लोरिडा (सं. रा. अमरीका) एवं वेस्ट इंडीज गयीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा १८७० ई. के आस-पास हवाई द्वीप समूह तथा क्वींस लैंड (आस्ट्रेलिया) जा बसीं। आजकल आम मलय, इंडोनेशिया, फिलिपाइन्स, सं. रा. अमरीका आदि देशों के फलप्रेमियों में सुपरिचित है।

फलों की दुनिया का सिरमौर होने के बावजूद आम तुनकमिजाजी और नाज-नखरे से वरी है। हिमालय की तलहटी की शिलाखंड-मंडित भूमि हो या गंगा-सिंधु का समतल उर्वर मैदान, चाहे रत्नागिरी के 'घाट' हों, चाहे पूर्वी समुद्र-तट की पट्टी हो; चाहे खानदेश की काली मिट्टी हो, चाहे धारवाड की लाल मिट्टी या मद्रास की चिकनी कंकरीली भूमि—सर्वत्र वह उगने, पनपने व फलने को तैयार है। समुद्र-सतह से ३,००० फुट की ऊंचाई तक आम के वृक्ष आराम से पनपते हैं। ४० से लेकर ११० अंश फारनहाइट तापक्रम तथा ३० से ७० इंच तक वर्षा से उसका काम चल जाता है। वौर लगने से लेकर फल उतारने के समय को छोड़कर शेष समय वह अधिक वर्षा भी झेल जाता है।

रोपने के आठ-दस वर्ष पश्चात् कलमी आम के पेड़ में २० से लेकर २,००० तक तथा चूसने के आम के वृक्ष में १०,००० तक आम लगते हैं। अधिकांश वृक्ष हर दूसरे वर्ष अच्छी फसल देते हैं। उपज प्रायः ३ टन प्रति एकड़ से लेकर १४ टन प्रति एकड़ तक होती है। मगर इतनी अधिक और स्वादिष्ट उपज देते हुए भी आम स्वयं पेटू नहीं है। बाल्यकाल में अच्छी देखरेख और परवरिश पाकर बालिग हो जाने के उपरांत गोवर, पत्ते, राख, लकड़ी, हड्डी के चूरे, खली, सोडियम नाइट्रेट, नाइट्रोजन की खाद सवा मन से लेकर पांच मन प्रति एकड़ तक उसके लिए पर्याप्त होती है, जो लगभग दो-ढाई किलो प्रतिवृक्ष प्रतिवर्ष पड़ती है। वयस्क वृक्ष को प्रतिवर्ष खाद देना आवश्यक नहीं।

जलवायु एवं मौसम की विभिन्नता के कारण देश के विभिन्न भागों में आम की फसल अलग-अलग समय पर प्रारंभ होती है। बौर आने का क्रम पहले दक्षिण में आरंभ होता है, फिर उत्तर की ओर बढ़ता जाता है। कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों में अप्रैल से ही बाजार में आम के दर्शन होने लगते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार आदि में आम का मौसम जून से शुरू होकर अगस्त-सितंबर तक चलता है। यातायात की सुविधा के कारण इन महीनों में आमों का तूफानी दौरा सारे देश में चलता है। असल में शीत के महीने छोड़कर पूरे साल-भर बड़े शहरों के फल-बाजारों में आम नजर आता है।

आम का वैज्ञानिक नाम 'मैंगिफेरा इंडिका' है और वह 'मैंगिफेरा एल.' वंश का वृक्ष है। उसका मूल स्थान भारत-बर्मा-थाइलैंड प्रदेश है। उसकी जातियों-उप-जातियों की ठीक-ठीक गणना करना कठिन है। विष्णुसहस्रनाम की भांति उसकी लग-भग एक हजार जातियों के नाम मिलते हैं। इनमें से स्पष्ट ही कुछ नाम परस्पर पर्यायवाची हैं—जैसे, हापुस-बादामी; पायरी-

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं लखनऊ के निकट स्थित एक पॉटरी का कारखाना देखने गया था। इस कारखाने में बने टी-सेटों की सुंदरता पर मैं काफी समय से मुग्ध था। कारखाना देखकर भी प्रसन्नता हुई। लेकिन कर्मचारियों के अस्वस्थ और विकृत चेहरों को देखकर मन बेचैन हो गया। मजदूरों से बातचीत करने पर पता चला कि वहां बहुत-से मजदूरों को खून की कमी, दांतों के जल्दी गिर जाने, सीसक शूल, मानसिक उलझन, नींद की कमी तथा दिमागी गड़बड़ियों का शिकार होकर नौकरी छोड़ देनी पड़ी है। बाकी लोग बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य लेकर किसी तरह रोजगार से चिपके हुए हैं।

स्वतंत्रता आने के बाद से देश में उद्योग-धंधों का जाल बिछता जा रहा है; इससे

उत्पादन और रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है; परंतु साथ ही नाना प्रकार के रोग भी बढ़े हैं। इसका कारण है उद्योग-धंधों में काम में लाये जाने वाले विभिन्न पदार्थों के अवांछनीय शारीरिक प्रभाव।

उद्योग-धंधों में होने वाली इस विषाक्तता पर खोज करने के लिए वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् ने १९६१ में औद्योगिक विष-विज्ञान अनुसंधान केंद्र की स्थापना की, जो एशिया में अपने ढंग की पहली और अनूठी संस्था है। यहां पर रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान आदि के विशेषज्ञ तथा मनुष्यों और पशुओं के चिकित्सक मिलकर विषजन्य औद्योगिक रोगों का पता लगाते और उनका विस्तृत अध्ययन करते हैं।

यहां पर प्रयोगों और परीक्षणों के लिए गिनीपिग, बिल्ली, बंदर, कुत्ते, खरगोश आदि का उपयोग किया जाता है। परीक्षणाधीन पशुओं को उन धातुओं, गैसों, किरणों, रसायनों तथा प्राकृतिक द्रव्यों के संपर्क में लाया जाता है, जो उद्योगों में आम तौर पर इस्तेमाल किये जाते हैं। फिर उन प्राणियों के रोग-लक्षणों द्वारा अथवा शल्यक्रिया (सर्जरी) द्वारा यह पता लगाया जाता है कि इन चीजों का उन प्राणियों के फेफड़े, हृदय, गुर्दे, आंतें, मस्तिष्क, रक्त, त्वचा, हड्डी आदि पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है। चिकित्साशास्त्र की दृष्टि से सारे मामले का अध्ययन करके अंत में मनुष्य पर इनके असर को देखा जाता है। चूंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह खतरनाक काम है, इसलिए बहुत सोच-विचार और अनेक परीक्षणों के बाद केवल स्वयंसेवकों पर ही प्रयोग किये जाते हैं।

केंद्र के काम में व्यावहारिक कठिनाइयां भी आती हैं। बहुत-से उद्योगपति अपने यहां काम करने वालों की जांच की अनुमति आसानी से नहीं देते। उन्हें इसका भय होता है कि कहीं कर्मचारियों को हुई शारीरिक क्षति का हर्जाना देने को उन्हें बाध्य न किया जाये। दूसरी ओर, मजदूर भी रोगों को छिपाते हैं; क्योंकि उन्हें इसका डर बना रहता है कि बीमारी का पता चलने पर कहीं उन्हें नौकरी से न निकाल दिया जाये। इन कठिनाइयों के बावजूद यह केंद्र बहुत उपयोगी कार्य कर रहा है।

एक उदाहरण लीजिये। इंडियन डाई-स्टफ इंडस्ट्री, कल्याण (महाराष्ट्र) में काम करने वाले कार्मिकों के चेहरे और शरीर के अन्य खुले अंगों पर काले धब्बे पड़ जाते थे। कारण पता नहीं चलता था। लेकिन लखनऊ-केंद्र में खोज करने से पता चला कि रंजक पदार्थ (डाई) से निकलने वाले बैंजेथोन नामक तत्त्व के कारण ऐसा होता है। प्रयोग से सिद्ध हुआ कि एक निर्धारित मात्रा में एस्कार्बिक एसिड प्रतिदिन खिलाने से ये धब्बे खत्म हो सकते हैं।

खेती-बारी, गृहस्थी आदि में हम अनेक विषैली चीजों का इस्तेमाल करते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं। संभव है, ये चीजें कैन्सर, दिल के दौरे, मानसिक विकार, पेट के अनेक रोग आदि की उत्पत्ति में सहायक हों। इस बात का भी पता यहां लगाया जा रहा है।

प्लास्टिक की ही बात लीजिये। घर और बाहर सर्वत्र हमें प्लास्टिक की बनी तरह-तरह की चीजें प्रतिदिन इस्तेमाल करनी पड़ती हैं। प्लास्टिक के इस असीम उपयोग के प्रभावों पर अब वैज्ञानिकों का ध्यान गया है। यह आपने भी अनुभव किया होगा कि पानी जैसी उदासीन चीज भी प्लास्टिक के बरतन में रखने पर गंध देने लगती है। फिर खट्टे, मीठे व नमकीन पदार्थों पर इनका कुछ तो असर हो ही सकता है।

विदेशों में इस विषय में हुए खोजकार्य से पता चला है कि प्लास्टिक के अविचारपूर्ण उपयोग से छाजन, एक्जिमा, अन्य त्वचा-रोग, रतौंधी आदि हो सकते हैं। बात यह है कि प्लास्टिक बनाने में इस्तेमाल होने वाले 'प्लास्टिसाइजर' अम्लों, क्षारों तथा लवणों से अलग होकर नया पदार्थ बना लेते हैं, जो खाने की चीजों में मिलकर रोग उत्पन्न करते हैं।

पेट्रोल और पेट्रोल-जन्य पदार्थों के निरंतर संपर्क से पेट्रोल-पंप पर काम करने वाले श्रमिकों को कालांतर में कई घातक रोग हो जाते हैं। यही बात पेट्रोलियम शोध-कारखानों में देखी गयी है। खास तौर से इन कर्मचारियों को फुफ्फुस-धूलिमयता (न्यूमोकानियासिस) का डर बना रहता है। इनके जिगर पर भी प्रभाव पड़ता है। यही बात घरों में इस्तेमाल होने वाली गैस पर भी लागू होती है, यह गैस अत्यंत विषैली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, अतः इससे बचाव के उपाय लखनऊ-केंद्र में ढूंढ़े जा रहे हैं।

केरल में समुद्र के किनारे मोनाजाइट नामक एक बालूनुमा अयस्क खूब पाया जाता है। थोड़ी मात्रा में यह उड़ीसा, बिहार, राजस्थान आदि में भी मिलता है। इस अयस्क में थोरियम की मात्रा ९ प्रतिशत होती है; इसके अलावा इसमें लैंथेनम, सिरियम, प्रेसिडाइनियम, नियोडाइनियम आदि विरल मृदाएं भी पायी जाती हैं। संसार में सबसे अधिक थोरियम भारत में मिलता है और उसका परमाणु-भट्ठियों में उपयोग होता है। उसे साफ करने वाले श्रमिकों को मूर्च्छा, सांस में तकलीफ, एड़ी का दर्द, कमर टेढ़ी हो जाना, गंध व स्वाद का तेज लगना, गर्मी अधिक महसूस होना, खून में खराबी और कैन्सर सरीखी बीमारियों का भी अंदेशा रहता है। इनमें से ज्यादातर श्रमिकों व कार्मिकों में स्नायुरोग, ऊतकों का नाश, त्वचा की बीमारियां पायी गयी हैं।

श्रमिकों को इन बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए किये गये प्रयोगों से प्रकट हुआ कि 'चिलेट' यौगिकों का नियमित-नियंत्रित इस्तेमाल इसमें बहुत सहायक होता है। ये रासायनिक पदार्थ शरीर पर कोई घातक असर नहीं डालते और शरीर से मल-मूत्र के साथ बड़ी आसानी से निकल आते हैं। सोडियम साइट्रेट, इ.डी.टी. ए., सी.डी.टी. ए., एस्पोरटिक एसिड तथा अन्य अमीनो एसिड इसके उदाहरण हैं। शरीर में अपनी क्रिया करते हुए ये रासायनिक पदार्थ वहां पहुंचे हुए विरल मृदाओं के कणों को अपने साथ जोड़कर नया पदार्थ बना लेते हैं, जो मल-मूत्र के साथ बिना किसी दिक्कत के निकल आते हैं।

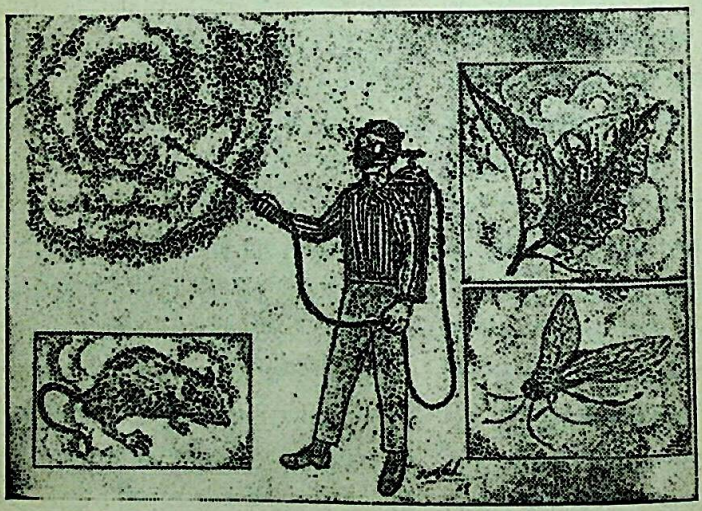

छापाखानों में काम में लाये जाने वाले अक्षर सीसे (लेड) के बने होते हैं। सीसे का इस्तेमाल पॉटरी, जहाजों - मोटरों आदि की रंगाई में भी होता है। सफेदा, सिंदूर, लेडक्रोमेट, लिथार्ज आदि में भी सीसा होता है। इनके जलाने

कीटनाशक आदि के छिड़काव से भी मनुष्यों व पशुओं में विषसंचार संभव है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय

काम लेने वालों को सीसा-विषाक्तता का खतरा रहता है। लखनऊ-केंद्र में इस पर तेजी से काम हो रहा है।

भारत में मैंगनीज अयस्क बड़ी मात्रा में पाया जाता है और इस उद्योग में लगभग ६९ हजार आदमी रोजी कमा रहे हैं। इन्हें मैंगनीज-विषाक्तता का खतरा बना रहता है, जिसमें तंत्रिका-विकार तथा मानसिक विकृतियों की ज्यादा संभावना रहती है। इससे त्राण पाने के लिए चिलेट यौगिकों का इस्तेमाल सुझाया गया है।

नाभिकीय ऊर्जा, एक्स-रे, रेडियम जैसे विकिरणशील पदार्थों से रक्तरोग, त्वचा-रोग, रक्तकैन्सर आदि हो जाते हैं। इन चीजों के संपर्क में बार-बार आने वाले डाक्टरों, वैज्ञानिक कर्मियों आदि को उनके दुष्परिणामों से बचाने की दिशा में बहुत कुछ कार्य हो रहा है।

औद्योगिक कार्यों में संभावित विषाक्तताओं को पहचानना, उनके कारणों का विवेचन और उनके निवारणोपायों की खोज देश की आर्थिक उन्नति और कार्मिकों के कल्याण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय है। लखनऊ का केंद्र इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

केंद्र के निदेशक डा. सिब्ते हसन जैदी हैं और इसमें इस समय ५० से ज्यादा वैज्ञानिक, पशुचिकित्सा-विशेषज्ञ तथा कुशल चिकित्सक काम कर रहे हैं। अभी तक यह केंद्र ऐतिहासिक छतरमंजिल में था; अब इसे २० लाख की लागत के नये भवन में स्थानांतरित कर दिया गया है। कहना चाहिये, अब यह महत्त्वपूर्ण संस्था शैशव को पार करके यौवन में पदार्पण कर चुकी है।

—५३, छोटा चांदगंज, लखनऊ—७

*

विस्कान्सिन मेडिकल कालेज (मिलवाकी, अमरीका) के शोध-प्राध्यापक डा. आर्नाल्ड जे. क्विक ने एक नये विटामिन 'क्यू' के पता लगाने का दावा किया है। डा. क्विक का कहना है कि यह नया विटामिन रक्त को जमाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। उन्होंने सोयाबीन से निकाले गये एक पदार्थ से पचीस मरीजों का उपचार किया, जिसमें विटामिन 'क्यू' था; फिर उनके रक्त के जमने के गुणों का अध्ययन किया, तो उपर्युक्त बात की पुष्टि हुई।

मगर डा. क्विक मजाक में कहते हैं कि घर में सोयाबीन लाकर जमा करने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि शरीर को इस विटामिन की बहुत थोड़ी मात्रा ही चाहिये। वे एक और विषय में भी सतर्क हैं.....'मैं नहीं चाहता कि इसका दुरुपयोग हो। यह कोई सर्वौषध नहीं है, जैसा कि विटामिन सी के बारे में कुछ लोगों ने दावे किये हैं।'

डा. क्विक ने ८० वर्ष की उम्र में यह खोज करके इस विचार की निर्भ्रांतता को चुनौती दी है कि आविष्कारक बुद्धि का यौवन से विशेष संबंध है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्यदीप

शेष सब चीजों की अपेक्षा जीवन और हास्य के रसास्वादन के लिए शुद्धता और तप आवश्यक हैं। हर उड़ते पंछी पर ध्यान जाये, हर पत्थर और जंगली पौधे का नाम प्रयत्नपूर्वक सीखा हो, मन में सूर्यास्तों की चित्रशाला हो—इसके लिए अनुशासनपूर्ण आनंद और कृतज्ञता की शिक्षा आवश्यक है।

स्वस्थचित्त मनुष्य की एक ही दोषरहित परिभाषा हो सकती है—वह ऐसा मनुष्य है, जिसके दिल में शोकांतिका और दिमाग में प्रहसन एक साथ रह सकते हैं।

घटिया गीत-नाटिका रचकर आप अपने को तसल्ली करा सकते हैं कि वह बहुत बढ़िया गीत-नाटिका है; खराब मूर्ति गढ़कर आप मान सकते हैं कि आप माइकलेंजेलो से बढ़कर हैं। लेकिन अगर आप युद्ध हार गये हैं, तो यह नहीं मान सकते कि आप जीते हैं; यदि आपके मुवक्किल को फांसी दे दी गयी है, तो आप यह दिखावा नहीं कर सकते कि आपने उसे बचा लिया है।

पुराने धर्मभक्त नैतिक सत्य के नाम पर लोगों को शारीरिक यंत्रणा देते थे; आज के यथार्थभक्त भौतिक सत्य के नाम पर लोगों को नैतिक यंत्रणा देते हैं।

निरंकुश शासन की पापिष्ठता और शोचनीयता यह नहीं है कि वह जनता से प्यार नहीं करता, बल्कि यह है कि वह उसपर विश्वास नहीं करता।

सत्य कल्पना से अधिक कौतुकमय तो होगा ही; क्योंकि कल्पना मानव-मस्तिष्क की उपज है वह उसके अधिक अनुकूल पड़ती है।

—जी. के. चेस्टरटन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान और विज्ञान

लंदन के माडस्ले अस्पताल तथा इंस्टिटयूट आफ साइकिएट्री से संबंधित डा. पीटर फेन्विक का यह वैज्ञानिक लेख प्रामाणिकता के लिए पठनीय है।

मंत्रध्यान दीर्घकाल से अनेक पूर्वी धर्मों का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है; मगर उसका स्वरूप इतना जटिल रहा है कि पश्चिमी जीवन-रीति के साथ उसका मेल नहीं बैठता था। हक्स्ले के 'संवेदन के द्वार' (डोर्स आफ पर्सेप्शन) के विविध मार्गों की प्रतीति पश्चिम को या तो एल-एस-डी जैसे चित्तभ्रामक औषधों ने करायी है, या इस बोध ने कि प्रकृति का भौतिक आधार देखने वाले के दृष्टिकोण पर निर्भर होता है।

पिछले दस-एक वर्षों में मनोविस्तरण के अधिक सरल उपायों का, जैसे कि महर्षि महेश योगी की विधि का (जिसे 'ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन' कहते हैं) काफी प्रचार हुआ है। इनमें यह लाभ है कि ये सीखने में आसान हैं—ढाई मिनिट में सिखाये जा सकते हैं—और प्रतिदिन सुबह-शाम सिर्फ बीस मिनिट इनका अभ्यास करना पड़ता है।

ध्यान की इन अवधियों में ध्यानकर्ता आंखें बंद करके बैठता है और अपना ध्यान आंतरिक रूप से दोहरायी जाती हुई ध्वनि अर्थात् मंत्र पर तब तक केंद्रित करता है, जब तक मन निश्चल न हो जाये। यह दावा किया गया है कि निश्चलता की इस अवस्था में स्नायुतंत्र की क्रिया में ऐसा परिवर्तन हो जाता है कि दैनिक जीवन के दबाव निष्प्रभाव हो जाते हैं और व्यक्ति की सृजन-शक्ति ताजी हो जाती है। अनेक लोगों का दावा है कि ध्यान के परिणामस्वरूप उनमें लाभकारी परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों में से कुछ हैं कार्यक्षमता में वृद्धि और अमनचैन की अनुभूति—अर्थात् बीसवीं सदी के जीवन के दबावों को झेलने की क्षमता में वृद्धि।

ब्रिटेन, अमरीका और जर्मनी के कई वैज्ञानिक-दलों ने यह पता लगाने की ठानी कि ये जो मानसिक परिणाम बताये जाते हैं, इनके सहचारी शरीरक्रिया-संबंधी परिवर्तन भी होते हैं या नहीं। सन १९६८ में मैंने और मेरे कुछ साथियों ने लंदन के माडस्ले अस्पताल में चंद परीक्षणाधीन व्यक्तियों के मस्तिष्क की विद्युत-क्रिया की जांच की। ये लोग एक वर्ष से ज्यादा समय से ध्यान कर रहे थे।

मस्तिष्क-तरंगों की रिकार्डिंग में ध्यान के दौरान स्पष्ट परिवर्तन नजर आये। वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पैटर्न' केवल ध्यानावस्था से ही संबंधित जान पड़े। यद्यपि परीक्षणाधीन व्यक्ति अभी सतर्क था, तथापि उसकी विद्युत-क्रिया में ऐसे भी कुछ परिवर्तन नजर आये, जो प्रायः हल्की नींद से संबंधित माने जाते हैं।

सहज आराम की अवस्था में जब परीक्षणाधीन व्यक्ति आंखें बंद किये शांत बैठा हो, उसके सिर के पिछले हिस्से में एक सुस्पष्ट लय पायी जाती है। इसे आल्फा लय कहते हैं। यह सूचित करती है कि परीक्षणाधीन व्यक्ति जागा हुआ है और सतर्क है। उनींदापन शुरू होने पर आल्फा लय गायब हो जाती है और समूचे कार्टेक्स (मस्तिष्क की वाह्य कोशिका-परत) में थेटा लय प्रकट होती है, जो कि आल्फा की तुलना में विलंबित होती है। यह हल्की नींद का पैटर्न है। ध्यानावस्था की दिलचस्प और असामान्य बात यह है कि उसमें ये दोनों पैटर्न साथ-साथ पाये गये हैं।

इसका भी कुछ प्रमाण मिला कि ध्यानावस्था में कार्टेक्स की उत्तेजनशीलता बढ़ जाती है; हल्की नींद की अवस्था में भी ऐसा ही होता है। इस पर से हमने कहा कि तब तो ध्यानावस्था में अन्य शरीर-क्रिया-तंत्रों में क्रियाशीलता घट जाती होगी। और इसकी पुष्टि १९७० में हुई, जब हार्वर्ड मेडिकल स्कूल (अमरीका) के हर्बर्ट बेन्सन और राबर्ट कीथ वैलेस ने अपनी खोजों का परिणाम प्रकाशित किया। इसमें दिखाया गया था कि ध्यानावस्था में शरीर की आक्सिजन-खपत गिरकर नींद की अवस्था की अपेक्षा भी काफी नीचे पहुंच जाती है। यही बात हृदय-गति के विषय में भी पायी गयी। उन्होंने यह भी पाया कि भुजाग्र में रक्त का संचरण बढ़ जाता है और रक्त में लैक्टिक एसिड की मात्रा घट जाती है। ये दोनों बातें सूचित करती हैं कि शरीर की आपोआप होने वाली क्रियाओं का नियंत्रण करने वाले स्वायत्त स्नायुतंत्र (आटोमैटिक नर्वस सिस्टम) का उत्तेजना-स्तर गिर गया है।

बेन्सन और वैलेस के खोज-परिणामों ने दिखाया कि ध्यान स्नायुतंत्र में शरीर-क्रिया संबंधी परिवर्तन करने में समर्थ है, और उससे भी बढ़कर, वह चिंता को भी घटा सकता है। उन्होंने ध्यान तथा आटो-सजेश्चन एवं संमोहन (हिप्नॉसिस) का भी अंतर उभारकर दिखाया। आटो-सजेश्चन और संमोहन में केंद्रीय स्नायुतंत्र की क्रिया में बहुत हल्का-सा परिवर्तन होता है।

यह भी देखा गया कि ध्यान के बाद भी केंद्रीय स्नायु-संस्थान की क्रिया में अंतर रहता है। टेक्सास विश्वविद्यालय (अमरीका) में डेविड ओर्म-जान्सन ने साइको-गैल्वेनिक (अर्थात् स्वायत्त स्नायुतंत्र की क्रिया से त्वचा की विद्युत-रोधकता में आने वाले अंतर संबंधी) जांच करके यह दिखाया कि ध्यान करने वालों में दूसरों की अपेक्षा कम अंतर पड़ता है और उनकी तरंगों की आकृतियां भी कम जटिल होती हैं। इससे उन्होंने यह परिणाम निकाला कि ध्यान से स्वायत्त स्नायुतंत्र में स्थिरता आती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान संबंधी अनेक जांचों के परिणामों की पुष्टि होना आवश्यक है, मगर इसका प्रमाण मौजूद है कि ध्यान से केंद्रीय स्नायुतंत्र की क्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है और मानसिक और शारीरिक कार्यक्षमता में स्पष्ट ही सुधार होता है, जिसे मापा जा सकता है।

इस प्रकार की स्नायवीय शरीरक्रिया-संबंधी परिवर्तनों के परिणाम से मनोवृत्तियों और व्यवहार में भी परिवर्तन होना चाहिये; और ऐसा लगता है कि परिवर्तन होता भी है। ध्यान करने वाले कहा करते हैं कि वे जब ध्यान नहीं करते थे, तब की तुलना में अधिक प्रसन्न और तनाव रहित रहते हैं। बेन्सन और वैलेसने १,८६२ व्यक्तियों से प्रश्नावली भरवाकर इस बात की जांच की कि ध्यान करना सीखने के बाद तीव्र और मंद मादक द्रव्यों, मदिरा और तंबाकू के सेवन में कितनी कमी आयी। सभी वर्गों में यहां तक कि अफीमचियों में भी आश्चर्यकारीक मी देखने में आयी। अन्य प्रचलित उपायों से जितनी आशा की जा सकती है, उससे कहीं ज्यादा कमी हुई थी।

स्टैनफर्ड रिसर्च इंस्टिटयूट के डा. लियोन ओटिस ने १९७२ में एक कंट्रोल-युक्त शोध कार्यक्रम में ५७० ध्यानियों की जांच की। इनमें ४९ अफीमची थे और उनमें से ३५ ने छह महीने के ध्यान का अभ्यास करने के बाद अफीम छोड़ दी।

अगर इन आंकड़ों की पुष्टि अन्य जांचों से हो सके, तो ध्यान नशाखोरी के इलाज का महत्त्वपूर्ण साधन बन सकेगा। ध्यान के इस पहलू से प्रभावित होकर ही अमरीकी स्थलसेना और स्वास्थ्य विभाग ने ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन के अध्ययन के लिए रकम दी है।

अभी तक जो विपुल प्रमाण मिले हैं, अगर उनकी पुष्टि हो गयी, तो संभव है केंद्रीय स्नायुतंत्र और मन के कार्य-कलाप के संचालन में अवधान का कितना महत्त्व है, यह दिखाने के द्वारा ध्यान चिकित्सा (विशेषतः दबावजन्य रोगों की चिकित्सा) और मनोविज्ञान में काफी योगदान कर सकेगा।

जरूरी है कि चिकित्सकों, समाज-सेवकों और मानस-चिकित्सकों आदि पेशेवर लोगों को पूर्वी दर्शन के बोझ के बिना ध्यान की तकनीक सीखने का अवसर प्राप्त हो सके, ताकि वे ध्यान के प्रभावों का अधिक सुनिश्चित अध्ययन कर सकें और उपचार-साधन के रूप में उसकी उपयोगिता को आंक सकें।

❀

हर आदमी की दो जेबें होनी चाहिये, जिससे आवश्यकता के अनुसार वह उनमें हाथ डाल सके। दायीं जेब में ये शब्द होने चाहिये–'दुनिया मेरे लिए बनायी गयी है।' और बायीं जेब में ये शब्द कि 'मैं माटी हूं, और धूल हूं।'

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्ति की प्रक्रिया

देखने से आंख मिलती है
सुनने से कान
पांव चलने से मिलते हैं
हाथ करने से निर्माण
प्राण मिलते हैं
जीते चले जाने से
प्रकाश मिलता है
दिन-रात जले जाने से !

इतनी निराशा !

कुछ वृक्षों के तने
खोखले हो जाते हैं
मगर खो नहीं जाते तब भी
उनकी कोंपलों
और पत्तों के रंग
ऐसा ही कुछ
मेरे देश का हो गया है
खोखला हो गया है इसका तना
और पर्याप्त नया रस
नहीं बनता अब इसमें
निशाचर पंछियों ने
कोटर बना लिये हैं उसमें
वे रात-भर शिकार
करते हैं और कोटरों को
हड्डियों से भरते हैं
कोटरों में जब हड्डियां
बहुत ज्यादा हो जायेंगी
तब ये निशाचर पंछी
कहीं और चले जायेंगे
मगर तने तब भी
रस से नहीं भरेंगे !
क्या ठीक है इतनी निराशा ?
क्या कहें
गुंजाइश जो नहीं दिखती
आशा करने की !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज का दिन

आज का दिन नया भी है
और गया भी है
और ऐसा भी है
जिस दिन की रात की बातें
बरसों तक चलेंगी
इस दिन की रात के बाद की
रातें अनंतकाल तक
मशालों की तरह जलेंगी !

हम फिर

हम फिर
एक बार
अपनी खुदगर्जी से
पागल हो गये हैं
देश के कोने-आंतरे
हमारे पागलपन से
घायल हो गये हैं !

शब्द-गुण

घृणा या द्वेष
शायद शब्द भी
बहुत सख्त
और उलझे हुए हैं
स्नेह और प्रेम
शब्दों की हद तक भी
सरल और
सुलझे हुए हैं !

आत्मा का फूल

उठा लो
आत्मा का यह फूल
जो
तूफान के थपेड़े से
धूल में गिरकर पड़ा है
उठा लो इसे
चुनना तो वृंत पर से ही
हो सकता था
यह तो उठा लेना-भर होगा
अब वह वृंत पर नहीं है
धूल पर है
उठा लो
आत्मा का यह फूल
धूल पर से
उठा लेने से
धूल को
दुःख नहीं होगा
वृंत की तरह
और चुने जाने का
दर्द नहीं होगा
फूल को
उठा लो आत्मा का
यह फूल !

६, राजघाट कालोनी,
नयी दिल्ली–११०००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(पृष्ठ ४७ का शेष)

रसपुरी; बंगलोरा-तोतापुरी आदि। इसके विपरीत दो जुदा किस्मों का समान नाम भी देखा जाता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का माल्दा और बंगाल का माल्दा दो अलग ही किस्में हैं।

आमों की किस्मों के नामकरण रूप (तोतापुरी, करेलिया, गुंडु), रंग (जाफरान, सिंदूरिया, सुवर्णरेखा), आकार (पन्सेरा, हाथीझूल), स्वाद (अतिमधुरम्, दूधिया, शरबती, मिठवा), गंध (सौंफिया), पकने का मौसम (भादुरिया, स्रावनिया), मूल उत्पत्ति-स्थान (रतौल, माल्दा, दसहरी, सफेदा मलीहाबाद, बंगनपल्ली) तथा किस्म तैयार करने वाले बागवान (कावसजी पटेल), किसी राजा-जमींदार (हिमायुद्दीन, जहांगीर, निसारपसंद, रहमतखास, मुंडप्पा) आदि के नाम पर किये गये हैं। कुछ नाम कोरे काव्यमय हैं (दिलपसंद, हुस्नआरा, समरबहिश्त, मनोरंजन), तो कुछ नितांत गद्यात्मक हैं (बथुआ, कलक्टर, जेलर)।

नीचे भारत के विभिन्न प्रदेशों की मुख्य व्यापारिक किस्मों के नाम दिये गये हैं:

उत्तर प्रदेश एवं पंजाब: दसहरी, लंगड़ा, बांबे ग्रीन (माल्दा), समरबहिश्त, चौसा (खजरी), रतौल, सफेदा मलीहाबाद खासुलखास, किशनभोग, तैमूरिया, गोपालभोग।

बिहार एवं बंगाल: गुलाबखास, बंबई, जरदालू, चौसा, हिमसागर, फजली, सफदरपसंद, बथुआ, मिठुआ, माल्दा, लंगडा,।

आंध्र-प्रदेश एवं उडीसा: बंगनपल्ली (बनेशान), सुवर्णरेखा, अल्लमपुर बनेशान, नीलम, बंगलोरा (तोतापुरी), हिमायुद्दीन (इमामपसंद), जहांगीर, चेरुकुरसम्, चिन्नरसम्, मलगोवा।

तमिलनाडु: रुमानी, बंगनपल्ली, नीलम।

कर्नाटक: बादामी (अल्फांसो), रसपुरी (पायरी, पीटर), नीलम, मलगोवा।

महाराष्ट्र: अल्फांसो (हापुस), पायरी।

राजस्थान: रसभंडार।

केरल: ओलूर, मुंडप्पा, बप्पकाइ, कलेपाड।

गुजरात: अल्फांसो, केसर, जमादार, राजापुरी, वनराज।

आम की सभी किस्में अपनी जगह पर हैं। बंबई के लोग अल्फांसो पर लट्टू हैं, लखनवी अपने मलीहाबादी दशहरी पर फिदा हैं, आंध्र वालों को अपने बंगनपल्ली पर नाज है, बनारसियों को लंगड़े के बिना जीवन ही निरर्थक लगता है—लंगड़ा और बनारस मानो परस्पर पर्यायवाची हैं।

सौभाग्य से आम एक टिकाऊ एवं बाहर भेजने योग्य फल है। कुवैत, बहरीन, लेबनान, नेपाल, फ्रांस, जर्मनी, इटली, इंग्लैंड, सोवियत रूस, संयुक्त राज्य अमरीका, हांगकांग इसके मुख्य ग्राहक हैं।

स्वदेश में तो आम को बांस या शहतूत की टोकरियों में पुआल या भूसे के बीच रखकर तथा बोरे से सिलाई करके बाहर भेजा जाता है। गर्मियों में रेल्वे-प्लैटफार्म ऐसी टोकरियों से पटे रहते हैं। परंतु पैकिंग की इस प्रणाली में १६ से लेकर २० प्रति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शत तक आम मंजिल पर पहुंचने तक सड़ जाते हैं। अतः लकड़ी के बक्सों में पैकिंग का प्रचलन बढ़ रहा है। जैसे नफीस और नाजुक आम हैं, उसी नफासत के साथ उन्हें टिशू-पेपर में लपेटकर, कभी-कभी तो वातानुकूलित गोदाम-कक्ष में बाहर भेजा जाता है।

कलमी आम ५०–६० वर्ष और देशी आम १०० वर्ष अच्छे फल देते हैं; यद्यपि जोरदार फसल की अवधि ५० वर्ष मानी गयी है। कुछ बगीचों में १५० से ३०० की उम्र के वृक्ष भी मिलते हैं।

यद्यपि आम सशक्त वृक्ष होता है, बागवान सर्वथा निश्चित होकर नहीं बैठ सकता। बौर लगने पर पाला और बारिश अनर्थकारी होते हैं; आंधी-तूफान से वृक्षों पर लटकते स्वर्णफल मिट्टी हो जाते हैं। विशेषतः छोटे पौधों को पाले व लू से बचाने के लिए ऊपर फूस का छप्पर बना दिया जाता है।

अनेक बीमारियों से भी पौधों की रक्षा करनी पड़ती है, जिनके कारण पत्तियां ऐंठकर मुड़ जाती हैं, काली पड़ जाती हैं, अथवा फलों पर काले धब्बे पड़ जाते हैं। वृक्ष को अंदर से खोखला करने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए डी. डी. टी. पाउडर तथा गंधक के घोल का छिड़काव किया जाता है। लाल फूल वाला छोटा पौधा 'बांझी' आम के पेड़ पर प्रायः जम जाता है और वृक्ष का सारा रस चूस लेता है। इसकी तुरंत छंटाई कर देनी चाहिये।

उचित मात्रा में खाद-पानी व सावधानीपूर्ण देखरेख पाकर अनुकूल मौसम में आम्रवृक्ष मीठे फलों से लदकर कृतज्ञता से झुक जाता है। फलभार से नम्र आम्रशाखा को देखकर ही संस्कृत कवि को यह पंक्ति सूझी होगी—भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद् गमैः।

आम में विटामिन ए, सी, क्षार और कार्बोहाट्रेट पर्याप्त होते हैं। १०० ग्राम पके आम का कैलोरी मूल्य ५०-६० तक है। अमचूर में साइट्रिक एसिड होता है। अतः आम का नियमित सेवन शक्तिवर्धक होता है। डा. सालोमन तथा एडिथ पेरी की खोजों के अनुसार, आम में सेब से छह गुना अधिक विटामिन सी होता है।

चरकसंहिता में कहा गया है कि आम का टिकोरा वातपित्त करने वाला, कच्चा आम पित्तवर्धक और पका हुआ आम वातनाशक एवं मांस-वीर्य-बलप्रद होता है। सुश्रुत ने आम को हृदय के लिए हितकारी, रुचिकारक और रक्त-मांस-बल बढ़ाने वाला, कसैले से अनुरस होकर स्वादु, वातनाशक, शरीर को पुष्ट करने वाला व भारी बताया है। आयुर्वेद में कच्चे व पके आम के अलावा बौर, गुठली, वृक्ष की छाल आदि का भी औषधीय उपयोग है।

कच्चे आम का अचार, मीठी चटनी, मुरब्बा आदि बनते हैं, जो आम के मौसम के बाद भी भोजन का स्वाद बढ़ाते रहते हैं। कच्चे आम की पुदीना-मिश्रित चटनी का जवाब नहीं, और कच्चे आम को भूनकर बनाया गया पना तो लू का दुश्मन है। कच्चे आम का अमचूर और अमहर अम्लरस के सर्वसुलभ साधन हैं। आम का शरबत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरावट पहुंचाता है और अब तो 'मैंगोला' के नाम से लोकप्रिय पेय बन गया है। शौकीन लोग आम के मीठे रस में औटाया दूध मेवे, केसर और प्रायः बूटी मिलाकर पीते और और मादकता में खो जाते हैं।

आमरस-पूरी दावत के लिए आदर्श भोजन है—स्वादिष्ट और पौष्टिक। पके आम बच गये तो चिंता की बात नहीं। उनका रस निकालकर सुखा लिया, स्वादिष्ट अमावट तैयार। आम के रस में खोवा-चीनी मिलाकर स्वादिष्ट बरफी बनायी जाती है। आम के रस की आइसक्रीम का अपना ही आनंद है। आम की गुठली छौंककर खायी जाती है। गरीब लोग सूखी गुठली का आटा गेहूं के आटे में मिलाकर रोटी बनाते हैं। आम के आम, गुठली के दाम !

आम की टिकाऊ लकड़ी घर के दरवाजे, खिड़कियां व चाय की पेटी बनाने में प्रयुक्त होती है। बरगद के बाद सघन छाया देने वाले वृक्षों में आम का नाम लिया जाता है।

चंडीगढ़ के पास बरैल ग्राम में छप्पर नामक एक आम्रवृक्ष है। उसके तने का व्यास ३२ फुट है। उसकी १२ फुट व्यास वाली तथा ८० फुट तक लंबी डालें २,७०० वर्ग गज के क्षेत्र में फैली हुई हैं। यह महा-वृक्ष प्रतिवर्ष औसतन ४५० मन फल देता है। पूर्वी खानदेश (महाराष्ट्र) में दो-एक आम्रवृक्ष ३०० वर्ष से अधिक प्राचीन हैं।

अमराइयां शहरातियों के लिए तो केवल पिकनिक-स्थल हैं; मगर ग्रामवासियों के लिए तो जैसे दूसरा घर ही हैं। गर्मियों में बरातों और अतिथियों को आम के बगीचों में ससंमान ठहराया जाता है। आम के मौसम में गांव के बच्चों का तो यह हाल है कि सुबह आंख खुली नहीं कि आम के बाग पहुंच गये—पके आम तोड़े, चूसे और गुठलियां एक ओर डालते गये। पत्थर मारकर खट्टे-कसैले टिकोरे गिराने-खाने का बाल-कालीन आनंद तो जीवन-भर भुलाया नहीं जा सकता। दोपहर को आम्रकुंजों में चार-पाई डालकर सोने वाले को वातानुकूलन की क्या जरूरत !

लोकजीवन के आनंदोल्लास का बड़ा भाग अमराई में खिलता-खेलता है। बौर निकले नहीं कि आम के बागों में धमाचौकड़ी आरंभ हो जाती है। ढोलक की थाप और मजीरे के साथ फाग की मस्ती बिखरने लगती है। आम की फसल समाप्त होते-होते वर्षा की फुहारों के साथ इन बागों में पड़ जाते हैं झूले, जिन पर जीवन का उल्लास हिलोरें लेता है। फिर वर्षा गयी और आकाश साफ हुआ कि नीची डालियों वाले आम्र वृक्षों पर होने लगते हैं 'लकड़ियां चिलोर' एवं कूद-फांद, लुका-छिपी वाले अन्य खेल।

सत्यनारायण की कथा से लेकर विवाह तक आम्रपल्लवों की बंदनवार अनिवार्य है। आम के पत्ते की आचमनी पवित्र है और हवन में आम की समिधा प्रशस्त है। धर्म में आम का यह माहात्म्य प्रकारांतर से इस तथ्य की कृतज्ञतापूर्ण स्वीकृति है कि भारतीय जीवन आम्रवृक्ष की छाया में जीता और पनपता है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान-बिंदु

अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में बड़ी ले-दे मची हुई है आजकल, हमारे प्रथम शांतिपूर्ण न्यूक्लीय विस्फोट को लेकर। कहा जा रहा है कि स्वीडन, ब्राजील, जापान, दक्षिण अफ्रीका, इस्रायल आदि जो दूसरे सात-आठ राष्ट्र परमाणु-बम बनाने का तकनीकी सामर्थ्य रखते हैं, मगर अभी बना नहीं रहे हैं, उन्हें उसे बनाने से रोकना अब असंभव हो जायेगा। फिर उसके बाद क्या होगा, यह तो त्रिकालदर्शी सी. आइ. ए. भी नहीं कह सकता। परमाणु-बम से लैस छोटे-छोटे गैरजिम्मेदार राष्ट्र जाने कब दुनिया को न्यूक्लीय युद्ध के गर्त में धकेल दें! कितना भयंकर चित्र है!

मगर इससे भी भयंकर चित्र की कल्पना की जा सकती है। जरा सोचिये कि कुछ लोग अपने घर के तहखाने में बैठकर परमाणु-बम बना सकें, तब क्या होगा! पिछले दिनों अमेरिकन एसोसियेशन फार एड्वान्समेंट आफ सायंस की पत्रिका 'सायंस मैगजीन' ने कुछ बातें बतायी हैं, जिनसे आशंका होती है कि इसकी नौबत सचमुच आ सकती है। पत्रिका ने अमरीकी परमाणु ऊर्जा आयोग का हवाला देते हुए जो कुछ बताया है, उसका सार कुछ इस प्रकार है:

परमाणु-बम बनाने में अब तक सबसे बड़ी कठिनाई यह रही है कि यह अत्यंत महंगा काम था, जिसकी वजह से अनेक विकासशील देश चाहते हुए भी इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। परमाणु-बम बनाने के लिए प्लूटोनियम या हल्के युरेनियम (यू-२३५) की आवश्यकता होती है। प्राकृतिक युरेनियम में हल्के युरेनियम की मात्रा बहुत ही कम अर्थात् ०.७ प्रतिशत के आस-पास होती है। प्राकृतिक युरेनियम में से भारी युरेनियम (यू-२३८) और हल्के युरेनियम को पृथक् करने की वर्तमान पद्धति 'गैस डिफ्यूजन' (गैस-विसरण) कहलाती है। इसके लिए काफी धन और समय की आवश्यकता होती है।

पिछले वर्षों में कुछ देशों ने एक नयी पद्धति पर भी परीक्षण किये हैं, जिसे 'सेन्ट्रिफ्यूज प्रोसेस' (अपकेंद्री प्रक्रम) कहा जाता है। यह पद्धति 'गैस डिफ्यजन' पद्धति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कम खर्चीली है। वैसे अभी तक इस पद्धति से कहीं पर भी कोई परमाणु-संयंत्र नहीं चलाया जा रहा है; परंतु १९८० के बाद के वर्षों में ऐसा करने की योजनाएं रूस, जापान, ब्रिटेन, हालैंड तथा पश्चिम जर्मनी आदि कई देशों ने तैयार कर ली हैं।

इतना ही नहीं, लेसर की सहायता से युरेनियम-पृथक्करण के जिस नये तरीके की खोज हाल में की गयी है, उसे तो इतना क्रांतिकारी बताया जा रहा है कि उसके व्यवहार में आने पर परमाणु-बम बनाना बायें हाथ का खेल बन जायेगा। दो अमरीकी प्रयोगशालाओं में तथा दो-एक प्राइवेट फर्मों में पिछले कुछ वर्षों से इस परियोजना पर गुप्त रूप से काम चल रहा था। पर जब इसी ढर्रे पर दो इस्रायली वैज्ञानिकों ने भी काम किया और पश्चिम जर्मनी की सरकार ने उन्हें पेटेंट देने की घोषणा की, तो बात चारों ओर फैल गयी।

इन इस्रायली वैज्ञानिकों ने तो 'सायंस मैगजीन' को यही बताया है कि अभी तक वे अपनी पेटेंट-विधि से किसी खास मात्रा में युरेनियम का पृथक्करण नहीं कर सके हैं, परंतु अमरीकी वैज्ञानिकों का विश्वास है कि इस्रायली इस मामले में उनसे ज्यादा पीछे नहीं हैं।

लेसर पर आधारित इस विधि में लेसरों को रेडियो की तरह 'ट्यून इन' किया जाता है। 'ट्यून इन' करने पर उनसे निकलने वाला प्रकाश इतनी आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) का होता है कि वह केवल युरेनियम-२३५ के परमाणुओं को ही कंपायमान कर पाता है; युरेनियम-२३८ के परमाणु उससे अप्रभावित ही रहते हैं। इसके पश्चात् एक अन्य लेसर से इलेक्ट्रोन (अवरक्त) विकिरण युरेनियम-पुंज पर डाला जाता है, जो हल्के युरेनियम (यू-२३५) के परमाणुओं में से एक-एक इलेक्ट्रोन झटके से बाहर निकाल देता है। इस प्रकार ये परमाणु आवेशित (या आयनित) हो जाते हैं। किसी चुंबक या विद्युत-क्षेत्र की सहायता से आवेशित परमाणुओं अर्थात् हल्के युरेनियम को अलग किया जा सकता है।

युरेनियम-२३५ यदि सुगमता से प्राप्त हो जाये, तो परमाणु-बम बनाना राष्ट्रों के लिए तो क्या, व्यक्तियों के लिए भी बहुत कठिन काम नहीं रह जायेगा।

सूर्य का सवाल

यह तो हम भी जानते हैं कि सूर्य न होगा तो हम भी न होंगे। मगर सूर्य खुद अपने आपमें क्या है, यह अब भी एक गुत्थी है। आम आदमी की धारणा यही है कि सूर्य आग का विशाल गोला है। विज्ञान की भाषा में इसी बात को इस तरह कहा गया है कि सूर्य एक ऊष्मा-न्यूक्लीय (थर्मो-न्यूक्लियर) रिएक्टर है, जिसमें हाइड्रोजन के दहन से हीलियम बनता है, हीलियम के दहन से बनते हैं बोरान और कार्बन; और फिर यह क्रिया इसी प्रकार आगे बढ़ती जाती है। सूर्य की संरचना के संबंध में अब तक यही सर्वाधिक मान्य सिद्धांत रहा है।

परंतु हाल में ही इस क्षेत्र में किये गये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्ययनों से कुछ विज्ञानी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि या तो उपर्युक्त सिद्धांत गलत है या फिर सूर्य ही कुछ बदल गया है। ऐसा मानने का जो कारण उन्होंने दिया है वह कुछ इस प्रकार है।

अगर सूर्य-ऊर्जा का स्रोत सचमुच न्यूक्लीय दहन है, तो उससे न्यूट्रिनों नामक आधारभूत कणों का विसर्जन होना चाहिये। न्यूट्रिनो ऐसे द्रव्यहीन कण हैं, जो किसी प्रकार प्रभावित हुए विना घने सूर्य के बीच से निकलकर हमारी पृथ्वी तक पहुंचकर हमें सूर्य-संबंधी जानकारी करा सकते हैं। परंतु पृथ्वी पर सूर्य से आने वाले कोई न्यूट्रिनो अभी तक देखे नहीं जा सके हैं।

इस गंभीर तथ्य ने सूर्य के बारे में नये सिरे से सोचने के लिए वैज्ञानिकों को मजबूर कर दिया है।

मक्खीमार रंग

जरा-सा जीव मक्खी गंदगी और बीमारी फैलाने में बड़ी माहिर है। आदमी उससे बचने के तरीके मुद्दत से ढूंढ़ता आ रहा है। इस सिलसिले में एक और नया तरीका खोजा है कानपुर की सुरक्षा प्रयोगशाला ने।

उसने एक सफेद पेंट तैयार किया है, जो स्प्रे अथवा ब्रुश द्वारा किसी भी सतह पर किया जा सकता है। रंग में मिश्रित दो कीटनाशी पदार्थ मक्खी का सफाया करते हैं। परीक्षणों के अनुसार, यह शत-प्रतिशत प्रभावकारी है और कई महीने तक काम दे सकता है, वशर्ते इसके ऊपर किसी दूसरे पेंट का लेप न किया जाये। घरों, कैन्टीनों एवं अस्पतालों के लिए यह पेंट खास तौर से उपयोगी हो सकता है।

बुध चंद्रमाहीन

हमारे पुराणों के अनुसार बुध चंद्रमा का बेटा है; मगर विज्ञान बताता है कि बुध का कोई चंद्रमा नहीं है। सूर्य के सर्वाधिक निकटवर्ती ग्रह बुध के काफी नजदीक तक पहुंचने वाले प्रथम अंतरिक्ष-यान मेराइनर-१० ने वहां के वातावरण तथा चुंबकीय क्षेत्र के विषय में महत्त्वपूर्ण आंकड़े पृथ्वी पर भेजे थे। इन सूचनाओं के आधार पर वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया था कि सूर्य के पास जो एक चमकदार पिंड दिखाई दिया था, वह शायद बुध का चंद्रमा अर्थात् उसका एक उपग्रह था।

नासा द्वारा किये गये विस्तृत विश्लषण के आधार पर अब घोषणा की गयी है कि वस्तुतः बुध का कोई चंद्रमा नहीं है। जो चमकदार पिंड देखा गया था, वह उपग्रह नहीं एक तारा है, जो हमारे सौर मंडल से कहीं बहुत दूर स्थित होने के कारण बहुत छोटा नजर आ रहा था।

हिममंडित धूमकेतु

धूमकेतु पर हिम के रूप में पानी की उपस्थिति की सैद्धांतिक संभावना लगभग पचीस वर्ष पूर्व व्यक्त की गयी थी, सो भी इस कारण कि धूमकेतु के कुछ लक्षणों की व्याख्या उसमें पानी की उपस्थिति मानकर ही की जा सकती थी, अन्यथा नहीं।

मगर अब तेल अवीव विश्वविद्यालय के प्रो. पीटर बेहिंगर ने धूमकेतु पर पानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की उपस्थिति की सचमुच शिनाख्त की है। उन्होंने इस वर्ष जनवरी में अपने विश्व-विद्यालय के चालीस-इंची दूरदर्शी की सहायता से नेगेव की वेधशाला में कोहौटक धूमकेतु को 'ट्रेस' किया था। उन्हें उस धूमकेतु पर जमे हुए पानी का पता चला। प्रो. वेहिंगर का कहना है कि पानी की उप-स्थिति से यह कल्पना नहीं करनी चाहिये कि वहां जीवन भी उपस्थित होगा। लंबी कक्षा के कारण धूमकेतु सौर मंडल की यात्रा के दौरान अधिकांश समय सूर्य से इतना दूर रहता है कि अपेक्षित मात्रा में ऊर्जा उस तक नहीं पहुंच पाती।

मशीनी दूध

लीजिये, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय (नैनीताल) और इलिनाय विश्वविद्यालय (अमरीका) के कृषि-विज्ञानियों ने मिलकर सोयाबीन से कृत्रिम दूध बनाने का प्रक्रम और यंत्र विकसित किया है। यह मशीनी दूध प्रोटीन की मात्रा और कुल ठोस पदार्थों की दृष्टि से गाय के दूध के काफी नजदीक होगा, मगर गाय के दूध के मुकाबले में एक तिहाई अथवा एक चौथाई सस्ता बैठेगा। पंतनगर विश्वविद्यालय इस तकनीकी जानकारी को किसी भी ऐसी फर्म को देने के लिए तैयार है, जिसके पास आवश्यक भाप, पानी, प्रशीतन तथा बोतलभराई की सुविधा हो और जो १० हजार लिटर सोया-दूध प्रतिदिन तैयार करने के लिए जरूरी अतिरिक्त संयंत्र के लिए एक लाख रुपया खर्च कर सकता हो।

बडे परिवार : कुछ नये खतरे

परिवारों को छोटा रखने के नारे के पीछे मुख्य कारण आर्थिक ही रहे हैं; पर छोटे परिवारों के पक्ष में दूसरी दलीलें भी हैं विश्व स्वास्थ्य संघटन के क्षेत्रीय निदेशक गुणरत्ने ने हाल में एक संवाददाता संमेलन में एक महत्त्वपूर्ण बात बतायी है। ताजातर अध्ययनों से यह बात उभरकर सामने आयी है कि जिन परिवारों में बच्चों की पैदाइश ज्यादा होती है, खास तौर पर चौथे बच्चे के बाद की संतान का मानसिक विकास सामान्य से कम हो पाता है और जैसे-जैसे बच्चों की संख्या बढ़ती जाती है, परवर्ती बच्चों की गुणवत्ता उतनी ही कम होती है।

विश्व-भर में किये गये अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि कम फासले से लगातार बच्चे पैदा होना बच्चे और माँ दोनों के स्वास्थ्य के लिए आगे जाकर गंभीर खतरे पैदा कर सकता है। ऐसे बच्चे रोग संक्रमण और कुपोषण के शिकार ज्यादा आसानी से हो जाते हैं, उनका विकास भी धीमी रफ्तार से हो पाता है। कुछ मामलों में परवर्ती बच्चों के मृतावस्था में पैदा होने या प्रथम चार बच्चों की तुलना में कम जीवी रहने का भी खतरा रहता है।

डा. गुणरत्ने कहते हैं, इन खतरों को नजरअंदाज करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। इस संदर्भ में यह तथ्य कितना दिलचस्प है कि कवि रवींद्रनाथ ठाकुर अपने माता-पिता की चौदहवीं संतान थे।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एशिया का आभूषण

सावित्री रामराव

थाइलैंड, जिसे दुनिया अर्से तक 'स्याम' कहती रही, दक्षिण-पूर्व एशिया का एकमात्र देश है, जिसने अपने इतिहास में कभी परतंत्रता नहीं भोगी। उसने अपार प्राकृतिक सौंदर्य और अखूट अन्न-समृद्धि पायी है। उसके निवासी सुंदर और सुघड़ होते हैं। उसे 'एशिया का आभूषण' का विशेषण ठीक ही मिला है। प्रजा को सुखी रखने के लिए राष्ट्र के पास जो कुछ होना चाहिये, वह सब उसके पास भरपूर है।

यूरोप से संपर्क होने के बावजूद थाइ समाज पर पश्चिम का प्रभाव बहुत कम है। क्या उच्च वर्ग, क्या निम्न वर्ग सभी अपनी राष्ट्रीय संस्कृति, वेश-भूषा, रस्म-रिवाज आदि से अब भी उसी तरह प्यार करते हैं।

थाइ पुरुषों और स्त्रियों दोनों का परंपरागत वेश है 'पानुंग', जो चीनियों की चौड़ी पतलून और मलय लोगों के सरोंग से सर्वथा भिन्न है। यह एक गज चौड़ा और तीन गज लंबा कपड़े का टुकड़ा होता है। कमर में इसे ऐसे बांधते हैं कि कपड़े का निचला किनारा घुटनों को छूता रहे। दोनों छोर जांघों के बीच से लांग की तरह निकालकर कमर में खोंस लिये जाते हैं।

पानुंग पहने थाइ रमणी

पुरुषों के लिए पानुंग बहुत सुंदर और सुविधाजनक लिबास है। इसमें पैर खुले और स्वतंत्र रहते हैं, जिससे यह बिरजिस या निकर जैसा लगता है। पानुंग का सबसे बड़ा गुण है, उसकी स्वाभाविकता।

पहनने वाले की हैसियत के अनुसार पानुंग कीमती कपड़े का भी हो सकता है, सस्ते कपड़े का भी। धनिक लोग सुंदर रेशमी पानुंग पहनते हैं। ये नारंगी, हरा, नीला, लाल, जामुनी आदि अनेक रंगों के होते हैं, सप्ताह के हर दिन के लिए अलग-अलग रंग। अलबत्ता स्त्रियों को पानुंग उतना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोभा नहीं देता। गरीब लोग तो बिलकुल नंगे पांव रहते हैं। जिनकी हालत अच्छी होती है, वे लंबी रेशमी या सूती जुर्राबें और चमड़े के जूते पहनते हैं, जिन पर सुंदर बकसुए लगे होते हैं।

स्त्रियां उरोजों को स्कार्फ से ढंकती हैं। उच्च वर्ग की महिलाएं पानुंग के साथ ऊपर मलमल या साटिन की जरीयुक्त जैकेट पहनती हैं, जिस पर नग जड़े बटन होते हैं। थाइ स्त्रियों को आप सदा इसी परंपरागत पोशाक में पायेंगे। इस मामले में 'नयी हवा' बिलकुल सहन नहीं की जाती।

थाइ बड़े सुरुचिसंपन्न होते हैं और गहने बनवाने-पहनने को फिजूलखर्ची नहीं मानते।

थाइ नारी एवं शिशु

थाइ लोगों का शिशुजन्म से संबंधित संस्कार मूलतः हिन्दू संस्कार प्रतीत होता है। इसमें बच्चे के जन्म के एक महीने बाद उसका मुंडन होता है और सिर पर एक चोटी छोड़ दी जाती है। साथ ही बच्चे का नामकरण भी होता है। बच्चों के शरीर पर एक पीला द्रव मल दिया जाता है। माना जाता है कि इससे वे मच्छरों आदि के दंश से बचे रहते हैं।

काफी कम उम्र में ही बच्चों की बांहों के नीचे टीन के बंद डिब्बे बांधकर उन्हें कुनकुने पानी में छोड़ दिया जाता है, ताकि वे तैरना सीख सकें।

बच्चों के बड़े होने के साथ उनकी चोटी भी बढ़ती जाती है। उसे तेल लगाकर फूलों से सजाया जाता है और सोने के एक बड़े पिन की सहायता से सिर के ऊपर गोल गेंद के रूप में लपेटा जाता है।

केशगुच्छ को काटना

इस केशगुच्छ को काटने का उत्सव संभवतः मूलतः ब्राह्मणों से लिया गया था। बच्चा जब ११ से १५ वर्ष का होता है, तो माता-पिता ज्योतिषियों से परामर्श करके शुभ दिन और शुभ घड़ी निश्चित करते हैं। सारे सगे-संबंधी और मित्र इसमें निमंत्रित किये जाते हैं। अनुष्ठान संपन्न कराने वाले बड़ी संख्या में पुरोहित भी आते हैं।

उत्सव के पिछले दिन सब अतिथि इकट्ठे होते हैं और बच्चे को सुंदर कीमती वस्त्र, हार, अंगूठी आदि से सजाकर ऊंचे आसन पर बैठाया जाता है। पुरोहित मंत्रपाठ करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाजे बजाये जाते हैं और किराये पर आये अभिनेता नृत्य एवं मूक अभिनय प्रस्तुत करते हैं। शराब पी जाती है, आनंद मनाया जाता है।

अगले दिन सुबह बच्चे को लंबा सफेद चोगा पहनाकर खास इसी अवसर के लिए बनवाये गये सिंहासन पर बैठाया जाता है। शुभ घड़ी की प्रतीक्षा की जाती है। ज्योतिषी का संकेत मिलते ही वहां उपस्थित लोगों में सबसे अधिक उम्र का व्यक्ति हाथ में बड़ी-सी कैंची लेकर आगे बढ़ता है और फूलों से सजे केशगुच्छ को काट देता है। इसके बाद माता-पिता तथा अन्य सब उपस्थित जन एक-एक करके बच्चे के सिर पर कटोरे से पानी डालते हैं। इस रस्म के बाद वातावरण ठहाकों और मजाकों से गूंज उठता है। फिर बच्चा अंदर जाकर बढ़िया कपड़े पहनकर लौटता है।

अब समारोह का सबसे आनंददायक हिस्सा आरंभ होता है। बच्चे को सिंहासन पर बैठाया जाता है, जिसके चारों ओर पवित्र आत्माओं के लिए फूलों और फलों के नैवेद्य रखे होते हैं। फिर सब अतिथि बच्चे को उपहार देते हैं, मुख्यतया नकद।

समारोह के अंत में सब लोग जलती हुई मोमबत्तियां सिर पर उठाकर जुलूस बांधकर सिंहासन के चारों ओर घूमते हैं। फिर मोमबत्तियां इस तरह बुझायी जाती हैं कि धुआं बच्चे के सिर के उस हिस्से पर से गुजरे, जहां केशगुच्छ था। मान्यता है कि इससे बच्चे को जीवन में काफी साहस और आत्मबल प्राप्त होता है और उसे दुष्ट आत्माओं का कोई भय नहीं रहता।

कटे हुए केशगुच्छ को संभालकर रखा जाता है। छोटे बालों को पत्तों की बनी एक छोटी-सी नौका में रखकर नजदीक की नदी या क्लोंग (नहर) में बहा दिया जाता है। कहते हैं, इससे बच्चे के सारे दोष और सारे अवगुण बह जाते हैं।

लंबे बाल तब तक सुरक्षित रखे जाते हैं, जब बच्चा जवान होकर प्रभात स्थित बुद्ध के चरण-चिह्न के दर्शनार्थ पहली तीर्थयात्रा पर जाता है। तब वह ये बाल वहां पुजारियों को दे देता है, जो इन बालों से मंदिर को झाड़ने के लिए छोटे चंवर बनाते हैं।

सामाजिक रीति-रिवाज

थाइ पुरुष करीब २० वर्ष की उम्र में शादी करते हैं और औरतें करीब १८ वर्ष की उम्र में। कुछ की शादी इससे कम उम्र में भी हो जाती है। साधारणतः संबंध माता-पिता या रिश्तेदार तय करते हैं; लेकिन लड़के-लड़की की पसंद भी पूछी जाती है। प्रेम-विवाह भी हो जाते हैं; क्योंकि वहां औरतें परदे में नहीं पलतीं। तिथि और वर-वधू के माता-पिता द्वारा दी जाने वाली रकम आदि बातें दोनों पक्षों के बीच औपचारिक चर्चा द्वारा तय की जाती हैं। विवाहोत्सव पर काफी धूम-धाम होती है, भोज-भात का आयोजन होता है।

विवाह की रस्म बहुत सादी होती है। शादी की अंगूठी की जगह वहां सफेद धागे का व्यवहार किया जाता है। इसे कोई नजदीकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिश्तेदार वर-वधू के दायें हाथ में यह कहते हुए बांधता है–'जब तक मृत्यु तुम्हें अलग न करे, तब तक पति-पत्नी रहो।' फिर वर-वधू यह शपथ लेते हैं।

थाइ लोगों में बहुविवाह की अनुमति है; लेकिन पहली पत्नी हमेशा घर की स्वामिनी

थाइलैंड की रानी सिरिकित, जिनकी गणना संसार की मोहकतम ललनाओं में की जाती है।

होती है और दूसरी पत्नियों का स्थान उसके बाद होता है। पति-पत्नी में से कोई भी तलाक मांग सकता है। विवाह-विच्छेद में पत्नी के साथ उदारता बरती जाती है।

थाइ औरतें लुंगीनुमा स्कर्ट भी पहनती हैं, जिसे 'पासिन' कहते हैं। इसे अपनी जगह पर स्थिर रखने के लिए सोने या चांदी का बेल्ट धारण किया जाता है। स्त्रियां शील और चरित्र की बड़ी आग्रही होती हैं और स्वच्छता की भी। वे दिन में कई बार क्लोंग में नहाती हैं। ऐसे सार्वजनिक स्थान में नहाते समय पासिन उनके शरीर को ढंके रखता है।

थाइ भोजन पर चीनी और भारतीय पाकशास्त्र का प्रभाव है। इसमें भात, भारतीय ढंग की रसेदार सब्जी और चीनी चटनी-अचार खाये जाते हैं। मछली भोजन का खास अंग होती ह, जो मसालेदार बनाई जाती है। शहरी रेस्तराओं और खाते-पीते परिवारों में अनेक स्थानीय व्यंजन में भोजन में रहते हैं। थाइ भोजन में तरह-तरह के स्वादिष्ट फलों का बहुतायत से समावेश होता है–विशेषतः बहुत बढ़िया किस्म के संतरों का। शायद ही कहीं इतने प्रकार के फल भोजन में खाये जाते हों।

पान चबाने की आदत यहां सभी वर्गों में इतनी आम है कि पान के बिना कोई भी समारोह या उत्सव पूरा नहीं होता। बहुत थोड़े लोग ऐसे मिलेंगे, जो जेब में बिना पान का डिब्बा लिये चलते हों।

धूम्रपान का प्रचलन भी सभी वर्गों में स्त्री-पुरुष दोनों में है। प्रायः वे 'बरी' सिगरेट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीते हैं, जो स्थानीय तंबाकू को केले के सूखे पत्ते में लपेटकर बनायी जाती है।

व्यापार

थाइ औरतों का व्यापार, अन्य पेशों एवं कला में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे सड़कें व मकान-मंदिर आदि के निर्माण में बोझा ढोने वाली या राज मिस्त्री के रूप में काफी बड़ी संख्या में काम करती दिखाई देती हैं। कंबोडिया के गौरव अंगकोरवाट के मंदिरों में से एक का निर्माण पूर्णतः औरतों ने किया था। यहां औरतें वकील और डाक्टर भी हैं और गोल्फ, बैडमिंटन और टेनिस की मशहूर खिलाड़ी भी। वे पुस्तकें भी लिखती हैं, मूर्तियां बनाती हैं और व्यापार एवं अन्य मामलों में सलाह भी देती हैं।

बैंकाक में कोई यात्री वहां की स्त्रियों की सुपुष्ट शारीरिक बनावट और तनी हुई चाल से आकृष्ट हुए बिना नहीं रह सकता। उनकी चाल-ढाल, पोशाक और कटे हुए बालों आदि के कारण दूर से तो प्रायः ही उनके पुरुष होने का भ्रम हो जाता है।

शारीरिक श्रम में वे भाग लेती ही हैं। फिर भी देखने में सुंदर लावण्यमयी होती हैं। युवतियों से यह आशा की जाती है कि वे राष्ट्रीय नृत्य में प्रवीण हों, जिसमें आंगिक मुद्राओं को विशेष महत्त्व दिया जाता है। खाली समय में लड़कियां नृत्य का अभ्यास करती हैं। परिणामतः अधिकांश युवतियों के हाथ सुडौल एवं उंगलियां असाधारण रूप से सुंदर होती हैं।

थाइ नामों के साथ 'श्री' के अर्थ में 'नाइ' और श्रीमती व कुमारी के अर्थ में 'नागसन' शब्द का प्रयोग होता है। अन्य संमाननीय संबोधन हैं– मोम चान, मोम राश, वोंगसे या मोम लौंग। ये सब शब्द नाम के आगे लगाये जाते हैं।

थाइ अभिवादन विधि को 'वाइ' कहते हैं। इसमें दोनों हाथों से अंजलि बांधकर उसे चेहरे तक ले जाते हैं, जैसे ईसाई लोग प्रार्थना में करते हैं। पर 'वाइ' में यह क्रिया मुस्कान के साथ झुककर की जाती है। हाथ मिलाना थाइ लोग पसंद नहीं करते और किसी भी कारण कोई उनके सिर को हाथ लगाये, यह उन्हें सख्त नापसंद है।

थाइ लोग तरलचित्त और भोगप्रिय होते हैं। धार्मिक उत्सवों में वे उल्लास से भाग लेते हैं। उत्सवों में से मुख्य हैं–भगवान बुद्ध की बोधप्राप्ति और मृत्यु से संबंधित 'विसा-का बुचा' और जल का उत्सव 'सोंगक्रोन'।

–५८ सुब्रमणियम मुदालि स्ट्रीट, मद्रास–१५

*

आसुर विवाह का लक्षण याज्ञवल्क्य-स्मृति के अनुसार यह है–'आसुरो द्रविणादानात्'। अर्थात् जिस विवाह में धन लिया जाता है, वह आसुर विवाह है। इस दृष्टि से जिस विवाह में कन्यापक्ष वाले वरपक्ष से धन लेते हैं, वही आसुर नहीं है; वरन आज हिन्दू समाज में जो विवाह होते हैं जिनमें दहेज के नाम पर वरपक्ष वाले कन्यापक्ष वाले की खाल खींच लेते हैं, वे भी आसुर विवाह ही हैं।

–डा. पुरुषोत्तमलाल भार्गव ('विश्वज्योति')

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवींद्रनाथ ठाकुर पं. विधुशेखर शास्त्री के संग बैठे हुए किसी विषय पर बातें कर रहे थे। उनके पास कुछ और लोग भी बैठे थे। किसी बात पर रवींद्र ने कहा—'शास्त्रीजी, आपने बौद्ध धर्म का बहुत अध्ययन किया है, लेकिन आपकी हिंसाप्रवृत्ति अभी तक कायम है।'

सुनकर शास्त्रीजी को हैरानी हुई और वे कुछ न कह सके। बाकी लोग भी अचरज से रवींद्र की ओर देख रहे थे। तभी रवींद्र ने हल्के-से मुस्कराकर और शास्त्रीजी की सफाचट दाढ़ी-मूंछ की ओर संकेत करते हुए कहा—'इन दाढ़ी-मूंछों पर दया कीजिये। इनके साथ हिंसात्मक व्यवहार क्यों करते रहते हैं?'

० ० ०

रवींद्र अध्यापकों की एक सभा में गये हुए थे। वहां उन्होंने एक व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा—'नेपाल बाबू, आजकल आप चीजें भूल जाते हैं। सो आपको दंड देना पड़ेगा।'

नेपाल बाबू को सुनकर घबराहट हुई। तभी रवींद्र ने एक डंडा उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा—'कल आप इसे यहां भूल गये थे। लीजिये अपना दंड।'

० ० ०

एक आदमी रवींद्र से मिलने गया, तो उसने देखा कि वे मेज पर काफी झुककर लिख रहे हैं। उसने महसूस किया कि उस हालत में बैठकर लिखते हुए उन्हें काफी तकलीफ होती होगी। बातों के दौरान में उसने कहा—'आप कोई ऐसी मेज या कुर्सी क्यों नहीं बनवा लेते कि आपको इस तरह झुकना न पड़े और आप आराम से लिख सकें?'

'वास्तव में, मैं इस प्रकार झुककर ही लिख सकता हूं, सीधा बैठकर नहीं लिख सकता।' रवींद्र ने कहा।

'वह क्यों?'

'सुराही में पानी कम हो जाये, तो उसे काफी झुकाकर ही पानी निकाला जा सकता है।'

० ० ०

रवींद्र और क्षितिमोहन सेन एक बार इकट्ठे गाड़ी में सफर कर रहे थे। एक जगह पर क्षितिमोहन सेन ने महसूस किया कि रवींद्र को कविता लिखने की प्रेरणा हो रही है। सो इस खयाल से कि उनकी उस स्थिति से किसी किस्म का विघ्न न पड़े, वे धीरे-से उठे और शौचालय में चले गये।

कुछ देर बाद जब वे वापस आये तो रवींद्र ने पूछा—'आप कहां चले गये थे? देखिये, अभी-अभी इस कविता का जन्म हुआ है।'

'कविता जन्म ले रही थी, इसीलिए मैं यहां से चला गया था।'

'वह क्यों?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'किसी के जन्म लेते समय क्या पुरुष का वहां होना शोभा देता है? पुरुष हमेशा बाहर खड़े होकर प्रतीक्षा किया करते हैं।' क्षितिमोहन सेन ने कहा।

० ० ०

एक बार रवींद्र की सेहत बहुत ज्यादा खराब हो गयी, तो डाक्टरों ने उन्हें पूरा आराम करने की सलाह दी। लेकिन रवींद्र डाक्टरों की सलाह की परवाह न करते हुए हमेशा की तरह अपने काम में लीन रहे। इस बारे में गांधीजी को पता लगा, तो वे शांतिनिकेतन गये और रवींद्र से मिलने पर बातचीत के दौरान में उन्होंने कहा–'गुरुदेव, मुझे भिक्षा दीजिये।'

'मैं आपको भिक्षा देने वाला कौन हूं', रवींद्र ने कहा–'बल्कि मैं तो आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। सो आज्ञा दीजिये।'

'नहीं, मुझे भिक्षा ही चाहिये', गांधीजी ने कहा।

'तो बताइये, मैं क्या दे सकता हूं?'

'मैं चाहता हूं कि भोजन के बाद आप एक घंटा पूरा आराम कीजिये।' रवींद्र को उनकी बात माननी पड़ी। एक दिन वे भोजन के बाद आराम कर रहे थे कि क्षिति-मोहन सेन उनसे मिलने के लिए गये। बंद दरवाजे के बाहर उनके कदमों की आहट पहचानकर रवींद्र ने उनका नाम लेकर कहा–'यह दरवाजा नहीं खुल सकेगा।'

'क्यों?... और आप अंदर क्या कर रहे हैं?'

'गांधीजी को भिक्षा दे रहा हूं।' रवींद्र ने कहा।

❀

नाटकों में काम करने वाला एक अभिनेता पहली बार फिल्म में काम करने लगा। किसी ने पूछा–'सामने दर्शकों को न देखकर, आपको ऐक्टिंग करने में कोई अड़चन तो महसूस नहीं होती?'

'नहीं', अभिनेता बोला–'मुझे आदत है इसकी! मैंने कई बार ऐसे नाटकों में काम किया है, जिनमें हाल लगभग खाली होता था।'

० ० ०

एक अभिनेत्री देर तक अपने ही बारे में बातें करती रही। अंत में जब श्रोता के चेहरे पर उकताहट का भाव देखा, तो बोली–'मैं काफी कुछ बता चुकी हूं अपने बारे में। अब आपके बारे में बातें करें। हां तो बताइये, इस नयी फिल्म में मैंने जो रोल किया है, वह कैसा लगा आपको? कैसी लगती हूं मैं उसमें?'

० ० ०

पंजाब में पंजाबी को राजभाषा बनाने पर लोक-संपर्क विभाग की ओर से पत्र-पत्रिकाओं को तत्कालीन मुख्य मंत्री लक्ष्मणसिंह गिल का एक लेख छापने के लिए भेजा गया। लेख उर्दू में था और उसके साथ एक पत्र अंग्रेजी में टाइप किया हुआ था। नीचे लिखा गया था कि लेख का पंजाबी में अनु-वाद कर लिया जाये।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्काट के राम-लक्ष्मण

* रा. वीलिनाथन् *

सन १९२५ में एक चिकित्सक महोदय मद्रास विश्वविद्यालय की सिंडिकेट के सदस्य निर्वाचित हुए। यही प्रथम अवसर था कि एक डाक्टरीपेशा आदमी सिंडिकेट में पहुंचा था। अतः सारे नगर में यह चर्चा का विषय बना हुआ था।

तभी किसी प्रीतिभोज में मद्रास ला कालेज के प्रिंसिपल आर्थर डेविस ने बात-चीत के दौरान पास की कुर्सी पर बैठे एक भद्र पुरुष से कहा—'मद्रास की यूनिवर्सिटी को यह क्या हो गया कि एक डाक्टर को अपनी सिंडिकेट का सदस्य चुन लिया! बेचारे डाक्टर क्या जानें यूनिवर्सिटी के कायदे-कानून!'

'सो तो ठीक है। क्या आप उस डाक्टर को जानते हैं?'

'नहीं, क्या आप जानते हैं?'

'हां, थोड़ा-बहुत, क्योंकि वे मेरे [illegible] भाई हैं!'

यह सुनकर प्रिंसिपल आर्थर डेविस झेंप-से गये।

बत्तीस वर्ष बाद सन १९५७ में उन डाक्टर महोदय को भी कुछ ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा। अब वे मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। विश्वविद्यालय के शताब्दी-समारोह के अवसर पर कतिपय विशिष्ट व्यक्तियों को डाक्टर की उपाधि से विभूषित किया जा रहा था, जिनमें उनके भाई भी एक थे।

भरी सभा में अपने भाई का परिचय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

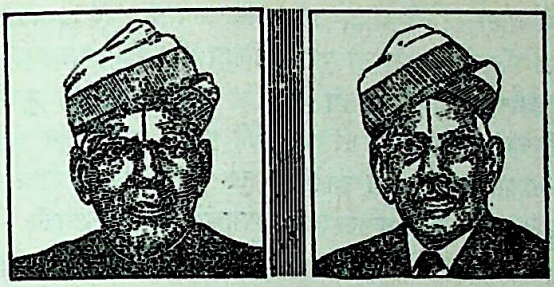

(ऊपर के चित्र में दायें रामस्वामी, बायें लक्ष्मणस्वामी)

देते हुए डाक्टर महोदय ने कहा—'शायद ही किसी उपकुलपति को ऐसी नाजुक स्थिति का सामना करना पड़ा होगा। "डाक्टर आफ लाज़" की उपाधि से विभूषित होने के लिए सर रामस्वामी मुदलियार आमंत्रित हैं। उनका परिचय देना मेरे लिए कठिन है। जिनसे मेरा गर्भावस्था से अटूट नाता हो, उनके गुणों या दोषों का अत्युक्तिरहित चित्र उपस्थित करना मेरे लिए अत्यंत कठिन है। इसलिए मैं उनके सार्वजनिक जीवन का संक्षेप में उल्लेख मात्र करके अपना कर्तव्य अदा करूंगा।.....'

आर्काट-बंधु के नाम से सुप्रसिद्ध ये दो भाई — सर आर्काट रामस्वामी मुदलियार और डा. आर्काट लक्ष्मणस्वामी मुदलियार-नकुल-सहदेव के बाद शायद भारत के सबसे विख्यात और विशिष्ट जुड़वां भाई रहे हैं।

आज से ८७ साल पहले कर्नूल में आर्काट कुप्पुस्वामी मुदलियार नामक एक सरकारी कर्मचारी की पत्नी सिद्दम्मा ने १४ अक्टूबर १८८७ को ४७ मिनिट के अंतर से दो पुत्रों को जन्म दिया। पति-पत्नी परम वैष्णव थे; उन्होंने पहले पधारने वाले बच्चे का नाम रामस्वामी और दूसरे का लक्ष्मणस्वामी रखा। अयोध्या के उन दो राजकुमारों की भांति ही इन आधुनिक राम-लक्ष्मण में भी अटूट प्यार था। अयोध्या के राम-लक्ष्मण एक मां के जाये नहीं थे;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनमें रंगभेद भी था; मगर ये सहोदर तो रंग-रूप में इतने समान थे कि स्वयं माता-पिता भी भ्रम में पड़ जाते थे।

दोनों भाई अभी दो ही बरस के थे कि उनके सिर पर से माता की स्नेहछाया उठ गयी। फिर कर्नूल में प्रारंभिक शिक्षा पूरी करके वे मेट्रिक्युलेशन में उत्तीर्ण हुए ही थे कि उन्हें पिताजी के वात्सल्य से भी वंचित हो जाना पड़ा। चाचा और मामा ने उनकी उच्च शिक्षा की व्यवस्था की। फलस्वरूप दोनों भाई १९०३ में मद्रास के क्रिश्चियन कालेज में भरती हुए और कैथनेस हास्टल में रहने लगे। वहां उन्हें डा. मिलर और स्किनर जैसे मेधावी प्राध्यापकों के निकट संपर्क का लाभ मिला। दोनों भाई एफ. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

दोनों भाइयों का आकृतिसाम्य बहुधा प्राध्यापकों को चक्कर में डाल देता था। स्वयं रामस्वामी मुदलियार ने एक जगह लिखा है—'प्राध्यापक.....मुझसे मिले तो पूछ बैठे कि तुम तुम हो या तुम्हारे भाई? मैंने भी चट-से जवाब दिया कि मैं मैं हूं और वह मेरा भाई है। प्रोफेसर साहब ओंठों पर मुस्कराहट लिये चल पड़े। मैं नहीं जानता कि उनकी शंका का समाधान हुआ कि नहीं।'

एक बार छोटे भाई बाल बनवाने गये, तो क्या देखते हैं कि नाई टकटकी बांधे उन्हीं को देख रहा है। शायद वह इस सोच में पड़ गया था कि अभी-अभी तो मैंने इस शख्स के बाल बनाये थे, इतनी जल्दी इसके बाल बढ़ कैसे गये! कहा जाता है कि [illegible] से बड़े भाई ने मूंछें रख लीं और छोटे [illegible] मूंछें साफ करा दीं।

एफ. ए. के बाद भाइयों की पढ़ाई [illegible] रुख बदला। बड़े ने कानून की ओर [illegible] किया और छोटे ने डाक्टरी की राह पकड़ी।

श्री रामस्वामी मुदलियार ने कानून की पढ़ाई पूरी करके १९११ में वकालत शुरू की। उसमें शीघ्र ही उनका [illegible] चमकने लगा। उनकी वक्तृत्व-शक्ति [illegible] आकृष्ट होकर सर पी. त्यागराय मुदलियार और डाक्टर टी. एम. नायर ने [illegible] राजनीति में भाग लेने को प्रोत्साहित किया। १९१७ में जस्टिस पार्टी कायम हुई। रामस्वामी मुदलियार उसके सक्रिय सदस्य [illegible] और सन १९१९ में उसके प्रतिनिधि [illegible] हैसियत से ब्रिटिश पार्लमेंट की एक समिति के सामने शहादत देने लंदन गये। यह उनकी पहली विदेश-यात्रा थी।

जब १९१९ के 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट' के अनुसार चुनाव हुए तो रामस्वामी मुदलियार लेजिस्लेटिव काउंसिल के [illegible] चुन लिये गये और तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री पनगल राजा के संसदीय सचिव [illegible] इसके बाद भी वे लंबे अरसे तक काउंसिल के सदस्य बने रहे। इस हैसियत से उन्होंने अनिवार्य शिक्षा के आयोजन और विश्वविद्यालय के अधिकारों के अधिनियम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने सन १९२७ से १९३५ तक 'जस्टिस' नामक अंग्रेजी अखबार का [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संपादन किया। इसमें उनके लिखे संपादकीय अंग्रेजी भाषा पर उनके अधिकार और स्वपक्ष-प्रतिपादन की उनकी शैली के अत्युत्तम उदाहरण हैं। शायद भारतीय अखबारों में व्यंग्य-चित्र (कार्टून) छापने का क्रम भी उन्हींने आरंभ किया। उन्होंने मद्रास नगरपालिका के कार्यों में खूब दिलचस्पी ली और दो बार उसके अध्यक्ष भी बने।

सन १९३१ की गोलमेज कान्फरेंस में उन्होंने भाग लिया और १९३४ तक केंद्रीय धारासभा के भी सदस्य रहे।

वे श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी, लाल मोहन घोष, वी. एस. श्रीनिवास शास्त्री और एस. सत्यमूर्ति की कोटि के सुवक्ता हैं। जब जस्टिस पार्टी की ओर से वे और कांग्रेस की ओर से एस. सत्यमूर्ति केंद्रीय धारासभा की एक ही सीट के लिए चुनाव में खड़े हुए, तो इन पुराने सहपाठियों में मानो भाषण-कला की प्रतियोगिता ही छिड़ गयी। यों चुनाव का नतीजा सत्यमूर्ति के पक्ष में निकला।

किंतु राजनीति और राजकाज से सर रामस्वामी मुदलियार का संबंध बना रहा। ब्रिटिश सरकार उन्हें अनेक ऊंचे पद देती रही। वे लंदन में भारत-मंत्री की काउंसिल के सदस्य रहे; वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य बने; द्वितीय महायुद्ध के दौरान इंपीरियल वार कैबिनेट के भी सदस्य रहे।

१९४५ में सानफ्रांसिस्को के राष्ट्रसंघ-संमेलन में श्री रामस्वामी मुदलियार ने भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। वहां बिना पूर्व-तैयारी के उन्होंने जो भाषण दिया, उसकी प्रशंसा तो पंडित जवाहरलाल नेहरू तक ने की। उन्होंने राष्ट्रसंघ की अर्थ और समाज समिति का अध्यक्ष-पद भी बड़ी योग्यता से संभाला।

वे १९४६ से १९४९ तक मैसूर राज्य के दीवान रहे। उनकी सलाह से मैसूर राज्य भारत में विलीन हुआ। मगर जनप्रतिनिधियों को सरकार में संमिलित करने के मामले में उन्होंने महाराज को अनुदार सलाह दी। मैसूर कांग्रेस ने सत्याग्रह छेड़ दिया और अंत में महाराज को झुकना पड़ा।

किंतु नेहरू और पटेल श्री रामस्वामी मुदलियार की योग्यता के पूरे कायल थे। उन्होंने राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद में उन्हें भारत का प्रतिनिधि नियुक्त किया और रामस्वामी मुदलियार ने भी सौंपे हुए कार्य को बड़ी योग्यता और निष्ठा से अंजाम दिया। जब हैदराबाद में भारत की पुलिस-कार्रवाई को लेकर सुरक्षा-परिषद में चखचख मची, उन्होंने भारत सरकार की बहुत जोरदार वकालत की। असल में 'पुलिस-कार्रवाई' शब्द इस संदर्भ में उन्हीं ने गढ़ा था। कश्मीर के प्रश्न पर राष्ट्रसंघ में दिये हुए उनके भाषण भी सदा याद किये जायेंगे। १९५२ से १९६२ तक वे राज्य-सभा के निर्वाचित सदस्य थे। १९५१ से १९५९ तक वे ट्रावंकोर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी थे।

अब वे राजनीति और प्रशासन से निवृत्त होकर उद्योग और व्यापार पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान दे रहे हैं। पिछले वर्षों में वे कई कंपनियों के डाइरेक्टर और चेयरमैन रहे हैं। उनके द्वारा संचालित नौपरिवहन संस्था को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां हैं। बड़े पुत्र डा. आर्काट कृष्णस्वामी (बार-एट-ला) पिता की ही भांति सुवक्ता और राजनीतिज्ञ हैं। लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने अच्छा नाम कमाया; और 'लिबरेटर' नामक अंग्रेजी पत्र का संपादन भी वे कर चुके हैं।

रामस्वामी मुदलियार को अपने कुल-दैवत तिरुपति के वेंकटेश्वर (बालाजी) में अनन्य भक्ति है और मानते हैं कि उन्हीं की कृपा से वे दो बार हवाई दुर्घटना में बाल-बाल बच सके। नब्बे की पहुंचती वय में भी उनमें युवकों-सी मानसिक स्फूर्ति है।

यही बात उनके भाई डा. लक्ष्मण-स्वामी मुदलियार के विषय में भी कही जा सकती थी, जिनका देहावसान १४अप्रैल ७४ को मद्रास में हुआ।

बाईस वर्ष की आयु में डाक्टरी की परीक्षा पास करके लक्ष्मणस्वामी मदुरै जिले में डाक्टर नियुक्त हुए। अगले वर्ष तबादला होकर मद्रास आये और आते ही सुप्रसिद्ध डाक्टर लेफ्टिनेंट कर्नल डोनोवन के सहायक नियुक्त हुए। फिर एग्मोर के जच्चा-बच्चा अस्पताल और रामपुरम् के प्रसूतिका-गृह में काम करके १९२० में एग्मोर अस्पताल में लौट आये, जहां पचीस से अधिक वर्ष तक सेवा करते हुए उन्होंने चिकित्सा में अंतरराष्ट्रीय ख्याति पायी।

बचपन में ही माता की गोद से वंचित डाक्टर लक्ष्मणस्वामी ने प्रसवशय्या पर पड़ी कितनी ही माताओं को मृत्युमुख से बचाया। ऐसे भी अवसर आये कि पुरुष डाक्टर की सेवा लेने से सकुचा रही गर्भवती का प्रसव-संकट दूर करने वे साड़ी पहनकर महिला डाक्टर के रूप में पहुंचे।

डा. मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, जो डाक्टर के रूप में उनके अधीन काम कर चुकी हैं, अपने अनुभव से कहती हैं—'चिकित्सकीय प्रत्युत्पन्नमतित्व में डाक्टर लक्ष्मणस्वामी बेजोड़ थे।'

स्वयं श्रीमती मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी के प्रथम प्रसव में स्थिति ऐसी नाजुक हो गयी कि डाक्टर निराश हो गये और इस नतीजे पर पहुंचे कि मां को बचाना है, तो बच्चे को बेजान हालत में काट-काटकर निकालना पड़ेगा। किंतु डा. लक्ष्मणस्वामी ने मां-बच्चे दोनों की जान बचा दी। वही बच्चा राममोहन आगे चलकर केंद्रीय जल और विद्युत् आयोग में डाइरेक्टर बना।

डा. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार १९२[illegible] में एम. डी. पास हुए और सन १९२८ में सरकार ने उन्हें एक वर्ष के लिए विलायत भेजा। १९३४ में उन्हें अस्पताल के काम के अलावा, मद्रास मेडिकल कालेज में प्रसूति एवं प्रजननशास्त्र के प्राध्यापक का पद भी दिया गया। इन विषयों पर उनके लिखे ग्रंथ देश-विदेश में पाठ्यक्रमों में संनिविष्ट हैं। १९३६ में वे मद्रास मेडिकल कालेज के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम भारतीय प्रिंसिपल बने।

डाक्टरी पेशा करते हुए लक्ष्मणस्वामी मद्रास विश्वविद्यालय की सिंडिकेट के सदस्य हो गये थे, यह पहले बताया जा चुका है। तब स्वतंत्रता अभी बहुत दूर थी। सरकार ने एक यूरोपियन आइ. एम. एस. अफसर को मद्रास के जनरल अस्पताल का सुपरिंटेंडेंट और मेडिकल कालेज में प्रसूति और प्रजनन-शास्त्र का प्राध्यापक नियुक्त किया। उसी के अधीन कार्य करते हुए भी लक्ष्मणस्वामी मुदलियार ने विश्वविद्यालय की सिंडिकेट में इसका विरोध किया कि उक्त अधिकारी को प्राध्यापक का पद नहीं दिया जा सकता; क्योंकि उसे पढ़ाने का चार वर्ष का अनुभव नहीं है, जो कि नियमानुसार आवश्यक है।

सन १९२५ से १९४२ तक सिंडिकेट के सदस्य रहने के बाद डा. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार मद्रास विश्वविद्यालय के उप-कुलपति चुने गये और लगातार नौ बार बहुमत से चुने जाकर २७ वर्ष तक इस पद पर बने रहकर उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी अध्यक्षता में मद्रास विश्व-विद्यालय की शाखा-प्रशाखाओं का अपूर्व विस्तार हुआ। उन्होंने पिछली सदी में छपी किट्टेल डिक्शनरी (कन्नड-अंग्रेजी), ब्रौन्य निघंटु (तेलुगु-अंग्रेजी) जैसी अतिदुर्लभ एवं प्रामाणिक पुस्तकों के नये संस्करण छपवाये, जिसके लिए विद्याप्रेमी उन्हें याद रखेंगे।

राजनीति ने डा. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार को भी आकृष्ट किया। १९४६ में वे मद्रास विधान-परिषद् के सदस्य नियुक्त हुए। १९५३ में विपक्षी दल के नेता हुए। बाद में भी सदस्य रहे।

सन १९५२ में मद्रास के मुख्य मंत्री के नाते राजाजी ने विधान-परिषद् में लक्ष्मण-स्वामी की प्रशंसा में कहा था—'वे एक सर्च-लाइट हैं, सरकारी जहाज को सही मार्ग पर चलाने का कार्य करते हैं। उनसे मैं भी इस प्रकार का सहयोग चाहता हूं।'

राष्ट्रसंघ के विश्वस्वास्थ्य संघटन (डब्ल्यू. एच. ओ.) से डा. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार का संबंध १९४८ से ही था। वे उसकी कार्य-कारिणी समिति के अध्यक्ष भी रहे। यूनेस्को के अधिवेशनों में भी भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के नाते वे भाग लेते रहे।

सन १९४४ में केंद्रीय सरकार ने देश की चिकित्सा-व्यवस्था की जांच करने के लिए भोर कमिटी की स्थापना की थी। लक्ष्मण-स्वामी उसके सदस्य थे। १९५३ में माध्य-मिक शिक्षा की व्यापक जांच के लिए केंद्रीय शिक्षा-मंत्रालय ने उनकी अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया, जिसका प्रतिवेदन 'मुदलियार कमिशन रिपोर्ट' नाम से विख्यात हो चुका है।

उनकी विभिन्न सेवाओं के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति ने उन्हें 'पद्मविभूषण' पदक से विभूषित किया। वे एक बेटी और एक बेटे के पिता थे। जन्म, रूप, वेश, सफलता और यश के अलावा मुदलियार-बंधु एक और बात में भी समान थे। उन्होंने दो सगी बहनों से विवाह किया था।

—कल्कि बिल्डिंग, कीलपाक, मद्रास—१०

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकशाला में विभिन्न साग-भाजियों के साथ प्रयुक्त होकर उनका स्वाद बढ़ाने वाला प्याज अपने औषधीय गुणों के कारण प्राचीन काल से चिकित्सा में भी प्रयुक्त हो रहा है। साधारण-सा दिखने वाला यह कंद अपने में अनेक खूबियां संजोये हुए है।

हमारे यहां मुख्यतः प्याज दो किस्म का होता है—छोटा एवं बड़ा। दोनों ही उपयोगी हैं। फिर भी छोटा प्याज अधिक लाभदायक माना गया है। वह अधिक स्वादु और कम गंध वाला होता है। उसका अचार भी बनाया जाता है। लाल छिलके वाला प्याज अधिक तीखा होता है और उसके छिलके में कैटेचोल

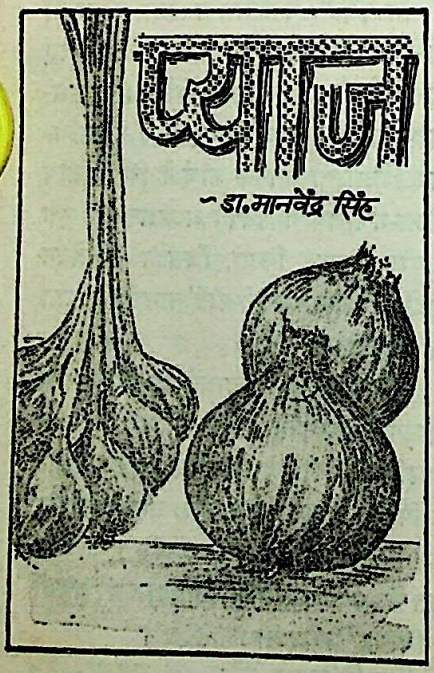

और प्रोटो-कैटेचूइक अम्ल होते हैं, जिससे वह अधिक दिन टिकता है।

प्याज का मुख्य खाद्य भाग उसकी गांठ है। प्याज में आर्द्रता ८६·८, प्रोटीन १·२, वसा ०·१ से कम, कार्बोहाइड्रेट ११·६ कल्शियम ०·१८, फास्फोरस ०·०५ प्रतिशत, लोहा ०·७ मि. ग्राम और विटामिन ए, बी, सी होते हैं।

प्याज की पत्तियां भी खायी जाती हैं। १०० ग्राम पत्तियों में १·२ मि. ग्राम प्रोटीन, ९० मि. ग्रा. नमी, ०·८ मि. ग्रा. वसा, १· मि. ग्रा. खनिज, १·४ मि. ग्रा. रेशे एवं ५· मि. ग्रा. अन्य शर्करा-पदार्थ होते हैं। उनसे लगभग ३३ कैलोरी ऊर्जा प्राप्त हो सकती है। खनिज-लवण मुख्यतः कैल्शियम एवं फास्फोरस होते हैं। थायमीन, राइबोफ्लेविन, निकोटिनिक एसिड एवं विटामिन ए और सी उनमें पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

प्याज की गांठ में प्रोटीन और वसा की मात्रा पत्तियों से कुछ कम होती है। परंतु उसमें शर्करा प्रचुर मात्रा में होती है, जिसके कारण उससे ४१ कैलोरी ऊर्जा प्रति १०० ग्राम प्राप्त होती है। देश के कुछ हिस्सों में प्याज का वह डंठल भी खाया जाता है, जिस पर फूल खिलता है।

अमरीका और रूस में प्याज के संबंध में हुई खोजों से कई नये तथ्य प्रकाश में आये हैं। रूस के एक विज्ञानी डा. वी. टोकिन ने पता लगाया है कि प्याज में आश्चर्यजनक कीटाणुनाशक शक्ति होती है। उन्होंने इसका प्रयोग पौधों की १५० जातियों पर किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। लहसुन, सरसों एवं अन्य मिर्च-मसालों में भी कीटाणुनाशक शक्ति होती है; किंतु प्याज इस मामले में उनसे आगे है। विभिन्न व्याधियां उत्पन्न करने वाले कीटाणु—जैसे स्टैफिलोकोकस, प्रोटोजोआ और यहां तक कि टाइफस भी—इससे नष्ट होते देखे गये हैं।

इसका रहस्य प्याज के अरुचिकर वाष्पों में है, जो उसे छीलते समय आंखों में पानी ला देते हैं। अमरीका के तीन वैज्ञानिकों ने प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया है कि प्याज को पांच मिनिट तक मुंह में रखकर चबाने से मुंह एवं गला कीटाणु-रहित हो जाते हैं। ठंड लग जाने पर एवं गले के संक्रमण (इन्फेक्शन) में इसका उपयोग लाभदायक होता है। प्याज के नये पौधों में कीटाणुनाशक शक्ति अधिक पायी गयी है।

अमरीका के एक शोधकर्ता ने यह पाया कि खेत में उगा हुआ प्याज का पौधा अपने आस-पास के विभिन्न पौधों को हानि पहुंचाने वाले कई कवक एवं अन्य कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। यहां भी इसका वाष्प ही मुख्य कीटाणुनाशक तत्त्व है।

कुछ वैज्ञानिक घावों पर भी इसका प्रभाव जांच रहे हैं। उनका कहना है कि प्याज के उपयोग से घाव शीघ्र भर जाता है। प्याज को कुचलकर बरतन में डालकर घावों के पास रखा गया, जिनमें स्टैफिलोकोकस, स्ट्रेप्टोकोकस आदि कीटाणु थे। प्याज के वाष्पों के प्रभाव से वे घाव कुछ ही दिनों में बदबू से मुक्त हो गये तथा भरने लगे।

विज्ञानियों का कहना है कि प्याज अतिरिक्त वसा को रक्तवाहिनियों में जमने नहीं देता, जिससे हृदय-संबंधी विकारों से बचाव होता है। उसे उद्दीपक, मूत्रल और कफोत्सारी बताया गया है। अफारा और पेचिश की तो वह अच्छी दवा है।

प्याज बीजों, कंदों अथवा पत्र-प्रकलिकाओं से बोया जाता है। इसे खेतों और बगीचों में बोते हैं। अंतर्वर्ती फसल के रूप में भी यह बोया जाता है। यह फसल आमतौर से बीज छिटककर बोते हैं। परंतु बीज एक मौसम से अधिक नहीं ठहरते, इसलिए कहीं-कहीं अच्छी गांठें चुनकर बो देते हैं। कभी-कभी गांठों का केवल निचला आधा भाग बोया जाता है और उपरला भाग खाने के काम में लाया जाता है।

प्याज की फसल ९० दिन में तैयार हो जाती है। पत्तियां मुरझाने के बाद कंद निकालकर सुखा लिये जाते हैं। फिर बाद में उन्हें भंडार में भर दिया जाता है। धीरे-धीरे उनकी तीखी गंध कम हो जाती है और उनका स्वाद बढ़ जाता है।

प्याज पर जब फफूंद जमने लगे, तो मरी चीटियों को जलाकर, गंधक के फूल छिड़ककर उस फफूंद की रोकथाम की जा सकती है। पत्तियों का रस चूसने वाले कीड़े थ्रिप्स के लगने पर, तंबाकू का काढ़ा या अशोधित नैफ्थलीन और बुझे हुए चूने का मिश्रण छिड़ककर उसे वश में किया जाता है। इसी प्रकार पत्ती खाने वाली सूंड़ी को चुनकर नष्ट करना पड़ता है।

—९, गिल्ल कालोनी, सहारनपुर, उ.प्र.

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवाल अल सादैन
की मिस्री कहानी

वह गुसलखाने की ठंडी टाइलों पर पालथी मारे बैठी थी। ठंड के कारण उसका दुबला-पतला शरीर कांप रहा था और दांत कटकटा रहे थे। तभी उसने संभ्रम से गुसलखाने में घूमना शुरू कर दिया। क्या यह गुसलखाना ही है ? उसने आज तक कभी सोचा भी नहीं था कि संसार में ऐसा भी गुसलखाना हो सकता है।

इससे पहले उसने उम्दा के घर का गुसलखाना देखा था। एक बार उम्दा की बेटी और गाफिर की लड़की के संग लुका-छिपी खेलते-खेलते वह अचानक उस कमरे में घुसकर छिप गयी थी, वह कमरा घर के अंत में था।

उसे याद है उम्दा की बेटी ने बताया था कि यह कमरा 'गुसलखाना' कहलाता है। उसमें एक बड़ा-सा हौज था, जिसमें टोंटी लगी हुई थी। जीवन में पहली बार उसने टोंटी और गुसलखाना देखे थे।

अपने बाप के घर में तो उसने बस एक

चिलमची और एक मग देख थे, जिन्हें उसकी मां उस कमरे में पहुंचा देती थी, जहां किसी को नहाना होता था। इसी चिलमची में ही उसकी मां कभी-कभी आटा छानकर रखती थी और फसल कटने पर जौ या मक्का भी रख दिया करती थी।

उसने बड़े विस्मय से इधर-उधर देखा। अपनी बहती आंखों और नाक को पल्लू से पोंछा और फिर उस सफेद चमकीली चीज को निहारने लगी, जो एक बड़ा कुंड-सा लगती थी। उसे लगा कि अगर उसे पानी से भर दिया जाये, तो उसमें वह अवश्य डूब जायेगी। और उसके ऊपर ये चमचमाती टोंटियां !

'बाह्या....ओ कमबख्त बाह्या !' एक तेज और ऊंची आवाज गुसलखाने के दरवाजे को पार करके उस तक पहुंची। अपना नाम पुकारे जाते सुनकर बेचारी बच्ची दहशत के मारे कांपने लगी और उठ खड़ी हुई। स्वर और भी ऊंचा हो गया था। डर से कांपते हुए बाह्या ने चमकते हुए हैंड़ल को पकड़कर दरवाजा खोलने की कोशिश की। हैंडल हिला तक नहीं और उसने दरवाजे के साथ मुंह सटाकर ऊंची चीख मारी, मानो खेतों में अपनी मां को बुला रही हो.....'मैं इसके भीतर हूं मालकिन, जिसे आप गुसलखाना कहते हैं, और मैं बाहर नहीं आ पा रही हूं।'

जब हैंडल अपने आप घूम गया और दरवाजा खुल गया, तो बाह्या हक्की-बक्की रह गयी। फिर उसने अपने सामने एक गोरी साफ-सुथरी औरत को खड़ी पाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरत ने उसे एक जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया—'तू गुसलखाने में क्या कर रही थी? तुझे इसमें जाने को किसने कहा था?'

'माफ कर दो मालकिन .....रसुल की कसम, मेरा इसमें कोई कसूर नहीं। आपका नौकर अब्दू है न, उसी ने मुझसे कहा था कि जब तक मालकिन न बुला भेजें, तब तक तू यहीं बैठी रहना।'

उस दिन से बाह्या को मालूम हो गया कि उस घर में उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। किस चीज की इजाजत है और किस चीज की नहीं। उस घर में उसके साथ एक रसोइया काम करता था, जिसका नाम अब्दू था। वह ऊपर छत पर बने एक कमरे में रहता था।

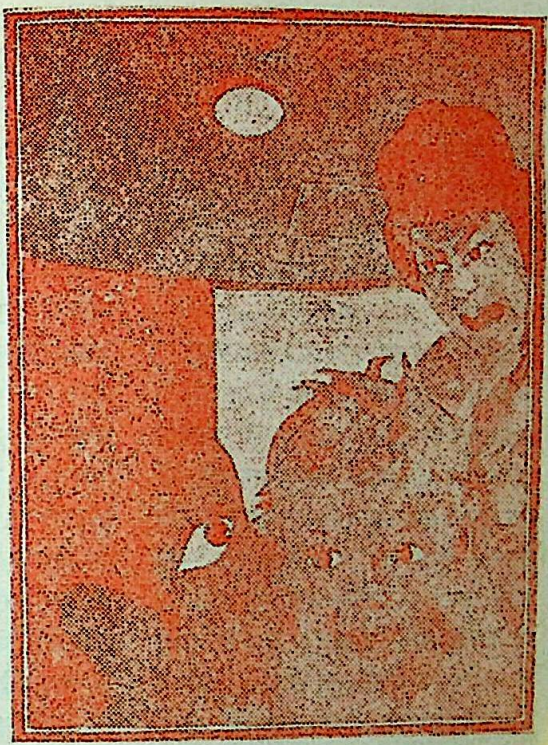

चित्र : कमलाक्ष शेणै

एक और बड़ी लड़की खदीजा भी वहां काम करती थी और बाह्या की खदीजा से खूब पटने लगी थी। वे दोनों रसोईघर के एक कोने में लकड़ी के बेंच पर एक साथ सोती थीं। एक दिन सोने से पहले बातें करते-करते बाह्या ने अपने पिता की हत्या की कहानी शुरू कर दी। लेकिन खदीजा यह कहानी सुनना नहीं चाहती थी; शीघ्र ही खर्राटे भरने लगी।

बाह्या जग रही थी और अपनी मां और छोटी बहन जेनब के बारे में सोच रही थी। उसने मन ही मन कहा—'मां, तुम इस वक्त क्या कर रही होगी?' पिता का मरने से पहले का जो चित्र उसने देखा था, वह उसकी आंखों के सामने उभर आया। अब पिता की हत्या का दृश्य उसे याद आ चुका था। डरकर वह खदीजा से लिपट गयी। उसके शरीर की गरमाहट से उसे सांत्वना और सुरक्षा की भावना महसूस हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने आंखें मूंद लीं; परंतु मां तथा छोटी बहन का चित्र उसकी आंखों के सामने से नहीं हटा। उसने देखा कि गोद में बैठी छोटी जेनब मां का दूध पी रही है। वह खुद मां के पास ही धूल में खेल रही है और भूख महसूस कर रही है। कई दिनों से सूखी रोटी के कुछ टुकड़ों के सिवा उसने कुछ नहीं खाया है।

अब उसके सामने एक और चित्र उभरा। मुर्गी-पालक नाफौसा, इफंदी के संग मां के पास आया था। उनकी बातें उसकी समझ में नहीं आयी थीं। केवल अपना नाम उसे कई बार सुनाई दिया था। फिर वह उनकी बातें ध्यान से सुनने लगी थी। उसने इफंदी को कहते सुना था–'इसकी उम्र क्या होगी?' मां ने कहा था–'दस साल।' नाफौसा बोला था–'ओह, तो अभी बहुत छोटी है।' मां ने प्रतिवाद किया था–'आप क्या कह रहे हैं मालिक! यह काम करने में बड़ी होशियार है। यह सफाई-धलाई कर लेती है और बच्चों को संभाल सकती है। उठो बाह्या, अपने मालिक का हाथ चूमो।' बाह्या उठ खड़ी हुई थी। उसे मां की आज्ञा का पालन करना पड़ा था।

इफंदी उसे साथ ले चला था। उसने पीछे मुड़कर देहरी में बैठी मां से, जिसकी गोद में छोटी जेनब थी, कहा था–'मां, मैं जा रही हूं। जेनब का ध्यान रखना।'

और उसने मां को कहते सुना था–'खुदा तुम्हें ताकत दे.....अपना खयाल रखना।' उसने मां को अपनी आंखें और नाक पोंछते देखा था और फिर वह एकदम मुड़कर इफंदी के पीछे-पीछे जल्दी-जल्दी चलने लगी थी।

अगली सुबह कानों को भेदने वाली एक आवाज ने उसकी आंखें खोल दीं– 'ओ चुड़ैल बाह्या, अभी तक तू उठी नहीं?'

बाह्या झटके के साथ उठ खड़ी हुई। लंबा-चौड़ा रसोईघर जिसमें बड़ा फ्रिज और बिजली का चूल्हा था, देखकर उसे याद आया कि वह काहिरा में है–अपने गांव में अपने घर में नहीं, बल्कि अपने मालिक के घर में है। उसने उत्तर दिया–'आयी मालकिन! मैं तो कब से जग रही हूं।' वह दौड़कर मालकिन के पास पहुंची और देखा कि आरामदेह बिस्तर में लेटी मालकिन अपनी गोरी और उभरी छाती से अपनी बेबी को दूध पिला रही है।

'कमीनी, क्या अभी तक सो रही थी?'

'नहीं मालकिन, मैं तो बड़ी सुबह से जाग रही हूं।'

'ये नैपकिन ले जा और गुसलखाने में धोकर बालकनी में टांग दे और जल्दी आकर नौसा को उठा ले।'

'जी, बहुत अच्छा, मालकिन।'

बाह्या मानो उड़कर गयी और उसने मालकिन की आज्ञा का पालन किया। फिर उसने बच्ची को उठा लिया और उसे चुप कराने लगी।

'चुप हो जाओ, नौसा.....चुप.....नौसा चुप हो जाओ...चुपऽऽ चुपऽऽ।'

बच्ची ने रोना बंद कर दिया और बाह्या उसकी आंखों और ओंठों को निहारने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे लगा कि बच्ची उसकी बहन जेनब से मिलती-जुलती है। उसने कल्पना की कि वह जेनब है, उसे अपने सीने से बड़े प्यार से चिपका लिया और फिर उसे चूम लिया। बच्ची के चेहरे से उसने अपने ओंठ हटाये ही थे कि एक तीखी ऊंची आवाज सुनकर वह सहम गयी—'क्या ? तू उसे चूम रही है ? कमीनी ! अगर तूने फिर उसे चूमने की हिम्मत की, तो अल्लाह तुझे अंधा कर देगा। आयी मेरी बात समझ में ?'

बाह्या के मुंह से अभी बोल भी न फूटे थे कि एक चांटा उसके गाल पर आ पड़ा।

'मालकिन, मुझे माफ कर दीजिये, अल्लाह के नाम पर। फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी।'

वह शांत होने लगी। बच्ची को उसने उठा रखा था। एक बार फिर उसने बच्ची के चेहरे को ताका। इस बार उसके चेहरे में उसे जेनब का कोई सादृश्य नहीं दिखाई दिया। उसकी आंखों में उसकी मां का दंभ और क्रूरता दिखाई दी और उसे उससे नफरत हो आयी।

क्या मुझे यही इनाम मिलेगा ? मैंने कोई कसूर नहीं किया था, कोई नुक्सान नहीं किया था। कोई गिलास अथवा प्लेट नहीं तोड़ी थी.....मैंने केवल बच्ची का चुंबन लिया था; क्योंकि मैं उसे प्यार करती थी और उस पर मुझे दया आती थी। क्या प्यार और दया का यही पुरस्कार होता है ?

उसने बच्ची की ओर से मुंह मोड़ लिया और लापरवाही से बिना प्यार के उसे थपथपाने लगी। उसे अपनी बहन की याद हो आयी। 'मेरी बहन को अब कौन थपकी देता होगा !' कई बार उसने कल्पना में देखा कि उसकी बहन ठंडे फर्श पर लेटी रो-चिल्ला रही है और उसका चेहरा धूल से अटा पड़ा है। वह कल्पना में दौड़कर उसके पास जाती, उसका चेहरा साफ करती, उसे चूमती और मां के खेतों से वापस आने तक उसकी देखभाल करती।

बाह्या ने बच्ची के चेहरे को निहारा। एकदम साफ और नरम था। जब बच्ची रोती है, तो वह उसे थपथपाती है, उससे खेलती है। 'क्या मेरी बहन जेनब इसी बच्ची की तरह नहीं ? क्या उसे प्यार पाने का अधिकार नहीं ? किंतु यह लोग तो मुझे तमाचा मारते हैं। मेरा कसूर सिर्फ इतना ही है कि मेरे दिल में प्यार उमड़ता है।'

बाह्या का मन बागी हो उठा। उसने बच्ची को बिस्तर पर लिटा दिया और उसे हिकारत से देखने लगी।

बच्ची उठाये जाने के लिए मचलने लगी। उसकी मां गुसलखाने में थी। उसने निहायत बुलंद आवाज में पूछा—'ओ चुड़ैल बाह्या, नौसा क्यों चिल्ला रही है ?'

बाह्या ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बच्ची को थपथपाने लगी, ताकि वह चुप हो जाये। किंतु बच्ची चुप नहीं हुई।

एक बार फिर ऊंचा तीखा स्वर सुनाई दिया—'नौसा क्यों रो रही है ?'

बाह्या क्रोध से जल-भुन गयी। किंतु उसे किस पर गुस्सा आ रहा है, यह वह समझ नहीं पा रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने अपना हाथ ऊपर उठाया, बच्ची को एक चपत रसीद की, और दरवाजे के बाहर भागकर गली में आ गयी।

जब वह अपने मालिक के घर से बहुत दूर आ गयी, तो उसे एक दयालु आदमी दिखाई दिया। उससे उसने अपने गांव जाने वाली बस का ठिकाना पूछा। आदमी ने न केवल उसे सही जगह पहुंचा दिया, बल्कि उसे कुछ पैसे भी दिये।

बाह्या बस में नीचे ही पालथी मारकर बैठ गयी थी; क्योंकि उसके पास आधे टिकट के पैसे भी नहीं थे। कंडक्टर ने उसे सीट पर नहीं बैठने दिया था। जब बस उसके गांव के बाहर रुकी, तो बाह्या बस से कूदकर मानो उड़ चली।

हमेशा की तरह उसने अपने घर का दरवाजा खुला पाया। वह घबराहट में एकदम अंदर घुस गयी। आंगन में पहुंचने से पहले ही उसे अपनी बहन की ऊंची चिल्लाहट सुनाई दी। वह उसकी ओर लपकी। उसका मुख धूल से भरा हुआ था। 'मेरी प्यारी जेनब!' उसने अपने बाजुओं में लेकर जेनब को बेतरह चूमना शुरू कर दिया।

बाह्या ने खुशी के मारे आह भरी। वह जेनब को प्यार कर सकती है, उसे जितना चाहे चूम सकती है। उसे अब न मार खानी पड़ेगी, न गालियां और अपमान सहना पड़ेगा।

बाह्या ने जेनब को जोर से भींच लिया और जब उसकी मां घर में दाखिल हो रही थी, तो वह कह उठी—'ओ अम्मां, मैं छोटी जेनब से अलग नहीं रह सकती....मैं उसे उठाने-संभालने के लिए वापस आ गयी हूं।'

'बाह्या, तुम्हारा घर वापस आ जाना एक बहुत बड़ी नियामत है।' मां ने उत्तर दिया।

*

बुद्धि और कुरूपता

रब्बी जोशुआ बेन हनानियाह बहुत कुरूप था। एक बार एक राजकुमारी ने उससे कहा—'भला ईश्वर ने इतनी महान बुद्धि इतने कुरूप शरीर में क्यों भरी है?'

जवाब में रब्बी ने कहा—'भला तुम्हारे पिता शराब मिट्टी की सुराही में क्यों रखते हैं?'

'तो और किस में रखें?' राजकुमारी ने पूछा।

'तुम जैसे शाही खानदान के लोगों को तो शराब सोने या चांदी के बरतनों में रखनी चाहिये।'

राजकुमारी ने अपने पिता से कहा कि भविष्य में शराब सोने या चांदी के बरतनों में रखी जाये। मगर वैसा करने पर शराब कुछ ही समय में खट्टी हो गयी। बादशाह ने रब्बी को बुला भेजा और राजकुमारी को गलत सलाह देने का कारण पूछा।

रब्बी ने कहा—'यह सलाह मैंने राजकुमारी को यह दिखाने के लिए दी थी कि बुद्धि की तरह शराब भी सादे बरतनों में ही सुरक्षित रहती है।'

'तो क्या ऐसे विद्वान नहीं हैं जो रूपवान भी हों?' राजकुमारी ने पूछा।

'बेशक हैं,' रब्बी जोशुआ ने कहा—'लेकिन अगर वे कुरूप होते, तो शायद और भी बड़े विद्वान होते।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार छोटी कविताएं

मौन

ऐ क्षण ! सोचा था तुमसे कुछ कह दूंगी
कुछ दुःख बांट लूंगी
लेकिन कहां ?
तुम्हें भी तो जल्दी है
उतनी ही जितनी कि औरों को,
तब ठीक है,
दिल में ही सह लूंगी
और अंत में मिट्टी से ही कह दूंगी।

—गौरी सक्सेना

□

बौना

बघनखा आदर्शों का पहन
तुम्हारे यांत्रिक हाथ
आकाश से भी ऊंचे उठ गये।
किंतु
बाप-दादों से विरसे में मिला
तुम्हारा मन
तुम्हारा तन
कितना बौना है आज भी !

—डा. श्यामसिंह 'शशि'

□

सूखा

वर्क के टुकड़े-सी जम गयी है
धरती।
नंगे दरख्तों-से खड़े हैं
आदमी
और उन आदमियों के प्राण
सूंघते आसमान !

—रामनिवास शर्मा 'मयंक'

□

निर्णय

वे विवशताएं, जो निर्णय बन गयीं !
बेकार ही था कुछ भी कहना
कोई भी तो न था सुनने को खाली
इसलिए चुप्पियों की दीवार तन गयी।
मन भोला है गौरैया की तरह
टहनी पर चहचहाता है
और खतरे का आभास पाकर
कहीं घोंसले में दुलक जाता है।

—कु. नसीम रहमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लॉरेंस वान डेर पोस्ट

नहीं, मैं हिरोशिमा में नहीं, वहां से हजारों मील दूर जावा में था। मगर जावा में जो कुछ मेरे साथ हुआ, वह हिरोशिमा और नागासाकी के निवासियों के साथ जो गुजरी उसी कहानी का एक अंश था। उस तथाकथित युद्धबंदी-शिविर में लाये जाने से पहले मुझे दिखाया गया था कि जापानी सैनिक बांस के खंभों से बंधे जीवित युद्धबंदियों पर संगीन चलाने का अभ्यास करते हैं; या मुझे सभी जातियों और सभी राष्ट्रों के लोगों को दिया जाने वाला प्राण-दंड दिखाने ले जाया गया था, जो 'स्वेच्छा-चार की भावना दिखाने' या पूरी तत्परता से उदीयमान सूर्य को नमन न करने जैसे दुर्बोध कारणों के लिए दिया जाता था। मुझे यह संभव ही नहीं लगता था कि लोगों के मारने के इतने विभिन्न तरीके हो सकते हैं।

जो भी हो, १९४५ के आरंभ में हम सब शारीरिक रूप से मरते हुए मनुष्य थे। हम उस जावा में थे, जिसे डचों ने अत्यंत सु-संगठित और चावल-उत्पादक संपन्न देश बना दिया था। अभी भी वहां अन्न की कोई कमी नहीं थी। फिर भी जापानियों की यह नीति थी कि हमें दिये जाने वाले राशन में लगातार कमी की जाती रहे। यह कमी यहां तक की गयी कि अंततः हम लोगों के हिस्से में केवल तीन औंस चावल आने लगा, जो हमारा एकमात्र भोजन था।

अगर जावा में चीनी लोग न होते, तो निस्संदेह हम लोग उसी तरह मरे होते, जिस तरह लोग जर्मनी के यातना-शिविरों में मरे थे। यद्यपि मेरे जीवित रहने की संभावना सबसे कम थी, फिर भी उन विलक्षण लोगों ने मेरे इस मौखिक आश्वा-सन पर ही कि युद्ध समाप्त होने के बाद मैं उन्हें ब्रिटिश सरकार से पूरी कीमत दिलवा दूंगा, मेरे लिए हजारों गिल्डर (एक डच मुद्रा) चोरी-छिपे जेल में पहुंचा दिये। उन गिल्डरों से ही हम इस लायक हुए कि जेल के दरवाजे पर आने वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विक्रेताओं से चना-चबेना और ताजे फल खरीदकर अपनी खुराक पूरी कर सकें।

मुझे याद है कि ब्रिटिश उच्चाधिकारी और मैंने उस जेल में अपने साथ रहने वाले डच और ब्रिटिश डाक्टरों के साथ किस तरह अपनी उस स्थिति पर विचार किया था। ब्रिटिश उच्चाधिकारी थे रायल एयर फोर्स के विंग कमांडर डब्ल्यू. टी. एच. निकल्स। जावा में हमारे आत्मसमर्पण के कुछ महीने बाद वे मुझे उसी जेल में पहले से बंद मिले थे।

अधिकांश युद्धबंदी डच थे और उनके अधिकारियों ने निश्चय किया था कि उनके सिपाही बंदी जीवन अच्छी तरह बिता सकें, इसके लिए उन्हें यह मानकर चलना चाहिये कि उनकी मुक्ति जल्दी ही होने वाली है। लेकिन मेरा और निकल्स का खयाल था कि इस आदेश के पीछे नैतिक विघटन और विनाश ही हो सकता है। इसलिए हम अगस्त १९४२ में ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि हमें आसानी से पांच से लेकर बारह वर्षों तक जेल में रहना पड़ सकता है। हमने अपने सिपाहियों को बुरी से बुरी स्थिति में बारह वर्ष का बंदी जीवन बिताने के लिए तैयार कर लिया था।

यह भी संभव था कि हम जीवित बाहर न निकल पायें। इसके दो ठोस कारण थे। एक कारण तो स्पष्ट ही था कि भोजन की कमी से और कोई स्थानीय संक्रामक रोग फैलने पर अपने अपुष्ट शरीरों से उसका प्रतिरोध न कर पाने के कारण हम मर सकते थे। दूसरा कारण था, युद्ध-बंदियों के प्रति जापानी सैनिकों की घृणा। यह खतरा और भी बड़ा था; क्योंकि वे स्वयं ही यह मानते थे कि बंदी होना पुरुष की आत्मा के अधःपतन की अंतिम सीमा है। और यह सच था कि शत्रु के हाथ पड़ने का अपमान सहने के बजाय जापानी सैकड़ों और हजारों की संख्या में आत्मघात कर सकते थे। उनकी यह घृणा इस बात से और पुष्ट होती थी कि उनकी संस्कृति में भौतिक जीवन का कोई महत्त्व ही नहीं है और वे मानते हैं कि व्यक्ति के जीवन का मोल चिड़िया के पंख से ज्यादा नहीं है।

इससे भी भयंकर तथ्य यह था कि वे जाने-अनजाने एक प्रकार के संचित प्रतिशोध की जटिल प्रक्रिया से परिचालित थे। यह एक ऐतिहासिक प्रतिशोध था, जो वे उन यूरोपीय लोगों से लेना चाहते थे, जिन्होंने प्राचीन काल में पूर्व पर आक्रमण किये थे और जो धृष्टतापूर्वक यह मानते थे कि वे सबसे ऊंचे हैं। शताब्दियों तक हताशा में रहने के बाद अब जापानियों का संचित आक्रोश सारे बांध तोड़कर बाढ़ की तरह बह निकला था। सामान्यतः बहुत ही अनुशासित रहने वाले जापानी इस बाढ़ में बह गये थे और उस समय अजेय दिखाई देने वाली अपनी सैनिक-शक्ति के मद में अंधाधुंध प्रतिशोध लेने के मूड में आ गये थे।

परिणामस्वरूप वे हम बंदियों को मनुष्यों के रूप में न देखकर एक घृणित अतीत के उत्तेजक प्रतीकों के रूप में देखते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लारेंस वान डेर पोस्ट
(विख्यात दक्षिण अफ्रीकी लेखक)

थे। वे हमारी ओर सिर्फ इसलिए देखते थे कि अपने आक्रोश को उभारकर अपने खून में गर्मी ला सकें। फिर भी मैं, उनके द्वारा की गयी ज्यादतियों के बावजूद, आज भी उनके संयम की प्रशंसा करता हूं।

अपने गुप्त रेडियो से मुझे हमेशा साफ पता चलता रहता था कि जापान के खिलाफ लड़ाई कैसी चल रही है। फिर अचानक १९४४ में मुझे ऐसा संपर्क-सूत्र मिला, जो उस समय मुझे एक चमत्कार ही लगा। उससे मैं जापानी कमान के इरादों को बखूबी जान सकता था। इस बार भी चीनी मित्र ही मेरे काम आये, जो जेल के बाहर अब भी आजादी से घूमते थे। १९४४ के अंत में उसी सूत्र से मुझे मालूम हुआ कि जापानी हेडक्वार्टर में तनाव बहुत बढ़ गया है। १९४५ में उसी सूत्र से मुझे यह चेतावनी भी मिली कि दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित जापानी कमांडर-इन-चीफ फील्ड मार्शल तेराउची ने कुछ नये आदेश जारी किये हैं, जो हमारे लिए घातक हो सकते हैं।

जून १९४५ में मुझे यह पक्की सूचना मिली कि जापानियों ने सारे युद्धबंदियों को जावा से समेटकर बांडुंग में कैद करने का निश्चय कर लिया है, जहां हम पहले रखे गये थे। सूचना बिलकुल सही निकली और यह कदम बड़ी जल्दी और निर्दयतापूर्वक उठाया गया। हमें एक छोटी जेल में इस तरह ठूंस दिया गया कि हम चल-फिर भी नहीं सकते थे।

इस स्थिति में हमें पंद्रह दिन भी नहीं हुए होंगे कि मुझे तेराउची के उन गुप्त आदेशों की सूचना मिली, जिनमें उसने अपने कमांडरों को स्पष्ट आज्ञा दी थी कि ज्यों ही मित्रराष्ट्रों की सेनाएं दक्षिण-पूर्व एशिया पर आखिरी धावा बोलें, सभी जेलों के सभी युद्धबंदियों को मार डाला जाये—चाहे वे सैनिक हों, चाहे असैनिक। इस सूचना के तुरंत बाद हम उससे भी छोटी-छोटी जेलों में ले जाकर ठूंस दिये गये। १२० कैदियों को रखने की जगह में हम ७,००० बंदियों को किसी तरह धकेलकर बंद कर दिया गया। लगता था कि अब कोई चमत्कार ही हमें बचा सकता है।

तभी एक दिन तीसरे पहर अचानक समस्त डच और अंग्रेज उच्चाधिकारियों को जेल के आंगन में परेड के लिए बुलाया गया। मैंने अपने बाद दूसरे नंबर पर आने वाले खुफिया कमांडर निकल्स से कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वे अपने पलटन-अफसरों को फौरन उस योजना के लिए तैयार करें, जो हमने बनायी थी।

लेकिन परेड में जाने के एक मिनिट बाद ही मुझे लगा कि यह परेड नर-संहार की भूमिका नहीं है; क्योंकि वहां हमारा सामना केवल दो अधिकारियों से हुआ—जापानी वारंट अफसर गुंजो मोरी और उसके कोरियाई पिट्ठू कैसायामा से। सामान्यतः उपस्थित रहने वाले हथियार-बंद कोरियाई रक्षक तो खैर थे ही। वारंट-अफसर मोरी बड़ा अजीब और भयानक आदमी था, और कैसायामा के बारे में पता ही नहीं चलता था कि वह कब बेहद जुल्मी हो जायेगा और कब बेहद उदार। (बाद में इन दोनों को एक सैनिक न्यायालय ने फांसी दे दी।)

मोरी ने हमें बड़े गुस्से में बुलाया था। बात यह थी कि जापानी कमान ने हममें से ऐसे लोगों की सूची मांगी थी, जो तकनीशियन हों और जो जापानियों द्वारा स्थापित स्थानीय शस्त्रास्त्र-निर्माण उद्योग में सहायता कर सकें, और हमने यह कहकर सूची देने से इन्कार कर दिया था कि हममें कोई तकनीशियन है ही नहीं। जापानियों ने समझा, और ठीक ही समझा, कि हम झूठे हैं। मोरी के क्रोध का यही कारण था।

उसका क्रोध इसलिए और बढ़ गया था कि वह जानता था—सभी जापानी शुरू से ही जानते थे—कि वे हमारे शरीरों पर शासन भले ही कर लें, भले ही हमारे प्राण उनके हाथों में हों, वे हमारे दिमाग को, हमारी आत्मा को बदलने में बुरी तरह असफल रहे थे। उलटे, बंदी जीवन ने हमारी आत्माओं को और मजबूत बना दिया था। जापानी इस चीज के प्रति सचेत थे, पर न तो वे इसे समझ पा रहे थे और न इसके लिए हमें क्षमा कर सकते थे।

लाइन में सबसे पहले होने के कारण मिकी को आगे आकर मोरी के सामने अटेंशन की मुद्रा में खड़े होने का आदेश मिला और उसके पहुंचते ही मोरी ने जोर-जोर से और जल्दी-जल्दी गुस्से में बोलना शुरू किया। उसका हाथ बार-बार अपनी तलवार की मूठ पर चला जाता। उस समय वह जापानी 'नोह' नाटकों में आने वाले किसी सामुराई पात्र जैसा लग रहा था।

लगता था कि वह अभी तलवार निकालकर मिकी का काम तमाम कर देगा, लेकिन उसने तलवार के बजाय कुर्सी उठाकर मिकी के सिर पर दे मारी—इतने जोर से कि वह टूट गयी। मिकी लड़खड़ाया, लेकिन साहसपूर्वक सीधा खड़ा रहा। मोरी उसे घूंसों और बूटों की ठोकरों से मारने लगा। फिर उसने उसे धक्का देकर पीछे भेज दिया और दूसरे अफसर का नंबर आया। इसी तरह बारी-बारी से लाइन में खड़े हर अफसर को पीटा गया। घूंसों से, लातों से और टूटी हुई कुर्सी की लकड़ियों से। बाद में कैसायामा भी आगे बढ़कर ठोकरें मारने लगा। मेरा खून खौल रहा था, लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने देखा कि जेल के फाटक पर मशीनगन लगायी जा रही है।

मेरी बारी आयी। अजीव से शांत भाव से मैं मोरी की ओर बढ़ा। मुझे लगा, जैसे मैं दूसरा व्यक्ति वन गया हूं। दरअसल वह मार-मारकर मुझ पर जो प्रभाव डालना चाहता था, वह मुझे इतना असंगत लगा कि मैंने उसके लात-घूंसों को महसूस ही नहीं किया और सारे समय इस घटना का अर्थ समझने की कोशिश करता रहा। नतीजा यह हुआ कि अंतिम प्रहार के वाद जव उसने मुझे लाइन में धकिया दिया और मैंने दरवाजों पर फिट मशीनगन देखी, तो मुझे अपने भीतर से उठती हुई आवाज सुनाई दी—'जाओ, फिर से जाकर मोरी से मार खाने के लिए अपने आपको पेश करो।'

मोरी तब तक अपने अगले शिकार पर हमला करने के लिए तैयार हो चुका था। जब उसने देखा कि सामने वही आदमी है, जो एक वार पिट चुका है, तो उसके हाथ का उठा हुआ डंडा एकदम नीचे आ गया—वह हैरानी से मेरी ओर देख रहा था, जैसे उसकी समझ में कुछ न आ रहा हो। फिर उसने आधे मन से मेरे सिर पर एक प्रहार किया, चीख-चिल्लाहट की जगह उसके गले से गुर्राहट-सी निकली और मुझे लाइन में धकेलकर वह मुड़ा और कुछ भुनभुनाता हुआ वहां से चला गया। पीछे-पीछे कैसायामा भी।

रात कोइ स घटना पर विचार करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जापानियों का संयम अब टूटने ही वाला है।

इस घटना के कुछ ही दिन वाद हमारा गुप्त रेडियो खराव हो गया और अव हमारे पास यह जानने का कोई साधन नहीं रहा कि बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है। उसके वाल्व और विद्युत-संग्राही (कंडेंसर) में कुछ खरावी आ गयी थी और उन्हें वदलने का कोई उपाय नहीं था। वह अमरीकी वायुसेना के एक अफसर द्वारा लाया हुआ छोटा-सा रेडियो था, जिसे मैं अपने काठ के जूतों में छिपाकर रख सकता था। जेल में हममें से ज्यादातर लोग काठ के जूते ही पहनते थे। न्यूजीलैंड के एक प्रतिभाशाली अफसर ने उसे बड़ी मेहनत से इतना छोटा बना दिया था। मैंने उससे पूछा, तो वह बोला कि रेडियो चालू करने के लिए कुछ मामूली-सी चीजों की जरूरत है।

एक पाइलट अफसर डोनाल्डसन ने समाधान किया—'इसमें क्या रखा है। मैं ये सारी चीजें कैंप कमांडर के रेडियोग्राम में से उड़ा लाऊंगा।'

खतरा तो था, लेकिन और कोई चारा नहीं था। इसलिए एक रात डोनाल्डसन चोरी-छिपे कैंप-कमांडर के दफ्तर में घुसा—हमारे रेडियो की विगड़ी हुई चीजें उसके रेडियो की चीजों से वदलने। मैं और न्यूजीलैंड वाला अफसर निगरानी के लिए वाहर खड़े रहे। लगभग आधे घंटे वाद डोनाल्डसन बाहर आया और बोला—'मार दिया कर्नल, मैंने हाथ मार दिया। जो कुछ हमें चाहिये, मैं ले आया!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक रात सोते-सोते मुझे लगा कि कोई मेरा पैर पकड़कर हिला रहा है। न्यूजीलड वाला अफसर था। वह घबराया हुआ-सा था। पहले तो उसने कहा—'चालू हो गया। चालू हो गया, कर्नल।' फिर उसकी बातों से लगा कि बड़ी माथा-पच्ची के बाद वह रेडियो पर दिल्ली से प्रसारित एक समाचार सुनने में सफल हो गया है। वह पूरी बात नहीं सुन पाया था, इसलिए कह नहीं सकता था कि क्या हुआ है; पर इतना समझ गया था कि सुबह हिरोशिमा नामक स्थान पर दैवी प्रकोप जैसी भयंकर बात हुई है। कोई नयी और अत्यंत भयंकर बात, जो अब तक किसी आदमी ने अनुभव नहीं की थी, भूचाल से भी भयंकर, ज्वालामुखी के विस्फोट से भी भयंकर.....। जब उसने रेडियो के उद्घोषक के स्वर की भावुकता और उत्तेजना को याद करने की कोशिश की, तो उसे संदेह होने लगा कि उसने समाचार के धोखे में कोई डरावना नाटक तो नहीं सुन लिया।

उसी रात हमने फिर रेडियो पर दिल्ली, पर्थ और सानफ्रांसिस्को लगाकर सुना, और हमारे सामने स्पष्ट हो गया कि हिरोशिमा में क्या हुआ है।

इस समाचार का मतलब मैंने यह लगाया कि परमाणु बम से हुई इस भयंकर उथल-पुथल से अब युद्ध समाप्त हो जायेगा और एक नया जीवन शुरू होगा। जापानियों को यह सब मानवीय कर्म नहीं, दैवी विपत्ति जैसा लगेगा और अब वे स्वयं को अपमानित महसूस किये बिना युद्ध में अपनी हार मान लेंगे। वे इसे दैवी कृत्य के रूप में लेंगे और ईश्वर की इच्छा के आगे सिर झुका देंगे।

अचानक एक दिन जापानियों ने मुझे बुलाया, तो मैं चौंक गया; क्योंकि यह निमंत्रण इसलिए भी अजीब था कि मैं सीनियर ब्रिटिश अफसर नहीं था। जाने से पहले मैं निकल्स से कहता गया कि अगर मैं कुछ घंटों के बाद वापस न लौटूं, तो वे उस अंतिम लड़ाई के लिए तैयार रहें, जिसकी योजना हमने पहले से ही बना रखी थी।

मैं जैसे फटे-पुराने कपड़ों में था, वैसा ही एक बंगले पर ले जाया गया। एक कमरे में जापानी सैनिक अधिकारी भरे हुए थे। मुझे देखकर वे सब उठ खड़े हुए और उन्होंने मेरा अभिवादन किया। मुझसे कुर्सी पर बैठने के लिए कहा गया और शराब का एक गिलास पेश किया गया। मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था, इसलिए खड़ा ही रहा और शराब को भी हाथ न लगाया। तब जापानी अधिकारियों ने अपने जाम उठाये और कहा—'हम आपकी जीत की खुशी में पी रहे हैं।'

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर मैंने उन्हें कहते हुए सुना—'हम जापानी अपना इरादा बदल चुके हैं, और जब हम अपना इरादा बदलते हैं, तो पूरी ईमानदारी से बदलते हैं।' मुझे लगा कि यह आवाज समय और इतिहास के लंबे तारों पर चलकर मेरे कानों तक आ रही है।

उसी रात हमें छोड़ दिया गया।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन तौ शुदम तौ मन शुदी

मेवाराम गुप्त

हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई के दो अनुपम योद्धा अमर-शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' और अमर-शहीद अशफाक-उल्ला खां 'हसरत' की मित्रता ऐसी गहरी थी कि उसे उनके दोस्त, रिश्तेदार और अंग्रेज सरकार तो क्या, मौत भी न तोड़ सकी। मन-प्राण से वे एक होकर एक ही ध्येय के लिए जिये और एक ही दिन एक ही समय दो अलग-अलग स्थानों से एक ही मंजिल के लिए चले। दो दिलों की ऐसी सच्ची और पवित्र मित्रता के लिए ही शायद फारसी का यह शेर कहा गया है :

मन तौ शुदम, तौ मन शुदी,
मन-तन शुदम तौ जां शुदी।
ता कस न गोयद बाद अजीं,
मन दीगरम व तौ दीगरी॥

—मैं तेरा हो गया, तू मेरा हो गया; मैं शरीर बन गया, तू प्राण बन गया; जिससे कोई यह न कह सके कि मैं और हूं, तू और है।

मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे इन दोनों को बहुत निकट से देखने का मौका मिला था। मैं भी उसी मिशन हाईस्कूल में पढ़ा, जिसमें १९२१ तक इन दोनों ने शिक्षा पायी थी और जिसकी सीढ़ियों पर इन दोनों की दोस्ती परवान चढ़ी थी। मैं शाहजहांपुर के आर्यसमाज-मंदिर में इन दोनों रूपवान नौजवान दोस्तों को चलते-फिरते, हंसते-बोलते अब भी मन की आंखों से देखता हूं।

बिस्मिल-अशफाक की जोड़ी को देखकर यह सत्य हमारी समझ में आया कि असली मित्रता धर्म या मजहब पर नहीं, बल्कि उन उद्देश्यों पर आधारित होती है, जिनके लिए मनुष्य जीता है। बिस्मिल पक्के आर्यसमाजी थे, तो अशफाक कट्टर मुसलमान; उनके दिलों में धर्मभेद की बू तक नहीं थी। होती भी क्योंकर? उनके हृदयों में तो देशप्रेम भरा हुआ था। जब उनके जीने और मरने का उद्देश्य एक था, तो जातपांत, छुआछूत जैसे संकुचित विचार उनके मन में कैसे स्थान पाते! दोनों एक ही थाली में भोजन करते थे। कवि इकबाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मशहूर काव्यपंक्ति के अनुसार, वे तो हिन्दू और मुसलमान होने के पहले हिन्दी अर्थात् भारतीय थे और उनका वतन था हिन्दुस्तान।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

संकीर्ण विचारों के कुछ लोगों ने उनमें फूट डालने का प्रयास भी किया; किंतु उनकी मित्रता अधिकाधिक गहरी और घनिष्ठ होती चली गयी।

एक बार अशफाक सख्त बीमार हो गये। यहां तक कि उन पर बेहोशी छा गयी। बेहोशी में वे 'राम! राम!' पुकारने लगे। घर वालों ने उन्हें समझाया—'राम-राम नहीं तो खुदा-खुदा कहो।' लेकिन, वे राम राम की ही रट लगाये रहे। तभी वहां एक ऐसे सज्जन का आना हुआ, जो अशफाक के 'राम' का अर्थ समझते थे। फौरन बिस्मिल को आर्यसमाज सदर बाजार से बुलवाया गया। बिस्मिल ने आकर अशफाक के तपते माथे पर अपना हाथ रखा और कहा—'प्यारे अशफाक! मैं तुम्हारा राम आ गया हूं।'

अशफाक के कानों में जैसे अमृत घोल दिया गया हो। उन्होंने आंखें खोलकर अपने राम के दर्शन किये और आंखों से निकलकर आंसू उनके गालों पर ढुलकने लगे। उसी समय से उनका बुखार भी उतरने लगा, वे शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

अशफाक बिस्मिल को अपना बड़ा भाई कहते और उनके इशारे पर जान देने के लिए तैयार रहते। बिस्मिल भी इस छोटे भाई को हृदय से चाहते थे।

अगस्त १९२५ की ८ तारीख को शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) में दस क्रांतिकारियों की एक मीटिंग हुई। बिस्मिल उत्तर प्रदेश क्रांतिकारी सैनिक दल के सेनापति थे और अशफाक इस सेना के एक आज्ञाकारी कर्मठ सिपाही थे। बिस्मिल ने क्रांतिकारी कार्यों के लिए आवश्यक धन जुटाने के लिए यह प्रस्ताव रखा कि रेल के सरकारी खजाने को लूट लिया जाये।

अशफाक दूरदर्शी थे; उन्होंने प्रस्ताव का विरोध करते हुए बताया कि इससे अंग्रेज सरकार बहुत चौकन्नी हो जायेगी और क्रांतिकारियों का दमन जोर-शोर से शुरू कर देगी, जिससे पार्टी छिन्न-भिन्न हो जायेगी। बाद में हुआ भी ऐसा ही। किंतु उस समय अशफाक की यह नेक सलाह न मानी गयी।

अगले दिन यानी ९ अगस्त १९२५ को क्रांतिकारी दल के दस युवकों ने शाहजहांपुर की ओर से लखनऊ जाने वाली एक पैसेंजर ट्रेन को काकोरी स्टेशन के करीब ठहराकर उसमें रखे दस हजार के सरकारी खजाने को लूट लिया। ट्रेन की जंजीरें अशफाक ने खींची थीं और रुपयों से भरा लोहे का संदूक भी उन्होंने ही अपने बलिष्ठ हाथों से घन चलाकर तोड़ा। अर्थात् अशफाक ने प्रस्ताव का विरोध तो किया; परंतु जब प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया, तो उस पर अमल करने में सबसे अधिक उत्साह भी उन्होंने ही दिखाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे भाई की इस अनुशासनप्रियता पर बड़े भाई को नाज था। और हो भी क्यों न !

काकोरी ट्रेन डकैती का मुकद्दमा वीस महीने तक लखनऊ में चला। और राम-प्रसाद विस्मिल, रोशनसिंह, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी तथा अशफाकउल्ला खां को फांसी की और १८ अन्य युवा क्रांतिकारियों को लंवी कैद की सजाएं सुनायी गयीं। विस्मिल को गोरखपुर, रोशनसिंह को इलाहावाद, राजेंद्र लाहिड़ी को गोंडा और अशफाक को फैजावाद की जेल में वंद किया गया।

चार अलग-अलग जेलों की काल-कोठरियों में वैठकर चारों क्रांतिकारी युवक दिसंवर १९२७ की उन मनहूस घड़ियों की प्रतीक्षा करने लगे, जिनमें उन्हें फांसी पर लटकाया जाना था। विस्मिल और अशफाक गोरखपुर तथा फैजावाद की काल-कोठरियों से एक-दूसरे के दिलों की धड़कनें सुन रहे थे। वे अपने दिल की आंखों से एक-दूसरे को देख भी रहे थे।

गोरखपुर की काल-कोठरी में वैठकर विस्मिल ने चोरी-छिपे 'काकोरी के शहीद' नाम की ऐतिहासिक आत्मकथा लिखी। इसमें उन्होंने अपने प्यारे छोटे भाई और वफादार क्रांतिकारी साथी को संवोधित करके जो शव्द लिखे हैं, वे स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। जरा पढ़िये तो :

'मुझे भली भांति याद है कि जव मैं वादशाही एलान के वाद शाहजहांपुर आया था, तुमसे मिशन हाईस्कूल में भेंट हुई थी। तुम्हारी मुझसे मिलने की वड़ी हार्दिक इच्छा थी। तुमने अपने इष्ट-मित्रों द्वारा इस वात का विश्वास दिलाया कि तुम वनावटी आदमी नहीं हो। तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की ख्वाहिश थी। अंत में तुम्हारी विजय हुई। तुम मित्र की श्रेणी में अपनी गणना चाहते थे। वही हुआ। तुम सच्चे मित्र वन गये।

'सवको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्य-समाजी और एक कट्टर मुसलमान का मेल कैसा ? मैं मुसलमानों की शुद्धि करता था। आर्यसमाज-मंदिर में (मेरा) निवास था। किंतु तुम इन वातों की किंचित मात्र चिंता न करते थे। मेरे पास आर्यसमाज-मंदिर में आते-जाते थे। हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा होने पर तुम्हारे मुहल्ले के सव कोई तुम्हें खुल्लम-खुल्ला गालियां देते, काफिर के नाम से पुकारते थे; पर तुम कभी भी उनके विचारों से सहमत न हुए। सदैव हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए प्रयत्नशील रहे। तुम एक सच्चे मुसलमान तथा सच्चे स्वदेशभक्त थे।

'तुम्हारी इस प्रकार की प्रवृत्ति को देखकर वहुतों को संदेह होता कि कहीं इस्लाम धर्म त्यागकर शुद्धि न करा लो। पर तुम्हारा हृदय तो किसी प्रकार अशुद्ध न था। फिर शुद्धि किस वात की कराते ? तुम्हारी इस प्रकार की प्रवृत्ति ने मेरे हृदय पर पूर्ण विजय पा ली। वहुधा मित्र-मंडली में वात छिड़ती कि कहीं मुसलमान पर विश्वास करके धोखा न खाना।

'तुम्हारी जीत हुई। मुझमें तुममें कोई भेद न रहा। मेरे विचारों के रंग में तुम भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंग गये। तुम भी कट्टर क्रांतिकारी बन गये। मेरे साथ तुमने जो कार्य किये वे सराहनीय हैं। तुमने कभी भी मेरी आज्ञा की अवहेलना न की। एक आज्ञाकारी भक्त के समान (तुम) मेरी आज्ञापालन में तत्पर रहते थे। तुम्हारा हृदय बड़ा विशाल था। तुम्हारे भाव बड़े उच्च थे। मुझे यदि शांति है तो यही कि तुमने संसार में मेरा मुख उज्ज्वल कर दिया। भारत के इतिहास में यह घटना भी उल्लेखनीय हो गयी कि अशफाकउल्ला ने क्रांतिकारी-आंदोलन में योग दिया। अपने भाई-बंधु तथा संबंधियों के समझाने पर कुछ भी ध्यान न दिया। गिरफ्तार हो जाने पर भी अपने विचारों में दृढ़ रहे। जैसे तुम शारीरिक बलशाली थे, वैसे ही मानसिक वीर तथा आत्मा से उच्च सिद्ध हुए। इन सबके परिणामस्वरूप अदालत में तुमको मेरा सहयोगी बताया गया तथा सहकर्मी (लेफ्टिनेंट) ठहराया गया और जज ने फैसला लिखते समय तुम्हारे गले में भी जयमाला (फांसी की रस्सी) पहना दी।

'प्यारे भाई, तुम्हें यह समझकर संतोष होगा कि जिसने अपने माता-पिता की धन-संपत्ति को देशसेवा में अर्पण कर उन्हें भिखारी बना दिया, जिसने अपना तन-मन-धन सर्वस्व मातृसेवा में अर्पण करके अपना अंतिम बलिदान भी दे दिया, उसने अपने प्रिय सखा अशफाक को भी उसी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।

'असगर हरीमे इश्क में हस्ती ही जुर्म है।
रखना कभी न पांव यहां सर लिये हुए।'

जीवन में कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले इन मित्रों की यह प्रबल इच्छा थी कि वे अपनी अंतिम यात्रा भी साथ ही करें। भगवान ने तथा परोक्ष रूप से गोरी सरकार ने उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी। १९ दिसंबर १९२७ को सवेरे ६॥ बजे बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में और अशफाक को फैजाबाद की जेल में फांसी दे दी गयी।

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की तो यह प्रार्थना थी:

'यदि देशहित मुझको पड़े मरना सहस्रों बार भी
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।

और अशफाकउल्ला खां कहते थे:

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है।
रख दे कोई जरा-सी खाके-वतन कफन में।

दोनों अपने आदर्श जीवन और शानदार मरण में अपनी प्रार्थना और आरजू की पूर्ति की पक्की व्यवस्था स्वयं कर गये।

ध्येय, निष्ठा और उत्सर्ग के पथ पर चलते हुए बिस्मिल और अशफाक ने कुसुम से भी कोमल और वज्र से भी कठोर मैत्री का जो आदर्श स्थापित किया, उसकी मिसाल शायद वह स्वयं है—राम-रावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव।

—३०बी/३, इंडियन एअर लाइंस कालोनी,
बंबई—२९.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन १९२८ में किर्गिजिया (सोवियत रूस) में जनमे चंगेज एतमातोफ १९५७ से साहित्य सृजन कर रहे हैं। १९६३ में उन्हें रूस का सबसे बड़ा साहित्यिक संमान लेनिन-पुरस्कार दिया गया।

'धरती मां' उनका श्रेष्ठतम उपन्यास माना जाता है। इसके प्रमुख पात्र दो हैं। दोनों मां हैं—एक वह, जो हमें जन्म देती है; दूसरी मां वह, जो हमें अन्न और आश्रय देती है, संमान से जीना और शान से मरना सिखाती है, अर्थात् मातृभूमि। इन दोनों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में है। संक्षिप्त रूपांतर किया है सुरजीत ने।

*

धुले-धुलाये सफेद कपड़े पहने बूढ़ी तोलगनाई खेत के किनारे खड़ी हो गयी। आकाश में सुरमई बादल तैर रहे थे। चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई थी।

'सलाम मां! बूढ़ी स्त्री ने धरती मां से कहा।

'सलाम तोलगनाई। अच्छी तो हो न? तुम तो बूढ़ी हो गयी हो!'

'हां मां! मैं बूढ़ी हो गयी हूं और.....'

'तोलगनाई! क्या तूने अपने पोते को बता दिया कि वह कौन है? अब तो वह जवान हो गया है।'

'मां.....धरती मां! मैं डरती हूं। तू तो जानती है कि मेरी कहानी कितनी दर्दनाक है। कई बार मैंने सोचा है कि अपने पोते, और सबको अपनी कहानी सुनाऊं, मगर फिर.....'

'तोलगनाई, बैठ जा। तू थक गयी है। हां भला याद तो कर। तू सबसे पहले मेरे पास कब आयी थी।'

तोलगनाई धरती मां की गोद में बैठ गयी और फिर धीमी आवाज में धीरे-धीरे यों बोलने लगी, जैसे धुंधले दिनों की राख ढंकी यादों को कुरेद रही हो:

'धरती मां! अब तो मुझे इतना ही याद है कि मैं नन्ही-सी थी जब खेतों में लायी जाती थी। फिर मैं कुछ बड़ी हुई और तेरे सीने पर भागने-दौड़ने लगी। धरती मां! मुझे कभी अच्छे कपड़े पहनने को नसीब न हुए; पर मैं खूबसूरत लड़की थी। मैं अपना प्रतिबिंब देखकर नाच उठा करती और पहरों आईने में अपना चेहरा निहारा करती।...और यहीं तेरी गोद में ही मैंने सबसे पहले सेवान को देखा था। तब मेरी उम्र सत्रह साल की थी। फसल कट रही थी और मैं गांव की लड़कियों में सबसे तेज-तर्रार समझी जाती थी। अनजाने रूप में कटाई में मेरा और उसका मुकाबला हो गया। वह मुझसे बहुत आगे निकल गया। मैं उसकी जीत से चिढ़ गयी। वह मुझे खुश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के लिए पीछे लौट आया। यों उस क्षण ने हमारे दिलों को अपनी मुट्ठी में ले लिया।

'हम दोनों पौ फटने पर सबसे पहले खेतों में पहुंच जाते। एक को जरा देर होती, तो दूसरा इंतजार करता। हम दोनों अच्छे दिनों के सपने देखते। शाम को काम करने के बाद जब हम तेरे सीने पर लेटते, तो तू हवा के हल्के झोंकों से सहलाती। मेरे दिल की एक-एक धड़कन तुझसे कहा करती—धरती मां ! तू हमारी मां है। हम सबकी मां है ! हमारी सारी खुशियां तेरे ही दम से हैं.....

'धरती मां ! तेरे सीने पर हल चलाते, बीज बोते, पानी देते और फसल काटते हुए हमारे प्रेम ने नीले आकाश की विशालता को छू लिया। मेरा और सेवान का विवाह हो गया। हमने अपने हाथों से एक छोटा-सा घर बना लिया और हमारे घर का आंगन बच्चों के मीठे कहकहों से गूंजने लगा। हमारे तीन बच्चे हुए—तीनों बेटे—कासिम, मुसलह वेग और नेक। नटखट बच्चे स्कूल से वापस आकर अपने माता-पिता को पढ़ाते। मैं तो कुछ दिनों में उकता गयी; मगर सेवान पढ़ने-लिखने के काबिल हो गया.....

'धरती मां ! समय बीतता गया। खुशी के दिन क्षणों में बीत जाते हैं। बच्चे जवान हो गये। कासिम ने खेती-बाड़ी का काम संभाल लिया। मुसलह वेग अध्यापक बनना चाहता था। उसने पढ़ाई जारी रखी। नेक गांव के नवयुवकों की संस्था का मुखिया चुन लिया गया। उसका अधिक समय संस्था के दफ्तर में बीतता। मां को अपने सब बच्चों से प्यार होता है; पर उनमें से कोई भी एक उसे ज्यादा प्यारा होता है। सो मैं मुसलह वेग को सबसे अधिक प्यार करती थी.....

'कासिम का विवाह हुआ और हमारे परिवार में अलीमा आयी। अलीमा जवान, सुंदर व हृष्ट-पुष्ट पहाड़ी लड़की थी। वह परिश्रमी, आज्ञाकारी और धीर स्वभाव की थी। मेरा बड़ा ध्यान रखती थी और कासिम के रास्तों में तो फूल बिखेरती थी। कासिम और अलीमा एक-दूसरे से बेहद प्रेम करते थे।

'कासिम के विवाह के बाद फसल काटने का दिन आया। हंसते-गाते हमने अनाज काटा। नये गेहूं की रोटियां पकायी गयीं—

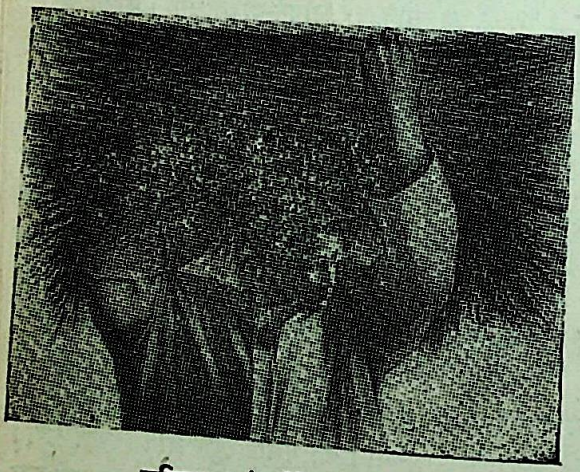

कृषिबाला (अर्न्टे : लिथोग्राफ)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये अनाज की पहली रोटी ! तू तो जानती है धरती मां कि उस समय किसान का हृदय कितना उल्लसित होता है ! जब वह नये अनाज की पहली रोटी मुंह में रखता है, उसका स्वाद उसे संसार की सब नियामतों से अधिक मीठा लगता है.....

'अलीमा ने घास पर दस्तरख्वान बिछाया। नयी और ताजी रोटी की सुगंध से खेत महकने लगा। सेवान ने रोटी के टुकड़े किये और पहला टुकड़ा मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा—"तोलनगाई ! तू मां है और पहला हक तेरा है।"

'गर्म रोटी में महक थी। मेहनती किसानों के हाथ की सुगंध। मेरा मन प्रसन्नता से नाच रहा था। उसी क्षण नेक ने अपना साज छेड़ा और किसान गीत गाने लगे और नाचने लगे।

'उस रात जब हम अपने घर लौटे, तो सेवान ने मुझे रोककर कहा था—"तोलगनाई! हमने अपनी जिंदगियां बेकार नहीं गुजारीं। कल हम जवान थे। आज अधेड़ हो चुके हैं। जिंदगी के कई वर्ष बड़ी तेजी से बीत गये, पर वे बेकार नहीं बीते..."

'सेवान ने रात को गलत नहीं कहा था। मुसलह बेग अब बड़े शहर में पढ़ रहा था। कासिम अपना घर बनाने के लिए जमीन ढूंढ़ चुका था। नेक अपने काम में लगा हुआ था। धरती मां ! तू सुन रही है न ?'

'हां, तोलगनाई ! मैं सब कुछ सुन रही हूं,' धरती मां ने उत्तर दिया—'सृष्टि के आरंभ से सब कुछ देख और सुन रही हूं। इंसान की सारी कहानी और इतिहास सिर्फ पुस्तकों में नहीं है, न सारे इतिहास को इंसान अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रख सकता है। इंसान के सारे इतिहास की साक्षी तो मैं हूं। मगर आज मैं कुछ न बोलूंगी; आज तेरी बारी है.....'

'धरती मां, तो फिर तू सुनती जा! .....हम खेतों में थे कि एक घुड़सवार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। किसान उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। फिर उस घुड़सवार के मुंह से एक शब्द निकला....और यह शब्द सारे खेतों, सारे देश और सारे संसार में फैल गया..... युद्ध.....! धरती मां। तुझे तो पता है कि युद्ध और शांति के जीवन में कितना भयानक विरोध होता है। शत्रु तेरी छाती पर चढ़ आया था। तेरी रक्षा के लिए तेरे बेटे मैदान में निकल आये थे.....

'कुछ दिनों के बाद कासिम को बुलावा आ गया। धरती मां ! वह भी क्या अनुभूति थी कि एक मां अपने बेटे के वियोग का जख्म इसलिए खुशी से सह रही थी कि हम सबकी मां के सीने पर दुश्मन घाव कर रहा था। अलीमा का बुरा हाल था। रो-रोकर उसने आंखें लाल कर ली थीं। मैं उसे समझाती कि अलीमा, तेरा पति ही नहीं, बल्कि बहुत सारी माताओं के बेटे और पत्नियों के पति मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं और यह आंसू बहाने का समय नहीं है; दुश्मन का मुकाबला करने की घड़ी आ गयी है।

'जब कासिम घर से जाने लगा, तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ अकसीर दवाएँ

सर्दी-जुकाम के जोरदार इलाज

रबेक्स में !

रबेक्स एक ऐसे फॉर्म्यूले से बना है जो बंद नाक खोलता है, छाती में जमा बलगम दूर करता है और शरीर में स्फूर्तिभरी गर्माहट लाता है.

सर्दी-जुकाम जब करे हमला, तब मलें रबेक्स.

२० और ६५ ग्राम की शीशियों व ६ ग्राम की डिब्बी में मिलता है.

कॅम्फर—कपूर; नटमेग—जायफल; युकॅलिप्टस—नीलगिरी का तेल

everest/616/ACW/hn

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवान ने उसे रोककर कहा था—"बेटे! मेरी आंखों में देखो।" बाप और बेटा कुछ क्षणों तक एक-दूसरे की आंखों में आंखें डालकर देखते रहे। "तुम मेरा मतलब समझ गये?"....."हां बाबा!" कासिम ने उत्तर दिया था—"मैं बहादुर किसान का बहादुर बेटा हूं।"

'कासिम के जाने के एक हफ्ते बाद मुसलह का पत्र आया कि उसे सेना ने बुला लिया है। मैं अभी संभल न पायी थी कि सेवान का भी बुलावा आ गया। सेवान ने जाते समय मुझसे कहा था—"मैं भी अपने दो बेटों के पीछे जा रहा हूं। तोलगनाई! शायद मैं वापस न लौट सकूं। शायद हम सदा के लिए अलग हो रहे हैं। अगर मैंने तुम पर कभी कोई ज्यादती की हो, तो मुझे माफ कर देना।"

'धरती मां, तू सुन रही है न! उस खेत में तेरे सीने पर खड़े होकर हमारी आंखें पहली बार चार हुई थीं। और यहीं हम सदा के लिए बिछुड़ गये। सेवान ने कहा था—"तोलगनाई! हम अपनी मां के सीने पर खड़े हैं, जिसके लिए मैं लड़ने जा रहा हूं। धरती बहुत दुःख सहती है। मर्द सब मोर्चे पर जा चुके और अब गांव में तुम ही सबसे समझदार औरत हो। धरती को बंजर न होने देना। बीज बोती रहना। और कभी आंसू न बहाना....."

'मैंने सेवान की बात मन में बैठा ली और गांव की स्त्रियों, बूढ़ों और बच्चों को लेकर खेतों में निकल आयी। यदि मेरा पति और मेरे बेटे तेरे संमान के लिए शत्रु से लड़ रहे थे, तो मैं तेरी खुशहाली और हरियाली के लिए मैदान में निकल आयी थी....

'मुसलह बेग का पत्र आया कि वह मोर्चे पर जा रहा है, और उसकी गाड़ी कस्बे के स्टेशन से ही गुजरेगी। उसने मुझे स्टेशन पर मिलने को लिखा था। अलीमा ने घर में चूल्हा गर्म किया, ताकि वह अपने सिपाही देवर के लिए खाना ले जा सके।

'जब हम स्टेशन पर पहुंचे, तो स्टेशन वीरान था। एक घंटे के पश्चात् गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी। मैं और अलीमा भागीं; परंतु यह सैनिक-गाड़ी नहीं थी। गाड़ियां आती-जाती रहीं; मगर वह गाड़ी न आयी जिस पर मेरा मुसलह बेग सवार था। रात बीत गयी और फिर सुबह एक बार फिर गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी। यह सैनिकों की गाड़ी थी। किंतु गाड़ी स्टेशन पर नहीं रुकी। मैंने एक क्षण के लिए अपने मुसलह बेग को देखा। "मां.... मां....." उसने मुझे आवाज दी। और मैं

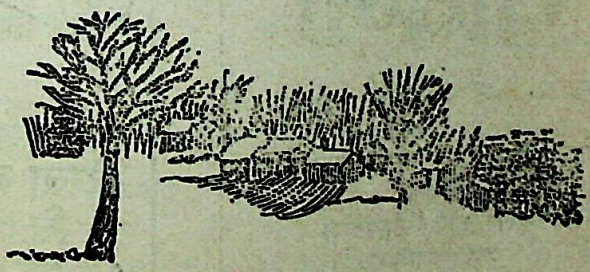

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये !

चांदनी

साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

Zenlon

विविध किस्मों के
प्राकृतिक, रासायनिक व
मानव-निर्मित

बुनाई के सूत

परदे, गाड़ियां व कवर बनाने के लिए मुलायम और बहुरंगी • क्रोशेसेटों के लिए सुंदर और चमकदार • वसन में लचीले और नमीसोख

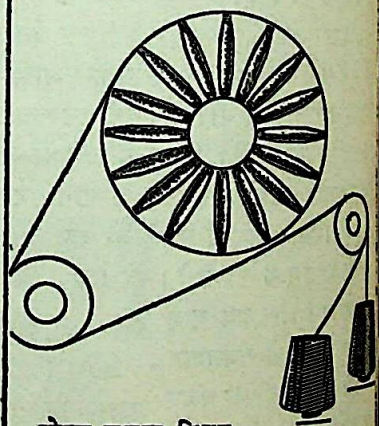

स्टेपल फाइबर विभाग
बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग
कं. लि.
९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता—७०० ००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधाधुंध उस डिब्बे के साथ भागने लगी, जैसे मैं उसे पकड़ ही लूंगी। तभी मुझे ठोकर लगी और मैं मुंह के बल जमीन पर औंधी गिर पड़ी। अलीमा ने भागकर मुझे सहारा दिया। खाने की पोटली उसके हाथों से गिर चुकी थी और उसके एक हाथ में एक फौजी टोपी थी। फिर वह बोली—"मां! यह टोपी मुसलह तेरे लिए छोड़ गया है।" मैंने टोपी को अपने सीने से यों लगा लिया, जैसे वह मेरा मुसलह बेग हो।

'मां....धरती मां....तू सुन रही है न! मेरा पति, मेरे दो बेटे युद्ध में लड़ रहे थे। शत्रु के अपवित्र पांव तेरे पवित्र सीने से उखाड़ने के लिए। फिर.....मेरे सबसे छोटे बेटे नेक को भी बुला लिया गया। जब वह मोर्चे पर गया, तो उसकी उम्र सिर्फ अठारह बरस की थी। नेक..... मेरा मासूम बेटा, जो लड़ाई में लड़ता हुआ खो गया है..... जिसकी न जिंदा लोगों में गणना होती है, न मुर्दों में.....

'एक शाम को जब मैं खेतों से वापस लौटी, तो गांव के बच्चे, बूढ़े और स्त्रियां मेरे घर के बाहर जमा थे। मेरी पड़ोसिन आयेशा आगे बढ़ी और उसने बड़ी नरमी से कहा—"तोलगनाई, अलीमा, धीरज करो.. सेवान और कासिम युद्ध में काम आ गये..."

'अलीमा ने चीख मारी....और मुझे यों अनुभव हुआ, जैसे मैं बहरी और गूंगी हो गयी हूं। अलीमा....और मैं.....हम दोनों विधवा हो गयी थीं—सास भी और बहू भी... हमारे सूरज डूब गये थे...सात दिन तक मैं आधे होश में रही। सातवें दिन गांव की स्त्रियां और बूढ़े मेरे पास आये। उनकी आवाज में धरती मां, तू मुझे बुला रही थी। एक बार फिर मैं लोगों के साथ खेतों में आ गयी। धरती मां, तू मुझे बता! लोग क्यों अत्याचार करते हैं? क्या संसार युद्धों के बिना नहीं रह सकता?'

'तोलगनाई! मेरी बच्ची!' धरती मां ने कहा—'तूने बड़ा कठिन प्रश्न पूछा है। अतीत में कई राष्ट्र युद्धों में ऐसे समाप्त हो गये कि उनका नाम लेने वाला भी कोई न रहा। जब भी युद्ध शुरू होता है, मैं कहती हूं....एक-दूसरे का खून न बहाओ। मैं धरती हूं....धरती मां हूं.... तुम सबके लिए हूं। मुझे तुम्हारे प्रेम और परिश्रम की आवश्यकता है.....एक दाना बोओ, मैं तुम्हें सौ दाने देती हूं; एक टहनी के बदले में एक पेड़! मैं गहरी, ऊंची और विशाल हूं। पर तोलगनाई! निर्दयी शत्रु धरती की आवाज भी नहीं सुनता। निरीह और लाचार को मारने के लिए, उनकी धरती हथियाने के लिए वह हर अत्याचार करता है। जब निरीह अपनी मां की रक्षा के लिए उठता है, तो फिर युद्ध अनिवार्य हो जाता है...'

कुछ क्षणों के लिए गहन निस्तब्धता छा गयी। तोलगनाई फिर धीरे-धीरे बोलने लगी—'धरती मां! युद्ध छिड़े तीन वर्ष हो गये। सेवान और कासिम युद्ध में काम आये, पर मुसलह बेग और नेक अभी जिंदा थे। फिर मुसलह बेग का पत्र आया। धरती मां, वह पत्र आज भी मेरे घर में है। मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विटामिन और खनिज पदार्थ आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिये बहुत ज़रूरी हैं

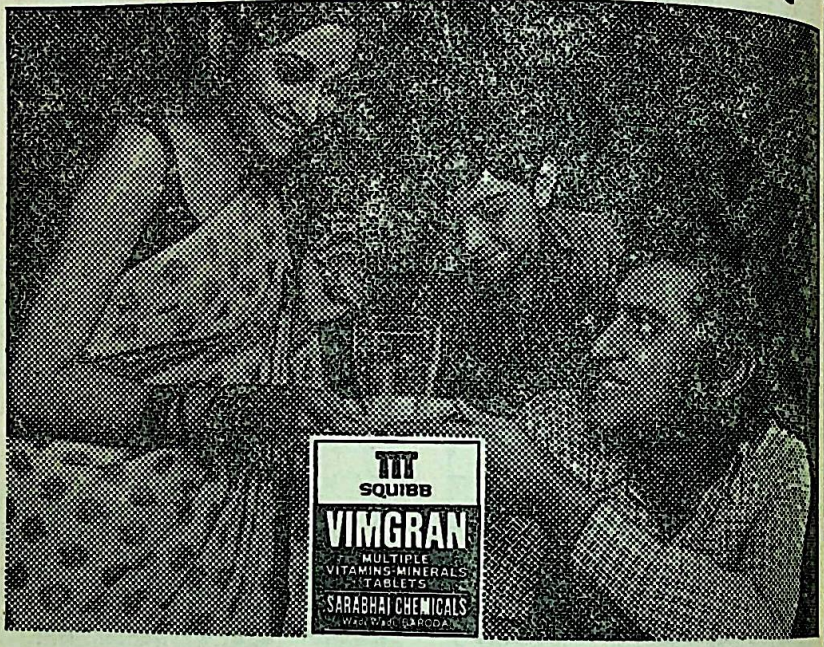

क्या उन्हें ये ज़रूरत के मुताबिक़ मिल रहे हैं?

विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी से आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य गिर सकता है. थकान, ठंड और जुकाम, भूख की कमी, कमजोरी, चमड़ी तथा दाँतों के रोग अधिकतर जरूरी विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी के कारण होते हैं.

इन की कमी, भोजनों में भी रह सकती है. इस बात के विश्वास के लिये कि परिवार के सभी लोगों को ये जरूरी पोषकतत्व उचित मात्रा में मिलें, उन्हें रोज़ विमग्रान दीजिये.

विमग्रान में आवश्यक ११ विटामिन और ८ खनिजपदार्थ मिले हैं. लोहा — खून बढ़ाने और फुर्ती लाने के लिये, कैल्सियम— हड्डियों और दाँतों को मजबूत बनाने के लिये, विटामिन सी— ठंड और जुकाम रोकने की शक्ति बढ़ाने के लिये, विटामिन ए—चमकदार आँखों और स्वस्थ त्वचा के लिये, विटामिन बी१२—खून बढ़ाने के लिये तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिये दूसरे जरूरी पोषक तत्व! आज से ही रोज लीजिये- विमग्रान!

विमग्रान®

विविध विटामिन एवं खनिजयुक्त गोलियाँ
११ विटामिन + ८ खनिज पदार्थ

SQUIBB®
SARABHAI CHEMICALS PVT. LTD.
©ई. आर. स्क्विब्ब एंड सन्स इन्की. का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है जिसके अनुज्ञा उपयोगकर्ता हैं—एस. सी. पी. एल.

केवल एक विमग्रान आपको दिन भर स्फूर्तियुक्त रखता है

Shilpi-HPMA 2A/74 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेटे ने लिखा था :

"बहुत प्यारी मां ! जब कुछ दिन बीत जायेंगे तो तुम मुझ पर फख्र करोगी ! अब तो तुम शायद यही कहोगी कि अच्छे बेटे ! तुम उस उजले और सुंदर संसार को यों छोड़ने को कैसे रजामंद हो गये? मां! तुम मेरी मां हो और मुझसे यह प्रश्न पूछने का अधिकार तुम्हें प्राप्त है। पर मैं अभी उसका उत्तर नहीं दे सकता हूं। शायद हमारा इतिहास किसी दिन तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर दे....मां ! यह युद्ध हमने नहीं शुरू किया; हम तो मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। अगर हमने शत्रु को अपने देश से बाहर न निकाला, तो हम इंसान कहलाने के अधिकारी न रहेंगे मां! तू जानती है कि मैं अध्यापक बनना चाहता था; पर इस समय मेरे हाथों में चाक और कलम के बजाय बंदूक है। मैं एक भी बच्चे को सबक नहीं दे सकता हूं; पर मुझे खुशी कि मैं अपने देश का काम कर रहा हूं, अपने देश के शत्रुओं से लड़ रहा हूं।

"एक डेढ़ घंटे के बाद मैं अपने देश का संमान बचाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मिशन पर रवाना हो रहा हूं। मुझे विश्वास है कि मैं जिंदा वापस न लौट सकूंगा। मैं अपनी धरती मां और अपने देशवासियों के संमान के लिए, उस सारी सुंदरता के लिए जो मेरे देश में है, उस मौत को स्वीकार करता हूं। मां! मेरे लिए आंसू न बहाना! मेरा बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा। मेरे देश के दुश्मन की पराजय होगी।

"अच्छा मां ! अलविदा...मेरे गांव की धरती मां को मेरा सलाम कहना। मैं उसका अच्छा बेटा बनने के लिए प्राण दे रहा हूं.... मां, अलविदा !"

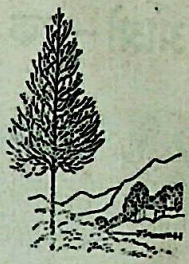

'उस समय गांव के बहुत-से लोग मेरे बेटे का पत्र सुन रहे थे। पर किसी ने आंसू न बहाये। सबने संयम से काम लिया। मेरे बेटे ने कहा था–"मां आंसू न बहाना!" मैं चीखना चाहती थी, पर मैं चुप रही। मैं अपने बेटे की अंतिम इच्छा से मुंह नहीं फेर सकती थी।"

धरती मां ने लेटे-लेटे दीर्घ निश्वास छोड़ा और कहा –'तोलगनाई ! मैं मुसलह बेग जैसे बेटों को कैसे भूल सकती हूं ! वह मेरे लिए, अपने देश के लिए, अपने देश की सुंदरता, संमान और प्रतिष्ठा के लिए लड़ा और कुर्बान हो गया।'

'हां धरती मां ! युद्ध समाप्त हो गया। मेरा पति सेवान मारा गया। मेरे दो बेटे कासिम, मुसलह बेग मारे गये और नेक लापता घोषित कर दिया गया। सिपाही घर लौटने लगे और अलीमा उन्हें देख-देख-कर कासिम को याद करती रहती, जो अब लौटकर आ नहीं सकता था। अलीमा अब मेरी बहू न रही थी। वह मेरी बहन, मेरी बेटी, मेरी सहेली बन चुकी थी। मैं उसे उदास देखकर सोचा करती–यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ – एक सौदा करें !

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो–

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि.
गोलागोकर्णनाथ, जि.खीरी, उ. प्र.

इसके विवाह में एक प्रेम-पूर्ण उपहार...

सारी ज़िन्दगी के सुख के लि[illegible]

ऊषा सिलाई मशीन!

विवाह के अवसर पर देने लायक और कोई ऐसा उपहार नहीं [illegible] इतना सुख व सेवा मिले — एकमात्र ऊषा सिलाई मशीन [illegible] जिन्दगी को सुखहाल रखती है।

ऊषा सिलाई मशीन अनोखे रंगों एवं मॉडलों में मिलती [illegible] मशीन हाथ, पैर या बिजली से चलाई जा सकती है — [illegible] के लिये भारत के प्रत्येक भाग में बिक्री-बाद सेवा की [illegible]

नव वधु को घर में सिलाई के आनन्द व साथ साथ [illegible] दीजिये। आज ही ऊषा सिलाई मशीन खरीदिये

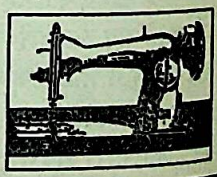

मूल्य रु० २५०/- या अधिक

SHRIRAM जब खरीदें ऊषा की [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी जवान है; अभी तो इसके हृदय में हजारों उमंगें हैं। सारा जीवन यह कैसे बितायेगी? जब मायके वाले लेने के लिए आये, तो उसने कहा—"मैं अपनी मां को अकेली छोड़कर नहीं जाऊंगी....."

'तीन महीने बीत गये। और अलीम को मौन का रोग लग गया। वह घंटों अकेली बैठी रहती। मेरी पड़ोसिन आयेशा ने मुझे बताया कि अलीमा तो लुट चुकी है। एक धोखेबाज गड़रिये ने उसे फुसला लिया था और अब अलीमा को पता चला कि वह गड़रिया धोखेबाज और शादीशुदा था। मैं अलीमा की अवस्था को समझ गयी। गड़रिये की बेवफाई ने उसके मन में कासिम के प्रेम को और अधिक भड़का दिया था। मैं सोचती कि वह यदि पापिन है तो मैं उसकी मां हूं; पर लज्जा ने अलीमा के ओंठों पर ताला जड़ दिया था....और एक दिन मुझे बताये बिना चुपचाप अपने मायके चली गयी वह....

'अलीमा के जाने के बाद मैंने जाना कि एकाकीपन क्या होता है। मैं उसे याद करके आंसू बहाती। कुछ सप्ताहों के बाद मेरे धीरज का प्याला भर गया। मैं लारी म सवार होकर अलीमा के घर चल दी। अभी मैं रास्ते में ही थी कि मैंने अलीमा को सड़क पर चलते हुए देखा। मैंने लारी रुकवायी और भागती हुई मैं अलीमा के पास पहुंची। हम दोनों एक-दूसरे से लिपट गयीं। एक-दूसरे को चूमने लगीं। हम एक साथ आंसू बहा रही थीं। अलीमा कह रही

थी—"मां! मुझे क्षमा कर दो! मैं अब तुम्हें छोड़कर कभी न जाऊंगी।" हम दोनों गांव लौट आयीं...

'अलीमा के पेट में गड़रिये का बच्चा था। अलीमा मेरी बहू न थी, वह मेरी सहेली और बेटी थी। मैं हर समय तैयार रहती थी। मैं जानती थी कि प्रलय की घड़ी आने वाली है। फिर वह रात आ गयी। अलीमा कराह रही थी। उसकी दशा बहुत चिंताजनक थी। उसे संभालना मेरे बस की बात नहीं रही थी। मैंने पड़ोसिन आयेशा के बेटे बेग को जगाया। उसने घोड़ागाड़ी तैयार की और उसमें अलीमा को लादकर हम अस्पताल की ओर चल दिये।

'रास्ता कीचड़ से भरा हुआ था। रात काली थी। अस्पताल बहुत दूर दरिया के उस पार था। अलीमा जीवन-मृत्यु के बीच की हालत में थी। एक बार वह चीखी—"मैं मर रही हूं....मैं मर रही हूं.....ईश्वर के लिए गाड़ी रोको....."

'मैंने उसे अपनी कमजोर बांहों में उठाया। बेग ने सहारा दिया। हमने उसे सड़क के किनारे गहरे अंधेरे में लिटा दिया। अलीमा पत्ते की तरह कांप रही थी। शब्द टूट-टूटकर उसके मुंह से निकल रहे थे.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Rawsilin has arrived for those few men out there

A new suiting. For those man dwelling in the sunnier side of life. Men who settle for nothing but the best. A versatile suiting, warm in winter, cool in summer, ideal for Indian climatic conditions. RAWSILIN is a suiting for those particular men with those particular tastes.

JIYAJEE SUITING

Jiyajeerao Cotton Mills Ltd. Birlanagar

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मां.....तेरा धन्यवाद....तू मुझे क्षमा कर देना....ओह.....कासिम....कासिम... मैं...."

'गहरे अंधकार में उसने बच्चे को जन्म दिया। बच्चे की पहली चीख के साथ ही मेरा मस्तिष्क घूम गया.....गाड़ी की गड़गड़ाहट और फिर किसी की आवाज ....ओह मां!.....फिर चारों ओर गहरी निस्तब्धता.....एक क्षण में एक इंसान मर गया था और एक को जीवन मिला था। मौत और जीवन का यह टकराव....मैंने मन में सोचा था.....मैं जिऊंगी.....इसके लिए.....इस नन्हे के लिए.....जीवन कभी नहीं मरता.....जीवन कभी नहीं मरेगा..... और मातृभूमि की रक्षा के लिए.....हर युद्ध में जिंदा बेटों की आवश्यकता होती है....

'जब हम गांव की ओर लौटे, तो बर्फ गिरने लगी थी। हर चीज सफेद हो रही थी। अलीमा का निष्प्राण सफेद चेहरे वाला सिर गाड़ी के धक्कों से हिल रहा था। उसकी आंखें खुली हुई थीं, जैसे वह हिमपात के उस दृश्य को अंतिम बार देख रही हो....

'धरती मां! ...तू भी मां है और मैं भी हूं....मेरे बेटे तेरे संमान और तेरी प्रतिष्ठा के लिए कुर्बान हो गये....मैंने नन्हे को अपनी आशाओं का केंद्र बना लिया...अगर वह बीमार होता, तो मैं यों अनुभव करती, जैसे अलीमा एक बार फिर मर रही हो; जैसे सेवान, कासिम, मुसलह और नेक फिर से युद्ध पर जा रहे हों....

'जिस दिन उसने पहली बार अपनी तोतली जबान में मुझे दादी कहा, तो मैंने यों अनुभव किया, जैसे जीवन का सारा रस, सारी मिठास, मेरे कानों में उड़ेल दी गयी हो.....

'अब वह बड़ा हो गया है। वह कुछ नहीं जानता कि उसका बाप कौन है..... उसकी मां कौन है? वह मुझे दादी कहता है...वह तेरी कोख से अनाज प्राप्त करता है। कल उसने अपने जीवन में पहली बार फसल काटी थी—नयी फसल! गांव के लोग मुझे खेतों में ले गये थे। मुझ बुढ़िया की आंखों से आंसू बहने लगे थे.....फिर नये अनाज की सुगंध से खेत महकने लगे.....नये गेहूं की रोटी पकायी गयी और नन्हे ने ताजी और गर्म रोटी के टुकड़ किये और पहला टुकड़ा मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा— "दादी खाओ...पहला अधिकार तुम्हारा..."

'मैंने रोटी का टुकड़ा मुंह में डाला और संसार-भर के सारे स्वाद मेरे मुंह में घुल गये। उस रोटी में मेहनती हाथों और देश पर प्राण देने वालों के रक्त की गंध रची हुई थी.....सैकड़ों इंसानों के हाथों की गंध...असंख्य इंसानों के खून की सुगंध.... मेरे मन से आवाज निकली थी—"रोटी और परिश्रम अमर हैं! धरती मां अनश्वर है।"

'धरती मां! फसल कट चुकी है, अब तू थकावट उतार रही है.....एक मैं हूं, एक तुम हो—दो माताएं, धरती मां! नन्हा भी तुम्हारा बेटा है...मैं नये इंसान की कहानी सारे संसार के लोगों को सुनाना चाहती हूं...पर मेरी जबान रुक जाती है। शायद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सूरज जो आकाश पर चमकता है और सारे संसार का चक्कर लगाता है, यह कहानी सबको सुनाये। पानी से लदे हुए ये बादल जो सारे संसार पर बरसते हैं, शायद ये बादल और वर्षा की बूंदें लोगों को यह कहानी सुनायें। धरती मां! तू हम सबकी मां है। तू सबको यह कहानी सुना दे.....'

'तोलगनाई!' धरती मां ने उसे प्यार से बुलाया—'तू इंसान है! तेरी आवाज में जो प्रभाव है, वह किसी और के बूते की बात नहीं। वह दुनिया की सब वस्तुओं से उत्तम और उच्चतर है। तेरी आवाज सब तक पहुंच जायेगी। तू ही अपने पोते को यह कहानी सुना.....पर तू उसे क्या बतायेगी?'

'धरती मां....मैं उसे बताऊंगी कि वह किसान है, धरती का बेटा...और उसे मैंने इसलिए पाला है कि धरती मां से प्यार करे और उसके सीने पर फसल उगाता रहे.....और यदि धरती मां का कोई शत्रु अपने अपवित्र पैर उसके सीने पर रखने की कोशिश करे, तो उससे भिड़ जाये। सेवान, कासिम, मुसलह वेग और नेक की तरह अपने प्राण दे दे और शत्रु के सामने कभी हथियार न फेंके...मां! मैं उसे बताऊंगी कि सबसे पहले वह किसान है, मातृभूमि का संरक्षक है! ठीक है न मां?'

धरती मां चुप रही.....फैली हुई.... विशाल धरती मां.... मातृभूमि सोच रही थी—जब तक तोलगनाई जैसी माताएं जन्म लेती रहेंगी, मेरे वक्ष पर शत्रु कभी अपने अपवित्र पैर न जमा सकेगा।

नितांत गहरी निस्तब्धता....जैसे दोनों माताएं एक दूसरे के हृदयों के सब रहस्य जानती हों।

'तोलगनाई! क्या तू जा रही है?'

'हां, धरती मां! मैं आज ही नन्हे को उसकी कहानी और कर्तव्य बताऊंगी..... यदि मैं जीवित रही तो फिर आऊंगी..... अलविदा धरती मां.....'

'अलविदा तोलगनाई। अलविदा मां!'

*

चंद्रशेखर आजाद का जन्म २३ जुलाई १९०६ को ग्राम भावरा (मध्यप्रदेश) में हुआ था। वे ग्राम बदरका, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के स्थायी निवासी थे। बारह वर्ष की अवस्था में आजाद अपने पिताजी के क्रोध के डर के कारण घर से बाहर निकलकर बंबई की तरफ चले गये थे और कुछ वर्ष वहीं रहकर जीवन व्यतीत किया। पंद्रह वर्ष की अवस्था में आजाद बनारस पहुंचने पर विद्यापीठ में हिन्दी तथा संस्कृत का अध्ययन करने लगे। इन्हीं दिनों देश में महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन चला। आजाद भी हाथ में झंडा लेकर छात्रों के जुलूस में संमिलित हो गये।

पुलिस ने आजाद को एक जोशीला नवयुवक देखकर गिरफ्तार कर लिया और मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया। मजिस्ट्रेट ने उनसे नाम पूछा। उत्तर दिया—'आजाद'। पिता का नाम पूछा, तो 'स्वाधीन' बताया और रहने का स्थान पूछा, तो 'जेलखाना' बताया। मजिस्ट्रेट ने आजाद को १५ बेंतों की सजा दी। आजाद को जेलखाने ले जाकर खुले मैदान में बेंत लगाने शुरू किये। उनके मुंह से 'वंदेमातरम्' तथा 'महात्मा गांधी की जय' के नारे निकलते रहे।

जेल से जब आजाद छूटकर आये, तो संपूर्णानंदजी (जो आजादी के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री भी रहे) ने चंद्रशेखर को 'आजाद' के नाम से संबोधित किया।

—भवानीसिंह रावत ('लोकराज' में)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावना का सत्य

नीला चावला

मई १९६२ की तपती दोपहरियों और जलती रातों की बात। पितृविहीन हुए डेढ़ वर्ष हो चुका था और मेरी निर्बल देह का रस और सूख रहा था। इसी बीच हम रानीखेत चले गये। वहीं लखनऊ से रिडायरेक्ट होकर एक खत मिला। पढ़कर मेरा आहत मन हतप्रभ हो उठा। यह खत डा. रांगेय राघव का था।

'राघव' शब्द ने, कुछ मेरी कच्ची उम्र ने और कुछ पिता के अभाव ने पता नहीं क्या संमोहन फेंका कि 'कब तक पुकारूं' पढ़ते-पढ़ते मैं रांगेय राघवजी को एक वृद्ध गंभीर पुरुष के रूप में मानस से जोड़ बैठी। खत लिखा; उन्होंने 'बापू' संबोधन को स्वीकार कर लिया और आयु की बात का जिक्र टाल गये। अब वे मेरे पितृतुल्य थे और मैं बेटी। खतोकिताबत चलती रही। उम्र की बात कभी हमारे बीच उठी ही नहीं।

फिर एक दिन 'मुर्दों का टीला' पढ़ते-पढ़ते उनका चित्र किसी पत्रिका में दिखाई दे गया और उम्र ज्ञात हुई। मैं धक् ! पिता-पुत्री की आयु में जितना अंतर होना चाहिये उतना नहीं था ! 'राघव' शब्द ने क्यों मुझे भ्रमित किया ? 'बापू' ने इस भ्रम को तोड़ा क्यों नहीं ? ढेरों प्रश्न, पर अनुत्तरित ! मैंने फिर खत का सहारा लिया। उनका उत्तर उन्हीं के शब्दों में :

'आयु पढ़ चौंक पड़ी ? क्यों? तुमने "बापू" लिखा था न ? भावना का सत्य ही बड़ा होता है, आयु का नहीं।'

बापू के ये शब्द शत-प्रतिशत सत्य थे। क्योंकि मन में जो मूरत बन चुकी थी, और जो संबोधन मैं उन्हें दे चुकी थी, उसे अब अपने स्थान से हटाया नहीं जा सकता था। (अब तक नहीं हटा पायी हूं, जबकि आयु की परिपक्वता की देहरी से पग आगे निकल आये हैं।) परंतु आघात करने वाली बात थी, उनकी अस्वस्थता। मैं 'बापू' को रानीखेत की रमणीय घाटियों में आने का निमंत्रण दे बैठी ! वहां हमने सेबों के बगीचे में एक छोटा-सा बंगला साल-भर के लिए किराये पर ले रखा था।

निमंत्रण के पश्चात् प्रतीक्षा। पर जाने क्यों, वह लंबी होती जा रही थी और मेरी बेचैनी उतनी ही उत्कट ! हां, अपने 'ब्लड कैंसर' की बात वे अपनी 'बेटी' से छिपा गये थे, जो मुझे बाद में ज्ञात हुई।

छुट्टियां बीतीं। हम लखनऊ आ गये। पर बापू का कोई अता-पता नहीं। तभी एक दिन किसी पत्रिका में उनकी मृत्यु की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूचना पढ़ी। जिस तिथि को मैंने उन्हें रानीखेत के भ्रमण का निमंत्रण दिया था, उसी दिन बंबई में उन्होंने अस्पताल में प्राण त्यागे थे! सूचना का पढ़ना था कि मेरा सिर चक्कर खा गया। तब श्रीमती सुलोचना राघव को मैंने पत्र लिखा, जो श्री राजेंद्र अवस्थी ने उन तक पहुंचाया।

आज तक मैं भूल नहीं पायी, वह निमंत्रण और उनका प्रयाण। घाटी से ऊपर आकर रास्ते पर प्रतिदिन उनकी राह देखना और सोचना—शायद 'बापू' आज ही आ जायें। इस बात से एकदम अनभिज्ञ कि वे तो उस लंबी यात्रा पर निकल चुके हैं, जो कभी समाप्त नहीं होती। फिर 'भावना का सत्य' क्या है? क्या आज भी हमारी भावना मृत हो पायी?

द्वारा, श्री शि. रा. तिवारी, अभ्यर्थना विभाग,
उ. प्र. सचिवालय, लखनऊ

'मैं यीशु को प्यार करती हूं'

मदर टेरेसा ने मुझे एक घटना सुनायी, जो बहुत पुरानी नहीं है। वे एक ठसाठस भरी ट्राम में चढ़ीं। एक निर्धन आदमी उन्हें सीट देने के लिए उठ खड़ा हुआ और उनसे उसने कहा—'मां, क्या मुझे आपका टिकट खरीदने देंगी? मैं बस इतना ही कर सकता हूं।' और उसने मैली धोती की अंटी में से दस पैसे निकाले।

'बच्चों को क्यों दुःख-दर्द सहना पड़ता है?' मैंने मदर से पूछा—'हमें हमारे पापों के लिए दंड दिया जाये, यह तो ठीक है। मगर बच्चों ने तो किसी का कुछ बुरा नहीं किया!'

'इसी में तो सब खूबी है।' वे बोलीं—'अगर निर्दोष-निरपराध दुःख न झेल लें, तो बताइये यह दुनिया कहां होगी? हम नहीं जानते कि हम उनके कितने देनदार हैं।'

अब मैंने अपना अंतिम सवाल पूछा—'मदर, मुझे बताइये कि कोढ़ और गैंग्रीन जैसे घिन पैदा करने वाले रोगों वाले आदमियों को छूने का अभ्यास आपने कैसे डाला? क्या पेचिश से और हैजे के वमन से लिपटे मैले लोगों से आपको जुगुप्सा नहीं होती?'

उन्होंने सीधे मेरी आंखों में झांका और उत्तर दिया—'मैं हर इंसान में यीशु को देखती हूं। मैं अपने से कहती हूं—"यह भूखा यीशु है, मुझे उसे खाना खिलाना है। यह बीमार यीशु है, इस यीशु को गैंग्रीन, पेचिश या हैजा है। मुझे उसे धोना-साफ करना है, उसकी तीमारदारी करनी है।" मैं उनकी सेवा करती हूं, क्योंकि मैं यीशु को प्यार करती हूं।'

—खुशवंत सिंह ('इलस्ट्रेटेड वीकली' में)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोनार

डा. जगदीश लूथरा

राडार के बारे में तुमने पिछले अंक में पढ़ा। अब उसके ध्वनि-प्रतिरूप 'सोनार' के बारे में भी कुछ जान लें। यह भी राडार शब्द की तरह एक लंबे शब्द का लघुरूप है। साउंड नैविगेशन एंड रेंजिंग शब्द-समूह के प्रत्येक शब्द के आद्य अक्षर को जोड़ने से बन गया—सोनार। जैसा कि नाम से जाहिर है, इसमें ध्वनि (२५ किलो साइकल प्रति सेकेंड से अधिक आवृत्ति वाली) का उपयोग किया जाता है। राडार में विद्युत-चुंबकीय किरणों का उपयोग होता है; वे पानी के अंदर काम नहीं कर सकतीं; क्योंकि वे पानी द्वारा अवशोषित कर ली जाती हैं।

सोनार को गहराई का राडार कह सकते हैं। इसका उपयोग जल के नीचे संदेश भेजने में, गहराई नापने में, ध्वनि द्वारा मार्ग-निर्देशन के साधन के रूप में, मछलियों और पनडुब्बियों को खोज निकालने में किया जाता है। समुद्री लड़ाई में सोनार का बहुत महत्त्व है, विशेषतः पनडुब्बी-मार कार्यों के लिए। पानी में पैठी हुई पनडुब्बियों के बीच संचार-व्यवस्था भी इसी के द्वारा संभव है।

सोनार का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है ट्रांसडयूसर, यह एक प्रकार से इसकी जान है। ट्रांसडयूसर एक प्रकार का उपकरण है, जो एक प्रकार की ऊर्जा को दूसरे प्रकार की ऊर्जा में बदल देता है। तुम्हारे देखे हुए एक और यंत्र में ट्रांसडयूसर का उपयोग होता है। यह है टेलिफोन। इसमें पहले स्पीकर में माइक्रोफोन द्वारा ध्वनि विद्युत-ऊर्जा में बदल जाती है, फिर रिसीवर पर विद्युत-ऊर्जा वापस ध्वनि में बदली जाती है। सोनार में भी ध्वनि और विद्युत-ऊर्जा की अदला-बदली होती है। एक विद्युतस्पंद को ध्वनि-तरंग में बदला जाता है, फिर इसे फोकस करके पुंज के रूप में लक्ष्य के क्षेत्र में भेजते हैं। ट्रांसडयूसर ग्राही और प्रेषी दोनों का कार्य करता है। यह विद्युत-स्पंद के रूप में ध्वनि को भेजने

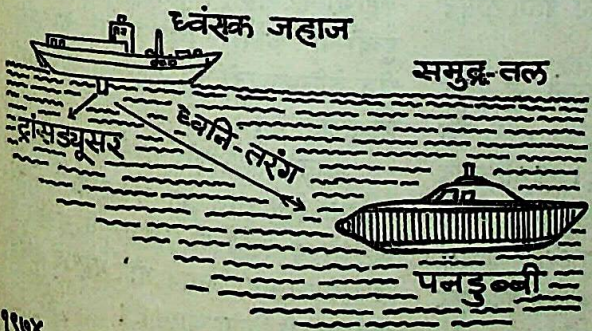

१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बाद उसकी प्रतिध्वनि की प्रतीक्षा करता है। यहां प्रतिध्वनि किसी वस्तु (या लक्ष्य) से टकराकर वापस आने वाली तरंग है। प्रतिध्वनि (ध्वनिक ऊर्जा) को यह वापस विद्युत में बदल देता है। राडार की तरह कैथोड-रे-स्क्रीन पर वस्तु (लक्ष्य) की 'तस्वीर' बनती है, जिससे वस्तु की दिशा, दूरी, आकार और उसकी चाल के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सोनार दो प्रकार के होते हैं—सक्रिय और अक्रिय।

सक्रिय सोनार में जान-बूझकर ध्वनि छोड़ी जाती है और उसकी प्रतिध्वनि को पकड़कर लक्ष्य के बारे में खोज-बीन की जाती है। इस प्रकार के सोनार में नुक्सान यह है कि दूसरे जहाज द्वारा इसका पता लगाया जा सकता है। इसलिए इसका उपयोग पनडुब्बी में नहीं किया जाता; क्योंकि पनडुब्बी की खूबी इसी में है कि वह गुप्त रहकर दुश्मन पर वार करे। इसका उपयोग गहराई नापने में, सतह पर विचरने वाले पनडुब्बी-मार यानों (ध्वंसक जहाजों) द्वारा पनडुब्बी का पता लगाने के लिए किया जा सकता है।

समुद्र की गहराई नापने के लिए जहाज पर एक स्रोत (प्रेषी) और एक ग्राही यंत्र लगा दिया जाता है। स्रोत से समुद्र के अंदर नीचे की ओर एक स्पंद भेजा जाता है, जिसके प्रारंभ का क्षण (समय) एक चार्ट पर अंकित हो जाता है और चार्ट-पेपर एक निश्चित चाल से चलने लगता है। जब यह स्पंद समुद्र-तल से टकराकर वापस ग्राही द्वारा पकड़कर विद्युत-धारा में बदला जाता है, तो वह क्षण भी चार्ट पर अंकित हो जाता है और चार्ट रुक जाता है। यदि हमें इन तरंगों का समुद्रजल में चलने का वेग ज्ञात है, तो स्पंद के भेजने के समय और प्रतिध्वनि के वापस पहुंचने के समय के अंतर से समुद्र की गहराई का पता लग सकता है।

अक्रिय प्रकार के सोनार लक्ष्य द्वारा छोड़े गये शोर (रव) को पहचानकर उसका पता लगाते हैं। हर तरह का जहाज अपना विशेष ढंग का शोर (रव) उत्पन्न करता है; उस शोर से उस जहाज की किस्म का पता लगाया जा सकता है। अक्रिय सोनार का यह फायदा है कि बिना खुद पहचान में आये यह लक्ष्यों को पहचान लेता है। परंतु इसमें सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसे सभी प्रकार के शोरों को ग्रहण करके उनमें से अपने लक्ष्य (यानी दुश्मन के जहाज) द्वारा छोड़े गये क्षीण संकतों को पकड़ना होता है।

अमरीकी नौसेना के सभी लड़ाकू जहाजों पर सोनार लगा होता है और पनडुब्बी-मार कार्यों के लिए सोनार का कार्य-क्षेत्र हेलिकाप्टरों की सहायता से बढ़ाया जा सकता है।

सोनार का उपयोग सैनिक कार्यों के अलावा समुद्र-तल का नक्शा बनाने, डूबे जहाजों के मलबे का पता लगाने, मछलियों के झुंड का पता लगाने और गहराई नापने के लिए भी किया जाता है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भालू

मिखाइल प्रिश्विन

बहुतों का खयाल है कि अगर आदमी भालुओं वाले जंगल में निहत्था चला जाये, तो भालू उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मारकर उसका कलेवा कर जायेंगे। लेकिन कितना गलत है यह खयाल! .....सच तो यह है कि भालू आदमी की गंध पाते ही दुम दबाकर भाग खड़ा होता है।

एक बार मैं कोडा नदी के ऊपरी भागों की यात्रा कर रहा था। मुझे बताया गया कि अमुक जगह भालू ही भालू मिलते हैं। भालू का शिकार करने की मेरी मंशा नहीं थी। वैसे भी भालू का शिकार सर्दियों में होता है, जबकि मैं यहां वसंत के प्रारंभ में पहुंचा था और भालू अपनी-अपनी मांदें खाली करके जा चुके थे। मैं तो भालू को जंगल में भोजन करते, नदी से मछलियां पकड़ते, या महज आराम करते देखना चाहता था।

सुरक्षा की दृष्टि से हथियारबंद होकर मैं भालुओं के पदचिन्हों का अनुसरण करता देर तक भटकता रहा; मगर नतीजा कुछ न निकला। मैं थक गया। मुझे वापस भी लौटना था।

मैं नदी-तट पर उस जगह लौट आया, जहां मैंने अपनी नाव खड़ी कर रखी थी। तभी मेरे सामने के स्प्रूस-वृक्ष की एक बड़ी टहनी हिलने और झूमने लगी। मैंने सोचा, होगा कोई बेचारा नन्हा प्राणी; और नाव पर सवार हो गया।

जहां मैंने नाव छिपायी थी, उसी के सामने, दूसरे किनारे पर, एक बहुत ऊंचे स्थान पर फंदे से पशु पकड़ने वाले एक शिकारी का घर था। मैं जब एक या दो घंटे नाव खे चुका, तो वह शिकारी भी मेरे पीछे आ पहुंचा और बोला कि जहां से आप नाव पर सवार हुए थे, वहीं कुछ ही मिनिट बाद मैंने एक भालू को कूदकर जंगल से बाहर आते देखा।

मुझे स्प्रूस-वृक्ष की हिलती हुई टहनी याद आयी, और झल्लाहट हुई कि मैंने शायद भालू को डरा दिया था। लेकिन शिकारी ने मुझे बताया कि मुझे चकमा देने के साथ-साथ उस भालू ने मेरा मजाक भी उड़ाया था।.....वह मुझसे बचकर एक पेड़ के मोटे तने के पीछे जा छिपा था और अपनी पिछली टांगों पर खड़ा होकर मुझे जंगल से निकलते और नाव पर सवार होते देखता रहा था। और बाद में जब मैं उसकी नजरों से ओझल हो गया, तो वह एक पेड़ पर चढ़कर फिर मेरी नाव को जाते हुए देखता रहा था।

मुझे खीज हुई कि एक भालू ने मेरा मजाक उड़ाया है। लेकिन इससे भी ज्यादा खीज उन लोगों पर हुई, जो कपोल-कल्पित कहानियां सुना-सुनाकर बच्चों को डराते हैं कि भालू खा जायेगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* मेरी विचार-यात्रा * पूजागीत : एक चिंतन
* जुआरी

पुस्तकास्वादन

❀ मेरी विचार-यात्रा ❀ लेखक : जयप्रकाश नारायण; प्रकाशक : सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी; पृष्ठसंख्या : २०२; मूल्य : चार रुपये (साधारण संस्करण)।

जयप्रकाश नारायण हमारे राष्ट्रीय संग्राम के अंतिम दौर के एक साहसी नेता और अग्रगण्य देशसेवक हैं—तात्कालिक राजनैतिक स्वार्थों में लिपटे चंद राजनीतिज्ञों के आक्षेप और आरोप इस तथ्य को असिद्ध नहीं कर सकते। जयप्रकाशजी की दिलचस्पी सत्ता के आसनों या सस्ते नारों में नहीं, बुनियादी समाज-परिवर्तन में रही है। अतः यह पुस्तक हमारे जीवन-काल के एक महान और निष्ठावान भारतीय के विचारों और चिंतन-प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

जयप्रकाश दिमागी कठमुल्लेपन से मुक्त रहे हैं और स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के आधुनिक आदर्शों से अनुप्राणित। इन आदर्शों को अधिक से अधिक निष्कलुष रूप में व्यावहारिक जामा पहनाने की छटपटाहट उन्हें बार-बार अपनी कार्य-प्रणाली पर पुनर्विचार करने को विवश करती है। यही कारण है कि वे वादों के जाल में से गुजरकर भी उसमें उलझ नहीं गये, बल्कि उसे चीरकर अपना मार्ग बनाते चले गये हैं। पुराने निष्कर्षों और तदाश्रित कार्यप्रणाली को नये तथ्यों और अनुभवों की कसौटी पर कसते हुए उन्होंने मार्क्सवाद से गांधी-विचार प्रेरित ग्राम-स्वराज्य तक की व्यापक विचार-यात्रा की है।

इस पुस्तक में जयप्रकाशजी ने जो प्रश्न उठाये हैं और जो समाधान दिये हैं, उनका उल्लेख मात्र करना भी इतने संक्षिप्त परिचय में संभव नहीं। इतना ही कहूंगा कि यथास्थिति, पश्चिम के अंधानुकरण (चाहे पूंजीवाद के नाम पर या समाजवाद-साम्यवाद के नाम पर), संसदीय राज्य-प्रणाली, आर्थिक-राजनैतिक केंद्रीकरण तथा व्यक्ति की स्वार्थ-प्रेरणा में जिनकी श्रद्धा हो, उनके लिए यह खतरनाक पुस्तक है।

जयप्रकाशजी ने अपने ढंग से इन सब पुरानी मान्यताओं को प्रश्नांकित किया है; उससे भी बढ़कर ग्राम-स्वराज्य की गांधी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विनोबा-परिकल्पना की नये ढंग स व्याख्या करके उसे हमारी वर्तमान समस्याओं के समाधान तथा आदर्श समाज-रचना के व्यावहारिक मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया है।

इन विचारों से असहमति हो सकती है; परंतु विचारक की निष्ठा और ईमानदारी की छाप हर वाक्य में है। श्री कांतिभाई के कुशल और श्रमपूर्ण संपादन ने जयप्रकाशजी के अलग-अलग समय पर दिये गये भाषणों, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों-टिप्पणियों को एक सुसंबद्ध पठनीय पुस्तक का रूप दे दिया है। मुद्रण की अशुद्धियां न रहतीं, तो कितना अच्छा होता!

—गणेश मंत्री

० ० ०

*** पूजागीत : एक चिंतन * लेखक : विनोबा; प्रकाशक : सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन; पृष्ठ-संख्या : १७६; मूल्य : चार रुपये।**

रवींद्रनाथ के ५० से अधिक सुविख्यात भक्तिमूलक गीतों पर विनोबाजी के ये व्याख्यान पढ़ने के लिए हाथ में लेते हुए जितनी उत्सुक आशा और ईप्सा होती है, उतनी ही निराशा इन्हें पढ़कर रखते समय होती है। वस्तुतः अधिकांश गीतों और उनके व्याख्यानों का आपस में इतना ही संबंध है कि विनोबाजी ने बंगाल की पदयात्रा के दौरान दिये गये इन भाषणों में इन गीतों की किसी पंक्ति का प्रसंगवश या यों ही उपयोग किया था। न कवि के साथ न्याय हुआ है, न व्याख्याता की अपनी असंदिग्ध आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और साहित्य-मर्मज्ञता का लाभ पाठक को मिलता है। गीतों का मूल पाठ और भवानीप्रसाद मिश्र कृत सरल पद्यानुवाद पढ़ने को मिलता है, यह एक लाभ है।

—नारायण दत्त

० ० ०

*** जुआरी * लेखक : सत्यपाल विद्यालंकार; प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६; पृष्ठसंख्या : १५४; मूल्य : १२ रुपये ५० पैसे।**

यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो जुआरी है। पेशेवर नहीं, एक शौकिया शरीफ जुआरी, जो महज जमाने का फैशन निभाने के लिए और एक व्यक्ति-विशेष के प्रति आकर्षण के कारण क्लब जाता है, जुआ खेलता है। उसके विवेक और तेजस्विता पर किस तरह जुआ एकबारगी हावी हो जाता है; किस तरह वह अपना सब-कुछ लुटाकर विनाश के गर्त में डूबने-उतराने

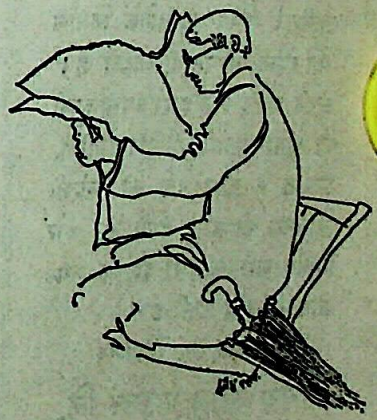

चित्र : सतीश चव्हाण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.

खोपोली स्थित आद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है। उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थ-कोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि न्यू स्वदेशी
शुगर मिल्स लिमिटेड.
नरकटिया गंज,
जि. चंपारन, बिहार

उत्पादन :

शुद्ध दानेदार चीनी
पावर और औद्योगिक
अल्कोहल

अलाहाबाद
कैनिंग कंपनी
बमरौनी (इलाहाबाद),
उत्तर प्रदेश

उत्पादन :

डिब्बाबंद फल और सब्जी

मैक्फरलेन पेन्ट्स

कलकत्ता

उत्पादन :

उम्दा पेन्ट्स, वार्निश
'वैलामॉयड' रूफिंग कंपाउंड
क्रोम और पिग्मेंट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगता है; और किस तरह अपने एक मित्र की पत्नी की सहृदयता व बुद्धि-चातुर्य से किनारे लगता है—यह सब इसमें है।

लेखक के 'आत्मनिवेदन' के अनुसार, 'जुए के प्रसंग में मैं भले आदमी की तरह जिंदगी भर कोरम-कोर नहीं रहा। मैंने सौ चूहे खाये हैं, पर सौभाग्य से अधाकर मैं किनारे भी आ लगा हूं।' संभवतः इसी से उन्हें नायक नंदनबाबू के चरित्र-चित्रण में काफी हद तक सफलता मिली है। शौकिया जुआरी और पेशेवर जुआरी का अंतर भी वे स्पष्ट कर सके हैं। लेकिन दिनेश के प्रति नंदनबाबू की कमजोरी, उसकी बेईमानी की बात जानकर भी अंत-अंत तक उसे गले लगाये रखना, उसके हाथों की कठपुतली बनकर, अपनी सीधी-सादी पत्नी को धोखे में रखना आदि बातें जम नहीं पातीं। शर्मा और उसकी पत्नी-जैसे व्यक्ति, मुमकिन है, वास्तविक जीवन में भी होते हों; लेकिन जिस रूप में उन्हें पेश किया गया है, वे वास्तविक कम, काल्पनिक अधिक लगते हैं।

आजकल उपन्यास या कहानी लिखते समय कई लेखकों की दृष्टि फिल्म पर अटकी रहती है। 'जुआरी' की घटनाएं, पात्रों का चरित्र-चित्रण और कुछ स्थलों पर 'क्यों-कैसे' जैसे सवालों की गुंजाइश कुछ ऐसा ही महसूस कराते हैं।

लिखने का अंदाज सुंदर है। पढ़ने में रुचि बनी रहती है और आगे क्या हुआ, यह जानने की उत्सुकता भी। सिर्फ कुछ पृष्ठ, जहां नायक के डायरी लिखने का वर्णन है, रोचकता में व्याघात डालते हैं। क्या भाषा में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू सबका इतना मिश्रण आवश्यक है?

—रमेश सिन्हा

*

लिखने के लिए हम-आप जो पेन्सिलें काम में लाते हैं, वे लकड़ी की बनी होती हैं और उनके बीच में ग्रैफाइट की सलाई रहती है। एक जापानी कंपनी ने अब ऐसी पेन्सिल बनायी है, जिसमें न लकड़ी है, न ग्रैफाइट। लकड़ी के स्थान पर इसमें बिरोजे का प्रयोग किया गया है और ग्रैफाइट की जगह बिरोजे और कार्बन के मिश्रण की सलाई है। तराशने में यह पेन्सिल सुगम है और ज्यादा देर तक इसकी नोक बनी रहती है। एक लाभ यह भी है कि पेन्सिल-उद्योग के लिए जो पेड़ काटने पड़ते हैं, उनका बचाव हो जायेगा।

पेन्सिल के साथ कागज की याद आना स्वाभाविक है। केनाफ भांग के पौधे से सूरत-शक्ल में बहुत मिलता-जुलता एक पौधा है। वह हिबिस्कस परिवार का एक सदस्य है। (इस परिवार के दूसरे मशहूर सदस्य हैं गुड़हल और भिंडी।) अमरीका के फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि यह पौधा कागज बनाने के लिए बहुत उपयुक्त है। इसे उगाना और इसकी लुगदी बनाना बहुत आसान है। इसकी बड़े पैमाने पर खेती की जाये, तो कागज की विश्वव्यापी कमी को दूर करने में किसी हद तक सहायता मिल सकती है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मास्को की कतार

जी. गोरिन

पिछली पतझड़ की बात है, हमारे सामूहिक कृषि-फार्म ने मुझे व्यापारिक दौरे पर भेजा था। मास्को पहुंचते ही हमेशा की तरह मैं सीधे होटल पहुंचा और उसकी लॉबी में डेरा जमाया। दरबान मेरा अच्छा दोस्त था; वह हमारे कृषि-फार्म में कृषि-विशेषज्ञ रह चुका था।

अपना सामान उसके पास छोड़कर मैं बाहर निकला। पहले कुछ देर इधर-उधर घूमा और बुडापेस्ट रेस्तरां में कुछ खाया-पिया। फिर मैंने अपने आपसे कहा—अब अपना काम शुरू किया जाये। चलकर जरा देखूं तो कि स्टोरों का क्या हालचाल है।

पैदल चलकर मैं एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर पर पहुंचा। वहां मैंने लोगों को कतार में खड़े देखा। मैंने सोचा—तो यह बात है! यहां तो कुछ बिक रहा है! मेरे जैसे साधारण आदमी कयास भिड़ाने में काफी चतुर होते हैं। कतार का यह निश्चित अर्थ है कि कोई चीज बिक रही है। और इस स्टोर में जरूर कोई खास चीज बिक रही थी; क्योंकि कतार बहुत लंबी थी—सड़क पर शुरू हुई थी और जीने पर से होते हुए दूसरी मंजिल पर खो गयी थी। मैं कतार के सिरे पर पहुंचा और अपने आगे वाली महिला से बोला—'सबसे अंत में कौन है?'

बोली—'मैं ही हूं।'

मैंने उससे पूछा—'क्या बिक रहा है?'

बोली—'पता तो मुझे भी नहीं; मगर अभी-अभी स्टोर वालों ने एलान किया है कि शायद सबके लिए पूरी नहीं पड़ सकेगी। सो मैंने सोचा कि कतार में इंतजार कर ही लिया जाये।'

मैंने पूछा—'खैर कुछ भी बिक रहा होगा, मगर उसके दाम क्या हैं?'

बोली—'बीस रूबल।'

मैंने कहा—'दाम तो वाजिब हैं। मैं भी इंतजार करूंगा।'

सो मैं कतार में खड़ा हो गया। कुछ लोग आकर मेरे पीछे खड़े हो गये। कतार में खड़े होने लायक जगह तो बीच की ही होती है, उसमें हवा के झोंकों से बचाव हो जाता है।

अब मैं सोचने लगा कि आखिर म यहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर क्या रहा हूं? पास खड़े लोगों से मैंने सतर्कता से पूछा—'साथियो, हम लोग किस-लिए इस कतार में खड़े हैं? कौन-सी चीज बिक रही है? हल्के उद्योग का कोई उत्पादन, या भारी उद्योग का उत्पादन?'

किसी ने भी जवाब नहीं दिया। उनमें से आधे लोग तो मेरे जैसे थे, जिन्हें पता ही न था। बाकी आधे जानते तो थे, मगर न आंख मिलाते थे, न मुंह से बोलते थे—इस डर से कि कहीं लोगों में सनसनी न फैल जाये।

इतने में एक सेल्समैन प्रकट हुआ और चिल्लाकर बोला—'साथियो, मैं आप लोगों को बता देना चाहता हूं कि सिर्फ सोलह और सत्रह बचे हैं।' फिर वह अंदर चला गया।

लोग चिंतित हो उठे। मैं भी चिंतित हो उठा। और करता भी क्या? इन संख्याओं का क्या अभिप्राय था? मगर मैंने सोचा, चिंता करना बेकार है? जो भी चीज हो, ठीक है। ज्यादा लंबी हुई तो कटवा लूंगा; छोटी हुई तो खींचकर लंबी कर लूंगा; बिजली से चलने वाली हुई तो तार बदल दूंगा।

घंटे-भर बाद यह अफवाह उड़ गयी कि यहां जो भी चीज बेची जा रही है, वही फलां स्टोर में बिना कतार बांधे भी खरीदी जा सकती है। जैसा कि स्वाभाविक था, सब लोग एक-दूसरे को ठेलने लगे। चारों दिशाओं से धक्कामुक्की करते हुए लोगों ने मुझे जमीन पर से उठा लिया और दूसरे स्टोर को ले जाने लगे। पहले तो मैंने हाथ-पांव मारे, चीख-पुकार की; मगर फिर सोचा कि अपनी ताकत उस क्षण के लिए बचाये रखूं, जब दाम चुकाने की बारी आयेगी।

भीड़ ने ले जाकर मुझे स्टोर के काउंटर से भिड़ा दिया। सेल्स-गर्ल गुर्रायी—'क्या चाहिये आपको?'

मैंने कहा—'आप जो भी बेच रही हों।'

वह और भी तुनककर बोली—'धारीदार चाहिये, या इकरंगा?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुँहमें लाये पानी सरसकी यह मिज़बानी

भोजन को लज्जत बढ़ाता सरस अचार सभीको भाता

• आम का अचार • आम का तीखा अचार • नींबू का अचार • हरी मिर्च का अचार • मिश्रित अचार • छूंदा • मौसम का खास अचार—प्याजका अचार

सरस फूड्स

(डिव्ही. ऑफ पॉवर केवल्स. (प्रा.) लि.)
नडीयाद : (जिल्हा-कैडा. भारत)
२४ एस. ए. ब्रेलवी रोड.
बंबई-४०० ००१

CONCEPT-SF-1464

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने कहा—'मेहरबानी करके दिखा तो दीजिये कि वह क्या चीज है ?'

बोली—'आप अपने को समझते क्या हैं ? देखते नहीं कि चीज सीलबंद डब्बे में है !'

'तो दोनों ही दे दीजिये एक-एक।'

मैंने पैसे चुकते किये, रसीद जेब में ठूंसी और दो डब्बे हासिल किये। फिर विकट संघर्ष करता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ा। एक डब्बा वजनदार था; दूसरा हल्का था और उसमें कुछ खड़खड़ा रहा था।

जब मैं भीड़ में से राह बनाता हुआ निकल रहा था, एक बूढ़े उज्बक ने जोर से मेरी आस्तीन पकड़ ली।

'दोस्त, एक डब्बा मुझे बेच दो। यही खरीदने के लिए मैं मास्को का यह चौथा चक्कर काट रहा हूं।'

मैंने कहा—'बूढ़े मियां, बेचने की बात तो मैं सोच सकता हूं; मगर यह तो बताओ कि यह क्या चीज है, जो मैंने खरीदी है ?'

कहने लगा—'अब मैं कैसे बताऊं ? रूसी नाम मुझे मालूम नहीं, और हमारी उजबक भाषा में इसके लिए कोई शब्द नहीं !'

'तब तो हवा खाओ। दोनों ही मैं खुद रखूंगा।'

मगर बूढ़े उज्बक से पिंड छुड़ाना इतना आसान नहीं था। छूट निकलने के लिए मुझे हाथापाई तक करनी पड़ी। इसी में मैं लड़खड़ा गया और लुढ़कता हुआ सीधे जीने के नीचे आ गिरा।

अगले दिन जब आंखें खुलीं, तो अस्पताल में पड़ा हुआ था।

'वह चीज कहां है, प्यारी !'

'क्या चीज ?'

'वही जो मैंने खरीदी थी।'

'क्या चीज खरीदी थी ?'

'काश, मुझे पता होता।'

बोली—'तो ठीक है, याद करने की कोशिश कीजिये। तब तक शायद आपके डिस्चार्ज होने का दिन आ जाये।'

हफ्ते-भर बाद मुझे डिस्चार्ज कर दिया गया। वापसी यात्रा में रेल में अपनी सीट पर बैठा मैं मन ही मन सोच रहा था—पैसे या तंदुरुस्ती का मुझे उतना अफसोस नहीं। मुझे तो यह बात साल रही है कि मैं जान ही नहीं पाया कि मैंने क्या चीज खरीदी थी। कौन जाने, शायद उससे मेरे जीवन का नक्शा ही बदल जाता। मगर अब तो मुझे उसके बिना ही काम चलाना होगा।

*

उभयलिंग

ब्रिटेन के एक प्रमुख सरकारी अफसर का कहना है, अपने मालिकों के प्रति सरकारी अफसर-वर्ग (सिविल सर्विस) का रवैया सेक्स की शब्दावली में समझा व समझाया जा सकता है। यदि सरकार या मंत्री कमजोर है, तो अफसर-वर्ग पुरुषत्व जताता है; मगर ऊपर वाले अधिक प्रबल हों, तो वह अधिक अनुगामी और स्त्रैण रवैया अपनाता है।

—हेनरी ग्रैडन

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, सदाबहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियों पर चाँदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

सदाबहार ताक़त के लिए

(पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग अलग टिकियाँ)

हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड लंदन-इंग्लिन का उत्पादन

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD., 12 Gunbow Street, P.O. Box No 396, BOMBAY-1.

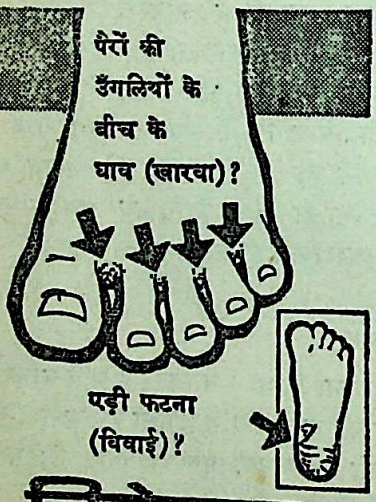

लिचेन्सा

इस्तेमाल कीजिये।

सफेद दाग का अचूक इलाज

'सफद कुष्ट बूटी' रक्त के समस्त विकारों को तेजी से बाहर निकालकर बिलकुल शुद्ध रक्त शरीर में प्रवाहित करती है तथा सिर्फ सात दिनों में पुराने से पुराने सफेद दाग के स्थान पर भी शारीरिक चमड़े का प्राकृतिक रंग बदलने लगता है, जिससे गौरपूर्वक निरीक्षण करने पर भी रोग के नामोनिशान नहीं मिल पाते। साथ ही भविष्य में इस रोग के लौटने का भय नहीं रहता। सेवन-विधि बिलकुल सरल है। प्रचारार्थ एक फायल दवा मुफ्त के लिए लिखें।

पता—सरयुग फार्मेसी
पो.—कतरी सराय (गया)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिंजरे में बंद चिड़िया दिन भर में जितनी बार पंख फड़फड़ाती है, उतने से शायद वह कई मील की यात्रा कर सकती है। मगर उसकी सारी सक्रियता बेकार हो जाती है; क्योंकि उसका कोई अर्थ या उद्देश्य नहीं होता।

कहते हैं, फिल्म अभिनेत्री मार्लिन डीट्रिच से प्रसिद्ध अमरीकी लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने एक बार कहा था—'क्रियाशीलता को क्रिया समझने की भूल मत करना।'

दूसरे शब्दों में, अंधाधुंध क्रियाशील न बने रहो; भले ही गिने-चुने कार्य ही करो; परंतु हर कार्य का महत्त्व होना चाहिये।

एक साथ तुम कई काम हाथ में ले लो, यह संभव है। लेकिन बहुत सारे काम एक साथ न ले बैठो। ठोक-बजाकर कुछ कार्य चुन लो। वरना कहीं ऐसा न हो कि अंत में तुम असल महत्त्व का एक भी काम न दिखा सको कि यह मैंने किया है।

क्रिया अर्थपूर्ण होनी चाहिये। हममें से बहुत-से लोग व्यस्त दिखने या महत्त्वपूर्ण कहलाने के लिए तमाम तरह के कामों में दौड़ते-भागते रहते हैं।

सुनिश्चित लक्ष्य रखो; एक काम से दूसरे की ओर भटकने में सफलता के अवसर मत गंवाओ।

कोई भी समस्या या योजना हो, उसके बारे में शुरू से लेकर अंत तक सारी बातें सोच लो। बिना पूरी तैयारी के किसी भी काम में हाथ मत डालो। कोई भी निर्णय लेने के पहले उसके हर पहलू को तौल लो,

शशिरंजन

फुरसत से सोच लो। अगर तुम्हारे निर्णय का अन्य लोगों से भी संबंध है, तो पहले इसका ध्यान रखो कि वे सब उस निर्णय को समझ जायें; और उन्हें सहयोग देने के लिए राजी करने की कोशिश करो।

अंतःप्रेरणा, अंतर्ज्ञान एवं लहर (ब्रेनवेव) को संदेह की नजर से देखो। कभी-कभी वे गुमराह करते हैं। लोग तुम्हें तुम्हारी कमाल की कल्पनाओं और सपनों या इरादों से नहीं, बल्कि तुमने काम क्या किया है, इससे आंकेंगे।

तुम खुद से क्या पाना चाहते हो और दूसरों से किस मदद की अपेक्षा करते हो—इसमें व्यावहारिक एवं यथार्थवादी बनो।

जीवन में स्थिर गति से हो रही प्रगति से संतुष्ट रहो। कभी-कभार अचानक काफी तरक्की भी मिलती है। लेकिन बहुधा यह भाग्य का चमत्कार होता है, या किसी की सिफारिश का परिणाम, या महज संयोग होता है—संयोग से तुम उस समय वहां होते हो और उसका लाभ तुम्हें मिल जाता है।

यह चिंता होना स्वाभाविक है कि जहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाद छुप ही नहीं सकता !!

ताज़ा, करारा, व स्वाद में अनोखा-वाह! यह तो बिल्कुल

साठे माल्टेक्स

बिस्कुट ही है।

इस अनोखे स्वाद का कारण है मॉल्ट, जो इस बिस्कुट में भरपूर है। पचने मे हलका व पोषक सत्वों से भरपूर यह बिस्कुट चाहे जितने भी खायें, और खाने को जी चाहता है। इसलिये कि इसमे मॉल्ट है!

आज ही खरीदिये और फर्क देखिये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम पहुंच गये हैं, क्या वहां बने रह सकेंगे? कहीं किस्मत हमारा साथ तो नहीं छोड़ देगी?

छोटी-छोटी संतोषजनक सफलताओं के सिलसिले से आदमी का आत्मविश्वास जितना तगड़ा होता है, उतना और किसी चीज से नहीं होता। इसमें आदमी को अपने धंधे-पेशे को अथ से इति तक अच्छी तरह सीखने का और सारी जरूरी जानकारी पूरी तरह पाने-पचाने का मौका मिलता है।

यह भी जरूरी है कि तुममें अपने ध्यान को केंद्रित करने और विकेंद्रित करने की शक्ति हो।

ये दोनों मानसिक प्रक्रियाएं ऐसी हैं कि इनमें से एक की जगह दूसरी शुरू की जा सकती है; और दोनों अपने आप चलती हैं। उदाहरण के लिए तुम्हें ऐसा अभ्यास करना चाहिये कि जब तुम्हारे चारों ओर काफी शोरगुल हो रहा हो, लोग तुम्हारे सामने बैठे हों, तब भी तुम टेलिफोन पर किसी से बात कर सको या जरूरी चिट्ठी को पढ़ सको। यह हुआ ध्यान को केंद्रित करना।

घर में गृहिणी खाना पका रही होती है कि दरवाजे की घंटी बजती है, उसे जाकर आगंतुक को देखना पड़ता है। या चूल्हे पर दाल या सब्जी चढ़ी है और वह बाजार से क्या-क्या लाना है, इसकी फेहरिस्त बना रही है या कमरे को ठीक-ठाक कर रही है। यह हुआ ध्यान को विकेंद्रित करना।

ठीक यही धंधे-पेशे में भी होता है। तुम काम में डूबे हो, चिट्ठियां निबटा रहे हो, मुलाकाती आते हैं और काम में व्यवधान होता है, बीच में किसी से फोन पर बात भी करनी पड़ती है और साथियों से कुछ कहना-पूछना भी पड़ता है।

इस तरह ध्यान के केंद्रीकरण-विकेंद्रीकरण में सूक्ष्म संतुलन आवश्यक होता है; और सामान्यतः कोई आदमी पहले में दक्ष होता है, कोई दूसरे में। मगर अभ्यास से दोनों को साधा जा सकता है।

जो कुछ कहा जा रहा हो, उसे सावधानी से सुनो। सुनने में गलती प्रायः तब होती है, जब हम स्वयं कुछ कहना चाहते हैं, या कहने के लिए कुछ ढूंढ़ रहे होते हैं; क्योंकि हम यह समझते हैं कि हमें भी कुछ कहना ही चाहिये।

यह सदा लाभप्रद होता है कि महत्त्वपूर्ण रकम, कोई संदर्भ, संख्या या किसी के लिए दिया जा रहा संदेश जैसी बातों को लिख लिया जाये।

नामों को सही-सही जानने-लिखने की कोशिश करो। दफ्तर या कंपनी के समय के सदुपयोग, आदेशों के पालन और काम के स्तर के विषय में हमेशा विशेष सजग रहा करो।

तुम विश्वसनीय हो—यह ख्याति तुम्हारे प्रति सद्भाव और विश्वास उत्पन्न करती है, जिससे लोग जीवन में आगे बढ़ने में तुम्हारी मदद करने को तत्पर रहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रांति

अपनी नरक जैसी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए लोगों के पास सिर्फ तीन रास्ते हैं। पहला-दूसरा रास्ता शराबखाने से गिरजे की ओर से होकर जाते हैं। तीसरा रास्ता है सामाजिक क्रांति का। —बाकुनिन

* क्रांति छोटी चीज नहीं होती; बल्कि छोटी चीजों में से जन्म लेती है। —अरस्तू

* आखिर मैंने महसूस किया कि क्रांतियों में सबसे बड़ी शक्ति सबसे अधिक तिरस्कृत लोगों के हाथों में होती है। —डैन्टन

* क्रांति करने के अधिकार की जड़ें हमारे इतिहास में बहुत गहरी धंसी हुई हैं।
—डगलास

* धोखा न खाइये; क्रांति कभी पीछे की ओर नहीं जाती। —लिंकन

* क्रांति चाहे सफल हो जाये, या कुचल दी जाये, दोनों स्थितियों में बड़े दिलों वाले मनुष्य उसका शिकार बनते हैं।
—हाइनरिश हायने

* अज्ञान की बगावत खतरनाक नहीं है; खतरनाक है बुद्धि की क्रांति।
—जेम्स रसल लोवेल

* क्रांतिकारी सिद्धांत के बिना क्रांतिकारी आंदोलन नहीं हो सकता। —लेनिन

* क्रांति सरल रेखा में आगे नहीं बढ़ती। वह जिस ओर रास्ता मिलता है, उस ओर जाती है; सामने अपने से बड़ी शक्ति को देखकर पीछे मुड़ती है; जिधर जगह मिलती है, आगे बढ़ती है; जहां कहीं दुश्मन पीछे हटता है, उस पर हमला करती है; और सबसे बढ़कर उसमें अथाह धैर्य होता है।
—माओ त्से-तुंग

* हथियारों की क्रांति के पहले विचारों की क्रांति होती है। —वेन्डेल फिलिप्स

* क्रांतियां उन लोगों को रास आती हैं, जिनके पास कुछ नहीं होता; और उन लोगों पर मढ़ी जाती हैं, जिनके पास बहुत कुछ होता है। —गिल्बर्ट सेल्डे

* क्रांतियों ने कभी अत्याचार का बोझ हल्का नहीं किया, उसे एक कंधे से उठाकर दूसरे कंधे पर रखा है। —जार्ज बर्नार्ड शा

* किसी क्रांति को रोकने का समय उसके आरंभ में होता है, न कि उसके अंत में।
—एडलाइ स्टीवेन्सन

* जैसा हमारा लंबा और कटु अनुभव बताता है, क्रांतियां उस अभिशप्त शासन का ढंग ग्रहण करने से नहीं बच पातीं, जिसका तख्ता उन्होंने उलटा है। —रिचर्ड टॉनी

* रेशमी दस्ताने पहनकर आप क्रांति नहीं कर सकते। —स्तालिन

* क्रांतियां बेहद बदबूदार गोबर के ढेर की तरह हैं, जो बहुत बढ़िया सब्जियों को जन्म देता है। —नेपोलियन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थानीय स्टेट बैंक आफ बीकानेर एंड जयपुर में तब मैं नया ही नियुक्त हुआ था। सरकारी भुगतान का काउंटर मुझे मिला था। हाथ में आये मिलिटरी पेंशन-बिल पर एक नजर डालकर मैंने काउंटर के सामने खड़े वृद्ध सज्जन से कहा था—'माफ करना मालिक, आपको वापस ट्रेजरी जाना पड़ेगा। हालाँकि आपकी तरफ से तो बिल में कोई खामी नहीं, लेकिन ये टी. ओ. साहब ही पांच साल आगे चल रहे हैं।'

तभी बायीं ओर से मैंने किसी को कहते सुना—'बिल तो मेरा है बाबूजी।' बायीं ओर गर्दन घुमाकर देखा, तो घुटनों तक कटे हुए पैरों के बल एक हाथ में बैसाखी लिये शौर्य का पुतला मेरे सामने खड़ा था। नाम था कंसीराम, जो बिल से मुझे ज्ञात हो गया था।

वापस ट्रेजरी जाने की बात सुनते ही जो झुंझलाहट और शिकन आम ग्राहकों के चेहरों पर उभर आती थी, वैसा कुछ भी कंसीराम के चेहरे पर नहीं था। वे सहज भाव से बोले—'क्या तारीख गलत है?'

'जी हां, ट्रेजरी अफसर ने कुछ ऐसा लिख दिया है कि यह सेवेन्टी थ्री कम और सेवेन्टीएट ज्यादा लगता है। खैर, आप यहीं बैठिये। आप असमर्थ हैं साहब! हम ही बिल को ट्रेजरी भेज देते हैं।' मैंने कहा।

'नहीं बाबूजी, आप तकलीफ न उठायें। मैं चलने-फिरने में नाकाबिल तो हूं नहीं। यह तो छोटी-सी बात है।' हंसते हुए वे बोले। उन्होंने मुझसे अपना बिल लिया और चल दिये।

याद आया कभी आठवीं कक्षा में संस्कृत में एक श्लोक पढ़ा था :

एकोऽहमसहायोहं दुर्बलोस्म्यपरिच्छदः।
स्वप्नेप्येवंविधा चिंता मृगेन्द्रस्य न जायते॥

—मैं तो अकेला हूं, असहाय हूं, दुर्बल हूं, साधनहीन हूं, इस तरह की चिंता सिंह को स्वप्न में भी नहीं होती।

सचमुच उस दिन मैंने मानव-देह में ऐसे सिंह का साक्षात्कार किया था, जिसने शारीरिक त्रुटि को असमर्थता मानने से इन्कार कर दिया था।

बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि देश की सीमा का वह पहरुआ सेना से सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् खेत में ट्रैक्टर भी चलाता है। उसके टूटे हुए पैरों पर सिर्फ उसका ही नहीं, वरन गृहस्थी का पूरा भार है। उस नरसिंह को मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असमर्थ कहकर उसकी मदद करने चला था।

—रमेश कुमार शर्मा, कोटा

० ० ०

मित्र

सन १९६१ में गुजरात के एक हाईस्कूल में मैं अध्यापक था। मेरे सहकर्मियों में बनारस के एक शास्त्रीजी थे, स्कूल में संस्कृत पढ़ाते थे। सीधे-सादे और सिद्धांतवादी—न खुद गलत काम करते, न किसी को करने देते। ऐसे ही एक मामले में उनके साथ मेरी मित्रता टूट गयी और मैं उनसे द्वेष करने लगा। एक दिन पिताजी का तार आने से ५०० रुपयों का प्रबंध करके शाम की ट्रेन से सपरिवार अपने गांव पहुंचना अनिवार्य हो गया। मेरी परेशानी मेरे सभी मित्रों ने देखी; लेकिन सभी ने मुंह मोड़ लिया। शास्त्रीजी को तो मैं दुश्मन समझता था; इसलिए उनके पास जाना बेकार था। उदास चेहरा लेकर मैं सारा ही दिन इधर-उधर भटका। ट्रेन जाने से एक घंटा पहले एक मित्र आया और उसने मुझे ५०० रुपये दिये जिससे मैं घर जा सका।

इसके एक महीने पश्चात् वे शास्त्रीजी बनारस वापस चले गये। जाने से पहले मेरे घर पर आये और कहने लगे—'यार, अब तो मुझसे कुछ बोलो। मैं हमेशा के लिए जा रहा हूं। मैं तो तुम्हें अभी भी अपना मित्र समझता हूं। तुम्हारी याद मुझे हमेशा सताती रहेगी।' और उनकी आंखें आंसुओं से भर गयीं। बाद में मुझे पता चला कि वे ५०० रुपये शास्त्रीजी के ही थे। मेरी परेशानी को देखकर उन्होंने मित्र को ५०० रुपये देकर मेरी परेशानी दूर की थी, पर मित्र से कह दिया था कि इसका रहस्य प्रकट न करे।

—चंद्रकांत त्रिवेदी, अजमेर

० ० ०

सूटकेस

अजमेर से मेरा स्थानांतर हो गया था। बीच में मुझे अपने शहर उदयपुर भी जाना था। इसलिए मैं रात के ग्यारह बजे सारा सामान लेकर अजमेर से उदयपुर के डिब्बे में बैठ गया। दूसरे दिन दस बजे मुझे उदयपुर पहुंचना था। पास की सीट पर एक सज्जन बैठे थे, जो परिवार सहित चित्तौड़ जा रहे थे। उनके साथ भी काफी सामान था।

बारह बजे के लगभग मुझे नींद आ गयी। जब जागा तो सुबह के साढ़े सात बज रहे थे। मावली जंक्शन आ गया था। सामान की जांच की, तो एक सूटकेस गायब था। उसमें दो सौ रुपये नकद, मूल्यवान कपड़े, कुछ साहित्यिक लेख एवं पुस्तकें थीं। सारे डिब्बे में ढूंढ़ा, सहयात्रियों से पूछा, रेल्वे-पुलिस को सूचना दी; परंतु सब व्यर्थ। ट्रेन उदयपुर पहुंची; खिन्न मन से घर पहुंचा।

दूसरे दिन एक अप्रत्याशित घटना हुई। एक अपरिचित व्यक्ति सूटकेस हाथ में लिये मेरे मकान पर आये। सूटकेस मेरा ही था। उन्होंने मुझे एक पत्र दिया, जिसमें लिखा था:

'प्रिय महोदय! क्षमा करना। चित्तौड़ स्टेशन पर जल्दी में मेरे परिवार के व्यक्तियों ने आपके सूटकेस को मेरा समझकर डिब्बे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उतार लिया। घर पहुंचने पर मुझे पता चला कि यह सूटकेस तो मेरा नहीं है। पर उस समय तक ट्रेन जा चुकी थी, इसलिए वापस स्टेशन आना व्यर्थ था। सूटकेस पर आपका पता लिखा था। अतः मैं यह सूटकेस अपने विश्वसनीय आदमी के हाथ आपके पास भेज रहा हूं, इसे ले लें। पहुंच की रसीद इसे अवश्य दे दें। इस अपराध के लिए हमें क्षमा करें।' नीचे सहयात्री के हस्ताक्षर थे।

मैंने सूटकेस खोलकर रुपये गिने, पूरे थे। लेख, पुस्तकें एवं कपड़े सब यथावत्

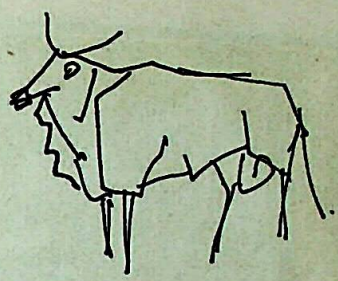

चित्र : सतीश चव्हाण

थे। ईमानदारी आज भी कुछ हृदयों में जिंदा है।

—श्याम मनोहर व्यास, उदयपुर, राजस्थान

❀

उड़ती मुसीबत

संयुक्त राज्य अमरीका के पूर्वी तट के छह राज्यों ने उसे दुश्मन घोषित कर दिया है और आज्ञा जारी कर दी है कि नजर में आते ही उसे गोली मार दी जाये। उस पर इल्जाम है कि वह टी. वी. एरियल के तार तोड़ देता है, गुलाब की कलियां और मकई के भुट्टे चट कर जाता है, पालतू बिल्लियों का सफाया कर डालता है। यह उत्पाती दुश्मन कौन है? ग्यारह इंच लंबा, कर्कश आवाज, नीले पंख और पीले सीने वाला तोता 'मंक पैराकीट'।

अमरीकी कृषि-विभाग के अधिकारियों का कहना है कि अगर समय रहते इस तोते पर काबू नहीं पाया गया, तो यह भी इंग्लैंड से आये तेलियर पक्षियों की तरह आफत मचा देगा। इंग्लैंड से आये वे पक्षी अमरीका में सालाना करोड़ों रुपये की फसल कोतवाह कर रहे हैं।

'मंक पैराकीट' मूलतः अर्जेंटाइना का पक्षी है। कहते हैं, वहां वह सालाना ४५ प्रतिशत गेहूं व धान तथा ५-६ प्रतिशत मकई व फलों की फसल चौपट कर देता है। अमरीका में उसका उत्पात नया ही है। उसके रूप-रंग पर मुग्ध होकर अमरीकियों ने उसे घर में पालना शुरू किया और १९६८-७२ के बीच अर्जेंटाइना से उसके ७० हजार जोड़े आयात किये गये। मगर जल्दी ही यह देखने में आया कि ये तोते बड़े ही पेटू होते हैं और बोलना नहीं सीखते। सो पालने वालों ने पिंजरे खोलकर उन्हें मुक्त कर दिया। यही मुसीबत की जड़ सिद्ध हुई।

ये तोते सामूहिक घोंसले बनाते हैं, जो ६ फुट लंबे और ४ फुट चौड़े होते हैं। इन घोंसलों में प्रायः पांच-पांच जोड़े रहते हैं और साल में दो बार अंडे देते हैं। उनकी आबादी तेजी से बढ़ती है। ये स्वभाव से आक्रामक होते हैं। राबिन और नीलकंठ इनसे बच नहीं पाते; बहुधा पालतू बिल्लियां भी इनकी शिकार हो जाती हैं।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

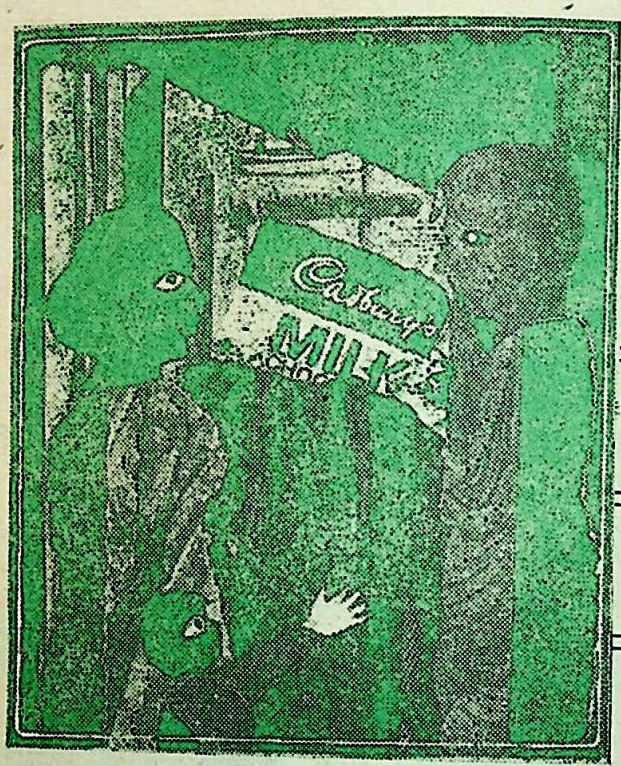

सुलह

सूर्यबाला की हिन्दी कहानी

साढ़े छह बजे तुम्हें साहब के बंगले पर जाना है न ?.....तुम्हीं ने याद दिलाने को कहा था.....'

उसे पत्नी की याददाश्त पर खीज हो आयी; फिर लगा, अगर न याद दिलाती तो ? एक बार खयाल आया, कहानी पूरी कर लें नहीं तो बाद में मूड बिगड़ जायेगा..... लेकिन तभी दूसरा खयाल आया—नहीं जाने से साहब का मूड उखड़ गया तो ? यह बात करेंट की तरह छू गयी और उसने डेस्क छोड़ दिया। जल्दी-जल्दी कपड़े बदले। साइकल पंक्चर हो गयी थी, बसस्टाप की तरफ भागा।

बस-स्टाप पर खड़े-खड़े वह अपनी कहानियों के प्लाटों में खो गया। उसका दिमाग भी अजीब है, हर समय उसमें कहानियों का आना-जाना लगा रहता है। प्लाट आते रहते हैं और गुजरते रहते हैं- तीन नंबर, सात नंबर और ग्यारह नंबर बसों की तरह। इससे कम से कम एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाभ तो होता ही है कि बस-स्टाप पर खड़े-खड़े कब पौन घंटा बीत गया, इसका एहसास नहीं होता। औरों की तरह समय काटने के लिए न उसे बीड़ी सुलगानी पड़ती है, न मूंगफली वाले को आवाज देनी पड़ती है।..... उसने घड़ी देखी, सवा छह बज रहे थे। आध घंटे का रास्ता है। कोई बात नहीं, बस पंद्रह मिनिट लेट पहुंचेगा। सामने से बस आती दिखी।

अच्छा हुआ, साहब को उसके आने की याद ही नहीं थी। नहीं तो उन्हें समय भी अवश्य याद रहता। लेट होने की कोई बात ही नहीं उठी; उलटे उसे लगा, साहब उसके काम से खुश हैं। रेग्युलर भी रहा है। साथ ही काम भी दुरुस्त। नहीं तो आजकल के क्लर्क तो जाने कहां-कहां के घोंचू आ जाते हैं। बी. ए. पास करने के बाद भी न कायदे की अंग्रेजी बोल पाते हैं, न लिख पाते हैं। उसने मौका पाकर साहब के कान में डाल दिया कि अगले ही महीने उसे इस टेम्परारी सर्विस से हट जाना है, यदि वे चाहें तो.....। साहब ने आश्वासन दिया और फिर कभी याद दिलाने को भी कहा।

लौटा तो नौ बज रहे थे, पर वह काफी खुश था। एक महीने बाद भी नौकरी के रह जाने की उम्मीद से ही जैसे उसने स्वयं को थोड़ा संपन्न महसूस किया और रास्ते से हफ्ते-भर के लिए नमकीन लइया लेता आया था, जिसे वह थोड़ा-सा रोज चाय के साथ लेता था। अलमारी में लइया का पैकेट रखते हुए उसे चाय की याद हो आयी। मुन्ना सो गया था, पत्नी बरतन धो रही थी। एक प्याला हल्की चाय बनाने को कहकर वह पुनः डेस्क पर आ जमा। वह संतुष्ट था, जाने पर भी मूड उखड़ा नहीं, कहानी स्वयं सुनिश्चित दिशा में बढ़ती जा रही थी।

पत्नी चाय का प्याला रख गयी। उसने कुछ पूछा, जिसका उत्तर हां-आं जैसा ही कुछ देकर वह लिखता रहा। दुबारा पूछना व्यर्थ समझकर पत्नी लौट गयी। थोड़ी-सी चाय कागज पर छलक गयी, जिस पर वह लिख रहा था; कागज और भी बदरंग नजर आने लगा था। वह हमेशा ऐसे ही खुरदरे बादामी कागजों पर लिखा करता था। साफ चिकने कागज पर मूड ही नहीं बनता था। फेयर करने के लिए आफिस से कागज लाकर लिखता या टाइप करता। उसे ध्यान आया, संपादक के नाम पत्र तो कम से कम अच्छे पैडनुमा कागज पर होना चाहिये—इस बार वह एक अच्छा पैड खरीद लेगा।

लगातार काफी देर तक घड़ी का घंटा टनटन बोलता रहा, तो समझ गया कि बारह बज रहे हैं। सामने दीवार से लगी चारपाई पर पत्नी थककर सो गयी थी। एक पुरानी पत्रिका उसके पेट पर औंधी पड़ी थी। थोड़े-थोड़े उलझे बाल उसके कंधों और गले पर बिखरे थे। शादी के बाद से काफी झड़ जाने के बाद भी उसकी चोटी काफी लंबी लग रही थी। पत्नी के शिथिल-क्लांत अंगों में, अस्तव्यस्त कपड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में उसे एक अजीब-सा आकर्षण खींच रहा था, एक अनकहा मोह व्याप रहा था।.....

वह डेस्क छोड़कर उठ गया, चुपचाप उसके करीब जाकर खड़ा हो गया, फिर धीरे-से उसकी अधखुली हथेलियों को छुआ। लगातार बरतन मलने के बाद भी हथेलियां उसी तरह कोमल लगीं, जैसे विवाह के तुरंत बाद थीं। उसे याद आया—जब पाणि-ग्रहण के समय उसने पहली बार उन हथे-लियों को अपने हाथों में लिया था, वे किस तरह धीमे-से कांपी थीं, जैसे नयी लहर के आने पर कमल की पंखुरियां! उसे झेंप-सी आयी। यह उपमा उसकी नहीं, किसी रीतिकालीन कवि की थी। फिर भी वह मुस्कराकर पलंग की ओर बढ़ गया।

० ० ०

इधर वह दिन-रात फाइलों के ढेर लगाये बैठा रहता। बराबर इस बात का ध्यान रखता कि वह स्मार्ट दिखाई पड़े। आवाज करने वाले जूतों में नये तल्ले लगवा लिये थे। पालिश करना भी नहीं भूलता। पत्नी समझती थी; इसीलिए हर दूसरे दिन उसकी सफेद कमीज और पैंट साफ कर, मांडी देकर इस्त्री करती और उन उजले कपड़ों में तेज कदमों से जब वह आफिस के लिए घर से निकलता, तो खिड़की से देखती रहती।

कितना शानदार है उसका पति..... अपने सभी सहकर्मियों से एकदम अलग दिखता है। .....वह मकान-मालिक तो समझता है कि उसका प्रोमोशन अवश्य हो गया है, इसलिए छिपाता है कि किराया न बढ़ जाये। तभी तो अक्सर पत्नी को लेकर सैर के लिए निकल पड़ता है।

एक दिन उसने अपने साहब को भी दिखाया था। कोशिश करके साहब के पास से गुजरा और 'गुड ईवनिंग सर' कहकर अपनी पत्नी का भी परिचय कराया। साहब के धीमे-से हाथ हिलाकर मुस्करा देने पर ही वह इतना कृतकृत्य महसूस कर रहा था कि पत्नी को थोड़ी खीज भी आयी; क्योंकि उसे तो साहब कुछ खास जंचे नहीं थे। लेकिन वह सारे रास्ते साहब, उनकी मिसेस, उनकी कार, बंगले और बच्चों की बातें ही बताता आया था। बच्चे कैसे फटाफट अंग्रेजी बोलते हैं—घर में कोई भी जाये तो 'प्लीज़' 'एक्सक्यूज़ मी' और 'सॉरी' के साथ बात करते हैं। पत्नी को कुछ खास रुचि न लेते देख उसे खीज-सी आयी थी। फिर उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसने यह भी जोड़ा कि कोई आश्चर्य नहीं अगर साहब की नजरों में जंचकर उसका छोटा-मोटा प्रोमोशन हो जाये, इस तरह तरक्की करता हुआ वह आगे बढ़ जाये।

पहले दिन बस से कंपनी गार्डन गये थे दोनों। पार्क में जाकर उसे अच्छा लगता है। कम से कम दुकानों, सड़कों, बाजारों से कहीं अच्छा। वह कुछ-कुछ रोमांटिक-सा हो जाता है और अनायास पत्नी से कुछ प्यार और रोमांस-भरी बातें करने लगता है। मुन्ना इधर-उधर भागता है, तो उसे 'कम आन्,' 'डोन्ट बी नॉटी' इत्यादि कहकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डांटता है। तभी उसकी दृष्टि मुन्ने के मटमैले कैनवास के जूतों की तरफ जाती है और उसे लगता है, पास से गुजरने वाले कुछ-कुछ मुस्करा रहे हैं। वह तत्क्षण निश्चय करता है कि इस बार तो पहले मुन्ने के जूते आयेंगे। तभी वह पत्नी की चप्पलों की ओर देखता है; पर वह तुरंत पैर साड़ी में छिपा लेती है। काफी देर तक वह चुपचाप यही सोचता रहता है कि इस महीने पत्नी की चप्पल खरीदना ज्यादा जरूरी है या मुन्ने का जूता।

लौटते समय फुटपाथ पर दोनों ने गोलगप्पे खाये। पत्नी देख रही थी कि कितना हुआ, तभी गोलगप्पे वाला दूसरा बढ़ा देता है। तो भी एक-डेढ़ रुपये हो ही गये। रात काफी हो चली थी। लौटते समय उसने कहा—'मेरा तो पेट भर गया, गोलगप्पे अच्छे थे। पर तुमने तो कुछ खाया ही नहीं। चलो, किसी होटल में चलते हैं।'

होटल के नाम से पत्नी के पैर में डंक लग गया।

'नहीं-नहीं, मैं तो अब बिलकुल नहीं खा सकती।'

'सच?'

'सच।'

'अच्छा चलो, तब बस-स्टाप चलें।'

वैसे वह जानता था कि पत्नी झूठ कह रही है और पत्नी जानती थी कि वह झूठ समझ गया है; पर यह कोई नयी बात नहीं थी। हमेशा ही दोनों एक दूसरे को समझे रहते हैं। किसी प्रकार की जिद या ठुनकने की गुंजाइश नहीं रहती। फिर भी वह हठपूर्वक कुछ खोखली औपचारिक जिदें करता है—खाने-पीने की, घूमने की या प्यार करने की। हर जिद में वह एक स्वाभाविक नाटकीयता अपने चेहरे पर लाता है; और पत्नी भी एक सिद्धहस्त कलाकार की तरह ही नकार देती है। पति की नाटकीयता को उसी रूप में अपने व्यक्तित्व पर ओढ़ लेती है। लेकिन वास्तविकता वही होती है—मैं समझ गया हूं—मैं जानती हूं।

उस दिन बस-स्टाप पर काफी देर रुकना पड़ा था। मुन्ना सो गया, रात का खाना बिना खाये ही वह मुन्ने को खाट पर सुलाकर सुस्ताने लगा। पत्नी ने रोटियां गर्म कीं। गर्म करते हुए वह कहती जा रही थी—'अच्छा ही हुआ जो हमने और कुछ नहीं खाया। देखो, रोटियां रखी हुई हैं। मुझे याद ही नहीं थी इनकी। आओ न, खराब करने से फायदा?.....'

रास्ते की दूरी ने गोलगप्पे पचा दिये थे। वह पूरे मनोयोग से खाने लगा। पत्नी बहुत धीरे-धीरे हाथ चला रही थी। सुबह की आलू-प्याज की सब्जी इस समय भी अच्छी लग रही थी। 'लो तुमने तो कुछ खाया ही नहीं, सारा मैं ही खा गया—और नहीं है क्या?' एकाएक झेंपकर उसने हाथ खींच लिया।

'अरे, अब तो मैं एक टुकड़ा भी नहीं खा सकती। मैं तो तुम्हारी वजह से बैठी थी। नहीं तो.....'

'सच?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल गुलमुहर के

धुलते हैं काजल जब
चांदनी नजर के,
उगते हैं आंखों में
फूल गुलमुहर के।
संदली हवाओं में
ऐसा क्या जादू है,
पल-भर में अंगनाई
महक-महक जाती है,
अलकों में बादल बंध जाते हैं,
पलकों पर मधुऋतु बस जाती है,
खुलते हैं जूड़े जब
बंदिनी लहर के,
उगते हैं आंखों में
फूल गुलमुहर के।
पैरों की आहट से
दूरियां सिमटती हैं,
सांसों की गंध नींद
तोड़-तोड़ जाती है,
सपनों का मौन मुखर होता है,
चांदनी गुनाह करा जाती है,
आते हैं पाहुन जब
अजनबी नगर के,
उगते हैं आंखों में
फूल गुलमुहर के।

—ज्योति प्रकाश सक्सेना
महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर, म. प्र.

'सच।'

वह उठकर हाथ धोने चला गया।

० ० ०

शाम को घूमने का क्रम उसी प्रकार चलता रहा। हां, कंपनी गार्डन जाने का सिलसिला दूसरे ही दिन समाप्त हो गया। बस-स्टाप तक पैदल आना, आध घंटे बस की भीड़-भाड़ और साठ-सत्तर पैसे किराये के एक तरफ के—कुल मिलाकर बचते-बचाते दो रुपये की चपत, थकावट ऊपर से। जाने कैसे, बड़े आदमी रोज-रोज घूमने-फिरने जाते हैं! कंपनी-गार्डन के बदले शाम को पास वाले नुक्कड़ के पार्क में चले जाते हैं। वहां कंपनी-गार्डन की तुलना में भीड़ भी कितनी कम रहती है! दोनों आराम से मुन्ने के साथ खेलते हैं और अंत में दस-दस पैसे की दो पुड़िया चनाचूर लेकर खाते चले आते हैं। न थकान, न खर्च।

० ० ०

कल उन्नीस थी न, आज बीस, और कल इक्कीस। वह सुबह कुछ जल्दी आफिस जाता, यानी इन टाइम; और शाम को काफी काम वहीं खत्म करके आध घंटे बस-स्टाप पर गुजारकर सात बजे तक लौटता—फिर भी चेहरे पर थकान न झलकती। उसी तरह गाने गुनगुनाता। लइया-चाय लेकर आराम करता। तब तक पत्नी मुन्ने को जूते पहना तैयार हो जाती। पत्नी भी उसे आजकल ज्यादा सुंदर लगने लगी है। बुरी उसे कभी नहीं लगी; पर इधर कुछ अजीब-सा 'चार्म' जुड़ गया है उसमें, या शायद उसकी दृष्टि ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदल गयी है।

पहले वह काफी रात गये तक बैल की तरह काम में जुटा रहता, कहानियाँ लिखता, फेयर करता और टिकटलगे लिफाफे पर अपना नाम-पता लिखकर कहानी के साथ पोस्ट करता। पंद्रह-बीस दिन बीतते न बीतते उसका वह नाम-पता लिखा लिफाफा लौट आता। पत्नी धीमे-से वह लिफाफा दो-तीन अन्य पत्रों के साथ डेस्क पर रख देती और आफिस से लौटने पर दूर से ही काम में व्यस्त-सी कह देती—'कुछ पत्र हैं—मैंने डेस्क पर रख दिये हैं।'

'कैसे? कहाँ से?' वह आकुल हो पूछता।

'मैंने देखे नहीं, मुन्ना रो रहा था। उसके बाद भूल गयी।'

पत्र देखने के बाद वह मुंह से जरा भी खीज या क्रोध प्रकट किये बिना आफिस का काम देखने लग जाता।

लेकिन इधर कितने दिनों से वह ऐसे हादसे से नहीं गुजरा। कोई लिफाफा वापस नहीं लौटा; क्योंकि उसे कहीं कहानी भेजने की फुरसत ही नहीं मिली। अब उसे समझ में आने लगा है कि बड़े अफसरों को क्यों फुरसत नहीं मिलती! लोग उन्हें व्यर्थ ही दोष देते हैं। जरा-सा एक डिपार्टमेंट का काम है, जिम्मेदारी से कर रहा है, तो उसे ही फुरसत नहीं कि कहानी 'फेयर' कर सके।

हां याद आया, उसने कई बार सोचा है कि साहब से इसका जिक्र किसी बहाने करे कि वह क्रिएटिव लेखक है। उसने कितनी ही कहानियां लिखी हैं, उपन्यास के भी प्लाट सोचे हैं। पर यही सोचकर चुप रह जाता है कि किसी कायदे की पत्रिका में एक-आध छप जाये, तो जिक्र भी करे, वरना.....

० ० ०

कभी-कभी उसे ऐसी बात सूझ जाती है कि वह मन ही मन स्वयं पर गर्व कर उठता है। एकदम से खयाल आया और बहुत सोचने के बाद उसने कैडबरीज चाकलेट का एक पैकेट ले ही लिया। साहब का तीन वर्षीय बच्चा बाबी लान में खेलता रहता है आया के साथ। उसे देखकर हाथ हिलाता है, तो एक विचित्र गर्वमिश्रित सुख का अनुभव होता है। आज जैसे ही उसने हाथ हिलाया, उसने पैकेट झट उसके हाथ में पकड़ा दिया। बच्चा खेलते-खेलते साहब के ड्राइंग-रूम में भी आता-जाता रहता है। आज जब आयेगा, तो उसके हाथ में चाकलेट का पैकेट देखकर साहब पूछेंगे ही कि किसने दिया और बच्चा उसकी ओर इशारा कर देगा। साहब समझ जायेंगे कि वह किसी अच्छे आधुनिक परिवार का है, तभी तो बच्चे को सस्ते लेमनज्यूस या लालीपाप के बदले कैडबरीज का पैकेट दिया।

लेकिन आज पूरे बीस मिनिट बैठे रहने पर भी बच्चा एक बार भी भीतर नहीं आया। वह बार-बार दरवाजे की ओर देखता कि शायद चाकलेट खाता-खाता वह ड्राइंग-रूम का परदा हटाकर झांक जाये, तो वह भी उसे धीमे-से चुटकी बजाकर बुला ले। पर वह स्साली आया जो है, आज टाइम से पांच मिनिट पहले ही दूध पिलाने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए लेकर चली गयी। आज पांच मिनिट बाद ही पी लेता, तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ता?.....

बहरहाल बच्चा नहीं आया और वह भारी कदमों से बाहर आ गया। पैडल पर पैर रखते-रखते उसने देखा, बच्चा अंदर से फिर आया की उंगली पकड़े बाहर आ रहा था और आया उसे देखकर मुस्करा रही थी.....स्साली खुद खा गयी हो तो आश्चर्य नहीं.....बच्चा तो बेहद भोला, गदबदा-सा है, कोई चीज हाथ से ले लो तो रोता नहीं। लेकर खा गयी होगी। .....और मन में एक टीस-सी उठी,.....दुकान पर जब वह खरीद रहा था तो बार-बार मुन्ने का चेहरा घूम जाता, मानो मुन्ना आशा-भरी आंखों से टकटकी लगाये उसे चाकलेट खरीदते देख रहा हो। मन हुआ एक पैकेट मुन्ने के लिए भी ले ले। जेब में पांच का नोट भी था। पर 'दो'.....कहते-कहते ही वह रुक गया और उसने मुन्ने के लिए बस दस पैसे की दो टाफियां ले लीं। महीने का वह आखिरी पांच रुपये का नोट था।

गेट पर आते-आते वह चौंक गया। एक रिक्शा अहाते में घुस रहा था, जिसमें तीन-चार बड़े पैकेटों के साथ जो आदमी बैठा था, वह उसे सेल्स-डिपार्टमेंट का गुप्ता-सा लगा। गुप्ता ने उसे या तो नहीं देखा, या न देखने का बहाना किया। अब सारे रास्ते चाकलेट से हटकर उसका मन इसी में उलझा रहा कि गुप्ता इन पैकेटों में क्या ले जा रहा था? इसका मतलब साहब को खुश.....हुंह, एक बार मन हुआ कहीं कोने में छिपकर चुपचाप देखे, साहब क्या कहते हैं। कहीं गुप्ता के बताने पर जोर से डपटकर सारे पैकेटों सहित उसे वापस भेज दें और गुप्ताजी मुंह लटकाये लौट पड़ें, तो मजा आ जाये। इस खयाल ने उसे थोड़ा खुश कर दिया।

० ० ०

रखे जाने वालों की लिस्ट लगातार तीन बार पढ़ने के बाद भी उसे यही लगा कि उससे कोई गलती हुई है—उसका नाम लिस्ट में अवश्य होगा.....अवश्य होना चाहिये। एक बार तो मन में आया, किसी और से पढ़वाकर पूछे, पर हंसी उड़ाने की बात होगी। हालांकि छंटनी वालों की संख्या रखे जाने वालों से तीन गुनी अधिक थी, पर उन पचीस-तीस नामों को ही बार-बार पढ़ते-पढ़ते गर्दन दुख गयी, तो वह आकर अपनी मेज पर बैठ गया। लिस्ट नोटिस-बोर्ड से उतरकर उसके दिमाग में टंगी थी अब; पर कोशिश करके भी वह उसमें अपना नाम नहीं ला पा रहा था।.....

एक बार उसने टेबल पर लगे फाइलों के अंबार को देखा, जिसे वह पिछले कुछ महीनों से हमेशा करीने से रखता-संवारता आया था। फिर अनायास हाथ माथे पर चला गया। माथे के बीच रोली के टीके का खुरदरापन उसकी हथेली को चुभ-सा गया।.... आज सुबह आंखें खुलने से पहले वह कितनी देर तक सोचता रहा कि किसका मुंह देखकर उठे—मन्नो का, मुन्ने का या दीवार पर टंगे गणेशजी वाले कैलेंडर का।.....आज सुबह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही मन्नो नहाकर पूजा कर रही थी। साफ शर्ट-पैंट पहन, जूतों में बची-खुची पालिश घिसकर वह दरवाजे से निकलने लगा, तो मन्नो ने हिचकते-हिचकते उसे वह पूजा की रोली वाला टीका लगा दिया।

उसे थोड़ा संकोच एवं शर्म महसूस हो रही थी। पर ना भी करते नहीं बन रहा था। वह जानता था कि उसके घर से निकलने के बाद कितनी ही देर तक मन्नो पूजा की जगह खड़ी उसकी नौकरी की प्रार्थना करती रहेगी.....और जब तक वह लौट नहीं आयेगा, उसकी बेचैनी चरम सीमा पर पहुंच चुकी रहेगी।.....अच्छा हुआ। आफिस पहुंचने से पहले, भगवान से डरते-डरते ही सही, उसने टीका हल्का कर लिया था। मन ही मन भगवान से क्षमा भी मांग ली थी। और अब? उसने जेब से रूमाल निकालकर पसीना पोंछा—बची-खुची रोली भी पूरी तरह पुंछ गयी।

चपरासी आया और एक रजिस्टर पर दस्तखत करा ले गया, जिसमें लिखा था कि उन सभी लोगों को जिनकी आज से काम से छंटनी हो गयी है, शाम चार से छह के बीच काउंटर पर तनख्वाह मिल जायेगी। चपरासी को देख उसे कुछ न सूझा तो व्यर्थ में फाइलों के अंबार ही उलटने-पलटने लगा था—जैसे बहुत व्यस्त हो। चला गया तो बड़ी राहत महसूस की। सामने नजर दौड़ायी तो वही बेगानी-सी लगने वाली मेज, अलमारी के टूटे शीशों से झांकती पुरानी फाइलें और मेज पर लगे ढेर.....

एकाएक उठा और साहब के कमरे की ओर बढ़ा। पूछने में क्या हर्ज है आखिर? इतना आश्वासन क्यों दिया था? इधर डेढ़ हफ्ते के अंदर ही क्या गलती हो गयी उससे? सब बात वह साफ-साफ पूछेगा—आखिर काट तो खायेंगे नहीं? और नहीं तो पत्नी-बच्चों की ही दशा का रोना रोयेगा। न समझे कोई उसे संपन्न घर का—भाड़ में जाये, अपने मतलब के लिए तो बहुत कुछ करना पड़ता है।.. .....

दरवाजे पर आकर ठिठक गया। साहब का फटकार-भरा स्वर कानों में पड़ा और ऐसा लगा, सुनने वाला बुरी तरह गिड़गिड़ा चुका था। एक बार हिम्मत पस्त हो गयी। लेकिन उसने दिल कड़ा किया। पूछे बिना जा भी तो नहीं सकता। आज के बाद फिर आना कहां है आफिस! ठीक है, गिड़गिड़ायेगा नहीं भलमनसाहत से पूछ लेगा बस—उनके कान में डाल देगा कि आपका आश्वासन झूठा रहा। और कौन जाने, लिस्ट में गलती ही रह गयी हो, साहब को याद आ जाये और उसका नाम लिस्ट में बढ़ जाये तो? उसकी हिम्मत बढ़ी।

चिक उठाकर अंदर गया। साहब लोगों से घिरे 'हां', 'नहीं' करते जा रहे थे। आठ-दस लोगों को निबटाकर साहब ने उसकी ओर नजर उठायी, तो वह तुरंत अदब से उनके पास खिसक गया। धीमी आवाज में अपनी बात वह कहता जा रहा था, और साहब नितांत अपरिचित-सी मुद्रा में उसका मुंह देखे जा रहे थे, जैसे कुछ समझने की कोशिश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर रहे हों। फिर दिमाग पर जोर डालकर कुछ याद करते हुए बोले–'ओह, यस! अब मुझे याद आया! सॉरी! मैं बिलकुल भूल गया था.....पर मैं कुछ नहीं कर सकता था।'.....

वह ठगा-सा खड़ा रह गया था। कितनी बड़ी बात कितने आसान तरीके से कह दी गयी थी!.....तभी उसे न जाते देख, साहब की तटस्थ-सी आवाज कानों में पड़ी–'आइ एम सॉरी, अब तुम जा सकते हो। कहीं और ट्राइ कर लो।'

० ० ०

काउंटर पर यद्यपि सभी छंटनी वाले थे; पर उसे लगता रहा, जैसे वह गलत जगह पर हो, जैसे भरी सभा में उसकी टोपी उछाल दी गयी हो और वह त्यक्त, निष्कासित और अपमानित-सा यहां खड़ा हुआ हो। काउंटर के पास आते-जाते तनख्वाह लेते लोगों में कुछ निहायत परेशान और दुःखी लग रहे थे, कुछ, एक-दूसरे से अपना रोना रो रहे थे, और कुछ बेफिक्र किस्म के नौजवान साथी की पीठ पर धौल जमाते कह रहे थे–'चल, आज कैंटीन में चाय-समोसे हो जायें, अब मुंह क्या बनाता है?.....एक साले ने नहीं सुनी, दूसरा सुनेगा, तीसरा सुनेगा।'..... पर उसे अपना चेहरा सबसे अलग लग रहा था, जिस पर आंख, नाक, कान सब कुछ गढ़े हों, पर जिनके होने का कोई एहसास न उसे हो रहा हो, न देखने वालों को–काठ का एक निष्पंद चेहरा।

घर लौटने के लिए साइकल पर पैर रखते ही एक जड़ता-सी महसूस हुई पैरों में। बेचैनी फिर उभर आयी–पत्नी और मुन्ना.... एकाएक उनसे दूर भाग जाने की इच्छा हुई, विशेषतः पत्नी का सामना उसे असह्य था। लाख समझाया अपने को कि मन्नो को तो बल्कि उससे भी कम ही उम्मीद थी रखे जाने की, जब-जब वह साहब के आश्वासन की बातें करता, वह उदासीन-भाव से कह देती–कर दें तो जानो.....

क्या हुआ! मन्नो उससे कोई अलग नहीं.. जो कुछ भी हार-जीत, सफलता-असफलता है, दोनों की है–फिर संकोच कैसा? शर्म और ग्लानि कैसी?.....ऐसा कि–बाटा के सामने से गुजरा और मन कुरेद उठा, इस महीने भी मन्नो की चप्पल नहीं आयी–इस महीने भी मुन्ने के जूते न आये–इस महीने भी वह अपने लिए बनियान न खरीद सका–इस महीने भी.....

सामने लेमन ड्राप्स की वही दुकान मिली- वह एकाएक झटके से उतरा और रौब के साथ दुकानदार से बोला–'दो पैकेट कैड्बरीज चाकलेट के और हां, पचास ग्राम नमकीन बिस्किट.....'

एक चाकलेट मुन्ने के लिए, एक उसके और मन्नो के लिए। घर पहुंचते ही मन्नो से गर्म चाय बनवायेगा और दोनों साथ बैठकर नमकीन बिस्किट के साथ.....

–द्वारा आर. के लाल फैक्ट्री इंजिनियर
ग्लैक्सो लैब, अलीगढ़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब जरा हंस लें?

जोज़ेफ आर्थर

बेबी की मम्मी को जोरों का जुकाम था। अतः रात को सोने से पूर्व उन्होंने थोड़ी-सी ब्रांडी पी ली। सोते समय बेबी ने मम्मी को गुड नाइट कह उनके गाल पर चुम्मी ली, फिर आश्चर्य से बोली—'अरे मम्मी क्या आज आपने भी डैडी जैसा ही सेंट लगाया है!'

० ० ०

शक्तिवर्धक टानिक आजमाने के बाद एक महिला ने उस दवा की निर्माता कंपनी को पत्र लिखकर इस प्रकार आभार प्रकट किया—'मेरा स्वास्थ्य बिलकुल गिर गया था। यहाँ तक कि अपने बच्चे को भी नहीं संभाल पाती थी। एक माह आपकी औषधि सेवन करने से मैं अब इस योग्य हो गयी हूं कि अपने पति से भी निपट लेती हूं। वास्तव में आपकी इस अच्छी दवा के लिए हम महिलाएं सदैव आभारी रहेंगी।'

० ० ०

घोर अहिंसावादी पिता के पास उसका बेटा एक छोटा-सा चाकू लेकर पहुँचा और कौतूहलवश पूछा—'पिताजी, बताइये यह क्या चीज है?'

पिता ने उसे समझाया—'बेटा, यह आरी का बच्चा है। अभी इसके दांत नहीं आये हैं।'

० ० ०

'क्या आपने कभी चार औरतों को चुप बैठे देखा है?'

उत्तर मिला—'हां, जब उनमें से किसी ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया हो कि हम चारों में किसकी उम्र सबसे अधिक है।'

कैसी पूरी? अजी साहब, मूंगफली, सरसों, तिल तथा बिनौले के मिक्सचर तेल में बनी ये काकटेल पूरियां हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किताब जुड़ गई...मुन्ना ख़ुश!

OBM-1683 HIN

किस सफ़ाई से हुआ ये काम--फ़ेविकोल से!

देखा आपने फ़ेविकोल का कमाल!

लगभग सभी जिल्दसाज़ फ़ेविकोल इस्तेमाल करते हैं। आप भी घरेलू इस्तेमाल के लिए फ़ेविकोल ला रखिए—ट्यूब या छोटा प्लास्टिक जार! पता नहीं कब ज़रूरत पड़ जाए।

कागज़ हो थर्मोकोल। लकड़ी हो या दूसरी कोई भी सतह। मतलब यें कि फ़ेविकोल सिन्थेटिक रेज़िन एड्हॅसिव सभी तरह की सतहों को जल्द और मज़बूत जोड़ता है... और हर बार, साफ़ और बढ़िया काम!

चिपकाने और जोड़ने के लिए सर्वोत्तम

फ़ेविकोल®

कारीगरों का कारगर एड्हॅसिव!

वितरक: पारेख एजेन्सीज़, पोस्ट-बॉक्स नं. ११०८४, बम्बई ४०० ०११
अहमदाबाद • कलकत्ता • दिल्ली • मद्रास • इन्दूर
निर्माता: पिडिलाइट इन्डस्ट्रीज़ प्रायवेट लिमिटेड, बम्बई ४०० ०११

फ़ेविकोल का ट्यूब या प्लास्टिक का डब्बा घर और ऑफ़िस में ज़रूर रखिए!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमतीजी अपनी एक सहेली को बता रही थीं–'अब मैं यह जान गयी हूं कि पति से किस तरह पैसा लिया जा सकता है।'

'वह कैसे?' सहेली ने उत्सुकता से पूछा।

'अब मैं उन्हें हर दूसरे दिन धमकी दे देती हूं कि मैं मायके जा रही हूं!'

'क्या तुम्हें रोकने को वे पैसा देते हैं?'

'नहीं, तुरंत जाने का किराया दे देते हैं!'

० ० ०

मां ने अपने सब बच्चों को इकट्ठा करके कहा–'जो प्रतिदिन सबसे अधिक आज्ञाकारी प्रमाणित होगा, उसे प्रत्येक सप्ताह के अंत में मेरी ओर से एक सुंदर-सा पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।'

दूसरे ही दिन सब बच्चों ने मिलकर एक साथ इस प्रस्ताव का विरोध किया। उनका कहना था कि हर बार यह इनाम पिताजी के अलावा किसी को नहीं मिलेगा।

० ० ०

कार-ड्राइविंग की ट्रेनिंग लेने वाले दो सज्जनों से एक प्रश्न पूछा गया–'मान लो, तुम कार चला रहे हो, पीछे की सीट पर तुम्हारी पत्नी बैठी है। अचानक कार एक दुर्घटना का शिकार हो जाती है। दरवाजा खुल जाता है और पत्नी गिर पड़ती है। ऐसे मौके पर तुम क्या करोगे?'

समानुपात

उत्तर मिले–'पहले मैं कार के पिछले हिस्से में उत्पन्न असंतुलन को दूर करने की कोशिश करूंगा, फिर कुछ सोचूंगा।'

'मैं कार की रफ्तार और तेज कर दूंगा।'

० ० ०

'क्या यह सही है कि चांद को घूरते रहने से आदमी पागल हो जाता है?'

'हां, हां, मेरा एक दोस्त पागल हो चुका है। पर वह धरती के चांद को घूरता था।'

—द्वारा, स्टेशन मास्टर, पो. झुकेही
सतना, म. प्र

*

इसी साल ४ जून को संसार में एक नया कीर्तिमान स्थापित हुआ है–बिना रुके-थमे (नानस्टाप) चुटकुले सुनाने का। इस कीर्तिमान के स्थापक हैं हास्य-अभिनेता केन डाड। उन्होंने लिवरपूल (ब्रिटेन) के रायल कोर्ट थियेटर में ३ घंटे, ७ मिनिट ३० सेकेंड तक चुटकुलों की झड़ी लगाये रखी। इस अरसे में उन्होंने पूरे २,००० चुटकुले सुना डाले।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयास

यह जरूरी तो नहीं
कि उदासियों का घेरा
हम तोड़ें ही नहीं।
बैठे-बैठे बुनते रहें
कल्पनाओं के जाले।
तारों को सराहें
और चांद के गीत गायें।
चलो, आज एक किरण
पकड़ें इन हाथों से
या सूर्य को ही
धर लें हथेलियों पर
चल पड़ें फिर
नये पड़ाव की ओर।

—केशवदेव मिश्र 'कमल'

आज फिर

आज फिर
जाने धूप को क्या हुआ ?
सुबह से शाम हो गयी
परंतु उसका रंग
पीला ही रहा।
दोपहर में
दूधियापन
महसूस नहीं हुआ।
शायद उगते सूरज को
आज फिर
आभास हो गया
मेरी अंतर्व्यथा का
एक वास्तविक कथा का।

—ओमप्रकाश गुप्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल पाठकों के लिए
रूसी लोककथा

मिस्त्री अब्दुल्ला

शिरवां का बादशाह अपना सारा समय गपशप और मौज-मस्ती में गवां दिया करता था। उसकी आदत थी कि जो भी अच्छी चीज किसी के पास देखता, उसे ले लेता था। यहाँ तक कि किसी को बढ़िया कपड़े या जूते पहने देखता, तो वह भी उससे उतरवा लेता था। जैसा वह था, वैसे ही उसके मंत्री और दरबारी थे।

एक बार बादशाह के मन में आया कि नया राजमहल बनवाया जाये। उसने बहुत बड़े मिस्त्री को बुलाकर वह काम सौंपा। मिस्त्री अपने राज और मजदूरों के साथ महल बनाने लगा।

जब महल आधा बन गया, तो बादशाह उसे देखने आया। महल उसे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने फौरन मिस्त्री का सिर कटवा दिया। इसके बाद सब मिस्त्री शिरवां से भाग गये। व्यर्थ में कौन अपनी जान गंवाना चाहता है! इस तरह महल अधूरा ही रहा।

फिर एक दिन तबरेज शहर से अब्दुल्ला नाम का मिस्त्री शिरवां में आया। उसे पता चला कि बादशाह का महल आधा ही बनकर रह गया है। वह बादशाह के दरबार में पहुंचा। बादशाह ने उससे पूछा—'तुम कौन हो, क्या चाहते हो?' मिस्त्री बोला—'मुझे अब्दुल्ला तबरेजी कहते हैं। मैं मिस्त्री हूं।'

'क्या तुम मेरा अधूरा महल पूरा कर सकते हो?' बादशाह ने पूछा।

अब्दुल्ला ने उत्तर दिया—'हां जहांपनाह! लेकिन मैं जो-जो आदमी मांगूं, वे मुझे काम करने के लिए दिये जायें।'

बादशाह ने कहा कि ऐसा ही होगा। तब मिस्त्री अब्दुल्ला ने बादशाह के जितने भी दुष्ट दरबारी थे, सबके नाम एक कागज पर लिख दिये और बादशाह से कहा कि ये आदमी मुझे काम करने के लिए चाहिये। बादशाह ने उन सबको अब्दुल्ला के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भेज दिया। अब्दुल्ला ने उन सबको गारा बनाने, ईंट उठाने आदि कामों में लगा दिया।

जब भी बादशाह महल को देखने आता, मिस्त्री अब्दुल्ला जोर-शोर से काम में लगा हुआ होता था। बादशाह बहुत खुश होता।

लेकिन बादशाह ने यह भी देखा कि मिस्त्री अब्दुल्ला तो रोज बहुत बढ़िया नये कपड़े और जूते पहनकर आता है। उसने अपने प्रधान-मंत्री से कहा कि मिस्त्री तो बहुत धनी मालूम पड़ता है, जरा पता तो लगवाओ। प्रधान-मंत्री ने मंत्री को कहा। मंत्री ने पता लगवाया और आकर बादशाह को बताया कि मिस्त्री अब्दुल्ला का तबरेज में बहुत बड़ा मकान है, उसके पास बहुत पैसा है, उसकी पत्नी बहुत सुंदर है। बादशाह के मन में लालच जागा कि किसी तरह ये चीजें हथियानी चाहिये। मंत्री ने कहा कि आप चिंता मत कीजिये, मैं सब कुछ ठीक कर दूंगा।

अगले दिन मंत्री बढ़िया घोड़े पर चढ़कर तबरेज शहर को चल पड़ा। वहां पहुंचकर उसने किसी से पूछा कि मिस्त्री अब्दुल्ला का घर कहां है। उत्तर मिला—'वह जो बड़ा-सा सफेद बंगला देखते हो, वह मिस्त्री अब्दुल्ला का मकान है।'

जब वह बंगले के सामने पहुंचा, मिस्त्री की बीवी दूसरी मंजिल पर खिड़की के पास खड़ी थी। मंत्री का चेहरा देखते ही वह जान गयी कि वह अच्छा आदमी नहीं है। तभी मंत्री बोला—'क्या मैं अंदर आ सकता हूं?' मिस्त्री की बीवी ने कहा—'जरूर!' मंत्री दरवाजा खोलकर जब अंदर आया, तो उसे सीढ़ियां दिखाई दीं। वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा—एक, दो, तीन, चार.....और ज्यों ही उसने पांचवीं सीढ़ी पर पांव रखा, मिस्त्री की बीवी ने एक बटन दबा दिया। फौरन वह सीढ़ी धंस गयी और मंत्री एक अंधेरे तहखाने में गिर पड़ा। ज्यों ही वह नीचे गिरा, तहखाने की दीवार में से दो सोंटे निकले और तड़ातड़ उसकी पिटाई करने लगे।

मंत्री ने कहा—'मुझे मारो मत, मुझे मारो मत!' इस पर सोंटों ने पूछा-'तुम्हें कोई काम भी करना आता है, या सिर्फ लोगों को लूटा करते हो।' मंत्री बोला कि मुझे जूते गांठना आता है। सोंटों ने कहा—'तो बैठो कोने में और जूते गांठो।' और उसके सामने चमड़ा, छुरी, सूई, धागा आदि डाल दिये। मंत्री जूते गांठने लगा। असल में मंत्री बनने से पहले भी वह यही काम किया करता था। रोज उसे सुबह-शाम एक सूखी रोटी और एक गिलास पानी मिलता था।

जब कई दिन हो गये और मंत्री वापस नहीं आया, तो बादशाह ने प्रधान-मंत्री से कहा कि अब तुम तबरेज जाकर पता लगवाओ।'

प्रधान-मंत्री बढ़िया घोड़े पर चढ़कर तबरेज पहुंचा और वहां किसी से उसने मिस्त्री अब्दुल्ला के घर का पता पूछा। उत्तर मिला—'वह जो बड़ा-सा सफेद बंगला है, वही मिस्त्री अब्दुल्ला का घर है।'

प्रधान-मंत्री जब उस घर के सामने पहुंचा, मिस्त्री की बीवी दूसरी मंजिल पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिड़की के पास खड़ी हुई थी। प्रधान-मंत्री का मुंह देखते ही वह समझ गयी कि यह आदमी अच्छा नहीं है। तभी प्रधान-मंत्री ने उससे पूछा कि क्या मैं अंदर आ सकता हूं? वह बोली कि बड़ी खुशी से आइये।

प्रधान-मंत्री दरवाजा खोलकर जब अंदर आया, उसे सीढ़ियां दिखाई दीं। वह सीढ़ियां चढ़ने लगा—एक, दो, तीन, चार..... और ज्यों ही उसने पांचवीं सीढ़ी पर पांव रखा, सीढ़ी धंस गयी और प्रधान-मंत्री नीचे गिर पड़ा। उसके गिरते ही दीवार में से निकलकर दो सोंटे तड़ातड़ उसकी पीठ पर पड़ने लगे।

प्रधान-मंत्री ने कहा—'मुझे मारो मत, मुझे मारो मत!' सोंटों ने उससे पूछा कि तुझे लोगों को सताने के सिवा भी कोई काम आता है। प्रधान-मंत्री बोला कि मुझे कपड़े सीना आता है। (असल में प्रधान-मंत्री बनने से पहले वह यही काम किया करता था।) सोंटों ने उसके सामने सूई-धागा और कपड़ा डालकर कहा कि उस कोने में बैठकर कपड़े सी।

जब प्रधान-मंत्री उस कोने में पहुंचा, मंत्री बोल उठा—'अरे प्रधान-मंत्रीजी, आप यहां आ गये!' प्रधान-मंत्री बोला—'मंत्रीजी आप यहां!' फिर दोनों बैठकर अपना-अपना काम करने लगे। मंत्री जूते गांठता, प्रधान-मंत्री कपड़े सीता। दोनों को सुबह-शाम एक-एक सूखी रोटी मिलती और एक-एक गिलास पानी। कई दिन बीत गये।

उधर बादशाह ने देखा कि प्रधान-मंत्री को गये बहुत दिन हो गये और कोई खबर भी नहीं आयी। वह खुद अपने सुंदर सफेद घोड़े पर चढ़कर तबरेज की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर उसने किसी से मिस्त्री अब्दुल्ला के घर का पता पूछा। उस आदमी ने बताया कि वह जो बड़ा-सा सफेद बंगला है, वही मिस्त्री का घर है।

बादशाह जब उस घर के सामने पहुंचा। मिस्त्री की बीवी दूसरी मंजिल पर खिड़की के पास खड़ी थी। बादशाह को देखते ही वह समझ गयी कि यह अच्छा आदमी नहीं है। तभी बादशाह ने उससे पूछा कि क्या मैं अंदर आ सकता हूं? वह बोली कि बड़ी खुशी से आइये।

बादशाह दरवाजा खोलकर जब अंदर आया, तो सामने सीढ़ियां दिखाई दीं। वह उन पर चढ़ने लगा—एक, दो, तीन, चार.... और ज्यों ही उसने पांचवीं सीढ़ी पर पांव रखा, मिस्त्री की बीवी ने एक बटन दबाया और सीढ़ी धंस गयी और बादशाह नीचे अंधेरे तहखाने में गिर पड़ा।

उसके नीचे गिरते ही दीवार में से दो सोंटे निकले और तड़ातड़ बादशाह की पीठ पर बरसने लगे। बादशाह गिड़गिड़ाया—'मुझे मारो मत!' मुझे मारो मत!' इस पर सोंटों ने उससे पूछा कि तुझे लोगों को सताने के सिवा भी कोई काम आता है? बादशाह बोला कि मैं शतरंजी बुन सकता हूं। (असल में वह पहले यही काम किया करता था और असली बादशाह को मारकर चालाकी से बादशाह बन गया था।) सोंटों ने उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने बहुत-सा सूत डालकर कहा—'जाओ उस कोने में बैठकर शतरंजियां बुनो।'

जब बादशाह उस कोने में पहुंचा, तो मंत्री और प्रधान-मंत्री दोनों एक साथ चिल्ला उठे—'बादशाह, आप यहां आ गये!' बादशाह भी बोला—'अरे! तुम लोग यहां!' फिर तीनों बैठकर अपना-अपना काम करने लगे—मंत्री जूते गांठता, प्रधान-मंत्री कपड़े सीता और बादशाह शतरंजियां बुनता। तीनों को सुबह-शाम एक-एक सूखी रोटी और एक-एक लोटा पानी मिलता।

उधर तबरेज में बादशाह का महल पूरा बन गया, तो मिस्त्री अब्दुल्ला बादशाह को इसकी खबर देने के लिए दरबार में गया। मगर वहां तो न बादशाह था, न प्रधान-मंत्री था, न मंत्री था। इस पर मिस्त्री अब्दुल्ला ने सोचा कि मैं तो अपना काम कर चुका हूं, मैं अब यहां क्यों रहूं और वह तबरेज की ओर चल पड़ा। घर पहुंचकर उसकी बीवी ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया, फिर उसे बताया कि दुष्ट-से दिखाई देने वाले तीन आदमी आये थे, मैंने उन्हें तहखाने में बंद कर रखा है।

मिस्त्री अब्दुल्ला तहखाने में पहुंचा। वहां उसके पहुंचते ही तीन आदमी एक साथ चिल्ला पड़े—'मिस्त्रीजी, मिस्त्रीजी, किसी तरह हमें यहां से छुड़वाइये।'

मिस्त्री ने पास जाकर देखा तो वे तीनों आदमी बादशाह, प्रधान-मंत्री और मंत्री थे। उसने कहा कि तुम तीनों प्रतिज्ञा करो कि अब से किसी के कपड़े-जूते नहीं छीनेंगे, किसी को नहीं सतायेंगे, सही ढंग से राज्य चलायेंगे, तो तुम्हें छोड़ा जायेगा।'

तीनों ने प्रतिज्ञा की कि अब से हम किसी को सतायेंगे नहीं और सही ढंग से राज्य करेंगे। तब अब्दुल्ला ने उन्हें तहखाने से बाहर लाकर खिलाया-पिलाया और उन्हें उनके शहर शिरवां लौट जाने दिया।

❀

रूस थियानशान पहाड़ों में बहने वाली नारिन नदी पर ३०० मीटर ऊँचा और ३ किलोमीटर लंबा बांध 'मिनिटों में' बांध देने की तैयारी कर रहा है। योजना यह है कि एक सुनियोजित शृंखला में ५ लाख टन विस्फोटक फोड़े जायेंगे, जिनका धमाका १९४५ में हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु-बम से २५ गुना जोरदार होगा। इस विस्फोट से ५० करोड़ घन मीटर पत्थर हवा में उछलेंगे और उनमें से अंदाजन आधे पत्थर नदी के पाट पर बांध की शक्ल में गिरेंगे। वर्षों में हो सकने वाला काम मिनिटों में हो जायेगा।

रूसी विज्ञानियों ने ऐसा 'चटपट बांध' सबसे पहले १९६६ में बांधा था। उन्होंने ५,३००० टन विस्फोटक फोड़कर ५० मीटर ऊँचा एक बांध बांधा, ताकि आलमा अता नगर को धूल और मिट्टी के प्रवाह से बचाया जा सके। नारिन पर बांध बांधने से पूर्व उसकी एक सहायक नदी बलिकी पर ३० मीटर ऊंचा ३०० मीटर लंबा बांध इसी विधि से बांधेगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिंकन
कुछ प्रसंग

अक्सर सैनिकों से लिंकन को प्रार्थना-पत्र मिला करते थे, जिनमें किसी न किसी अपराध के क्षमा किये जाने की अपील होती थी। हर प्रार्थनापत्र के साथ किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का सिफारिशी खत होता था।

एक दिन एक सैनिक का ऐसा प्रार्थना-पत्र आया, जिसके साथ किसी का सिफारिशी खत नहीं था।

'क्या कोई भी बड़ा आदमी इस सैनिक का दोस्त नहीं है, जो इसकी सिफारिश कर सके?' लिंकन ने अपने एक कर्मचारी से पूछा।

'शायद न हो।' कर्मचारी ने कहा।

लिंकन भावनापूर्वक बोले—'तो वह मुझे अपना दोस्त समझे। मैं उसकी सिफारिश करता हूं।

० ० ०

गृहयुद्ध की जाँच-पड़ताल करने के लिए बैठायी गयी समिति ने जब लिंकन की सख्त आलोचना की, तो एक अफसर ने उन्हें सलाह दी कि आप किसी अखबार को पत्र लिखकर पूरी असलियत लोगों के के सामने रखें।

लिंकन ने सलाह को अस्वीकार करते हुए कहा—'अगर मैं हर किसी के आक्षेपों का जवाब देने लगूं, तो दूसरे कामों के लिए मेरे पास बहुत कम समय रह जायेगा। मैं जिसे ठीक समझता हूं, पूरी ईमानदारी के साथ करता हूं। अगर अंत में मेरे कामों का नतीजा सही निकला, तो आज मेरे बारे में जो कुछ कहा जा रहा है, उसकी कोई कीमत नहीं रह जायेगी। और अगर अंत में नतीजा सही नहीं निकला, और मैं गलत साबित हुआ, तो आज मैं चाहे कितनी भी सफाई पेश करूं, वह झूठ ही समझी जायेगी।'

० ० ०

लिंकन अपने विरोधियों के बारे में भी बहुत ही मृदुता से बोलते 'और पेश आते थे। एक बार किसी ने उनसे कहा—'आप अपने दुश्मनों तक से दोस्तों की तरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेश आते हैं, जबकि आपको उन्हें खत्म कर देना चाहिये।'

'क्या मैं उन्हें अपना दोस्त बनाकर दुश्मनों को खत्म नहीं कर देता।' लिंकन ने मुस्कराकर कहा।

० ० ०

चुनाव के दिनों में लिंकन और उनका प्रतिद्वंद्वी एक ही गाड़ी में बैठकर किसी बहस में भाग लेने के लिए जा रहे थे। गाड़ी लिंकन के प्रतिद्वंद्वी की थी। एक जगह उन दोनों को किसानों के एक समूह के सामने बोलना पड़ा।

भाषण में लिंकन ने कहा—'मैं इतना गरीब हूं कि खुद की गाड़ी नहीं रख सकता। पर ये मेरे दोस्त इतने मेहरबान हैं कि मुझे अपनी गाड़ी में बैठाकर लाये हैं। अगर आप मुझे वोट देना चाहें, तो मेरे इन दोस्त को वोट दीजिये; क्योंकि ये अच्छे आदमी हैं।'

० ० ०

जिन दिनों लिंकन वकालत करते थे, एक आदमी ऐसे एक मामले में उन्हें अपना वकील बनाने के लिए आया, जिसे लिंकन सच्चा नहीं समझते थे। कुछ देर तक उसकी बातें सुनने के बाद उन्होंने कहा—'काननी नुक्ते से आपका मुकद्दमा जीता जा सकता है; लेकिन सचाई के नुक्ते से नहीं जीता जा सकता। आपको मेरे बजाय कोई और वकील करना चाहिये; क्योंकि अगर मैं यह मुकद्दमा अपने हाथ लूंगा, तो अदालत में बोलते हुए यह बात मेरे मन में आये बिना न रहेगी कि लिंकन, तुम झूठ बोल रहे हो! और संभव है कि यही बात मैं ऊंची आवाज में बोल भी जाऊं।'

० ० ०

जमीन के मामले में एक किसान का अपने पड़ोसी से झगड़ा हो गया और वह लिंकन को अपना वकील बनाने के लिए उनके पास आया। लिंकन ने उसकी बातें सुनकर कहा—'अगर यह झगड़ा बढ़ता गया, तो तुम दोनों की दुश्मनी कई पीढ़ियों तक चलती रहेगी। दूसरा किसान भी मेरे पास आया था और चाहता था कि उसकी ओर से मुकद्दमा लड़ूं। बेहतर यह हो कि तुम दोनों यहां मेरे दफ्तर में आओ, ताकि तुममें सुलह-समझौता हो जाये।'

किसान मान गया। लिंकन ने दूसरे किसान को भी बुलवा भेजा और जब वह आ गया, तो दोनों को अपने सामने बैठाकर बोले—'मैं खाना खाने घर जा रहा हूं। मेरे आने तक दोनों आपस में फैसला कर लो। मैं बाहर से ताला लगाये जाता हूं, ताकि कोई आकर तुम्हारी बातचीत में किसी प्रकार की खलल न डाले।'

लिंकन बाहर से ताला लगाकर चले गये। अपने को कमरे में बंद पाकर दोनों किसान हंसने लगे। लिंकन के लौटने तक उनमें समझौता हो चुका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बटन की कहानी

लड़की ने सुघड़ता के साथ एक और बटन धागे में पिरोया और गिनने लगी कि अब धागे में कितने बटन हो गये। पिछले एक साल से वह बटन इकट्ठे कर रही थी; मगर बहुत कोशिश के बाद भी एक हजार बटन जुटा नहीं पायी थी। उसने सुना था कि अगर वह एक हजार बटन जमा करके रख ले, तो उसके मन-मंदिर का देवता आकर उससे विवाह कर लेगा।

विक्टोरियन युग की लड़कियों में यह बड़ी आम धारणा थी। दोस्त और रिश्तेदार अपने उपयोग किये हुए बटन लड़कियों को दे दिया करते थे, ताकि उनके पास एक हजार सुंदर बटन जल्दी इकट्ठे हो जायें।

कहते हैं कि बटनों का इतिहास तीन हजार वर्ष पुराना है। एक युग था कि जब केवल धनी लोग अपने कपड़ों पर बटन लगाया करते थे। महारानी एलिजाबेथ प्रथम को तो बटनों का इतना शौक था कि वह सोने के गहने पिघलवाकर बटन बनवाया करती थी। स्काटलैंड की रानी मेरी के पास ऐसे ४०० बटन थे जिन पर हीरे-जवाहरात जड़े थे। हर बटन के मध्य में एक लाल था। ड्यूक आफ बकिंग्हम के बटन हीरों के होते थे, और वे कपड़ों पर इस तरह टंके होते थे कि बार-बार टूटकर गिर जाते। फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें ने छह बटनों के एक सेट की कीमत २२ हजार पौंड चुकायी थी।

अमरीका में बटन इकट्ठे करने का शौक तीसरा बड़ा शौक समझा जाता है। महिलाओं में यह विशेष लोकप्रिय है। कुछ समय पूर्व एक कुलीन फ्रांसीसी सामंत के निधन पर उसके बटन नीलाम किये गये, जिनका मूल्य ६,६७३ पौंड था। एक अमरीकी फर्म ने इन्हें दुगुने मूल्य पर खरीद लिया।

दूसरे महायुद्ध में ऐसे बटनों का आविष्कार किया गया था, जो ब्लैक-आउट में चमकते थे; पर जाने क्यों वे लोकप्रिय न हो सके।

हड्डी से लेकर लकड़ी तक अनेक चीजों के बटन बनाये जाते हैं। इन दिनों प्लास्टिक के बटनों का अधिक प्रचलन है। एक बटन-विशेषज्ञ का कहना है कि औसत आदमी अपने जीवनकाल में एक ग्रुस बटन तोड़ता है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाहिद अब्बास अब्बासी

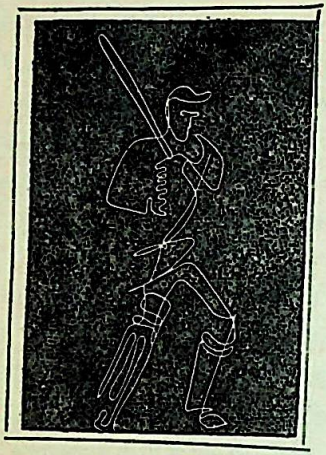

मांकड
कीर्तिमानों का मेरु-पर्वत

क्रिकेट का कोई संदर्भ-ग्रंथ उठाकर आल-राउंडर खिलाड़ियों के आँकड़ों पर आप नजर दौड़ायें। सबसे पहले आपको यह शीर्षक दिखाई देगा—'खिलाड़ी, जिन्होंने (टेस्ट मैचों में) १,००० या उससे अधिक रन बनाये तथा १०० या उससे अधिक विकेट लिये।'

इस शीर्षक के नीचे आपको कुल पंद्रह-बीस नाम मिलेंगे—गैरी सोबर्स, फ्रेड टिटमस, रिची बेनो, कीथ मिलर जैसे चोटी के खिलाड़ियों के नाम। इनमें ही एक भारतीय का नाम भी आप पायेंगे और शायद उसका नाम सबसे ऊपर ही हो; क्योंकि रनों और विकेटों के 'द्वय' की मंजिल इस खिलाड़ी ने अपने जीवन के तेईसवें टेस्ट मैच में ही सर कर ली थी। द्वय (डबल) पर कब्जा जमाने के लिए इस खिलाड़ी को सबसे कम टेस्ट मैचों की जरूरत पड़ी थी।

शायद संदर्भ-ग्रंथों में ऐसा कुछ लिखा होगा—'२,१०९ रन और १६२ विकेट, वीनू मांकड द्वारा ४४ टेस्ट मैचों में (द्वय प्राप्त किया २३ टेस्टों में)।' हां, वीनू के बाद आस्ट्रेलिया के पुराने खिलाड़ी नोबिल का नंबर आता है—द्वय पूरा करने के लिए २७ टेस्ट। फिर क्रम चलता रहता है—आस्ट्रेलिया के गिफेन (३० टेस्ट), कीथ मिलर, रिची बेनो.....

अगर थोड़ी देर के लिए हम आंकड़ों को ही किसी के खेल की कसौटी मान लें, तो वीनू मांकड विश्व के अब तक के सर्वश्रेष्ठ आलराउंडर सिद्ध होंगे।

स्वर्गीय सी. के. नायडू ने टेस्ट और इतर मैचों में दूसरों की तुलना में बहुत कम रन बनाये और विकेट लिये; मगर अपनी मौलिक और कलात्मक शैली के लिए वे हमेशा याद किये जायेंगे। आंकड़ों से हटकर क्या कोई ऐसी विशेषता मांकड के खेल में भी थी? हां, घोर संघर्ष-शक्ति, अदम्य उत्साह और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपराजेय मनोवल।

मांकड अपने से कहीं अधिक शक्तिशाली टीमों यानी आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और वेस्ट इंडीज की टीमों से लोहा लिया करते थे। वल्लेवाजी करते समय उन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ गोलंदाजों का सामना करना पड़ता था, तो गोलंदाजी करते समय शीर्षस्थ वल्लेवाजों का। मांकड इन दोनों मुहिमों को सर करने वाले नायकों की भूमिका निभाते थे। यही कारण था कि वे पहले २३ टेस्ट मैचों में १,००० से अधिक रन वना चुके थे और १०० विकेट ले चुके थे।

जैसा कि स्वयं मांकड ने ही कहा था—'मजवूत नींव पर कड़ी मेहनत करके (सफलता की) यह इमारत तैयार हुई है।'

क्रिकेट के प्रति आकर्षण वीनू को विरासत में नहीं मिला था। पिता डाक्टर थे और चाहते थे कि आगे चलकर पुत्र उनका कामकाज संभाले। मगर किशोर वीनू ने गंधक और तेजाव की गंध से भरी डिस्पेंसरी के वजाय दर्शकों से घिरे मैदानों को अपना कार्यक्षेत्र वनाने का निश्चय किया। हां, पैतृक संस्कार के रूप में उन्हें डाक्टर की-सी दृष्टि जरूर मिली। सामना करने वाले वोलर या वैट्समैन की 'दुखती रग' को वे वड़ी कुशलता से पकड़ते थे, मगर उस पर वजाय मरहम लगाने के 'नश्तर' चला दिया करते थे।

किशोर वीनू गेंद को चक्कर (स्पिन) देने के वजाय तेजी देना पसंद करता था। तेज गेंदवाज के रूप में ही उसने राजकोट के अल्फ्रेड हाईस्कूल की ओर से एक फाइनल मैच में पंद्रह हमजोलियों को पैवेलियन का रास्ता दिखाया था। अपनी रियासत में पनप रहे इस फूल की खुशवू नवानगर के स्वर्गीय जामसाहव तक पहुंची, तो उन्होंने इसे संरक्षण देने का निश्चय कर लिया। उन्होंने सोचा होगा कि रणजी और दिलीप की तरह शायद यह फूल भी नवानगर के नाम को महका दे।

वीनू को विश्वयुद्ध-पूर्व के प्रसिद्ध खिलाड़ी एस. एम. एच. कोलाह की देख-रेख में रखा गया। सन १९३६ में प्रशिक्षक वर्ट वेन्सली नवानगर आये। उन्होंने कहा—'वीनू, अलल-टप्प फेंकी गयी गेंद और आंख मीचकर दागी गयी गोली में कोई खास फर्क नहीं होता। दोनों भाग्य से ही निशाने पर लगती हैं।' वेन्सली साहव ने उसे धीमी मगर सधी हुई गेंदवाजी करने की हिदायत दी। वीनू अगले छह महीनों तक 'एक सांस' से धीमी चक्करदार गेंदवाजी का निरंतर अभ्यास करता रहा।

प्रशिक्षण का पहला दौर पूरा हुआ। वीनू मांकड गेंद की गति, 'स्पिन' और 'उड़ान' के मामलों के स्नातक वनकर निकले। अव उन्हें विपक्षी दलों से जूझकर अपनी कला को निखारना था और उस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना था।

जैसे वेन्सली महोदय ने मांकड को तराशकर एक होनहार गेंदबाज का रूप दिया, वैसे ही महान वल्लेवाज दिलीपसिंहजी ने उनमें एक चित्ताकर्षक वल्लेवाज के नुक्तों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SISTA'S-INC-460 HN

इन्क्रिमिन*

बढ़ते बचपन का साथी

ये छलकता बचपन...ये हंसते-खेलते तंदरुस्त बच्चे! इन दिनों जब इनका शरीर दिन दुगनी रात चौगुनी गति से बढ़ता और विकसित होता है, इन्हें इन्क्रिमिन ड्राप्स जरूर दीजिये। लाभदायक विटामिन और आवश्यक अमीनो एसिड युक्त इन्क्रिमिन ड्राप्स, २ महीने से २ साल तक के बढ़ते बच्चों के लिये खासतौर से बनाये गये है।

बढ़ते बच्चों के लिये वरदान

* अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को उभारा और संवारा। फिर तो हिम्मतराय बलवंतराय उर्फ वीनू मांकड नाम के बीस वर्षीय तरुण को अपनी क्षमता का एहसास संपूर्ण क्रिकेट-जगत को कराने में अधिक देर नहीं लगी।

सन १९३७-३८ में नवानगर स्टेट की ओर से लार्ड टेनिसन (कवि टेनिसन के प्रपौत्र) की टीम के विरुद्ध खेलकर वेलार्ड, पोप तथा स्मिथ जैसे मंजे हुए गेंदबाजों का सामना करते हुए उन्होंने अमूल्य ८८ रन बनाये और प्रसिद्धि की ओर ऊंची छलांग लगायी।

फिर तो वे भारतीय क्रिकेट के 'सीजन' में रणजी ट्रोफी एवं अन्य घरेलू मैचों में खेलते और उसके बाद पेशेवर खिलाड़ी के रूप में लंकाशायर और सेंट्रल लंकाशायर लीगों में भाग लेने के लिए इंग्लैंड की ओर प्रस्थान कर देते।

सन १९४६ में वीनू ने भारतीय क्रिकेट-टीम के साथ इंग्लैंड का दौरा किया। इससे पहले १९४५ में वे केवल एक बार देश के बाहर खेलने गये थे—सीलोन। इस दौरे का पहला मैच परंपरानुसार वारसेस्टरशायर के विरुद्ध हुआ था। इसी में वीनू ने अपनी पराक्रम-गाथाओं की फुलझड़ी सही मानी में प्रज्ज्वलित की। इस मैच में उन्होंने १०० रन देकर ८ विकेट लिये और १९२ रनों की पहली पारी में २३ मूल्यवान रन बनाये। दौरा समाप्त होने तक वे १,१२९ रन बना चुके थे और १२९ विकेट ले चुके थे।

इन आंकड़ों का मूल्य इससे आंका जा सकता है कि १९४६ के इस इंग्लिश सीजन में द्वय तक पहुंचने वाले केवल दो व्यक्ति थे—वीनू मांकड और होवर्थ। वीनू के बाद सर्वाधिक सफलता पाने वाले बोलर हजारे और अमरनाथ को केवल ५६-५६ विकेट मिले थे। वीनू से अधिक रन बनाने वाले भी केवल तीन थे—मर्चेंट, हजारे और मोदी।

दिलचस्प बात यह है कि वीनू के पहले या वीनू के बाद कोई भी भारतीय इंग्लैंड के दौरे में १२९ से अधिक विकेट नहीं ले पाया। सन १९४६ में यह कीर्तिमान स्थापित करने के बाद वीनू ने कीर्तिमानों का एक लंबा सिलसिला कायम कर दिया। १९५१-५२ में एम. सी. सी. की टीम भारत आयी। पांचवें और अंतिम टेस्ट में वीनू ने पहली पारी में ५५ रन देकर ८ विकेट और दूसरी पारी में ५३ रन देकर ४ विकेट लिये और इस तरह 'एक पारी में अधिकतम विकेट (८)' लेने का कीर्तिमान स्थापित करने के साथ भारत को जिताने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका भी अदा की। यह कीर्तिमान १९५८ तक कायम रहा।

उनके कुछ कीर्तिमान तो आज भी कायम हैं। उदाहरणार्थ, न्यूजीलैंड के विरुद्ध १९५६ के मद्रास टेस्ट में बनाये गये २३१ रन किसी भी भारतीय बल्लेबाज का उच्चतम टेस्ट-स्कोर है। इस स्कोर तक पहुंचने की प्रक्रिया में वीनू ने एक और रेकार्ड स्थापित किया। उन्होंने पंकज राय (१७३ रन) के साथ पहले विकेट की साझेदारी से ४१३ रन जोड़े, जो एक विश्व-रेकार्ड है। भारत में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीनू मांकड

२,००० रन तथा १५० विकेटों के द्वय का रेकार्ड भी उन्हीं का है। उनके जितने विकेट (१६९) लेने का पराक्रम भी अभी तक किसी भारतीय गेंदवाज ने नहीं किया है।

क्षेत्ररक्षण ? वीनू बड़े ही कुशल क्षेत्ररक्षक समझे जाते थे। किसी समीक्षक ने एक बार विनोदपूर्वक लिखा था—'स्टेट बैंक आफ इंडिया के लाकर को छोड़कर वीनू की हथेलियों से ज्यादा सुरक्षित स्थान शायद ही कोई हो।' वे 'स्लिप' या 'शार्ट लेग' की स्थिति में खड़े होकर बल्लेबाज की हरकतों का निरीक्षण करते थे और उसकी जरा-सी चूक पर 'कैच' पकड़ लेते थे। टेस्ट मैचों में सर्वाधिक (३३) कैच का भारतीय रेकार्ड भी वीनू मांकड का ही है। बाद में उमरीगर ५९ टेस्ट मैच खेलकर उस रेकार्ड तक पहुंच पाये।

आज भी वीनू अकेले भारतीय हैं, जिन्होंने टेस्ट मैचों में दो बार द्विशतक (डबल सेंचुरी) बनाये। ये दोनों द्विशतक (२२३ और २३१) सन १९५६ में भारत-भ्रमण करने वाली न्यूजीलैंड की टीम के गेंदबाजों को ठोंक-पीटकर प्राप्त किये गये थे।

भारतीय क्रिकेट (और विश्व-क्रिकेट) को वीनू मांकड के योगदान की सबसे शानदार मिसाल है १९५२ कालार्ड्स के मैदान में खेलागया टेस्ट मैच। इस पंच दिवसीय मैच में हर तरफ मांकड का ही नाम सुनाई देता था। इस मैच में पहला दांव भारत ने खेला और कुल २३५ रन बनाये (अधिकतम रनसंख्या, मांकड : ७२)। जवाब में इंग्लैंड ने ५३७ का जबर्दस्त स्कोर खड़ा कर दिया (वीनू मांकड : १९६ रन देकर ५ विकेट)। भारतीय इस बार संभलकर खेले और ३७८ रन बटोर ले गये (अधिकतम स्कोर मांकड : १८४)। मांकड अब तक कुल २५६ रन बना चुके थे और ७३ ओवर फेंक चुके थे। मगर उन्होंने थकने का नाम नहीं लिया। विजय के लिए इंग्लैंड को जो थोड़े-बहुत रन बनाने थे, वे मांकड की धुआंधार गेंदबाजी के सामने बड़ी मुश्किल से बनाये जा सके।

वीनू मांकड की महान सफलता का रहस्य क्या है ?....कर्मनिष्ठा और अपनी त्रुटियों को जानने व दूर करने की तत्परता। इसमें वे विपक्षी की सहायता लेने में भी नहीं चूकते थे। इस संदर्भ में आस्ट्रेलिया के सुप्रसिद्ध तेज गेंदबाज रे लिंडवाल का एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्मरण याद आता है।

भारत-विभाजन के तुरंत बाद १९४७ में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर थी। तीसरे टेस्ट मैच के दिन थे। प्रथम दिन के खेल के बाद एक काकटेल पार्टी में वीनू मांकड का लिंडवाल से सामना हुआ। दोनों बतियाने लगे। अचानक वीनू पूछ बैठे—'क्या तुम बता सकते हो कि मैं ऐसी क्या गलती करता हूं कि पिछली छह पारियों से लगातार क्लीन बोल्ड हो रहा हूं।'

लिंडवाल ने साफ शब्दों में अपनी राय जाहिर की—'तुम शाट मारने के पहले बल्ला जरा ज्यादा ही तानते हो और जब तक बल्ला आगे पहुंचे, गेंद पीछे स्टंप से जा भिड़ती है।' लिंडवाल ने यह भी बताया कि ठीक बायें पैर के पास टिप्पा खाने वाली गेंद को खेलने में भी वीनू को जो क्षणांश की देरी हो जाती है, वह गेंद को सहन नहीं होती।

वीनू ने ध्यान से ये बातें सुनीं, सच्चे दिल से धन्यवाद दिया और अगले दिन ११६ रन बनाये। खेल के दौरान भी जब-तब वे लिंडवाल की सलाह लेते रहे और पूछकर इत्मीनान करते रहे—'सब कुछ ठीक कर रहा हूं न?'

फरवरी १९६९ में दिल्ली में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध खेला गया टेस्ट मैच वीनू मांकड के जीवन का अंतिम टेस्ट मैच था। इसे भाग्य की विडंबना ही कहिये कि इस टेस्ट में वीनू बल्लेबाज और गेंदबाज दोनों ही रूपों में बुरी तरह विफल रहे। वेस्ट इंडीज की पहली पारी ८ विकेट पर ६४४ रन बनाकर घोषित की गयी थी। ४२ वर्षीय वीनू ने ५५ ओवर फेंके, १६७ रन दिये और एक भी विकेट नहीं लिया। मगर यह बड़ी विफलता भी एक छोटे-से कीर्तिमान का रूप पा गयी। वीनू का नाम उन गेंदबाजों की तालिका में आ गया, जिन्होंने बिना एक भी विकेट लिये १०० से अधिक रन दिये हों। भारत ने पहली पारी में ४१५ रन बनाये (मांकड: २१) और दूसरी पारी में २७५। अपने जीवन की अंतिम टेस्ट इनिंग में वीनू ने जरा भी संघर्ष नहीं किया और बिना रन बनाये 'क्लीन बोल्ड' हो गये।

खेल की लय में रम जाने, उसकी गति में बह जाने में वीनू मांकड अपनी मिसाल आप थे। मैदान में उतरते ही वे व्यस्त हो जाते। बल्लेबाजी कर रहे हों या बोलिंग, क्षेत्र-रक्षण कर रहे हों या कप्तानी, वे क्षण-भर को भी खाली नहीं बैठते थे। कुछ नहीं तो कमीज का कालर ही ठीक करते, बालों को संवारते या छोटी-मोटी वर्जिश कर लेते।

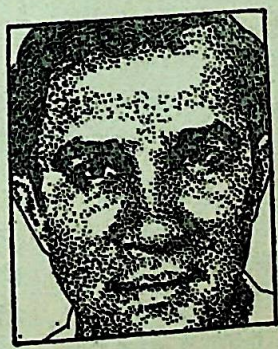

अनुरूप पुत्र : अशोक मांकड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लियोनोरा लैम्पशेड्स

ज़माने से बेहिसाब आगे

रोशनी की दुनिया में फ़िलिप्स बेपनाह ख़ूबसूरती पेश करते हैं— लियोनोरा श्रृंखला में तरह-तरह के काँच शेड्स. डिज़ाइन, ख़ूबसूरती और निर्माणकौशल में इतना आगे जो कल्पना को भी पीछे छोड़ जाए. काँच, रंग और कल्पना का अपूर्व इन्द्रधनुषी मेल. रोशनी और रंग-रूप में एक अभिनव अनुभव.

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी पैंट सदा चौड़ी मोहरी की और बिना क्रीज की होती और कमीज के दो-तीन बटन खुले रहते।

चौड़ा माथा, गहरी अनुभूतिपूर्ण आंखें और अभिव्यक्तिपूर्ण फिलासफरनुमा चेहरा। उनके व्यक्तित्व में सबसे प्रभावशाली गुण थे सहजता और दृढ़ ध्येयनिष्ठा। सेहत का पूरा-पूरा खयाल रखते थे; ऐसे मनोरंजनों से हमेशा दूर भागते थे, जिनसे ताजगी के बजाय थकान मिले। सुधीर वैद्य ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक 'वीनू मांकड' में लिखा है:

'सभा-समारोह और प्रीतिभोज जैसे आयोजनों का (मांकड द्वारा) यथासंभव बहिष्कार किया जाता था। वे केवल औपचारिक आयोजनों में हिस्सा लेते थे; क्योंकि इनसे बचा नहीं जा सकता था।..... दिन-भर के खेल के बाद अपने कमरे में खामोश बैठकर शास्त्रीय संगीत से सुकून पाना उन्हें भाता था। रात को कभी वे देर तक नहीं जागते थे।'

वे खेल के मैदान में जितने उत्साह से अपनी पूरी शक्ति लगा देते थे, मैदान के बाहर उतनी ही तत्परता से शक्ति को संचित करते और सहेजकर रखते थे। यही वजह है कि १९४६ के इंग्लैंड के दौरे में वे लगातार २७ मैचों में सफलतापूर्वक भाग ले सके। इंग्लैंड का दौरा करने वाला कोई भी दूसरा खिलाड़ी लगातार इतने अधिक मैचों में नहीं खेल पाया है।

वीनू की शक्ति और स्थायित्व के दो उदाहरण हैं—क्रमशः वेस्ट इंडीज और पाकिस्तान के विरुद्ध स्थापित किये गये उनके कीर्तिमान। १९५३ के किंग्सटन टेस्ट में वेस्ट इंडीज की पारी के दौरान उन्होंने ४९२ गेंदें (८२ ओवरों में) फेंकीं। एक ही पारी में किसी अन्य भारतीय गेंदबाज ने इतनी गेंदें नहीं फेंकीं।

सन १९५५ में पाकिस्तान के विरुद्ध पेशावर टेस्ट में उन्होंने कुल ११५.१ ओवरों में ६९१ गेंदें फेंकीं, जो किसी मैच में की गयी अधिकतम गेंदबाजी का भारतीय रेकार्ड है।

वे व्यवहार में मितभाषी और विनम्र किंतु खरे व्यक्ति हैं और अपने समकालीन खिलाड़ियों में सहृदय प्रकृति, मेहमां-नवाजी और मददगार रवैये के कारण प्रसिद्ध हैं।

'बापू' नाडकर्णी सन १९५९ में भारतीय टीम के साथ इंग्लैंड जाने से पहले जब उनसे मिलने गये, तो उन्होंने 'बापू' को अपना ऊनी कोट देते हुए कहा—'अगर तुम वहां ७५ से ज्यादा विकेट ले लो, तो यह कोट तुम्हारा!' पर 'बापू' वहां ५५ विकेट ही ले पाये और उन्हें कोट लौटाना पड़ा।

बंबई के माटुंगा जिमखाना में खेलते हुए वीनू ने एक छक्का मारा। गेंद दर्शकों की भीड़ में खड़े पांच साल के एक बच्चे के सिर पर लगी। बच्चा चकराकर गिर पड़ा। वीनू को जैसे ही गड़बड़ी का एहसास हुआ, वैसे ही वे दौड़ते हुए भीड़ की तरफ आये। क्या हुआ था, यह पता लगने पर लोगों से उसे अस्पताल ले जाने का अनुरोध करने लगे। मैच की समाप्ति के बाद बच्चे की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वाराणसी पुस्तकालय,

तबीयत पूछने गये और उसके अभिभावकों को हर संभव सहायता का आश्वासन भी दिया।

वीनू अब तो क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं; मगर पुत्र अशोक के रूप में अपना क्रिकेट-जीवन नये सिरे से जी रहे हैं। अशोक का छोटा भाई अतुल भी क्रिकेट में प्रगति कर रहा है। कैसी दिलचस्प बात है कि वर्तमान नवाब पटौदी के पिता स्वर्गीय नवाब पटौदी (सीनियर) सन १९४६ में भारतीय टीम के कप्तान थे और वीनू उस टीम के उदीयमान खिलाड़ी। चौथाई सदी बाद वीनू के पुत्र अशोक ने सिद्धहस्त नवाब पटौदी (जूनियर) के नेतृत्व में वैसी ही सफलता की सीढ़ियां चढ़ीं।

वर्षों पहले, १९४६ में विश्वविख्यात क्रिकेट-समीक्षक और उद्घोषक जान आर्लट ने तरुण वीनू मांकड के बारे में कहा था—'उसकी तुलना के बल्लेबाज मिल जायेंगे, मगर गेंदबाज शायद नहीं..... हर इनिंग और हर मैच के साथ वह कुछ न सीखता जाता है..... मांकड के स्तर का खिलाड़ी मिलना मुश्किल है। वह एक ऐसा कारीगर है, जो अपनी कारीगरी में इस सीमा तक रम जाता है कि वही उसके लिए उपासना हो जाती है।..... अपनी ओर लोकायी गयी गेंद को वह इतनी सहजता से थामता है, जैसे कोई माली खुरपी को।

'गेंदबाजी करते-करते उसकी उंगलियां रक्ताभ और रक्तस्राविनी हो उठें, तब भी वह बिना किसी शिकायत के गेंद फेंकना जारी रखेगा और सामने वाले खिलाड़ी को आउट करने के उसके प्रयत्नों में कमी नहीं आयेगी। क्योंकि मांकड की दृष्टि में खेल सदा आंकड़ों से अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है।'

मगर आंकड़ों को महत्त्व न देने वाले उसी वीनू मांकड का नाम अब आंकड़ों की किताबों में थोड़े-थोड़े अंतराल से उभर आता है किसी गीत के मुखड़े की तरह।

—रसायन-विभाग, आई. आई. टी., पवई, बंबई-७६

*

ब्रिटेन के कॉग्निटिव रिसर्च नामक एक ट्रस्ट ने स्वतंत्र और वैयक्तिक रूप से किये गये आविष्कारों के लिए ५,००० पौंड के पुरस्कारों की घोषणा की है। ट्रस्ट वस्तुतः यह पता लगाना चाहता है कि कोई व्यक्ति कोई आविष्कार कैसे करता है। देखा गया है कि बहुत से आविष्कार विशेषज्ञों द्वारा बहुत सोच-समझकर किये गये सुधार नहीं होते, बल्कि सामान्य जनों की सूझबूझ या कल्पना के परिणाम होते हैं। बॉल-पाइंट पेन का आविष्कारक एक मूर्तिकार और चित्रकार था। टेलिफोन की आटोमैटिक डायलिंग विधि का आविष्कारक मुर्दे दफनाने का व्यापार करता था। सर बार्न्स वैलिस जैसे कई सरकारी प्रशासकों ने युद्ध-काल में शस्त्रास्त्रों का आविष्कार किया। इनाम आविष्कारों को बढ़ावा देते हैं। फलों व सब्जियों को डिब्बाबंद करने की विधि यूरोप के नेपोलियनिक युद्धों के समय एक पुरस्कार के कारण विकसित हुई। प्रथम लाइफ-बोट की डिजाइन दो गिनी के एक पुरस्कार की खातिर बनायी गयी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर रेयन के २६ गौरवशाली वर्ष

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आज़ाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, स्टेपल रेशे, रेयन–ग्रेड पल्प और रेयन स्टेपल रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य सख्त लकड़ियों से रेयन–ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित प्लांटों की आधुनिक मशीनों के अग्रगण्य निर्माता हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशों का उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासियों की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा का है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से रूई की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रुप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी !

ग्वालियर रेयन

जहां राष्ट्र की प्रगति ही एकमात्र उद्देश्य है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मेन्यु. (वीविंग) कं. लि. विरलाग्राम, नागदा (म. प्र.)

Sobhagya GR 74-2-Hin.

वार्षिक शु : रु. २४)

(मूल्य रु. २–५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा ठहरिये!
गड़बड़ वस्तु खाक
अपना पेट न बिगाड़

प्रोपॅक® स्वीटीज

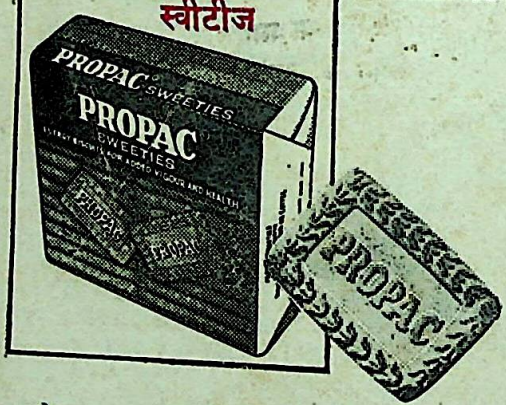

दफ़्तर में दिन भर काम और फिर थकने वाले घरेलू धन्धे। इतने परिश्रम के बाद आपको प्रोटीन चाहिए। और प्रोटीन के लिए प्रोपॅक सबसे अच्छे हैं। प्रोटीन के लिए उत्तम पौष्टिक भोजन हो या फिर सबसे अच्छे प्रोपॅक बिस्किट!

साधारण बिस्किटों से
तीन गुने प्रोटीन
दस गुने विटामिन
और कई गुने कैल्शियम और आयरन

हल्के आसानी से हजम हो जाने वाले प्रोपॅक बिस्किट स्फूर्तिदायक प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम और आइरन से भरपूर हैं।

कुरकुरे, स्वादिष्ट प्रोपॅक बिस्किट सुबह के नाश्ते, दोपहर की कॉफ़ी या शाम को चाय के साथ लीजिए।

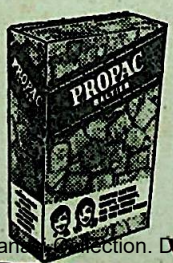

आपकी प्रिय
प्रोपॅक
साल्टीज
अब नए
किफ़ायती डिब्बों
में मिलती हैं

युनिकेम का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

जयनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

मार्च

R.A.K. १९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शानदार...जानदार...सदाबहार...
मगर स्वाभाविक जैसे सिर्फ़ सूती कपड़े

सेन्चुरी

100% सूती कपड़ों के लिए

दि सेन्चुरी टिप. एण्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड, बम्बई-४०० ०२५

Adroit-CM-533 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़िया मसाला बनानेवाले, सिर्फ़ दो ही !

वे दो कौन? सोचने की बिल्कुल जरूरत नहीं क्यों कि उनमेसे पहले आपही है। इसमें बिल्कुल संदेह नहि कि, आपका बनाया हुआ मसाला बढ़ियाही होता है। किन्तु आप के बाद पहले हम है। अगर आपको मसाला बनाने में फुरसत न हो तो बेडेकर मसाला आपकी सेवा में हाजिर है।
आपको बिल्कुल फर्क नजर नहि आएगा।

व्ही. पी. बेडेकर ॲन्ड सन्स प्रायव्हेट लि.
बम्बई–४

B.VASANT

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग, भांडुप, बंबई ७८ एन. बी.

केबल : 'लकी' भांडुप फोन : ५८२४२१ (३ लाइनें)

१. नानफेरस यूनिट

सेमिस रोलिंग विभाग :

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल,
नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग :

एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मेटल्स,
गनमैटल्स और ब्रोजेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स
फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स 'इस्माक ३', अल्युमिनियम
बेस्ड डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड,
कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड।

२. फेरस यूनिट :

फाउंड्री डिविजन :

एस० जी० आयर्न और स्पेशल स्टील कास्टिंग्स
मेलिएबल आयर्न कास्टिंग्स

आइ० एस० एस०; बी० एस० एस०, एस० एस० आइ० एम० के स्पेसिफिकेशन्स तथा ग्राहक की विशेष आवश्यकता के अनुसार सप्लाई किये जाते है।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालन-पोषण सही कीजिए; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ... खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की खर्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक कोको, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

पौष्टिक बोर्नविटा में कोको है जो स्वास्थ्यप्रद है और स्वादिष्ट भी!

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए–कैडबरिज़ **बोर्नविटा!**

OBM-0449-HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

• नये वर्ष का नया उपहार •

नवभारत टाइम्स

वार्षिकांक, १९७४

अनेक सामयिक विषयों पर रोचक ज्ञानवर्धक सामग्री–

- क्या वे भारत लौटेंगे। प्रवासी भारतीयों की समस्याएं
- क्या महंगाई और अभावों का कोई निदान है ?
- वन्य पशुओं का सवाल : यदि इनकी रक्षा न की गयी तो...
- आदिवासियों की अनोखी दुनिया
- क्या युवा विद्रोही हो गया है ?
- सैंसर की सड़ी कैंची
- साहित्य-जिसकी मंजिल खो गयी

- भारतीय कला के नये मोड़
- धरती के गर्भ में सुरक्षित हमारी धरोहर
- आत्मजयी भगवान महावीर
- आस्था की अमूल्य निधि मानस
- हमारी चार प्रमुख योजनाएं
- आधुनिक नारी के नये कार्यक्षितिज

अधिकारी विद्वानों की लेखनी द्वारा प्रस्तुत सामग्री • साथ में पचासों रंगबिरंगे चित्र

१०८ पृष्ठ, किंतु मूल्य मात्र रु.२.५०

अपनी प्रति तुरंत सुरक्षित कीजिए.

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Zenlon

WEAVING YARN

Out of natural synthetic and man-made fibres in various styles

SOFT in multiplex shades for making curtains, cushions and covers
BRIGHT and LUSTROUS to motivate pretty crotchet sets
RESILIENT and MOISTURE ABSORBENT during spring

FIBRE DYED Weaving Yarn in solid and contrast shades

BLENDED weaving Yarn—Ployester-silk, Polyester-viscose, Nylon-viscose, Acetate-viscose, Acrylic-viscose etc

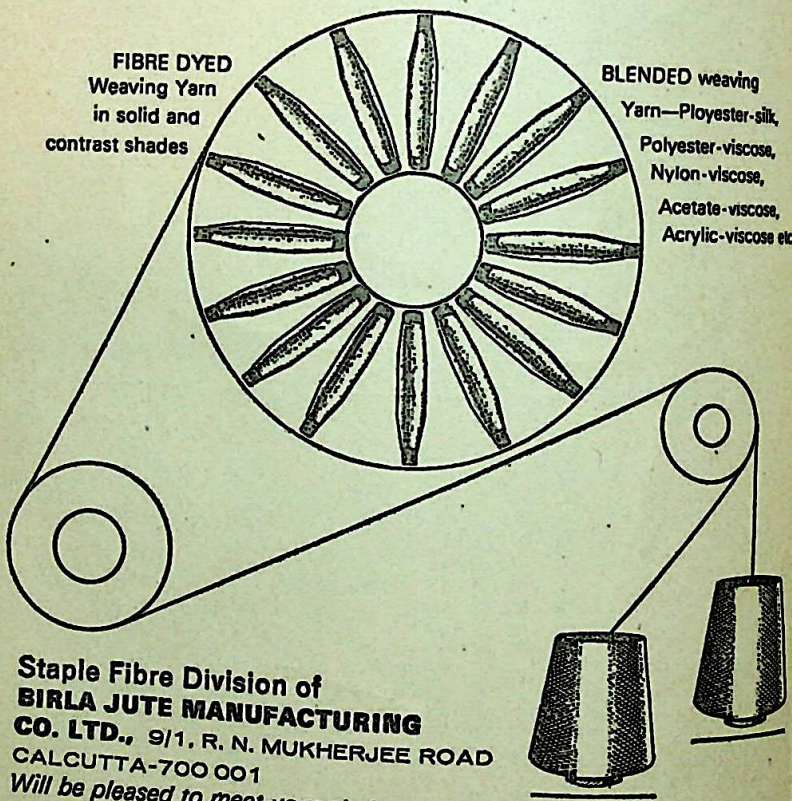

Staple Fibre Division of
BIRLA JUTE MANUFACTURING CO. LTD., 9/1, R. N. MUKHERJEE ROAD
CALCUTTA-700 001
Will be pleased to meet your choice and requirements.

PPS/BJ-SF1/74

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

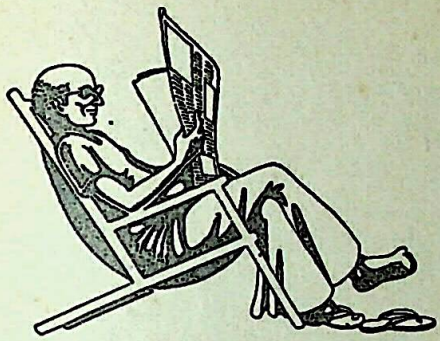

बुढ़ापा

जीवन की अनिश्चितताओं में एक बात कत्तई निश्चित है, वह है बुढ़ापा! और इससे कोई बच नहीं सकता, न बचेगा।

बुढ़ापा सुख से कटने के लिए केवल अच्छे स्वास्थ्य का होना ही आवश्यक नहीं है किन्तु आर्थिक चिन्ता से मुक्त होना भी परमावश्यक है। संयुक्त परिवार प्रथा ढह जाने के कारण अब यह उम्मीद करना निरर्थक है कि ढलते बुढ़ापे में कोई अपनी देखभाल करेगा। भाग्य के भरोसे रहने के बजाय आज ही जीवन बीमे द्वारा अपने आरामदेह बुढ़ापे का प्रबन्ध कीजिए।

बंदोबस्ती पालिसी से यह प्रबंध किया जा सकता है!

सुरक्षा का बेजोड़ साधन-जीवन बीमा!

योगक्षेमं वहाम्यहम्

mcm/llc/23 hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंतल

बालों की जड़ों तक असर करता है

यह आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से तैयार किया हुआ तेल है जो खोपड़ी की त्वचा व बालों को पौष्टिकता प्रदान करता है

लम्बे, सुलझे, मजबूत, सदाबहार बालों का राज है कुंतल! कुंतल असरकारक आयुर्वेदिक औषधियों के विख्यात उत्पादक झण्डु द्वारा खास तौर से जड़ी-बूटियों से तैयार किया हुआ तेल है। कुंतल धीरे धीरे बालों की जड़ों की गहराई तक पहुँच कर असर करता है। आपको फौरन बड़ा चैन और आराम महसूस होने लगता है। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, सच पूछिए तो पूरे परिवार के लिए सर्वश्रेष्ठ केश तेल है-कुंतल!

A ZANDU PRODUCT

एक अगाध विश्वास है
झण्डू फार्मास्यूटिकल
वर्क्स लिमिटेड बम्बई-१२

J BROTHERS/72/100

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती है। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १५ तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन करना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में निम्नढंग से लिखना चाहिये।

नाम.....

गाँव..... डाकघर..... P.I.N.

जिला..... राज्य.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

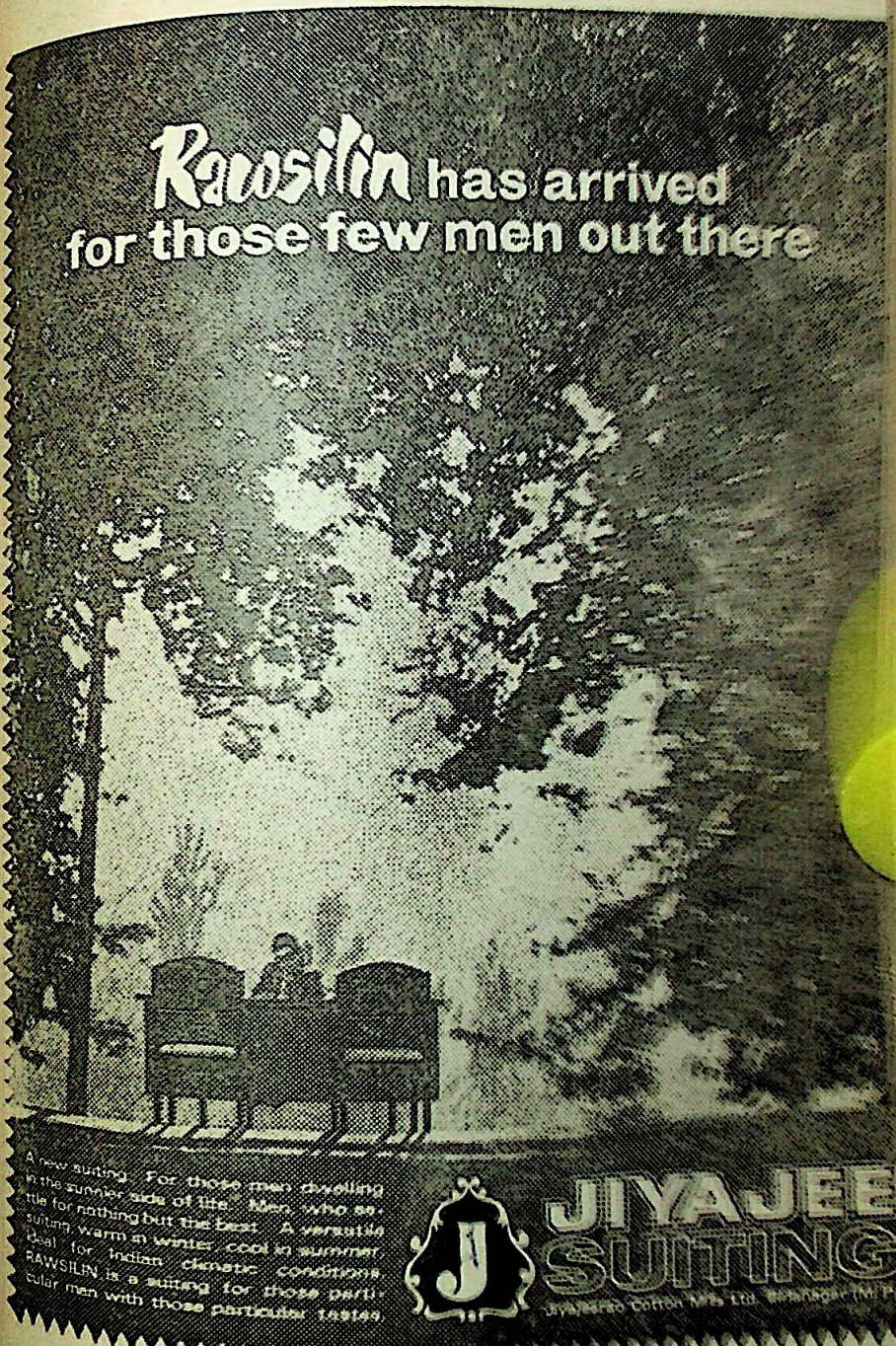

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज़ेनिथ के कटर

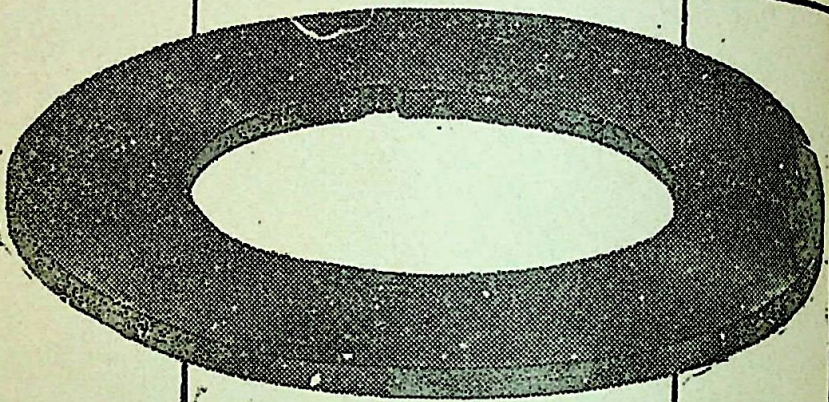

आपके कारख़ाने में कटाई के हर काम के लिए आदर्श

ख़र्च घटाते हैं... उत्पादन बढ़ाते हैं!

- अव्वल दर्जे के टूल-स्टील से
  ऊँचे प्रतिमानों के अनुसार बनाये हुए
- वैज्ञानिक विधि से हीट-ट्रीटमेंट दिये हुए
- कटाई का काम सफ़ाईदार और एक-सा होने के लिए बहुत ही तेज़ धारवाले

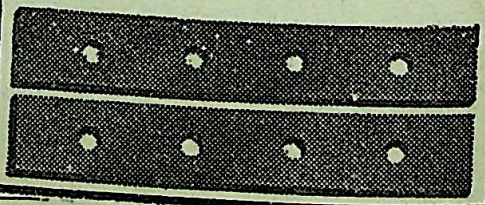

ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लिमिटेड
दत्त मैन्युफ़ैक्चरिंग विलेज
१९५, चर्चगेट रेलवेस्टेशन,
बम्बई-२० (बी. आर.)
टेलिफ़ोन: २९४४४५
तार: ZENPIPES
टेलेक्स: ०११-२०५६
आन्सर बैक कोड: ZENITH

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

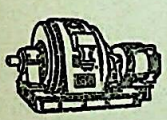

BHEL BHOPAL

शक्ति के मैदान में एक महान नाम

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स(भोपाल)का प्रारंभ एक सामान्य कारखाने के रूप में हुआ था। वही कारखाना आज एक विशाल और शक्तिशाली संस्थान के रूप में उभरा है। विद्युत शक्ति के उत्पादन, प्रसारण और उपयोग केलिए भारी विद्युत संयंत्र के क्षेत्र में आज भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स(भोपाल) विश्वासपात्र नाम है।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स(भोपाल)कारखाने में निपुण और प्रवीण इंजीनियर और टेक्निशियन अपनी विशेष शोध और उत्पादन यूनिटों के द्वारा कार्य करते हैं।ये यूनिटें दुनियाभर में कहीं भी आवश्यक, हर प्रकार और आकार के भारी विद्युत संयंत्रों की विशेष आवश्यकताएं पूरी करने की क्षमता रखती हैं।

हमारी विद्युत संयंत्र श्रेणी :

- वाटर टर्बाइन और मेल रखते हुए जनेरेटर, २०० मेगावॉट तक;
- स्टीम टर्बाइन, टर्बो जनेरेटर और कंडेन्सर;
- ट्रांस्फ़ॉर्मर ४०० एमवीए यूनिट रेटिंग तक और ४०० के. वी. वॉल्टेज तक;
- हाई वॉल्टेज स्विचगियर ३२० के. वी. तक;
- एसी और डीसी मोटर बड़े से बड़े साइज़ तक;
- कंट्रोलगियर और कंट्रोल पैनल;
- इलेक्ट्रिक और डीज़ल इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन इक्विपमेंट;
- रैक्टिफ़ायर और कैपिसिटर;
- वॉल्टेज ट्रांस्फ़ॉर्मर (इलेक्ट्रो मैगनेटिक और कैपिसिटर टाइप) और करंट ट्रांस्फ़ॉर्मर ४०० के. वी. तक।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, भोपाल

(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान)

जनता के लिए विद्युत शक्ति

JAISONS-3344

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

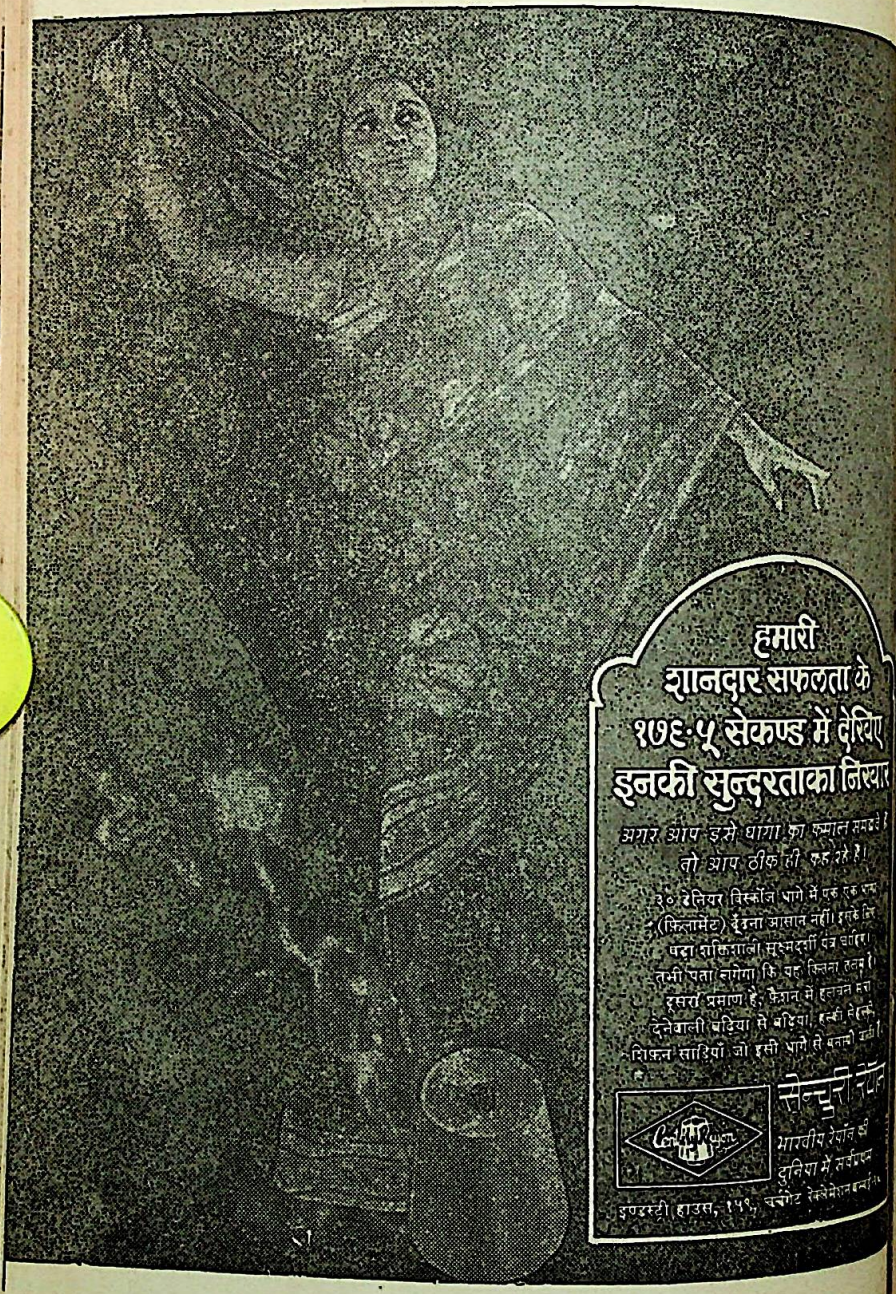

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

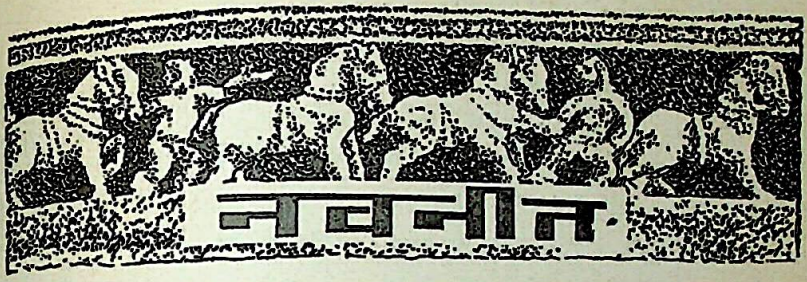

वर्ष २३ : अंक ३ * इस अंक में * मार्च १९७४

पत्र-वृष्टि	१५	संपादक की डाक से
स्पेन : जीर्णशीर्ण व्यवस्था	२०	प्रयाग नारायण
जापान की बढ़ती अप्रियता	२६	किशोर व्यास
चर्चित द्वीप	३०	कुमार प्रशांत
प्रकृति	३३	हाइनरिश हाइन
कथा-मौक्तिक	३४	रामकृष्ण परमहंस
प्राचीन भारत में मदनोत्सव	३६	डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी
होली	४१	अमर जलील
काश ! (कविता)	४२	पुष्पा राही
वाक्यदीप	४४	नेपोलियन बोनापार्ट
हाफकिन इंस्टिटयूट	४५	रविशंकर टंडन
आचार्य के सान्निध्य में	४९	देवीरत्न अवस्थी 'करील'
अपने देश में बेगाने	५२	वाडीलाल डगली
विज्ञान-बिंदु	५६	केजिता
टूटी टांग का महोत्सव	६१	एफ्राइम किशोन
मधुर ध्वनि (कविता)	६३	ब्रह्मदेव
व्यक्तिगत आपत्ति : विश्वसंकट	६५	गगनविहारी महेता
नंबर दो की आत्मा	६९	हरिशंकर परसाई

संचालक	संपादक	परामर्शदाता	व्यापार-व्यवस्थापक
श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सत्यकाम विद्यालंकार	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	सहसंपादक	सहकारी : गि. शं. त्रिवेदी	प्रबंध : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	सुरेश सिन्हा	डा. विष्णु भटनागर	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नजराना	७३	कन्हैयालाल कपूर
घर-झांक लड़की-ताक महिला	७६	अब्दुल मुजीब
तीन बूढ़े (पंजाबी कहानी)	८१	महेंद्रसिंह सरना
व्यर्थ है उलझना समालोचक से	८७	....
गूंगी मां	८८	सुरजीत
गंभीर कहानी	९२	कर्ट कुट्सनवर्ग
उपहास्य चित्र	९५	....
कविताएं	९६	रमेश दुबे, निशिकांत
भगवान के देश के लोग	९७	....
हंसी के रंग, खिलाड़ियों के संग	९९	सुशील कुमार दोषी
एक चेहरा माओ का (गुजराती कहानी)	१०४	ललित कुमार बक्षी
घर-पुराना घर (चीनी कहानी)	११४	लू शुन
ब्रह्मांड का छोर	१२२	आइजैक आसिमोव
दो मित्र	१२४	स्वामी ओंकारानंद गिरि
विद्रोह का अंत जादू से	१२५	सरला गुप्त
यादों की महक	१२९	प्रबुद्ध, मिश्रा, दाउद, भारती
दस वर्ष लंबा रिश्ता	१३२	कान्हजी सिंह तोमर
भाग्यहीन (कविता)	१३६	जगमोहन
गीत	१४०	हरीश भादानी
याद का गीत	१४४	निरंकार देव सेवक
नाहरसिंह	१४५	घनश्यामदास बिरला
रूसी श्रम-शिविरों में	१५६	गालिना फॉन मेक
थक-ऊब जाने पर	१७५	कन्हैयालाल मिश्र, विष्णु प्रभाकर
गीतगिरीशम्	१७६	त्रि. शूलपाणि
अपने मन को तौलें	१७९	सुधीर गुप्ता
पुस्तकास्वादन	१८१	विद्यालंकार, पांडेय
राजनेताओं के खेल	१८७	वासुदेवन् नायर
उपग्रहों के उपयोग	१८९	डा. जगदीश लूथरा

आवरणचित्र : जी. जी. गोखल

चित्रसज्जा : जां कोक्तू, लक्ष्मण, चकोर, ओके, शंर्ण, राहुल, सरकार, केसर, भटनागर।

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट ३४१, ताडदेव, बंबई ३४.

फोन : ३९२८८७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा निर्णयसागर प्रेस, ४५/डीई, ऑफ टोकरसी जीवराज रोड, भिवंडी, बंबई-१९ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

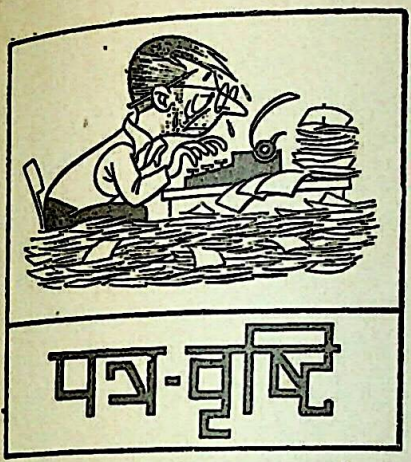

पत्र-वृष्टि

दूसरे की श्रेष्ठता को स्वीकार करने को विवश स्वाभिमानी मनुष्य अपने मन में उग आयी हीन-भावना को किसी झूठी या सच्ची आशावादिता के सहारे नकार देना चाहता है। फरवरी १९७४ के अंक में 'चीन का माओ : भारत का विनोबा' लेख में कुछ ऐसा ही प्रयास किया गया लगता है।

माओ ने जहां हर क्षेत्र की समस्याओं को सुलझाने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की, वहां विनोबाजी ने मुख्यतः भूमि-सुधार का बीड़ा उठाया और उन्हें सफलता भी आंशिक ही हाथ लगी। ऐसी स्थिति में माओ-नीतियों के दूरगामी दुष्परिणामों की कल्पना करके उनकी चिंता में दुबला होना जितना बेमानी है, उतना ही पूर्वाग्रहयुक्त है विनोबा-दर्शन की चामत्कारिक सफलता की आशा रखना।

यदि महात्मा गांधी जीवित होते, तो हम विनोबाजी के स्थान में उन्हें फिट कर देते—वही, महज अपने संतोष के लिए।

—अजय कु. कुलश्रेष्ठ, नयी दिल्ली-१७

अपनी कहानी 'पुरानी हड्डी' (दिसंबर १९७३) में मैंने 'महुआ की डोभरी' का जिक्र किया था। संपादन की प्रक्रिया में वह 'मडुआ की डोभरी' बन गया। महुआ (संस्कृत का मधुक या मधूक) एक प्रसिद्ध वृक्ष है। महुए की शराब और महुए का तेल भी मशहूर हैं। वसंत ऋतु में महुए में फूल लगते हैं और गिरते हैं। गिरे फूलों को बीन लिया जाता है। फिर निचला भाग (जिसे जीरा कहते हैं) निकाल दिया जाता है और फूलों को पानी में उबालकर पसा लेते हैं। इसी को 'डोभरी' कहते हैं। ग्रामवासी इसे बिना चीनी या गुड़ मिलाये दूध या मट्ठे के साथ खाते हैं। यह गरीबों का भोजन है, साथ ही पौष्टिक भी। सूखे महुए को कूटकर और तिल मिलाकर बनाया जाने वाला 'लाटा' भी पौष्टिक खाद्य है। मडुआ एक मोटा अन्न है, जिसका आटा खाने के काम आता है। उसकी डोभरी नहीं बनती।

—कृष्ण मुरारि त्रिपाठी, सिद्धौर, बाराबंकी

० ० ०

जनवरी के नवनीत में श्रीमती विजया त्रिपाठी का क्रौंच-संबंधी पत्र मैंने पढ़ा। सारस को क्रौंच मान लेना किसी भी पक्षी-अध्येता के लिए कठिन होगा। सारस विशुद्ध भारतीय पक्षी है, संसार के अन्य किसी भाग में वह पाया नहीं जाता। वह बारहों मास यहां रहता है और नदी की अपेक्षा छिछले जल के छोटे-मोटे जलाशय उसे अधिक पसंद हैं, जहां वह घोंघे, मेंढक आदि की ताक में अक्सर दो (या अधिक से अधिक तीन) की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संख्या में खड़ा रहता है। बरसात में जोड़ा बांधने के दिनों में ही वह पूर्ण रूप से मुखर होता है।

इसके ठीक विपरीत क्रौंच उन प्रवासी जलपक्षियों में है, जो तिब्बत और साइबेरिया की ओर से शताब्दियों से आता है—शीत ऋतु में, जब हमारे देश में धान के खेत बालियों से लद जाते हैं। इसके आने का विख्यात मार्ग 'नीती घाटी' है, जिसे कालिदास ने 'हंसद्वार' और 'क्रौंचरंध्र' के नाम से पुकारा है। अन्य प्रवासी बतखों की तरह क्रौंच भी शस्यप्रेमी है और शीतकाल से इसका गहरा संबंध है। बालियों से लदे शस्य-क्षेत्रों में यह बड़ी संख्या में पाया जाता है, जैसा कि 'ऋतुसंहार' (४·१९) में कालिदास ने लिखा है :

बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी
परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमा।
सततमतिमनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः
प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एषः सुखं वः॥

कवि का कहना है कि हेमंत ऋतु में जब ग्रामसीमा परिपक्व शालिधान्य से आच्छन्न हो जाती है, तो क्रौंचमाला-परिवेष्टित उस सीमांतर की शोभा अतिशय मनोज्ञ हो उठती है।

यह दृश्य आज भी हिमालय की तलहटी में स्थित उत्तर बिहार में—जहां का मैं रहने वाला हूं—देखने को मिलता है। सारस कभी इन शस्यक्षेत्रों में, और वह भी इतनी बड़ी संख्या में कि माला का रूप धारण करें, नजर नहीं आते। चकवे अवश्य नजर आते हैं।

फरवरी अंक में श्री मारुती चितमपल्ली का पत्र भी पढ़ा। वे उस पक्षी को क्रौंच मानते हैं, जिसे अंग्रेजी में 'डिमाइसेल क्रेन' तथा पंजाब में कुंज और करकरा कहते हैं। यह प्रवासी पक्षी इस देश के कई हिस्सों में शीतकाल में मध्य यूरोप, मंगोलिया आदि प्रदेशों से सैकड़ों की—बहुधा हजारों की—संख्या में आता है। यह दल बांधकर रहता है और इसकी 'कुर्र-कुर्र' बोली बड़ी कर्कश होती है। सारस की जाति का पक्षी है यह; पर उसकी तरह अलग जोड़े में नहीं रहता, बल्कि सैकड़ों के झुंड में रहता है। वाल्मीकि, कालिदास आदि महाकवियों ने क्रौंच के जिन गुणों की चर्चा की है, वे इस पक्षी में कतई नहीं पाये जाते। न तो यह खास तौर पर कामक्रीडा का प्रेमी या प्रदर्शक है, और न 'मनोहरक्रौंचनिनादितानि' जैसी उक्ति को सार्थक करने वाला।

श्री हरिदत्त वेदालंकार आदि संस्कृत भाषा के विद्वानों ने इसे क्रौंच कहकर महाकवि कालिदास के साथ अन्याय किया है। हंसदेव के जो श्लोक श्री मारुती चितमपल्ली ने उद्धृत किये हैं, वे आंजन बगुले पर फिट बैठते हैं। जैसा कि मैं अपने लेख में दिखा चुका हूं, शब्दार्थचिंतामणि, वाचस्पत्य अभिधानकोश आदि ग्रंथों में भी भ्रांतिवश बगुले को क्रौंच मान लिया गया है।

डाक्टर सालिम अली ने कहां कुंज को क्रौंच कहा है? मैंने तो उनकी पुस्तक में ऐसी बात नहीं पायी। जहां तक मुझे पता है, संस्कृत साहित्य में क्रौंच और चक्रवाक का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीं एक साथ अलग-अलग उल्लेख नहीं मिलता, यह भी इस बात का द्योतक है कि वे भिन्न पक्षी नहीं माने गये हैं।

—राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, नयी दिल्ली

० ० ०

क. श्री मारुती चितमपल्ली सूचित करते हैं कि अपने पत्र में उन्होंने डा. सालिम अली के मत का जो हवाला दिया है, उसके लिए द्रष्टव्य है—हैंडबुक आफ द वर्डस् आफ इंडिया एंड पाकिस्तान; लेखक : सालिम अली तथा एस. डिल्लन रिप्ले; प्रकाशक : आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (१९६९); खंड २, पृष्ठ १४६।

ख. प्रो. हरिदत्त वेदालंकार 'कालिदास के पक्षी' (पृष्ठ ५१-५७) में दिखाते हैं कि १. गांवों के आस-पास खेतों में पाया जाना, २. धान के खेतों में विशेष रूप से मिलना, ३. हेमंत-शिशिर में विशेषतः आवाज सुनाई देना—इन तीन बातों के अलावा क्रौंच का कोई ऐसा विवरण कालिदास ने नहीं दिया है, जिस पर से इस पक्षी की शिनाख्त हो सके। वे बताते हैं—'वैदिक साहित्य में इस पक्षी का क्रुञ्च, कुंच और क्रौंच के विविध रूपों में उल्लेख है।' विभिन्न ग्रंथों और विद्वानों द्वारा 'क्रौंच' के जो शब्दार्थ दिये गये हैं (अमरकोश-टीकाकार भानुजीदीक्षित—'करांगुल इति ख्यातस्य'; शब्दकल्पद्रुम—'कोंचवक इति भाषा'; मोनियर विलियम्स—करल्यू, हेरोन; मैकडानल और कीथ—स्नाइप [चहा]; सत्याचरण लाहा—अंधा बगुला), उन सब पर विचार करके उन्हें अपर्याप्त या गलत बताते हुए प्रो. हरिदत्त क्रौंच को कुंज मानने के पक्ष में तीन दलीलें देते हैं—१. क्रौंच हंस की भांति शीतऋतु का पक्षी है, जो वर्षा-अवसान पर हमारे देश में आता है; २. 'क्रौंच' शब्द अनुकृतिमूलक है ('क्रुंचति इति क्रुंञ्च'—अमरकोश की टीका में क्षीरस्वामी) और कुंज की आवाज से मेल भी खाता है; ३. संस्कृत शब्द 'क्रौंच' से 'कुंज' (राजस्थानी कुंझ या क्रुंझ, पंजाबी कूंज, गुजराती कुंज) संभवतः निष्पन्न हुआ है।

पक्षियों का अध्येता न होते हुए भी तीन छोटी बातें मैं भी ध्यान में लाना चाहता हूं—१. कवियों ने मोर और मेंढक की ध्वनि में भी मनोहरता देखी है, अतः 'मनोहरक्रौञ्च-निनादितानि' आदि शब्दों को बहुत महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिये; २. भले ही किसी संस्कृत कवि ने क्रौंच और चक्रवाक का एकत्र

०००००००००००००००००००००००००

इसी अंक में पृष्ठ १८९–१९१ पर छपे लेख 'उपग्रहों के उपयोग' में इतनी जानकारी और जोड़ लें :

संचार-उपग्रह सामान्यतः २४ घंटे में एक चक्कर काटता है। इस तरह भूभ्रमण के जितना ही भ्रमण-काल होने से वह स्थिर दिखाई देता है। संचार-उपग्रह ४० किलोमीटर की ऊंचाई पर चक्कर काटता है और पृथ्वी का केवल १२० डिग्री भाग देख पाता है। इसलिए एक साथ तीन संचार-उपग्रह स्थापित करने पड़ते हैं।

इस स्तंभ का अगला लेख होगा—प्रोब।

०००००००००००००००००००००००००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवेकानन्द साहित्य

(कुल दस खण्डों में स्वामी विवेकानन्द की सम्पूर्ण कृतियाँ)

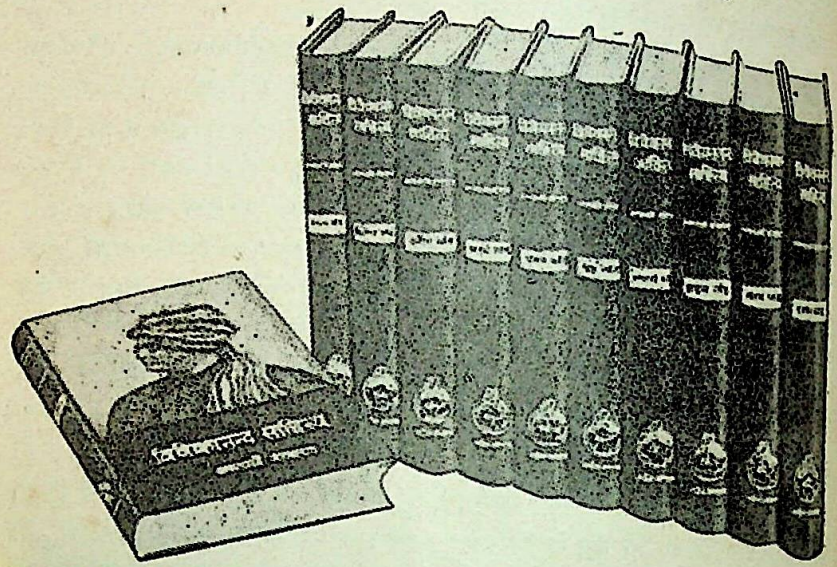

डबल डिमाई १६ पेजी साइज में; पृष्ठ संख्या प्रतिखंड लगभग ४५०; मजबूत और आकर्षक सजिल्द प्रति खंड का मूल्य १२ रु०; सम्पूर्ण सेट ११२ रु०। पूरा सेट रेल द्वारा मंगाने से रेल-खर्च नहीं लगेगा।

स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान तथा लेख सभी धर्म-पिपासुओं, समाज चिन्तकों तथा जन-साधारण के लिए चिर-नूतन आकर्षण लिए हुये हैं। प्रथम संस्करण के शेष हो जाने के पश्चात् इन ग्रन्थों की अनवरत माँग थी। हमें प्रसन्नता है कि अब इनका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है। इन ग्रन्थों में स्वामी विवेकानन्द के दर्शन, धर्म, राष्ट्र, समाज आदि विषयक ओजपूर्ण व्याख्यानों तथा गंभीर लेखों का पूर्ण संकलन है, जो उनकी अंग्रेजी में प्रकाशित और अप्रकाशित सभी रचनाओं, पत्रों, कविताओं, व्याख्यानों प्रवचनों तथा कथाओं का हिन्दी में अनूवाद है। अनूवादकों में पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', श्री सुमित्रानन्दन पन्त, डा० प्रभाकर माचवे, श्री फणीश्वर नाथ 'रेणु' आदि ख्यातिलब्ध साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय हैं।

"विवेकानन्द साहित्य" सभी पुस्तक-विक्रेताओं के पास उपलब्ध किया जा सकता है। हमें दुःख है कि कागज तथा छपाई के दामों में वृद्धि होने के कारण हमें ग्रन्थों का मूल्य बढ़ाना पड़ा है।

व्यवस्थापक—अद्वैत आश्रम, ५ डिही एन्टाली रोड, कलकत्ता ७००—०१४.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथक् वर्णन न किया हो, किंतु किसी कोशकार ने इन दोनों शब्दों को पर्यायवाची भी भी नहीं बताया है; ३. ज्ञानमंडल, वाराणसी के 'वृहत् हिन्दी कोश' में 'कूचा' शब्द का क्रौंच अर्थ देते हुए यह कहावत उद्धृत की गयी है–'बायें कुररी, दहिने कूचा।' क्रौंच और कुंज शब्दों में काफी समानता है।

यह सुदीर्घ पत्र-व्यवहार अब समाप्त किया जाता है। —संपादक

० ० ०

यदि आप अनूदित सामग्री कम और मौलिक अधिक दें, तो नवनीत और भी सुंदर बनपड़ेगा। पत्र में अध्यात्म, दर्शन, इतिहास, ज्योतिष एवं शुद्ध साहित्य आदि विषयों को भी स्थान दे दिया जाये, तो यह नवनीत की अपनी एक और विशेषता होगी। यह सत्य है कि यह युग विज्ञान का युग है; किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि पत्रिका को विज्ञान की पत्रिका ही बना दिया जाये। मूल्य को देखते हुए पत्रिका में मूल्यवान सामग्री का सर्वथा अभाव है।

—वेदीराम शर्मा 'वेद', नौनी (आगरा), उ. प्र.

० ० ०

श्री पृथ्वीनाथ शास्त्री के लेख 'पैट्रिक ह्वाइट' (जनवरी १९७४) में पृष्ठ ८२ पर प्रथम कालम में यह छपा है–'विविसेक्टर (१९७०) शायद उनका अंतिम उपन्यास है। बाद की कृतियों का मुझे पता नहीं है।' लेकिन पृष्ठ ८६ पर अंतिम पैरा में 'आइ आफ स्टार्म (१९७३) भी दिया है व उसके बारे में यह जानकारी भी छपी है–'दूसरे उपन्यास के ५०० पृष्ठों में एक बुढ़िया के चारों ओर कथा का ताना बाना है। (हम इन्हें पढ़ नहीं सके हैं।)' शायद इन दोनों वक्तव्यों की परस्पर असंगति आपकी कुशल संपादकीय दृष्टि से भी बचकर छप गयी है! कुछ सुधार तो संभव था ही।.....

ख. हिन्दी व्याकरण ने संस्कृत व्याकरण से बहुत-कुछ लिया है, यह ठीक है। लेकिन हमेशा वह उसी का अनुसरण क्यों करे? हिन्दी की वर्तनी में इसी को ध्यान में रखकर 'अखिल भारतीय मानक' स्थापित हो सके तो कितना अच्छा हो। यों यह भी 'अनिवार्य' नहीं है। कई श्रेष्ठ भाषाओं के शब्द कई तरह से लिखे जाते हैं। 'कल्पना' हिन्दी में अपनी वर्तनी चलाती है। लेखकगण अपनी-अपनी! —पृथ्वीनाथ शास्त्री, कलकत्ता-३३

० ० ०

अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की पत्नी 'मेरी टाड लिंकन' से संबंधित रचना 'मेरी टाड लिंकन : एक अभागिन' अत्यंत सुरुचिपूर्ण एवं भावना-प्रधान लगी। इक्कीस पृष्ठों का यह पुस्तक-संक्षेप आरंभ से अंत तक पाठक को बांधे रखता है। प्रस्तुतकर्ता श्री नेमिशरण मित्तल को बधाई। अन्य दो लेख 'एक पत्रिका की मृत्यु', 'खतरा है शांति को उसके रख वालों से' भी पठनीय थे।

—भगवतीप्रसाद गर्ग, कासगंज, उ. प्र.

० ० ०

भूल-सुधार : पृष्ठ १२२ पर के पहले कालम की ९वीं पंक्ति में 'प्रकाश' की जगह 'प्रकाशवर्ष' होना चाहिये।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पेन : जीर्णशीर्ण व्यवस्था

हर दिन की तरह २० दिसंबर १९७३ को भी स्पेन के प्रधान-मंत्री लुई कारेंरो ब्लांको ने अपनी सुनिश्चित दिनचर्या आरंभ की। अपनी शानदार सरकारी कार में बैठकर वे मेड्रिड के सान फ्रांसिस्को बोर्जा गिरजे गये। वहां वे सुबह की प्रार्थना में संमिलित हुए, फिर गाड़ी में बैठकर अपने कार्यालय को चल दिये।

गिरजे के अहाते से निकलकर गाड़ी पास के चौराहे पर मुड़ी, फिर गिरजे के अगवाड़े की ओर के मुख्य मार्ग पर बढ़ी।

तभी एक जोरदार विस्फोट हुआ। धमाके के बाद जमा हुए लोगों ने देखा कि प्रधान-मंत्री ब्लांको की कार एक छोटे-से खिलौने की तरह उछलकर गिरजे की छत से टकराकर गिरजे के भीतरी आंगन में एक खुले छज्जे में जा अटकी है। कुछ समय बाद गिरजे के पादरियों ने प्रधान-मंत्री के शव का अंतिम संस्कार करा दिया।

एडमिरल लुई कारेंरो ब्लांको की यह हत्या स्पेन के ८१ वर्षीय बूढ़े तानाशाह जनरल फ्रांसिस्को फ्रांको के लिए चौंका देने वाली घटना थी। जनरल फ्रांको के ३४ वर्ष के स्वैर शासन में सरकार-विरोधियों के हाथों किसी प्रमुख सरकारी नेता की हत्या का यह पहला ही अवसर था।

लुई कारेंरो ब्लांको सिर्फ प्रधान-मंत्री ही नहीं थे। वे जनरल फ्रांको के वर्षों पुराने वफादार सहकारी थे। जनरल फ्रांको ने १९७२ में अपनी बढ़ती हुई उम्र को देखते हुए स्पेन की फासिस्ट राज्य-व्यवस्था को कायम रखने के लिए अपने उत्तराधिकार की जो व्यवस्था की, उसमें लुई कारेंरो ब्लांको स्पेन के कर्णधार बनने वाले थे। वस्तुतः १९७३ के मध्य में जनरल फ्रांको ने अपने कुछ अधिकार और शक्तियां एडमिरल ब्लांको को सौंप भी दी थीं।

व्यवस्था यह थी कि फ्रांको के बाद स्पेन में फिर से राजतंत्र स्थापित होगा। और प्रस्तावित बोर्बोन-वंशी राजा डान जुआन कार्लोस (आयु ३६ वर्ष) के प्रधान-मंत्री के रूप में ब्लांको देश का राज-काज संभालेंगे।

लेकिन ब्लांको की हत्या से स्पेन के बूढ़े और बीमार तानाशाह की समूची उत्तराधिकार-योजना गड़बड़ा गयी है। उनकी लड़खड़ाती सेहत को देखते हुए वहां नये राजनैतिक गुट और आंदोलन तेजी से उभर रहे हैं और परस्पर खुले संघर्ष की तैयारियां कर रहे हैं।

इनमें सर्वाधिक सक्रिय है बास्क राष्ट्रवादियों का मुक्ति-आंदोलन। एडमिरल ब्लांको की हत्या भी इसी के कार्यकर्ताओं का कर्तृत्व है। उत्तरी स्पेन के चार सर्वाधिक धनाढ्य प्रांतों और उनसे लगे फ्रांस के दक्षिणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये मसले

• प्रयाग नारायण •

प्रांतों में करीब २० लाख बास्क लोग रहते हैं। इनमें पृथक् राष्ट्र की चेतना जाग उठी है और इनके राष्ट्रवादी संघटन का नाम है—युज़कादी ता एज़कातासुना (संक्षेप में ई-टी-ए), जिसका अर्थ है—'बास्कभूमि और स्वतंत्रता'। एक अरसे से ई-टी-ए आतंककारी कार्यों द्वारा स्पेन में दहशत फैलाये हुए है। १९६९ के बाद से अब तक उसने छह हत्याएं की हैं, तीन लोगों का अपहरण किया है और बैंकों पर करीब ४० छापे मारकर १ करोड़ ४० लाख डालर से अधिक रकम लूटी है।

बास्क राष्ट्रवादियों के प्रति सरकारी रुख को लेकर १९७० में स्पेनी सेना और प्रशासन में जबर्दस्त मतभेद भी पैदा हो गया था। सेना ने बास्क छापामारों को गिरफ्तार करके बर्गोस में उन पर सैनिक न्यायालय में मुकद्दमें चलाये थे और उन्हें सख्त सजाएं सुनायी थीं। लेकिन प्रशासन ने सजाएं माफ कर दी थीं। इससे प्रतीत होने लगा था कि प्रशासन और सेना में खुली मुठभेड़ निश्चित है। किसी तरह से वह संकट तो टल गया; लेकिन प्रशासन के नरम रुख से भी बास्क आंदोलन ठंडा नहीं पड़ा, बल्कि भीतर ही भीतर पनपता और भड़कता रहा। उसके नेता यूस्ताकियो मेंदिज़ाबाल १९७३ के आरंभ में पुलिस की गोली से मारे गये। उसके बाद तो आतंकवादी कार्रवाइयां और भी तेज हो गयीं।

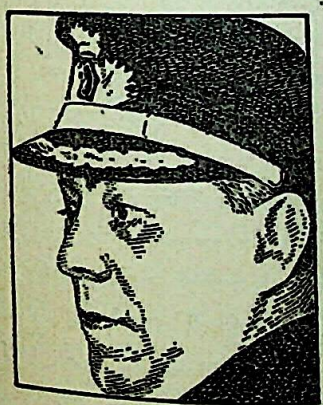

एडमिरल ब्लांको

बास्क राष्ट्रवादियों का अंतिम ध्येय है स्पेन और फ्रांस के समस्त बास्क प्रांतों का एक स्वतंत्र बास्क राज्य स्थापित करना। शायद इन दोनों देशों में बंटे बास्क लोगों की एकता और साझी आकांक्षा को उजागर करने के लिए ही एडमिरल ब्लांको की हत्या के बाद बास्क छापा मारों ने स्पेनी सीमा को पार करके फ्रांस में एक गुप्त प्रेस संमेलन किया और उसमें इस हत्याकांड पर विस्तार से प्रकाश डाला।

बास्क आंदोलनकारियों का कहना है कि हमारी जाति बहुत पुरानी है और इतिहास में हमने कभी किसी से हार नहीं मानी। हम रोमनों और मूरों का तथा शार्लमैन के समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में फ्रांक लोगों का प्रतिरोध कर चुके हैं। गोल चेहरे और मजबूत काठी के बास्क लोग स्वभाव से उद्यमी और आक्रामक रहे हैं। यदि कभी उनका स्वतंत्रता-आंदोलन सफल हो गया, तो स्पेन की आर्थिक रीढ़ ही टूट जायेगी; क्योंकि तब स्पेन को अपने सबसे संपन्न औद्योगिक क्षेत्र से हाथ धोना पड़ेगा।

किंतु स्पेन की मौजूदा शासन-व्यवस्था को खतरा सिर्फ बास्क राष्ट्रवादियों से ही नहीं है। संविधान के अंतर्गत स्थापित सरकारी मजदूर-संघों से असंतुष्ट स्पेनी श्रमिक सरकार-विरोधी, मार्क्सवादी-वामपंथी मजदूर-संघों के समर्थक बनते जा रहे हैं। दूसरी ओर, सत्ताभोगी अनुदारवादी तत्त्व किसी भी परिवर्तन का संघटित विरोध करने को तत्पर हैं। कहा जाता है कि बास्क राष्ट्रवादियों का खानों, इस्पात कारखानों तथा कपड़ा-मिलों के मार्क्सवादी-समाजवादी श्रमिक नेताओं से संबंध है। लंदन के 'संडे टाइम्स' के प्रतिनिधि ने तो यहां तक दावा किया है कि एडमिरल ब्लांको की हत्या की योजना श्रमिक संघटनों और बास्क राष्ट्रवादियों की संयुक्त समिति ने ही बनायी थी।

चाहे यह बात सही हो या नहीं, मगर ब्लांको की हत्या के बाद दक्षिणपंथी फासिस्टों की गतिविधियां भी निश्चय ही बढ़ी हैं। 'साम्यवादियों को मृत्युदंड दो' का नारा लगाकर वे प्रत्येक वामपंथी-विरोधी का सफाया करने की मांग कर रहे हैं। इससे रोमन कैथलिक चर्च में भी उदारवादी पादरियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

स्पेन में अभी भी गिरजे के विशपों की नियुक्ति सरकार की देख-रेख में होती है। सरकार-समर्थक पादरी चर्च पर हावी रहते हैं। मगर अधिकांश प्रगतिशील पादरी सरकार-विरोधी रुझान के हैं। कुछ समय पूर्व उन्होंने चर्च और सरकार को अलग करने की मांग की थी और उनमें से कुछ ने अभिव्यक्ति और राजनैतिक गतिविधि की स्वतंत्रता की मांग के समर्थन में भूख-हड़ताल तक की थी। सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेलों में ठूंस दिया, जहां वे राजनैतिक बंदी के दर्जे की मांग कर रहे हैं।

वस्तुतः स्पेन की मूल समस्या है शासन-तंत्र, न्यायपालिका और धार्मिक संस्थानों में समय के साथ अपेक्षित परिवर्तन का न होना। वहां की समस्त व्यवस्थाएं आज के बजाय १८९२ की परिस्थितियों के अनुरूप हैं। उसी वर्ष ४ दिसंबर को समुद्र-तटवर्ती नगर एलफेरोल में स्पेन के वर्तमान राष्ट्राध्यक्ष फ्रांसिस्को फ्रांको का जन्म नौसेना के एक वेतनाधिकारी के घर हुआ था। फ्रांसिस्को ने नौसेना में उच्च अधिकारी बनने का स्वप्न देखा था; मगर वह बना स्थलसेना का अफसर और इसी हैसियत से उसने मोरक्को में बागी बरबर कबायलियों के दमन के लिए स्पेन द्वारा की गयी सैनिक कार्रवाई में भाग लिया। ३४ वर्ष की अवस्था में वह स्पेनी सेना का सबसे कमउम्र जनरल बन गया।

दस वर्ष बाद १९३६ में जनरल फ्रांको के जीवन का सबसे बड़ा मोड़ आया। वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्लांको, फ्रांको और भावी राजा बोर्बोन-वंशी जुआन कार्लोस—तीनों टोप पहने।

स्पेन के समकालीन इतिहास का भी एक दर्दनाक मोड़ था। गणतंत्र के समर्थकों और उसके विरोधियों के बीच जबर्दस्त गृहयुद्ध छिड़ गया। फ्रांको तब अभी मोरक्को में ही था। अपने दकियानूसी विचारों के अनुरूप ही उसने गणतंत्र के विरुद्ध लड़ने का निर्णय किया और स्थलसेना की विमान-टुकड़ी के प्रमुख के रूप में अपने सैनिकों को गणतंत्र पर आक्रमण का आदेश दे दिया। गृहयुद्ध के आरंभिक दौर में फ्रांको से ऊपर के सैनिक अधिकारी खेत रहे और विद्रोहियों का सेनापतित्व उसे प्राप्त हो गया।

स्पेनी गृहयुद्ध तीन वर्षों तक खिंचा था और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बुनियादी सिद्धांतों, आदर्शों और भावना का पेचीदा प्रश्न बन गया था—चौथाई सदी बाद के वियतनाम-युद्ध की तरह, एक ओर थी गणतंत्रीय सरकार और दूसरी ओर थे राजतंत्र-समर्थक स्पेनी फौजी। इस गृहयुद्ध में सोवियत संघ गणतंत्र का समर्थन कर रहा था, तो हिटलर का नाजी जर्मनी फ्रांको का पक्षधर था। इन देशों के समर्थक तो पक्ष-विपक्ष से गृहयुद्ध में कूदे ही, अनेक देशों के स्वतंत्रचेता बुद्धिजीवी अंतरराष्ट्रीय सशस्त्र दस्ता तैयार करके गणतंत्र की ओर से युद्धभूमि में लड़े। आंद्रे मालरो, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, जार्ज आर्वेल तथा आर्थर कोस्लर जैसे लेखक भी इनमें थे, जो आगे चलकर शीर्षस्थ रचनाकार बने।

फिर भी गणतंत्र पराजित हुआ और फासिस्ट-समर्थित फ्रांको विजयी हुआ। इस परिणति ने स्पेन के भविष्य को ही नहीं, अपितु समस्त यूरोप और उसके माध्यम से समस्त संसार के घटनाचक्र को प्रभावित किया। यूरोप के बुद्धिजीवियों के मानस पर तो पराजय और शर्म का ऐसा दाग लग गया कि बाद में अस्तित्ववादी रचनाकार अलबेयर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामू ने लिखा था—'स्पेन में ही मनुष्य ने सीखा कि कोई पक्ष सही होकर भी पराजित हो सकता है, शक्ति आत्मा को हरा सकती है और ऐसे भी अवसर आते हैं, जब साहस को अपना प्रतिदान नहीं मिल पाता। यही कारण है कि स्पेन के उस नाटक को दुनिया-भर में बिखरे हुए इतने अधिक लोग अपनी निजी शोकांतिका मानते हैं।'

जब १९३९ में स्पेन का गृहयुद्ध ठंडा पड़ा, तब समूचा यूरोप दूसरे महायुद्ध की लपटों से लिपटने को तैयार हो रहा था। हिटलर और मुसोलिनी की मेहरबानी से गृहयुद्ध में विजय पाने वाले चालाक फ्रांको ने महायुद्ध में सीधे उलझने से इन्कार कर दिया। १९४० में हिटलर के संग पूरे ९ घंटे लंबे वार्तालाप के बावजूद उसने जर्मन सेनाओं को स्पेन के रास्ते से जिब्राल्टर पर चढ़ाई करने की छूट नहीं दी। हैरान हिटलर ने बाद में कहा था—'यह आदमी राजनीतिज्ञ होने लायक नहीं है।'

इसका अर्थ यह नहीं कि महायुद्ध में जनरल फ्रांको की सहानुभूति धुरी राष्ट्रों के साथ नहीं थी। बल्कि उसकी सहानुभूति इतनी स्पष्ट थी कि महायुद्ध के बाद राष्ट्र-संघ बनने पर उसमें स्पेन को तुरंत प्रवेश नहीं मिला। यह तो साम्यवादी और पश्चिमी देशों के बीच के उग्र शीतयुद्ध का प्रताप था कि १९५३ में पश्चिमी राष्ट्रों ने उसे फिर अपनी बिरादरी में शामिल किया।

तब जान फास्टर डलस अमरीका के विदेश-मंत्री थे, जिनकी मान्यता थी कि स्पेन को बचाये बिना पश्चिम यूरोप में साम्यवाद की लहर को रोकना असंभव होगा। लिहाजा अमरीका ने तुरंत स्पेन को ८॥ करोड़ डालर की आर्थिक और १४·१ करोड़ डालर की सामरिक सहायता दी। बदले में स्पेन ने अमरीका को अपने यहां वैमानिक और नौसैनिक अड्डे दिये। फ्रांको ने दंभ के साथ कहा था—'साम्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में अब पश्चिम को भी हमारी जरूरत है!'

आज जब रूस-अमरीका शीतयुद्ध को शीतनिद्रा में सुलाकर 'देतांत' (तनाव-हीनता) से भी एक कदम आगे 'आंतांत' (संधि) युग में प्रवेश कर रहे हैं, तो यूरोप की सुरक्षा-संबंधी स्थिति भी बदल रही है। अब पश्चिम को स्पेन की जरूरत नहीं रह गयी है, उलटे स्पेन को यूरोपीय आर्थिक समुदाय में संमिलित होने की जरूरत महसूस होने लगी है। लेकिन महायुद्ध में फ्रांको की भूमिका की यादें इसमें बाधक बन रही हैं।

किंतु ३ करोड़ ३८ लाख की आबादी वाला स्पेन आर्थिक दृष्टि से आज बहुत भिन्न है और तेजी से अपना औद्योगीकरण कर रहा है। १९६४ के बाद उसका कुल राष्ट्रीय उत्पादन ६·१ प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ा है और इस दृष्टि से समस्त गैर-साम्यवादी देशों में उसका स्थान तेरहवां है। उसकी प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय १९६० में सिर्फ ३१७ डालर थी, अब १,००० डालर से ऊपर है। उसके जहाज-निर्माण उद्योग का संसार में चौथा स्थान है और इस्पात-उद्योग का क्रम तेरहवां है। वहां प्रतिवर्ष करीब ६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाख कारें बनती हैं और निर्यात भी होती हैं।

इस आर्थिक उन्नति का एक दूसरा पक्ष भी है। देश की नयी संपन्नता में से श्रमिकों को न के बराबर ही हिस्सा मिला है और फलतः देश में आर्थिक विषमता पहले से भी अधिक बढ़ गयी है। वहां न्यूनतम वेतन अभी भी दो डालर प्रतिदिन है, जो पड़ोसी देशों की तुलना में काफी कम है। वेतन तथा रोजगार की सुविधाओं में सुधार के लिए श्रमिकों को न तो हड़ताल करने का कानूनी अधिकार है और न ही सरकार-नियंत्रित 'सिंडिकेटोस' के अतिरिक्त अपने स्वतंत्र मजदूर-संघ बनाने की छूट है। ऐसी परिस्थितियों में यदि दस लाख से अधिक स्पेनी मजदूर स्वदेश छोड़कर दूसरे देशों में जा बसे हैं, तो आश्चर्य ही क्या है? ये लोग करीब ५० करोड़ डालर प्रतिवर्ष घर भेजते हैं।

साथ ही शहरीकरण के कारण देहाती मजदूर गांव छोड़कर शहर को भागने लगे हैं और शहरों में उन्हें न सिर छिपाने को साया मिल पाता है और न कोई काम-धंधा। तेजी से बढ़ती हुई कीमतें भी उनका जीना दुश्वार कर रही हैं। पिछले वर्षों में वहां मुद्रास्फीति १ प्रतिशत प्रतिमास के हिसाब से बढ़ी है और परिणामस्वरूप बढ़ा है राजनैतिक असंतोष। १९७२ में तो कई नगरों में महिलाओं तक ने प्रदर्शनों पर लगे प्रतिबंध को तोड़कर बढ़ती महंगाई के विरुद्ध आंदोलन किया था।

इस समूची पृष्ठभूमि में जनरल फ्रांसिस्को फ्रांको ने अब ६५ वर्षीय कार्लोस एरियास नेवार्रो को प्रधान-मंत्री नियुक्त किया है। एरियास नेवार्रो की यदि कोई विशेषता रही है, तो यही कि फ्रांको में उसकी अनन्य और अविचल निष्ठा है और वह कानून और व्यवस्था के मामले में किसी भी तरह की ढील का विरोधी है। वह सरकारी वकील भी रहा है और पुलिस-विभाग का प्रधान भी। उसने अपने मंत्रिमंडल में अपेक्षाकृत उदारवादी तत्त्वों के स्थान पर कट्टरपंथी फेलांजिस्टों को ही लिया है। इसलिए निकट भविष्य में स्पेन में यदि विरोधियों के दमन का दौर शुरू हो जाये, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

लेकिन हाल की घटनाओं से सबसे बड़ा नुक्सान तो शायद स्पेन के मनोनीत राजा जुआन कार्लोस को उठाना पड़े। एरियास नेवार्रो श्रीमती फ्रांको का घनिष्ठ मित्र है। श्रीमती फ्रांको कार्लोस के बजाय उसके चचेरे भाई डान एल्फोंजो को (जिसे फ्रांको की पौत्री ब्याही गयी है) गद्दीनशीन देखना चाहती है, ताकि राजवंश के साथ फ्रांको-परिवार का संबंध और पुख्ता हो जाये।

किंतु स्पेन के समक्ष आधारभूत प्रश्न दो निरंकुश शासक-परिवारों के गठबंधन को पुख्ता करने का नहीं, अपितु इस गठबंधन को तोड़कर लोकतंत्र और समता के नये संसार में प्रवेश पाने का है। फ्रांको और उसके सांचे में ढले लोग स्पेन के इस अनिवार्य रूपांतर के मार्ग में बाधक हैं। फ्रांको के बाद स्पेन इस बाधा को हटाकर अपना नया मार्ग खोज पायेगा या नहीं, इसका उत्तर आने वाले कुछ वर्षों में मिल जायेगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जापान की बढ़ती अप्रियता

किशोर व्यास

एशिया के सबसे समृद्ध और विकसित देश जापान के प्रधान-मंत्री काकुई तनाका की दक्षिण-पूर्व एशिया के पांच विकासशील देशों की उस यात्रा को अतिथि और आतिथेयों ने सद्भाव-यात्रा कहा था। लेकिन पिछले जनवरी के मध्य में हुई इस यात्रा से और चाहे जो कुछ भी हुआ हो, जापान तथा उसके पड़ोसियों के बीच सद्भाव तो नहीं बढ़ा।

थाइलैंड में बैंकाक हवाई अड्डे पर उतरते ही जापानी प्रधान-मंत्री को गाड़ी में बैठकर पूर्व-निर्धारित होटल की शरण लेनी पड़ी। हवाई अड्डे पर सलामी देने और अतिथि तथा आतिथेय देशों की राष्ट्रधुनें बजाने-जैसी अनिवार्य औपचारिकताएं भी पूरी नहीं हो पायीं। हवाई अड्डे से होटल तक सड़क के दोनों ओर जापान-विरोधी प्रदर्शनकारी जमा थे।

उधर बैंकाक के व्यावसायिक कार्यालयों पर सोनी, सान्यो, डाट्सन जैसी जापानी दैत्य-कंपनियों के नियोन-विज्ञापन चमचमा रहे थे। प्रदर्शनकारियों की शिकायत थी कि जापान थाइलैंड में अपने आर्थिक साम्राज्य का शिकंजा मजबूत कर रहा है। प्लैकार्डों पर लिखा था—'जापान सिर्फ लेना जानता है, देना नहीं; तनाका वापस जाओ!'

इंदोनेशिया में तो प्रदर्शनकारियों का आक्रोश और भी उग्र रहा। १९६५ की उथल-पुथल के बाद यही पहला अवसर था, जब छात्रों ने बड़े पैमाने पर राष्ट्रपति जनरल सुहर्तो की सरकार की अवज्ञा की और जापानी अतिथि को अपना कार्यक्रम बीच में ही रद्द करके स्वदेश लौटने को विवश कर दिया।

प्रदर्शनकारी छात्रों पर गोली चलायी गयी और पहले दिन के प्रदर्शन में एक छात्र मारा भी गया। दूसरे दिन जापानी सामान की होली जला रहे छात्रों पर काबू पाने के लिए स्वयं प्रतिरक्षा-मंत्री दो सौ सैनिकों की टुकड़ी लेकर सड़कों पर घूमते रहे। थाइलैंड की तरह यहां भी प्रदर्शनकारियों की मुख्य शिकायत थी उनके देश पर जापान के बढ़ते हुए आर्थिक नियंत्रण के विरुद्ध।

थाइलैंड और इंदोनेशिया के छात्रों की जापान-विरोधी भावनाएं और जापान के विरुद्ध उनकी शिकायतें निराधार भी नहीं हैं। यह सर्वविदित है कि पिछले बीस वर्षों में जापान ने असाधारण गति से आर्थिक उन्नति की है। द्वितीय महायुद्ध में तहस-नहस हुई अर्थव्यवस्था से आरंभ करके जापान ने अपना कुल राष्ट्रीय उत्पादन सन १९७० में २०० अरब डालर तक पहुंचा लिया।

यद्यपि यह संयुक्त राज्य अमरीका के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुल राष्ट्रीय उत्पादन का पंचमांश ही है, तो भी जापान को अमरीका और सोवियत संघ के बाद तीसरी आर्थिक महाशक्ति का पद दिलवाने को पर्याप्त था। वैसे यह कहा जाने लगा है कि अरब-इस्रायल युद्ध से जनित तेल-संकट शायद जापानी आर्थिक समुन्नति के चमत्कार को समाप्त कर दे; लेकिन अगर ईंधन संबंधी समस्या हल हो जाये, तो जापान का कुल राष्ट्रीय उत्पादन १९८० तक ७०० या ८०० अरब डालर तक पहुंचने की आशा है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस बढ़ती हुई समृद्धि के साथ जापान का विदेश-व्यापार भी तेजी से बढ़ा है। १९७० में जापान संसार-भर के निर्यातों का ७ प्रतिशत माल निर्यात करता था। अनुमान है कि अगले वर्ष (१९७५) तक शायद यह १० प्रतिशत हो जायेगा।

जापान का ज्यादातर माल एशिया के विकासशील देशों को निर्यात होता है। आकड़ों में कहें, तो १९६७ में एशिया के विकासशील देश अपने कुल आयात का २० प्रतिशत माल जापान से आयात करते थे। जापान इकोनॉमिक रिसर्च सेंटर का अनुमान है कि १९७५ के अंत तक इसकी मात्रा ४० प्रतिशत तक पहुंच जायेगी और १९८० में तो ५० प्रतिशत तक। दूसरे शब्दों में, शीघ्र ही एशिया के विकासशील देश जापान के आर्थिक उपनिवेश-से बन जायेंगे। जापान से उनका संबंध वही होगा, जो दक्षिण अमरीकी देशों का संयुक्त राज्य अमरीका से है।

जापान के इस आर्थिक अभ्युदय की सबसे अधिक कीमत दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों को चुकानी पड़ेगी। एक तरह से अभी भी वे चुका रहे हैं। थाइलैंड का उदाहरण लें। जापान थाइलैंड को जितना माल निर्यात

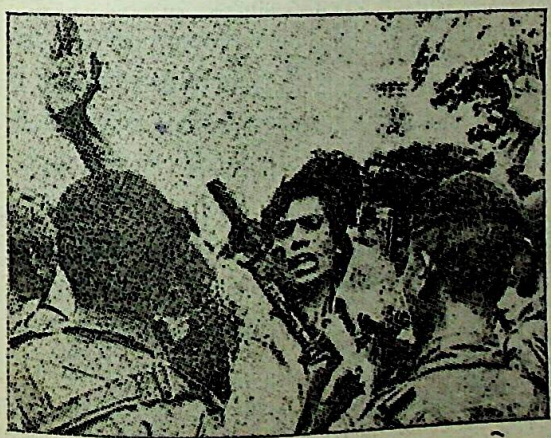

जकार्ता में जापान-विरोधी छात्रों के सीनों पर संगीनें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता है, उससे कम आयात करता है। यह अंतर १९७३ के पहले दस महीनों में २३ करोड़ ३० लाख डालर रहा। इंदोनेशिया की भी स्थिति कमोवेश यही है।

सच तो यह है कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देश जापान की औद्योगिक अर्थव्यवस्था के लिए कच्चा माल जुटाने और तैयार माल खपाने के बाजारों में बदलते जा रहे हैं। दूसरे विकासशील देशों की तरह ही इन देशों में भी सत्ताधारी वर्ग जापान से शौकीनी और विलासिता की चीजें अधिक आयात करता है और विकास के लिए आवश्यक यंत्रोपकरण कम। इसका नतीजा भयानक हुआ है।

जापानी कारों और घरेलू उपकरणों की टीमटाम ने इन देशों में धनिक और निर्धन के बीच की खाई और चौड़ी कर दी है। थाइलैंड के छात्रनेता सोम्बात थाम्रोंगथान्यावोंग ने आरोप लगाया है कि आयातित जापानी विलास-सामग्री के कारण सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार बढ़ा है।

यह आरोप गलत नहीं है। पिछले साल थाइलैंड के छात्र-विद्रोह के बाद इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने आये कि सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञों के साथ जापानी व्यापारी फर्मों की कैसी सांठ-गांठ थी। तब बैंकाक के जापानी चेम्बर आफ कामर्स की सदस्य २६३ फर्मों में से ६० पर आरोप लगा था कि उन्होंने राजनीतिज्ञों को घूस देकर नाजायज ढंग से अपना काम साधा है। छात्रों द्वारा अपदस्थ किये गये प्रधान-मंत्री थनोम किर्त्तिकाचोर्न की पत्नी भी एक जापानी फर्म के साथ भ्रष्टाचार-प्रकरण में गहरी उलझी हुई थीं। दक्षिण-पूर्व एशिया के दूसरे देशों में जापानी फर्मों का आचरण इससे भिन्न होगा, यह मानने का कोई कारण नहीं।

'फार ईस्टर्न इकोनॉमिक रिव्यू' के जापानी संवाददाता कोजी नाकामुरा का तो कहना है कि टोक्यो में अर्धसरकारी रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि रिश्वत तथा भ्रष्टाचार-जैसी अनैतिक कार्रवाइयां आज के व्यापारिक जीवन की अपरिहार्य बुराइयों में से हैं।

किंतु जापानी राजनीतिज्ञों पर भी आरोप है कि उन्होंने कतिपय व्यापारिक हितों के लिए अपनी राजनैतिक शक्ति का दुरुपयोग किया है। १९७२ में जापान के तत्कालीन प्रधान-मंत्री ईसाकु सातो ने पदत्याग से तुरंत पहले इंदोनेशिया को २० करोड़ डालर के तेल-ऋणों की घोषणा की थी। तब यह अफवाह उड़ी थी कि उन्होंने यह कदम इसलिए उठाया था कि अपने सत्तारूढ़ दल (लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी) के अध्यक्षपद के चुनाव को प्रभावित करने के लिए संबंधित फर्मों से आवश्यक धन जुटा सकें। कहते हैं, उस चुनाव में तत्कालीन विदेश-व्यापार और उद्योग-मंत्री काकुई तनाका तथा विदेश-मंत्री ताकेओ फुकुदा ने बहुमत पाने के लिए बड़े पैमाने पर धन बांटा था।

घरेलू राजनीति में ही नहीं, विदेशी राजनीति में भी जापानी अर्थशक्ति अक्सर चमत्कार दिखाती रही है। पिछले साल दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति-पद के भूतपूर्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्मीदवार किम दाई जुंग का जापान में अपहरण हुआ था। और जापानी संसद में उसकी चर्चा भी हुई थी। तब विरोधी दल ने सरकारी दस्तावेजों के आधार पर आरोप लगाया था कि जापान-कोरिया आर्थिक सहयोग प्रायोजनाओं के लिए निर्धारित राशि में से बहुत-सी रकम दक्षिण कोरिया के चुनावों के लिए खर्च की गयी और उसका कोई हिसाब नहीं दिया गया।

उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति पार्क चुंग ही के चुनाव क्षेत्र में स्थित एक तकनीकी हाईस्कूल के लिए ही करीब १०० करोड़ येन की रकम रखी गयी। उसमें से ५० करोड़ येन तो तुरंत खर्च भी कर दिये गये। उद्देश्य स्पष्ट था—पार्क को विजयी होने में सहायता करना।

दक्षिण कोरिया की तरह दक्षिण वियतनाम के शासकों के साथ भी जापान का निकट का संपर्क रहा है। वियतनाम-युद्ध का सबसे अधिक लाभ उठाने वाला एशियाई देश जापान ही है। जापान के अंतरराष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, १९६५ के बाद से जापान ने ६५० करोड़ डालर की युद्ध-संबंधी सामग्री तथा सेवाएं निर्यात की हैं, जिनमें से १७७ करोड़ डालर का सामान और सेवाएं अमरीकी सेना ने सीधी खरीदीं और २८३ करोड़ डालर का सामान और सेवाएं वियतनाम, फिलिप्पीन, ताइवान तथा दक्षिण कोरिया ने आयात कीं। शेष १९० करोड़ डालर का निर्यात युद्ध के कारण अमरीका को हुआ है।

जापानी प्रधान-मंत्री तनाका

वियतनाम की शांति-संधि की संभावना के साथ ही जापान ने अपना आर्थिक पासा भी पलट दिया। नवंबर १९७२ में ही उसने घोषणा कर दी थी कि वह वियतनाम के आर्थिक पुनर्निर्माण में सहयोग के लिए एक सर्वेक्षण-दल भेजने की तैयारी कर रहा है।

जापानी प्रधान-मंत्री तनाका ने दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा के बाद जापानियों को सलाह दी है कि अधिक विनम्रता तथा निष्पक्षता से परिस्थितियों का सामना करें और इन देशों के साथ अपने संबंधों में टकराव तथा तनाव टालें। लेकिन इसके लिए तो जापान को इन देशों के कच्चे माल और खनिजों के लिए ही नहीं, तैयार माल और खाद्यान्न के लिए भी अपने घरेलू बाजार का द्वार खोलना पड़ेगा।

जो भी हो, दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ जापान के आर्थिक-राजनैतिक संबंधों पर इस क्षेत्र की शांति-अशांति निर्भर है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चर्चित द्वीप

कुमार प्रशांत

हिन्द महासागर का छोटा-सा द्वीप ज्येगो गार्सिया आजकल अमरीका और सोवियत संघ की नौसैनिक स्पर्धा के कारण एकाएक चर्चा का केंद्र बन गया है। 'न्यूयार्क टाइम्स' ने समाचार दिया है कि अमरीका ज्येगो गार्सिया पर अपना एक नौसैनिक अड्डा स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है। अमरीकी प्रशासन का कहना है कि पश्चिम एशिया में इस्रायल तथा मिस्र के बीच समझौते के फलस्वरूप जब स्वेज नहर फिर से खुल जायेगी, तो हिन्द महासागर में रूसी नौसैनिक गतिविधियां भी बढ़ जायेंगी। तब इस क्षेत्र में शांति-संतुलन के लिए अमरीका को भी अपनी नौसैनिक गतिविधियां बढ़ानी पड़ेंगी। इसके लिए ज्येगो गार्सिया का नौसैनिक अड्डा काफी उपयोगी रहेगा।

श्रीलंका के लगभग दक्षिण व मारिशस के लगभग उत्तर में स्थित ज्येगो गार्सिया पर वस्तुतः ब्रिटेन का अधिकार है। १९६६ और १९७२ में अमरीका ने ब्रिटेन के साथ दो समझौते करके इस नन्हे-से टापू पर एक छोटा-सा संचार-केंद्र स्थापित करने की सुविधा प्राप्त कर ली। पिछले वर्ष से यह केंद्र काम भी करने लगा है।

यद्यपि यह संचार-केंद्र अमरीकी प्रतिरक्षा-विभाग के अंतर्गत है, लेकिन जब भी भारत ने इस संबंध में एतराज उठाया है, अमरीका ने इस केंद्र को मामूली-सा कहकर बात टाल दी है। लेकिन अब अमरीका का इरादा बड़े पैमाने पर नौसैनिक चहल-पहल शुरू करने का प्रतीत होता है।

ब्रिटेन को इस पर कोई विशेष आपत्ति नहीं होगी। अभी तो उसने इतना ही कहा है कि उसने ज्येगो गार्सिया के संबंध में अमरीका के किसी प्रस्ताव को ठुकराया नहीं है। मगर अर्थ स्पष्ट है—ब्रिटेन को ज्येगो गार्सिया में अमरीकी नौसैनिक अड्डे की स्थापना पर कोई आपत्ति नहीं है। अलबत्ता इस केंद्र की स्थापना का भारत ने जो विरोध किया है, उस पर ब्रिटिश विदेश-मंत्री सर अलेक डगलस-ह्यूम को आपत्ति है।

ज्येगो गार्सिया मारिशस से कोई एक सौ मील तनिक उत्तर-पूर्व में शागोस द्वीप-समूह का सबसे बड़ा द्वीप है। इसका विशेष महत्त्व अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण है। द्वितीय महायुद्ध के समय मित्र राष्ट्रों ने इस द्वीप में पेट्रोल जमा किया था और प्रशांत महासागर से हिन्द महासागर आते हुए मित्र-राष्ट्रीय जहाज यहां से तेल लिया करते थे। अठारहवीं शताब्दी में एक पुर्तगाली नाविक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने पहले-पहल इस द्वीप की खोज की और उसके नाम पर यह ज्येगो गार्सिया कहलाया।

साम्राज्यवादी युग में इस द्वीप की राजनीति दक्षिणवर्ती मारिशस द्वीप से जुड़ी रही। १७१० में डचों ने और फिर १७२२ में फ्रांसीसियों ने मारिशस पर अधिकार जमाया। फ्रांस ने नब्बे वर्षों तक इस टापू पर अधिकार बनाये रखा। लेकिन ब्रिटेन ने मारिशस पर से फ्रांसीसियों को भगा दिया और १८१० में फ्रांस की हार के बाद ब्रिटेन का एकछत्र राज वहां चलता रहा। १२ मार्च १९६८ को मारिशस ने स्वतंत्रता हासिल की।

स्वतंत्रता देने से पूर्व ब्रिटेन ने मारिशस से यह आश्वासन ले लिया कि वह शागोस द्वीप-समूह को बेच देगा। मारिशस कई मामलों में, विशेषतः प्रतिरक्षा के मामले में—ब्रिटेन पर अवलंबित था ही, उसने शागोस द्वीप-समूह को ३० लाख पौंड में बेच दिया। उसने सिर्फ एक शर्त रखी—यदि द्वीप-समूह में भविष्य में कभी भी कुछ खनिज संपत्ति प्राप्त होगी, तो वह मारिशस की होगी। ८ नवंबर १९६५ को ब्रिटेन ने इस द्वीप-समूह को 'हिन्द महासागर का ब्रितानी प्रदेश' घोषित कर दिया।

ज्येगो गार्सिया १५ मील लंबा है तथा उसकी चौड़ाई ४ से ७ मील तक है। ज्वार-भाटे के जलभराव क्षेत्र और बालू को छोड़कर क्षेत्रफल १७ वर्गमील है। यह सारी ही जमीन लगभग समतल होने की वजह से किसी भी सामरिक तैयारी के लिए उपयुक्त है। साथ ही यहां ऐसी कोई आबादी भी नहीं, जो किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न करे।

अफ्रीकी या एशियाई देशों के तटों से हजारों मील दूर सागर के अपार विस्तार में छिपा हुआ जमीन का यह छोटा-सा टुकड़ा किसी भी देश को यह भनक तक नहीं होने देता कि यहां क्या हो रहा है!

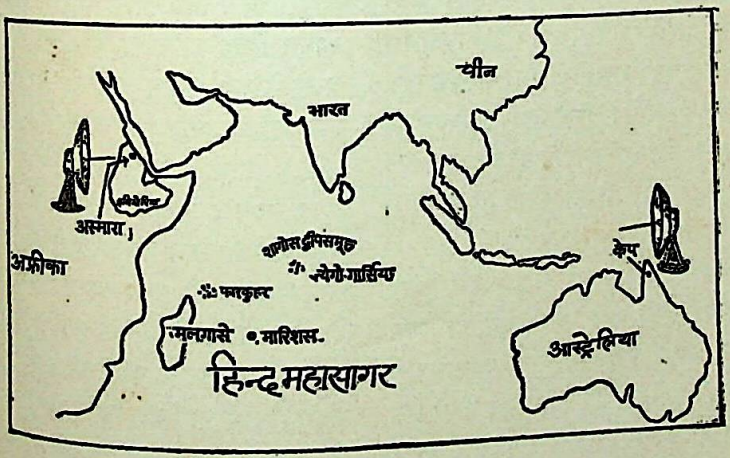

भावी सैनिक अड्डा ज्येगो गार्सिया और इथियोपिया एवं केप के संचार-केंद्र।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आस्ट्रेलिया की उत्तरी नोक 'केप' पर तथा इथियोपिया में अस्मारा में ऐसा ही अमरीकी संचार-केंद्र स्थापित है। उन दोनों के ठीक मध्य में अवस्थित है ज्येगो गार्सिया। हिन्द महासागर के ऊपर अंतरिक्ष में एक अमरीकी उपग्रह है, जो हिन्द महासागर क्षेत्र में घटने वाली किसी भी घटना की सूचना रेडियो चित्रों के जरिये केप और अस्मारा के संचार-केंद्रों को भेजता रहता है। उनकी क्षमता अब ज्येगो गार्सिया के आधुनिकतम संचार-केंद्र से और भी बढ़ गयी है।

श्री विल्सन की मजदूर-दलीय सरकार ने निर्णय किया था कि १९७१ के अंत तक स्वेज नहर के पूर्व से ब्रिटिश फौजें वापस हटा ली जायें। फौजों की वापसी के उपरांत भी अपना प्रभुत्व कायम रहे, इसी इरादे से ज्येगो गार्सिया में संचार-केंद्र की स्थापना की बात भी पक्की हो गयी थी। सन १९७० के चुनाव में मजदूर-दल हार गया और तभी अनुदार-दल की सरकार ने घोषणा की कि ब्रिटिश फौज की वापसी-तिथि अनिश्चित है।

स्वेज के पूर्व से ब्रिटिश सेना की वापसी के निर्णय से बड़ी शक्तियों में होड़ मच गयी। असल में १९६८ से ही सोवियत यानों ने इस क्षेत्र में चहलकदमी शुरू कर दी थी। आज एक नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र, कुछ क्रूजरों, चार विध्वंसकों तथा कुछ पनडुब्बियों के साथ कोई २० युद्धपोत रूस ने हिन्द महासागर में तैनात कर रखे हैं। भूमध्य सागर में तो रूस की स्थिति बड़ी तगड़ी है, और स्वेज के खुलने पर रूस के कोई ५० बड़े जहाज एक-दो दिनों में ही हिन्द महासागर में पहुंच सकते हैं।

ज्येगो गार्सिया में अमरीकी अड्डे की स्थापना के पीछे रूसी जलशक्ति का भय है। वैसे प्रशांत महासागर व हिन्द महासागर में अमरीका का छठा व सातवां बेड़ा है, जिसकी शक्ति विमान-वाहक पोतों के कारण विश्व में सबसे अधिक है।

अमरीका भले ही रूसी सेना की गतिविधियों का बहाना बनाये, लेकिन हिन्द महासागर में उसकी अपनी नौसेना की दौड़-धूप भी कम नहीं रही है। बाङ्ला देश के युद्ध के दौरान जब उसके सातवें बेड़े की दहशत भी काम न आयी, तब अमरीकी प्रतिरक्षा-विभाग ने हिन्द महासागर-क्षेत्र में कुछ-कुछ महीनों बाद अमरीका के नौसैनिक दस्ते भेजते रहने की घोषणा की थी। बहुत मुमकिन है कि ज्येगो गार्सिया का नौसैनिक अड्डा भी उसी कार्यक्रम की अगली कड़ी हो।

लेकिन इतना निश्चित है कि इस अड्डे के कारण हिन्द महासागर में शक्ति-प्रतिस्पर्धा घटने के बजाय कुछ और बढ़ जायेगी। तब हिन्द महासागरीय क्षेत्र तनावपूर्ण हो उठेगा।

इन खतरों से भारत तथा श्रीलंका जैसे हिन्द महासागरीय देश गाफिल नहीं हैं। श्रीलंका की प्रधान-मंत्री श्रीमती सिरिमावो भंडारनायक की हाल की भारत-यात्रा के दौरान दोनों देशों की प्रधान-मंत्रियों ने हिन्द महासागर में तनाव बढ़ाने की कार्रवाइयों के संबंध में ठीक ही चिंता व्यक्त की है। इंदोनेशिया के राष्ट्रपति भी चिंतित हैं।

—कालीकोठी, मुजफ्फरपुर, बिहार

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन

प्रकृति

महान कवि की भांति प्रकृति भी अत्यंत सहज साधनों से गजब का प्रभाव उत्पन्न करती है। मामूली से तो साधन हैं—सूरज, फूल, जल और प्रेम! अलबत्ता यदि दर्शक के पास इनमें से अंतिम वस्तु न हो तो उसे सारा ही नजारा बहुत घटिया दिखाई देता है; वृक्ष निरे ईंधन का स्रोत हो जाते हैं; फूल प्रजनन-अवयव की श्रेणी में आ जाते हैं; पानी नमी के सिवा कुछ नहीं रह जाता।

—हाइनरिश हाइन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा-मौक्तिक

रामकृष्ण परमहंस

एक यात्री जंगल में से जा रहा था कि तीन डाकुओं ने उसे पकड़ लिया और उसका सब कुछ छीन लिया। एक डाकू बोला—'अब इस आदमी को जिंदा रहने देने से क्या लाभ?' और वह तलवार लेकर बेचारे यात्री को मारने दौड़ा।

तब दूसरे डाकू ने उसे रोका और कहा—'अब आदमी को मारने से क्या लाभ! हाथ-पांव बांधकर इसे यहीं छोड़ देते हैं।' डाकू ऐसा ही करके आगे बढ़ गये।

कुछ देर बाद तीसरा डाकू लौटा और यात्री से बोला—'भाई, मुझे बहुत अफसोस है। तुम्हें चोट तो नहीं लगी? मैं तुम्हारे बंधन तोड़ देता हूं।' यात्री को बंधनमुक्त करके डाकू ने कहा—'मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें बड़ी सड़क पर पहुंचा दूंगा।'

काफी देर चलने के बाद वे दोनों बड़ी सड़क पर पहुंचे। वहां पहुंचकर यात्री ने कहा—'भाई, तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मेहरबानी करके मेरे घर आओ।' इस पर डाकू बोला—'न भाई, मैं वहां नहीं आ सकता। पुलिस को खबर लग जायेगी।'

दुनिया एक जंगल है। उसमें घूमते तीन डाकू हैं—सत्त्व, रजस्, तमस्। वे ही मनुष्य को सत्यज्ञान से वंचित करते हैं। तमस् उसका खात्मा कर देना चाहता है। रजस् उसे संसार से बांध डालता है। परंतु सत्त्व उसे तमस् और रजस् के चंगुल से छुड़ाता है।

सत्त्व के संरक्षण में मनुष्य क्रोध-मोह आदि तामस दुष्प्रभावों से मुक्त होता है। आगे चलकर सत्त्व सांसारिक बंधनों को भी ढीला करता है।

परंतु सत्त्व भी डाकू है। वह अंतिम सत्य-ज्ञान नहीं दे सकता; हालांकि वह मनुष्य को प्रभु के परम प्रासाद को जाने वाली बड़ी सड़क दिखा देता है। मनुष्य को उस सड़क पर पहुंचाकर सत्त्व उससे कहता है—'वह देखो। वह तुम्हारा घर है।' सत्त्व भी ब्रह्म-ज्ञान से बहुत दूर है।

० ० ०

एक बार नारद ने भगवान विष्णु से निवेदन किया—'प्रभो! मुझे अपनी माया का दर्शन कराइये, जो असंभव को संभव कर देती है।' भगवान ने सहमति में सिर हिलाया।

फिर एक दिन भगवान विष्णु नारद को अपने साथ लेकर काम पर निकले। कुछ दूर जाने पर भगवान को बड़ी थकावट और प्यास अनुभव हुई। वे बैठ गये और नारद से बोले—'भाई, मुझे तो बहुत प्यास लगी है। कहीं से जरा पानी ले आओ।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारद पानी की खोज में निकले। निकट कहीं पानी न होने से उन्हें बहुत दूर जाना पड़ा। वहां उन्हें एक नदी दिखाई दी। जब वे नदी के निकट पहुंचे, वहां उन्हें एक अत्यंत रूपवती युवती बैठी हुई दिखाई दी। वे उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गये।

ज्यों ही नारद उसके पास पहुंचे, वह बड़ी मीठी आवाज में उनसे बातें करने लगी और शीघ्र ही उनमें परस्पर प्रेम पैदा हो गया। नारद ने उससे विवाह करके घर बसा लिया। फिर उनके कई बच्चे भी हुए।

जब नारद इस तरह पत्नी-पुत्रों के साथ सुखपूर्वक जीवन बिता रहे थे। अचानक उस देश में महामारी फैली और लोग धड़ाधड़ मरने लगे। नारद ने कहा कि घर छोड़कर और कहीं चले चलना चाहिये। पत्नी को भी यही ठीक लगा। दोनों बच्चों को लेकर घर से चल पड़े। चलते-चलते वे लोग उसी

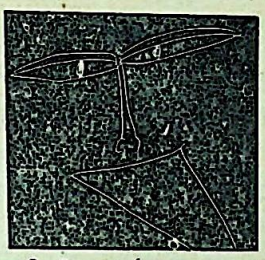

कालीमां : पपू (सुब्रत सरकार)

नदी पर पहुंचे और पुल पार करने लगे। इतने में अचानक ही नदी में बाढ़ आ गयी और उनके बच्चे बह गये। फिर पत्नी को भी नदी ने निगल लिया। दुःख से विह्वल होकर नारद नदी-किनारे बैठफूट-फूटकर रोने लगे।

तभी भगवान उनके समक्ष प्रकट हुए और बोले—'हे नारद! पानी कहां है? और तुम रो क्यों रहे हो?' भगवान को समक्ष देखकर नारद चौंक पड़े और तत्काल सारी बात समझ में आ गयी। वे बोल उठे—'प्रभो! आपको और आपकी माया को प्रणाम!'

*

शांति की बातें करने वाले ज्ञानियों का दिमाग यदि ठंडी चाय के मिलते ही गरम हो जाये, तो क्या वे ज्ञानी कहलाने के अधिकारी हैं?

व्यापारी व्यापार करता है इसमें कोई दोष नहीं। उचित मुनाफा कमाना भी पाप नहीं; परंतु ग्राहक के अज्ञान या भोलेपन का नाजायज फायदा उठाकर उसे लूट लेना पाप है।

'अमुक कार्य करने से अमुक फल मिलेगा', मात्र ऐसे ज्ञान से काम नहीं बनता। दुःख और दारिद्रय की निवृत्ति तो ज्ञानपूर्वक हाथ में औजार लेकर जुट जाने से ही होगी। अतः ज्ञान को स्वानुभव में लाने की आदत डालनी चाहिये।

अगर कहीं कुएं से निकाला गया पानी चलनीमें लेकर घर लाया जा सके, तो ही अभिमानपूर्वक किये गये सत्कर्म के पुण्य से प्रभु के घर पहुंचा जा सकता है।

—डोंगरे महाराज

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राचीन भारत में मदनोत्सव

• डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी •

संस्कृत के किसी भी काव्य, नाटक, कथा और आख्यायिका को पढ़िये, वसंत ऋतु का उत्सव उसमें किसी न किसी बहाने अवश्य आ जायेगा। कालिदास तो वसंतोत्सव का बहाना ढूंढ़ते रहते-से लगते हैं। मेघदूत वर्षा ऋतु का काव्य है, पर यक्षप्रिया के उद्यान के वर्णन के प्रसंग में प्रिया के नूपुर-युक्त वामचरण के मृदुल आघात से कंधे पर से फूट उठने वाले अशोक और मुख-मदिरा से सिंचकर खिल उठने को लालायित वकुल की चर्चा उसमें आ ही गयी है। वस्तुतः अशोक और वकुल को इस प्रकार खिला देने का उत्सव वसंत में ही मनाया जाता था।

वसंत का समय प्राचीन भारत में उत्सवों का काल हुआ करता था। कामसूत्र में इस समय के कई उत्सवों की चर्चा आती है। इनमें दो बहुत प्रसिद्ध हैं—मदनोत्सव और सुवसंतक। कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने दोनों को एक मान लिया है; पर अन्य ग्रंथों से स्पष्ट है कि ये दोनों उत्सव अलग-अलग दिनों को मनाये जाते थे। भोजदेव के अनुसार, सुवसंतक वसंतावतार का उत्सव है—आजकल का वसंतपंचमी का उत्सव। मदनोत्सव होली के रूप में आज भी पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। वात्स्यायन के कामसूत्र में भी इसका उल्लेख है।

पुराने ग्रंथों से पता चलता है कि फागुन से आरंभ करके चैत के महीने तक वसंतोत्सव कई प्रकार से मनाया जाता था। इसके दो रूप बहुत प्रसिद्ध थे। एक सार्वजनिक धूम-धाम का और दूसरा कामदेव के पूजन का। सम्राट् हर्षदेव की रत्नावली नाटिका में इन दोनों प्रकार के उत्सवों का बड़ा ही सरस और जीवंत वर्णन मिलता है।

उस दिन सारा नगर पुरवासियों की करतल ध्वनि, मधुर संगीत और मृदंग के मादक घोष से मुखरित हो उठता था। नागर जन मदमत्त हो उठते थे। राजा अपने ऊंचे प्रासाद की सबसे ऊंची चंद्रशाला में बैठकर नगरवासियों के आमोद-प्रमोद का रस लेते थे। नागरिकाएं मधुमास से मत्त होकर सामने पड़ जाने वाले किसी भी पुरुष को पिचकारी (शृंगक) के रंगीन जल से सराबोर कर देती थीं। राजमार्गों के चौराहों पर मर्दल नाम के ढोल और चर्चरी गीत की ध्वनियां मुखरित हो उठती थीं। सुगंधित पिष्टातक (अबीर) से दिशाएं रंगीन हो उठती थीं। केशर-मिश्रित पिष्टातक से राजपथ और प्रासाद इस प्रकार आच्छादित हो उठते थे कि प्रातःकालीन उषा की छाया का भ्रम होने लगता था।

नागर जनों के शरीर पर शोभमान हेमालंकार और सिर पर धारण किये हुए अशोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लाल-लाल फूल इस सुनहरी आभा को और भी बढ़ा देते थे। ऐसा जान पड़ता था कि कुबेर को भी अपनी समृद्धि से जीतने का दावा करने वाली सारी नगरी सुनहरे रंग में डुबो दी गयी है—

कीर्णैः पिष्टातकौघैः कृतदिवसमुखैः
कुंकुमस्नातगौरैः
हेमालंकारभाभिर्भरनमितशिखैः
शेखरैः कैंकिरातैः।
एषा वेषाभिलक्ष्यस्वभवनविजिता-
शेषवित्तेशकोषा
कौशाम्बी शातकुम्भद्रवखचितजने-
वैकपीता विभाति॥
(रत्नावली १.११)

उस दिन बड़े घरों के सामने आंगन में फव्वारे पूरे वेग से छूटते रहते थे और नागरिकाओं की, अपनी पिचकारी में पानी भरने की उल्लास-लालसा को पूरा करने में सहायक हुआ करते थे। इस स्थान पर पौर-युवतियों के बराबर आते रहने से उनके सीमंत के सिंदूर और कपोलों के अबीर झरते रहते थे और सारा फर्श लाल कीचड़ से भर जाता था, फर्श सिंदूरमय हो उठता था—

धारायन्त्रविमुक्तसन्ततपयःपूरप्लुते सर्वतः
सद्यःसान्द्रविमर्दकर्दमकृतक्रोडे क्षणं प्रांगणे।
उद्दामप्रमदाकपोलनिपतत्सिन्दूररागारुणैः
सैन्दूरीक्रियते जनेन चरणन्यासैःपुरः कुट्टिमम्॥

मगर इस उत्सव का सर्वाधिक हुड़दंगी रूप वार-वनिताओं के मुहल्ले के वर्णन में मिलता है। निस्संदेह यह होली का पुराना रूप है।

इसके साथ ही इस उत्सव का एक शांत-स्निग्ध चित्र भी मिलता है। भवभूति के मालती-माधव नामक प्रकरण में एक मदनोत्सव का चित्र है। उससे पता चलता है कि मदनोद्यान—जो विशेष रूप से इस उत्सव के लिए ही बनाया जाता था—इसका मुख्य केंद्र हुआ करता था। इसमें कामदेव का मंदिर हुआ करता था। इसी उद्यान में नगर के स्त्री-पुरुष एकत्र होकर भगवान कंदर्प की पूजा करते थे। यहां पर लोग अपनी इच्छा के अनुसार फूल चुनते, माला बनाते, अबीर-कुंकुम से क्रीडा करते और नृत्य-गीत आदि से मनोविनोद किया करते थे।

इस मंदिर में प्रतिष्ठित परिवारों की कन्याएं भी पूजनार्थ आया करती थीं और मदन देवता की पूजा करके मनोवांछित वर की प्रार्थना करती थीं। जनता की भीड़ प्रातः-काल से ही शुरू हो जाती थी और संध्याकाल तक अबाध गति से आती रहती थी। मालती-माधव से पता चलता है कि अमात्य भूरिवसु की कन्या मालती भी इस उद्यान में कंदर्प-पूजन के लिए आयी थी। इस पूजन में धार्मिक बुद्धि की प्रधानता होती थी और शोरगुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और हुड़दंग का नाम भी नहीं था। यह मंदिर नगर के बाहर हुआ करता था।

मदन देवता की एक पूजा चैत्र के महीने में होती थी। अशोक वृक्ष के नीचे मिट्टी का कलश स्थापित किया जाता था। सफेद चावल भरे जाते थे। फलों और ईख का रस इस पूजा में नैवेद्य थे। कलश को सफेद वस्त्र से ढंका जाता था और चंदन भी उस पर सफेद ही छिड़का जाता था।

कलश के ऊपर ताम्रपत्र पर केले के पत्ते रखे जाते थे, जिस पर कामदेव और रति की प्रतिमा उतारी जाती थी और नाना भांति के गंध, धूप, नृत्य, गीत आदि से देवताओं को तृप्त किया जाता था। (यह मत्स्यपुराण की बात है।) इसके दूसरे दिन चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को भी पूजा होती थी। लोग व्रत रखते थे।

शिल्परत्न, विष्णुधर्मोत्तर पुराण आदि ग्रंथों में कामदेव की प्रतिमा बनाने की विधियां दी गयी हैं। विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार उसके आठ भुज हैं, चार पत्नियां हैं; परंतु शिल्परत्न में केवल यही कहा गया है कि वह अपूर्व सुंदर हो और उसकी बायीं ओर अभिलाषवती रति और दाहिनी ओर गृहकर्म-निरता प्रीति, ये दो पत्नियां हों। स्थायी मंदिरों में दोनों प्रकार की मूर्तियां बनती थीं; परंतु अशोक वृक्ष के नीचे जो मूर्ति बनती थी, वह द्विभुज ही होती होगी। रत्नावली नाटक में राजा को अशोक वृक्ष के नीचे बैठा देखकर रत्नावली को भ्रम हो गया था कि कामदेव साक्षात् आकर पूजा ग्रहण करते हैं।

कालिदास के मालविकाग्निमित्र और श्रीहर्षदेव की रत्नावली में इस उत्सव के सर्वाधिक सरस अनुष्ठान, अशोक में पुष्प खिलाने का विवरण मिलता है। भोजराज और श्रीहर्षदेव की गवाही पर कहा जा सकता है कि उस दिन सुंदरियां कुसुंभी रंग की साड़ी पहनती थीं। तुरंत स्नान करने से वासवदत्ता की शरीर-कांति और भी निखर आयी थी, वह कौसुंभराग से रंजित साड़ी पहनकर जब अशोक वृक्ष के नीचे कामदेव की पूजा कर रही थी, तो उसकी साड़ी का लाल पल्ला फड़फड़ा उठा था। उस समय राजा को ऐसा लगा था, जैसे तरुण प्रवाल-विटप की लता ही लहरा उठी हो—

प्रत्यग्रमज्जनविशेषविविक्तकांतिः
कौसुम्भरागरुचिरस्फुरदंशुकान्ता।
विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती
बालप्रवालविटपिप्रभवा लतेव॥

मालविकाग्निमित्र से पता चलता है कि मदन देवता की पूजा के बाद ही अशोक में फूल खिला देने का अनुष्ठान होता था। रत्नावली में भी इसकी चर्चा है। इस अनुष्ठान का रूप इस प्रकार था—कोई सुंदरी सर्वाभरणभूषिता होकर, पैरों को अलक्तक-राग से रंजित करके, नूपुर-सहित बायें चरण से अशोक वृक्ष पर आघात करती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इधर नूपुरों की हल्की झनझनाहट, उधर अशोक का सोल्लास कंधे पर से फूल उठना !

साधारणत: रानी यह कार्य करती थी। पर मालविकाग्निमित्र में बताया गया है कि उस रानी के पैरों में चोट आ गयी थी, इसलिए उन्होंने मालविका को भेज दिया था। मालविका अशोक वृक्ष के पास गयी, पल्लवों का गुच्छा हाथ से पकड़ा और बायें पैर से अशोक पर मृदु आघात किया। कालिदास की लेखनी ने इस मादक चित्र को अपूर्व गरिमा से भर दिया है।

परब्रह्म की उस मानसिक इच्छा का, जो संसार की सृष्टि में प्रवृत्त होती है, मूर्तरूप ही 'काम' है। जब यह सृष्टि-रचना के अनुकूल होती है, तो विष्णु और शिव का साक्षात् रूप कही जाती है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि मैं जीवमात्र में धर्म के अविरुद्ध रहने वाला 'काम' हूं। परंतु जो व्यक्तिगत इच्छा धर्म के विरुद्ध जाती है, वह अपदेवता है। काम का एक रूप धर्म के अविरुद्ध जाने वाला है, दूसरा धर्म के विरुद्ध जाने वाला। पहला साक्षात् विष्णु रूप है।

ब्रह्मसंहिता में कहा गया है कि जो आनंद और चेतनामय रस से मन को भरता है, प्राणियों के मन में 'स्मर' या 'काम' रूप से प्रतिफलित होता है और इस प्रकार अशेष भुवनों को जीतकर नित्य विराजमान है, उस आदिपुरुष गोविंद को मैं स्मरण करता हूं। मत्स्यपुराण में 'कामनाम्ना हरेरर्चा' कहकर बताया गया है कि वस्तुत: 'काम' नामक हरि की ही पूजा की जाती है। इस-

मदन और रति

लिए मंदिर और मूर्ति बनाकर जिस देवता की पूजा की जाती है, वह साक्षात् विष्णु ही है। श्रीकृष्ण-गायत्री और काम-गायत्री में कोई फर्क नहीं है।

परंतु इसका एक दूसरा रूप भी है, जो व्यक्ति के विवेक को दबा देता है। पश्चिम में 'किउपिद्' नामक देवता (या अपदेवता) को अंधा माना गया है, क्योंकि वह विवेक को नष्ट करता है, मनुष्य को अंधा बना देता है। शिव ने इसी मादक मदन देवता को भस्म किया था। उसके भावात्मक 'मनसिज' रूप को बचा लिया था।

यह आश्चर्य की बात है कि हमारे शास्त्रों में वार-वनिताओं के लिए जिस मदन-मूर्ति का विधान किया गया है, उसकी आंखों पर सोने के पत्तर की पट्टी बंधवा दी जाती है ! 'किउपिद्' देवता की तरह उसे अंधा तो नहीं कहा गया, पर अंधे-जैसा बना अवश्य दिया गया है। 'हेमनेत्रपरावृतम्' में पट्टी सोने की होने पर भी दृष्टिशक्ति का अभाव तो हो ही जायेगा। कामदेव वसंत ऋतु का मित्र है। परंतु कुमारसंभव में वर्णित वसंत अकाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

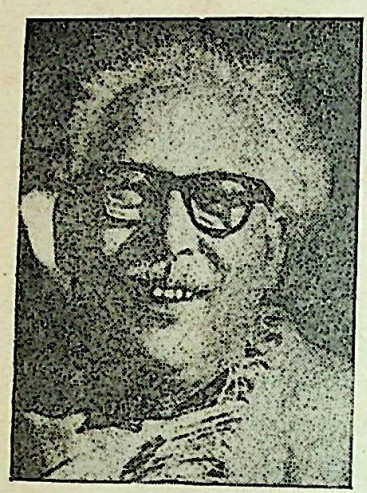

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

साहित्य अकादेमी से पुरस्कार-प्राप्ति के उपलक्ष्य में नवनीत-परिवार का अभिनंदन।

का वसंत है; अस्वाभाविक, बलादानीत, अपदेवता! शिव ने इसी को ज्ञान के नेत्र उन्मीलित करके भस्म किया था।

शास्त्रों में काम के वाण और धनुष फूलों के वताये गये हैं। अरविंद, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलोत्पल—ये उसके पांच वाण हैं, जिन्हें क्रमशः उन्मादन, तापन, शोषण, स्तंभन और संमोहन भी कहा है।

संसार की लगभग सभी सभ्य आदिम जातियों में वसंतकाल में उद्दाम यौवनोन्माद के उत्सव पाये जाते हैं। कहीं-कहीं ये उत्सव अति स्थूल यौनवासना के रूप में पाये जाते हैं, कहीं संयत और सुरुचिपूर्ण रूप में। प्राचीन भारत में इस उत्सव के उद्दाम रूप को संयत, सुरुचिपूर्ण और धर्माविरुद्ध देवता के रूप में संवारने का सफल प्रयत्न किया गया था।

अपेक्षाकृत निम्न स्तर के लोगों में सदा वह सीमातिक्रमण करके प्रकट होता रहा और दुर्भाग्यवश अब भी किसी न किसी रूप में जी रहा है। परंतु इस सहज उद्दाम लीला को शांत, संयत और शिष्ट रूप में ढालने का प्रयत्न अवश्य ही श्लाघ्य माना जायेगा। आदिम सहजात वृत्तियों को सुरुचिपूर्ण, संयत और कल्याणमुखी बनाकर ही मनुष्य 'मनुष्य' बना है, नहीं तो वह पशु ही रह गया होता। प्राचीन भारत के मदनोत्सव में मनुष्य के इस प्रयत्नशील तत्त्व की ही चरितार्थता प्राप्त होती है।

[सन १९७३ का साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाले निबंध-संग्रह 'आलोक-पर्व' में से उद्धृत; सौजन्य : राजकमल प्रकाशन]

*

शिव द्वारा कामदेव के भस्म कर दिये जाने पर विरहातुर होकर देह-त्याग के लिए समुद्यत रति के प्रति यह आकाशवाणी हुई :

परिणेष्यति पार्वतीं यदा तपसा तत्प्रवणीकृतो हरः।
उपलब्धसुखस्तदा स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति॥

—पार्वती के तप से उन पर रीझकर जब शिव उनसे विवाह करेंगे, तो वे सुखानुभव करके कामदेव को पुनः शरीरयुक्त कर देंगे। (कुमारसंभव)

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाफकिन इंस्टिटयूट

रविशंकर टंडन

संयोग कई बार स्थायी और फलदायी परिणामों को जन्म देते हैं। एक आकस्मिक मुलाकात युवा रूसी विज्ञानी डा. वाल्देमार हाफकिन को पिछली सदी में भारत खींच लायी। यदि पेरिस में लार्ड डफरिन से उनकी मुलाकात न हुई होती, तो शायद न तो वे भारत के वायसराय लार्ड लैंसडाउन से मिलते, न भारत आते; और फलतः इस वर्ष बंबई में हाफकिन इंस्टिटयूट की हीरक जयंती भी न मनायी जाती।

मगर असली कहानी उस मुलाकात से भी बहुत पहले शुरू होती है। वाल्देमार मोर्डकाइ हाफकिन का जन्म १८६० में रूस में कृष्णसमुद्र के तट पर ओडेसा नगर में हुआ। ओडेसा के प्राणिशास्त्रीय संग्रहालय में चंद वर्ष काम करने के बाद उन्हें जिनीवा विश्वविद्यालय के चिकित्सा-विद्यालय में शरीर क्रियाशास्त्र के उप-प्राध्यापक का पद मिल गया।

उन दिनों फ्रांस का पाश्चर इंस्टिटयूट युवा शोधार्थियों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। वहां भेड़ों के गिल्टी-रोग, मुर्गियों के हजे और पागल कुत्ता काटने से आदमी को होनेवाले पागलपन की रोकथाम के टीकों का विकास किया गया था। जब हाफकिन को पाश्चर इंस्टिटयूट जाने और वहां काम करने का अवसर मिला, तो उन्होंने उसे हाथ से न जाने दिया।

वहां हाफकिन का आरंभिक शोधकार्य हजे के बारे में था। टीके के जरिये वे इस रोग के जीवाणुओं की उग्र किस्मों से खरगोशों की रक्षा करने में सफल हो गये थे। अपने टीके पर उन्हें इतना विश्वास था कि उन्होंने अपने आपको भी यह टीका लगाया। वे महामारी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रस्त इलाकों में अपने टीके का उपयोग करके उसकी उपयोगिता की सही-सही जांच करना चाहते थे और इसी उद्देश्य से थाइलैंड जाने वाले थे। तभी उनकी मुलाकात हो गयी लार्ड डफरिन से, जो उन दिनों पेरिस में ब्रिटेन के राजदूत थे।

लार्ड डफरिन ने उन्हें भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड लैंसडाउन के नाम परिचय-पत्र दिया। हाफकिन को निमंत्रण मिला कि आप लंदन आकर अपने टीके के सिद्धांत और कार्य पर सार्वजनिक रूप से प्रकाश डालिये और यह सुझाव भी कि आप भारत में आकर काम कीजिये। इस तरह वे थाइलैंड के बजाय भारत को रवाना हो गये और मार्च १८९३ में कलकत्ता पहुंचे।

दो साल के अंदर भारत में कई प्रांतीय सरकारों ने उनका टीका अपना लिया—उत्तर भारत के तो लगभग सभी प्रांतों ने। परंतु हाफकिन का स्वास्थ्य गिरने लगा और उन्हें भारत से विदा होना पड़ा। परंतु यहां वापस लौटने और अपना शोधकार्य जारी रखने का उनका दृढ़ संकल्प था।

सन १८९६ में वे लौट आये। परंतु हजे से भी बड़ा एक दुश्मन उन्हें चुनौती दे रहा था। बंबई में प्लेग फैला हुआ था; धड़ाधड़ लोग मर रहे थे। छोटे-से पुर्तगाली उपनिवेश दमण के ६,००० निवासियों में से १,४८२ प्लेग से चल बसे थे। हांगकांग से आये एक जहाज से छूत फैली थी। भारत सरकार ने 'काली मौत' के खिलाफ लड़ाई में हाफकिन से सहायता मांगी।

हाफकिन बंबई चले आये। यहां उन्होंने ग्रांट मेडिकल कालेज की पेटिट लैबोरेटरी के एक कमरे में अस्थायी प्रयोगशाला बनायी और काम में जुट गये। तीन महीनों के कठोर श्रम के बाद प्रयोगशाला में प्लेग के दंडाणु (बासिलस) के संवर्ध बनाने में वे सफल हो गये और उनकी स्टैलैक्टाइट संरचना का अध्ययन किया। इससे पूर्व फ्रांसीसी जीवाणु-शास्त्री डा. येसिन और जापानी वैज्ञानिक डा. कितासातो अलग-अलग शोध द्वारा प्लेग दंडाणुओं का पता लगा चुके थे।

अपने प्लेग-टीके की जांच के लिए भी हाफकिन ने खरगोशों का उपयोग किया और पाया कि टीका उनमें रोग-रोधक क्षमता (इम्यूनिटी) पैदा कर देता है। उन्हें पूरा विश्वास था कि उन्होंने प्लेग के प्रसार की रोकथाम का उपाय खोज लिया है। १० जनवरी १८९७ को उन्होंने अपने आपको टीका लगाया। कुछ ही घंटों में उन्हें तेज बुखार चढ़ गया और टीका-स्थल पर तीव्र दर्द होने लगा। मगर वे काम करते रहे और अगले दिन ग्रांट मेडिकल कालेज में उन्होंने विद्यार्थियों के समक्ष भाषण दिया और अपने रोग-लक्षण विस्तार से समझाये। उनके इस साहसपूर्ण कदम का अच्छा प्रभाव पड़ा। बंबई के ७७ प्रतिष्ठित यूरोपीय और भारतीय नागरिकों ने सार्वजनिक रूप से टीके लगवाये। जनता को टीके की सुरक्षितता में विश्वास हो गया और लोग निर्भीक होकर टीके लगवाने लगे।

ग्रांट मेडिकल कालेज में स्थापित अस्थायी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयोगशाला छोटी पड़ने लगी। दो बार नयी प्रयोगशालाएं बनायी गयीं; मगर वे भी छोटी पड़ गयीं। अंत में परेल का पुराना राज-भवन (गवर्नमेंट हाउस) उनके हवाले किया गया और हाफकिन ने उसमें १८९९ में प्लेग रिसर्च लैबोरेटरी की स्थापना की। प्रथम चार वर्षों में लैबोरेटरी ने २३ लाख लोगों को टीका लगाने लायक वैक्सीन तैयार की, जो हांगकांग, चीन व यूरोप को भी भेजी गयी।

सन १९०४ में समूचे बंबई प्रांत के (जिसमें वर्तमान महाराष्ट्र, गुजरात के अधिकांश भाग, कर्नाटक के कुछ जिले तथा पाकिस्तान का सिंध प्रांत शामिल थे) रोग निदान संबंधी काम की जिम्मेदारी इस प्रयोगशाला को सौंपी गयी और इसका नया नामकरण किया गया—'बॉम्बे बेक्टीरियोलाजिकल लैबोरेटरी।'

चंद साल बाद हाफकिन भारत से चले गये। परंतु मृत्यु-पर्यंत इस संस्था में उनकी गहरी दिलचस्पी बनी रही, जहां उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किये थे। सन १९२५ में उनकी सेवाओं के प्रति देश की कृतज्ञता प्रकट करने के लिए इसका नाम बदलकर हाफकिन इंस्टिटयूट कर दिया गया। १६ मार्च १९६४ को हाफकिन की १०४ वीं वर्षगांठ पर डाक टिकट जारी करके राष्ट्रीय रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

प्लेग तो एक आकस्मिक संकट था। किंतु नाना प्रकार के संक्रामक रोग मनुष्य-जाति को सताते रहते हैं। यह स्वाभाविक ही था कि हाफकिन इंस्टिटयूट इन रोगों में भी

डा. हाफकिन की १०४ वीं वर्षगांठ पर १६ मार्च १९६४ को जारी किया गया डाक-टिकट।

दिलचस्पी ले। बेरीबेरी, कोढ़, डिफ्थीरिया, तपेदिक, मलेरिया, पेचिश, टाइफाइड, चेचक आदि अनेक रोगों पर महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य किया गया है। मच्छर, जूं आदि रोग-वाहक जीव रोग कैसे फैलाते हैं, इसका भी विस्तृत अध्ययन यहां हुआ है।

प्लेग के संक्रमण तथा पोलियो-माइलाइटिस विधान, हैजे की रोगोत्पत्ति तथा कोढ़ की चिकित्सा आदि के क्षेत्र में कार्य करके इस संस्था ने चिकित्सा-विज्ञान की महत्त्वपूर्ण सेवा की है।

पिछली तीन चौथाई सदी में संस्था का कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है और केवल संक्रामक रोगों तक सीमित नहीं रह गया है। उदाहरणार्थ, सर्पविष के संबंध में यहां बहुत महत्त्वपूर्ण शोधकार्य हुआ है और हो रहा है। इस कार्य की महत्ता आप इसी से समझ सकते हैं कि भारत में प्रति वर्ष २०,००० आदमी सांप के काटने से मरते हैं।

भारत के चार मुख्य विषैले सांप हैं—नाग, करैत, दुबोइया (रसल्स वाइपर) और फुरसा (स्केल्ड वाइपर)। संस्था के सर्प-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या-विभाग ने इनका विस्तृत अध्ययन किया है। इस कार्य के लिए यहां ५०० से ज्यादा सांप पाले भी जाते हैं। सांप काटे की दवा बतायी जाने वाली लगभग सभी वनस्पतियों की परीक्षा यहां की गयी है।

इस शोधकार्य का सुफल यह है कि चारों विषैले सांपों के विष की चिकित्सा के लिए संयुक्त एंटीवेनीन सीरम तैयार हो सका है। यह चूर्ण रूप में होता है और विश्व के किसी भी प्रदेश में सुरक्षित रखा जा सकता है।

फिलहाल संस्था में ऐसे टाक्साइड के विकास का प्रयत्न किया जा रहा है, जिससे ग्रामवासियों में सर्पविष से अप्रभावित रहने की क्षमता पैदा हो जाये। सांप से जिनका पाला पड़ने की संभावना रहती है, ऐसे लोगों के लिए यह बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा।

सन १९३२-४९ के बीच मेजर-जनरल एस. एस. सोखी हाफकिन इंस्टिटयूट के निदेशक रहे। उस अवधि में संस्था का बड़ा विस्तार और विकास हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने पर विदेशों से दवाओं के आने में अड़चन पैदा होने से देश में अनेक दवाएं दुर्लभ हो गयीं। तब संस्था ने अनेक महत्त्वपूर्ण टीकों और विषौषधों का निर्माण हाथ में लिया। फिर सल्फा-वर्ग के औषधों, मलेरिया, मधुमेह, तपेदिक आदि की दवाओं के निर्माण और वितरण की जिम्मेदारी भी उठायी। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि १९३२ में भारत सरकार ने पैसे की तंगी के नाम पर इस उपयोगी संस्था को बंद कर देने की कोशिश की थी। मगर मेजर-जनरल सोखी ने सार्वजनिक आंदोलन चलाकर सरकार को यह इरादा छोड़ने को विवश कर दिया।

इस समय हाफकिन इंस्टिटयूट के ग्यारह विभाग हैं—१. स्तर-नियंत्रण (क्वालिटी कंट्रोल) २. जीवाणु-विज्ञान, ३. जैव रसायन-विज्ञान, ४. रक्त बैंक, ५. रसायन-चिकित्सा, ६. रोग-निदान, ७. रोग-निरोधक क्षमताशास्त्र (इम्यूनोलाजी), ८. औषधशास्त्र, ९. विषाणुशास्त्र, १०. विषाणु-वैक्सीन और ११. जुओनोसिस।

रक्त बैंक के साथ शुष्क प्लाज्मा तैयार करने का बड़ा संयंत्र भी है। स्तर-नियंत्रण विभाग की विशाल प्रयोगशाला में दवाओं के स्तर की जांच की जाती है। पहले-पहल यह कार्य सेना द्वारा खरीदी जाने वाली दवाओं के स्तर की जांच के लिए आरंभ किया गया था। संस्था तरह-तरह के टीकों के अलावा विटामिन की गोलियों और रासायनिक औषधों का भी निर्माण करती है। भारत के ही नहीं, अपितु समूचे पूर्वी-गोलार्ध के प्रथम एंटीबायोटिक उत्पादक कारखाने हिन्दुस्तान एंटीबायोटिक्स, पिंपरी (पूना) की स्थापना में हाफकिन के सोखी, गणपति, शिरसार आदि वैज्ञानिकों का शोधकार्य और सहयोग बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

संस्था बंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध है तथा विज्ञान और चिकित्साशास्त्र की कई शाखाओं में स्नातकोत्तर शिक्षा भी देती है। किंतु संस्था का मुख्य उद्देश्य तो अब भी वही है, जो उसके संस्थापक ने निर्धारित किया था—संक्रामक रोगों के विषय में शोधकार्य।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य के सान्निध्य में

देवीरत्न अवस्थी 'करील'

यह बात संवत् १९९१ की है। मध्य प्रदेश के बस्तर नामक तत्कालीन देशी राज्य से अपनी गांधीभक्ति के कारण निर्वासित होकर, मैं उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर नामक ग्राम में जेल से मुक्त होकर ठहरा हुआ था। यह वही सुप्रसिद्ध दौलतपुर है, जो आधुनिक हिन्दी के जनक आचार्य पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी का जन्मग्राम था।

मेरी अल्पवयस्क पुत्री इंदुमती अपनी नानी की गोद में घर के बाहर के चबूतरे पर बैठी हुई थी। मैं घर के अंदर था। पहचाना हुआ स्वर सुन पड़ा। आचार्यजी नातिन को देखकर उसकी नानी से पूछ रहे थे—'गायत्री कै बिटिया आय!'

मेरा चरणस्पर्श स्वीकार करते हुए आचार्यजी ने अपने एक समवयस्क ग्रामीण मित्र से पूछा—'ओझाजी! घोड़ी केत्ते मा लिह्यौ?'

बैसवारी बोली में आदर-सूचक 'जी' का प्रयोग नहीं किया जाता। पर उसके अलिखित व्याकरण को भी एक नवीन मार्ग पर चलाने का यत्न करते हुए आचार्य-जी अपने उन ग्रामीण मित्र को सदैव 'ओझाजी' कहते थे 'ओझा' नहीं।

'पचीस मा बाबूजी', कहते हुए पंडित शिवगोपाल मिसिर उनके पास आ गये, और दोनों समवयस्क मित्र गांव के डाकघर की ओर चल पड़े। मिसिरजी दौलतपुर के ग्रामीण डाकघर के डाकपाल थे। डाकघर आचार्यजी के घर की एक कोठरी में ही था। आचार्यजी चाहते थे कि मिसिर हरकारे का समय नष्ट न करें। हरकारों जैसे निरीह व्यक्तियों के प्रति दया-माया दिखाने वालों की वह पीढ़ी उन्हीं के साथ समाप्त हो गयी।

जिस दिन की ये बातें हैं, उससे दस बरस पहले मैं केवल पंद्रह का बालक था। मेरे जन्म से बहुत पहले मेरे पितामह, जीविका के कारण रायबरेली जिले से उठकर बस्तर के जगदलपुर नामक नगर में जा बसे थे। उस समय तेरह हजार वर्ग-मील के क्षेत्रफल वाले उस देशी राज्य में केवल सत्रह प्राथमिक विद्यालय थे, जिन-में चौथी श्रेणी तक की ही शिक्षा दी जाती थी। जगद-लपुर में केवल एक अंग्रेजी विद्यालय था, जिसमें आठवीं

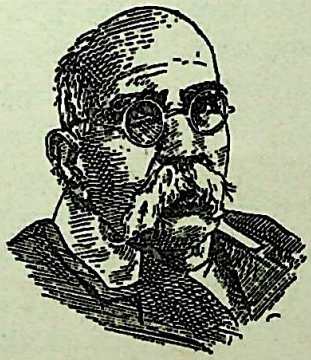

आचार्य द्विवेदीजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेणी तक अंग्रेजी पढ़ायी जाती थी।

इस विद्यालय की पढ़ाई समाप्त कर लेने के कारण पिताजी ने मुझे कानपुर के एक हाईस्कूल में भरती करा दिया था। दशहरे की छुट्टियों में मैं आठ कोस की पदयात्रा करता हुआ, रायबरेली जिले के लालगंज नामक स्थान से दौलतपुर जा पहुंचा।

घनी अमराइयां एक के उपरांत एक पीछे छूटती चली गयीं। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का घर सामने आया। मेरी कल्पना से सर्वथा भिन्न प्रकार का। प्राग्द्वार के आगे लंबी-चौड़ी अग्रभूमि। और अग्रभूमि के दोनों पार्श्वों पर नीम के विशालकाय वृक्ष की छाया से छपे, मिट्टी के दो बड़े-बड़े चबूतरे। चबूतरों के सामने के गलियारे को अद्वितीय रूप देने वाला आचार्यजी की दिवंगता धर्म-पत्नी का छोटा-सा, किंतु कलात्मक स्मारक-भवन। स्मारक-भवन के पार्श्व में ही पुष्प-वाटिका, और उसके आगे ऊंची वेदी वाला पक्का कुआं। बैठक और चौपाल की भीतों की ईंटों पर की हुई लाल रंग की पुताई, जिसमें चूने की उजली लकीरें ऐसी आभा उत्पन्न कर रही थीं, मानो सारी स्वच्छता सिमटकर वहीं आ बिराजी हो।

आचार्यजी भोजन के हेतु घर के भीतर सिधार चके थे। मैं चबूतरे पर बने हुए पाषाणासनों में से एक पर बैठकर प्रतीक्षा करता रहा। खड़ाउंओं की ध्वनि सुन पड़ी। आधी धोती पहने और आधी ओढ़े आचार्य-जी सामने आ गये। वंदना के निमित्त मैं उनके चरणों में झुक गया। आशीर्वाद देकर वे मुझ अपनी बैठक में लिवा ले गये।

बाहर के दृश्य से अचकचाया हुआ मैं पंद्रह का बालक बैठक के भीतर की भव्यता देखकर अवाक् हो उठा। इतनी पुस्तकें! इतनी सुचारुता से सजी-धजी! बैठक के उत्तर के छोर पर एक तख्त की स्वच्छ दरी पर उजली चादर बिछी हुई थी, और उस पर थी एक बड़ी-सी मसनद। दक्षिण की ओर निवार का एक साफ-सुथरा पलंग पड़ा हुआ था। पूर्व की ओर पुस्तकों से सजी हुई मेज के सामने एक कुर्सी लगी हुई थी। आचार्यजी ने इसी कुर्सी पर मुझे बैठाया।

मेरे बैठते ही उन्होंने अपने एक सेवक बालादीन को बुलाकर कहा—'सिवअधार का बोलाय लाव।' फिर सिवअधार के आने पर उन्होंने जो कुछ कहा, वह मेरी कल्पना से सर्वथा परे था। बड़े ही संकोच के साथ मैंने चबूतरे पर जाकर सिवअधार से अपने पैर धुलवाये। पैर धुलवाने की वंशानुगत परंपरा से मैं परिचित नहीं था। सिवअधार जाति के नापित थे; अतः मुझ जैसों की वंशानुगत परंपराओं का उन्हें पूर्ण ज्ञान था। मुझे अपना दायां पैर आगे बढ़ाते देखकर सिवअधार बोले—'अंगरेजी सब चरिगै।' उन्होंने मेरा बायां पैर पहले धोया।

अंग्रेजियत का अंधानुकरण करने वाले आज के इस वातावरण में सिवअधार का वह स्वर मुझे और भी अधिक मुखर होकर सुनाई पड़ रहा है—'अंगरेजी सब चरिगै! अंगरेजी सब चरिगै!'

संवत् १९८१ की हिन्दी का आचार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने घर आये हुए पंद्रह बरस के बालक को उपनिषद् के 'अतिथिदेवो भव' आदेश के अनुसार देव मानकर उसके पैर पखरवाता था; पर आज संवत् २०३० की हिन्दी के आचार्यों को पत्र लिखकर देखिये, तब आपको समझ पड़ेगा कि पाश्चात्य जीवन-पद्धति से हमारे देश को कितनी हानि पहुंची है।

जिस युग में कलकत्ते के उच्च न्यायालय के न्यायपति सर विलियम जोन्स अपने गुरु पंडित रामनाथ विद्याभूषण से संस्कृत पढ़ते थे, उसी युग का प्रतिनिधित्व करते हुए, हनुमंत नाम के एक धुरंधर पंडित ने बंगाल की सैनिक छावनियों में पुराणों के कथावाचन की धूम मचा रखी थी। पंडित रामसहाय के आत्मज, आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदी, इन्हीं हनुमंत पंडित के पौत्र थे।

संवत् १९२१ के बैसाख मास के उजेले पखवाड़े की चतुर्थी के दिन, अठारहवीं शती के प्रख्यात कवि सुखदेव मिश्र के गांव दौलतपुर (रायबरेली) में उनका जन्म हुआ था। संवत् १९९५ में चौहत्तर बरस, सात महीने और छब्बीस दिन की आयु पूरी करके, पौष मास के अंधेरे पखवाड़े की चतुर्दशी की रात बीत जाने के उपरांत, पांच बजकर पैंतालीस मिनिट पर वे इस संसार को छोड़कर उस लोक को चले गये, जहां से कोई फिर कभी लौटता नहीं।

उनकी मृत्यु से एक दिन पहले जब स्वर्गीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने उनकी शय्या के पैताने बैठकर उनके चरणों में अपना सिर टेक दिया, तब रायबरेली के राजनेताओं को लगा कि उनसे किसी पूज्य और महान व्यक्ति का वियोग हो रहा है।

बंगभाषा के प्रख्यात कवि मधुसूदन दत्त की समाधि पर जड़े हुए पत्थर पर बंगालियों ने अपनी ही भाषा में उनकी प्रशस्ति अंकित करायी थी। पर मधुसूदन दत्त पर हिन्दी में जिन्होंने सबसे पहले लिखा, और जिन्होंने अपने जीवन-रस से हिन्दी साहित्य के उद्यान के प्रत्येक पौधे को सींचा, उन साहित्य-वाचस्पति आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के जन्मगृह में हिन्दीभाषियों ने मरमर पत्थर पर अपने महाप्रभु लार्ड विलिंग्डन की भाषा में उत्कीर्ण कराया :

'हियर वाज़ बॉर्न पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी—फादर ऑफ हिन्दी लिटरेचर।'

दौलतपुर के सिवअधार की वाणी उस शिलारोपण के समय भी उस गांव में गूंजती रही होगी—'अंगरेजीसब चरिगै, अंगरेजीसब चरिगै!' इन पंक्तियों के लेखक ने जब पैरों की धरती सिर पर उठा ली, तो अंग्रेजी के पाषाण-पट के दूसरे छोर पर हिन्दी का भी एक पत्थर जड़ दिया गया।

जो दो प्राणी आचार्यदेव का जीता-जागता प्रतिनिधित्व और उत्तराधिकार संभाल रहे थे, उनमें से एक, श्रीमती राधादेवी इस लोक से विदा हो चुकी हैं। राधादेवी के पति एवं दिवंगत आचार्य द्विवेदी के भानजे श्री कमलाकिशोर त्रिपाठी दौलतपुर के उस साहित्यिक तीर्थ-मंदिर के गिरते-पड़ते आवास में अब अपनी वृद्धावस्था व्यतीत कर रहे हैं।

—लालगंज, रायबरेली, उत्तर प्रदेश

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने देश में बेगाने

वाडीलाल डगली

एक बार एक वकील मित्र से मैंने यों ही पूछ लिया—'दीवाली पर तो यहीं हैं न?' उन्होंने कहा—'नहीं, दीवाली पर मैं बंबई में नहीं रहता। लोगों के शोर, धमाचौकड़ी और पटाखों की वहशियाना आवाज से मैं घबरा जाता हूं। इसीलिए दीवाली पर प्रायः मैं महाबलेश्वर या और किसी हिल स्टेशन पर चला जाता हूं।'

इन मित्र ने पटाखों के शोर की जो बात कही, वह तो मुझे जंची; मगर दीवाली से भागने की उनकी बात पर मैं विचार करता रहा। हवाखोरी के स्थानों पर कभी भी जाना भला किसे नहीं भाता? परंतु जिस जनता में हम उगे-पले हैं, उसके बीच रहने का मन न हो, इसमें कुछ मानसिक बीमारी है ही।

बात यहीं समाप्त नहीं होती। दीवाली या जन्माष्टमी का नाम आते ही जम्हाई आने लगती है; पर क्रिस्मस के समय की बाट जोहते हैं। ईसाई नववर्ष की पार्टी में जो शोर-शराबा होता है, वह गन्नों की गंडेरी-जैसा मीठा लगता है, पर दीवाली का शोर कुनैन की गोली-जैसा लगता है। इस तरह हमारे शिक्षित और उच्च वर्ग के लोग अपने ही देश में विदेशी हो गये हैं।

यों तो भारत को आजाद हुए छब्बीस साल हो गये; मगर हमारा मन अभी आजाद नहीं हुआ है। जिस तरह पश्चिम की संस्कृति की हमारे यहां आरती उतारी जाती है, उससे हमारी निरंतर सांस्कृतिक धुलाई हो रही है। हमारे उच्च वर्ग की शोकांतिका यह है कि वह जनमा है भारत की मिट्टी में और पोषण पाता है भारत की प्राकृतिक संपत्ति से, पर कोशिश करता है यूरोपीय होने की। बगैर जड़ का वृक्ष रोपने-जैसी हास्यास्पद और दुःखद परिस्थिति है यह।

सन १९५१ में मैं अमरीका से पढ़कर स्वदेश लौटा, तो हमारे स्कूल में मेरा व्याख्यान रखा गया। व्याख्यान पूरा होने पर एक विद्यार्थी ने मुझसे पूछा—'अमरीका में आपको सबसे अधिक आकर्षक क्या लगा?' मैंने उत्तर दिया—'अमरीका में दुनिया के सबसे ऊंचे मकान हैं, तो भी मुझे जो चीज सबसे अधिक आकर्षक लगी, वह है—उछलते-उछलते कोई भी काम करने की अमरीकियों की तत्परता। अमरीका के राष्ट्रपति के बेटे-बेटियां तक शारीरिक मजदूरी करते हैं और अपनी पढ़ाई का खर्च निकाल लेते हैं। अपने पैरों पर खड़े होने के बराबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख दूसरा नहीं। यही मुझे सबसे अधिक आकर्षक लगा।' पश्चिम की इस शक्ति से परिचय बढ़ाने के बजाय हम उनके छिछले आविष्कारों की चकाचौंध में आकर उनकी नकल उतार रहे हैं और संतुष्ट हो रहे हैं कि हम भी आधुनिक हैं।

जरा विचार करें, तो स्पष्ट हो जायेगा कि भारत का उच्च वर्ग ब्रिटिश साम्राज्य के अंग्रेज अफसरों जैसा है। आम जनता से उसका स्नान-सूतक का संबंध नहीं है। हमने पश्चिम का मुखड़ा अंग्रेज अधिकारियों के चेहरों में देखा है। वे अफसर तो साहब थे। उन्हें तो यही सिखाया जाता था कि साम्राज्य बचाये रखना है, तो भारत के सामान्य जनों से चौबीसों घंटे दूर रहना होगा। इसीलिए तो भारत के उच्च वर्ग और साधारण मनुष्यों के बीच कभी न पट सकने वाली आर्थिक खाई पड़ गयी है। इसके विरोध में प्रबल राजनैतिक शक्तियां खड़ी हो गयी हैं। इससे सुखी लोग सकारण ही भयभीत हैं। परंतु उनकी सुरक्षा का शत्रु वामपंथी राजनैतिक पार्टियां नहीं, बल्कि उनकी अपनी भारतीय परंपरा से विमुख मनोवृत्ति है।

शिक्षित वर्ग इस देश की परंपरा से इतना दूर हो गया है कि हमें तो ऐसा लगता है कि इस देश में दो दुनिया बसती हैं। एक बहुजन-समाज की दुनिया और दूसरी शिक्षित वर्ग और सुखी लोगों की दुनिया। यह सच है कि बहुजन-समाज की दुनिया में अंधश्रद्धा, वहम और काफी-कुछ असंस्कारिता है। इस मर्यादा के कारण शिक्षित और उच्च वर्ग सामान्य मनुष्य की दुनिया को कोई तुच्छ दुनिया समझता है। हमारे बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में ही पढ़ें और तीन-चार वर्ष के होते ही अंग्रेजी में ही उनकी पढ़ाई हो, इसके पीछे एक विचार यह है कि इन बच्चों को अंग्रेजी फटाफट आ जाये, तो वे आप ही आप भद्र लोगों की दुनिया से जुड़ जायेंगे। उच्च वर्ग का अंग्रेजी के प्रति जो आकर्षण है, वह इसलिए है कि अंग्रेजी कारोबार का एस्कालेटर (चलती सीढ़ी) है। एस्कालेटर पर पग धरने पर वह आप ही आप पहली, दूसरी और तीसरी मंजिल चढ़ता चला जाता है। हमें तो सिर्फ खड़े रहना है। एस्कालेटर की सीढ़ियां धड़ाधड़ ऊपर चढ़ती जाती हैं और कुछ किये-धरे बिना हम सातवीं मंजिल पर पहुंच जाते हैं।

सामान्य मनुष्य और उच्च वर्ग के बीच इतने अधिक अंतर का कारण यह है कि एक भारत में बसता है, जब कि दूसरे का मन पश्चिम में भटकता है। उच्च वर्ग का वैकुंठ न्यूयार्क है। आप बंबई या कलकत्ता आदि शहरों में घूमेंगे, तो आपको लगेगा कि यहां अपार गरीबी के बीच नन्हे-नन्हे न्यूयार्क खड़े किये गये हैं। इसके कारण इसका दूसरा असर यह पड़ता ह कि विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण इतना अधिक बढ़ गया है कि 'स्मगल्ड' माल खुलेआम बिक रहा है।

विदेशी वस्तु में एक विशेषता होती है। वह सभी लोगों को मिल नहीं सकती। इसलिए जिनके पास वह होती हैं, उन्हें लगता है कि मेरे पास कोई अद्वितीय चीज है। इसी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए अमरीका, जर्मनी, इंग्लैंड कहीं भी चले जाइये, आपको विदेशी वस्तुओं के प्रति मोह देखने को मिलेगा।

विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण इस तरह स्वाभाविक है। परंतु जो देश लंबे समय तक गुलाम रहा हो और राजनैतिक आजादी प्राप्त करना चाहता हो, उसे प्रयत्नपूर्वक स्वदेशी चीजों के प्रति अनुराग बढ़ाना चाहिये। आर्थिक स्वावलंबन के लिए जैसे हम प्रयत्न कर रहे हैं, वैसे ही क्रांति के बाद साम्यवादी रूस ने भी किया था। १९३० के दशक में रूस में काफी अत्याचार हुए; परंतु उनके मध्य एक भव्य स्वावलंबन-यज्ञ भी पूरा किया गया।

स्तालिन की पुत्री स्वेतलाना ने उस समय की एक घटना अपनी आत्मकथा में लिखी है। अन्य सभी देशों की तरह रूस की स्त्रियां भी पेरिस के इत्र के पीछे पागल थीं। स्वेतलाना तो उस समय के सर्वेसर्वा स्तालिन की बेटी थी। इसलिए जो भी बड़ा अफसर पेरिस जाता, उसके लिए इत्र लेता आता। एक बार स्वेतलाना वही इत्र लगा रही थी कि पिता ने देख लिया और पूछा—'इत्र कहां का है?'

स्वेतलाना ने चेहरे पर बनावटी गर्व के भाव लाते हुए उत्तर दिया—'हमारे ही देश में बनता है।'

वैसे तो स्तालिन नरराक्षस था; पर जब उसने सुना कि ऐसा मनमोहक इत्र भी रूस में बनता है; तो उसका मुखड़ा मृदुल हो उठा और उस पर आनंद की लहर दौड़ गयी। एक पिछड़े अर्थतंत्र वाले अपने देश को दुनिया का दूसरे नंबर का महान राष्ट्र बनाने में स्तालिन ने जो योग दिया, उसमें सबसे प्रमुख योग था स्वदेशी वस्तुओं के प्रति उसके आदर का।

याद आता है, जब मैं पढ़ता था, मेरे शिक्षक एक चीज बार-बार सुनाया करते थे। ब्रिटिश शासन-काल में कोई जापानी भारत आया। कोई बात नोट करने के लिए उसने अपनी डायरी खोली, फिर जेब टटोलने लगा। पास में ही खड़े एक भारतीय सज्जन ने उसे ब्रिटेन से आयात की हुई एक पेंसिल दी। जापानी ने विनम्रतापूर्वक कहा—'जी नहीं, मैं जापानी पेंसिल के सिवा किसी और पेंसिल का उपयोग नहीं करता।' फिर उसने अपनी जेब में से पेंसिल का एक छोटा-सा टुकड़ा निकाला और डायरी में लिखने लगा।

यह प्रसंग मुझे सत्य इसलिए लगता है कि अपनी वस्तुओं के प्रति जापानियों में जितना आदर है, उतना किसी देश की भी प्रजा में नहीं है। यही कारण है कि पिछले बीस वर्ष में जापान ने इतनी प्रगति की है कि पश्चिमी देशों की भी नींद उड़ गयी है। परंतु यहां यह भी कह देना उचित होगा कि जापान का स्वदेशीवाद ही बाद में फौजी राष्ट्रवाद बन गया था। स्वदेशी व्रत सब्जी काटने की छुरी है; उग्र राष्ट्रवाद गला बींधने वाली संगीन है।

जापानी प्रजा स्वदेशी की बड़ी महिमा मानती है। १९७१ के प्रारंभ में जापान सर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार की एक संस्था ने मुझे कुछ सप्ताहों के लिए जापान आने का निमंत्रण दिया। मेरे निमंत्रण स्वीकार करने के बाद जापान सरकारका एक अधिकारी मुझे जापान एयर-लाइंस का टिकट देने आया। परंतु मुझे एयर इंडिया से विशेष लगाव है। एक तो वह हमारे देश की एयर-लाइन है; दूसरे, बड़ी ही कार्यक्षम है। इसलिए मैंने उस अधिकारी से विनम्रतापूर्वक कहा—'सामान्यतया जब भी मैं विदेश जाता हूं, एयर इंडिया से यात्रा करता हूं। जाऊंगा एयर इंडिया से और लौटूंगा जापान एयर-लाइंस से। यह कहकर मैंने जापान एयर-लाइंस का टिकट उस अधिकारी को लौटा दिया।

जिस पत्र का मैं संपादक हूं, उसके एक डाइरेक्टर मेरे आफिस में बैठे थे। जापानी अधिकारी के चले जाने पर उन्होंने मुझसे कहा—'जापान-यात्रा का मौका इस तरह टाल क्यों दिया?' मैंने कहा—'मैं तो समझता हूं कि जापान सरकार मेरी इस भाषा को समझेगी। अगर इसी कारण मैं जापान न जा सका, तो मुझे जरा भी अफसोस नहीं होगा।'

लगभग पंद्रह दिन बाद वही जापानी अधिकारी मुझसे मिलने आया और एयर इंडिया का टिकट मेरे हाथ में देकर बोला—'आते और जाते दोनों वक्त आप एयर इंडिया में यात्रा करें।' मुझे लगता है कि जब अपने देश के प्रति हमारे मन में कुछ कम मान होता है, तो हमारे लिए विदेशियों के मन में कोई मान नहीं रहता। स्वाभिमान-रहित देश में जिये तो क्या, मरे तो क्या!

विदेशी वस्तुओं के बजाय हम उन्हें संभव बनाने वाले ज्ञान-कौशल्य के पीछे पड़ें। विदेशी कर्म-कांड के पीछे पागल होने के बदले हम विदेशियों के काम करने की पद्धति और उनके खाली समय का उपयोग करने की पद्धति को समझें और जो हमारी भूमि के अनुकूल हो, वही बोयें। जो हमारे स्वाभिमान को सुरक्षित न रख सके, ऐसी कोई विदेशी हवा इस देश में बहेगी तो हमारी प्रजा का चरित्र गिर जायेगा। हम स्वाभिमान गवांकर विदेशी बुलबुले को पकड़ने का प्रयास करेंगे, तो चाहे कितना भी हाथ बढ़ायें, वह खाली ही रहेगा।

—माणिक महल, ९०, वीर नरीमान रोड,
चर्चगेट, बंबई-२०

*

दूसरे महायुद्ध के समय की बात है। चीनी का राशन था। एकसप्ताह एक गांव के निवासियों को तो अगले सप्ताह का भी अग्रिम राशन दिया गया, पर पड़ोसी गांव के निवासियों को चीनी मिली ही नहीं।

इसका पता लगते ही सरकार ने विज्ञप्ति निकाली कि जिन्हें अगले हफ्ते की चीनी अग्रिम दी गयी है, वे कृपया उसे वापस कर दें। बस चीनी लौटाने के लिए 'क्यू' खड़ी हो गयी राशन की दुकान के सामने।

यह भारत की नहीं, ब्रिटेन की बात है। —रा. वीलिनाथन्

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान-बिंदु

केजिता

चौथे अरब-इस्रायल युद्ध ने दुनिया में उतना तहलका नहीं मचाया, जितना कि युद्धविराम के बाद अरबों द्वारा छोड़े गये तेल-युद्ध ने मचाया है। पेट्रोल के अभाव ने आविष्कार-बुद्धि को चाबुक मारकर उसकी चाल तेज कर दी है।

रूसी समाचार एजेंसी तास की एक खबर के अनुसार, रूस की राजधानी मास्को की सड़कों पर आजकल पांच ट्रक ऐसे दौड़ रहे हैं, जो पेट्रोल के बजाय गैस द्वारा चालित हैं। इनमें पेट्रोल की टंकी के स्थान पर एक गैस-सिलिंडर लगाया गया है। गैस है—प्रोपेन। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रोपेन का एक लाभ यह भी है कि उसके दहन से वातावरण प्रदूषित नहीं होता।

तास की ही एक और खबर के अनुसार, स्टोरेज बैटरी के द्वारा एक मिनि बस भी परीक्षण के तौर पर चालू की गयी है, जो मास्को की सड़कों पर देखी जा सकती है।

खुद हमारे देश में भी इसी तरह की कोशिशें की गयी हैं। मसलन, वाराणसी निवासी श्री इकबाल सिंह ने घरेलू ईंधन-गैस से पेट्रोल का काम लेने की युक्ति खोज निकाली है। वाराणसी के डिप्टी कमिश्नर के निवास पर उन्होंने पुरानी कार को जो ११,००० किलोमीटर चल चुकी थी, घरेलू ईंधन-गैस की सहायता से चलाकर दिखाया। गैस-सिलिंडर को लगेज-बूट में रखा गया था। श्री सिंह के अनुसार एक सिलिंडर गैस से लगभग चार सौ किलोमीटर की यात्रा की जा सकती है। गैस के एक सिलिंडर की कीमत लगभग पचीस रुपये होती है।

नयी दिल्ली के इंडियन इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलाजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के श्री आर. सी. सिंह का कहना है कि सीवेज गैस (गंदगी से निकाली जाने वाली गैस) से भी मजे से गाड़ी चल सकती है। सीवेज गैस में ६०-७० प्रतिशत मीथेन गैस, ३०-४० प्रतिशत कार्बन-डाईआक्साइड मौजूद रहती है। क्षारयुक्त पानी में से इस गैस-मिश्रण को गुजारकर उसे आसानी से कार्बन-डाई-आक्साइड से विमुक्त किया जा सकता है। बची हुई मीथेन गैस को संपीड़ित करके सिलिंडर में भरकर पेट्रोल के स्थान पर उससे गाड़ी चलाने का काम लिया जा सकता है। इसके लिए बस कार्ब्युरेटर में मामूली हेर-फेर करना पड़ेगा। ब्रिटेन इंग्लैंड के वेस्ट मिडिलसेक्स के मुख्य ड्रेनेज वर्क्स की गाड़ियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी प्रकार प्राप्त मीथेन गैस से ही चलायी जा रही हैं।

श्री सिंह का कहना है, भारत में मल से मीथेन गैस प्राप्त करना अपेक्षाकृत सुलभ और कम खर्चीला होगा; क्योंकि ब्रिटेन,जैसे ठंडे देशों की भांति यहां मल-पाचन यंत्रों (स्लज डाइजेस्टरों) को गर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि मल में गोवर, घास के टुकड़े, साग-पात और कूड़ा-कबाड़ा मिलाकर पाचन किया जाये, तो उससे गैस अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। एक और लाभ यह है कि बचे हुए पदार्थ को कार्बनिक खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

इन उत्साहवर्धक समाचारों के बाद एक दुःखद खबर भी पढ़िये, जो 'वर्ल्ड आयल' पत्रिका में छपी है। एक खोज से पता चला है कि भूमिगत जीवाणुओं ने तेल-भंडारों के लगभग १० प्रतिशत पेट्रोलियम को अब तक नष्ट कर दिया है, लगभग इतनी ही मात्रा में पेट्रोलियम को खराब भी कर दिया है, जिससे वह अपेक्षाकृत कम उपयोगी रह जायेगा।

झाड़ी आड़े आयेगी

पेट्रोलियम के अभाव का प्रभाव केवल मोटर-उद्योग और परिवहन पर ही नहीं पड़ेगा। उसके प्रभाव का दायरा बहुत विशाल है। आइये, इस संदर्भ में एक नजर वस्त्रोद्योग पर भी डालें।

संश्लिष्ट (सिंथेटिक) तंतु आज वस्त्रोद्योग के काफी बड़े भाग का आधार है। संश्लिष्ट तंतु का मुख्य स्रोत पेट्रोलियम है। अगर पेट्रोलियम नहीं मिलेगा, तो संश्लिष्ट तंतु भी दुर्लभ हो जायेगा। इसका क्या विकल्प हो। विकल्प सुझाया है जूट शोध-संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डा. टी. घोष ने।

डा. घोष का कहना है कि रामी का रेशा संश्लिष्ट तंतु का स्थान ले सकता है। रामी भारतीय-चीनी मूल की एक रेशेदार झाड़ी है, जिसकी खेती भारत के पूर्वी अंचल यानी असम, नागालैंड तथा पश्चिमी बंगाल में की जाती है। इससे प्राप्त तंतु रुई के रेशे से ज्यादा मजबूत होता है और शान-शौकत में संश्लिष्ट तंतु का मुकाबला करता है। वस्त्र-निर्माण में इसे सूत के साथ बखूबी मिलाया जा सकता है। यह संश्लिष्ट तंतु की तरह गर्मी से प्रभावित नहीं होता, इसलिए निश्चय ही लोकप्रिय हो जायेगा।

चाय और जूट की भांति ही रामी के बड़े पैमाने पर उत्पादन को बढ़ावा और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। देश की नम जलवायु भी रामी के उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त है, इस तरह इसकी खेती पूर्वी और दक्षिणी दोनों अंचलों में की जा सकती है।

प्रतिरक्षा और औद्योगिक क्षेत्र अपनी कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फ्लैक्स तंतु का आयात करते हैं, रामी के द्वारा इसे भी रोका या कम किया जा सकता है; क्योंकि रामी में वे सभी गुणधर्म उपलब्ध हैं, जो कि फ्लैक्स में पाये जाते हैं। सोरभोग (असम) का रामी शोध-संस्थान इसकी संसाधन-विधि को पूरी तरह से व्यावहारिक स्तर तक पूरा कर चुका है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधी तलब

अमरीका के वर्जीनिया विश्वविद्यालय में मेडिकल स्कूल में सीने के कैंसर से ग्रस्त अनेक रोगियों की दिनचर्या और विशेषकर उनकी धूम्रपान-संबंधी आदतों का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। देखा गया कि जो लोग रात को नींद में से उठकर धूम्रपान करते थे, उनमें अपेक्षाकृत अधिक लोग अधिक छोटी अवस्था में फेफड़ों के कैंसर से प्रभावित हो गये थे। केवल दिन में धूम्रपान करने वालों में कैंसर का प्रभाव कम पाया गया। शोधकर्ताओं ने नतीजा निकाला है कि मानव फेफड़े रात के अंधेरे में कैंसर के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

मगर तलब तो खुद ही अंधी होती है, उसे रात का अंधेरा कैसे सूझ सकेगा।

चमगादड़ी आंखें—राडारी चश्मे

चमगादड़ उच्च आवृत्ति की तरंगें भेजकर उनकी प्रतिध्वनि से पता लगा लेता है कि उसके रास्ते में कहां अड़चनें हैं। चमगादड़ के 'देखने' की इस विधि का उपयोग करके विज्ञान ने सोनार नामक यंत्र बनाया, जो पानी में छिपी पनडुब्बी आदि का पता लगा लेता है। ब्रिटेन के विज्ञानी प्रो. लेजली ने न्यूजीलैंड में वहां की सरकार की सहायता से चल रही एक शोध-योजना में देखा कि इस चमगादड़ी युक्ति का उपयोग अंधों के चश्मे के लिए किया जा सकता है। उनकी दी हुई जानकारी के आधार पर ब्रिटेन के सेंट डेस्टेन्स संघटन में राडारी चश्मे का विकास किया जा रहा है।

बातूनी कम्प्यूटर

कम्प्यूटर अब न जाने क्या-क्या करने लगा है। संभव है, कुछ समय बाद आप उससे मुंहजबानी बातचीत भी कर सकें। यह सूचना हाल ही में दी है डिजिटल इक्विपमेंट कार्पोरेशन के उपाध्यक्ष डा. एस. वैल ने। उन्होंने बताया है कि आदमी की आवाज को पहचानकर उसका जवाब दे सकने वाले कम्प्यूटर की कल्पना को व्यावहारिक रूप देना अब संभव हो गया है। इन नये कम्प्यूटरों में मौजूदा कम्प्यूटरों की तरह पेपर-टेप और पंच्ड कार्डों की भी आवश्यकता नहीं रहेगी।

नयी दिल्ली में भारतीय कम्प्यूटर सोसायटी के तत्त्वावधान में भाषण देते हुए इस प्रसिद्ध भारतीय कम्प्यूटर इंजीनियर ने यह भी बताया कि जहां कम्प्यूटरों की कार्यक्षमता और दक्षता प्रतिवर्ष दुगुनी होती जा रही है, वहां उनकी लागत में हर साल ४० प्रतिशत की कमी होती जा रही है।

अब तक कम्प्यूटर की स्मरण-शक्ति का आधार रहा है—फेराइटकोर। अब स्मरण-शक्ति के साधन के रूप में 'चुंबकीय बुलबुले' (मेग्नेटिक बबल्स) का विकास हो चुका है। इस नये साधन ने ही बातूनी कम्प्यूटर को व्यावहारिक रूप देना संभव बनाया है। इस नयी व्यवस्था में सूचना को पहले से अधिक शीघ्रता से दर्ज किया और मिटाया जा सकेगा।

डा. तलवार का संमान

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिषद् (सी. एस. आइ. आर.) ने हाल में १९७०-७१ के लिए रसायन, भौतिकी, जैविकी, इंजीनियरी और चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में हुए विशिष्ट शोधकार्यों के लिए सर शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कारों की घोषणा की है। चिकित्सा-विज्ञान में दस हजार रुपये का यह पुरस्कार प्राप्त किया है आल इंडिया इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल सायंसेज में कार्डियो-थोरेसिक एंड वेस्क्युलर सर्जरी के एसोसिएट प्रोफेसर डा. जे. आर. तलवार ने।

डा. तलवार का कार्यक्षेत्र मुख्यतः शीत-क्षति (कोल्ड इंजरी) रहा है। रक्त-परिभ्रमण पर अत्यधिक ऊंचाइयों में क्या प्रभाव पड़ता है, इस संबंध में डा. तलवार ने लद्दाख में जाकर शोधकार्य किया था। उन्होंने शीतक्षति के उपचार की एक नयी पद्धति का विकास किया है, जो ऊंचे पहाड़ी स्थानों पर तैनात हमारे सैनिकों की प्राण-रक्षा में काफी सहायक सिद्ध हुई है। यह पुरस्कार भी उन्हें इसी के लिए दिया गया है।

कुछ समय पूर्व तक तुषारपात से पीड़ितों में से लगभग २२ प्रतिशत का अंग-विच्छेद करना पड़ता था; परंतु अब इस नयी तकनीक के कारण सिर्फ ६ प्रतिशत मामलों में इसकी नौबत आती है।

हमारे बाल-वैज्ञानिक

गत नवंबर में नेहरू-जयंती के अवसर पर नयी दिल्ली में राष्ट्रीय बाल-विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। देश के सभी हिस्सों से लायी गयी लगभग पांच सौ चीजें

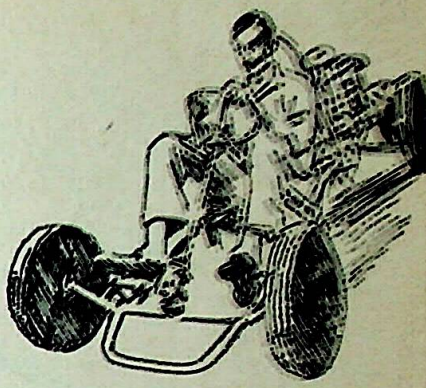

रखी गयी थीं, जिन्हें सत्रह वर्ष से कम उम्र के बाल-वैज्ञानिकों ने अपनी ही सूझ-बूझ और मेहनत से तैयार किया था।

दिल्ली के एक लड़के का तैयार किया हुआ एक साधारण-सा उपकरण वहां आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। इस उपकरण से सीसे की मिलावट का पता आसानी से लगाया जा सकता है। इसके अलावा, भाप से चलने वाला एक रोप-वे, सेकेंड तक सही समय देने वाली एक जल-घड़ी, राकेट का एक माडल बरबस आंखें अपनी ओर खींच लेते थे। विज्ञान में भी विनोद का पुट देते हुए एक बालक ने एक स्वयंचलित उद्घाटन-तंत्र बनाया था, जो फीता काटने वाले उद्घाटक पर पुष्पवृष्टि करता है।

सत्रह वर्ष के एक किशोर द्वारा तैयार की गयी एक मोटर भी थी, जो पेट्रोल से चलती है। एक इंजन वाली यह मोटर ३० किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ सकती है। इसके निर्माता ने इसे चलाकर दिखाया कि यह बिना झटके के सड़क पर दौड़ सकती है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होलीका स्वागत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी हृदयस्पर्शी और प्रेरणाप्रद कथा आरंभ होती है सितंबर १९७३ की एक सुबह। इंजीनियर ग्लिक अपने घर से रवाना हो रहे थे राष्ट्र के सबसे बड़े संकट—सीमेंट की तंगी—के बारे में चिंता में डूबे हुए। चिंता में खोये हुए इंजीनियर ग्लिक अपना कदम देखभालकर रखना भूल गये और सीधे जा गिरे उस खंदक में, जिसे नगरपालिका पिछले एक साल से उनके घर के सामने खुदवा रही थी और आगे कभी जल-निकासी की नहर का रूप देना चाहती थी। उनके बायें पैर की हड्डी टखने के ठीक ऊपर दो जगह से टूट गयी।

ग्लिक को अस्पताल ले जाया गया, जहां फौरन उनकी चिकित्सा शुरू कर दी गयी। अक्टूबर के दूसरे पखवारे में वे अस्पताल से रिहा हुए बैसाखियों के सहारे, पलस्तर के सांचे में बंद अपना बायां पांव लिये, मगर अभी भी अपनी ही शक्ति से चालित। जब अस्पताल में उनके घाव भर रहे थे, तो उस इलाके में बहुत कुछ हो गुजरा था और उनके घर के सामने की नगरपालिका की नहर भी पाट दी गयी थी। खैर, ज्यों ही ग्लिक साहब घर पहुंचाने के लिए बुलायी गयी टैक्सी की पिछली सीट पर विराजमान हुए, टैक्सी वाले ने उनकी ओर मुड़कर प्रश्न किया :

'ऊपर कि नीचे ?'

'टखने पर,' ग्लिक बोले—'दो जगह से।'

'नहीं-नहीं,' टैक्सी वाला बोल उठा—'मेरा मतलब है कि ऊपर गोलन पठार पर, या नीचे दक्षिण में ?'

ग्लिक कुछ न बोले। अर्थात् वे स्पष्ट करना चाहते थे कि मैं तेल अवीव में पर्ल-मटर स्ट्रीट पर घायल हुआ था और यह उत्तर उनके ओंठों पर कुछ देर सचमुच मंडराता रहा। मगर तभी उस आंतरिक प्रतिरोध ने उन्हें जकड़ लिया, जो यह एहसास होने पर कि दूसरे मेरे निजी मामलों में दखल कर रहे हैं, मनुष्य में बरबस पैदा हो जाता है। और उन्होंने टैक्सी वाले से कहा :

'छोड़ो भी, ऐसी छोटी-सी बात का क्या बतंगड़ बनाना।'

टैक्सी वाला श्रद्धा के भार से चुप हो गया; मगर जब टैक्सी ग्लिक-निवास के सामने रुकी, तब वह कहे बिना न रह सका :

'दोस्त, तुम-जैसों की ही बदौलत यह देश जिंदा है।'

उसने किराये का एक भी पैसा छूने से साफ इन्कार कर दिया और अस्पताल की

* एकदम ताजा इस्रायली हास्य *

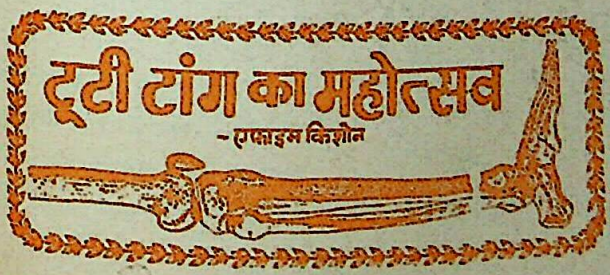

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

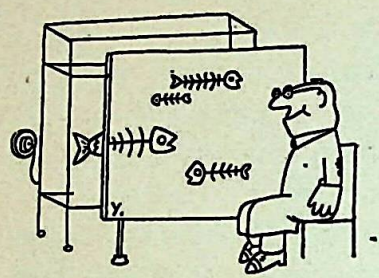

निवृत्त एक्सरे-विशेषज्ञ घर में

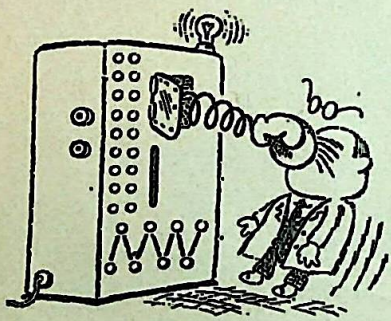

स्लाट-मशीन का मजा

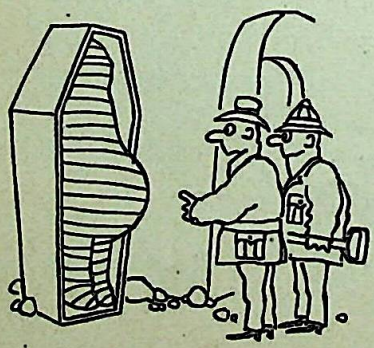

शायद किसी गर्भिणी की ममी है !

हेड नर्स की-सी लगन और सावधानी से इंजीनियर ग्लिक को सहारा देकर टैक्सी से उतारा और उनकी पलस्तर-चढ़ी टांग के साथ उन्हें दरवाजे तक पहुंचा दिया।

० ० ०

इस तरह शुरू हुआ ग्लिक साहब का पलस्तरी टांग महोत्सव।

दुकानों और होटलों में लोग ग्लिक और उनकी बैसाखी की लपककर सेवा करते, मानो मिन्नत कर रहे हों कि आप जैसे सर-फरोशों का राष्ट्र पर जो महान ऋण है, उसका छोटा-सा हिस्सा हमें भी चुकाने दीजिये न !. ग्लिक साहब को इस बात का अभ्यस्त होने में जरा समय लगा कि लगभग सभी लोग उनसे किसी चीज का पैसा लेना अपमान की बात समझने लगे हैं। इस एक बात को छोड़कर उन्हें कोई दिक्कत नहीं हुई, सिवा उन क्षणों के जब कोई उनके घायल होने की वारदात के ब्योरे पूछने लगता था।

ग्लिक ईमानदार आदमी हैं, झूठ बोलने से उन्हें सख्त नफरत है। सो जब भी कोई पूछ बैठता कि आपको सीरियाइयों ने घायल किया या मिस्रियों ने, तो वे बड़ा ही मुखर मौन साध लेते और मंद-मंद मुस्कराने लगते. मानो कह रहे हों—'ओह ! बड़ा लंबा किस्सा है; बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जिन्हें भुला देना अच्छा होता है।' और अंत में मौन तोड़ते हुए बड़बड़ा उठते थे—'छोड़ो भाई, छोड़ो।'

और वे अब बैसाखी छोड़कर छड़ी की मदद से दायीं टांग पर फुदकते हुए चलने लगे थे, हालांकि बायीं टांग अभी भी चर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमाते पलस्तर के सांचे में बंद थी। जब वे एक चरण प्रयोग करते हुए तेल अवीव की संगीत-सभा के कार्यक्रम में जरा विलंब से पधारे, तो समूचे श्रोतावर्ग ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका ऐसा भाव पूर्ण स्वागत किया कि वे चकित रह गये। राष्ट्रीय एकात्मता के इस प्रदर्शन पर वे तनिक-से झेंपे और बड़ी भद्रता के साथ हाथ हिला-हिलाकर उन्होंने जन-समूह का अभिवादन किया।

कार्यक्रम के बाद जब ग्लिक इसका निर्णय कर रहे थे कि उन्हें कार में घर तक पहुंचाने का अहोभाग्य वे किसे प्रदान करें, तभी उनका ध्यान इस बात पर गया कि सभा-भवन के संगीतमय अंधकार का लाभ उठाते हुए किसी ने उनकी टांग के पलस्तर के सांचे पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया था :

'राष्ट्र आपका ऋणी है—धन्यवाद !'

अब तक इंजीनियर ग्लिक के मन में अतीत की स्मृतियां कुछ धुंधला गयी थीं। सो जब तेल अवीव के एक होटल में देश के प्रसिद्ध गायक ने उन्हें देखा और उनके संमान में तत्काल तीन गीत गा डाले, तो उनका गला भर आया और भर्राये हुए स्वर में वे बोल उठे—'इसी लायक था वह क्षण ! मैं फिर वही करूंगा।'

मगर यह तो अब संभव नहीं था; क्योंकि जैसा कि पहले ही हम कह चुके हैं, उनके घर के सामने ही नगरपालिका की नहर अब पाटी जा चुकी थी। फिर भी वे तो तत्पर थे—और यही सबसे बड़ी चीज है।

पलस्तरी टांग ने ग्लिक साहब की कितनी

१९७४

मधुर ध्वनि

गुरुदेव ने कहा था—
'ठांय-ठांय, खट्टर-खट्टर,
ठकाठक जारी है,
लुहार की दुकान पर
हम बैठे हैं घबराये हुए—
घबराहट कम हो जाये
मालूम हो अगर हमें
वीणा के तार बन रहे हैं।'
आइये, कर लें विश्वास
वीणा के तार ही हैं ये,
हम नहीं तो आने वाली पीढ़ियां
इनकी मधुर ध्वनि सुनेंगी।
आने वाली पीढ़ी आ गयी
और इसी प्रतीक्षा में रही खड़ी
कब तैयार हों वीणा के तार ये
और कब मधुर ध्वनि निकले
और, फैल जाये चहुं दिशाओं में—
पर आने वाली पीढ़ी ने पाया
कि उसके हर कंधे पर
एक दुनाली बंदूक है
स्टेनगनें हैं हाथों में
और सिरों पर छायी हैं
एटम एवं हाइड्रोजन
बमों की छाया।
और, ठांय-ठांय, खट्टर-खट्टर,
ठकाठक जारी है।

—ब्रह्मदेव

—पो. बा. ६६, ऐसले हाल, देहरादून

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही रोजमर्रा की समस्याएं भी सुलझा दी थीं। जैसे कि अंडे की समस्या। अब नियमित रूप से प्रति सप्ताह कोई गुप्तदाता एक बुढ़िया के रूप में आकर उन्हें अंडे दे जाता। यह बुढ़िया प्रति मंगलवार को द्वार खटखटाती और ताजे अंडों से भरी बड़ी-सी टोकरी उनके हाथ में थमाते हुए धीमे गद्गद स्वर में कहती—'भगवान तुम्हारा भला करें नौजवान!' और दबे पांव खिसक जाती।

केवल एक बार—ठीक-ठीक कहें तो पिछले सप्ताह—बुढ़िया एक क्षण ज्यादा ठहरी और सारा साहस बटोरकर पूछ बैठी :

'तुम कहां घायल हुए थे बेटा!'

इस पर इंजीनियर ग्लिक ने उत्तर दिया—'नहर पर।'

इस तरह वे अपने नैतिक संघर्ष के आखिरी दौर से सफलतापूर्वक पार हो गये।

उनका जीवन पलस्तरी-आशा से भर उठा है और अनंत संभावनाओं से भी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि यदि सदा के लिए नहीं तो तीन महीने तक तो पलस्तर को बने ही रहने दिया जाये—या कम से कम तब तक तो अवश्य ही, जब तक कि युद्ध या शांति इन दोनों में से एक छिड़ न जाये।

समुद्र में मजे से खेलती नन्ही मछली पनडुब्बी देखकर डर के मारे मां मछली के पास आकर दुबक गयी। मां ने उसे हिम्मत बंधाते हुए कहा—'डरो मत बेटी, वह कोई बड़ी मछली नहीं; बस एक डिब्बा है जिसमें आदमी बंद हैं।'

० ० ०

गुस्से से तमतमाता हुआ कर्मचारी अपना वेतन का लिफाफा लेकर कैशियर के पास गया और बोला—'इसमें एक रुपया कम है। इसका क्या मतलब?'

कैशियर ने शांतिपूर्वक वेतन का खाता चेक किया और कहा—'पिछली बार गलती से आपको एक रुपया अधिक दिया गया था, तब तो आपको कोई एतराज नहीं हुआ था।'

कर्मचारी ने अपनी आवाज और ऊंची करते हुए उत्तर दिया—'किसी एक महीने गलती हो जाये, तो मैं नजरअंदाज कर सकता हूं; मगर लगातार दो-दो महीने गलती हो, इसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

० ० ०

सड़क के किनारे खड़ी युवती अपनी कार के पंक्चरशुदा पिचके टायर पर हताश दृष्टि डाल रही थी। यह देखकर युवक ने अपनी कार रोकी और युवती के कार का पहिया बदला। जब नया टायर लग गया, तो युवती बोली—'अब जैक को जरा आहिस्ते-से नीचा कीजियेगा। पिछली सीट पर मेरे पति सो रहे हैं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तिगत आपत्ति और विश्वसंकट

गगनविहारी महेता

भीषण महंगाई, कूदते-फांदते और बढ़ते जा रहे आवश्यक वस्तुओं के भाव, मुद्रास्फीति, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अशिष्टता, अराजकता ये आज पृथ्वी पर लगभग प्रत्येक देश की समस्या हैं—इसका यकीन हमारे महान नेता तथा उच्चतम मंत्री दिलाते हैं, तो इससे हमें बड़ा आश्वासन मिलता है। अर्थात् हम पचपन करोड़ लोग (चंद भाग्यशाली धनिकों, मंत्रियों तथा बड़े अफसरों को छोड़कर) जो कष्ट सह रहे हैं, वही कष्ट सारे संसार की जनता जाने-अनजाने सह रही है। इस सांत्वना से हृदय को गहरा, विशिष्ट प्रकार का मनोबल और धैर्य मिलता है। हमारा दुःख सारे संसार का भी दुःख है, इस विराट कल्पना से मन कुछ हल्का होता है।

प्रिय संपादकजी, क्या आप भगवान बुद्ध और किसागोतमी की कथा से परिचित हैं? शायद आप कहें कि इस वक्त वह याद नहीं है। तो सुनिये, संक्षेप में सुनाता हूं। गौतम बुद्ध जब परिभ्रमण कर रहे थे, तब एक युवती किसागोतमी उनके पास आयी। उसका इकलौता बेटा मर गया था और उसे जिला देने की प्रार्थना उसने उनसे की। बुद्ध भगवान ने कहा—'बहन, तुम एक तोला काली राई ले आओ; मगर देखो, जिस घर में कोई मरा न हो, वहीं से लाना।' किसागोतमी घर-घर भटकी, कितने ही परिवारों में पूछा। परंतु हर एक के यहां किसी न किसी की मृत्यु तो हो ही चुकी थी। सभी ने उसके सामने अपना दुखड़ा रोया। किसागोतमी खाली हाथ बुद्ध भगवान के पास लौट आयी और बोली—'मुझे एक भी परिवार, एक भी घर ऐसा नहीं मिला, जिसमें किसी न किसी की मृत्यु न हुई हो। सो थक-हारकर आपके पास वापस आ गयी हूं।' तब भगवान बुद्ध बोले—'जिस सत्य तत्त्व को कोई नहीं जान सका, तू उसे जान गयी। इससे तू अपने मन की शक्ति प्राप्त कर सकेगी। तेरा बेटा फिर से तो नहीं जी सकेगा, पर आज तू समझ गयी कि इस विशाल संसार में सभी लोग तेरे ही दुःख में आंसू ढार रहे हैं।'

हमारे आधुनिक बुद्ध पवित्र या साधु-चरित तो नहीं हैं, परंतु वे कम तीव्र बुद्धि वाले नहीं हैं। राज्य के माननीय नेता और प्रतिनिधि हमें ठीक वैसी ही सांत्वना देते हैं कि हमारे दुःख समग्र मानव-जाति भोग रही है। क्या न्यूयार्क, टोक्यो, पेरिस, लंदन में लोग

गुजराती से अनुवाद : गिरिजाशंकर त्रिवेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यधिक महंगाई नहीं बर्दाश्त कर रहे हैं? क्या अफ्रीका के छह देशों में लोग भुखमरी से मर नहीं रहे हैं? हमारे यहां तो लोग भुखमरी से सिर्फ परेशान होते हैं और मरते हैं केवल पुष्टिकारक भोजन पर्याप्त न खाने से। रिश्वतखोरी अमरीका में कौन-सी कम है? क्या निक्सन के चुनाव-फंड में उद्योग-पतियों और व्यापारियों द्वारा ढेर सारा पैसा दिये जाने की बात प्रकाश में नहीं आयी? क्या भूतपूर्व उपराष्ट्रपति एगन्यू पर पैसा खाने का आरोप नहीं लगा और उन्हें त्याग-पत्र नहीं देना पड़ा? फ्लोरिडा और कैलि-फोर्निया में निक्सन के महल (नया मकान) बनाने में राज्य का अर्थात् प्रजा का लाखों रुपया नहीं खर्च किया गया? सोवियत रूस में क्या रिश्वतखोरी की घटनाएं नहीं घटतीं? तात्पर्य यह कि हमें अपने दोष बहुत बारीकी से नहीं देखने चाहिये और हरदम नेताओं तथा मंत्रियों के दोष नहीं निकालते रहना चाहिये।

बुद्ध की तरह हमारे राजनेता भी, जो सत्य किसी को भी प्राप्त न हो, उसे खोज निकालने के लिए दिन-रात (विशेषतः रात के अंधकार में) अथक प्रयत्न करते रहते हैं। परस्पर झगड़ा, निरंतर प्रतिस्पर्धा तथा कैसे अपनी सत्ता बढ़े और अपना लाभ हो, इस कार्य-कलाप से जब भी फुरसत मिलती है तब गरीबी के उन्मूलन, मुद्रास्फीति के इलाज, बेकारी के सवाल, अनाज की तंगी आदि की चिंता वे करते ही रहते हैं। इसलिए दूसरों का व्यापार किस तरह ले लिया जाये, दूसरों के उद्योग राज्य किस तरह चलाये, विघ्न-बाधाओं के बावजूद उत्पादन किस तरह बढ़ायें, बारिश और कुएं बिना पानी किस तरह लायें, इत्यादि कार्यों में हमारे राज्य-कर्ता निमग्न रहते हैं। कुछ समय पहले अनाज की विकट स्थिति नहीं थी; केवल पूंजी-पतियों, मोनॉपलिस्टों, प्रतिक्रियावादी अख-बारों और विरोधी पार्टियों की कल्पना थी कि देश कठिनाई में है। देश के लोग थोड़े-से समय के लिए जरा कठिनाई झेल रहे थे, जिसकी अत्यधिक अतिरंजित खबरें पश्चिम के अखबार छाप रहे थे। हमने अनाज का आयात न करने का दृढ़ संकल्प किया था; असल में तो अनाज का निर्यात करने की हमारी स्थिति थी।

परंतु ये बातें अब हम समूचे विश्व के परिप्रेक्ष्य में सप्रमाण देख सकते हैं। हम अब समझ चुके हैं कि मुद्रास्फीति के बिना विकास संभव नहीं, महंगाई के बिना प्रगति असं-भव है। इसलिए भले हम स्वयं कितने ऐश-इशरत से रहते हों, मगर दूसरों को सादगी और किफायतशारी से रहने का उपदेश देना बहुत जरूरी है। नसीहत दूसरों को देने के लिए अमूल्य वस्तु है। व्यक्ति को मुद्रा की तंगी तो हो सकती है, पर राज्य को नहीं। वह दिन-रात नोट छाप सकता है। बस, कभी-कभी कागज की कमी हो जाती है।

जो भी हो, यह जानकर कि अन्य अनेक देशों में बल्कि सोवियत रूस, चीन और साम्यवादी देशों को छोड़कर किसी भी देश में गरीबी अभी उन्मूलित नहीं हुई है, जनता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुखमरी का शिकार हो रही है, हमारी गरीब प्रजा-को अवश्य सांत्वना मिल सकती है। भुखमरों का एक प्रकार का अंतरराष्ट्रीय भाईचारा है। हमारे यहां की बेकारी पंच-वर्षीय योजनाओं के कुछ समय तक स्थगित रहने का परिणाम है। आवश्यक वस्तुओं की कमी, पाकिस्तान के साथ युद्ध का परिणाम है। भ्रष्टाचार अकाल और बाढ़ का परिणाम है। हमारी आर्थिक कठिनाइयां थोड़े समय की हैं। ये दीर्घदृष्टि से देखने से घटेंगी—इतनी दीर्घ कि दूर कहीं कुछ दिखाई ही न पड़े। लंबे समय बाद सभी मुश्किलें दूर हो जायेंगी, यह असंदिग्ध है; परंतु कितने लंबे समय बाद, यह अभी कहा नहीं जा सकता। और उस अंतिम काल तक आज जी रहे सभी लोगों का अंत भी आ ही चुका होगा।

आयोजन का शुभ फल भोगने का लाभ भविष्य की प्रजा को मिलेगा, यद्यपि संभव है कि उसे भी शायद बहुत बाट जोहनी पड़े! लेनिन ने कहा था कि जब तक पूरे विश्व में क्रांति नहीं होगी, तब तक किसी एक देश की क्रांति सफल नहीं होगी। इसी तरह जब तक प्रत्येक देश की दरिद्रता दूर न हो, तब तक हमारे देश की दरिद्रता भी दूर नहीं होगी। प्रत्येक आर्थिक व्याधि विश्वव्यापी होती है, हमें यह बात पूरी तरह से समझ लेनी चाहिये।

भूख की विश्वव्याप्ति

बंबई के प्रसिद्ध व्यंग्यचित्रकार चकोर द्वारा हमारे लिए विशेषतः रचित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

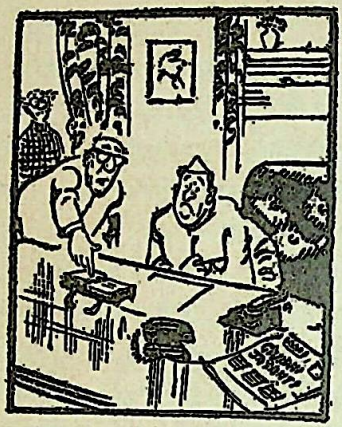

.... और ८॥ से ९॥ तक उनकी स्मृति में आडंबरहीनता, सादगी और शुद्धता का पालन.....[लक्ष्मण: टाइम्स आफ इंडिया]

यह सत्य इतना सुस्पष्ट और मौलिक है कि राष्ट्रपति, मुख्य मंत्रियों, राज्यपालों और मंत्रियों के भाषणों में अवश्य ही स्थान पाने का अधिकारी है।

क्या आज सारे ही कार्य-कलाप संसार-व्यापी नहीं हो गये हैं! उड़ना, तैरना, चलना, मोटर-दौड़, हिमालय पर चढ़ाई, चंद्रमा पर पहुंचना—सभी में विश्व-कीर्तिमान प्राप्त करना पड़ता है। स्त्री-सौंदर्य के लिए अंतर-राष्ट्रीय स्पर्धा होती है और कोई एक महिला विश्वसुंदरी घोषित होती है। इनके अलावा अंडे या केले खाने, शराब पीने, जमीन में समाधिस्थ होने, मौन धारण करने या शीर्षा-सन करने में अनेक देशों के लोग प्रतिस्पर्धा में भाग लेकर विश्वविजेता बनते हैं। तो फिर बताइये हम आपत्ति के मामले में विश्व-दृष्टि क्यों न रखें?

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद हमसे हमेशा कहा जाता है कि (मंत्रिपद को छोड़कर) क्षुद्र झगड़ों में मत पड़ो; (अपने निजी लाभ की बात के सिवा) गौण प्रश्नों में मत उलझो।

अंतरराष्ट्रीय दृष्टि का विकास करना ही उत्तम प्रयोग और सच्चा उपाय है। पर्याप्त गेहूं, चावल, तेल और शक्कर जब न मिल रहा हो, तब क्या खायें-पियें इसकी चिंता न करते हुए कंबोडिया और चिली में अमरीका के आक्रमण पर विचार करें। कुएं में पानी नहीं है या कुआं ही नहीं है, इसके लिए व्यथ होने के बजाय गोरे लोग अफ्रीका में कितना और कैसा क्रूर अत्याचार कर रहे हैं, इसका ध्यान करें। पहनने के लिए कपड़े न मिलें, तो इसे अतीत और वर्तमानकालीन साम्राज्य-वाद के अन्याय का परिणाम समझना न भूलें। रहने को यदि घर न मिले, तो इस्रायल द्वारा अरब प्रदेश के हड़पे जाने का डटकर विरोध करें। कोई मंत्री या अफसर रिश्वत ले, तो चारों ओर फैले भ्रष्टाचार का स्मरण करें।

जैसे दोष हमारे राजनेताओं का नहीं, विरोधी दलों, अखबारों, पूंजीपतियों और नौकरशाही का है, उसी तरह हमारी परे-शानियां भी विश्वशक्तियों के कारण हैं। इस बोध से हम यह समझ सकेंगे कि संसार के प्रश्नों की तुलना में हमारे दुःखों की कोई बिसात नहीं। इस ज्ञान से सहृदयशक्ति प्रबल होगी, आशा जगेगी और वास्तव में हमारे नेता विश्वनेता हैं, इसका हमें भान हो जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नंबर दो की आत्मा

हरिशंकर परसाई

वह कमबख्त टैक्सी बेचकर साधु और योगी हो गया है। एक ही तो यह टैक्सी वाला था, जिसका मीटर रहता था।

एक दिन मैंने उससे कहा—'चलो भई, ज़रा यूनिवर्सिटी पहुंचा दो।' टैक्सी वाले ने कहा—'साहब, माफ करना पंद्रह दिन खिदमत नहीं कर पाऊंगा। जयपुर से एक पार्टी आ गयी है, जिसकी खिदमत में लगा हूं।'

मैंने पूछा—'कैसी पार्टी है यह और क्यों आयी है?'

उसने कहा—'बड़े सेठ हैं। इधर कोई साधु आये हैं, जो दो-तीन घंटों में आदमी को अपने से भुलाकर दूसरी दुनिया में ले जाते हैं। उनका यहां पर 'आत्मशांति-आश्रम' चल रहा है। बड़े-बड़े लोग आये हैं आत्मा की शांति के लिए।'

मैंने उससे पूछा—'क्या तुम्हें आत्मा की शांति नहीं चाहिये?'

उसने कहा—'साहब, किसे नहीं चाहिये! पर अपना तो यह है कि दिन-भर मेहनत की, शाम को बीवी बच्चों के साथ खाना खाया और सो गये। सवेरे से फिर आप लोगों की खिदमत में।'

मैंने पूछा—'फिर यह जो तुम्हारी पार्टी है, वह ऐसा क्यों नहीं कर सकती?'

उसने कहा—'पता नहीं साहब, क्या बात है। सेठ बंबई, कलकत्ता और दिल्ली फोन करता रहता है। सौदा करता है और दो-तीन घंटे के लिए आत्मा की शांति के लिए और अपने को भूलने के लिए साधु के आश्रम में जाता है। लौटकर फिर हिसाब और फोन करने लगता है।'

मैंने कहा—'शायद उसकी आत्मा अपने से अलग किस्म की है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने कहा—'हां साहब, ऐसा हो सकता है। आत्मा का भी इस जमाने में क्या ठिकाना साहब! सुना है, नंबर दो की आत्मा भी होने लगी है।'

मैंने दूसरी टैक्सी ले ली।

तीन-चार दिन बाद वह फिर मिला। मैंने पूछा—'कैसा चल रहा है धंधा?'

उसने कहा—'साहब, चांदी कट रही है। मैं तो चाहता हूं कि इस देश में सब लोग नंबर दो की आत्मा के हो जायें, तो हम लोगों का बड़ा फायदा है।'

मैंने पूछा—'सेठ को कोई और शौक है? दारू का या औरत का?'

उसने कहा—'नहीं साहब, बड़ा भला आदमी है। न दारू, न औरत। रोज सवेरे पूजा करता है और किसी दंद-फंद में नहीं है। बड़ा धार्मिक आदमी है। पर आत्मा की शांति के लिए और अपने को भूलने के लिए रोज सैकड़ों रुपये खर्च करता है। बड़ा भला आदमी है। गुरु उसे दो-तीन घंटे के लिए दूसरा आदमी बना देते हैं।'

दो दिन बाद टैक्सी वाला मुझे फिर मिला। मैंने पूछा—'आश्रम में क्या होता है? आत्मा को शांति कैसे मिलती है? आदमी अपने को कैसे भूलता है?'

उसने कहा—'मैंने खिड़की से झांककर देखा है। वह साधु घंटे-भर तो भक्तों को आंखें बंद करके बैठने को कहता है। फिर कहता है—तुम, तुम नहीं हो। तुम कोई और हो। तुम्हारा नाम गलत नाम है। तुम राधेश्याम नहीं हो। बोलो राधेश्याम, तुम क्या राधेश्याम हो? मेरा सेठ कहता है—मैं राधेश्याम नहीं हूं। मैं कोई नहीं हूं। इसके बाद साहब न जाने क्या जादू वह गुरु करता है कि लोग नाचने लगते हैं, बकने लगते हैं और यहां-वहां लुढ़क जाते हैं। तब मैं टैक्सी में सेठ को लेकर होटल जाता हूं। पूछता हूं—सेठजी आपका नाम क्या है? तो वे कहते हैं—मेरा नाम राधेश्याम है। साहब, दो-तीन घंटे भूलने के लिए ये लोग इतना रुपया खर्च करते हैं और तपस्या करते हैं! यह भी बड़े आदमी का एक शौक ही है। हम गरीब लोग भी और तरीके से अपने को दो-तीन घंटे भूल जाते हैं। आप तो जानते हैं। पर अपना काम सस्ते का है।'

मैंने उससे पूछा—'तुम क्या आत्मा को जानते हो? वह कैसी होती है? तिकोन होती है या चौकोर?'

उसने कहा—'साहब, हम यह सब कुछ नहीं जानते। ये बड़े आदमियों के चोंचले हैं। हम तो दिन-भर मेहनत करते हैं। रात को रोटी खाते हैं, सो जाते हैं और सवेरे से फिर आप लोगों की खिदमत में हाजिर हो जाते हैं। आत्मा ठीक रहती है।'

मैंने कहा—'क्या तुम्हें यह नहीं लगता कि आत्मा और माया के बीच में सौदा हो गया है! यानी स्वार्थ और परमार्थ ने हाथ मिला लिये हैं—या ईश्वर बिज़नेसमैन हो गया है?'

उसने कहा—'साहब, हम ये बातें क्या जानें? हम तो न पढ़े-लिखे, न ज्ञानी। हम तो टैक्सी चलाते हैं, मेहनत करते हैं और बाल-बच्चों को पालते हैं। आत्मा तो बड़े लोगों का शौक है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने पूछा—'तुम्हारी तरह वह सेठ भी मेहनत करके बच्चे पालता है, या वह योगी-साधु भी रोटी के लिए कोई काम करता है?'

उसने कहा—'साहब, हम तो मामूली गरीब आदमी हैं। हम इन बातों को क्या जानें! इतना जानते हैं कि वह साधु कुछ काम नहीं करता और रईस की तरह रहता है। और हमारी यह पार्टी—यह सेठ भी दो-तीन घंटे साधु रहने के बाद बंबई और कलकत्ता सौदे के लिए फोन करता है। बस इतना काम ये लोग करते हैं।'

मुझे यह मामला बहुत दिलचस्प लगा। कोई करोड़पति दो-तीन घंटे अपने को, जगत् को और माया को भूलने के लिए इतनी दूर जाये और इतने रुपये खर्च करे! मुझे ऐसे लोगों पर दया भी आती है। मैं जानता हूं, अध्यात्म भी धंधा है। अमोह धंधा है। निर्लोभ भी धंधा है। अपरिग्रह भी धंधा है। अहिंसा तक धंधा हो गया है।

एक दिन टैक्सी वाले से मैंने पूछा—'क्या दो-तीन घंटे अपने को भूलकर, जैसा इनसे वह साधु कराता है, वैसा तुम नहीं करा सकते?'

टैक्सी वाला बेवकूफ नहीं है। बहुत समझदार है। वह मामला समझ गया। उसने कहा—'साहब, मैं "टिराई" करता हूं। परसों आपको बताऊंगा। ऐसा हो सकता है और बिना गुरु के ही हो सकता है।'

तीसरे दिन वह मुझे मिला। कहने लगा—'आपने ठीक सलाह दी थी। मैंने सेठ से कहा—सेठजी आप दो-तीन घंटे सेठ नहीं रहने के लिए सैकड़ों रुपये खर्च करते हैं, फिर आप सेठ हो जाते हैं। इतना पैसा आप इतने छोटे-से काम के लिए क्यों खर्च करते हैं? हमारे ऋषि-मुनियों ने इस बात पर बहुत सोचा है और उन्होंने एक तत्त्व तैयार किया है, जिसे "आत्मविस्मृति रसायन" कहते हैं। यह-आध्यात्मिक तत्त्व है। इसे आप अवश्य लीजिये। बड़ी मुश्किल से किसी योगी के पास मिलता है। इधर आपको ५०० रु. रोज लग रहे हैं। मैं कोशिश करूंगा कि ईश्वर की कृपा से आपको वह ५० रुपये में मिल जाये। सेठ ने कहा—यह तो मुझे मालूम भी नहीं था कि भारत में ऐसे-ऐसे योगी पड़े हैं! तुम लाओ ऋषियों का वह तत्त्व।'

फिर टैक्सी वाला बोला—'साहब, मैं ५० रु. उनसे लेकर गया। २० रु. की दारू खरीदी। द्राक्षासव की शीशी में ५-६ पाइंट भरा। इत्र डाला, लौंग डाली, इलायची डाली। शीशी का लेबिल निकालकर उस पर लिखा—"आत्मविस्मृति तत्त्व" और नीचे नाम लिखा—"मुनि आत्मज्ञानी।"

मेरी जिज्ञासा बढ़ी। मैंने कहा—'फिर क्या हुआ?'

उसने कहा—'मैंने सेठ को गिलास में लगभग दो पेग डालकर दिये और कहा—परमपिता परमेश्वर का नाम लेकर इसे बिना सांस लिये पी जाइये। दारू सुगंधित और स्वादिष्ट थी। सेठजी उसे पी गये। १५ मिनिट बाद मैंने पूछा—सेठजी आत्मा कैसी है? वे बोले—आत्मा आनंद में है। मैं तो अब आत्मा में ही रह गया हूं। मैंने पूछा—बिजनेस का भी कुछ खयाल है? वे बोले—कौन-सा बिजनेस? मैं तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजनेस नहीं करता। मैंने उन्हें एक पेग और दे दी। पांच मिनिट बाद पूछा—सेठजी क्या बंबई के सेठ राधेश्यामजी हैं? वे बोले—बंबई में कोई सेठ राधेश्याम नहीं है। एक था, पर अब नहीं है। मैंने पूछा—माया-मोह का क्या हालचाल है? जवाब मिला—न माया, न मोह। हम शुद्ध आत्मा हैं। मैंने पूछा—आपका नाम क्या है? उन्होंने कहा—जब मैं हूं ही नहीं तो मेरा नाम क्या होगा? मैं तो बस ईश्वर हूं। और वह ठीक वही हरकतें करने लगा, जैसी गुरु के सामने करता था।'

टैक्सी वाला बयान कर रहा था—'सेठ बोला—वह सा.....योगी हजारों रुपये खर्च करवाता है, दो-तीन घंटे कसरत करवाता है। तुमने हमें १५ मिनिट में मनुष्य से ईश्वर बना दिया। आज से तुम टैक्सी-ड्राइवर नहीं मेरे गुरु हुए। हजार रुपयों का काम तुमने पचास रुपयों में करवा दिया।'

मैंने पूछा—'फिर क्या हुआ?'

टैक्सी-ड्राइवर बोला—'फिर यह हुआ कि सेठजी ने अपना बस्ता खोला और नोटों के बंडल मेरे चरणों पर रख दिये। मैंने कहा—यह सब आप क्यों दे रहे हैं? मैं तो आपका सेवक हूं। सेठ ने कहा—नहीं, तुम मेरे गुरु हो। वह सा.....योगी गुरु हजारों रुपये लेकर भी हमारी आत्मा का हमसे साक्षात्कार नहीं करवा सकता। पर तुमने सिर्फ ५० रुपयों में हमें ईश्वर बना दिया।'

कई दिनों बाद टैक्सी वाला मुझे मिला। उसने दाढ़ी बढ़ा ली थी। गेरुआ वस्त्र धारण किये थे। मैंने पूछा—'यह तुम्हें क्या हो गया? क्या टैक्सी नहीं चलाते? संन्यासी हो गये हो?'

उसने कहा—'नहीं साहब। आपसे क्या छिपाऊं? अभी भी मैं टैक्सी ही चलाता हूं—पर अब मेरी टैक्सी यहां से सिर्फ परमात्मा के पास जाती है। सुना है, उस गुरु का विजनेस मेरे कारण ढीला हो गया है। देखिये साहब, यह तो विजनेस का मामला है—जहां तक टैक्सी जायेगी, वहां तक का किराया मिलेगा। उस गुरु की टैक्सी आत्मा तक जाती थी। पर मेरी टैक्सी परमात्मा तक जाती है। आखिर दूर के मुसाफिर मेरे ही पास आयेंगे न! और मेरा चार्ज भी कितना कम है।'

मैंने पूछा—'अब आगे क्या प्रोग्राम है?'

उसने कहा—'साहब, विजनेस जम गया है। पर एक बार अमरीका हो आना चाहता हूं। अमरीका हो आने से ईश्वर खुद ही पास सरक आता है। और ईश्वर पास सरक आये तो बिजनेस ही विजनेस है।'

['आकाशवाणी' से साभार]

*

तीन आदमी चाय पीने एक छोटे रेस्तरां में गये। बेयरे से पहले ने कहा—'देखो, मुझे बहुत हल्की चाय चाहिये।' दूसरा बोला—'मुझे बहुत कड़क चाहिये।' तीसरा कहने लगा—'मुझे चाय तो कैसी भी चलेगी, मगर कप बिलकुल साफ होना चाहिये।' पांच मिनिट बाद बेयरा तीन कप चाय लाया और पूछने लगा—'हां तो साफ कप किन साहब को चाहिये?'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर श्री महाराजा तकलीप्रसाद ने घूसखोरी को कानूनन जायज करार कर दिया था, तो इसका सबब यह नहीं था कि वे खुद घूसखोर थे या घूसखोरी को पाप के बजाय पुण्य समझते थे। असल में यह हुक्म उन्होंने आखिरी हथियार के रूप में जारी किया था, क्योंकि उनके खयाल में दूसरा कोई तरीका ही नहीं था। दस साल पहले उन्होंने लोगों को वेद, कुरान, इंजील और ग्रंथ साहब का वास्ता देकर समझाया था कि घूस लेना व देना महापाप है। मगर उनकी रियाया ने उन्हें यह कहकर टाल दिया कि हम अलौकिक पुस्तकों की दूसरी बातों की कौन-सी परवाह करते हैं, जो इस एक कथन को कबूल कर लें।

पांच वर्ष पहले उन्होंने एक फरमान जारी किया था कि घूस लेने और देने वाले को गोली से उड़ा दिया जायेगा। पर पांच साल के दौरान में कोई भी आदमी घूस देते या लेते हुए पकड़ा नहीं गया था। वजह? वजह यह कि पकड़ने वाले खुद घूसखोर थे। तंग आकर महाराजा तकलीप्रसाद ने अपनी रियाया को घूस लेने और देने की खुली छूट दे दी। उनका कहना था कि कभी-कभी बकौल गालिब दर्द जब हद से बढ़ जाता है तो दवा हो जाता है।

महाराजा के इस एलान पर जिल्लतनगर में दीपमाला की गयी। हर एक नागरिक ने बगलें बजाकर अपने पड़ोसी से कहा—'आखिर ईश्वर ने हमारी सुन ली। जिंदगी का मजा तो अब आयेगा। भला घूसखोरी के बिना जीना भी कोई जीना है!' लिहाजा रिश्वत का वह बाजार गर्म हुआ कि पिछले सभी रेकार्ड मात हो गये.....महाराजा को हर रोज रोंगटे खड़े कर देने वाली खबरें मिलतीं, पर उन्हें रत्ती-भर उत्तेजना न होती। वे कहते—'जब लोग इस रिवाज को पसंद करते हैं, तो मुझे क्या एतराज हो सकता है।'

धीरे-धीरे यह हाल हो गया कि जिल्लतनगर में कोई काम रिश्वत दिये बिना हो ही

• कन्हैयालाल कपूर •

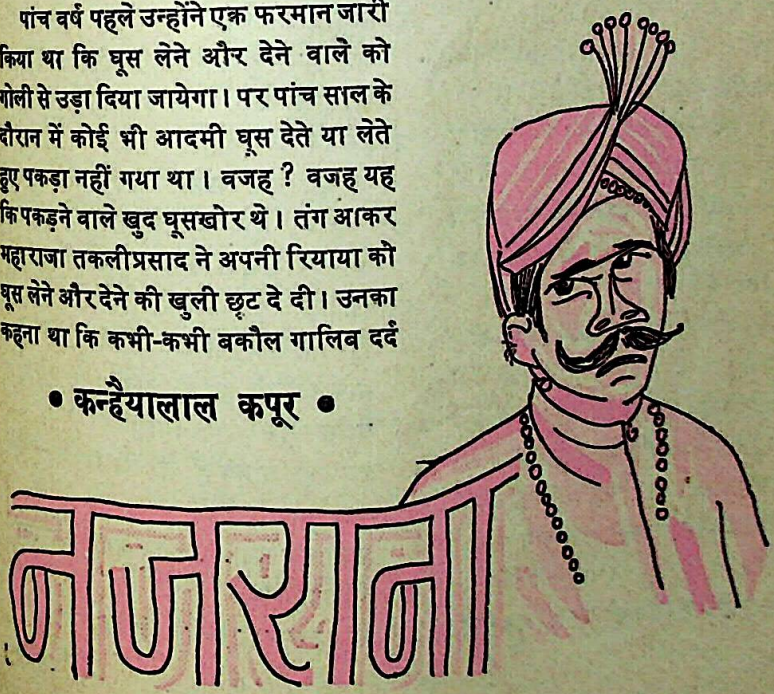

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं सकता था। हर दफ्तर के दरवाजे पर साइन-बोर्ड लगाया गया, जिसपर बड़े अक्षरों में लिखा गया—'अगर आप रिश्वत के बिना काम निकालना चाहते हैं, तो आप या तो मसखरे हैं या सिरफिरे !'

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। इसलिए घूसखोरी उन महकमों में भी प्रवेश करने लगी, जो एक मुद्दत से इससे पाक थे। मसलन, जब लाला गरीबदास अपने लड़के को कालेज में दाखिल कराने गये, तो प्रिंसिपल साहब ने उनसे फरमाया—'हम आपके लड़के को दाखिल कर लेंगे, लेकिन पहले मामला तय कर लीजिये।'

'साहब कैसा मामला ! मेरा लड़का शुरू से वजीफा पाता रहा है। इस साल यूनिवर्सिटी में दूसरे नंबर पर आया है।'

'यह तो ठीक है, पर आपने हमारे नजराने के बारे में क्या सोचा है ?'

'नजराना ! तो गोया आप भी नजराना मांगते हैं !'

'क्यों नहीं ! जब बाकी सब महकमों में इसका चलन है, तो शिक्षा-विभाग ने क्या पाप किया है ?'

'आप ठीक फरमाते हैं; मगर बंदा बहुत गरीब है।'

'आप शायद नहीं जानते, गरीबों के लिए जिल्लतनगर में कोई जगह नहीं।'

'पर जनाब ! मेरा लड़का बड़ा ही बुद्धिमान है। आपके कालेज का नाम रोशन करेगा।'

'हमें कालेज के नाम की इतनी फिक्र नहीं, जितनी नजराने की है। कहिये, पांच सौ देंगे?'

'जनाब ! मेरे पास तो फीस देने के लिए भी पैसे नहीं हैं। मैं तो फीस में भी रियायत का ख्वाहिशमंद हूं।'

'हम आधी फीस माफ कर देंगे, पर उसके लिए आपको अलग नजराना चुकाना होगा।'

'मेरी माली हालत बहुत खस्ता है। मैं नजराना चुकाने के हरगिज काबिल.....'

'आप ख्वाहमख्वाह मेरा वक्त बरबाद कर रहे हैं। ऐसे ही मुफ्तखोर थे, तो यहां आये ही क्यों थे ?'

तारघर के एक चपरासी ने एक साहब से कहा—'आपका तार है।'

'तो लाओ।'

'वाह, यह खूब रही ! अजी साहब, तार है, मामूली खत नहीं।'

'पर तार पहुंचाना तो तुम्हारा फर्ज है।'

'आजकल अपना फर्ज कौन निभा रहा है, जो हम निभायें !'

'अच्छा, तार लाओ। अगर कोई खुशखबरी हुई तो मुंह मीठा कराऊंगा।'

'और अगर खुदा न करे, कोई बुरी खबर हुई तो.....?'

'फिर तो मजबूरी है।'

'माफ कीजिये, हमें यह सौदा पसंद नहीं।'

'आखिर तुम चाहते क्या हो ?'

'हम वही चाहते हैं, जो जिल्लतनगर में हर शख्स चाहता है।'

'यानी नजराना..... और अगर नजराना न पेश किया गया ?'

'तो यह तार आपको कभी नहीं मिलेगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक टिकट-बाबू ने टिकट देने से पहले नजराने की मांग की। उसे बताया गया कि वह सरकारी मुलाजिम है और मुसाफिरों को टिकट न देकर अपने फर्ज से विमुख हो रहा है। उसके पास पहले से जवाब तैयार था—'सरकारी मुलाजिम तो और भी हैं। आप उनसे जवाब क्यों नहीं तलब करते ?'

एक इंजन-ड्राइवर ने जान-बूझकर गाड़ी रोक ली और उसे उस वक्त तक रोके रखा, जब तक कि मुसाफिरों ने उसकी मुट्ठी गर्म नहीं की।

एक राहगीर ने एक मरीज को अस्पताल का रास्ता बताने से पहले पांच रुपये बतौर नजराना वसूल किये। एक शख्स को जब नमस्ते की गयी, तो उसने जवाब में नमस्ते कहने के लिए दस रुपये मांगे। एक और शख्स से जब पूछा गया—'कहिये मिजाज कैसा है?' तो उसने कहा—'अगर आप सचमुच ही मेरे मिजाज के बारे में पूछना चाहते हैं, तो पंद्रह रुपये निकालिये।'

महाराजा तकलीप्रसाद आये दिन घूसखोरी के अजीबोगरीब किस्से सुनते और मन ही मन खुश होते कि वह खूब रंग ला रही है। रात के वक्त वे भेस बदलकर अपनी रियाया का हाल मालूम करने के लिए निकला करते और इस तरह के दिलचस्प संवाद सुन-सुनकर खुश होते।

'क्यों साहब ! इस समय आपकी घड़ी में क्या बजा है ?'

'जनाब ! पहले नजराना पेश कीजिये ! फिर वक्त बतायेंगे।'

'आप खड़े क्यों हैं? कुर्सी पर बैठ जाइये।'

'कुर्सी पर बैठने का आप क्या देंगे ?'

'वह देखिये, वह रहा ईद का चांद।'

'देखें तो तब, जब पहले नजराने का फैसला कर लें।'

वक्त बीतता गया और महाराजा तकलीप्रसाद इस तरह के संवादों से कुछ इतने परिचित हो गये कि उन्हें उन पर न रोना आता, न गुस्सा। पर एक रात उन्होंने एक ऐसा दिल हिला देने वाला नजारा देखा कि एकदम वे थर्रा गये। चौदहवीं के चांद की रोशनी में उन्होंने एक औरत को सड़क के किनारे बैठे हुए पाया। उसकी गोद में अभी-अभी जनमा बच्चा था, जो बिलख-बिलखकर अपनी मां की छाती तक अपना नन्हा मुंह ले जाने की कोशिश कर रहा था। लगता था, उसे बहुत भूख लगी है। पर उसकी मां अपने हाथ से उसके मुंह को पीछे हटाते हुए कह रही थी—'बर्खुरदार ! अब सिर्फ रोने या चीखने से दूध नहीं मिलेगा, पहले नजराना निकालो।'

महाराजा तकलीप्रसाद यह नजारा देखकर हैरान रह गये और बरबस उनके मुंह से निकला—'हे भगवान ! अगर मेरी कौम इतनी जलील और पतित हो गयी है, तो बेहतर है इसे तू फौरन तहस-नहस कर दे !'

भगवान जाने, महाराजा ने यह प्रार्थना किस शुभ घड़ी में की थी कि वह मंजूर हो गयी। और कहते हैं, उस रात एक भयानक भूकंप आया और पल-भर में जिल्लतनगर का जलील शहर तबाह-बरबाद हो गया।

—डी. एन. कालेज, मोगा, पंजाब

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर-झांक लड़की-ताक महिला

• अब्दुल मुजीब •

हम अब तक समझते थे कि आजकल खाली मकान और बारोजगार लड़का मिलना कठिन होता है; लेकिन मालूम हुआ कि नहीं, शहर में लड़की की तलाश में भी गलियों की खाक छानी जाती है और घरों के दरवाजे झांके जाते हैं; और यह काम जरूरत से नहीं, बल्कि पेशे के तौर पर किया जाता है।

चुनांचे आज जब हम आंगन में बैठे हुए धूप खाते हुए अखबार पढ़ रहे थे कि दरवाजे पर कुछ खट से हुआ और हमने नजर उठाकर देखा, तो एक भद्र महिला नकाब उलटे, किवाड़ से मुंह निकाले झांक रही थीं। सूरत बिलकुल अजनबी थी; क्योंकि ताक-झांक की आदत न होने के बावजूद हमें अपनी बेगम की सारी सहेलियों के दर्शन छोटे-से फ्लैट की बदौलत, घर में आते या घर से बाहर निकलते समय उचटती नजरों से इतनी बार हो चुके थे कि परिचय के बिना भी अच्छी-खासी जान-पहचान हो गयी थी।

अजनबी सूरत देखकर हमने बेगम को पुकारा और खुद अखबार उठाकर कमरे के अंदर चले गये। लेकिन यह फिक्र जरूर बनी रही कि ये नवागता हैं कौन? इस तरह अचानक आने वाली अजनबी औरतों में आम तौर पर या तो कोई मुसीबत की मारी विधवा होती हैं, जिनके पति महोदय किसी फर्जी बलवे या फसाद का शिकार होकर उन्हें ऐसी मुसीबत में छोड़ जाते हैं कि अच्छी-खासी सेहत होने के बावजूद मेहनत के बजाय वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांगकर खाने पर मजबूर हो जाती हैं, या फिर परिवार-नियोजन विभाग की कोई महिला होती हैं, जो अपनी कारगुजारी की खाना-पूरी के लिए घर-घर में ताक-झांक करती फिरती हैं।

जाहिर है वे झांकने वाली अजनबी महिला परिवार-नियोजन से तो संबंधित नहीं हो सकतीं। क्योंकि उन्होंने झांकने के बाद हमें देखकर निस्संकोच मुस्कराते हुए 'मैं आ सकती हूं?' कहने के बजाय, जल्दी से अपने आफताबी चेहरे पर इस तरह स्याह नकाब डाल ली, जैसे कि सूरज ने झांककर फिर बादल में मुंह छिपा लिया हो।

हल्की बदली के कारण आज सूरज बड़ी देर से यह ताक-झांक कर रहा था; इसलिए मेरी नजर उनके इस तरह नकाब डाल लेने से अधिक झिझकी नहीं, बल्कि उसने चलते-चलाते उनके चेहरे का एक सरसरी जायजा ले ही लिया। वे अपने लिबास से खाते-पीते घर की और चेहरे से बेपढ़ी-लिखी मालूम होती थीं; क्योंकि चेहरे पर चमक थी, नूर न था।

बेगम ने मेरे अंदर चले जाने के बावजूद कमरे के सामने सहन में उन्हें बैठाना शायद ठीक न समझा। मुझ पर पूरा भरोसा करने के बावजूद बेगम मर्दों के भुक्खड़पन के आधार पर इन मामलों में काफी सचेत रहती हैं, हालांकि वे यह नहीं जानतीं कि नजरों पर रोक लगाने से प्यास ज्यादा ही पैदा होती है।

सो आंखों को मौका न मिलने के कारण कान भुक्खड़पन पर उतर आये और वे बातें सुनने लगे, जो बगल वाले कमरे में हो रही थीं। उस समय कमरे में घर की लड़कियों के अलावा मुहल्ले की भी कुछ लड़कियां बैठी थीं और आज पिकनिक का प्रोग्राम बना रही थीं। उन्होंने जब इन अजनबी महिला को अपनी ओर बार-बार नजरें बचाकर देखते देखा, तो ताड़ गयीं कि हो न हो, ये भेड़ी-मंडी की बकरियां देखने नहीं, बल्कि घरों में लड़कियां देखने के लिए निकली हैं।

लेकिन बेगम मेहमान के बिनबुलाये होने के बावजूद उनके सत्कार के लिए जल्दी से पानदान घसीटकर पान लगाने लगीं। और लड़कियों ने सवालों की बौछार कर दी। आप कहां से तशरीफ ला रही हैं? कैसे तक-लीफ की? दौलतखाना यहां है या कहीं बाहर से आना हुआ है?

सवालों की इस बौछार से वे कुछ घबरा-सी गयीं। वे यह कैसे कहतीं कि मैं अपने बैरी भैया के लिए एक चांद-सी दुल्हन ढूंढ़ने के लिए सत्तू बांधकर निकली हूं। न जाने कितने घर झांक चुकी हूं और अभी कितने झांकने हैं! बात यह है कि घर-झांक लड़की-ताक किस्म की औरतों को यह एक लत-सी हो जाती है और अगर वे दिन में दो-चार घर झांक न लें, तो शायद घर में बैठे-बैठे और जम्हाइयां लेते-लेते उनका बदन टूटने लगे।

अजनबी महिला ने लड़कियों के सवालों के जवाब में कहा—'इसी गली में एक कोठे पर एक दारोगा साहब रहते हैं, उनकी बीवी हमारी रिश्ते की बहन हैं। एक बार पार्क में इत्तफाक से मिल गयीं और लपककर गले से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा लिया। बरसों के बाद मिली थीं, सो उसी समय साथ ले आयीं। उनके यहां का जीना भी हूबहू ऐसा ही था। माफ करना बहन! मैं उसी के धोखे में इधर चली आयी। इसके अलावा मुझे एक खाली मकान की भी तलाश थी।'

इस पर एक लड़की बोली—'मगर यह मकान तो आदमियों से भरा पड़ा है।' और यह कहकर सब लड़कियां इस तरह मुस्करा दीं कि कमरे में उजाला-सा हो गया और लड़कियों की तलाश करने वाली महिला की आंखें कुछ चुंधियां-सी गयीं। लेकिन वे अपने काम में काफी मंजी हुई जान पड़ती थीं। इसलिए उन्होंने अपने को संभालते हुए बेगम के हाथ से गिलौरी ले ली और मुंह में रखते हुए उनसे बोलीं—'अल्लाह नजरेबद से बचाये, ये साहबजादियां आप ही की हैं?'

बेगम इस डर से कि कहीं आगे चलकर वे यह मशविरा न देने लगें कि अब आप आपरेशन करा लीजिये, घबराकर बोलीं—'अपनी तो दो ही लड़कियां हैं, बाकी हमारे पड़ोस वाली बहन की साहबजादियां हैं।' दरअसल बेगम को उनके इस सवाल से कुछ खीझ-सी हुई, क्योंकि दो लड़कों और दो लड़कियों की मां होने के बावजूद वे अपने को अभी इतनी बूढ़ी मानने को तैयार न थीं कि उन पर आधा दर्जन से ज्यादा लड़कियों की मां होने का शक किया जाये।

बेगम की बात सुन उन्होंने बड़ी ललक से कहा—'आप बड़ी ही खुशकिस्मत हैं। माशाअल्लाह! लड़कियां बड़ी सुघड़ और सुशील लगती हैं। जिस घर में जायेंगी, चंदन-मंदल कर देंगी।'

बेगम के लिए इतना इशारा काफी था। उन्होंने लड़कियों को आंखों ही आंखों में फौरन कमरे से निकलने का हुक्म दिया और खुद बड़ी ही आजिजी से बोलीं—'बहन, लड़कियां सुशील भी हैं और सुघड़ भी, लेकिन इनके सबब से हर घड़ी सिर पर बोझ-सा रहता है। इन्हें तो बस लड़कियों को पढ़ाने की धुन है। मैं कहती हूं, क्या नौकरी कराना है, जो बी.ए., एम.ए. पास करें! माशाअल्लाह एक इंट्रेंस पास कर चुकी है; दूसरी बी.ए. में है। अब ख्वाहमख्वाह पढ़ाई में पैसा और वक्त बरबाद करने से फायदा? कहीं कोई अच्छा-सा घर ढूंढ़कर लड़की के हाथ पीले कर दें। जिंदगी और मौत का क्या ठीक! मगर इनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।'

फिर उस नवागता से खून का रिश्ता जोड़कर बोलीं—'भला, तुम्हीं बताओ बहन, मैं औरतजात लड़कियों के लिए अच्छा लड़का ढूंढ़ने कहां जाऊं? अल्लाह तुम्हारी नजर में कोई लड़का हो, तो बहन तुम्हीं बातचीत चलाओ।' और यह कहते-कहते उन्हें मेहमांनवाजी का खयाल आ गया और उन्होंने वहीं से पुकारकर कहा—'जूको, देखो खाला के लिए चाय तो लाओ। क्या पान ही पर टरका दोगी!'

अजनबी खाला ने पहले तकल्लुफ से काम लिया और कहने लगीं—'नहीं, इसकी क्या जरूरत है! मैं तो चाय-वाय पीकर घर से निकली हूं!' मगर जब बेगम ने ज्यादा इस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रार किया और कहा—'देखो, कैसी बदली छायी है! मेरा कलेजा तो सर्दी से कांप रहा है।' तब उन्होंने भी कहा—'खैर, एक प्याली चाय पी लूंगी। मगर बहन देखो, और किसी किस्म के तकल्लुफ की जरूरत नहीं। मुझे तो बड़ी शर्मिंदगी हो रही है कि मैं बिनबुलाये तुम्हारे सिर पर नाजिल हो गयी।'

फिर अपनी लाचारी का बयान करने लगीं—'मगर क्या करूं बहन! जिस तरह तुम्हें लड़की से चैन नहीं आता, उसी तरह अपने जवान, स्वस्थ, पढ़े-लिखे, बारोजगार भाई को देखकर मेरा दिल परेशान रहता है और दिन-रात इसी तलाश में रहती हूं कि कोई ऐसी मुनासिब लड़की मिल जाये, जो पढ़ी-लिखी और सुघड़ होने के साथ सूरत-शक्ल की भी बुरी न हो। बस हमीं लोगों जैसी हो। बेजोड़ न मालूम हो।'

और यह कहते-कहते उनके चेहरे पर खूबसूरती के फख्र की एक लहर-सी दौड़ गयी और उन्होंने साफ चेहरे पर लटकी हुई काले बालों की वह लट एक अदा से दुपट्टे से ढंक ली, जिसमें चांदी-जैसे एक-आध बाल सूरज के ढलने व तारों-भरी शाम के आने की इत्तिला दे रहे थे। उसी के साथ उन्होंने यह जुमला भी लगा दिया—'हमें दहेज-वहेज की कोई ज्यादा फिक्र नहीं। अच्छे घराने के लोग तो खुद ही दहेज में अपनी ओर से कोई कसर नहीं उठा रखते। हमें पैसे का कोई लालच नहीं। लेकिन यह जरूर चाहते हैं कि चार भाई-बिरादरी में नाक न कटे। और नाते-रिश्ते के लोग नाक-भौंह न चढ़ायें।'

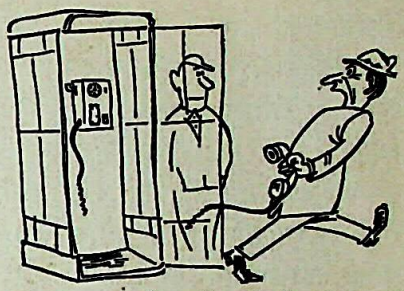

बहुत ज्यादा नखरे करने लगी है। मैंने उससे संबंध तोड़ लिया है।

बेगम उनकी बातें सुनती जाती थीं और उसी हिसाब से अपनी लड़कियों को जांचने की कोशिश करती जाती थीं। लड़कियां सुघड़ तो हैं ही। सूरत-शक्ल भी उनसे अच्छी नहीं, तो उनसे कम भी नहीं। बड़ी लड़की तो माशा-अल्लाह बी. ए. में पढ़ रही है। अल्लाह ने चाहा तो बात पक्की होने तक बी. ए. पास कर ही लेगी। रहा दान-दहेज। यहीं तो आकर उनके सोच में कुछ ब्रेक-सा लग जाता था।

इस बारे में अजनबी बहन ने जो बात कही थी, उसमें बहुत गुंजाइश थी। वह बढ़कर इतना ज्यादा भी हो सकता था कि वे मर-खपकर पूरा कर सकें। लेकिन बात साफ न होने की वजह से वे बेचैनी-सी महसूस कर रही थीं। मगर इस बात से जरूर खुश थीं कि चलो कहीं बात तो चली। आगे चलकर दहेज का मसला भी साफ कर लिया जायेगा। लड़की को दुल्हन बनाने के खयाल से ही उनका चेहरा खुशी से लाल हो गया और वे खुद उठ-कर रसोईघर में जा पहुंचीं, ताकि मेहमां-नवाजी का सही इंतजाम कर सकें।

अभी वे चाय वगैरह का सामान कमरे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भिजवाने का इंतजाम कर ही रही थीं कि उनकी चहेती सहेली बदर बहन अपनी साहबजादी की तलाश में बुरका उतारती हुई आंगन में आकर खड़ी हो गयीं और नाश्ते का इंतजाम देखकर बोलीं—'क्यों न हो, हमारी तलअत बाजी हमें इतना चाहती हैं कि उन्हें हमारे आने की खबर पहले से ही हो जाती है। मगर बाजी, इतने तकल्लुफ की क्या जरूरत थी! रोजाना के आने-जाने वालों के साथ ऐसा तकल्लुफ नहीं बरता जाता है।'

इस पर उनकी साहबजादी तसनीम ने अपनी सहेली जकी की चुटकी ली और कहा—'रोजाना आने-जाने वालों के लिए नहीं, बल्कि "खास" मेहमान के लिए खास इंतजाम किया जा रहा है।' तसनीम ने 'खास' पर इतना जोर दिया कि उसकी मां की नजरें खास मेहमान की तलाश में कमरे के अंदर पहुंच गयीं और खास मेहमान को देखकर उनकी सारी खुशमिजाजी एकदम गायब हो गयी और चेहरे पर एक किस्म की ऐसी खौफनाक संजीदगी छा गयी, जिसका मतलब उस वक्त कोई न समझ सका।

इधर खास मेहमान ने जब उनकी शक्ल देखी, तो उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं और बड़ी मुश्किल से उनका हाथ सलाम के लिए उठ सका। बदर बहन सलाम का रस्मी जवाब देती और अपने गुस्से पर काबू पाने की कोशिश करती हुई कमरे में दाखिल हुईं और आते ही बोलीं—'आप अपनी लड़की ढूंढ़ने के मुहिम के सिलसिले में तशरीफ लायी होंगी। माफ कीजियेगा, मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि आखिर आपको यह क्या मर्ज हो गया है कि आप दिन में जब तक दो-चार घर लड़की की तलाश में न झांक लें, तब तक आपको चैन ही नहीं मिलता।

'अभी दो हफ्ते पहले ही मैंने आपको फलां मुहल्ले में अपनी चाची के यहां इसी मुहिम के सिलसिले में देखा था। बाद में पता चला कि आप महीनों अंडे-पराठे खाने के बाद ऐसी गायब हुईं कि जैसे हमारी चाची के दिमाग से अक्ल गायब हो गयी थी। अब आप शायद यहां हमारी सीधी-सादी तलअत बाजी पर अपने पढ़े-लिखे, तंदुरुस्त, बारोजगार भाई के रिश्ते का जाल फेंकने आयी हैं। देखिये, तकल्लुफ एक ओर, मैं साफ कहे देती हूं कि अगर आप अपनी किरकिरी कराना न चाहती हों तो मेहरबानी करके फौरन इसी वक्त यहां से तशरीफ ले जायें, वरना मैं सबके सामने आपकी कलई खोलकर रख दूंगी। यह भी खूब रही, आपकी नजर में कहीं कोई लड़की जंचती ही नहीं!'

इतने में तलअत बाजी नौकरानी के साथ ट्रे में चाय और नाश्ते का ढेर-सा सामान लेकर पहुंच गयीं। मगर इससे पहले कि वे अपनी अजनबी बहन से खाने के लिए कहें, वे नाश्ते की ट्रे पर हसरत-भरी नजर डालती हुई इस तेजी से घर से बाहर निकल गयीं कि वे हैरान खड़ी की खड़ी रह गयीं और उनकी समझ में कुछ न आया—या इलाही, ये माजरा क्या है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन बूढ़े

महेंद्रसिंह सरना
चित्र : डा. विष्णु भटनागर

कमीज का गरेबान दायें हाथ में दबाये लाला दीनानाथ बेतहाशा खांस रहा था। खास-खांसकर उसका बुरा हाल हो रहा था। उसके ओंठों के कोनों में झाग जमा होना शुरू हो गया था।

सैर की छड़ी की मुट्ठी पर भिंचे दोनों हाथों पर टिकाई हुई ठोड़ी तनिक-सी ऊपर उठाते हुए सरदार लहणासिंह ने मुंह फेरकर कहा—'क्या बात है लालाजी ?.....कोई तली हुई चीज खा गये हो क्या ?'

'नहीं', दीनानाथ हांफते हुए बोला—'रात ही से तकलीफ हो गयी है। सो नहीं सका। छाती में बड़ी घुटन है। मुझे तो दमे की शिकायत लगती है।'

'दमा !' सरदार लहणासिंह ने छड़ी की मुट्ठी पर अपनी ऊंगलियां नचाते और आंखों की शोखपुतलियां घुमाते हुए कहा—'दमा तो बूढ़ों को हुआ करता है।'

विस्मय से अवाक् लाला दीनानाथ कुछ देर सरदार लहणासिंह के स्वास्थ्य से धधकते चेहरे को देखता रहा। जब उसे शब्द सूझे, तो बोला—'अभी बूढ़े होने में कोई कसर रह गयी है क्या ?'

'रिटायर कब हुए हैं?' लहणासिंहने पूछा।

'सन ६६ में।' दीनानाथ ने खांसी के ज्वार में से तनिक-सा उभरते हुए कहा।

'और मैं ६१ में रिटायर हुआ था,' लहणासिंह बोला—'पर मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ। दाढ़ी जरूर सफेद हो गयी है। पर दाढ़ियां तो आजकल तीस-तीस, पैंतीस-पैंतीस बरस के छोकरों की भी सफेद हो जाती हैं।'

'मुझे तो शक्कर की बीमारी ने बेदम कर दिया है,' दीनानाथ ने खांसी से पीछा छुड़ाने का सिरतोड़ प्रयत्न करते हुए कहा—'रोग तो और भी अनगिनत हैं। सारी जिंदगी इन्होंने मेरा साथ नहीं छोड़ा। आंखें जनम से खराब थीं। तिल्ली, जिगर और टान्सिल तो बचपन में बढ़ गये थे। जवानी में अपेंडिसाइटिस और गुर्दे के दर्द ने मार डाला। तनिक अधेड़ हुआ तो पायोरिया पीछे पड़ गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थाइरायड ग्लैंड सुस्त हो गया। लकवा होते-होते बचा। पीलिया का एक हमला गुर्दे और जिगर को बिलकुल ले डूबा। और बुढ़ापा तो आप जानते ही हैं, बीमारियों का घर है—ब्लडप्रेशर, मेदे का वरम, पैरों और बांहों के नासूर, कारबंकल, मधुमेह की बीमारी तो थी ही, अब दमे की भी कमी पूरी होती हुई लगती है।'

'जाने भी दें लालाजी।' लहणासिंह अपनी उंगलियां छड़ी की मुट्ठी पर थरकाता हुआ बोला—'कोई बीमारी पड़ोसियों के लिए भी छोड़ दिया करें। आपकी बात सुनकर तो मुझे पिंडीदास याद आ गया। नहर के महकमे में वह मेरे साथ हेड-क्लर्क था। दफ्तर आकर हर रोज नयी बीमारियां सुनाता था—आज मुझे यह हो गया है, आज मुझे वह हो गया है। उन दिनों ही माडर्न लाइब्रेरी की पुस्तक द फैमिली डाक्टर छपी थी। किसी ने पिंडीदास को बताया—भले मानस! बीमारी तो तुझे कोई न कोई लगी ही रहेगी; डाक्टरों का घर भरने के बजाय यह पुस्तक क्यों नहीं खरीद लेता! छोटी-मोटी तकलीफें पुस्तक पढ़कर स्वयं ठीक कर लिया कर। हां, जब बेबस हो गये, तो डाक्टर के पास चले गये।

'पिंडीदास को बात जंच गयी और उसी शाम वह द फैमिली डाक्टर खरीद लाया। आधी रात तक बैठा पढ़ता रहा। जिस भी बीमारी के बारे में पढ़ता, उसे लगता कि कई बरसों से वह उसका शिकार है। मियादी बुखार, सैंडफ्लाई फीवर, हे फीवर, येलो फीवर, पैराटाइफाइड और दूसरे तमाम प्रकार के फीवरों ने न जाने उसे कितनी बार दबोचा था। डिप्थीरिया तो उसे लगा, जैसे जन्म से ही उसके पीछे पड़ा हुआ था। और कालरा? कालरा तो बस उसे होने ही वाला था। उसका जी बुरी तरह मतला उठा। वह उठकर गुसलखाने में कै कर आया और फिर आकर पुस्तक पढ़ने लगा। गरज यह कि सुबह के साढ़े पांच बजे तक पुस्तक खत्म करके पिंडीदास उठा, तो उसे सौ फीसदी यकीन हो चुका था कि दुनिया के तमाम रोग भयंकर रूप से उसे घेरे हुए हैं। अगर किसी रोग की निशानी उसे अपने भीतर नहीं मिली थी, तो वह केवल ल्यूकोरिया था।

'ल्यूकोरिया!....सुना लालाजी? ल्यूकोरिया!' और सरदार लहणासिंह एक जोर का कहकहा लगाकर हंसा। कहकहे के धमाके से लाला दीनानाथ सहमकर सिकुड़ गया। उसके स्वस्थ और तरोताजे कहकहे की जोरदार धमक सार्वजनिक पार्क में दूर-दूर तक सुनाई दी।

'अब पिंडीदास बड़ा हैरान था', लहणासिंह कहता गया—'कहने लगा, यह तो ईश्वर का सरासर अन्याय है। जब और सब मुझे दे दिया था, तो ल्यूकोरिया देने में क्यों कंजूसी कर दी। जब दुनिया-भर की बीमारियां अपनी अकेली जान पर झेल सकता हूं, तो क्या मैं ल्यूकोरिया और नहीं झेल सकता?

'ईश्वर को उलहना देने के बाद पिंडीदास का मन किसी तरह शांत हुआ और वह कहने लगा, अगर ल्यूकोरिया से किसी गरीब का भला होता हो, तो मैं ईश्वर के दरबार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना मुकद्दमा वापस ले लेता हूं।

'इस तरह स्वार्थ को मन से निकालकर सब्र, शुक्र, संतोष से भरकर पिंडीदास ने सोचा कि वह कितना कीमती इंसान है। अपने आप में एक मेडिकल कालेज है, एक अस्पताल है। डाक्टरी के विद्यार्थियों को अब वर्षों तक पुस्तकों से माथापच्ची करने की मजबूरी नहीं होगी। वे केवल पिंडीदास के गिर्द परिक्रमा करके ही एम. बी. बी. एस. और एफ. आर. सी. एस. की डिग्रियां ले सकेंगे।

'फिर अचानक पिंडीदास को एक बड़ी चिंता ने घेर लिया। इतनी सारी बीमारियों में जकड़ा आदमी भला जिंदा कैसे रह सकता है! उसने अपनी नब्ज टटोली। पर उसे कहीं नब्ज न मिली। फिर छाती पर हाथ रखकर अपने दिल की धड़कन महसूस करनी चाही, पर उसे कोई धड़कन न मिली। अपना शरीर उसे मौन मकबरे-सा लगा। उस समय उसे लगा कि वह मर चुका है। या कम से कम मर अवश्य रहा है। अंतिम बार उसने अपनी नब्ज टटोली। इस बार नब्ज उसे डर्बी के इनामी घोड़े की तरह दौड़ती महसूस हुई। घड़ी निकालकर उसने नब्ज की रफ्तार गिनी—एक मिनिट में एक सौ नब्बे थी। उसकी आंखें फटी की फटी रह गयीं। रात-भर वह नब्ज पकड़े बैठा रहा।

'सुबह होते ही पिंडीदास सिविल सर्जन के पास गया।

'सिविल सर्जन ने पूछा—"तुम्हें क्या तकलीफ है?" पिंडीदास बोला—"साहब! मैं यह नहीं बताऊंगा कि मुझे क्या तकलीफ है। इंसान की जिंदगी बड़ी छोटी है और अगर मैं तकलीफें गिनाने बैठ गया तो मेरी बात खत्म होने से पहले ही ऊपर से बुलावा आ जायेगा। इसलिए मैं केवल वह तकलीफ आपको बताऊंगा, जो मुझे नहीं है। बस मुझे ल्यूकोरिया नहीं है।"

फिर एक और कहकहा लहणासिंह के मुख से फुलझड़ी की तरह नहीं, बड़े अनार की तरह फूट पड़ा और पार्क में बैठी पक्षियों की टोली डरकर उड़ गयी।

'सुन लिया दीनानाथजी? कहा, बस मुझे ल्यूकोरिया नहीं, हा-हा-हा-हा-हा.....'

एक रुआंसी-सी मुस्कान दीनानाथ के ओंठों पर तैर गयी। उसने सिर हिलाया और लहणासिंह की बात की अधूरी-सी हुंकारी भरी।

'कहता है, बस मुझे ल्यूकोरिया नहीं।' लहणासिंह हंसे जा रहा था। उसके चेहरे का रंग तीन वर्ष के बच्चे के गालों-जैसा गुलाबी हो गया था और उसकी आंखों की नसवारी पुतलियां हंसी से चमकती लोट-पोट हो रही थीं। यह हंसी दीनानाथ को अच्छी नहीं लगी। वह सोच रहा था, एक सफेद दाढ़ी वाला पैंसठ वर्ष का वृद्ध ऐसी बेकाबू, बेतहाशा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहमकाना हंसी कैसे हंस सकता हूं!

'सिविल सर्जन ने पूछा, लहणासिंह ने हंसी रोककर कहना शुरू किया—"यह कैसे पता चला कि तुम्हें ल्यूकोरिया नहीं है?" पिंडीदास चहककर बोला—"मैंने द फैमिली डाक्टर पढ़ा है। इस बीमारी की एक भी निशानी मुझे अपने शरीर में नहीं दिखाई दी। बाकी सब बीमारियों की निशानियां मेरे शरीर के पिटारे में मौजूद हैं।"

'सिविल सर्जन ने मुस्कराकर आधे घंटे तक पिंडीदास को अच्छी तरह ठोक-बजाकर देखा। फिर एक लंबा नुस्खा लिखकर उसके हाथ में थमा दिया और फीस के सोलह रुपये वसूल कर लिये। पिंडीदास नुस्खा हाथ में थामे भागा-भागा शहर के सबसे बड़े केमिस्ट के पास गया। केमिस्ट ने पहले नुस्खे की ओर देखा, फिर पिंडीदास की ओर। फिर नुस्खे की ओर और फिर पिंडीदास की ओर देखते हुए बोला—"श्रीमानजी! यह दवाइयों की दुकान है, दाल-दलिये की नहीं।"

'पिंडीदास ने नुस्खा पढ़ा। लिखा था—सुबह चार बजे उठकर पांच मील की सैर। आठ बजे नाश्ता। साथ में दलिया और दूध। दोपहर का खाना साधारण। चाय के बाद फिर चार मील की सैर। रात का खाना भी साधारण और तत्पश्चात् दो मील की और सैर। परहेज—द फैमली डाक्टर को पढ़ना सर्वथा निषिद्ध।'

बोलते-बोलते सरदार लहणासिंह सहसा रुक गया। पार्क का फाटक पार करके दो गायें अंदर घुस आयी थीं और गुलाब की सुरक्षित नर्सरी की ओर बढ़ रही थीं। पर इससे पहले कि नर्सरी का बाल भी बांका हो, सरदार लहणासिंह अपनी सैर वाली छड़ी घुमाते हुए गायों के पीछे दौड़ पड़ा। गायों में भगदड़ मच गयी और पूंछ उठाये वे जिधर से आयी थीं, उधर ही गायब हो गयीं।

अपनी जगह पर सिमटता-सिकुड़ता लाला दीनानाथ यह चमत्कार देखता रहा। इतनी उम्र में इतनी चौंकसी, इतनी फुर्ती!.....यह चमत्कार नहीं तो और क्या है! वह स्वयं तो इतनी देर में मुश्किल से बेंच से भी न उठ सकता, जितनी देर में लहणासिंह ने गायों को भगा दिया।

कुछ देर वे दोनों चुपचाप बैठे रहे। बेंच के पीछे के नीम पर लगे छत्ते से उड़ती हुई इक्की-दुक्की मधुमक्खियां उनके गिर्द भिनभिनाती रहीं और लहणासिंह की सैर वाली छड़ी तेज चक्करों में घूमती हुई मधुमक्खियों को डराती रही। आखिर एक मक्खी, जिसके दिन पूरे हो गये लगते थे, एकाएक लहणासिंह की पतलून के पायंचे पर आ बैठी। उसके दायें हाथ की उंगलियों में उसकी सैर की छड़ी ने एक तेज झटका खाया और वह मक्खी सदा के लिए सो गयी और मलाई-रंग की पतलून से वह इस तरह नीचे गिरी, जैसे पहले से ही मरी हुई हो। लाला दीनानाथ चकित रह गया। इस उम्र में मासपेशियों और स्नायुओं पर इतना नियंत्रण! देखने वालों को इस पार्क की बेंच पर दो बूढ़े बैठे दिखाई देते थे; पर लाला दीनानाथ सोच रहा था कि वहां एक ही बूढ़ा बैठा है। सरदार लहणा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंह को बूढ़ों में गिनना बुढ़ापे के साथ मजाक करने के समान था। अभी लहणासिंह को जिंदगी से बहुत-कुछ लेना था। पर दीनानाथ का नाम तो दीनानाथ के बजाय 'देना-नाथ' होना चाहिये था। समय को, जिंदगी को, सब किसी को उसे देना ही देना था।

अचानक लहणासिंह उठता हुआ बोला—'लो! मैं तो भूल ही गया था। आज मुझे प्रीति के साथ बैडमिंटन खेलना है। पोती है न मेरी! बी. ए. में पढ़ती है। आज मुझे मैच का चैलेंज दिया है उसने।'

और इससे पहले कि लाला दीनानाथ उसकी बात को पूरी तरह समझ पाये, अपनी छड़ी घुमाता हुआ और लंबे-लंबे डग भरता हुआ सरदार लहणासिंह आंख से ओझल हो चुका था। दीनानाथ को लगा, जैसे उसके अपने प्राण खुश्क हो गये हों, उसकी चेतना ने निराशा के पाताल को छू लिया हो। उसके भीतर इतनी हिम्मत भी नहीं रह गयी प्रतीत होती थी कि वह बेंच से उठकर खड़ा हो और घर लौट जाये। लहणासिंह की स्वच्छता, प्रफुल्लितता व सुंदर स्वास्थ्य के सामने वह अपने को सदा ही दुर्बल और कृश अनुभव किया करता था। बुझे हुए दिल से बहुत देर तक वहीं बेंच पर बैठा वह अपनी टांगें खुजलाता रहा।

पीछे से किसी की आहट सुनकर उसने घूमकर देखा। लाला दुनीचंद शरीर का संपूर्ण बोझ सैर की छड़ी पर डाले कदम-कदम पर लुढ़कता हुआ आ रहा था। उसका घर पार्क से केवल पचास कदम की दूरी पर था, पर एक कदम चलना भी उसके लिए एक घमासान युद्ध था। छह महीने के पक्षाघात ने उसे साठ वर्ष की आयु में ही अपंग बना दिया था। उसकी बायीं बांह लगभग निर्जीव होकर उसके शरीर से लटक रही थी। उसके कानों ने सुनना बंद कर दिया था। बायीं आंख पक्षाघात से अंधी हो गयी थी। मोतियाबिंद से ग्रस्त दायीं आंख की बची-खुची रोशनी से राह टटोलता, मौत का पीलापन और मुर्दनी मुख पर फैलाये वह कदम-कदम बेंच की ओर बढ़ता आ रहा था। बेंच के पास पहुंचकर पहले तो उसने अपनी छड़ी उस पर रखी। फिर दायां हाथ बेंच की बांह पर टिकाकर सारे शरीर का भार उस पर डाल दिया और इस तरह बहुत प्रयत्न के बाद वह बेंच पर बैठ सका।

'क्या हाल है आपका अब लालाजी?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीनानाथ ने पूछा।

दुनीचंद ने दायां हाथ आसमान की ओर उठाया और बोला—'शुक्र है! मौत के दिन गिन रहा हूं।'

दीनानाथ का हृदय दया से भर उठा। सोचा, लाला दुनीचंद उससे छह महीने बाद रिटायर हुआ था और आज पक्षाघात ने उसकी दशा नदी-तट पर खड़े वृक्ष जैसी कर दी है। सहसा लाला दीनानाथ दया और सहानुभूति के इस विचार-प्रवाह से चौंक पड़ा। उसने देखा कि वही दोनों गायें पार्क का फाटक पार करके फिर गुलाब की सुरक्षित नर्सरी की ओर बढ़ रही हैं। सैर की छड़ी घुमाता हुआ दीनानाथ उन पर टूट पड़ा। पूंछें हिलाती हुई गायें भाग गयीं। जब दीनानाथ फिर बेंच पर आकर बैठा, तो उसे टांगों में कमजोरी महसूस हो रही थी और वह हांफ रहा था; पर उसकी आत्मा प्रफुल्लित थी, एक प्रकार की शक्ति अनुभव हो रही थी।

इतने में एक मधुमक्खी उसके गिर्द भिनभिनाती हुई उसके बूट पर आ बैठी। लाला दीनानाथ ने बड़ी सावधानी से अपनी सैर की छड़ी को एक तेज झटका दिया, पर मक्खी उड़ गयी। दीनानाथ के मन पर तनिक निराशा की परछाईं आ गयी; पर उसी क्षण उसे गायों की उठी हुई पूंछें याद आयीं। उसका मन फिर खिल उठा।

'फिर नहीं आयीं?' उसने ऊंची आवाज और विजयपूर्ण स्वर में कहा। लाला दुनीचंद ने कान के पीछे हाथ रखकर सुनने का जी तोड़ प्रयत्न किया।

दुनीचंद के कान के पास मुंह लगाकर दीनानाथ ने चीखकर कहा—'मैंने कहा, वे गैयां फिर नहीं आयीं।'

'माइयां?'

'माइयां नहीं, गैयां। अच्छा भगाया है एक बार तो! शर्म होगी, तो फिर न घुसेंगी पार्क में।'

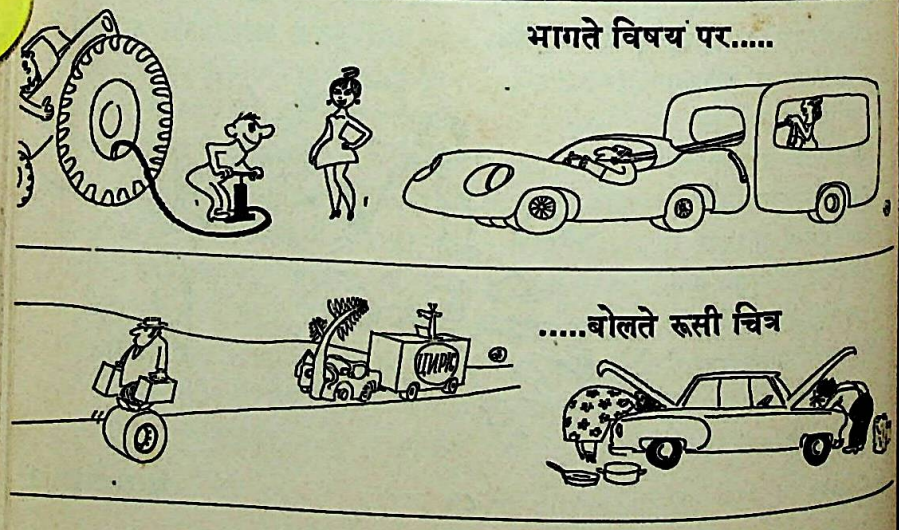

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यर्थ है उलझना समालोचक से

सेवा में:-संपादक (पुस्तकास्वादन)

निष्पक्ष समालोचना का मैंने कभी बुरा नहीं माना है। किंतु श्री चंद्र शर्मा ने मेरे प्रथम उपन्यास 'आधी आह, चौथाई कराह' की जो तथाकथित समालोचना आपकी पत्रिका में लिखी है, उस पर मुझे सख्त आपत्ति है। अगर वे मेरी पुस्तक को पढ़ने का कष्ट उठाते, तो उन्हें पता चलता कि उसमें वर्णित गुजराती पात्र शांति पुरुष है, न कि स्त्री; और शांति के पिता का बीड़ी का कारोबार संगमनेर में था, न कि सांगानेर में और उनके अल्सेशियन कुत्ते का शव आमड़े के पेड़ के नीचे दफनाया गया था, न कि आम के पेड़ के नीचे;....इसी तरह पंजाबी पात्र रणजीत स्त्री है, न कि पुरुष। रणजीत का संगमनेर के मिशन अस्पताल के सर्जन करणीक के प्रति आकर्षण और शांति के प्रति उपेक्षा-भाव वह धुरी है, जिस पर कथाचक्र घूमता है; मगर श्री शर्मा इसका जिक्र तक नहीं करते हैं। सच्ची समीक्षा क्या होती है इसके नमूने के तौर पर मैं त्रैमासिक 'विराम' में प्रो. सूर्य वर्मा द्वारा मेरे उपन्यास पर लिखित विस्तृत टिप्पणी की टाइप प्रति भेज रही हूं, जिसमें मेरी रचना की न्यायोचित प्रशंसा की गयी है। —कैलाश मल्होत्रा

श्री चंद्र शर्मा का उत्तर

मुझे खेद है कि कुमारी कैलाश मल्होत्रा को उनके उपन्यास का मेरा मूल्यांकन पसंद नहीं आया। चार-पांच साल पूर्व अपने एक रिश्तेदार की बरात में संगमनेर जाने पर बस के दरवाजे में उंगली कुचल जाने से मरहम पट्टी के लिए मुझे संगमनेर मिशन अस्पताल में जाना पड़ा था और वहां के बाह्य रुग्णालय के इन्चार्ज डा. कुरियाकोस ने बड़ी मुस्तैदी और दक्षता से मरहमं-पट्टी की थी। कुमारी मल्होत्रा अपने उपन्यास को यथार्थ-वर्णन-परक कहती हैं, मगर आश्चर्य है कि उन्होंने अपने उपन्यास में मिशन अस्पताल के इस योग्यतम युवा डाक्टर का एक बार भी जिक्र नहीं किया है! पाठकों को निश्चय ही यह बात दिलचस्प लगेगी कि धर्म से ईसाई होते हुए भी डा. कुरियाकोस को शंकराचार्य के अद्वैतवाद में गहरी रुचि है। यह जानने पर कि मैं एक डिग्री कालेज में संस्कृत का प्राध्यापक हूं, वे आधे घंटे तक मुझसे शंकराचार्य के संबंध में चर्चा करते रहे। उनका मत है कि हाइडेगर और शंकराचार्य के विचारों में कुछ बातों में आश्चर्यजनक समानता है। स्थानाभाव के कारण मैं इस विलक्षण केरलीय डाक्टर पर यहां विस्तार से नहीं लिख रहा हूं। आशा है, इस कालम में आगे कभी इसका अवसर पा सकूंगा। अस्तु। मुझे विश्वास है कि कु. कैलाश मल्होत्रा के सब आक्षेपों का समाधान इससे हो जाता है। —प्रो. चंद्र शर्मा

['सैटर्डे रिव्यू' की एक रचना के आधार पर]

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

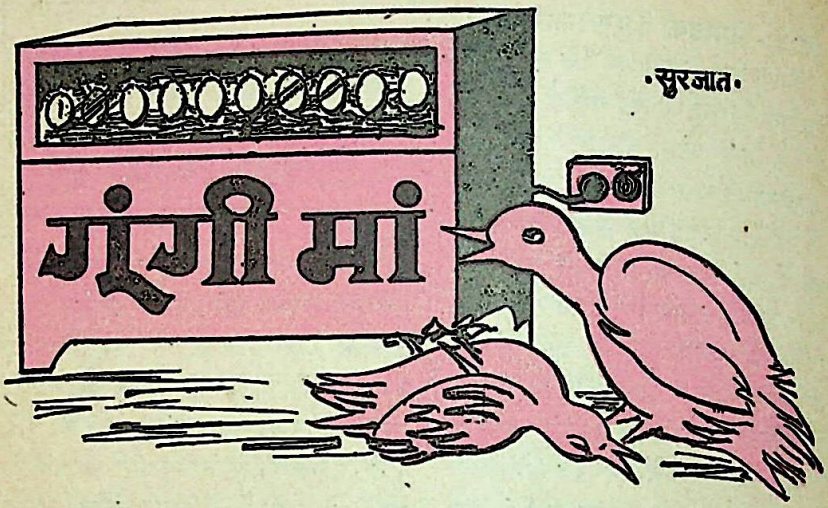

इनक्युबेटर में झांकते ही चौधरी का चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिल गया और उसने चौधराइन को आवाज दी—'भागवान ! सुनती हो ! सब बच्चे निकल आये ! पूरे के पूरे ! एक अंडा भी खराब नहीं हुआ।'

चौधराइन तेज कदमों से वहां पहुंची, चूजों को देखकर उसका चमकता हुआ चेहरा खुशी से दमक उठा। थोड़ी देर तक चूजों को देखती रही फिर बोली—'कितने प्यारे और सुंदर चूजे हैं !'

चूजे सचमुच बड़े प्यारे और सुंदर थे। चौधरी का बेटा मनोहर विलायत से आया था, तो एक विचित्र मशीन अपने साथ लेता आया था। चौधरी और चौधराइन के लिए यह मशीन सचमुच अद्भुत था। यह अंडों को सेती थी और एक ही बारी में सैकडों बच्चे निकल आते थे। इससे चौधरी और चौधराइन दोनों बड़े प्रसन्न थे और अभी इतने चूजों को देखकर सोच रहे थे कि इनमें कितने मुर्गे हो सकते हैं और कितनी मुर्गियां।

चौधरी खुश तो बहुत था, पर एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि इनक्युबेटर में अंडे रख देने से अपने आप बच्चे कैसे बन गये ? काफी देर तक वह इस गुत्थी में उलझा रहा। जब कुछ समझ में नहीं आया तो उकताकर बोला—'क्या जमाना आ गया है ! कैसी-कैसी बातें देखने में आ रही हैं ! कुछ समझ में नहीं आता, आखिर अपने आप ही सब कुछ कैसे हो जाता है ?'

पर सोच की इस भूल-भूलैया से चौधरी शीघ्र ही निकल आया और चूजों को इनक्युबेटर से बाहर निकालकर जमीन पर रखने लगा। एक मुस्कराहट उसके ओंठों पर खेल रही थी।

चौथे ही दिन चौधरी इन चूजों को हवेली में ले जाने लगा। हवेली क्या थी, एक बड़ा-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोल्ट्री फार्म था, जहां चूजे मनमानी ढंग से भागदौड़ किया करते थे।

आस-पास की सारी मुर्गियां अपने चूजों को लेकर यहां आ जातीं और दिन-भर कूड़ा-करकट कुरेदकर पेट की आग बुझातीं। सौ-डेढ़ सौ के लगभग तो ये मशीनी बहन-भाई थे; पचास-साठ की और पलटन सूबेदार साहब के चूजों की थी; करीब इतने ही चूजे राजा साहब के थे। सूबेदार साहब दूसरी लाम में यूरोप और उत्तर अफ्रीका में लड़ते रहे थे। अब वे रिटायर हो गये थे और उन्होंने मुर्गियां पालने का धंधा शुरू कर दिया था।

दिन-भर तो ये चूजे साझे शिकारियों की तरह मिल-जुलकर जमीन कुरेदने और कीड़े-मकोड़े खाने में लगे रहते, किंतु जब शाम होती, तो मशीनी चूजों को एक अज्ञात अनुभूति बेचैन कर देती। बात यह थी कि शाम होते ही राजा साहब और सूबेदार की मुर्गियों के बच्चे तो चूं-चूं करते अपनी-अपनी माताओं के परों के नीचे जा दुबकते; पर मशीनी मां की कोख से पैदा होने वाले चूजे अनाथ और आश्रयहीन बच्चों की तरह दुःखी और उदास नजरों से उन्हें ताकते रहते या फिर आपस में ही लड़ पड़ते।

कई सप्ताह बीत गये। अब चूजे खासे बड़े हो गये थे और उनकी कलगियों से साफ पहचाना जाता था कि वे मुर्गे हैं या मुर्गियां।

एक शाम को चौधरी ने चूजों को दरबे में बंद किया, तो मुन्नू को देर तक नींद न आयी। अपने पास बैठे चुन्नू को उसने धीरे-से आवाज दी। नींद उसे भी नहीं आयी थी और वह भी सोचों के ताने-बाने बुनने में मग्न था। मुन्नू की आवाज पर वह चौंका और बोला—मुन्नू! क्या बात है?'

'हवेली में दूसरे चूजों के साथ वे जो दो बड़ी-बड़ी "बीबियां" घूमती-फिरती हैं, वे उनकी क्या लगती हैं?'

चुन्नू कुछ देर तो चुप रहा। फिर कहने लगा—'सही बात तो मैं भी नहीं जानता। लेकिन कहते हैं कि वे उनकी मां हैं।'

'मां?' अचरज से जैसे मुन्नू की चीख निकल गयी—'पर मां होती क्या चीज है?'

'मैं तुम्हें क्या बताऊं, मुन्नू! क्या बताऊं?' चुन्नू ने रुंधे गले से कहा और चुप हो गया।

'चुन्नू! चुन्नू!' मुन्नू ने उसे ठोंगा मारा।

'क्या है?'

'मैं सोचता हूं, सुबह उस राजा साहब वाली टिनी से पूछें कि मां क्या होती है।'

'हां-हां! तुम्हें ख़ूब सूझी। उसी से पता करेंगे।'

अगली सुबह चूजे हवेली में पहुंचे, तो मुन्नू ने टिनी से डरते-डरते पूछ ही लिया—'बीबीसा'ब, मां किसे कहते हैं?'

टिनी ने जोरदार व व्यंग्यपूर्ण कहकहा लगाया। मुन्नू के दिल पर मानो आरी चल गयी। फिर भी उसने दयनीय स्वर में अपना प्रश्न दोहराया—'हां! बीबी-सा'ब! बताइये न, मां क्या है?'

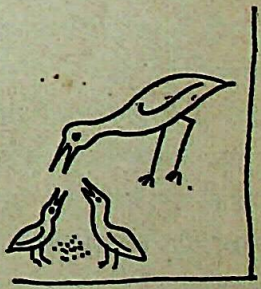

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें हास्य ढूंढ़िये तो !

टिनी पहले तो मुस्करायी। फिर बोली—'बात यह है मुन्नू ! तुम अनाथ लोग नहीं जान सकते कि मां क्या होती है।'

टिनी की बातें मुन्नू के लिए पहेलियों से कम न थीं। मुन्नू की समझ में कुछ भी नहीं आया। रात में चुन्नू से फिर मुलाकात हुई दरवे में। उसने पूछा—'मुन्नू ! कुछ पता चला मां क्या होती है ?'

'नहीं !' मुन्नू ने उदासी से उत्तर दिया। 'मां' शब्द से तो वह चक्कर में पड़ा हुआ था ही, 'अनाथ' शब्द ने उसे और भी विस्मय में डाल दिया।

कुछ दिन बाद एक विचित्र घटना घटी। हवेली में सब चूजे दाना-दुनका और कीड़े-मकोड़े चुग रहे थे कि एक आवारा कुतिया कहीं से आ निकली और मौका पाकर राजा साहब के एक बड़े-से चूजे पर झपटी और उसकी टांग पकड़ ली। उस दिन हवेली की रखवाली की बारी राजा साहब की थी। वे चिलम भरने थोड़ी-सी देर के लिए बाहर गये थे कि यह मुसीबत आ टपकी। हवेली में खलबली मच गयी। चूजे और मुर्गे-मुर्गियां सब इधर-उधर भाग गये। कुतिया ने जिस चूजे को पकड़ा था, उसकी मां ने जब अपने बच्चे को चीखते-चिल्लाते देखा, तो वहीं दूर से ऐसी उड़ान ली कि सीधी कुतिया के मुंह पर गिरी और चोंच व पंजे मार-मारकर उसे हैरान कर दिया। अंत में कुतिया ने चूजे को छोड़कर उसकी मां को दबोच लिया। इसी समय राजा साहब दौड़ते हुए पहुंच गये। कुतिया उन्हें देखते ही अपना शिकार छोड़ दुम दबाकर निकल भागी।

कुतिया के चले जाने के बाद जब होश ठिकाने आये, तो चुन्नू ने कहा—'मुन्नू, अब पता चला कि मां किसे कहते हैं।'

'हां भई !' मुन्नू ने कहा—'मां जान देकर भी अपने बच्चे की रक्षा करती है। वह उसे दुश्मन के चंगुल में जाने नहीं देती।'

इस घटना को हुए चार ही दिन बीते थे। हवेली में चूजे रोज की तरह खूराक की तलाश में इधर-उधर फिर रहे थे। चुन्नू-मुन्नू के साथ उनका एक मशीनी भाई नूरी भी था। सहसा एक चील ने झपट्टा मारकर नूरी को अपने पंजों में दबोचा और यह जा, वह जा !

चुन्नू-मुन्नू के तो होश उड़ गये। कुछ समझ में न आया। यह क्या हुआ ? जरा संभले, तो क्या देखते हैं, राजा साहब और सूबेदार साहब की मुर्गियां अपने-अपने बच्चों को परों के नीचे छिपाये बैठी हैं।

इस दुःख-भरी दुर्घटना पर मुन्नू के मुख से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल यही निकला—'चुन्नू! नूरी हमसे दूर चला गया।'

'हां! दूर न जाने कहां!' चुन्नू ने कहा और उसकी आंखों में आंसू भर आये।

जब टिनी को कुतिया ने जख्मी किया था, तब चुन्नू और मुन्नू उसका हाल पूछने गये थे। अब उसकी मां भी उनके पास नूरी के लिए शोक प्रकट करने को आयी। शोक प्रकट करके वह जाने लगी, तो मुन्नू बोला—'काश! हमारी भी मां होती, फिर हमारा भाई इस तरह न जाता।'

'तुम्हारी मां है भई!' टिनी ने कहा। उसके स्वर में गहरा व्यंग्य था।

'हमारी मां?' दोनों ने एक साथ पूछा।

'हां भई! चौधरी साहब के बरामदे में वह जो लोहे की अलमारी-सी रखी हुई है न, वही तुम्हारी मां है। उससे पूछो, उसने तुम्हारे भाई को क्यों नहीं बचाया!'

मुर्गी चली गयी, पर उन दोनों को एक नयी उलझन में डाल गयी। रात उमस-भरी थी। चौधरी साहब ने चूजों को आंगन में खुला छोड़ दिया। चुन्नू और मुन्नू रात-भर इनक्युबेटर के गिर्द चक्कर काटते और चूं-चूं करते रहे। सवेरे चौधरी साहब यह देखकर हैरान रह गये की मुन्नू मशीन के पास मरा पड़ा है और चुन्नू मशीन के गिर्द चक्कर काट रहा है। वह थकी आवाज में चूं-चूं कर रहा था। इनक्युबेटर पर चोंच के ढेरों निशान बने हुए थे। जैसे वे सारी रात उसके गिर्द घूमते और चोंचें मारते रहे हों।

चौधरी को देखकर चुन्नू चुप हो गया और यों देखने लगा, जैसे पूछ रहा हो—'चौधरी साहब! हमारी मां गूंगी क्यों है?'

—सी-३४, सुदर्शन पार्क, नयी दिल्ली—१५

*

एक पादरी साहब को रोटरी क्लब में भाषण के लिए बुलाया गया। भाषण में उन्होंने कई मजेदार किस्से गूंथकर श्रोताओं को काफी हंसाया; मगर चूंकि वे अपने प्रवचनों में इन किस्सों का उपयोग करते रहना चाहते थे, इसलिए उन्होंने प्रेस-रिपोर्टरों से प्रार्थना की कि वे इन्हें न छापें। अखबार में उनके भाषण की यह रिपोर्ट छपी—'पादरी महाशय ने भाषण में कई मजेदार किस्से सुनाये, जिन्हें हमें खेद है कि छापा नहीं जा सकता।'

० ० ०

सूबेदार: तो तुम्हारी शिकायत है कि रोटी में मिट्टी मिली हुई है?

सैनिक: हां, सूबेदार साहब!

सूबेदार: तुम फौज में मातृभूमि की सेवा करने भरती हुए हो कि खाने की शिकायतें करने?

सैनिक: मैं सेना में मातृभूमि की सेवा करने भरती हुआ था साहब, मातृभूमि को खाने के लिए नहीं।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साग्रिड अपनी हास्य-कथाओं के कारण पर्याप्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय था। उसकी हर पुस्तक यों हाथो-हाथ बिक जाती थी कि वह खुद सोचता था—क्या वास्तव में दुनिया को चटकुलों की इतनी जरुरत है! स्वभाव से ही उसमें हास्य का तत्त्व इतना अधिक था कि जब भी वह लिखने बैठता, मुस्कराहटें और शोखियां उसकी लेखनी से झरने लगतीं, परंतु एक दिन ऐसा आया कि वह खुद अपनी हास्य-कथाओं से बिलकुल उकता गया। उसे यह भी दुःख था कि लोग उसे मसखरा समझने लगे हैं। इसलिए उसने निश्चय किया कि एक बहुत ही गंभीर और विचार-प्रधान कहानी लिखी जाये।

सीग्रिड ने गंभीर कहानी लिखने का निश्चय तो कर लिया, पर उसे शीघ्र ही अनुभव हो गया कि वह लेखनी जो वर्षों तक हास्य-चरित्र उकेरती रही है, गंभीरता और चिंतन उसके लिए असंभव-सी ही बात थी। लेखनी बार-बार मुस्कराहटों की ओर फिसल जाती और सीग्रिड को बार-बार अगंभीरता से बचने के लिए अपना हाथ रोकना पड़ता। यह कलम उसकी बहुत पुरानी संगिनी थी; पर आखिर तंग आकर बड़े दुःख के साथ उसे अलमारी में बंद कर दिया और एक नयी कलम खरीद ली। तब कहीं उसकी वह गंभीर कहानी धीरे-धीरे आगे बढ़ चली।

सीग्रिड पांच सप्ताह तक अपनी डेस्क पर बैठा लिखता रहा। इस अवधि में उसने लिखते समय न तो मुंह बनाया और न उसे हंसी ही आयी! और इस तरह धीरे-धीरे एक बेहद गंभीर कहानी पूरी हो गयी।

यहां सीग्रिड की एक आदत का जिक्र करना जरूरी है। वह सदा अपनी नयी कहानी छपने के लिए भेजने से पहले उसे अपने मित्रों और अपने समकालीन लेखकों को पढ़कर अवश्य सुनाता था। ऐसे अवसरों पर उसे सदा ही बड़ी प्रसन्नता होती थी; क्योंकि किसी कहानी के कलात्मक गुणों का सही अनुमान उसी समय लग सकता है, जब लेखक स्वयं अपने मुख से उसे पढ़कर सुनाये। परंतु ऐसा अवसर सदा पुस्तकों में दबे रहने वाले कलाकार को जरा कठिनाई से ही प्राप्त होता है।

इसके अलावा खुद सीग्रिड के लिए यह अपनी इस गंभीर कहानी को पूरी तरह समझने का स्वर्णिम अवसर था। सीग्रिड ने यह कहानी एक जबर्दस्त मनोवैज्ञानिक दबाव

• कर्ट कुट्सनबर्ग की स्वीडिश हास्य कहानी •

गंभीर कहानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

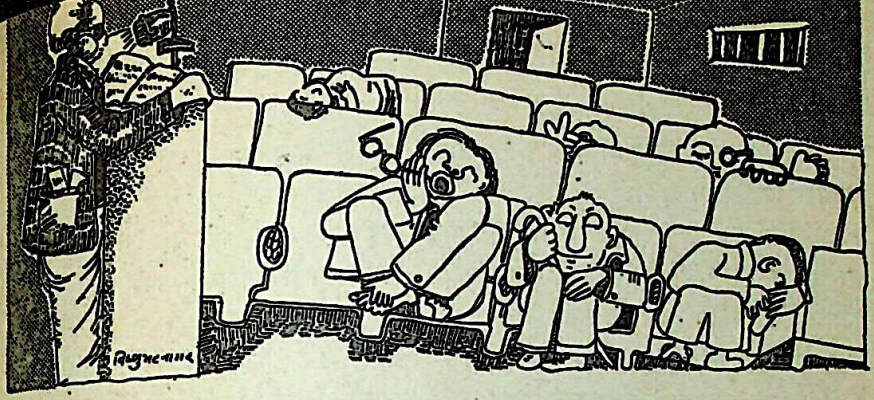

के अधीन बड़े परिश्रम के साथ हर रोज थोड़ा-थोड़ा लिखकर पूरी की थी; इसलिए वह स्वयं भी इस कहानी के प्लाट से पूरा तादात्म्य न रख पाया था।

नगर के लेखक, कवि और सीग्रिड के कुछ मित्र इकट्ठे हुए। सीग्रिड ने गंभीर कहानी सुनानी शुरू की। आरंभ में इस आशंका से उसकी जीभ लड़खड़ायी कि वे लोग, जोस दा उसके मुख से चुटकुले ही सुनते रहे हैं और उसकी हास्य-रचनाओं के प्रशंसक भी हैं, शायद इस गंभीर कहानी को पसंद न करें। परंतु शीघ्र ही कला की देवी ने उसके साहस को सहारा दिया और उसकी आवाज में शक्ति पैदा हो गयी। श्रोताओं के वे गगन-भेदी अट्टहास जो ऐसे अवसरों पर उसे बार-बार चुप होने को विवश कर दिया करते थे, इस बार बिलकुल सुनाई न दिये। पूरे हाल में निस्तब्धता छायी हुई थी। सीग्रिड सिर झुकाये कहानी की पांडुलिपि पढ़ता रहा और जब एक बार सहसा उसकी दृष्टि श्रोताओं पर पड़ी, तो उसे यह देखकर धक्का-सा लगा कि उसके मित्रों में से दो तो अपनी कुर्सियों पर गहरी निद्रा का मजा ले रहे हैं! सीग्रिड की भावनाओं को ठेस तो लगी, परंतु उसने उसे प्रकट न होने दिया और फिर से कहानी पढ़ने में मग्न हो गया।

उन दो सोने वालों के ऊंचे खर्राटों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव था या स्वयं कहानी ही में कुछ ऐसा था कि स्वयं सीग्रिड भी कहानी पढ़ते-पढ़ते ऊंघने लगा और शब्द उसकी जीभ और ओंठों के बीच में मीठी गोलियों की तरह घुलते चले गये। अंत में एक लंबे और कठिन वाक्य के बीच में ही उसकी आवाज डूब गयी। उसकी बोझिल पलकें बंद हो गयीं और हाथ की पकड़ ढीली पड़ने से पांडुलिपि छूटकर फर्श पर जा गिरी। मेजबान और लेखक के रूप में अपना कर्तव्य महसूस करते हुए सीग्रिड ने अपनी समस्त शक्ति को सहेजकर बड़ी कठिनाई से आंखें खोलीं और श्रोताओं पर एक नजर डाली। सबके सब मित्र, कवि और लेखक खर्राटे ले रहे थे। फिर तो वह स्वयं भी सो गया।

सीग्रिड और उसका मित्र-मंडल सारी रात वहां सोता रहा। दूसरे दिन वे सब अंग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ड़ाइयां लेते हुए जागे, तो सूर्य की प्रखर किरणें कमरे की खिड़कियों पर बरस रही थीं और बाहर बाजार में दिन का कार्य-व्यापार शुरू हो चुका था।

सीग्रिड के सभी अतिथि देश के विख्यात आलोचक और विद्वान थे; उन्होंने उसकी कहानी में छिपी हुई जबर्दस्त शक्ति को आसानी से ढूंढ़ लिया। उनकी दृष्टि में सीग्रिड ने एक ऐसी प्रभावशाली कहानी रची थी, जो अपने पढ़ने या सुनने वालों को मधुर निद्रा में सुला देती थी; और इसलिए इस कोलाहलपूर्ण यांत्रिक युग में संत्रस्त मानवता के लिए अद्वितीय उपहार थी।

पहले यह समाचार कुछ लोगों में फैला और उसके बाद जब यह कहानी पुस्तक-रूप में छपी तो हाथो-हाथ इस तरह बिकी कि हर घर में, हर बिस्तर के सिरहाने और हर सोफे पर रखी नजर आने लगी। पढ़े-लिखे और अनपढ़ सभी इसका लाभ उठा रहे थे।

जिनमें भलाई की भावना कुछ अधिक होती, वे अपने अतिथियों को सीग्रिड की यह गंभीर कहानी सुनाने से पहले उन्हें आराम-देह स्थान पर बैठा देते। असल में यह असंभव था कि कोई आदमी इस कहानी को पढ़ते हुए निद्रा से सुरक्षित रह सके।

यह बात कितने ही लोगों के लिए सख्त परेशानी का कारण थी कि आखिर इस कहानी का अंत क्या है; क्योंकि आज तक कोई भी इस गंभीर कहानी को आरंभ से अंत तक पढ़ नहीं सका था। स्वस्थ तंदुरुस्त लोग तो आरंभ के कुछ पृष्ठों के बाद खर्राटे लेने लगते थे। रोगी दो-एक पृष्ठ और ज्यादा पढ़ लेते और उसके बाद पुस्तक अपने आप उनके हाथों से फिसल जाती। पर अनिद्रा के पुराने रोगी आधी पुस्तक तक सफलतापूर्वक पहुंच जाते; परंतु उसके बाद उनका रोग भी उनके संकल्प का साथ न दे पाता था। और इस पुस्तक का प्रसिद्ध पैंतीसवां पृष्ठ तो इने-गिने लोग ही पढ़ पाये थे।

कुछ चतुर लोगों ने यह जानने के लिए कि कहानी कहां और कैसे समाप्त होती है, पुस्तक को अंतिम पृष्ठों से उलटा पढ़ना शुरू किया। किंतु वे भी सफल न हो पाये; क्योंकि नींद तो उन्हें भी आ जाती थी और जागने पर कहानी का एक शब्द भी याद न रहता।

सो इस कहानी के प्लाट और उपसंहार के बारे में लोगों में कई परस्पर विरोधी बातें फैलने लगीं। लोगों की ओर से यह मांग जोर पकड़ने लगी कि लेखक इस विवाद को समाप्त करने के लिए इस समस्या पर अपना स्पष्टीकरण दे, किंतु खुद लेखक भी पाठकों की तरह गंभीर कहानी के उपसंहार और उसके पूरे प्लाट से अपरिचित ही था। हां, वह इतना अवश्य जानता था कि इस कहानी का उपसंहार है—गहन निद्रा और खर्राटे!

अनुवाद : सुरजीत

*

हिल स्टेशन पर दो हफ्ते बिताकर लौटे धनी किसान से प्रश्न:—'वहां का मौसम कैसा था?
उत्तर:—'वहां हर समय इतनी धुंध रहती थी कि मैं मौसम देख ही नहीं सका।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान के देश के लोग

एक प्रसिद्ध अमरीकी उद्योगपति परिवार समेत यूरोप की सैर करके जब लौटा, तो उसने यूरोप संबंधी अपने अनभव सुनाने के लिए एक प्रेस-कान्फरेंस बुलायी।

सवाल-जवाब के दौरान एक संवाददाता ने पूछा—'क्या यूरोप में आपने कहीं गरीबी भी देखी?'

'देखी ही नहीं, बल्कि काफी सारी अपने साथ लाया भी हूं।' धनपति ने तल्खी के साथ कहा।

० ० ०

एक अमरीकी अरबपति हिन्दुस्तान की सैर करने आया था। आगरा में ताजमहल देखते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा—'कितनी हैरानी की बात है कि गरीब हिन्दुस्तानियों ने इतनी महंगी यह इमारत उन दिनों बनायी थी, जब कोई देश उन्हें विदेशी सहायता नहीं दे रहा था।'

० ० ०

रोम में 'एक्सेलसियर' होटल के बाहर एक आदमी हाथ में कुछ केले पकड़े अंग्रेजी में हांक लगा रहा था—'केले ले लो। एक शिलिंग के तीन केले।' कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था; क्योंकि किसी को अंग्रेजी नहीं आती थी।

काफी देर के बाद एक अमरीकी पर्यटक पास से गुजरता हुआ रुका और उसने कहा—'ये इटालियन लोग अंग्रेजी नहीं समझते। सो यहां अंग्रेजी में हांक लगाने से केले बिकने की संभावना नहीं है।'

'दरअसल मैं केले नहीं बेच रहा हूं। मैं तो अंग्रेजी जानने वाला कोई आदमी ढूंढ़ रहा

फ्रिज बिलकुल भरा हुआ है। जाओ, वापस समुद्र में छोड़ आओ।

बेयरर, खाना जल्दी लाओ। मेरे पति को बहुत तेज भूख लगी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

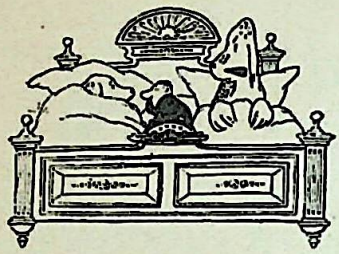

था, ताकि उससे रेल्वे स्टेशन का रास्ता पूछ सकूं। मेरी खुशकिस्मती है कि आप मिल गये।'

० ० ०

एक जापानी लड़की एक अमरीकी व्यक्ति के पास गयी और कहने लगी—'अमरीकियों के बारे में मुझे एक लेख लिखना है। क्या इस सिलसिले में आप एक जानकारी देने की कृपा करेंगे?'

'बेशक! पूछिये।'

'बताइये कि आपके देश में तलाक का उत्सव शादी के कितने दिन बाद मनाया जाता है?'

० ० ०

एक अमरीकी व्यापारी पेरिस में मोटरों की एक दुकान में गया, और उसने उस नवीनतम माडल की कार खरीदने की ख्वाहिश जाहिर की, जिसकी उन दिनों बड़ी चर्चा थी।

'अफसोस है, हम यह कार नहीं दे सकेंगे, क्योंकि साल में जितनी कारें हमें मिलेंगी, उससे कहीं ज्यादा के हमें पेशगी आर्डर मिल चुके हैं।' दुकानदार ने कहा।

अमरीकी झुंझला उठा—'यह तो बुरी बात है!' और नोटों की वह गड्डी जो उसने अपनी जेब से निकालकर काऊंटर पर रखी थी, गुस्से से रद्दी की टोकरी में फेंककर दुकान से बाहर निकल गया।

दुकानदार उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने अगले ही दिन उस माडल की कार उसके होटल में पहुंचा दी।

अगले दिन दुकानदार ने व्यापारी को फोन किया—'वे नोट जो आप रद्दी की टोकरी में फेंक गये थे और मैंने उन्हें उठाकर पेशगी के तौर पर रख लिया था, जाली निकले।'

'हां, वे जाली ही थे,' अमरीकी व्यापारी ने कहा—'इसीलिए मैंने फेंक दिये थे। आप बिल भेज दीजिये, और कार की पूरी कीमत असली नोटों में ले लीजिये।' —सु.

*

एक महिला दुकान से जब भी कोई चीज खरीदने के लिए जाती, तो वहां एक आदमी को बहुत उदास हालत में खड़े हुए पाती। वह बहुत गरीब भी लगता था।

एक दिन उस महिला ने तरस खाकर उसे एक रुपया देते हुए कहा—'आशा नहीं छोड़नी चाहिये।'

अगले दिन वह दुकान पर गयी, तो आदमी खुशी-भरा चेहरा लेकर उसके पास आया और उसे छह रुपये देते हुए बोला—'यह लीजिये, मैंने रेस में अपने पैसों के साथ आपका रुपया भी लगाया था, और एक के पांच मिले हैं। सचमुच हमें आशा नहीं छोड़नी चाहिये।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुशील कुमार दोषी

हंसी के रंग क्रिकेट-खिलाड़ियों के संग

सन १९२० से ३० के बीच में इंग्लैंड के हेरोल्ड लारवुड विश्व के तीव्रतम गोलंदाज थे। वैसे भी उन्हें सर्वकालीन श्रेष्ठ तीव्रतम गोलंदाजों में से एक माना जाता है। एक रविवार को वे एक साधारण क्रिकेट मैच देखने गये। मेहमान दल के पास अचानक एक खिलाड़ी की कमी पड़ गयी और बिना यह जाने ही कि लारवुड कौन हैं, मिन्नतें करके उन्हें दल में शामिल कर लिया गया। चूंकि दोनों अंपायर मेजबान दल से मिले हुए थे, अतः मेजबान दल के बल्लेबाजों को आउट करना कठिन पड़ रहा था।

मेहमान दल के कप्तान ने अंततः निराश होकर लारवुड को गेंद दी—'लो, शायद तुम कुछ कर सको!'

'मुझे गोलंदाजी तो नहीं आती, फिर भी प्रयास करता हूं।' लारवुड ने कहा।

फिर उन्होंने एक धीमी आफ-ब्रेक गेंद की, जिसे बल्लेबाज चूक गया और वह गेंद स्टंपों के ठीक सामने उसके दोनों पैरों के बीच लगी। एल. बी. डब्ल्यू की एक जोरदार अपील को अंपायर ने आश्चर्यजनक आसानी से नकार दिया। लारवुड की अगली गेंद एक धीमी लेग-ब्रेक थी, जिस पर बल्लेबाज ने विकेट-कीपर को कैच थमा दिया। 'हाऊ'ज दैट?' एक सरगर्म अपील हुई; परंतु बेईमान अंपायर का ठंडा उत्तर था—'नाट आउट।'

अब लारवुड को भी गुस्सा आ गया। उन्होंने अब की बार बाईस गज का अपना सामान्य 'रन-अप' लिया और एक तूफानी गेंद डाली, जिससे बल्लेबाज के तीनों स्टंप एक जोर की आवाज के साथ उखड़ गये।

लारवुड ने अब अंपायर से व्यंग्यपूर्वक कहा—'मेरा खयाल है, इस बार भी वह आउट होने से थोड़ा बच ही गया है!'

० ० ०

कैच ड्रॉप करने पर किस कदर बदनामी होती है, इसका तीखा अनुभव इंग्लैंड के डेविड शेपर्ड को खूब है। सन १९६२-६३ के आस्ट्रेलिया प्रवास के समय वे अंग्रेज दल के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सदस्य थे। इस प्रवास के दौरान शेपर्ड ने कई कैच ड्रॉप किये।

किस्सा यों हुआ कि ऑस्ट्रेलिया में ही बस जाने वाला एक अंग्रेज जोड़ा अपने पहले बच्चे का पहला जन्मदिन मनाना चाहता था। पति ने सुझाव दिया कि क्यों न डेविड शेपर्ड के हाथों बच्चे को झिलवाकर यह काम संपन्न किया जाये!

'क्या कहा?' भय से आक्रांत पत्नी चीखी- 'वे तो बच्चे को झेल नहीं पायेंगे' तुरंत ही ड्रॉप कर देंगे।'

० ० ०

मिडिलसेक्स काउंटी के प्रख्यात विकेट-कीपर फ्रेड प्राइस ने एक दिन एक ही पारी में सात कैच लेने का रेकार्ड स्थापित किया। खेल के बाद जब वे आराम से 'ड्रिंक्स' ले रहे थे, तभी एक महिला दौड़ती हुई आयी- 'ओह, मि. प्राइस, आपकी विकेट कीपिंग की मैं तारीफ करूंगी। मैं इतनी उत्तेजित हो गयी थी कि बालकनी से गिरते-गिरते बची।'

ठंडे दिमाग से प्राइस ने जवाब दिया- 'आप गिर भी जातीं, तो आज के "फॉर्म" में तो मैं आपको भी कैच कर लेता।'

० ० ०

विगड़ी हुई गेंद पट्टी पर एक तेज गोलंदाज गेंद करने आया और जाहिर है, विरोधी दल के उद्घाटक बल्लेबाज को कई भयावह गेंदों का सामना करना पड़ा। पहली गेंद उसके बायें कान के पास से सरसराती हुई निकल गयी, दूसरी गेंद से उसका टोप उड़ते-उड़ते बचा और तीसरी गेंद से उसके सीने पर एक जोरदार आघात लगा। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा; लेकिन शीघ्रही हिम्मत करके उठा और एक बार फिर से बल्लेबाजी के लिए तैयार होने लगा।

अंपायर ने सहानुभूतिपूर्वक पूछा—'क्या तुम तैयार हो?'

बल्लेबाज ने कराहते हुए कहा—'हां, पर मैं चाहता हूं "साइट-स्क्रीन" मेरी इच्छानुसार हटाई जाये।'

अंपायर ने समझा, सूर्य का 'चलका' पड़ रहा होगा; अतः उसने नम्रतापूर्वक पूछा- 'बोलो हटाकर किधर रखा जाये?'

'गोलंदाज व मेरे मध्य गेंदपट्टी पर बीचो-बीच।' बल्लेबाज का मासूम उत्तर था।

० ० ०

इंग्लैंड के प्रख्यात स्पिन गोलंदाज जॉनी

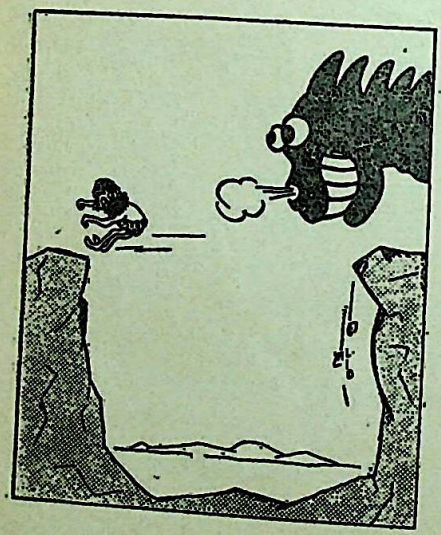

लंबी कूद का पहला विश्व-चैम्पियन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्डल ने एक खूबसूरत गेंद की और वल्लेबाज साफ चकमा खा गया। उत्तेजना एवं खुशी में वार्डल अंपायर की ओर मुड़कर चिल्लाये—'हाऊ'ज दैट?' ज़ाहिर है, एल.वी. डब्ल्यू. की अपील थी।

'नाट आउट।' अंपायर का संक्षिप्त, शांत लेकिन दिलतोड़ उत्तर था।

वार्डल ने अब अंपायर से बहस करना आरंभ कर दिया—'मेरे खयाल से वह गेंद स्टंप पर अवश्य लगती।'

अंपायर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

वार्डल को अब कुछ गुस्सा आ गया। उन्होंने आक्रामक शैली में पूछा—'अगर वह गेंद स्टंप पर नहीं जा रही थी, तो और कहां जा रही थी?'

इस बार खामोशी को भंग करते हुए अंपायर ने जवाब दिया—'मैं क्या जानूं? खिलाड़ी के पांव जो बीच में थे!'

० ० ०

टांगानीका के जादू-टोने के माहिर एक डाक्टर को बीमारी ने आ घेरा और वह इलाज के लिए विशेषज्ञ के पास इंग्लैंड गया। वहां उसे एक दिन खयाल आया कि देखना चाहिये, इंग्लैंड का जादू बेहतर है या उसके देश का। यहां यह कह देना अनिवार्य है कि वह क्रिकेट के बारे में कुछ नहीं जानता था। इलाज कराकर वापस लौटने पर उसके हमपेशा डाक्टर ने 'सफेद जादू' का कोई उदाहरण पूछा।

आंखों में आश्चर्य, भय और प्रशंसासूचक भाव लाकर उसने कहा-'एक दिन मैं एक

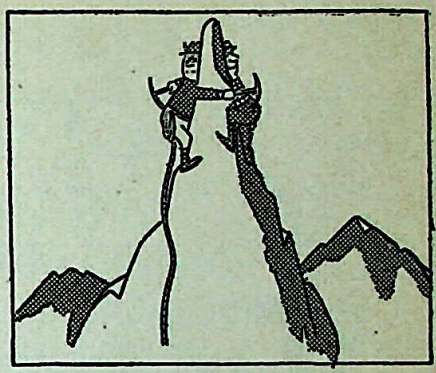

पर्वतारोही

बड़े खेलकूद-स्टेडियम में गया। वहां हजारों लोग सुनहरी धूप में बैठे थे। सुंदर घास उगी हुई थी। स्टेडियम का चप्पा-चप्पा चमकदार ढंग से पुता हुआ था। मैं भी सुनहरी गर्म धूप का करीब आधे घंटे तक जायका लेता रहा। तभी मैंने देखा एक व्यक्ति कुटिया से बाहर निकला, मैदान के बीचोबीच गया और लकड़ी के तीन टुकड़े मैदान में खड़े ठोक दिये। फिर उसने एक निश्चित दूरी मापी तथा तीन लकड़ी के टुकड़े और ठोंक दिये।

'मैं दिल थामें सूर्य की गर्मीका आधे घंटे तक और आनंद लेता रहा। तभी मैंने देखा, उसी कुटिया से सफेद कोट पहने दो व्यक्ति बाहर निकले, वहां तक गये और लकड़ी के उन छहों टुकड़ों पर लकड़ी के ही कुछ छोटे-छोटे टुकड़े आड़े रख दिये। फिर उसके बाद ग्यारह व्यक्ति उसी कुटिया से निकले और मैदान में बिखर गये—उनमें से एक व्यक्ति ने अपने पैरों पर सुरक्षात्मक पैड तथा हाथों में ग्लोव्ज पहन रखे थे। एक या दो मिनिट बाद दो और व्यक्ति कुटिया से निकलकर आये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो

जल्द घुल जाता है
जल्द जज़्ब हो जाता है

इसलिए साधारण दर्द-विनाशक गोलियों की अपेक्षा

दर्द से दो गुना जल्दी आराम पहुंचाता है

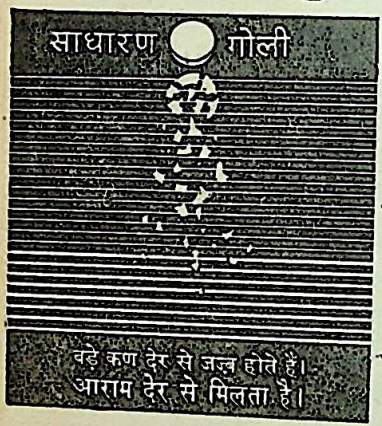

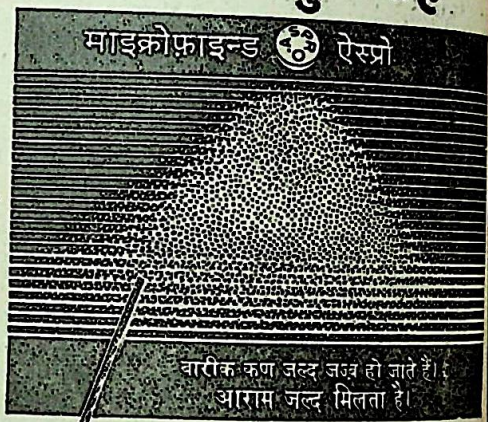

ऐस्प्रो के बारीक कण साधारण गोलियों की अपेक्षा जल्द जज़्ब हो जाते हैं। दर्द के स्थान पर जल्द पहुंचते हैं और आपको जल्द आराम मिलता है।

इन तकलीफ़ों के लिए माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो लीजिए: सिरदर्द • शरीर का दर्द • सर्दी-जुकाम • फ्लू • जोड़ों का दर्द • गले की खराश • दांत का दर्द

खुराक: प्रौढ़: दो गोलियां—आवश्यकता होने पर दो और लीजिए। बच्चे: एक गोली या डाक्टर की सलाह के अनुसार।

सिर्फ़ ऐस्प्रो ही माइक्रोफ़ाइन्ड है इसलिए यह दर्द को जल्दी खींच निकालता है

निकोलस (N) उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे भी ग्लोव्ज व पैड पहने हुए थे तथा हैरत यह देखकर हुई कि हाथों में लकड़ी के लंबे पटिये भी लिये हुए थे।

'फिर वे दोनों मैदान के बीच में गये और मैदान में गड़े हुए लकड़ी के तीन-तीन टुकड़ों के सामने जाकर खड़े हो गये। तब सफेद कोट पहने दो आदमियों में से एक ने मैदान में फैले लोगों में से एक की ओर लाल रंग की एक गेंद फेंकी। वह आदमी लकड़ी के टुकड़ों के पीछे बीस गज की दूरी तक चलकर गया। मैंने देखा, वह अपने आप ही गेंद को कभी कमीज पर, तो कभी पैंट पर रगड़ने लगा। उसके ऐसा करते ही अनायास वर्षा आरंभ हो गयी और पांच घंटे तक लगातार होती रही।

'बाप रे! कितना आश्चर्यजनक व बेमिसाल जादू था।'

० ० ०

डर्बन और पीटरमेरित्सबर्ग के बीच परंपरागत वार्षिक काउंसिल मैच चल रहा था। डर्बन के कप्तान थे वहां के मेयर; जो विगत १५ वर्षों से अपने दल का प्रतिनिधित्व करते चले आ रहे थे। इस अरसे में उन्होंने केवल दो विकेट लिये थे और मात्र १७ रन बनाये थे।.....और हां, कमबख्त कैच तो कभी उनके हाथों में बैठता ही नहीं था—लाख कोशिश करने पर भी छूट ही जाता था। इस बार उन्होंने यह निश्चित कर लिया कि कम से कम आज जिंदगी का पहला कैच अवश्य लेना है।

यह मैच डर्बन में ही खेला जा रहा था और हुआ यों कि कुछ विकेट गिरने के बाद पीटरमेरित्सबर्ग के मेयर बल्लेबाजी करने आये। अचानक मेयर साहब ने जोर से बल्ला घुमाया और गेंद आकाश में ऊंची यात्रा समाप्त करने के पश्चात सीधी डर्बन के मेयर उर्फ कप्तान के पास आ गयी। उत्तेजना के इन क्षणों में उन्होंने हाथ आगे किया और आंखें बंद कर लीं।

पर किस्मत देखिये कि गेंद सुरक्षित रूप से उनके बायें हाथ में आ फंसी। इस अनायास सफलता से वे स्वयं भी आश्चर्यचकित रह गये। फिर क्या था? गेंद को कभी हवा में उछालकर, तो कभी अपने गंजे सिर पर ही लुढ़काकर वे खुशी से मैदान में ही गुलाटियां खाने लगे। आखिर यह उनके जीवन का पहला कैच जो था।

तभी उन्हें खयाल आया कि इस महान सफलता पर दल के सदस्यों की बधाई तो स्वीकार कर ही लेनी चाहिये। लेकिन वे 'मिड आन' पर खड़े खिलाड़ी के पास ज्यों ही पहुंचे, तो उसने उन्हें रोककर गुस्से में कहा—'भगवान के लिए गेंद वापस फेंक दो—वह "नो-बाल" थी और बल्लेबाज सात रन पहले ही दौड़ चुके हैं।'

—१३२, जावरा कंपाउंड, इंदौर—१

शादियां अब बेतुके कारणों पर इसलिए टूटने लगी हैं कि शादियां बतुके कारणों पर होने लगी हैं।

—एक नयी अमरीकी लोकोक्ति

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

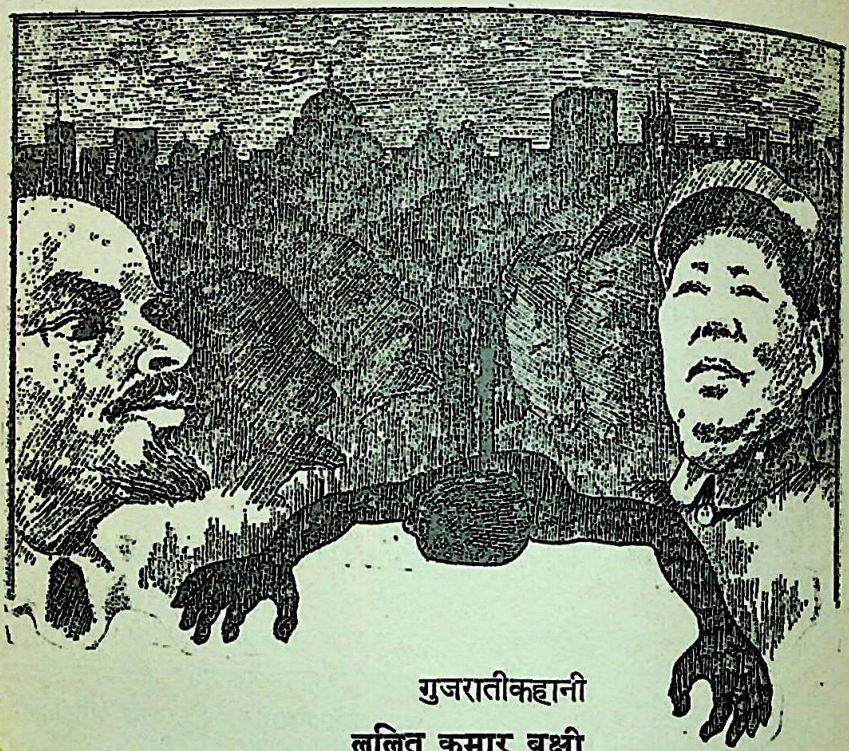

गुजरातीकहानी

ललित कुमार बक्षी

एक चेहरा मौत का

खून दुःखद तो था ही। हर खून दुःखद होता है। जो मर गया, वह जवान था। उसके जाने का समय आये, उससे पहले ही वह निबट गया। एक जीवन व्यर्थ ही सिमट गया।

पर इस शहर से वह परिचित है, जानता है कि यहां की राजनैतिक शतरंज पर ऐसी कितनी ही जिंदगियां अकारण सिमट गयीं। नया कुछ नहीं इसमें। और नया नहीं, इसी-लिए तो कंपकंपी नहीं छूटती और न किसी की आंख से एक बूंद आंसू ही टपकता है।

खून हो जाने के बाद वह सब कुछ देखने को मिलता है, जो कलकत्ता जैसे महानगर में सरेआम सड़क पर खून हो जाने के बाद देखने को मिलना चाहिये। सड़क सुनसान हो जाती है। दुकानें बंद हो जाती हैं। केवल उस सड़ांध-भरे होटल के दरवाजे, जिसमें आवारा लड़कों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का अड्डा जमता है, खुले रहते हैं।

सड़क पर बम फूट रहे हों, तो भी यह होटल बंद नहीं होता। इसके काउंटर पर बैठा मोटा, काला, चौबीसों घंटे पान चबाता मुखर्जी अन्यमनस्क दृष्टि से ताकता रहता है। उसके होटल की खाली बेंचों पर बैठकर ही तो जबांमर्द तेज आवाज में माओत्से-तुंग की और चीन के कल्चरल रिवोल्यूशन की चर्चाएं किया करते हैं।

पुलिस के आने पर आंख के इशारे से ही सब छोटी-छोटी गलियों में गायब हो जाते हैं। पुलिस की बंद गाड़ी सुस्त, धीमी गति से दो चक्कर लगाती है। फिर एम्बुलेंस में सरकारी अस्पताल की ओर लाश को पोस्ट-मार्टम के लिए रवाना करा देती है। भंगी को बुलाकर गटर के पानी से सड़क पर गिरे लहू के दाग और मांस के लोथड़ों को साफ करा डालती है।

गाड़ी में से सफेद कड़कड़ाती वर्दी पहने हाथ का बेंत हिलाता हुआ इंस्पेक्टर उतरता है। पीछे भरी राइफल लिये दो सिपाही हैं। इंस्पेक्टर होटल के मुखर्जी का बयान नोट करता है। सड़क के एक छोर पर परचून का सामान बेचने वाले हरी की दुकान का दरवाजा खुलवाकर कांपते हरी के बयान लेता है। पीपल के पेड़ के नीचे बैठे पागल भिखारी को सिपाही हाथ पकड़कर खड़ा करता है। भिखारी ने क्या देखा था, यह जानने के लिए उसे धमकाकर गाड़ी में बैठाकर पुलिस चौकी पर ले जाया जाता है।

सड़क के किनारे विशाल मकान ह। उन मकानों के फ्लैटों में शरीफ स्त्री-पुरुष रहते हैं। सलोनी, सुघड़ स्त्रियां हैं, जो दीवार पर रेंगती छिपकली देखकर चीखने लगती हैं। आफिसों में काम करने वाले 'ह्वाइट कालर' क्लर्क हैं, जो गैलरी में खड़े-खड़े रास्ते पर होता हुआ खून देख सकते हैं, पर पराये झगड़े में पड़ना ठीक नहीं समझते।

भद्र स्त्री-पुरुषों का रक्षण होना चाहिये, यह सभी मानते हैं। इंस्पेक्टर भी मानता है। जाते-जाते वह पीछे दो सिपाही छोड़ जाता है। दोनों की कमर में भरे रिवाल्वर लटकते हैं। मुखर्जी के होटल से कुर्सियां खींचकर दोनों सिपाही पीपल के पेड़ के नीचे अड्डा जमाते हैं। होटल का छोकरा उनके हाथ में चाय के गर्म प्याले थमा जाता है। सिपाही धीरे-धीरे जीभ पर घूंट टुघलाते चाय की चुस्कियां भरते हैं।

इस शहर में कानून और व्यवस्था संभालने के लिए पुलिस है। और पुलिस के पास आवश्यक हथियार हैं; फिर भी जब से यहां के मकान की दीवारों पर माओ और लेनिन के चेहरे फूट निकले हैं, तब से जैसे किसी क्षण भी अवांछनीय घटना घट सकने का एक अस्पष्ट भय हवा में तैरता रहता है। जैसे-जैसे रात का अंधेरा घिरता है, भय अधिक गहराता जाता है। बम फूटते हैं, कोकाकोला की बोतलें आमने-सामने चलती हैं, या कि प्रतिद्वंद्वी दलों के समर्थकों में से किसी की लाश गिरती है, तब वातावरण में एक प्रकार की विचित्र उत्तेजना छा जाती है—और निस्तब्धता भी।

अनुवाद : जेठमल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'श्रममंत्रीजी, केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों की हड़ताल का उद्घाटन करने के लिए हम आपको निमंत्रित करने आये हैं।' (पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्ट-बहुल मंत्रि-मंडल के दिनों में 'टाइम्स आफ इंडिया, बंबई में लक्ष्मण का कार्टून।)

शहीद स्तंभ के नीचे सभाएं होती हैं, और मुख्य सड़कों पर झंडे फहराते जुलूस निकलते हैं, तब निठल्ले बैठे छोकरों को कुछ करने के लिए मिल जाता है। शहर के बहुत-से तूफान सभा-जुलूसों से जनमते हैं। सब जानते हैं कि गले में लाल रूमाल लपेटकर जुलूस में आगे चलने वाले हर एक ने मार्क्स, लेनिन या माओ को नहीं पढ़ा। उनके लिए यह जरूरी भी नहीं। उनके लिए तो राजकीय हलचल खुल्लमखुल्ला हुल्लड़ मचाने का अवसर है। हुल्लड़ मचता है, तो लूट-खसोट करने का मौका मिलता है।

युवकों का एक दल है, जो चीन के चेयरमैन को 'आमार चेरमेन' कहता है। एक दूसरा दल है, जो सड़कों पर लेनिन के चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित करता है। दोनों दल निरंतर लड़ते रहते हैं। गाली-गलौज तो सामान्य बात है। बात थोड़ी आगे बढ़ी, तो मुक्केबाजी हो जाती है। और आगे बढ़ी, तो छुरे और बम। ज्वालामुखी भभक उठता हो, इस तरह रह-रहकर वे भड़क उठते हैं। जब तक एक-दो खून नहीं हो जाते, शांति नहीं होती।

एक शाम यहां से एक जुलूस निकला था। 'लेनिन जिंदाबाद' के नारे लगा रहा था। सड़क पर खड़े लड़कों ने तुरंत 'जुग-जुग जियो माओ त्से-तुंग' की धुन शुरू कर दी। पहले पक्ष ने दूसरे पक्ष को गालियां दीं। दूसरे पक्ष ने पहले के नेताओं को 'मुर्दाबाद' कहकर प्रत्युत्तर दिया। किसी ने एक जलती सिगरेट फेंकी। उसका अंगारा एक उन्मत्त युवक के गाल पर लगा। जवाब में माओ-समर्थकों ने जुलूस पर पथराव शुरू किया। फिर तो बेरोकटोक लड़ाई जमी। झंडे के डंडे हथियार बन गये। जो जुलूस में थे, उनकी संख्या अधिक होने के कारण जो सड़क पर थे, उन्हें भागना पड़ा।

पांच मिनिट में ही जो भागे थे, वे वापस आ गये। अब उनका दल बड़ा हो गया था। हाथों में कोकाकोला की बोतलें थीं, दो बम भी। जोरदार धमाके हुए। बोतलें फूटीं। किसी के सिर से लहू टपका। भागने की बारी अब जुलूस वालों की थी।

क्षण-भर में सड़क पर सन्नाटा छा गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुकानें बंद हो गयीं। लोग तितर-बितर हो गये। सारे स्वर शांत पड़ गये। केवल युद्ध करने वालों की हांकें-ललकारें सुनाई देती रहीं। मकान की छतों पर तमाशा देखने लोगों के झुंड इकट्ठे हो गये।

किसी ने पुलिस को टेलिफोन कर दिया। आम तौर पर पुलिस की गाड़ी को घटनास्थल पर पहुंचने में आधा घंटा तो लगता ही है। पर उस दिन भाग्य ठीक थे कि पुलिस जल्दी आ पहुंची। पुलिस ने हवा में दो फायर किये और टोलियां भाग खड़ी हुईं।

पर उस दिन से एक बात स्पष्ट हो गयी थी कि इस सड़क पर किसी क्षण भी लेनिन और माओ समर्थकों के बीच युद्ध छिड़ सकता है। कोई भी अप्रिय घटना घट सकती है। जिस जवान का खून हो गया, वह लेनिन-समर्थक दल का था।

० ० ०

उसका नाम निमाई था। उस तरफ उसका आना-जाना रहता था। कुछ लोग उसे पहचानते थे। उसके मामा का घर भी सड़क के पास की गली में था। मामा के यहां जाने के लिए उसे यहीं से गुजरना पड़ता था। वापस लौटते समय कई बार निमाई यहां के लड़कों के साथ खड़ा रहकर एक-आध सिगरेट पी लेता। पर वह था विरोधी दल का आदमी। जिस दिन जुलूस निकला और मार-पीट हुई, उस दिन से निमाई का इस तरफ आना बंद हो गया।

निमाई का खून छुरे से हुआ। ढेर होकर जब वह सड़क पर गिरा, तब उसका चेहरा बिलकुल विकृत हो गया था। एक पेट में, दूसरा पीठ में और तीसरा गर्दन के पिछले भाग में। पीछे की ओर के दो घाव भागते समय लगे थे। सड़क पर की टोली ने उसे घेर लिया था। उस टोली का नेता आदिनाथ था। आदिनाथ वर्षों से बेकार भटकता था। आजकल छुरा-चाकू तो उसकी जेब में हर समय रहता है। नये राजनैतिक प्रवाह उसके लिए बहुत लाभदायक साबित हुए हैं। वह और उसके साथी क्या नहीं कर सकते भला!

पहला छुरा आदिनाथ ने निमाई के पेट में भोंका। निमाई जान बचाने के लिए दौड़ा। आदिनाथ के साथियों ने भागते निमाई को पकड़ लिया। दूसरे दो घाव लगे। निमाई लड़खड़ाकर गिर गया। थोड़ा घिसटा दो बार तड़फड़ाया, और मर गया।

निमाई की जेब में पैसे थे। उसकी दायीं कलाई पर एक सस्ती घड़ी थी। घड़ी और पैसों को किसी ने हाथ नहीं लगाया। यह एक राजनैतिक हत्या थी। खून कर देने के पश्चात् खून करने वाले, जैसे कोई सामान्य घटना घटी हो, इस तरह सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए इधर-उधर बिखर गये। वे जानते थे कि पुलिस की गाड़ी आयेगी, तो उनके नाम बताने की किसी की हिम्मत नहीं होगी। ऐसी बेवकूफी जो करेगा, उसे भी निमाई के रास्ते जाना पड़ेगा। और यदि शक से उनमें से किसी को पुलिस पकड़ भी लेगी, तो उसे जमानत पर छुड़ा लाने के लिए दल के नेता तो हैं ही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊंचे मकानों में रहने वालों को कुछ देर तो पता भी नहीं चला कि नीचे सड़क पर खून हो गया है पता नहीं चला, इसमें उनका दोष नहीं। गैलरी में खड़े रहकर देखने पर सड़क पर दस-पंद्रह लड़कों की टोली खड़ी दिखाई देती है। टोली किसी एक को घेरकर खड़ी है, यह खयाल नहीं आता। और ऐसी टोली तो यहां हर रोज दिखाई देती है। उस ओर देखने की इच्छा शायद ही होती है।

खून हो गया है और लाश सड़क पर गिरी, उससे जो भय फैला उसी कारण सबका ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। कुतूहल-भरी नजरें लाश पर स्थिर हुईं। जो गैलरी में नहीं थे, वे भी दौड़े आये। खून देखकर कई स्त्रियों को उबकाई आयी। पर गैलरी में से हटा कोई नहीं। क्या हुआ, किसका खून हुआ, क्यों हुआ—सब प्रश्न एक गैलरी से दूसरी में कूदते हुए दूर तक फैल गये।

एक महाशय ने दूसरे के कान में कहा—'पिछले कई दिनों से जो हो रहा था, वह देखने के बाद ऐसा कुछ यहां होगा, इसकी आशंका तो थी ही।'

० ० ०

क्या हो रहा था?

सड़क के पास फुटपाथ पर ही पोस्ट-आफिस का बड़ा मकान है। उसकी लंबी सफेद दीवार पर तरह-तरह के विज्ञापन अंकित होते रहे हैं। नामर्दी दूर करने की गोलियां, केशवर्द्धक तेल, मकान किराये पर देना है। सरकारी इमारत है। उसके रूप-रंगकी किसी को चिंता नहीं। शाम को पोस्ट-आफिस बंद हो जाने पर पेंटर काम शुरू करते हैं। एक-आध बार किसी ने रोकने की कोशिश भी की। पुलिस स्टेशन में भी रिपोर्ट लिखायी पर कुछ फर्क नहीं पड़ा। पुलिस ने शायद ही इस पर ध्यान दिया होगा।

१९६९ के चुनाव के बाद इस शहर में माओवाद फैला। जोर-जोर से फैला। एक सुबह लोगों ने देखा कि किसी ने पोस्ट-आफिस की दीवार के सारे विज्ञापन मिटा डाले हैं। जहां विज्ञापन थे, वहां माओ के चेहरे नजर आ रहे हैं।

और किसकी हिम्मत थी कि माओ का चेहरा मिटाकर केशवर्द्धक तेल का विज्ञापन लगाये? लड़के सामने सड़क पर ही खड़े रहते थे। जो भी कोलतार की बाल्टी लेकर इस तरफ आया, वह गया काम से।

अब दीवार पर माओ-ही-माओ हैं। पीक-कैप, फैली नाक, छोटी-तीखी आंखें, नीचे बड़े काले अक्षरों में लंबे स्लोगन लिखे हैं। स्लोगनों में जनता को, मजदूरों को, कृषकों को आगामी हिंसक क्रांति में सक्रिय भाग लेने का निमंत्रण है। यहां पुलिस दीवारों पर के चित्र मिटाने से डरती है। या शायद उनके प्रति लापरवाह है!

जुलूस निकला, मारामारी हुई। उसके दो दिन बाद ही एकाएक पोस्ट-आफिस की दीवार पर माओ के साथ लेनिन भी दिखाई दिया। नुकीली दाढ़ी, विशाल ललाट, खुला सिर। अवश्य कोई रात गये बना गया होगा। यह मजाक नहीं था। एक खुली चुनौती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

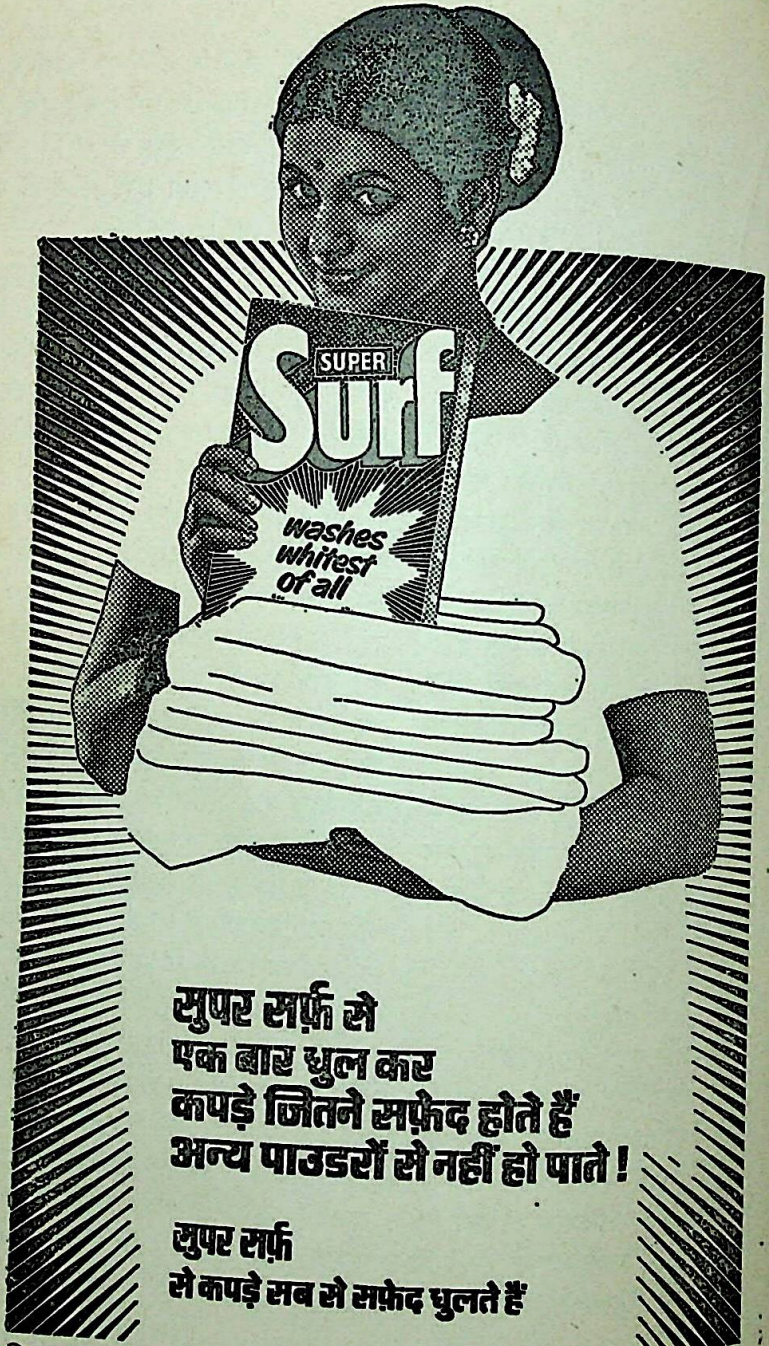

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-SU. 117-77 HI (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सड़क के छोकरे आगबबूला हो उठे। कोलतार पोतकर उन्होंने लेनिन का चेहरा मिटा दिया और उसकी जगह माओ का नया, अधिक बड़ा चेहरा चित्रित कर दिया। फिर विरोधी पक्ष को भद्दी गालियां दीं।

विरोधियों की ओर से छिटपुट पत्थर आये। जवाब में उन्होंने भी फेंके, पर उस दिन बात इससे आगे नहीं बढ़ी। सब शांत हो गया.....

रात हो गयी थी। सड़क की दुकानें अभी तक खुली थीं। कोई-कोई बंद होने लगी थीं। निमाई अपने मामा के घर से वापस लौटा। आजकल वह इस ओर कम ही आता। और आता, तो जल्दी वापस लौट जाता।

आदिनाथ उसके रास्ते में आ खड़ा हुआ। दूसरे लड़कों ने उसे घेर लिया। आदिनाथ ने उसे ललकारा—'ऐ, हम जो पूछते हैं उसका सच-सच जवाब दे।'

अकेला होने के कारण निमाई डरा। फिर भी उसने हिम्मत करके पूछा—'तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते हो? क्या पूछना चाहते हो?

'तुझसे ही तो पूछते हैं, तू ही तो फंसा ह चंगुल में।'

'फंसा है चंगुल में' का अर्थ निमाई समझता था। इस शहर की सड़कों पर कितने ही विशिष्ट शब्द बोले जाते हैं और यहां बसने वाले उनके अर्थ ठीक ही समझते हैं। शायद निमाई को अफसोस हुआ कि व्यर्थ ही इस ओर आया। थप्पड़-मुक्के पड़ेंगे, जेब में है वह लूट लेंगे, हाथ की घड़ी भी खोनी पड़ेगी।

वह लुटने और मार खाने को तैयार हो गया—'क्या पूछना है तुम्हें?'

'रात को यहां दीवार पर लेनिन का चित्र बनाने की किसकी हिम्मत हुई?'

'क्या?'

'आंखें फूटी हुई हैं क्या? दिखता नहीं सामने दीवार पर?'

'मैं नहीं जानता।'

'तू क्या जानता है और क्या नहीं जानता यह हम जानते हैं। बोल, सच बोल दे। कौन है वह? श्यामल, कार्तिक, निमाई..... जो भी होगा, हम उसे गंगाघाट उतार देंगे—खच्च!' आदिनाथ के हाथ में छुरा चमका।

निमाई चुप खड़ा रहा।

'यह दीवार हमारी है। इस पर कोई भी दूसरा चित्र बनाये, इसका नतीजा क्या होगा, पता है?' आदिनाथ गरजा। उसकी आंखें लाल थीं, उसके साथियों के हाथ गर्म हो रहे थे।

'मैं केवल अपनी बात जानता हूं। मैंने कुछ नहीं किया।' भावी आशंका को भांपकर निमाई बड़बड़ाया। उसकी आवाज फीकी थी।

'अबे ऐ, तूने नहीं किया तो तेरे दल वालों ने तो किया है न?' आदिनाथ के एक साथी ने निमाई को धक्का देकर कहा।

'जो भी हो, उसकी कीमत हम तुझसे वसूल करेंगे।' आदिनाथ के स्वर में क्रोध था।

निमाई बेचैन होता जा रहा था। उसने घेरे में से बाहर निकलने का प्रयत्न किया। एक ने उसका हाथ पकड़कर वापस खींचा—'जाता कहां है बे!' और एक तमाचा जड़

१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को पछाड़नेवाला चॅम्पियन

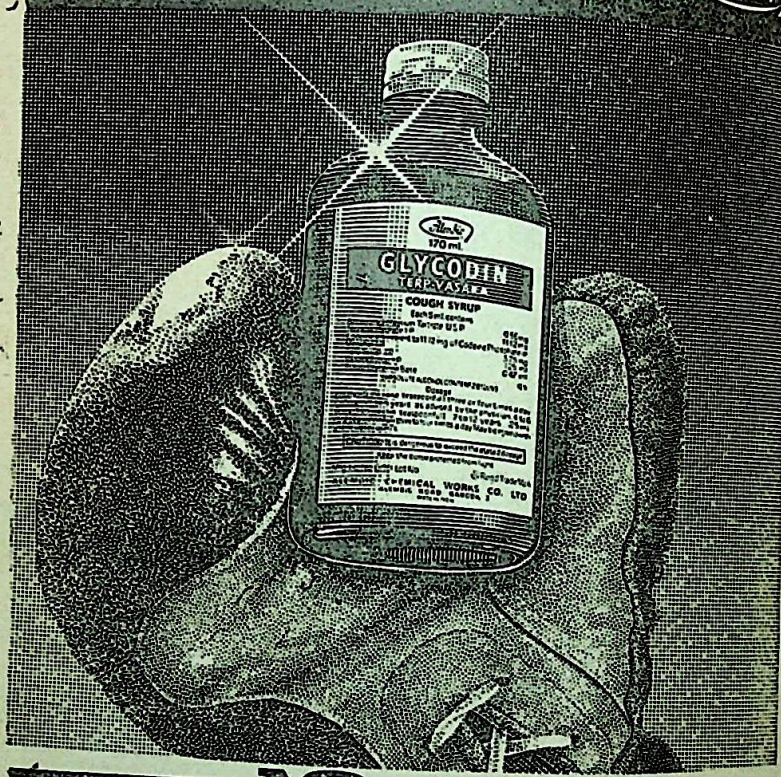

ग्लायकोडिन वर्षों से लाखों लोगों की खाँसी पर पूरा काबू पाने में खाँसी के अन्य इलाजों से ज़्यादा असरकारक और जोरदार साबित हुआ है. □ ग्लायकोडिन दिमाग, गला, छाती और फेफड़ों जैसे खाँसी के चारों मोर्चों पर हमला कर खाँसी को मार भगाता है. ● तेज असर करनेवाला ● मधुर स्वादवाला ● किफ़ायती

ग्लायकोडिन — भारतभर में खाँसी का सबसे अधिक लोकप्रिय और विश्वसनीय इलाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
everest/617/ACW Hin

दिया। निमाई ने मुश्किल से थूक गले के नीचे उतारा। आदिनाथ और उसके साथी रात के अंधेरे में भयानक आंखें चमकाते रहे।

'मुझ पर हाथ उठाने का परिणाम अच्छा नहीं होगा।' निमाई जोर लगाकर बोला।

आदिनाथ तिरस्कार-भरी हंसी हंसा—'अच्छा! अब तो यह बेटा भी देखेगा कि हम क्या कर सकते हैं?'

और आंख झपकते ही छुरे चल गये।

निमाई की लाश सड़क पर गिर पड़ी।

० ० ०

यों आंख झपकते ही खून हो सकता है, ऐसी कल्पना तो बहुतों को नहीं थी। मरने वाला उनका रिश्तेदार नहीं था, पर हत्या हो गयी। एक लाश देखकर उनके चेहरे गुमसुम हो गये। लोगों ने कहा कि आजकल के लड़कों को छुरा और बम चलाने के लिए कोई भी बहाना पर्याप्त है। एक या दूसरे राजनैतिक दल के संरक्षण में गुंडों और आवारा लड़कों के सिर तो ऐसे चढ़ गये हैं कि उनके मार्ग में जो आया, वह मौत के घाट उतर गया समझो। इस किस्से में ही देखिये न, इतनी सामान्य बात पर छुरा मार दिया। कौन जाने यह सब कहां जाकर रुकेगा?

कायदे-कानून की खुलेआम अवहेलना हो रही है। देश के नेताओं का अपमान होता है। अजी साहब, दो-दो रुपयों में बम बिकते हैं। आठ-दस वर्ष के लड़के छुरा चलाना सीखते हैं। ट्रामों और बसों में माओ के चित्र बने हैं। जिसे देखो, वही नक्सलवादी है। गली-गली में आवारा लड़के अड्डा जमाकर खड़े रहते हैं। आदमी का खून हो जाना तो सामान्य बात है। क्या नहीं होता आजकल?

लोग कहते तो बहुत कुछ थे, पर दबी आवाज में ही। सड़क पर घूमते 'दादा' की आंखें उनके सामने कड़ी हों, यह कोई नहीं चाहता। लोगों की हालत गैस निकले हुए गुब्बारे-जैसी है। अच्छा या बुरा, जो कुछ इन सड़कों पर और गलियों में होता है, उसे मुंह लटकाकर, मन मारकर स्वीकार कर लेते हैं। और हो भी क्या सकता है?

लाश को एम्बुलेंस ले गयी और सड़क गटर के पानी से साफ हो गयी—दुकानें फिर से खुलने लगीं। फुटपाथ पर राहगीर चलने-फिरने लगे। बहुत जल्दी सब सामान्य होने लगा है। पीपल के पेड़ के नीचे कुर्सियों पर पैर लंबे करके सिपाही बैठे हैं। रात-भर बैठे रहेंगे।

'अब रात-भर कोई अप्रिय घटना घटने की संभावना नहीं....'

'चलो निश्चितता हुई....'

निश्चितता हुई!

निश्चितता मानने वालों के स्वर में विश्वास नहीं, एक छिपा डर है, भय है, आशंका है। किसे पता है, किस समय फिर वापस.....उसकी गर्दन पर पसीने की बूंदें उभर आयी हैं। वह लंबी जम्हाई लेता है। और कमरे में लौट जाने से पहले गैलरी से एक क्षण को नीचे सड़क पर झांक लेता है। सिपाही बैठे हैं और उनसे कुछ दूर एक बिजली के खंभे का सहारा लेकर आदिनाथ सिगरेट का धुआं उड़ाता खड़ा है.....।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीनी कहानी :

घर-पुराना घर

लू शुन

हड्डियां गला देने वाली सर्दी में सात सौ मील से अधिक फासला तय करके मैं अपने उस पुराने और पुश्तैनी घर की ओर लौट रहा था, जिसे छोड़े मुझे बीस वर्ष हो चुके थे।

सर्दियां अपनी पराकाष्ठा पर थीं। जब हम उस पुराने घर के समीप पहुंचे, तो सहसा दिन धुंधला गया। बादल छा गये और ठंडी हवा हमारी नाव के कैबिन में घुस आयी। बांस की तीलियों के बने कैबिन के दरवाजे की झिरियों से हमें कुछ वीरान, उजड़े हुए गांव दिखाई दे रहे थे। गहरे पीले आकाश के नीचे दूर-दूर तक बिखरे हुए। उनमें जीवन का स्पंदन न था। मैं बरबस उदास हो गया।

इस बार मैं अपने पुराने घर को सदा के लिए विदा कहने आया था। दरअसल यह पुराना घर, जिसमें हम वर्षों रहे थे, एक और परिवार के पास बेचा जा चुका था, और इस वर्ष के अंत तक हमें नये मालिक को मकान का कब्जा दे देना था। इसीलिए भागा-भागा आया था, ताकि अपने पुराने घर और अपने चिरपरिचित पुश्तैनी गांव को विदा कहकर अपने परिवार को उस जगह ले जाऊं, जहां मैं उन दिनों नौकर था।

अगल दिन पौ फटने के समय मैं अपने घर के दरवाजे के सामने खड़ा था। छत की दरार में उगी हुई घास में से हवा सरसर बह रही थी। मुझे उस हवा ने बताया कि इतने प्राचीन और पुराने घर को बेचना नहीं चाहिये। इस घर में हमारे वंश-वृक्ष की कई शाखाएं फूटीं और दूर-दूर तक फैलीं। इसीलिए अपना उदास और खामोश पुराना घर मुझे बड़ा प्यारा लगा। मां मेरे स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़ी थी और मेरा आठ वर्ष का भतीजा हंग उसके पीछे खड़ा था।

मां यों तो खुश और उल्लसित नजर आ रही थी। फिर भी मैं भांप गया कि वह अपनी उदासी को छिपाने का असफल प्रयत्न कर रही है। उसने मुझे बैठने, आराम करने और चाय पीने को कहा; परंतु घर के बेचने के बारे में एक शब्द भी मुंह से न निकाला। हंग जो कि मुझे पहली बार देख रहा था, दूर खड़ा मुझे टुकुर-टुकुर ताकता रहा।

बहरहाल, हमें अपने स्थानांतर के बारे में बातचीत छेड़नी पड़ी। मैंने मां को बताया कि मैं जहां काम करता हूं, वहां घर किराये पर ले चुका हूं। कुछ फर्नीचर भी खरीद लिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है; इसलिए मैं पुराने घर का सामान यहीं बेच देना चाहता हूं, ताकि जरूरी वस्तुएं वहीं खरीदी जा सकें। मां मेरी बात मान गयी और कहने लगी—'आवश्यकता की सारी वस्तुएं इकट्ठी कर ली गयी हैं। कुछ सामान मैं बेच चुकी हूं। सिर्फ फर्नीचर बेचना बाकी है। मगर समस्या यह है कि खरीदार सामान की कीमत समय पर दे दें। खैर तुम एक-दो दिन आराम करो। फिर रिश्तेदारों से मिल आना। उसके बाद चल देंगे। और हां, मैं तो भूल ही गयी। वह यन-तू है न! बेचारा कई दिनों से तुमसे मिलने के लिए मरा जा रहा है। बस, आया ही समझो।'

मां ने यह बात क्या कही, दृश्य ही बदल गया। सहसा मेरे मस्तिष्क में एक तस्वीर उभर आयी। शीतल-बुझता हुआ चांद गहरे नीचे आकाश में खो गया और आंखों के सामने समुद्र का विशाल नीला पानी फैलता चला गया।

.....ग्यारह या बारह वर्ष का एक लड़का दूधिया रंग का स्कार्फ बांधे खड़ा नजर आया। यह लड़का यन-तू था। बीस वर्ष पहले जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब वह दस

चित्र : कमलाक्ष शेण

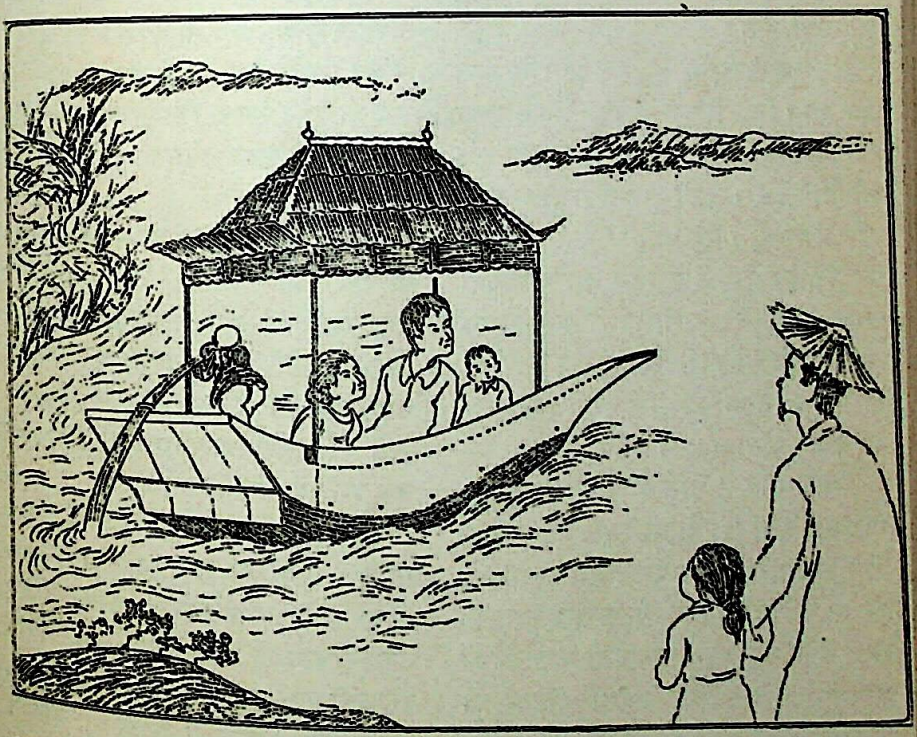

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष का था। मेरे पिता तब जीवित थे और हम खाते-पीते लोग थे। इसीलिए मैं बड़े लाड़-प्यार से पाला गया था।

हमारे यहां चीन में तीस वर्ष में एक बार बड़ी दावत दी जाती है, पूर्वजों की आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए। यह उत्सव बड़ी शान से मनाया जाता है। लोगों का हुजूम होता है; इसलिए उस अवसर पर क़ीमती चीजें, उपहारों आदि की रक्षा के लिए सवेत पहरेदारों की आवश्यकता रहती है। हमारे परिवार में नौकर एक ही था और काम बहुत अधिक था; इसलिए हमारे नौकर ने कहा कि मैं अपने दस-ग्यारह साल के बेटे को ले आऊंगा।

मैं एक हमउम्र साथी के आने से बहुत खुश था। जिस दिन वह आया, मैंने दौड़कर उसका स्वागत किया। उसका चेहरा सुर्ख और सफ़ेद था। उसने दूधिया रंग का स्कार्फ बांध रखा था। वह था तो बहुत लजीला; पर कुछ ही घंटों में मुझसे घुल-मिल गया। उसने पहली ही मुलाकात में यह कहकर मुझे प्रभावित कर लिया कि मैं फंदे से पंछियों को पकड़ने में माहिर हूं। मेरे साथियों में एक भी यन-तू जैसा न था।

उसके गांव के पास ही समुद्र था। इसलिए वह सीपियों, घोंघों आदि की मजेदार बातें सुनाता और जब उसने मुझे बताया कि वह तरबूजों की निगरानी के लिए रात को खेतों में जाकर कई बार जंगली बिलावों को भी भगा चुका है, तो उसकी वीरता का सिक्का मेरे दिल पर अंकित हो गया। उससे मिलकर मुझे इसका बड़ा तीव्र एहसास हुआ कि दुनिया अद्भुत चीजों से भरी हुई है। घोंघे, सीपियां, ऊदबिलाव, बड़े-बड़े तरबूज, समुद्र का किनारा, लहरें, नीली-पीली-काली चिड़ियां...और न जाने क्या-क्या!

उत्सव के बाद भी यन-तू एक महीने तक हमारे यहीं रहा। जब उसका पिता उसे वापस ले जाने के लिए गांव से आया, तो उसने रोते हुए जाने से साफ इन्कार कर दिया, पर उसका पिता जबर्दस्ती उसे अपने साथ ले गया।

और जाने के कुछ दिनों बाद यन-तू ने मुझे सुंदर सीपियों, घोंघों और रंगीन पंखों का उपहार भेजा। मैंने भी बदले में उसे उपहार भेजे। उसके बाद हम फिर कभी न मिले। अब जो मां ने उसका जिक्र किया, तो बिजली की कौंध की तरह चमककर वह मेरी आंखों के सामने आ गया।

मेरा भतीजा मुझे खींच रहा था—'तो हम गाड़ी पर शहर जायेंगे?' उसने मासूमियत से पूछा। 'हां!' मैंने उत्तर दिया। 'दरिया को कैसे पार करेंगे?' उसने नया प्रश्न जड़ दिया। और जब मैंने बताया कि गाड़ी में सवार होने से पहले हम नाव में बैठेंगे, तो वह खुशी से नाचने लगा।

उसी सर्द शाम को जब मैं चाय पी रहा था, मुझे किसी के आने का एहसास हुआ। मैं मुड़ा और आने वाले के स्वागत के लिए उठकर खड़ा हो गया। पहली नजर में मैंने उसे नहीं पहचाना। वह यन-तू था; पर वह यन-तू नहीं, जिससे मैं मिला था, जो मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पनाओं में जीवित था। वह आकार और कद-काठ में पहले से दुगुना हो चुका था। उसका वह सुर्ख दमकता हुआ तरो-ताजा चेहरा बासी नजर आ रहा था और गहरी रेखाओं और झुर्रियों ने उसके चेहरे पर जाल बिछा रखा था। उसकी सुंदर आंखें सुर्ख, गंदली और सूजी हुई थीं। वह दूधिया स्कार्फ गायब हो चुका था। एक पैबंद लगी पतली जाकिट में वह कांप रहा था। उसके नरम-नाजुक सुंदर और सफेद हाथ खुरदरे और भद्दे हो चुके थे। मैं कैसे खुशी प्रकट करता। मेरे मुंह से निकला—'ओह! यन-तू!' उसकी दशा पर मैं अपने मन में रो रहा था। जी चाहता था कि उस पर प्रश्नों की बौछार कर दूं। कहां हैं वे घोंघे, सीपियां, समुद्र में उछलती हुई मछलियां, ऊदबिलाव, तरबूज, जंगली बिलावों से लड़ाई की कहानियां? पर मैं जो कुछ सोच रहा था, उसे शब्दों में कह नहीं पाया।

वह मेरे सामने खड़ा था। खुशी, दुःख और यातना की झलकियां उसके चेहरे पर नजर आ रही थीं। उसके ओंठों में हरकत हुई, लेकिन कोई आवाज न निकली। फिर उसने बड़े आदर से सिर झुकाया और बोला—'जनाब!'

मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे सर्दी की तीव्र लहर मेरी हड्डियों में घुस गयी हो। मेरे और उसके बीच एक भारी दीवार आ चुकी है। तभी उसने पीछे मुड़कर आवाज दी—'शुई शेंग मालिक के सामने सिर झुकाओ।' फिर उसने अपने पीछे छिपे हुए बच्चे को पकड़कर आगे किया। मैं चकरा गया। आज से बीस वर्ष पहले यन-तू बिलकुल इस लड़के की तरह, किंतु नहीं....इसके गले में दूधिया स्कार्फ नहीं था।

'जनाब! यह मेरा पांचवां बेटा है।' यन-तू ने कहा—'इसे कभी बड़े आदमियों से मिलने का संयोग नहीं हुआ। इसीलिए डरता और झिझकता है।'

इतने में हंग के साथ मां आ निकली। यन-तू ने मां के सामने आदर से सिर झुकाया और बोला—'मालकिन! मैं बड़ा खुश हूं कि छोटे मालिक घर वापस आ गये।'

'अरे! तुम इतना सब आदर क्यों जता रहे हो?' मां ने मुस्कराते हुए कहा—'क्या बचपन में तुम दोनों इकट्ठे नहीं खेला करते थे? तुम अब भी उसके नाम शुन से बुलाओ।'

'जी नहीं! तब तो मैं बच्चा था न! मुझे शिष्टाचार नहीं आता था।' उसने बड़ी विनम्रता और शर्म से कहा।

फिर मां ने नन्हे शुई शेंग को देख लिया—'अच्छा, तो यह है तुम्हारा पांचवां बेटा। बड़ा शर्मीला नजर आता है! सब तुम्हारा कुसूर है! तुम उसे अपने साथ लाये भी तो नहीं कभी। चलो हंग, इसे अपने साथ ले जाओ। दोनों जाकर खेलो।'

दोनों बच्चे हंसते हुए बाहर चले गये। मां ने यन-तू को बैठने के लिए कहा, तो वह झिझकता हुआ, सिमटता हुआ अदब से बैठ गया। फिर कागज में लपेटा हुआ एक पैकेट आगे बढ़ाते हुए आदर से बोला—'जनाब! सर्दियों में ऐसी कोई सौगात नहीं मिली, जिसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर डिजाइन मनमोहक रंग

मधुर मनमोहक

अब ! मधुर शीतकाल का इन्तज़ार करिए
ठंडा और सर्द—परन्तु 'हंसा' कम्बलों के
कारण गर्म और आरामदेह
बढ़िया से बढ़िया कोटि की ऊन की
तरह गर्म
'हंसा' जैसे सुन्दर और मनमोहक कम्बल
आपने शायद ही पहले कभी देखे होंगे—
चमकीले सजीव रंग—मनोखे और
मनपसन्द डिज़ाइन
और यह सब अनेक किस्मों और मुनासिब
कीमतों में...

'हंसा' कम्बल

आपकी रंगीली रातों की सुरुआत...

अमृतसर स्वदेशी वूलन मिल्स

राम तीर्थ रोड, अमृतसर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं आपकी सेवा में पेश कर सकता। ये कुछ मटर के दाने हैं सूखे हुए। इन्हें स्वीकार कीजिये।'

मैं उसके इस स्वर और विनम्रता से घबरा उठा था। मैंने उसका हाल-चाल पूछा कि कैसी बीत रही है। उसने बड़ी निराशा से सिर हिलाते हुए कहा—'जनाब, बड़ी बुरी हालत है। हुजूर, मेरा छठा बच्चा भी मेहनत-मजदूरी करता है। फिर भी पूरा नहीं पड़ता। जनाब, कोई सुख नहीं। सब लोग पैसा मांगते हैं। न कोई नियम है, न कानून। फसलों की हालत बड़ी खराब है। दिन-रात एक करके हम फसल उगाते हैं और जब बेचने के लिए निकलते हैं, तो बीसियों टैक्स चुकाने पड़ते हैं। बचे तो क्या बचे?'

वह चुप हो गया। रेखाओं और झुर्रियों से भरे हुए उसके चेहरे पर निराशा के सिवा कुछ न था। जब मां को पता चला कि उसने दोपहर को कुछ नहीं खाया, तो बोली—'जाओ, रसोईघर में अपने लिए कुछ चावल उबाल लो।'

वह उठकर चला गया, तो मैं उसके कष्टमय जीवन के बारे में सोचने लगा। खाने वाले कई मुंह—अकाल, टैक्स, सिपाहियों की छीना-झपटी। चोर, डाकू, सरकारी अफसर, जागीरदार—सब खून चूसने वाले, जो आदमी को लाश की तरह खुश्क कर देते हैं। मां कहने लगी—जो चीजें हम अपने साथ नहीं ले जा रहे हैं, उनमें से जो कुछ यन-तू को पसंद आये, उसे दे दूंगी।'

और मां ने उससे कहा कि जो उसका जी चाहे, उठा लो। एक क्षण के लिए उसका झुर्रियों-भरा उदास चेहरा खुशी से चमका और फिर अपनी असली हालत में आ गया। उसने दो लंबी मेजें, चार कुर्सियां और छोटी-मोटी कई चीजें चुन लीं। मां ने उससे कहा कि इन चीजों को अपने घर छोड़कर सुबह फिर आ जाना।

वह सवेरे-सवेरे वापस आ गया। सारा दिन हम बहुत व्यस्त रहे, पर मुझे इतना याद है कि वह अपने साथ शुई शेंग के बजाय एक बच्ची को लाया था। शाम के समय हम सब कामों से निबटकर और अपने घर को विदा कहकर नाव में सवार हो गये। नाव चल पड़ी। किनारों के आस-पास फैले हुए हरे-हरे पहाड़ बड़े-बड़े रत्नों की तरह चमक रहे थे। हंग ने मुझसे कहा—'चाचा! हम वापस कब लौटेंगे?'

मैंने कहा—'हम वापस नहीं लौटेंगे।' हंग उदास हो गया—'चाचा, हम वापस अवश्य आयेंगे। शुई शेंग ने मुझे अपने घर बुलाया है।' मेरी नजरों के सामने दस वर्षीय यन-तू आ गया और मैं फिर उदास हो गया। पुराना पुश्तैनी घर धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था। उस समय मुझे उस बढ़ते हुए फासले के साथ-साथ एक जानलेवा दुःख का अनुभव हो रहा था। मुझे अपने पुश्तैनी घर को छोड़ने का बिलकुल दुःख न था। मैं उस ऊंची और अदृश्य दीवार को महसूस कर रहा था, जिसने मुझे अपने साथियों से दूर कर दिया था। दूधिया स्कार्फ पहनने वाला लड़का, मेरा मित्र, नजरों के सामने था।.....उसका प्रतिबिंब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय औद्योगिक, विशेषतः यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

डॅगर-फोर्स्ट का उत्पादन

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाना आसान काम नहीं है। उसके लिए एक विशेष प्रकार के टूल

'ब्रोच'

की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां ब्रोच उत्पादन परमावश्यक होता है।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लिमिटेड ने इस आवश्यकता को पूर्ति की है। उनके बनाये ब्रोच का उपयोग कीजिये और लोहे के या किसी भी धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि., थाना (बंबई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धुंधलानेलगा। धुंधलाता चला गया। झुर्रियां, रेखाएं, नजरों के सामने जाले बुनने लगीं।

मां और हंग दोनों सो गये। मैं भी लेट गया। नाव के नीचे पानी आवाजें पैदा कर रहा था। मैंने सोचा, ठीक है। मेरे और यन-तू के बीच में दीवार खड़ी हो गयी है; पर बच्चों के पास अभी तक एक साझी अनुभूति शेष है। न जाने क्यों, मेरा मन यह कह रहा था कि ये बच्चे हम-जैसे नहीं होंगे। ये अपने बीच किसी दीवार को बाधक नहीं होने देंगे। मन चाहता था, ये बच्चे मेरी तरह, यन-तू की तरह जीवन की कठिनाइयों से न गुजरें, जिसमें इंसान की सारी शक्ति व्यय होजातीहै—बेकार व्यर्थ। ये बच्चे, नये जीवन के अधिकारी हैं—ऐसा जीवन, जो हमारे अनुभव में कभी नहीं आया।

आशा की इस झलक ने मुझे एकाएक भयभीत कर दिया। मुझे याद आया कि जब यन-तू अपने लिए चीजें चुन रहा था, उसने वे बरतन भी ले लिये थे, जो देवताओं को नैवेद्य चढ़ाने के समय काम में आते हैं। मैं हंस दिया कि इस मूर्ख के मन में अब भी देवताओं के लिए श्रद्धा बाकी है और एक मैं था कि मैंने आशा को एक देवता का रूप दे दिया था। आदमी कैसी-कैसी इच्छाएं करता है, सोचता है और अपने आप पर हंसता रहता है।

मैं ऊंघने लगा। सुनहरा, हरा समुद्र का किनारा मेरी आंखों के सामने फैलने लगा, जिसके ऊपर गहरे नीले आकाश में दूधिया चांद चमक रहा था। मैंने सोचा, आशा कभी नहीं कहती कि तुम किसी चीज को अस्तित्व में न लाओ। आशा धरती पर फैले हुए रास्तों की तरह है। जब धरती ने जन्म लिया था, तो उस पर कोई रास्ता न था; किंतु जब बहुत सारे आदमी एक ही राह से गुजरे, तो रास्ता बन गया।

अनुवादक : सुरजीत

*

गये साल सितंबर में अमरीका के दंत-चिकित्सकों के संघ के वार्षिक अधिवेशन में अचानक ही सब प्रतिनिधियों के दांतों की जांच शुरू कर दी गयी। जांच के परिणाम चौंका देने वाले सिद्ध हुए। यह पाया गया कि संमेलन में आये ९५ प्रतिशत दंत-चिकित्सकों के दांत खराब थे। ६० प्रतिशत के दांतों में कीड़े लगे हुए थे। ३५ प्रतिशत के मसूढ़े रोगग्रस्त थे। केवल ५ प्रतिशत डाक्टरों के मसूढ़े और दांत सब दुरुस्त थे।

० ० ०

एक प्रसिद्ध चित्रकार अपने गांव गया हुआ था। वहां उसने बैलों की एक सुंदर जोड़ी देखी। बैलों के मालिक से अनुमति लेकर उसने उनका चित्र तैयार किया। चित्र शहर में तीन हजार रुपये में बिक गया। अगले साल दुबारा गांव जाने पर उसने बैलों के मालिक को यह बात बतायी, तो वह आश्चर्य से बोला—'किस मूर्ख ने खरीदा चित्र! इतनी रकम में तो मैं उसे जिंदा बैलों की जोड़ी दे सकता था।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मांड का छोर

आइजैक आसिमोव

क्या वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड का छोर देख लिया है?

ब्रह्मांड के छोर से आपका खयाल यह हो कि कोई दीवार या बाड़ है, जहां पर ब्रह्मांड समाप्त हो जाता है—इस अर्थ में तो खगोलज्ञों ने ब्रह्मांड का छोर नहीं देखा है। असल में बात यों है:

सन २० वाले दशक में अमरीकी खगोलज्ञ एडविन हबल दूरवर्ती आकाशगंगाओं का अध्ययन कर रहे थे। उन सभी के स्पेक्ट्रम में 'रेड शिफ्ट' था। अर्थात् उनके स्पेक्ट्रम में कई अवशोषण-पंक्तियां अपने सदा के स्थान से हटकर लाल छोर की ओर सरकी हुई थीं। हमसे परे हट रही किसी भी प्रकाशमान वस्तु से हमारी ओर जो प्रकाश आ रहा होगा, वह स्थिर अवस्था में उसी वस्तु से हमारी ओर आने वाले प्रकाश से कमजोर होगा। इसका अर्थ है कि उस प्रकाश का प्रत्येक अंश (अवशोषण रेखाओं समेत) लाल छोर की ओर सरकेगा। अतः हबल ने यह परिणाम निकाला कि सभी आकाशगंगाएं हमसे परे हट रही हैं।

हबल ने यह भी देखा कि कुछ आकाशगंगाएं दूसरों की अपेक्षा धुंधली हैं। उन्होंने माना कि वे दूरी के कारण धुंधली हैं और उनमें जो जितनी ज्यादा धुंधली हैं, वे उतनी ही अधिक दूर हैं। उन्होंने यह भी पाया कि जो आकाशगंगा जितनी अधिक धुंधली है, उसमें 'रेड शिफ्ट' भी उतना ही ज्यादा है। उन्होंने परिणाम निकाला कि जो आकाशगंगा हमसे जितनी अधिक दूर है, वह उतनी ही अधिक तेजी से हमसे परे हट रही है।

इसमें रहस्य की कोई बात नहीं है। न इसका यही मतलब है कि हममें कोई ऐसी खास बात है, जिससे आकाशगंगाएं हमसे परे हटकर भाग रही हैं। असल बात यह है कि ब्रह्मांड एक नियत गति से फैलता जा रहा है।

सन १९२९ में हबल ने एक नियम प्रतिपादित किया, जो अब हबल-नियम कहलाता है। इसमें कहा गया है कि जो आकाशगंगा हमसे जितनी अधिक दूरी पर है, वह उतनी अधिक तेजी से हमसे परे हट रही है। हबल ने कहा कि किसी आकाशगंगा और हमारे बीच प्रति दश लक्ष प्रकाशवर्ष की दूरी के पीछे वह आकाशगंगा प्रति सेकेंड एक निश्चित मील-संख्या के हिसाब से हमसे परे हटती है। (इस मील-संख्या को हबल का स्थिरांक कहते हैं।)

वर्तमान प्रेक्षकों के अनुसार यह स्थिरांक शायद १५ मील प्रति सेकेंड के लगभग है। इसका मतलब यह हुआ कि जो आकाशगंगा हमसे १० दश लक्ष (एक करोड़) प्रकाश-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष की दूरी पर है, वह १५ × १० यानी १५० मील प्रति सेकेंड के हिसाब से हमसे परे हट रही है। १०० दश लक्ष प्रकाशवर्ष दूर की आकाशगंगा १,५०० मील प्रति सेकेंड के हिसाब से परे हट रही होगी, इत्यादि।

मान लीजिये कि कोई आकाशगंगा हमसे १२,५०० दश लक्ष प्रकाशवर्ष दूर है। उस हालत में उसकी हमसे परे हटने की रफ्तार १२,५०० × १५ प्रकाश की गति के बराबर होगी। यदि वह आकाशगंगा प्रकाश की गति से हमसे परे हट रही है, तो वह हमारी ओर जो प्रकाश भेजेगी, वह प्रकाश अपनी तमाम ऊर्जा गंवा बैठेगा। हम तक कुछ भी नहीं पहुंचेगा। हम उसे देख ही न सकेंगे। वह नजर में आ सकने वाले ब्रह्मांड की सीमा होगी। उससे परे भी वस्तुएं होंगी, कौन जाने! किंतु अगर हों तो भी हम धरती पर से उन्हें कभी भी देख नहीं पायेंगे।

धरती से १,००० दशलक्ष प्रकाशवर्ष से अधिक दूरवर्ती जो चीज खगोलज्ञ अब तक देख पाये हैं, वे हैं क्वासर। सन १९७१ में ओ-एच ४७१ नामक एक क्वासर का पता चला और उसके स्पेक्ट्रम का विश्लेषण आदि करके १९७३ में उसकी दूरी का पता लगाया गया। यह दूरी निकली १२,००० दश लक्ष प्रकाशवर्ष; अर्थात् यह क्वासर प्रकाश की गति के ९० प्रतिशत जितनी गति से हमसे परे हट रहा है।

इस ओ-एच ४७१ से अधिक दूरवर्ती किसी वस्तु को आंख से या किसी भी उपकरण की मदद से देख पाना असंभव है। अखबारों में छपा कि खगोलज्ञों ने ब्रह्मांड की सीमा देख ली है, तो उसका अर्थ बस यही था। खगोलज्ञों ने अत्यंत दूरवर्ती क्वासर देखा था, जो दृश्य ब्रह्मांड की लगभग सीमा पर था।

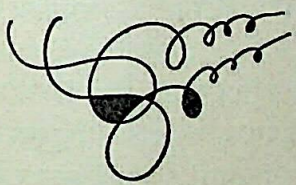

उनके विज्ञान में तो कहीं यह लिखा नहीं कि भगवान मानव-रूप भी धार सकता है; फिर भला वे इसे कैसे मान लें?

सुनो एक किस्सा। एक आदमी ने अपने दोस्त से कहा—'अभी-अभी मैं देखकर आ रहा हूं, एक इमारत महराकर गिर पड़ी।' उसका दोस्त अंग्रेजी पढ़ा हुआ था। बोला—'एक मिनिट ठहरो। अखबार में देख लूं।' उसने सारा अखबार पलट डाला। मगर इमारत ढहने की खबर उसमें कहीं भी नहीं थी। वह बोला—'मैं तुम्हारी बात कैसे मान लूं? जब अखबार में नहीं छपी है, तो जरूर झूठी होगी।'

—रामकृष्ण परमहंस

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो मित्र

स्वामी ओंकारानंद गिरि

बात पुराने समय की है। बंगाल के नदिया नामक स्थान में एक विद्यालय था। रघुनाथ और निमाई नामक दो विद्यार्थी वहां अध्ययन कर रहे थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। दोनों ही मेधावी छात्र थे।

गुरु की आज्ञा पाकर दोनों ने न्यायदर्शन पर अलग-अलग किताबें लिखीं। फिर एक दिन दोनों ने एक दूसरे की किताबें पढ़ीं।

रघुनाथ ने निमाई की किताब पढ़कर कहा—'भाई! मैं अपनी किताब किस मुंह से गुरुजी को दिखाऊंगा। तुम्हारी लेखन-शैली और विचार-शक्ति के सामने मेरी किताब तो अति तुच्छ है।'

और सचमुच निमाई का ग्रंथ बहुत सुंदर तथा सारगर्भित था। रघुनाथ का हृदय आत्म-ग्लानि से भर उठा। वह चिंतित रहने लगा।

गुरुजी को अपनी-अपनी किताबें दिखाने का दिन भी आ पहुंचा। प्रथम आने वाले को गुरु तथा विद्यालय के छात्रों के समक्ष संमानित किया जाना था। निमाई अपने ग्रंथ को एक चादर में लपेटे और कंधे पर डाले रघुनाथ के पास पहुंचा। रघुनाथ उदास बैठा हुआ था। निमाई ने कहा—'चलो रघुनाथ कहीं घूम आयें।'

'पर'.....रघुनाथ ने हिचकते हुए कहा।

'कुछ नहीं, उठो भी। आज नदी किनारे घूम आयें, जल्दी लौट आयेंगे।' और निमाई ने उसे हाथ पकड़कर उठा लिया। दोनों घूमते-घूमते नदी किनारे पहुंचे।

निमाई ने पूछा—'कुछ बोलते नहीं भैया!'

'कुछ भी नहीं! लेकिन तुम्हारी चादर में क्या बंधा है?' रघुनाथ ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए निमाई से पूछ लिया।

'देखना ही चाहते हो, तो लो,' कहते हुए निमाई ने अपना हस्तलिखित ग्रंथ रघुनाथ की ओर बढ़ा दिया।

'अरे! यह तो वही ग्रंथ है, जो आज हमें गुरुजी को देना है। पर इस तरह बार-बार दिखाकर मेरा दिल न जलाओ। मेरा उपहास न करो।' कहते-कहते रघुनाथ के नेत्र अश्रु-प्लावित हो उठे।

रघुनाथ के हाथ से अपना ग्रंथ लेते हुए निमाई बोला—'मुझे इतना नीच न समझो भैया!' और ग्रंथ को नदी में फेंक दिया।

'यह क्या किया निमाई तुमने? यह ग्रंथ तो तुम्हें संसार में महान नैयायिक बना देता।'

निमाई ने रघुनाथ को बांहों में भर लिया और कहा—'मेरे मित्र की खुशी से अधिक मूल्य इस ग्रंथ का नहीं था।'

उसी निमाई को आज संसार 'महाप्रभु चैतन्य' के नाम से जानता और पूजता है।

—आदिबद्री, जि. चमोली, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्रोह का अंत : ओझाओं की हार

—सरला गुप्त

सन १८५७ में फ्रांस के शासन से मुक्त होने के लिए अफ्रीका के अल्जीरियाई कबाइलियों ने विद्रोह किया था। रेगिस्तानों में रहने वाले ये कबाइली प्राय: अपढ़ और अंधविश्वासी थे। इन पर ओझाओं का बहुत प्रभुत्व था। ये उनकी दैवी शक्तियों एवं चमत्कारों में विश्वास करते थे। इनका यह भी विश्वास था कि ओझा अपनी शक्तियों से फ्रांसीसियों को निश्चय ही मार भगायेंगे और इसी कारण से उनके निर्देशन में ही कबाइलियों ने फ्रांसीसियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था।

फ्रांसीसी सरकार ने इस विद्रोह को सेना की सहायता से दबाने का पूरा प्रयत्न किया, परंतु सफलता हाथ नहीं लगी। अल्जीरियाई कबाइलियों का कोई निश्चित ठिकाना था नहीं, ये अचानक प्रकट होते थे और मार-काट करके रेगिस्तानी इलाकों में जा छिपते थे। फ्रांसीसियों ने उन ओझाओं का पर्दाफाश करके कबाइलियों की दृष्टि में उनका महत्त्व कम करने के लिए बहुत-कुछ किया। परंतु ओझाओं के चमत्कारों के प्रति इनकी आस्था इतनी अधिक थी कि फ्रांस सरकार के कई प्रयत्न बेकार रहे।

अंत में फ्रांस सरकार ने कांटे से कांटा निकालने का दृढ़ निश्चय किया। और एक जादूगर को अल्जीरिया भेजा, यह सिद्ध करने को कि फ्रांसीसियों की सैन्यशक्ति ही अधिक बढ़ी-चढ़ी नहीं है, बल्कि उनके जादूगरों की शक्ति भी अल्जीरियाई ओझाओं से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीं अधिक है।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए फ्रांस के ही महान जादूगर जां यूजीन राबर्ट हुदैं को चुना गया। इस ५२ वर्षीय विश्वप्रसिद्ध ऐंद्रजालिक ने खेल-तमाशों की दुनिया से अवकाश ग्रहण कर लिया था और आराम का जीवन गुजार रहा था। फ्रांस सरकार ने उसे हर प्रकार की सुविधा देने का वचन दिया और उससे आग्रह किया कि वह अपने देश के लिए यह कार्य जरूर करे।

हुदैं के सामने समस्या यह थी कि उसे अपने जादू के खेलों का नये रूप में उपयोग करना था। आम तौर पर जादू का तमाशा स्टेज पर अधिक सफलतापूर्वक किया जाता है, जहां कई उपकरण आदि दर्शकों से छिपाकर काम में लाये जाते हैं। लेकिन अल्जीरिया में कवाइलियों के बीच उसे बिना स्टेज के, खुले मैदान में अपने चमत्कारों का प्रदर्शन करना था। साथ ही यह जरूरी था कि मनोरंजन होने के बदले दर्शकों के मन में भय समा जाये।

काफी सोच-विचार के बाद हुदैं ने कुछ योजनाएं बनायीं। प्रायः जादूगर खेल दिखाते समय बीच-बीच में हंसी-मजाक की फुलझड़ियां भी छोड़ते हैं। इनके मूल में सबका ध्यान दूसरी ओर बंटाना होता है, ताकि जादूगर के हाथ की सफाई न पकड़ी जाये। साथ ही स्टेज के पीछे खड़े सहायक भी समझ जाते हैं कि स्टेज पर क्या हो रहा है और उन्हें किस प्रकार की सहायता देनी है।

राबर्ट हुदैं ने वांछित भय पैदा करने वाला प्रभाव उत्पन्न करने के लिए बातचीत की नयी शैली तैयार की। उसे यह मालूम था कि उसकी असफलता से फ्रांसीसियों की हार निश्चित है, क्योंकि तब कबाइलियों एवं उनके ओझाओं का मनोबल बहुत बढ़ जायेगा। अतः हर मामले पर सोच-विचार करके पूरी तरह तैयार हो वह अल्जीरिया को रवाना हुआ।

अल्जीरिया में उसने हल्के तथा भारी संदूक का खेल दिखाया। इसमें खुले मैदान में लकड़ी की चार पायों वाली एक चौकी रखी जाती थी। नीचे जमीन पर बैठे हुए कुछ कवाइली उन पायों के बीच से आर-पार देख सकते थे तथा उन्हें विश्वास हो जाता था कि इसमें किसी प्रकार का धोखा नहीं हो सकता। फिर लकड़ी का एक छोटा संदूक दर्शकों को दिखाकर उस चौकी पर रख दिया जाता। कोई भी आदमी संदूक को खोलकर, उठाकर देख सकता था कि वह कितना हल्का है।

फिर हुदैं मनुष्य की एक खोपड़ी उस संदूक में रख देता और हाथ उठाकर, आंखें चौड़ी करके गरजती हुई आवाज में कहा करता कि जिस मनुष्य की वह खोपड़ी है, उसकी आत्मा संदूक में आ जाये। उसके बाद वह वहां उपस्थित हर व्यक्ति से संदूक उठाने को कहता। उसका यह दावा था कि उसकी बुलायी हुई आत्मा के प्रभाव से संदूक इतना भारी हो गया है कि वह अपने स्थान से हिल भी नहीं सकता।

कई ताकतवर आदमी जोर लगाकर देखते, लेकिन संदूक हिलता तक नहीं। फिर हुदैं आत्मा को संदूक में से निकल जाने की आज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता। और संदूक इतना हल्का हो जाता कि एक बच्चा भी उसे उठा सकता था।

संदूक और आत्मा का यह खेल राबर्ट हुदैं के मस्तिष्क की उपज थी और खास तौर पर अल्जीरिया के कबाइलियों के लिए तैयार किया गया था। इस खेल ने सबके मन में फ्रांसीसी 'ओझा' का सिक्का जमा दिया।

हुदैं की यही असली चालाकी थी। उसने हर व्यक्ति को मौका दिया, सबने यह पाया कि फ्रांसीसी 'ओझा' की इच्छा के बिना संदूक को हिला सकना किसी के वश का नहीं था।

यह देखकर सब मान गये कि अल्जीरियाई ओझाओं के बारे में पहले सुनी गयी कहानियां अफवाहें थीं, या जिन्होंने उनके चमत्कारों को देखा था, उन्होंने अंधेरे स्थानों में लोबान-गुग्गुल के सुगंधित धुएं के आवरण में दूर से ही देखा था। उनकी तुलना में दिन के प्रकाश में सबके सामने रखा हुआ राबर्ट हुदैं का चमत्कारिक संदूक सबको अपनी शक्ति-परीक्षा के लिए ललकार रहा था।

आत्मा से भारी होने वाला संदूक का यह खेल सचमुच बहुत सरल था। लकड़ी के डब्बे की पेंदी दोहरी थी, जिसके बीच में लोहे की चादर लगी थी। चौकी भी दोहरी थी और इसके भीतर ही विद्युत्-चुंबक लगा हुआ था। जैसा कि इसे अब हाई स्कूल का विज्ञान का विद्यार्थी भी जानता है, कच्चे लोहे के टुकड़े के चारों ओर तांबे का तार लपेटकर यदि तार में विद्युत्-धारा प्रवाहित की जाये, तो कच्चा लोहा चुंबक बन जाता है। यह विद्युत्-चुंबक कहलाता है। यदि धारा बंद कर दें, तो कच्चा लोहा चुंबक नहीं रह जाता, वह साधारण लोहा हो जाता है।

राबर्ट हुदैं के खेल की चौकी के एक पाये से होकर विद्युत्-चुंबक के तार जमीन के भीतर ले जाये जाते थे, और दूर रखी हुई बैटरी से जुड़े होते थे। वहीं बैठा सहायक जब स्विच को दबाता था, तब तार में विद्युत्-धारा बहती थी। इससे शक्तिशाली चुंबकत्व पैदा हो जाता था, और संदूक की पेंदी में छिपे लोहे को आकर्षित करता था। फलस्वरूप संदूक भारी लगने लगता था।

राबर्ट हुदैं ने बंदूक की गोली को मुंह में पकड़ने का एक खेल भी दिखाया। उसने बंदूक की एक गोली पर कबाइलियों से कोई चिन्ह बना देने को कहा। एक ओझा ने मरण-कारक तांत्रिक चिन्ह बना दिया।

हुदैं ने वह गोली सबको दिखायी और फिर बंदूक में भरकर एक आदमी को दे दी। वह खुद कुछ दूरी पर दीवार के सहारे खड़ा हो गया और उस आदमी से कहा कि वह निशाना साधकर उसे गोली मार दे। धड़ाम की आवाज हुई और सबको लगा कि जादूगर मर गया। परंतु वह तो वहीं मुस्कराता और सीसे का छर्रा दांतों के बीच पकड़े खड़ा था।

इसका रहस्य भी बहुत सरल है। उसने बंदूक में गोली भरते समय हाथ की सफाई से एक नकली गोली बंदूक में डाल दी थी और चिन्हांकित छर्रा मुंह में डालकर दीवार की ओर चला गया था।

हुदैं ने अदृश्य शत्रु को मारने का भी खेल दिखाया। अल्जीरियाई ओझाओं का दावा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि वे अपनी इच्छा से कभी भी अदृश्य हो सकते हैं। हुदैं ने यह कहा कि वह अदृश्य ओझाओं को भी मार सकता है।

अपने एक खेल के प्रदर्शन के दौरान अचानक वह रुक गया और उसने चेतावनी दी कि मेरे खेल को एक ओझा अदृश्य होकर देख रहा है। उसने ओझा को तुरंत वहां से भाग जाने की आज्ञा दी और यह कहा कि नहीं जाने पर वह उसे गोली मार देगा।

कुछ देर के बाद उसने कहा कि अदृश्य ओझा अब भी यहां है और उसने झट से बगल में रखी बंदूक उठाकर सबके सामने उसमें गोली डाली और सामने की खाली दीवार की ओर फायर कर दिया। दीवार के पास से आती चीख की आवाज को सबने सुना और देखा कि दीवार पर खून का लाल धब्बा है। अब सबको विश्वास हो गया कि यह फ्रांसीसी ओझा उनके ओझाओं से अधिक शक्तिशाली है।

इस खेल में हुदैं ने एक नकली गोली का फायर किया था, जिसके आगे वाले भाग में सीसे के छर्रे के बजाय मोम और ग्रेफाइट की बनी खोखली टोपी लगी थी। इस टोपी में भेड़ का थोड़ा-सा खून भर दिया गया था। दीवार से टकराते ही मोम की टोपी फट गयी और खून दीवार पर फैल गया था। चीख मारने वाला हुदैं का ही एक सहायक था, जो दीवार के पास बैठा था। भौंचक्के कबाइलियों को केवल इतना ही पता लगा कि चीख दीवार के पास से ही आयी थी!

राबर्ट हुदैं का प्रदर्शन बहुत सफल रहा और उसने कबाइलियों के मन में फ्रांसीसियों का प्रभुत्व जमा दिया और इसके बाद वर्षों तक फ्रांसीसियों के विरुद्ध विद्रोह करने का उनका साहस नहीं हुआ।

—बी. ६७, रवींद्रपुरी, वाराणसी-५

*

प्रसिद्ध अमरीकी जादूगर हूडिनी (१८७४–१९२६) का मशहूर करतब था तालाबंद संदूक में से गायब हो जाना। दर्शक प्रायः शक करते कि वह कोई चाबी छिपाकर अपने पास रखता है। मगर हूडिनी दर्शकों को चुनौती देता कि मेरी जामातलाशी ले लो। दर्शक उसके कपड़े, बाल, मुंह सबमें चाबी ढूंढ़ते और चाबी उन्हें कहीं न मिलती। उसके गले में तो झांककर वे देख नहीं सकते थे; और हूडिनी गले में ही एक छोटी-सी चाबी छिपाया करता था।

तरुणाई के दिनों में ही उसने भोजन-नलिका में छोटी-छोटी जीजें छिपाना सीख लिया था। लंबे तागे से बंधा एक छोटा आलू गले में लटकाकर उसने इसका अभ्यास किया था। पर 'न्यूट्रिशन टुडे' के संपादक का कहना है—'हम और आप ऐसा नहीं कर सकते; क्योंकि इससे हमारा दम घुट जायेगा और प्राणों से हाथ धोने की नौबत भी आ सकती है। गले में कोई विजातीय द्रव्य अटक जाये, तो फौरन दम घुटता है और जोर की खांसी उठती है।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठों की महक

वर्षा ऋतु, बगीचे का कुआं लबालब भरा हुआ। जगत की ऊंचाई डेढ़-दो फुट रह गयी है। ढलती सांझ। मेरा छह वर्षीय पुत्र और चार वर्षीय पुत्री बाग में तितली का पीछा करते हुए कुएं के समीप पहुंच गये। पुत्र जगत पर खड़ा हो जाता है। उसके पैर फिसल जाते हैं। पानी के घूंट पर घूंट पीते हुए वह हाथ-पैर मारने लगता है। दुर्घटना की आकस्मिकता और भयानकता से पुत्री का दिल कांप जाता है। रोती हुई वह घर की ओर दौड़ती है और चिल्लाकर कहती है—'मां! भैया कुएं में डूब गया है.....' सुनकर उसकी मां के होश-हवास गायब.....घर में उस वक्त कोई पुरुष नहीं। लगभग सत्तर वर्षीय दीदी घर में है। सुनते ही वह कुएं की ओर लपकती है और एक पल की भी देरी न कर कुएं में उतर जाती है। और बचा लेती है लड़के को, जिसका शेष शरीर पानी में डूब चुका था, और सिर्फ उंगलियां ऊपर से दिखाई दे रही थीं।

प्राथमिक उपचार से पुत्र के स्वस्थ होने, पुत्री को असीमित प्यार व दीदी को अनेक धन्यवाद देने के पश्चात जब सोचने की फुरसत मिलती है, अपने आपसे पूछता हूं—कहां से आया दीदी के जर्जर-देहपिंड में इतना साहस और चार वर्षीय भोली-भाली बालिका में इतनी गहरी समझ! सोचता हूं, ये मृत्यु की कालिमा में छिपी जीवन-प्रेरणाएं हैं, या आत्माओं में प्रकाशित ईश्वरीय शक्ति? इसे महज संयोग कहना उचक्कापन प्रतीत होता है।

—सुरेंद्र प्रबुद्ध, तोषगांव (म. प्र.)

० ० ०

पीढ़ी का अंतर

मेरा छोटा भाई अपने एक सहपाठी के साथ दिल्ली से एशिया मेला देखकर लौटते

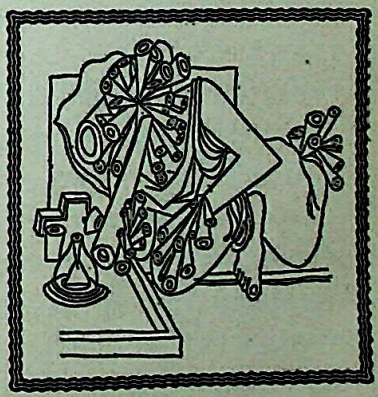

रेखांकन : जां कोक्तू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय आगरा स्टेशन पर एक बूढ़े खोमचे वाले की दुकान पर गया और खोमचे वाले की ओर दो का नोट बढ़ाते हुए कुछ चीजों का आर्डर देकर बोला—जल्दी दे दो। ट्रेन छूट जायेगी। दुकानदार ने एक पैकेट के साथ आठ रुपये भी वापस किये। जल्दी में शायद वह दो के नोट को दस का समझ बैठा था। यह ठहरा शरारती छात्र। तुरंत आठ रुपये जेब में डालकर अपने डिब्बे में आकर बैठ गया और लगा हंस-हंसकर अपने पराक्रम की कथा साथी छात्रों को सुनाने। तभी उसने देखा कि वही खोमचे वाला बूढ़ा लंगड़ाता हुआ तेजी से उसी डिब्बे की ओर आ रहा है। सभी छात्र चिंतित हो उठे। और मन में प्रार्थना करने लगे कि गाड़ी शीघ्र चल पड़े। किंतु लंगड़ा बूढ़ा डिब्बे के पास पहुंच गया। खिड़की में से झांककर मेरे भाई की ओर इशारा करके हांफते हुए बोला—'भैया, लो अपना कैमरा। जल्दी में तुम इसे दुकान पर ही भूल आये थे। लो रखो। दौड़ता-दौड़ता आया हूं, सोचा अगर ट्रेन चल दी तो बहुत नुक्सान में पड़ जाओगे।'

वृद्ध का चेहरा विजय की मुस्कान से चमक रहा था और मेरा भाई शर्म से सिर झुकाये कनखियों से उसे देख रहा था। कैमरा उसने ले लिया। मगर अब वह मात खाये व्यक्ति-जैसा अनुभव कर रहा था। वृद्ध खोमचे वाला इत्मीनान से अपनी दुकान की ओर चला जा रहा था और इधर ट्रेन भी धीमी गति से प्लेटफार्म से सरक रही थी।

—शीला मिश्रा, मंडला

सेर का सवा सेर

उन दिनों रेजगारी की कमी थी। मैं बस में सफर कर रहा था। एक स्टाप पर बस रुकते ही कंडक्टर चिल्ला पड़ा—'जिनके पास खुले पैसे हों, वही बस में चढ़ें।'

कई मुसाफिर चढ़े। उनमें से एक मेरे पड़ोस वाली जगह पर विराजमान हुए। जब कंडक्टर उनके पास आया, उन्होंने उसकी ओर नोट बढ़ाया। कंडक्टर ने नोट लेने से साफ इन्कार कर दिया और कहा—'मैंने पहले ही कहा था कि जिनके पास खुले पैसे हों, वही बस में चढ़ें।' तब उन सज्जन ने मुस्कराते हुए पूछा—'क्या आपने सबसे खुले पैसे लिये हैं?' कंडक्टर ने अपना कैशबैग दिखाते हुए कहा—'हां, यह देखिये मेरा कैश-बैग, एक भी नोट नहीं, सब खुले पैसे हैं।'

'तो मेरा यह नोट लीजिये और मुझे खुले पैसे दीजिये। वर्ना बस को पुलिस स्टेशन लेकर चलिये। मैं वकील हूं। रेजगारी होते हुए भी न देना और उसके दुरुपयोग करने के जुर्म में आप पर मैं मुकद्दमा दायर कर सकता हूं।' उनकी ठंडी आवाज सुनकर कंडक्टर ने चुपचाप नोट अपने कैशबैग में डाली.....उन्हें टिकट व खुले पैसे दे दिये।

—शब्बीर अहमद दाउद, पूना

० ० ०

सूट का खोखलापन

आठ साल पहले माघ की एक सुबह मैं कलकत्ता में चित्तरंजन एवेन्यू के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौराहे पर सड़क पार करने के लिए हरी बत्ती का इंतजार कर रहा था। मेरी बगल में ही एक सिक्ख परिवार दो साल का बच्चा लिये सड़क पार करने को आतुर खड़ा था। एक-दो बार जब मैंने नजर डाली, वह सिक्ख औरत, जो अपने कंधे पर बीमार बच्चे को ढो रही थी, मुझे ही घूरती हुई नजर आयी। सड़क पार करते ही पीछे से उस अधेड़ औरत ने 'ओ साहब' कहकर आवाज लगायी। मैंने ध्यान नहीं दिया; क्योंकि मुझे यह खूब याद था कि मैं कलकत्ता में हूं। तभी वह लंबा-चौड़ा सिक्ख भी तेज चलने लगा और जोर-जोर से पुकारने लगा—'भाई साहब सुनिये.... भाई साहब सुनिये,' कुछ दूर आगे बढ़कर मैं रुक गया। रुकते ही दोनों ने मुझे घेर लिया और कहने लगे—'भाई साहब, हम आपसे भिक्षा नहीं मांग रहे हैं। केवल इस बीमार बच्चे को एक पावरोटी और दूध दिला दें। हमें कुछ भी नहीं चाहिये.....यह बच्चा दो दिन से बीमार और भूखा है।'

मैंने कहा—'मेरे पास अभी पैसे नहीं हैं।'

औरत बोली—'होटल में नोट का छुट्टा मिल जायेगा। भगवान के लिए कृपया मेरे बच्चे को बचाइये।'

मैंने कहा—'मेरे पास न तो अभी नोट है और न छुट्टा पैसा।'

इस पर आंसू गिराते हुए बोली—'बाबूजी, मैं कैसे मान सकती हूं कि आपके पास पैसा नहीं है। आप पांच सौ रुपये का तो सूट पहने हुए हैं, और पास में पैसा नहीं होगा!'

उफ्! यह सुनते ही मेरा तो सारा शरीर कांप उठा। भला मैं उसे कैसे समझाता कि सचमुच इस समय मेरे पास पैसे नहीं हैं। बटुआ खोलकर दिखा भी नहीं सकता था। क्योंकि इस बीच लोग जमा हो गये थे, सबके सामने मेरा दिवालियापन सिद्ध होता। मैं अपना पर्स दूसरे सूट की पाकेट में भूल आया था। मुझे अपने आप पर ग्लानि भी हो रही थी और झुंझलाहट भी।

जब वह औरत मेरे पैरों पर गिरकर प्रार्थना करने लगी, तो मैंने उसे अपने साथ कुछ दूर चलने के लिए कहा और फिर वहां से कुछ ही दूर चलकर सन्मार्ग दैनिक के दफ्तर में अपने एक मित्र से दो रुपये लेकर उसे दिये; तब कहीं जाकर मुक्ति मिली। तब से बाहर निकलते समय हमेशा कम से कम एक रुपया जेब में रख लेता हूं कि पता नहीं कब ऐसी ही स्थिति फिर आ जाये।

—ज्योतिनारायण भारती,
मुजफ्फरपुर, बिहार

*

एक दुकानदार ने अपने बेटे को पड़ोस के गांव में भेजकर एक औरत के यहां से एक किलो घी मंगवाया। अगले दिन वह खुद घी लेकर उस औरत के पास गया और बोला—'यह घी तो वजन में कम है।'

'कम कैसे हो सकता है लाला। कल तुम्हारी दुकान से जो एक किलो चीनी मंगवायी थी, उसी से तो तौलकर भेजा था।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान्हजी सिंह तोमर

दस वर्षों की बारिश

बस मुंहअंधेरे पहुंची थी। ठंड होने के बावजूद बस-स्टैंड की कुछ दुकानें खुल गयी थीं। एक दुकान की भट्ठी पर चाय की केतली चढ़ी थी और एक छोकरा नीचे बैठा भट्ठी में हवा दे रहा था। धुआं ऊपर नीम की डालियों में फैलने लगा था। पहले स्टैंड पर टमटम वाले होते थे, लेकिन आज अभी उनका पता नहीं था। थोड़ी देर तक वह हाथ में अटैची थामे यों ही सोचता रहा और फिर एक बंद दुकान की खाली बेंच पर बैठ गया। मन ही मन तय किया कि अगर कोई टमटम वाला आ जाये, तो चल दूंगा। या फिर गांव दूर ही कितना है, साफ होने पर पैदल भी जाया जा सकता है।

उसने बगल की दुकान से चाय मांगी। जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर माचिस के लिए दूसरी जेब टटोलने लगा। फिर उसे याद आया कि रात को दो बजे के करीब जब उसकी आंखें झपकने लगी थीं, तो एक-एक सिगरेट जलाने के लिए उसने आठ-आठ तीलियां जला डाली थीं। वह उठकर सिगरेट जलाने के लिए भट्ठी के पास चला गया। सिगरेट जलायी और वहां खड़े-खड़े चाय पीने लगा। फिर चाय वाले से पूछा—'क्यों भाई, पहले यहां टमटम वाले रहते थे, अब नहीं रहते क्या?'

चाय वाला भट्ठी में कोयले डालता रहा और उठकर हाथ धोने चला गया। आने के बाद बहुत आराम से बोला—'आजकल टमटम पर चढ़ता कौन है बाबू साहब? लगता है कुछ दिनों बाद टमटम की हालत बैलगाड़ी-जैसी हो जायेगी और खलिहान से भूसा ढोने के अलावा कोई दूसरा काम नहीं होगा।'

दुकानदार की बात सुनकर उसे हंसी आ गयी। भूसा ढोने का काम तो अब बस से भी होने लगा है, ट्रक और ट्रैक्टर तो यह काम बहुत पहले से करते आ रहे हैं। फिर उसने पूछा—'कहीं जाने के लिए कोई सवारी नहीं मिलेगी?'

'थोड़ी देर में रिक्शे वाले आये ही जाते हैं। फिर साफ होते-होते टेंपू भी आ जायेगा। सुना है, अभी और दो टेंपू आने वाले हैं।'

चाय वाला केतली में पानी उड़ेलने लगा था। फिर चाय की पत्ती डालकर बांस की खपाची से घोंटते हुए पूछा—'आप जायेंगे कहां बाबूजी?'

'कोई ज्यादा दूर नहीं। बस सिरीपुर तक।'

'कोई रिश्तेदारी वगैरह पड़ती है?'

'नहीं भाई, मेरा घर ह वहां।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बीच दो रिक्शे वाले एक ही साथ आये थे और दुकान के आगे रिक्शे रोककर भट्ठी में हाथ सेंकने लगे। दुकानदार ने पहले उन्हें चाय दी और फिर भट्ठी के पास पड़ी राख को उठाने लगा। राख फेंकने के बाद उसी ने डेढ़ रुपये में रिक्शा तय कर दिया।

जहां तक सड़क बराबर थी, वहां तक रिक्शा बहुत तेज चला और वह बहुत जल्दी 'शीला कुंवर उच्च विद्यालय' के अहाते के पास पहुंच गया। विद्यार्थी जीवन की बहुत सारी स्मृतियां ताजी हो आयीं। इसी स्कूल से उसने मैट्रिक पास किया था। उसके आगे पढ़ने की कोई आशा नहीं थी, लेकिन भैया ने खून-पसीना एक करके उसे कालेज भेजा।

भैया के परिश्रम को वह कभी भूल नहीं सकता। मेहनत-मजदूरी तो नहीं करनी पड़ी थी उन्हें, लेकिन पिताजी की मृत्यु के बाद पूरे कुनबे का बोझ उन्हीं के सिर पर आ पड़ा था, जिसे संभालने के लिए उन्हें कितनी बार खेत बंधक रखने पड़े और अंत में बेचने भी पड़े। तीन-तीन बहनों की शादी का भार भी उन्हीं खेतों के सहारे संभला था। फिर भैया की शादी हुई, और उसकी पढ़ाई के साथ ही घर का सारा खर्च भैया ने संभाल लिया था।

रिक्शा उसे नदी के इस पार ही छोड़ देना पड़ा, क्योंकि नदी का पुल बीच से टूट गया था, पानी नदी के पेट में चला गया था। नदी पार करने के बाद वह हाथ में जूते उठाये कगार पर चढ़ गया। उस पार बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था, जिसकी बहुत-सी डालियां जमीन में सट गयी थीं। पहले इसी पीपल की डालियों पर गांव के लड़कों के साथ वह 'ओल्हा पाती' खेला करता था। पीपल के पास घास में उसने पैर रगड़े और जते पहन-कर डाली पर सुस्ताने बैठ गया। सामने गांव

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'को र स'

पत्र-व्यवहार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला भारत का सर्वोत्तम औद्योगिक प्रतिष्ठान

कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप, स्टेंसिल्स, डूप्लिकेटिंग स्याही इत्यादि के निर्माता

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, सदाबहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियों पर चाँदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

सदाबहार ताक़त के लिए
(पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग अलग टिकियाँ)
हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड लंदन-बर्लिन का उत्पादन
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD., 12 Gunbow Street, P.O. Box No 396, BOMBAY-1.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भैया के लौटने के पहले वह नदी की ओर चला गया। पहले उसका विचार कुएं पर स्नान करने का था। लेकिन शौच और स्नान से एक साथ ही निवटने के लिए नदी की ओर जाना ही ठीक लगा था उसे।

उसके लौटकर आने तक भैया आ गये थे। पहले से कुछ मोटे हो गये थे वे। उन्होंने कान पर जनेऊ चढ़ा रखा था और जमीन पर पड़ी ईंटें सजा रहे थे। उसने झुककर उनके पैर छुए, तो भैया के चेहरे पर खुशी छलक आयी।

'सुनाओ, क़ैसे हो ?' भैया ने पूछा।

'चल ही रहा है किसी तरह।'

'हां भई, तुम लोग पढ़े-लिखे मनई हो। घुमा-फिराकर बात करने का ढंग तो मालूम होगा ही।'

भैया झुककर ईंट के टुकड़े उठाने लगे। पहले तो उसने सोचा कि अपनी स्थिति के बारे में भैया को इसी समय बता दे, लेकिन यह सोचकर चुप रहा कि बाद में ही कहना ठीक होगा।

कपड़े बदलने के लिए घर में घुसा, तो मुहल्ले की सोना काकी से भेंट हो गयी। सिर के बाल एकदम सफेद हो जाने से वे पहचान में ही नहीं आ रही थीं। भाभी के साथ आंगन के कोने में बैठी वे किसी गुप्त मंत्रणा में शामिल थीं। काकी को नमस्कार किया, तो उन्होंने सात बेटे होने का आशीर्वाद दे दिया।

कपड़े बदलते समय काकी और भाभी की बात उसके कानों तक पहुंची। वे लोग शायद सुनाकर ही बोल रही थीं।

'मेहरिया को साथ में नहीं लाया ? तुमने बहू के बारे में नहीं पूछा ?'

'कैसी बहू काकी ? जिस-तिस को घर में बैठा लेने से वह बहू तो नहीं हो जायेगी न ?'

वह चुपचाप सुनता रहा। उसे भाभी के रूखेपन का कारण मालूम हो गया। जमाना इतना आगे जा चुका है, लेकिन भाभी और भैया अभी सोलहवीं सदी में ही हैं।

खाने के लिए वह भैया के साथ ही बैठा। भाभी का चेहरा तो अभी तक तना ही हुआ था। खाना परोसकर वे चुपचाप बैठ गयीं और लड़के को दूध पिलाने लगीं। खाते-खाते भैया ने पूछ लिया—'अपने बारे में बहुत दिनों से कोई खबर नहीं दी तुमने ?'

'एक न एक झंझट लगी ही रहती है भैया। पिछले साल बच्ची को टाइफाइड हो गया था, वह मर गयी और अब.....।' उसने बात अधूरी ही छोड़ दी। पहले यही सोचा था कि खाने के समय भैया से अपनी मुसीबत की बात जरूर कहूंगा। लेकिन भाभी का रुख देखने के बाद उसकी हिम्मत पस्त होने लगी थी। फिर भी कुछ हिम्मत की उसने।

'भैया, मुझे कुछ रुपयों की जरूरत है।'

भैया ने उसकी ओर गर्दन घुमायी—'तुम्हें रुपयों की जरूरत है ? और तुम्हारी कमाई का क्या बनता है ? तुम्हारे जैसे लोगों ने तो कमाकर कोठी खड़ी कर दी, और तुम.... दस वर्षों से तुम्हारी कमाई की कौन कहे, खुद तुम्हारी खबर नहीं मिलती।'

थोड़ी देर तक वह चुप रहा; लेकिन जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिंटास - RIN. 4-694 HI(R)

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह ही दिया है, तो फिर बात तो उसे साफ करनी ही पड़ेगी। बोला—'घरवाली करीब दो वर्षों से यमराज के साथ लड़ रही है। डाक्टर ने कहा है कि अगर आपरेशन नहीं हुआ तो वह बचेगी नहीं।

भैया का चेहरा एकदम सख्त हो गया। और उसी सख्ती में उन्होंने कहा—'उसका नाम मेरे सामने मत लो। अच्छा था वह...।' और उनके ओंठ फड़फड़ाकर रह गये।

इसके बाद किसी ने ठीक से खाया नहीं। खाने के बाद भैया फिर ईंटें सजाने लगे और वह गांव में निकल गया। जो लोग मिलते गये, उनसे नमस्ते, दुआ-सलाम होती गयी। फिर उसे याद आया कि हाई स्कूल में पढ़ते समय जहां ताश की बैठक जमती थी, वहां कुछ लोग ऐसे जरूर मिलेंगे, जिनसे आपसी सुख-दुःख की बात हो सकती है। लेकिन वहां पहुंचने पर पता चला कि वह बरामदा गिर गया है।

कुछ आगे बढ़ा तो देखा कि जमुना सिंह के दरवाजे पर नीम की छाया में बैठक जमी है। जमुना सिंह हाई स्कूल में उसका सहपाठी था। जमुना सिंह ने स्वागत किया—'आओ भाई सूरज! बहुत दिनों के बाद गांव याद आया? शादी का तो भोज-भात भी अभी तक नहीं दिया।'

'बस! जन्मभूमि है न! दुःख-तकलीफ में तो आना ही पड़ता है।' कहने के बाद उसे लगा कि दुःख-तकलीफ की बात वहां नहीं कहनी चाहिये थी। लोगों की न जाने क्या प्रतिक्रिया हो। फिर उसी ने पूछा—'तुम्हारा कैसा चल रहा है?'

'अपने राम अभी तक गांव में ही पड़े हैं। दाल-रोटी चल जाती है; और क्या चाहिये! तुम्हें तो अच्छे पैसे मिल जाते होंगे सूरज?'

'गांव में रहने वाले यही तो सोचते हैं। शहर में जो रहते हैं, उन्हें ही पता चलता है। इस महंगाई में तो महीना पूरा करना भी बहुत मुश्किल है।'

'लगता है, बड़ी गहरी तकलीफ है तुम्हें।' जमुना सिंह ने सहानुभूति जतायी।

थोड़ी देर तक वह सोचता रहा कि जमुना सिंह से सारी बातें कहनी चाहिये या नहीं। फिर बोला—'बात ऐसी है जमुना कि इस समय मेरी पत्नी अस्पताल में अंतिम सांसें गिन रही है। उसे कैन्सर हो गया है। आपरेशन के लिए पैसे चाहिये और मेरे पास पैसे ह नहीं।'

'च-च-च!.....जमाना बदला तो न जाने कौन-कौन-सी बीमारियां साथ लेता आया। हां भाई, हालत नाजुक है। लेकिन मनोहर सिंह से पैसे क्यों नहीं मांग लेते? आखिर वे तुम्हारे बड़े भाई हैं।'

'तुम्हें कुछ नहीं मालूम! भैया इस शादी से खुश नहीं हैं। मैंने तो बात चलायी थी। लेकिन शादी के बाद घर से रिश्ता भी तो टूट गया है।'

'तो इसमें चिंता करने की क्या बात है? आखिर तुम्हारा भी हिस्सा है। रिश्ता जब रहता है, तब तो आदमी सोचता भी है, लेकिन टूट जाने के बाद भला क्या सोचना?'

वह सोचने लगा कि जमुना सिंह से अस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीत

पीठ दे ही गयी जब
क्षितिज की दिशा
आवाज क्यों दूं उसे
फिर उसी के लिए
मैं हरफ क्यों घड़ूं ?
सवालों के कपड़े पहन
सड़क ही खड़ी हो गयी सामने
उसी पर चरण खोज के
क्यों उठाऊं-धरूं
ठहराव से क्यों बंधा ही रहूं ?
सीढ़ियों से उतरकर
कुहरना ही हो
जब धरम सूर्य का
फिर उजालों से मिलते अंधेरों की
किससे शिकायत करूं
क्यों इसी धूप से आंख खोलूं-भरूं ?
हाथ पर हाथ ही जब
सुलगता हुआ
एक चुप रख गये
इसी आग से
और कितनी उम्र सिर्फ झुलसा करूं ?
किसी और शुरूआत की
एषणा ही तपाया करूं !

—हरीश भादानी
१ टायर टैरेस, २०५/२०७,
लैमिंग्टन रोड, बंबई—७

लियत बताकर उसने गलती तो नहीं करदी। जमुना हक-हिस्से की बात करने लगा है। लेकिन भैया के आगे वह अपना मुंह भी खोल सकेगा क्या ?

'भैया से मैं हिस्सा कैसे मांग सकता हूं! उन्होंने मेरे लिए क्या नहीं किया ?.....नहीं जमुना! यह काम मुझसे नहीं होगा। क्या कोई और उपाय नहीं है कि मुझे पैसे भी मिल जायें और भैया को तकलीफ भी न हो ?'

'कहो जोधा, और क्या उपाय हो सकता है?' जोधा सिंह जो अभी तक चुपचाप सुनता आ रहा था, अचानक बोल पड़ा—'माट्साब, इसमें दिमाग खपाने की क्या बात है? आपके पास रुपये की क्या कमी है। बेचारा फेरे में है। आप रुपये दे दीजिये। सूरज को तो अब गांव में आना है नहीं। अपना हिस्सा लिख देगा। काम भी हो जायेगा और मनोहर सिंह को तकलीफ भी नहीं होगी।'

जमुना सिंह सूरज के चेहरे को थोड़ी देर तक पढ़ता रहा। वह चुपचाप धरती की ओर देख रहा था। फिर जमुना सिंह बोला—'यह तो सूरज पर निर्भर है।'

'लेकिन इससे भैया को तकलीफ होगी।'

'अरे भाई, इसमें तकलीफ की कोई बात नहीं है। .....तुम्हें शायद पता नहीं! अपने धेआन काका इस समय गांव के मुखिया हैं। उनसे सार्टीफिकेट ले लेंगे—मामला साफ। कल मैं रुपये दे दूंगा। इधर से जाते वक्त शहर में रजिस्ट्री करा देना।'

सूरज ने कुछ कहा नहीं।

जोधा बार-बार एक ही बात पर जोर दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था, यह काम जरूर हो जाना चाहिये। चलने के समय मुरारी भी उसी के साथ चला। लाला वाली गली में पहुंचने के साथ ही मुरारी ने कहा—'देखो सूरज, जमुनवा और जोधवा के फेरे में मत पड़ना। मुखिया से मिल-मिलाकर कितने दुःखी लोगों की जमीन लिखवा ली जमुना ने। एक बात जानते हो सूरज! तुम्हारे चलते सुरसतिया की शादी कटते-कटते बची।'

'मेरे चलते?' झटका-सा लगा उसे।

'हां, जहां शादी ठीक हुई थी, उन्हें पता चल गया कि तुमने किसी लड़की को घर में बैठा लिया है। बस उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। बहुत हाथ-पांव जोड़ने के बाद लड़के का बाप दस हजार रुपये पर तैयार हुआ है। मनोहर सिंह उसी के लिए एक-एक पैसा जोड़ रहे हैं।'

घर पहुंचा, तो भैया दरवाजे पर ही मिले। उस समय वे राज-मिस्त्री से बात कर रहे थे। शायद दीवार की जुड़ाई शुरू होने वाली थी।

रात को खाते समय उसने फिर बात उठायी—'भैया, उमा को कैन्सर हो गया है। अगर ठीक इलाज नहीं हुआ, तो बचने की कोई उम्मीद नहीं।'

'तो मैं क्या करूं? तुम देख ही रहे हो। आगे की दीवार अगर नहीं जोड़ी गयी, तो घर का कोई भरोसा नहीं।'

'बड़ी उम्मीदें लेकर मैं आया था। सब भरोसा टूट जाने पर घर का ही भरोसा होता है न भैया!'

'हां, बहुत बड़ा भरोसा किया था मैंने भी। लेकिन खानदान की इज्जत-आबरू का भी खयाल नहीं रहा तुम्हें!'

इसके बाद कोई बात नहीं हो सकी। भैया खा-पीकर गांव में निकल गये। वह बाहर बरामदे में सोने की तैयारी करने लगा। बगल में ही वह बड़ा कमरा था, जिसमें भाभी बच्चों के साथ सोती थीं। बड़ी रात गये तक उसे नींद नहीं आयी। चलते वक्त उमा ने कहा था—'जाने से कोई फायदा नहीं होगा। मैं आज नहीं तो कल इस दुनिया को छोड़ ही जाऊंगी। बेकार ही पैसों के लिए परेशान होने से क्या फायदा!'

बहुत देर के बाद भैया आये। भाभी तो एकदम झगड़े के मूड में आ गयी थीं। आने के साथ ही बरस पड़ीं—'देखो जी, खेत बेच-बेचकर तुमने भाई को पैसे दिये। भाई जब कमाने लगा, तो तुम्हें ठेंगा तो दिखा ही दिया, मुंह पर कालिख भी पोत दी, जिसके चलते जवान बेटी घर में बैठी हुई है। अगर अब तुमने पैसे दिये तो देख लेना।'

'नहीं। कुछ भी हो, भाई समझकर ही तो यहां आया है। वह नालायक हो गया तो मैं भी हो जाऊं? कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। आखिर उसका भी हिस्सा है।'

'हां-हां बेच दो; जो बचा है, सब बेच दो। उसके बाद बच्चों को लेकर भीख मांगना।'

'चुप भी रहोगी! एक दिन के लिए आया है, उसे पूरा नाटक दिखाने की क्या जरूरत!'

उसके बाद भाभी खुद ही बड़बड़ाती रहीं। भैया दालान के बाहर टूटी दीवार के पास पुआल पर सो गये थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलगांव मिल्स का कपड़ा हर नागरिक के लिये, हर प्रसंग पर उपलब्ध है।

आकर्षक रंगों की पॉपलीन • बढ़िया किस्म की शर्टिंग • दफ्तर में पहनने के लिए कोटिंग्ज़ पेन्टों के लिए टिकाऊ ड्रिल्स • हर किस्म की धोतियां • सुन्दरियों की मनमोहक साड़ियां इस के अतिरिक्त लांग क्लॉथ और मारकीन्स

अब भी आप सूती वस्त्र खरीदें तो यह ट्रेडमार्क देख लें

पुलगांव
कॉटन मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाहरसिंह

घनश्यामदास बिरला

नाहरसिंह एक छैल-छबीला राजपूत था। जवानी की उमंग में जब वह बन-ठनकर दुपहरिया की चहलकदमी करने गांव की गलियों में से गुजरता, तो यही समझता था कि उसके जैसा और कोई बांका जवान दुनिया छानने पर भी मिलना दुर्लभ है। हालांकि खूबसूरती से वह कोसों दूर था, बल्कि यह कहना चाहिये कि कुछ बदसूरती की तरफ ही लुढ़क थी, पर गर्व उसे इतना था कि अपने-आपको बेनजीर मानता था। खूबसूरती की उसमें जो कमी थी, उसे वह सजावट के ढक्कन से ढांककर पूरा करने की कोशिश करता रहता था।

खासी सफेद दो छिरंगेदार धोती, कलीदार कोट, सिर पर सांगानेरी साफा, पांव में बूटेदार चोबकारी का जूता, हाथ में एक अच्छी-सी बरछी, कंधे पर सांग। इस सजावट के साथ नाहरसिंह दुपहरी में गलियों में अपनी शान और सजावट का प्रदर्शन करता हुआ जब टहलने निकलता, तो मानो कहता था—**कोऽन्योस्ति सदृशो मया ?**

उस जमाने के निकम्मे आवारों का यही क्रम था कि सुबह को खाकर सो जाना और दुपहरी में उठकर चहलकदमी के लिए निकल पड़ना। यह कहना चाहिये कि ऐसे उल्लुओं की सुबह दुपहरी के बाद ही शुरू होती थी। नाहरसिंह भी उन्हीं आवारों में से एक था।

नाहरसिंह दाढ़ी रखता था। सवेरे खा-पीकर दाढ़ी पर जाडिया (कपड़े का टुकड़ा जैसा कि सिक्ख भी बांधते हैं) और मूंछ-पाटी कसकर खटिया पर सो रहता और दिनढले जाडिया खोलता था। जब जाडिया खोलता, तो दाढ़ी के बाल नियमबद्ध रूप से चारों ओर बिखरकर इस तरह खिलाव खाते थे, मानो देवदार की पैनी और दृढ़ पत्तियां अपनी नोकों द्वारा चारों ओर मुंह फैलाकर दिशावलोकन करती हों।

नाहरसिंह से लोग डरते भी थे; क्योंकि वह शस्त्र-सुसज्जित, गैरजिम्मेदार और हर समय झगड़ने पर उतारू रहता था।

नाहरसिंह अविवाहित था; और जैसा कि ऐसे आवारा लोगों का क्रम होता है, उसकी एक विधवा से लाग-कांड हो गयी। गांव के लोग इस बात से आश्चर्यित नहीं थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विधवा के कुनबे के लोगों को भी इस लगावट का ज्ञान था, पर किसकी हिम्मत कि नाहरसिंह से कोई झगड़ा मोल ले ?

कुदरत का नियम है कि क्रिया होती है, तो प्रतिक्रिया भी होती है। इस नियम का कोई अपवाद नहीं होता। जहां एक गुंडा होता है, वहां उसकी प्रतिद्वंद्विता में और गुंडे भी पैदा हो जाते हैं। इस न्याय के परिणामस्वरूप नाहरसिंह की प्रतिद्वंद्विता में एक और बांका जवान निकल आया, और वह था एक मुसलमान। उसका नाम था मुहम्मद खां। वह भी उसी विधवा के घर पहुंचता था। नाहरसिंह को और उस विधवा के रिश्तेदारों को उस मियां का आना-जाना काफी अखरता था।

रिश्तेदारों की हिम्मत न थी कि कुछ बोलें, इसलिए आंख-मिचौवल किये बैठे रहे। पर नाहरसिंह को मुहम्मद खां का यह खाका सहन नहीं हुआ। उसने उसे चुनौती दी कि वह उसके सुरक्षित क्षेत्र से दूर रहे, वरना उसे भुगतना पड़ेगा। पर मियां को भी अपने बाजू और सीने पर भरोसा था। वह हटा नहीं। उसने नाहरसिंह को दुत्कार बतायी और अपना क्रम जारी रखा। नाहरसिंह आग बबूला हो उठा। अंत में नाहरसिंह और विधवा के एक रिश्तेदार ने मिलकर मुहम्मद खां की नाक काटने की योजना रची।

एक रात जब मुहम्मद खां विधवा के घर से निकलकर अपने घर जा रहा था, इन लोगों ने एक सुनसान जगह पर उसे घेर लिया और धर पटका जमीन पर। एक ने उसके पांव पकड़े और नाहरसिंह उसकी छाती पर बैठकर लगा नाक काटने का प्रयत्न करने। पर चाकू भी उन्हें मिला तो ऐसा कि बिलकुल भूठा (भोंथरा)। लाख प्रयत्न करने पर भी नाक पर घाव नहीं मार सका।

चिल्लाहट हुई, पर रात का समय और सुनसान जगह, इसलिए किसी ने सुनी भी तो अनसुनी कर दी। इसी खींचातानी में मियां साहब का गला मर्यादा से कुछ ज्यादा दब गया और किस्सा समाप्त हुआ किसी और ही दिशा में। चाहा था नाक नदारद करना, सो तो दारद रही, और बदले में जान नदारद!

नाहरसिंह और उसका साथी दोनों योजना के विपरीत परिणाम देखकर सन्न रह गये। कुछ देर तक दोनों झगड़ते रहे कि किसकी गलती हुई। अंत में नाहरसिंह ने सफाई दी कि चाकू भूठा था, इसलिए गला दबाना जरूरी हो गया। जो हुआ, वह बेबसी के कारण। दोनों ने अपने-आपको लाचार माना।

सवाल यह पैदा हुआ कि अब क्या करें? कुछ अपने जानी दोस्तों से सलाह भी ली। अंत में कुछ योजना सोची गयी और मुर्दे को उठाकर वे उसके घर पर चुपचाप खटिया पर सुला आये और सुबह क्या जाल गूंथना, उसका विचार करने लगे।

सुबह हुई। गांव में शोर मचा कि फत्तां मियां अचानक मर गये। पड़ोसी किलेदार और थानेदार उसके घर पहुंचे। किसी को पता नहीं कि हुआ क्या। एक हट्टा-कट्टा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवान, जो कल तक मूंछों पर मूंछ-पट्टी चढ़ाये फिरता था, आज एकाएक अल्लाताला के घर कैसे पहुंच गया !

गांव के ठाकुर का प्रतिनिधि किलेदार कहलाता था। उसका मुकाम भी पिलानी के गढ़ में था। किलेदार राजपूत था और उसे नाहरसिंह की करतूत का पूरा पता था। पर वह अपने जात-भाई को बचाना चाहता था। इसलिए उसने कुछ तिकड़मबाजी रची। किलेदार ने थानेदार को अपना अनुभव प्रमाण में बताकर यह समझाया कि मियां को पाटडा गोह ने काट खाया और उस गोह के विष से वह मर गया है।

उस जमाने में सभी लोग यह मानते थे कि गोह एक विषैला जीव होता है। अब तो लोगों को पता चल गया है कि बेचारी गोह तो छिपकली की एक जाति है और विषैली नहीं है; लेकिन किलेदार की अक्ल और उसका अनुभव, यह भी तो एक वजनी चीज थी, जिससे गोह के पक्ष में पल्ला और भी झुक गया। सबने हां में हां मिलायी। कुछ उत्साही खुशामदियों ने गोह के बिल का भी पता बता दिया। गोह के विष से मृत्यु साबित हो गयी और मियां को कब्र के सुपुर्द किया गया। इस तरह खून का किस्सा एक बार तो समाप्त हुआ।

इसमें नाहरसिंह की कमबख्ती यह हुई कि मृतक मुसलमान था। हिन्दू होता तो जलाकर प्राण के साथ शरीर भी खत्म हो गया होता; पर मुसलमान होने की वजह से प्राण तो गये, पर शरीर बाकी रह गया था। वह शरीर मृतक ही क्यों न हो, खून का साक्षी तो था ही। इसी साक्ष्य ने नाहरसिंह की बरबादी की।

मैं उन दिनों पचीस वर्ष का था। मुझे यह पता लग गया कि मियां का खून हुआ है, जो जान-बूझकर दवा दिया गया है। नाहरसिंह के चरित्र और उसके आवारा-पन से भी मुझे नफरत थी। गांव में उसकी और भी कई शिकायतें थीं। इसलिए एक खूनी इस तरह बेदाग बच निकले, यह मुझे अखरा। खून के बाद भी नाहरसिंह की चहलकदमी उसी क्रम से जारी थी। 'वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी थी।'

थानेदार निरा बुद्ध था और किलेदार शिवनाथसिंह ने उसे और भी उल्लू बना दिया। पर उसके नीचे मुंशी बनवारीलाल था। वह था बड़ा चलता-पुर्जा। जब-जब मुंशी बनवारीलाल की तरक्की की बात चली और जयपुर-सरकार ने उसे बड़े ओहदे पर भेजने का प्रस्ताव किया, तब-तब वह यह कहकर इन्कार कर गया—'मुझे इसी ओहदे से संतोष है। मुंशीगीरी से विश्राम पाने पर मैं काशीवास करूंगा और भजन-स्मरण में ही जीवन व्यतीत करूंगा।'

मुंशी बनवारीलाल का दावा था कि वह एक सिद्धांत का आदमी है। वह मानता था कि वह रिश्वत जरूर लेता है, पर जुर्म करने वाले से नहीं। रिश्वत लेता था भुगतने वाले से, और रिश्वत लेकर न्याय करता था, अर्थात् सजा पाने योग्य को सजा और रक्षा-योग्य को रक्षा दिलवाता था। मुझसे कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता था—'बाबूसाहब, मैंने रिश्वत जरूर ली, पर भले का पक्ष करके। रिश्वत भी मैं उसूलन लेता हूं।' लोग चाहे इस उसूल पर हंसे, पर बनवारीलाल को पूर्ण श्रद्धा थी कि इस काम में ईश्वर भी उससे सहमत है।

इस तरह रिश्वत लेकर उसने बीस-तीस हजार इकट्ठे कर लिये थे। पर उसने अपनी बात निबाही। मरने से पहले उसने अपनी सारी संपत्ति दान-पुण्य में खर्च करने के लिए ट्रस्ट को सौंप दी और मुझे ही एकमात्र ट्रस्टी बनाकर चल बसा। ट्रस्ट का मजमून भी उसने अपने-आप ही लिखा था। उसका आरंभ इस तरह था—'जिंदगी का भरोसा नहीं और जमाना नाजुक है, इसलिए लिख दिया है मैंने यह वसीयत.....।' अब भी बनवारीलाल के ट्रस्ट से पिलानी में छात्रवृत्ति दी जाती है। खैर, यह तो विषयांतर हुआ।

पर जैसा कि मैंने कहा है बनवारीलाल था बड़ा चलता-पुर्जा। इसलिए थानेदार की अवहेलना करके मैंने उसे बुलवाया और बताया कि मियां का खून हुआ है और यह सारी कार्रवाई बनावटी है। सजावार को सजा न मिले, तो फिर गुंडेपन का कोई अंत नहीं। मुंशी ने कहा—'बात सच है। मैं रजामंद हूं। पर बाकायदा रपट जब तक नहीं आती, तब तक मैं लाचार हूं।' इसलिए रपट का इंतजाम करना पड़ा।

रपट होते ही मुंशीजी की चक्की चलने लगी। कब्र खोदकर मियां की लाश को बाहर निकाला गया, डाक्टर बुलाया गया और मुर्दे का पोस्ट-मार्टम हुआ। उसमें साबित हुआ कि मियां को गला घोंटकर मारा गया था। बस, खून साबित होते ही गिरफ्तारियां शुरू हुईं।

उस जमाने में हवालात-जैसी फिजूलखर्ची से लोगों को और सरकार को बड़ी नफरत थी। इसलिए हवालात के स्थान पर काठ की संस्था प्रचलित थी। एक बड़ा लक्कड़ होता था, जिसके ऊपर-नीचे के दो पाट होते थे और बीच में पांव डालने के लिए कई छेद। उन छेदों में दोनों पांव डालकर लक्कड़ का ऊपरी सिरा ताले से बंद कर दिया जाता था, जिससे कैदी के दोनों पांव उन छेदों में इस तरह जकड़बंद हो जाते थे कि कैदी भाग न सके। एक-एक काठ में पांच-पांच आदमी तक जकड़ दिये जाते थे। न जरूरत रहती थी हवालात की और न बेड़ी की।

जितने आदमियों को पकड़ा जाता, उन सबको खुले मैदान में पड़े हुए काठ में डाल दिया जाता। कैदी खुले मैदान में काठ में पड़ा रहता था। घर वालों और मिलने-भेंटने वालों को कोई मुमानियत नहीं थी। सारी चीज सीधी-सादी, कम खर्चीली प्रतीत होती थी।

सो नाहरसिंह के दोनों पांव काठ में डाल दिये गये। घर वाले उसे रोटी खिला जाते थे। चिलम-तंबाकू की आवभगत भी होती थी, जिसमें पुलिस और कैदी दोनों शरीक होते थे। गपशप तो चलती ही रहती थी। पर तो भी आखिर काठ तो काठ ही है। नाहरसिंह तीन रात और दिन लगातार काठ में पड़ा रहा। खाना भी उसे जब दिया जाता, तब पांव काठ में ही रहते थे। पाखाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाने के लिए ही छुट्टी मिलती थी। जाहिर है कि ऐसी वेदना कड़े से कड़े दिल को भी हिला देती है।

नाहरसिंह का भी यही हाल हुआ। जब यह कष्ट असह्य हो चला, तब अंत में नाहरसिंह की मर्दानगी भी काफूर हुई। दो-चार थप्पड़ भी पड़े और थप्पड़ पड़ते ही उसने सारा किस्सा स्वीकार कर लिया। अदालत में मुकद्दमा चला और नाहरसिंह को जन्म-कैद की सजा सुना दी गयी।

जब तक हमें स्वतंत्रता नहीं मिली, तब तक जयपुर में फांसी पर संपूर्ण रोक थी। चाहे कितना ही बड़ा जुर्म क्यों न हो, किसी भी जुर्मी को फांसी नहीं हुई। इसलिए नाहरसिंह को भी जन्म-कैद की ही सजा हुई। सजा होते ही उसे वहां से चालान करके जयपुर की जेल में जन्म-कैद भुगतने के लिए भेज दिया गया।

जेल में पहुंचते ही नाहरसिंह की दाढ़ी-मूंछ मूंड़ दी गयी। और कैदी के कपड़े दे दिये गये। नाहरसिंह रो पड़ा। अपनी पुरानी जीवनी की याद उसे सताने लगी—'कहां वह मेरा बांकापन, कहां मेरी दाढ़ी, कहां मेरा जाडिया और कहां यह मुंडन और यह नया भेस और ऊपर से पांव में बेड़ी।'

कुछ दिनों तक तो नाहरसिंह पागल-सा रहा। भीतर ही भीतर आग धधकती थी। मुंशी बनवारीलाल ने आश्वासन दिया था—'गुनाह मंजूर कर लो, फिर सब तरह से तुम्हारी मदद करूंगा।' उसने धोखा दिया। मदद के बजाय यह जन्म-कैद करवा दी। पर अब कोई सुनने वाला भी नहीं। जरा चीं-चपड़ करो, तो मार पड़ती है।

नाहरसिंह जब रो-रोकर थक गया, तो उसका उद्वेग शिथिल हो चला। गम दिल को खा गया और दिल गम को खा गया। जबां बेजबां हुई। अब रोना बंद हुआ। कैद के आश्रय से पहले मन मारकर, फिर धीरे-धीरे सहिष्णु होकर समन्वय करने लगा, पिछले जमाने को भूलने लगा।

जब वह कुछ शांत हुआ, तो मैं जेल में उससे मिलने गया। मैंने कहा—'नाहरसिंह, आखिर तुमने एक प्राणी की हत्या की है, अब

नाहरसिंह [रेखाचित्र : केसर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओरिएन्ट

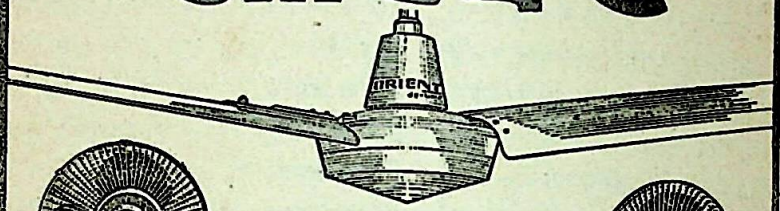

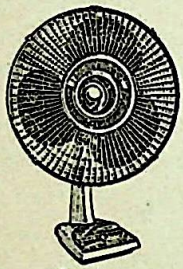

डेस्क पंखा

मजबूत
बेआवाज
निर्भरयोग्य

ओरिएन्ट पंखे आधुनिक घरों, आफिसों व इमारतों की आवश्यकताओं के अनुरूप ही खूबसूरत डिजाइनों में मिलते हैं। आपकी जरूरतों के लिये सीलिंग, टेबल, डेस्क, स्टैण्ड, ऑल-परपज और एग्जास्ट पंखें उपलब्ध हैं। भारत के सबसे अधिक अनुभवी पंखा-निर्माता द्वारा निर्मित ओरिएन्ट पंखे देश-विदेश में क्वालिटी में अद्वितीय माने जाते हैं। सभी पंखों पर दो वर्ष की गारन्टी।

सबसे अधिक बिकनेवाला पंखा—ओरिएन्ट

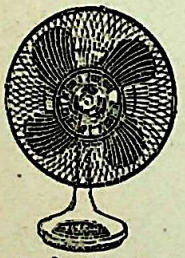

सुपर डीलक्स टेबल पंखा

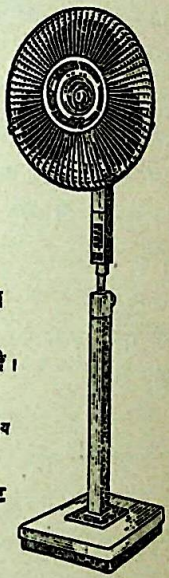

स्टैण्ड पंखा

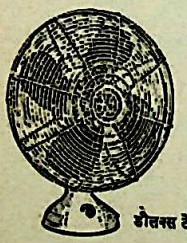

डीलक्स टेबल पंखा

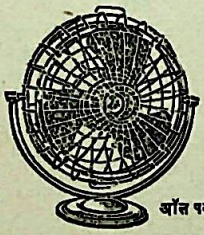

ऑल परपज पंखा

ओरिएन्ट पंखा

विश्व विख्यात

ओरिएन्ट पंखा

ओरिएन्ट जनरल इन्डस्ट्रीज़ लि० ६, थोर बोबी लेन, कलकत्ता-१४

फैक्ट्री : कलकत्ता और फरीदाबाद

CC/0/473 MPO.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें सजा भुगतनी है। उसे रो-रोकर क्यों भुगतते हो? खुशी-खुशी क्यों न भुगतो! बहादुरी इसी में है कि ईश्वर ने जो भेजा, उसे सिर चढ़ाकर मंजूर करो। यहां भुगत लोगे, तो आगे की छुट्टी है।' नाहरसिंह को शांति मिली, और जेल के जीवन से मैत्री करने लग गया।

जेल के सुपरिंटेंडेंट मेरे मित्र होते थे। मैंने उनसे बात करके नाहरसिंह को कुछ सुविधाएं भी दिलवा दीं। जेलर की सिफारिश से नाहरसिंह को गलीचे बुनने का काम सिखाया जाने लगा। नाहरसिंह उद्योग में कुशल निकला और जल्दी ही गलीचा बुनना सीख गया। इसके अलावा और भी दो-चार हस्त-कौशल के उद्योग उसने सीख लिये। वह दक्ष हो गया और इस लायक बन गया कि जेल के बाहर आकर अच्छी तरह अपनी जीवन-यात्रा संभाल सके।

मगर नाहरसिंह था पूरा उपद्रवी। कुछ काल के बाद जेल के एक वार्डन से झगड़ा करके उसकी नाक को वह दांतों से चबा गया। संभव है, मनोवैज्ञानिकों की कल्पना के अनुसार नाहरसिंह का नाकों से कोई नाता रहा हो, या फिर कोई ग्रह ऐसा पड़ा हो, जो नाहरसिंह को नाकों की ओर आकर्षित करता रहा हो। पर वार्डन की नाक की घटना ने इतना तो प्रमाणित कर ही दिया कि नाहरसिंह नाक ढूंढ़ता फिरता था। मियां की नाक नहीं, तो वार्डन की ही सही। नतीजा यह हुआ कि नाक चबा जाने के अपराध में उसकी जेल की मियाद बढ़ गयी। उसकी औद्योगिक शिक्षा तो जारी थी ही।

इस तरह साढ़े बीस साल तक नाहरसिंह जेल में रहा और जेल से बाहर निकला, तो सौम्य होकर, कई उद्योगों में कुशल होकर।

जब तक नाहरसिंह जेल में रहा, उससे मेरा संपर्क जारी था। इसलिए जेल से निकलते ही वह मेरे पास आया। फटे कपड़े पहने था, पांव में बीस साल तक बेड़ियां पड़ी रहने की वजह से कदम छोटे हो गये थे और दाढ़ी भी नदारद थी। नियंत्रण में आने के कारण उसका पुराना औद्धत्य चला गया था और वह विनम्र हो गया था।

मैंने पूछा—'कहो नाहरसिंह, कैसे हो? अब क्या करना है? कमाकर तो खाना ही है, फिर सोच लो, क्या करोगे?'

नाहरसिंह ने कहा—'बाबूजी, मैं बीस साल तक महाराजा माधोसिंहजी का मेहमान रहकर आया हूं, अब किसी छोटे-मोटे का मेहमान नहीं रह सकता। हाथी पर चढ़कर गधे पर कैसे बैठूं?' (उन दिनों जयपुर के महाराजा माधोसिंहजी थे।) मुझे उसकी चुटकी पर हंसी आयी। नाहरसिंह की ओर मेरा आकर्षण तो था ही। इसलिए मैंने उसे अपनी शिल्पशाला में विद्यार्थियों को गलीचा बुनना सिखाने के लिए मास्टरी पद पर तैनात कर दिया। नाहरसिंह ने अच्छे-अच्छे गलीचे बनवाये और कई लड़कों को कारीगर बनाकर कमाने-खाने लायक बना दिया।

धीरे-धीरे अब नाहरसिंह पर बुढ़ापा सवार होने लगा। आंखें कमजोर हो चलीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Wrap Yourself
in Gentle Warmth With OCM
BLANKETS

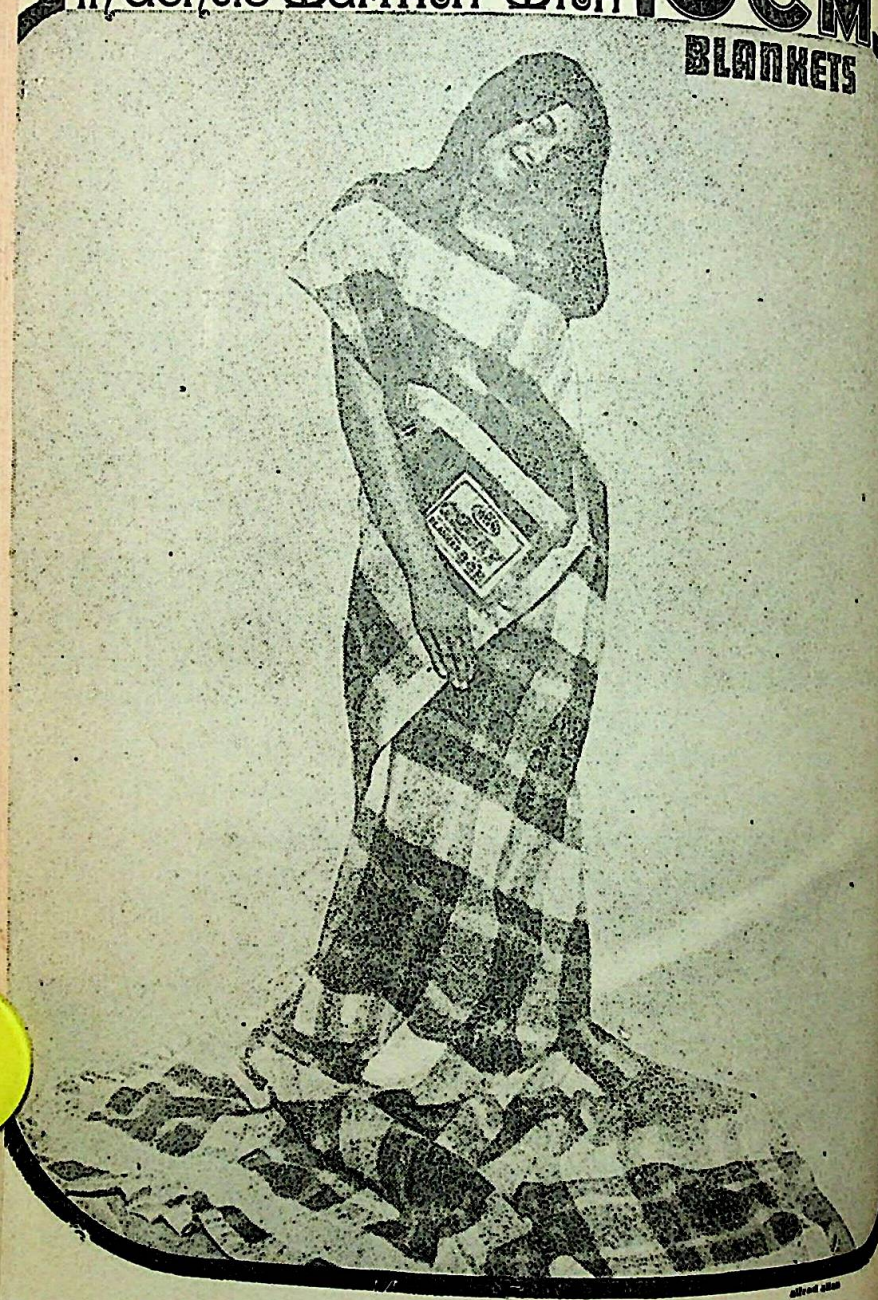

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मेरे पास आया और बोला—'मुझसे अब यह गलीचे का काम नहीं होगा, कुछ और काम दीजिये। आंखें काम नहीं दे रही हैं, और बुढ़ापे की कमजोरी भी आ रही है।'

चिड़ावा जाने वाली सड़क के दोनों ओर मैंने वृक्ष लगवाये थे। ऊंट और गायें उन्हें बीच-बीच में खाकर नुक्सान पहुंचाती थीं। इसलिए उनकी रखवाली के लिए एक चुस्त रक्षक की जरूरत थी। मैंने पूछा—'नाहरसिंह वृक्षों की रखवाली का काम करोगे?' बोला—'हां, यही तो राजपूत के लायक काम है। अब तक तो आपने मुझे छोटा काम सौंप रखा था। राजपूतों का काम तो रक्षा करना है, और वह मुझे पसंद है।'

दूसरे दिन नाहरसिंह रखवाली के लिए सजकर आया। अपनी सफेद दाढ़ी पर कलप चढ़ा ली और वही पुरानी सांग और बरछी, पीठ पर ढाल, कमर में तलवार और कटार लटकाकर खासा अच्छा साफा बांधकर वह हाजिर हुआ। देखता हूं, साथ में एक टट्टू भी लाया है। मैंने पूछा—'यह क्या है?' बोला—'यह टट्टू मैंने बारह रुपये में खरीदा है। बिना सवारी के राजपूत शोभता नहीं।'

दूसरे दिन टट्टू पर चढ़कर नाहरसिंह रणबांका राजपूत बनकर रखवाली के लिए सफर पर निकला। टट्टू पूरा टींघण (ठिगना) था; नाहरसिंह जब उस पर सवार होता तो उसके पांव करीब-करीब जमीन को छू जाते थे। लोग हंसकर मुंह फेर लेते थे; क्योंकि नाहरसिंह के मुंह के सामने हंसना अब भी खतरनाक था।

नाहरसिंह के संसार की गाड़ी इस तरह चलती जाती थी, और वह बुड्ढा भी होता जा रहा था।

पर इसी बीच में एक अद्भुत घटना घट गयी। नाहरसिंह पर इश्क का भूत सवार हो गया। 'सारे आजारों से बढ़कर इश्क का आजार है।' नाहरसिंह भी इस आजार के सपाटे में आ गया। एक जाटनी थी। वह भी अपने पति की हत्या करके नाहरसिंह की तरह जयपुर-जेल में जन्म-कैद काटकर आयी थी। नाहरसिंह को अपने लिए एक साथी की आवश्यकता महसूस होती थी; और जब यह जाटनी मिली, तो उसे वह जोड़ी पसंद आ गयी। नाहरसिंह ने झटपट उससे शादी कर ली।

जाटनी नाहरसिंह से उम्र में छोटी थी, पर गुणों में उससे पूरा मुकाबला करने वाली थी। शादी के कुछ दिनों बाद ही उसके पराक्रम का नाहरसिंह को पता चल गया। जाटनी ने नाहरसिंह को पीटना शुरू कर दिया। वह 'नाहर' और 'सिंह', जिसका गांव में तहलका था, अब उस जाटनी के सामने भीगी बिल्ली हो गया।

नाहरसिंह घर के बाहर तो अब भी शेर था, पर घर के भीतर था पूरा बिल्ली। उसे जो तनख्वाह मिलती, वह सारी की सारी जाटनी अपने पल्ले में बांध लेती थी। नाहरसिंह सिवा खाने-पीने के नकद से पूरा वंचित हो गया।

जरदार मरद नाहर घर रहो या बाहर;
बेजर का मरद बिल्ली, घर रहो या दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये!

चाँदनी

साबुन

निर्माता- बरार ऑयल इंडस्ट्रीज. अकोला.(महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाहरसिंह 'बेजर' हो गया और बिल्ली भी हो गया। पर उसकी शान और शौकत घर के बाहर वही थी, जो पहले थी। उसमें कोई कमी नहीं हुई।

अब नाहरसिंह और बुड्ढा हो चला। एक दिन आकर बोला—'सरकार, अब तो पेंशन कर दीजिये। घोड़े पर अब नहीं चढ़ा जाता।' मैंने कहा—'अच्छा, पेंशन ले लो और राम-राम करते रहो।'

नाहरसिंह अब पेंशन से जीवन व्यतीत करने लगा। वही दाढ़ी और मूंछों की सजावट, वही ढाल-तलवार-कटार, वही सांग और बरछी। केवल एक परिवर्तन हुआ। अब उसके एक हाथ में बरछी तो दूसरे हाथ में माला—वह एक तरफ अपनी शान की अकड़ निभाता, और दूसरी ओर 'राम-राम' भी जपता रहता।

नाहरसिंह को भूलना असंभव है।

[लेखक का एक पूर्व - प्रकाशित शब्दचित्र]

*

क्या आपने कभी पूछा है कि हदबंदी के कानून से भूमिहीनों को कितनी जमीन मिली है? मैं सरकारी परती जमीन के बंटवारे की बात नहीं करता; किंतु हदबंदी के कानून के अंतर्गत भूमि-मालिकों से लेकर भूमिहीनों को कितनी जमीन दी गयी, इसकी बात करता हूं। इस तरह देखेंगे तो गुजरात में कानून द्वारा मात्र ८ हजार एकड़ जमीन मिली है और उसमें से ६ हजार के लगभग बांटी गयी है, जबकि भूदान द्वारा गुजरात में ५० हजार एकड़ के लगभग जमीन बांटी जा चुकी है। महाराष्ट्र में हदबंदी के कानून के अंतर्गत लगभग १। लाख एकड़ जमीन प्राप्त घोषित हुई है, किंतु उसमें से मात्र २५ हजार एकड़ जमीन ही बांटी जा सकी है, जबकि वहां भूदान द्वारा १ लाख ६ हजार एकड़ भूमि बांटी जा चुकी है। बिहार में हदबंदी के कानून के अंतर्गत एक एकड़ जमीन भी नहीं बांटी गयी है, जब कि भूदान द्वारा वहां ३ लाख ६० हजार एकड़ भूमि भूमिहीनों की मिली है। लोग कहते-फिरते हैं कि विनोबा को तो भूदान में मात्र रेतीली, पथरीली और बंजर जमीन ही मिली है, किंतु किसी ने ये आंकडे देखने का और उनकी तुलना करने का भी कष्ट किया है? जो जमीन बांटी जाती है, वह खेती के योग्य होने पर ही बांटी जाती है।

दूसरी तरफ कत्ल के रास्ते कितनी जमीन बांटी गयी, यह भी देखिये। तेलंगाना में इतना सब हुआ, फिर भी एक एकड़ जमीन तक किसी को नहीं मिली। नक्सलबाडी में इतनी खून-खराबी हुई, फिर भी किसी के हाथ में जमीन नहीं आयी। इस तरह जमीन के बंटवारे में कानून और कत्ल की अपेक्षा करुणा का मार्ग अधिक सफल हुआ है। भूदान-आंदोलन ने इस देश में १२ लाख एकड़ भूमि भूमिहीनों में बांटी है। और यह सब हृदयपूर्वक तथा स्वेच्छा से हुआ है।

—जयप्रकाश नारायण ['मेरी विचार-यात्रा' में]

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

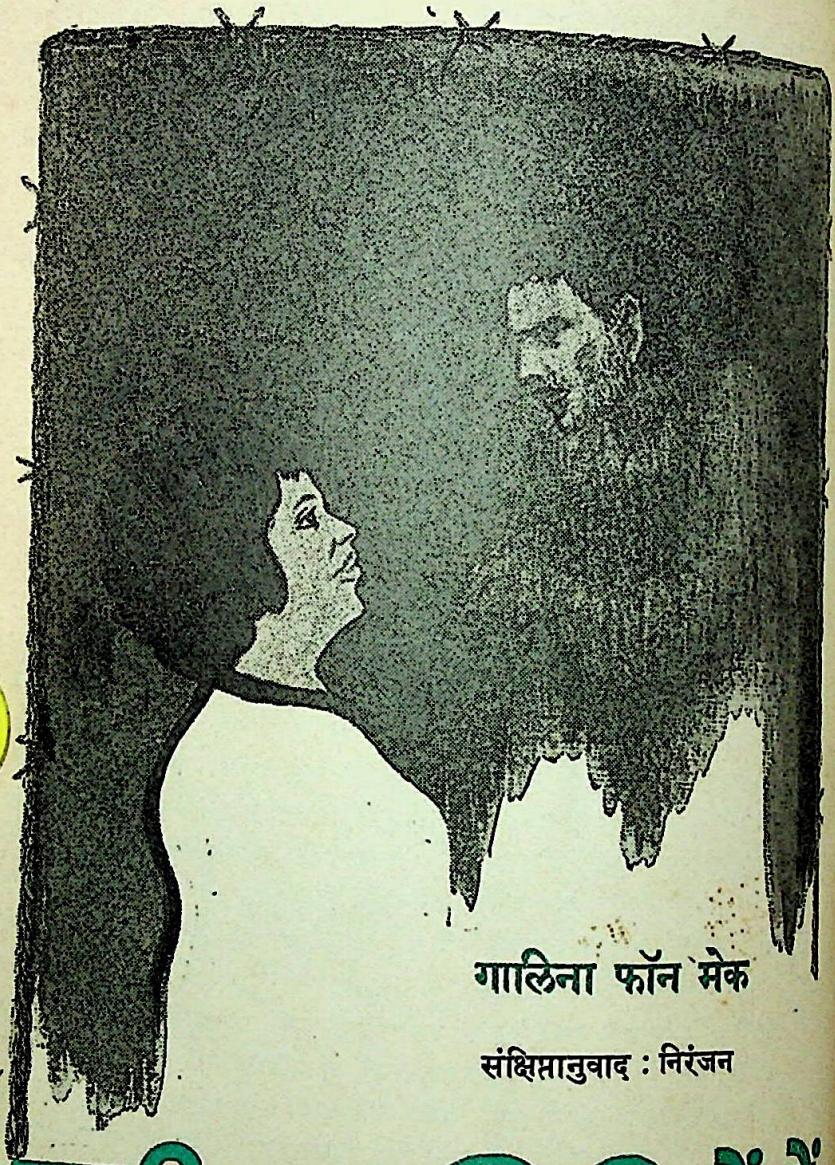

गालिना फॉन मेक

संक्षिप्तानुवाद : निरंजन

रूसी श्रम-शिबिरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गालिना फॉन मेक रूस की एक रेल-कंपनी के मालिक की बेटी थीं। जब वे जनमीं (१८९१ ई.), तब रूस पर अभी जार का शासन था और ऐसा ही लगता था कि वह शासन सूर्य और चंद्र की तरह स्थायी रहेगा। सन १९११ में रोमानोफ राजवंश ने अपनी ३०० वीं जयंती मनायी। उस अवसर पर गालिना अपने पिता के साथ कीव में शाही परेड में गयी थीं। १९१७ की क्रांति के बाद गालिना की रूसी बंदी-शिविरों की तीर्थ-यात्रा शुरू हुई। बोल्शेविक सरकार भला कैसे मानती कि राजपरिवार से जिस घराने का काफी अच्छा संबंध रहा हो, वह निर्दोष हो सकता है!

सन १९२३ में गालिना ने पश्चिम को भाग निकलने की विफल कोशिश की। इस प्रयत्न में उनके साथी थे—काऊंट डी. जी. और उनके परिवार का बूढ़ा कोचवान आंद्रेई आंद्रेईविच। पर सरकारी एजेंटों द्वारा वे पकड़ ली गयीं और तीन महीने कोरो-स्टेन में गुप्तचर पुलिस जी. पी. यू. की जेल में रहीं। फिर उन्हें एक बैंक के तहखाने में रखा गया और तदनंतर कीव की जेल में भेज दिया गया, जिसके प्रवेश-द्वार पर दांते की यह पंक्ति लिखी हुई थी—'यहां आने वालो, अब तमाम आशा को तिलांजलि दे दो।' उन पर ब्रिटेन और अमरीका की ओर से जासूसी करने का दोष मढ़ा गया था।

सरकारी उत्पीडन चलता रहा। १९२८ में गालिना को मास्को की बदनाम लूबियांका जेल की कोठरी नं. ११४ में डाल दिया गया और वहां से १९३१ में वे साइबेरिया भेज दी गयीं। साइबेरिया की लंबी रेल-यात्रा में उन्हें अपने निरपराध पिता की याद आती रही, जिन्हें उसी नेता ने मरवाया था, जिसके पंजे में अब उनकी जान फंसी हुई थी।

वे लिखती हैं—'मैं स्प्रूस वृक्षों से ढंके हुए स्वप्निल पहाड़ों को देख रही थी.....मील-भर लंबी सुरंग और फिर छोटी सुरंगें—सब हूबहू वैसी ही थीं, जैसा कि पिताजी वर्णन किया करते थे। इन दृश्यों से याद हो आया कि किस प्रकार पिताजी नयी रेल-लाइन की और साइबेरिया के लिए छोटे रास्ते की अपनी प्रिय योजनाएं हमें बताया करते थे।'

गालिना फॉन मेक का साइबेरिया से काफी घनिष्ठ परिचय हो गया। वे कहा करतीं—'इंसान कुछ सोचता है, जी. पी. यू. को कुछ और ही मंजूर होता है।' मारीइन्स में उनसे आलू के खेतों और करमकल्ले व प्याज की क्यारियों में काम कराया गया। स्ट्रोई गोरोडोक के प्रवास-शिविर में वे गायों के गोठों और सूअरों के बाड़ों में काम करती रहीं। फिर बोरोव्लियांका के पास चीड़ के वनों में कैदी-शिविर में धोबिन के रूप में रहीं। बोरोव्लियांका में ही उनकी मुलाकात दिमित्री ओर्लोव्स्की से हुई, जो बाद में और किसी कैंप में जाकर खो गया।

अंततः १९३४ की २६ मई को गालिना फॉन मेक को पश्चिम साइबेरिया के श्रम-शिविरों से रिहा कर दिया गया। मगर १९४० में कहीं जाकर वे रूस से निकल भागने में सफल हुईं। भागकर पहले तो वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जर्मनी पहुंचीं, फिर ब्रिटेन चली आयीं, जहां वे अब रहती हैं।

यहां उनकी पुस्तक 'एँज़ आइ रिमेंबर' से उनके रूस से भागने के विफल प्रयास से लेकर श्रम-शिविर से रिहाई तक की कथा संक्षेप में प्रस्तुत की जा रही है।

० ० ०

हम पश्चिमाभिमुख चल दिये पोलैंड की सीमा की ओर। छोटी-सी किसान-गाड़ी में मैं भीतर पुआल पर बैठी होती, आगे गाड़ीवान की सीट पर आंद्रेई रहता और डी. जी. ज्यादातर पैदल मेरी बगल में चल रहा होता। तीनों निपट भोले आदमी लगते और हमारा घोड़ा आराम से देहाती सड़कों पर धीमी चाल में दौड़ता रहता। ज्यादातर हम रात को सफर करते और दिन को आराम के लिए ठहरते। मुझे यात्रा की बहुत कम बातें याद हैं, शायद इसलिए कि मैं अपने खयालों में इस कदर खोयी हुई थी कि मेरे आस-पास क्या हो रहा है, इस पर मैंने बहुत ही कम ध्यान दिया। सीमा तक की १५० से १८० किलोमीटर की यात्रा में पांच दिन से कम वक्त लगा होगा। रात को हम गाड़ी में सोते और दिन को जब घोड़े को आराम देने के लिए ठहरते तो जमीन पर पसर जाते।

हमारी यात्रा का आखिरी चरण कम ऊंचे और दलदल-भरे जंगलों में से था। १९२३ का उत्तरार्ध चल रहा था। आखिरकार एक दोपहर को हम जंगल में एक खुले स्थान पर पहुंचे, जहां कच्ची-पक्की बाड़ से घिरे चंद छितराये हुए झोपड़े थे। आंद्रेई हमें वृक्षों के नीचे छोड़कर आगे गया और उसने उन झोपड़ों में से एक का दरवाजा खटखटाया। मैंने देखा कि एक आदमी ने दरवाजा खोला और आंद्रेई ने उससे बातें कीं। फिर वह वापस आया और बोला कि सब ठीक-ठाक है, आप लोग अंदर जा सकते हैं।

अपनी भावनाओं का ज्यादा इजहार न करते हुए (क्योंकि मैं अपने नये मेजबान पर यह जाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि हमारा आंद्रेई से मामूली परिचय से ज्यादा कुछ संबंध है) मैंने अपने पुराने साईस को 'अलविदा' कही और उसे धीमे-धीमे गाड़ी वापस हांककर ले जाते देखती रही। उसने एक बार भी मुड़कर पीछे नहीं देखा; मगर मैंने देख लिया था कि जब वह गाड़ी पर चढ़ रहा था, तो आंसू उसकी दाढ़ी पर से झर रहे थे।

जिस आदमी ने हमें अपने घर ठहराया था, वह छोटा-सा और गुपचुप-सा था। उसका चेहरा बिलकुल जर्द था और आंखें नजरबंद थीं। उसकी बीवी भी छोटी-सी थी और वैसी ही गुपचुप। घर गरीबों का-सा और खाली-खाली था, मगर था साफ-सुथरा। उन्होंने हमें खाना खिलाया। फिर मर्द बाहर चला गया और मैं बाहर औरत के पास जा बैठी, जहां वह अपने बेचैन बच्चे को पालने में झुला रही थी। थोड़ी देर में औरत अपने बच्चे को उठाकर झोपड़े के भीतर चली गयी। और मैं उत्तेजित-सी हो उठी। सूरज डूबने के साथ मौसम और भी दमघोंटू हो गया। डी. जी. उस आदमी के साथ वापस लौटा। हमसे कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया कि रात पड़ने तक तुम लोग झोपड़ी में छिपे रहो, ताकि ऐसा न हो कि कोई पड़ोसी चला आये और तुम्हें देखकर सवाल-जवाब शुरू कर दे।

हम सीढ़ियां चढ़कर छत में बने एक छेद में से परछत्ती पर पहुंच गये। वहां शहतीरों के बीच में रेती भरकर कच्चा फर्श बनाया गया था। एक कोने में तख्तों का फर्श था। डी. जी. ने फुसफुसाकर मुझे सलाह दी कि लेट जाओ और सोने की कोशिश करो। अंधेरा गहराने लगा। मैं सो न सकी। मैं बहुत ज्यादा उत्तेजित थी। डी. जी. भी न सो पाया। वह मेरी ओर पीठ किये परछत्ती की छोटी-सी खिड़की पर बैठा रहा। उसका सिर और कंधे बाहर की रोशनी की पृष्ठ-भूमि में सिलुएट बनाते रहे। मैं कल्पना करती रही कि वह क्या सोच रहा होगा। युद्ध में वह पायलट के तौर पर जर्मनों से भी ज्यादा बुरे दुश्मनों के साथ लड़ा था; वह लड़ा था, पकड़ा गया था, उसे दो बार मृत्युदंड सुनाया गया था, वह भाग निकला था, फिर लड़ा था.....और अब?

बाहर अंधेरा गहराता ही चला गया। कुछ समय तक तो रोजमर्रा के जीवन की आवाजें मेरे कानों तक पहुंचती रहीं; फिर वे थम गयीं। मैं सो गयी हूंगी, क्योंकि जब मैं एक घोटालेदार सपने में से वास्तविक दुनिया में लौटी, डी. जी. मेरा कंधा छूकर कह रहा था–'वक्त हो गया, अब उठ जाओ।'

कैसी अंधेरी रात! आकाश में बादल घिर आये थे। मगर अभी हवा नहीं शुरू हुई थी। और सौभाग्य से बारिश भी नहीं हो रही थी। हमने अपना-अपना सामान का झोला पीठ पर लादा, मैंने काली शाल से सिर ढंक लिया और हम अपने मेजबान के पीछे अपनी यात्रा पर निकल पड़े। हमारा सारा ध्यान केवल वर्तमान पर और इस निशायात्रा पर केंद्रित था।

छोटा आदमी चुस्त चाल से मकानों के पीछे से चक्कर काटकर खेतों में निकल आया। शुरू में तो सब ठीक चला, धरातल बहुत ऊबड़-खाबड़ नहीं था, न बाड़ें ही थीं। मगर थोड़ी देर बाद हम बाड़ से घिरे खेत पार करने लगे और जब भी सामने बाड़ पड़ती, हम या तो लग्गे की मदद से उसे फलांगते, या चढ़कर पार करते। मनोविनोद के लिए मैं उन्हें गिनती रही–२०, २६, ३० फिर ४१, ४९, ५१.....ये लोग जरा धीरे क्यों नहीं चलते? ६२, ७३.....अगर कोई हमें देख ले, तो कितना विचित्र लगेगा उसे! अंतहीन बाड़ें चढ़ती-उतरतीं तीन काली परछाइयां..... ९९ .....!

मैं थक चली थी, शरीर तप रहा था, पसीना भी छूट रहा था, पुरुषों से हमकदम होकर चलने के श्रम से। ११८ .....१२२..... १४७ ..... मैं अब भी गिन रही थी। ओह! आखिरी बाड़.....कितनी राहत मिली! हम कम ऊंचे दरख्तों वाले जंगल में एक तंग पगडंडी पर पहुंचे और अंधेरे में आगे बढ़ते रहे–उसी तरह तेज रफ्तार से।

क्या यह सब जरूरी है? क्या हमें इतनी उलझी राह से ले जाना सचमुच ही जरूरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ? जाने क्यों, मुझे संदेह होने लगा और मैं सोचने लगी कि क्या यह सब हम पर सिर्फ यह छाप डालने के लिए नहीं किया जा रहा है कि हमारे मेजबान ने कितना मुश्किल काम हाथ में लिया है ?

हम तो बस यह आशा ही कर सकते थे कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वह ठीक है। अब किसी चीज को बदलने का समय नहीं रह गया था।

फिर अचानक हम थम गये—क्षण-भर तो सामने सिवा वीरानगी के कुछ नहीं दिखा। हमारे मार्गदर्शक ने डी. जी. से फुसफुसाकर कुछ कहा और डी. जी. मुझसे फुसफुसाकर बोला—'मेरा हाथ पकड़ लो और सावधानी से चलो।' फिर मैंने बड़े भयपूर्वक देखा कि मैं दो तख्तों पर चल रही हूं, तख्ते एक दूसरे को काटती हुई तिरछी बल्लियों पर जड़े हुए हैं और उन बल्लियों के निचले सिरे अंधेरे गर्त में समाये हुए हैं। 'यह क्या है ?' मैंने धीमे—से पूछा। 'दलदल !' छोटा-सा उत्तर मिला। यह तो सचमुच एडवेंचर था। 'अब दायें-बायें मत देखो।'

कुछ देर तक तो सब ठीक चला। फिर मैं ठोकर खाकर लड़खड़ा गयी, लगभग गिर पड़ी। मैंने डी. जी. को पकड़ लिया और एकदम घबरा गयी। पुरुषों को रुकना पड़ा और जो काम उन्हें शुरू में ही करना चाहिये था, उन्होंने अब किया। उन्होंने मुझे बीच में कर लिया। बड़ी सावधानी से डी. जी. पीछे पहुंच गया। मुझसे कहा गया कि मैं मार्गदर्शक की कमर-पेटी पकड़े रखूं। डी. जी. ने मेरी कमर-पेटी पकड़ ली। इससे मुझे सुरक्षा अनुभव हुई और हम लोग ज्यादा तेजी से बढ़ने लगे; क्योंकि सबसे पीछे चलती हुई मैं जैसे उन जल्दबाज पुरुषों के पांवों में ब्रेक लगा रही थी।

अब अपने को सुरक्षित महसूस करते हुए मैंने यह देखने की कोशिश की कि चारों ओर क्या है ? अब मैं भी अंधकार की अभ्यस्त हो गयी थी। खुले में एकदम घुप अंधेरा कभी नहीं होता। अव्वल मैंने देखा कि तख्ते दलदल से उतनी ज्यादा ऊंचाई पर नहीं हैं, जितना कि मैं शुरू में समझ बैठी थी। और फिर मैं जान पायी कि अपनी आंखों के आगे मैंने पहले रोशनी की जो मद्धिम झिलमिलाहट देखी थी, वह मेरी चकराहट और थकान की उपज नहीं थी, बल्कि दलदल की ज्योतियां थीं। वे ज्योतियां भुतहे ढंग से चमक रही थीं।

आखिरकार मजबूत धरती मिली! फिर जंगल का एक टुकड़ा आया और हमारा मार्गदर्शक रुक गया। उसने हमें जंगल में प्रतीक्षा करने को कहा। अब तक पौ फट चुकी थी। मैं बहुत थकी हुई और प्यासी थी।

वह आदमी चला गया और हम दोनों बड़ी देर तक मौन प्रतीक्षा करते रहे। मुझे ऐसा लगा कि डी. जी. विलंब के कारण झुंझला रहा है और धूम्रपान न कर पाने के कारण बेचैन हैं। उसने सिगरेटें निकालीं, मगर क्षण-भर उन पर नजर डालकर वापस रख लीं।

अब खासा उजाला हो गया था।

कदमों की आहट सुन पड़ी और हमारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गदर्शक प्रकट हुआ। उसने कहा कि हमें सांझ तक उसके एक दोस्त के घर ठहरना होगा। अगर कोई पूछे कि आप लोग कौन हैं, यहां क्यों आये हैं, तो यही कहना कि हम मिलने-मिलाने आये हैं। इस बीच डी. जी. और हमारा नया मेजबान उन लोगों से संपर्क करेंगे, जो हमें सांझ की सीमा के उस पार पहुंचा देंगे। मेजबान बिलकुल आश्वस्त जान पड़ता था कि सब कुछ ठीक ढंग से निबट जायेगा। हम उसके पीछे-पीछे जंगल पार करके खुले में पहुंचे, जहां सिर्फ एक मकान खड़ा था। हम घर तक नहीं गये, बल्कि पीछे ही रहे और चिनी हुई लकड़ियों के एक ढेर पर बैठ गये। डी. जी. एक बार फिर गया, पैसों की बात तय करने।

हफ्तों तक मैंने डी. जी. को सब फैसले करने दिये थे, और किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया था। मगर अब पहली बार मुझे लगा कि हमें इतनी जल्दी नहीं मचानी चाहिये, बल्कि जरा रुकना चाहिये, लौटकर इंतजार करना चाहिये। अब भी ऐसा करना संभव था; क्योंकि अभी हम सीमाक्षेत्र के 'नो-मैन्स-लैंड' में प्रविष्ट नहीं हुए थे, इसलिए हमें अपराधी नहीं गिना जा सकता था। जहां पर इस समय हम मौजूद थे, उससे हमारे बारे में हर तरह का संदेह किया जा सकता था।

एक अधेड़ औरत घर के पीछे से आयी और मुझसे उसने पूछा कि क्या तुम्हें खाने को कुछ चाहिये? मैंने एक गिलास पानी मांगा। डी. जी. खुश-सा होता हुआ वापस आया और बोला कि मामला पट गया है।

कुछ और प्रतीक्षा .....पुरुषों की आवाजें निकट-निकटतर आने लगीं.....और फिर मुझे जबर्दस्त शॉक लगा। जिस आदमी का वह मकान था, उसके साथ एक आदमी आ रहा था, लंबा मिलिटरी कोट पहने हुए। वह बहुत ऊंचा था और जी. पी. यू. के जवानों की खास अकड़-भरी चाल से चल रहा था। बड़े ही सिनिकल ढंग से वह मुस्करा रहा था, जिससे उसकी गंदी दंतपंक्ति दिखाई दे रही थी। उसने कहा कि आपको देखने आया हूं, ताकि अंधेरे में आपको खो न बैठूं। उसने यह भी कहा कि हमारा मेजबान वे जाकर हमें सीमा पर एक झुरमुट में बैठा देगा, जहां से हमें बाद में वे लोग वापस ले आयेंगे।

जब बाकी सब चले गये, मैंने डी. जी. से कहा कि यह सब मुझे बिलकुल भी ठीक नहीं लग रहा है। किंतु मुझे साथ चलने को राजी कर लिया गया।

एक सांझ और।.....हमारे झोले अब और भी खाली थे। हमें जंगल में ले जाया गया और पश्चिम की ओर कूच शुरू करायी गयी। चंद बिरले और कम कद्दावर सिल्वर वर्च वृक्षों के नजदीक, जिनके नीचे घने पौधे थे, हमसे कहा गया कि रेंगकर इन झाड़ियों में घुस जाओ और इंतजार करो।

मैं बहुत थक गयी थी और डर रही थी कि शायद रात की आखिरी कूच के लायक ताकत मुझमें नहीं रहेगी। यह खयाल बार-बार मेरे मन में उभरता रहा कि जरूर कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़बड़ है। मैं डी. जी. से प्रार्थना करने लगी कि अब हम इंतजार न करें, बल्कि खुद ही चल दें और अंधेरा घिर आये और दिखना बंद हो जाये, इससे पहले पश्चिम की ओर बढ़ जायें।

शुरू में वह मेरी बात सुनने को तैयार नहीं था; मगर जब नीरस प्रतीक्षा जारी रही और उसका अंत न दिखा, तो उसे भी लगने लगा कि क्या यह अच्छा न होगा कि हम खतरा उठायें और मार्गदर्शकों की प्रतीक्षा करने के बजाय, उनके बिना फौरन सीमा को पार करने का यत्न करें!

ठीक तभी चिल्लाहट और भागते कदमों की आहट सुनाई देने लगी। शुरू में हम नहीं समझ पाये कि हमसे इसका कोई संबंध हो सकता है; सो मैं आखिरी क्षण तक झाड़ी में ही रही, जब तक वे लोग, जो शोर-शराबा कर रहे थे, हमारे सिर पर पहुंचकर नहीं बोले कि उठो और हमारे सामने खड़े होओ। हम सीधे उनके फंदे में चले आये थे। यह झाड़ियों में दुबकाना, प्रतीक्षा कराना सब मेरा स्वांग था।

जब जी. पी. यू. के तीन जवान हमें वापस पैदल ले जा रहे थे, तो मैंने लंबे मिलिटरी कोट वाले उस कद्दावर आदमी को खड़े-खड़े उसी सिनिकल ढंग से मुस्कराते हुए देखा। न तो वह और न हमारा सवेरे वाला मेजबान ही सामने आये थे। सौभाग्य से शुरू में मुझे और डी. जी. को अलहदा नहीं किया गया और सीमा-चौकी की ओर चलते हुए हमें यह दोहरा लेने का मौका मिल गया कि बाद में सवाल पूछे जायें, तो क्या कहना है।

उस समय मेरी भावनाएं और विचार क्रोध और शर्म का मिश्रण थे, मगर साथ ही और इससे आपको अचरज होगा—शारीरिक राहत भी उसमें मिली हुई थी। जब इस बात का विश्लेषण मैं कर सकी, तो मुझे अपने आपसे नफरत हुई, मगर शीघ्र ही मैं समझ गयी कि यद्यपि इसका मुझे पता नहीं था, लेकिन वस्तुतः मैं अपनी शक्ति की समाप्ति पर पहुंच चुकी थी और शायद रात की खतरनाक यात्रा के लिए मेरे पास शक्ति रह नहीं गयी थी।

• ० •

छोटे-से शहर कोरोस्टेन के परिसर में स्थित अपनी नयी जेल में मुझे पहुंचे अब कुछ घंटे हो चुके थे, मगर कहीं भी भोजन के कोई चिह्न मुझे नजर नहीं आये। अपने चारों ओर घिरे आदमियों को मैंने बड़े ध्यान से देखा और सोचती रही कि उनकी मुखमुद्रा में वह क्या चीज है, जिसने बरबस मेरा ध्यान खींचा है.....कोई चीज जिसकी मैं व्याख्या नहीं कर पा रही हूं, सबमें कोई समानता, अभिव्यक्ति की कोई एकरूपता।

प्रतीक्षा के साथ-साथ अंतहीन वार्तालाप भी चलता रहा। वार्तालाप के विषय बदलते रहे—निषिद्ध माल बेचने की पराक्रम-कथाएं, औरतें और राजनीति से लेकर जूं, खटमल और कब्ज तक। और इनके बीच में भरपूर मात्रा में गंदी चौंका देने वाली, अपशब्द-भरी जुगुप्साजनक भाषा का प्रयोग। मजेदार बात तो यह थी कि उसमें कोई जहर नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। यह महज एक आदत थी, अपने कथन के अर्थ पर जोर देने का एक ढंग था। ऊंची आवाज में यह भाषा बोली जा रही थी और जब कैदियों को किसी के जेल के पास से गुजरने या पहरेदारों से बात करने आदि की आवाज सुनाई पड़ जाती, तो उनकी आवाज और ऊंची हो जाती। जेल में बंद और अज्ञात की दया पर निर्भर लोगों की चुनौती थी यह सारी दुनिया को। फिर भी मुझ जैसे बाहर से आये व्यक्ति को इसका अभ्यस्त होने में बहुत समय लगा; सच तो यह है कि मैं कभी अभ्यस्त हो न सकी।

दरवाजे पर सहमी-सी दस्तक हुई और मेरा प्रथम मित्र, जो इस कोठरी का 'स्तारोस्ता' यानी उत्तरदायी व्यक्ति था, दरवाजे पर गया। एक छोटी-सी खिड़की में से दो बंडल भीतर पहुंचे। एक में वोदका थी। दूसरे में बड़ी-सी डबलरोटी थी और कुछ सूअर की चर्बी। २४ जनों के लिए बस एक बोतल। कहीं से एक मग निकल आया और बारी-बारी से पहरेदार समेत सबने वोदका की एक-एक चुस्की और डबलरोटी का एक टुकड़ा व जरा-सी चर्बी पायी।

अजीबोगरीब दृश्य रहा होगा वह! इन तमाम लोगों के बीच मैं अकेली औरत; और दरवाजे के पास ऊंचे आले में रखी मद्धिम लालटेन की टिमटिमाती रोशनी में एक से दूसरे की ओर दोस्ती का प्याला बढ़ाते लोग। और तभी मुझे यह पता चला कि इन सब लोगों में साझी चीज क्या थी.....भूख! वे भूखे थे। हफ्तों से भूखे थे। अधिकारी शायद ही कोई खाना उन्हें देते थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि लोग यहां किस चीज पर जी रहे थे। राई (एक मोटा अनाज) की डबलरोटी जरूर मिलती थी; मगर मेरा खयाल है कि सिवा उसके कुछ भी न था।

सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि क्योंकि मैं एकमात्र महिला थी और नवागंतुक थी, इसलिए मुझे तख्तों के बीचो-बीच सब पुरुषों के मध्य सोना चाहिये।

जब मैंने सुझाया कि शायद यह अच्छा रहेगा कि मैं एक किनारे पर दीवार के साथ सोऊं, तो उन्होंने समझाया कि बीच में खटमलों का खतरा कम रहेगा। यद्यपि यह प्रस्ताव सहृदयता और आतिथ्य की भावना से ही किया गया था, तो भी मुझे बहुत अच्छा नहीं लगा। सब लोग तख्ते पर समा सकें, इसके लिए हम सबको एक ही करवट इस तरह लेटना पड़ता था कि एक के मुड़े हुए घुटनों में दूसरे के मुड़े हुए घुटने समा सकें। अगर हममें से एक भी अपनी मर्जी से करवट बदल ले, तो सबके लिए उतनी जगह कम हो जाती थी।

अपने दोनों ओर सटे शरीर, गंदी हवा, इतने सारे पुरुषों के बीच एकाकिनी होने का भय—इन सबके बावजूद मुझे नींद आयी। बेशक उचटती-उचटती नींद थी वह; मगर नींद न आने से तो उचटती नींद भली।

सवेरे 'भाषा' से मेरी नींद टूट गयी। भद्र पुरुषों ने नींद खुलने के साथ ही अपनी 'भाषा' शुरू कर दी थी। लेकिन जब मैं उठने लगी, तो उन्होंने कहा कि अभी लेटी रहो और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी ओर मत देखो, जब तक हम सुबह का काम पूरा न कर लें। सुबह का काम यानी जुओं का शिकार।

कमीजें और तमाम कपड़े उतार दिये जाते और हर सीवन, तह और जोड़ को टटोला जाता—जुओं और उनके अंडों के लिए। पकड़ाई में आने वाली सब जुओं को अंगूठे के नाखून से लकड़ी के एक फट्टे पर कुचला जाता (फट्टा इसी काम के लिए खास तौर से बुटाया गया था) और अंडे दोनों अंगूठों के नाखूनों के बीच कुचले जाते। प्रत्येक जूं को समुचित अपशब्दों से विभूषित किया जाता और चटाख्-से कुचला जाता, ताकि मरने से बच न पाये। यह कार्यक्रम प्रतिदिन बिला-नागा होता, इसमें कभी ढील न दी जाती।

जेल में आरंभिक दिनों में कपड़े उतारने और उनमें जुएं तलाशने से मैं डरती रही। (जुएं कपड़ों में रहती हैं, शरीर पर नहीं।) ऐसा करने का मतलब था—तमाम पुरुषों के आगे विवस्त्र होना। यहां भी स्तारोस्ता ने मेरी मदद की। जब कपड़ों में तेजी से बढ़ती हुई जुओं की आबादी पनप रही हो, तीन दिन तीन युग प्रतीत हो सकते हैं। और मैं खुजलाने से अपने को रोक नहीं पा रही थी। जब जूं अपना सिर पीछे को किये आपको काटने को बढ़ती है, तब आप उसकी हलचल बहुत ही साफ महसूस कर सकते हैं। ऐसा महसूस होगा, जैसे आपके कपड़े सजीव हो उठे हों। जुएं निरंतर आपके शरीर पर रेंगती फिरती हैं। स्तारोस्ता बोला—'बहन, जैसा हम करते हैं, वैसा अगर तुम न करोगी तो जल्दी ही जुएं तुम्हें जिंदा खा जायेंगी। तुम्हारी जुओं की आबादी हम तक भी आ पहुंचेगी। सो हिम्मत करो, कपड़े उतार डालो। हम लोग तुम्हारी ओर नहीं देखेंगे।'

और मैंने वैसा किया। आप नहीं समझ सकते जूं या उसके अंडे को पकड़ पाने और चटाख्-से कुचलने का सुख क्या होता है! उनकी गिनती करना भी सुबह के हमारे खेल का हिस्सा था। पहले दिन मेरे शिकार के बाद पुरुषों ने पूछा कि कितनी मारीं? और मेरा स्कोर सबसे बड़ा था। जिन तीन महीनों में वहां रही, एक भी पुरुष को कभी ताक-झांक करने का खयाल भी न आया।

कौन थे ये सब? थोड़े-से किसान थे, जो राज्य के प्रति अपना 'दायित्व' पूरा न करने के कारण वहां थे। बाकी अधिकांश डाकू थे या तस्कर-व्यापारी। उनमें से एक तो बहुत रूपवान युवक था २५ वर्ष का। वह एक लड़की को देश से भाग जाने में सहायता देने के कारण यहां भेजा गया था। वह सीमा-एजेंट था। लड़की सीमा पार करते हुए पकड़ ली गयी थी; मगर उसने उसे वापस भाग जाने में भी मदद दी थी। मैंने पूछा कि क्या तुम्हें अपने किये का पछतावा है? बोला कि बिलकुल भी नहीं, क्योंकि जेल में नौजवान और खूबसूरत लड़कियों का कोई काम नहीं। संकटग्रस्त लड़की के प्रति उसके इस वीरोचित कारुण्य के कारण लोगों ने उसका उपनाम 'सूरमा' रख छोड़ा था।

० ० ०

अपने जीवन का सबसे रोमहर्षक अनुभव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे जितोमीर जेल में हुआ। सारी जेल में पानी और मल-मूत्र आदि की निकासी की नयी व्यवस्था की जा रही थी, सो इस दौरान जेल में कोई भी संडास नहीं था। हमें मल-मूत्र-विसर्जन करने के लिए बालटियों का उपयोग करना पड़ता और रोज सवेरे बालटियां ले जाकर एक बड़े गढ़े में खाली करनी पड़तीं, जो कि जेल के पिछवाड़े में काफी दूरी पर बना हुआ था। गढ़े के किनारे न पक्के बनाये गये थे और न हमसार ही किये गये थे। गढ़ा खोदते समय जो मिट्टी निकाली गयी थी, सबकी सब ऊपर किनारों पर डाल दी गयी थी और उनसे गढ़े की ओर ढलवान बन गयी थी, जिससे बालटियों को ठीक से खाली करने में बड़ी कठिनाई होती थी। भारी बालटियों को सावधानी से उठाये मिट्टी के ढेर की चोटी पर पहुंचना पड़ता और फिसलकर गंदगी के गढ़े में गिरने से अपना बचाव करते हुए बालटियां उलटनी पड़तीं।

प्रायः जिसे भी यह काम करना पड़ता, वह बालटी को ढलवान पर ही उलट आता; जिससे मल-मूत्र बहकर नीचे जाता रहता।

एक दिन सवेरे यह काम करने की मेरी बारी आयी और यह तो बाद में ही मेरी समझ में आया कि दो और औरतें हठपूर्वक मेरे साथ क्यों चली आयीं। जब हम गढ़े के नजदीक पहुंचे, उन औरतों ने मुझे कहा कि बहुत सावधान रहना किनारे बहुत रपटीले हैं। मैं बालटी लिये किनारे तक तो पहुंच गयी, मगर जरूरत से एक कदम आगे भी चली गयी। बालटी भारी थी, उसे उलटते हुए मैं लड़खड़ा गयी और अगले क्षण मैं फिसल रही थी—नीचे गढ़े की ओर, जो मेरे लिए मुंह बाये हुए था। जीवन में पहली बार मैं चीख पड़ी।

भगवान को धन्यवाद कि दो भली औरतें मेरे साथ आयी थीं। उन्हें अंदेशा था कि ऐसा कुछ हो सकता है और वे चौकन्नी थीं। ठीक वक्त पर उन्होंने मुझे पकड़कर खींच लिया। मेरी क्या हुलिया बन गयी थी, इसका वर्णन मैं यहां नहीं करूंगी। बाद में उन भली औरतों ने बताया कि चंद हफ्ते पहले उन्होंने एक औरत को इसी तरह गढ़े में डूबते देखा था। मुझे नहला-धुलाकर स्वच्छ करने में उन्हें काफी समय लगा। मुझे उबारने वाली महिलाएं जेल के धोबीखाने में काम करती थीं; उन्होंने मेरे गंदे कपड़े भी धोये।

एक कैंप से दूसरे कैंप भेजा जाना कैदी के जीवन के सबसे कष्टकर अनुभवों में से होता है। अगर आप अकेले ही यात्रा न कर रहे हों तो भी मंजिल पर पहुंचने पर लगभग सदा ही आप जिन लोगों के संग आये थे, उनसे जुदा कर दिये जाते हैं। और अगर आप मेरी तरह बिलकुल अकेले ही एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा रहे हों, तो आपको हर बार एक नयी ही दुनिया का सामना करना पड़ता है। इस दुनिया के अपने ही नियम और रिवाज होते हैं, अब तक आप जो नियम व रिवाज जानते थे उनसे बिलकुल भिन्न। अब मैं जिस किस्म के शिविर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी (पश्चिम साइबेरिया में स्ट्रोई गोरोडोक में लगभग १९३३ में), वहां आप चुपचाप आज्ञा पालन करते हैं, मशीन की तरह काम करते हैं. भूखजनित विवशता के कारण खाना खाते हैं और बस अपने आपसे वास्ता रखते हैं। अगर अल्पकालीन दोस्तियां हो भी जायें, वे बिलकुल आदिम ढंग की होती हैं। बैरक बड़े-बड़े होते हैं और अक्सर ठसाठस भरे हुए; फिर भी उनमें आप खो जा सकते हैं, जैसे विशाल भीड़ में खो जाते हैं।

एक दिन काफी सांझ गये, ठिठुरते और थके-हारे हम लोहे की अंगीठी के गिर्द बैठे गर्माहट पाने की कोशिश कर रहे थे। भीषण पाले को झोपड़े में आने से रोकने का काम सौंपा गया था इस छोटी-सी अंगीठी को। इतने में किसी ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी और मेरे विषय में पूछा। ये आगंतुक थे जनरल कोर्श, लाल सेना के युवा जनरलों में से एक, जिन्हें अपने श्रेष्ठ क्रांतिकारी रेकार्ड के बावजूद दस साल की बंदी शिविर की कैद दी गयी थी।

इन जनरल कोर्श को क्रीमिया में श्वेत रूसियों के विरुद्ध सैनिक अभियान के लिए पदक से विभूषित किया गया था और जाने कैसे सोवियत रूसी जीवन के दुःखद और नकारात्मक पहलू से उनका कभी साबिका नहीं पड़ा था। फिर ये सचाइयां उनके जीवन में प्रविष्ट हुईं। उनकी पत्नी गिरफ्तार कर ली गयी और उस पर जासूसी का आरोप लगाया गया। अपनी पत्नी को इस इल्जाम से बचाने के लिए उन्होंने दोष अपने ऊपर ओढ़ लिया। वस्तुतः उन दोनों में से किसी ने भी अपने देश के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं किया था, फिर भी उन पर इल्जाम लगाया गया और उन्हें सजा दे दी गयी। अज्ञान और आत्मविस्मृति की नींद से जागे जनरल कोर्श क्रुद्ध व्यक्ति बन गये; और हर नया मामला देखकर वे अधिकाधिक लज्जा में डूब जाते कि मेरे चारों ओर जो कुछ हो रहा था, उससे मैं इस कदर अनजान बना रहा!

मैं यह पता लगाने के लिए गलियारे में गयी कि उन्हें क्या चाहिये। वे चिंतित और क्रुद्ध नजर आये। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आप जरा पुरुषों की बैरक में जा सकेंगी? दोपहर को एक नया कैदी आया था; इतनी भयंकर अवस्था में था कि उपस्थित पुरुषों में से कोई भी न उसके पास जा सका और न उससे कोई उत्तर ही पा सका, हालांकि उन्होंने उसे भोजन व मदद देने की पूरी कोशिश की। जनरल कोर्श बोले—'यहां पुरुष विफल रहे, वहां शायद स्त्री सफल हो जाये। कृपया आकर कोशिश कीजिये।'

जब हम अपने छोटे-से शिविर का आंगन पार कर रहे थे, जनरल ने बताया कि नया कैदी इंसान के बजाय कोई उत्पीड़ित जानवर लगता है। वस्तुतः ये व्यक्ति थे सुविख्यात प्रोफेसर खुदियाकोव, जो इंस्टिट्यूट आफ थर्मोडायनेमिक्स में रैम्सिन के दायें हाथ रहे थे। इन दोनों को जानने वाले बहुत-से लोगों का कहना था कि इंस्टिट्यूट में असली वैज्ञानिक दिमाग तो प्रोफेसर खुदियाकोव ही थे। रैम्सिन ने उनके ज्ञान का उपयोग किया था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और पार्टी का सदस्य तथा क्रेमलिन का दुलारा बनकर यह पद हासिल किया था।

हम पुरुषों की बैरक में गये और जनरल कोर्श मुझे सबसे दूर के और सबसे अंधेरे कोने में ले गये। सोने के तख्तों में सबसे ऊंचे तख्ते पर पांव नीचे समेटे बैठा हुआ था एक आदमी—या आदमी का अवशेष। चेहरा एकदम जर्द, सफेद दाढ़ी के बालों की खूंटियों से जड़ा; बाल बहुत छोटे कटे हुए; शरीर पर सूट के चिथड़े—सूट कभी बढ़िया रहा होगा। यह आकृति दुबककर एक करवट से बैठी हुई थी और जब मैं उसके पास पहुंची—हां, जनरल कोर्श पीछे ही रह गये थे और उन्होंने मुझे अकेले ही मामला सुलझाने को छोड़ दिया था—तो वह आकृति न तो बोली, न उसने नजर उठाकर मुझे देखा ही।

'प्रोफेसर,' यथासंभव शांत रहते हुए मैं बोली—'मुझे खुशी है कि आप हमारे बीच आये हैं। मुझे अभी-अभी पता चला कि आप आज ही सवेरे आये हैं। क्या अब मैं अपना परिचय दे सकती हूं?' और मैंने अपना नाम बताया। उत्तर देने के बदले बेचारे आदमी ने अपनी टांगें और भी अंदर सिकोड़ लीं; फिर अपना मुंह मेरी ओर फिराकर उसने अपना उपरला ओंठ ऊपर चढ़ा लिया और जंगली जानवर की-सी एक गुर्राहट मुझे सुनाई दी। मेरे पीछे जनरल कोर्श हांफ उठे। क्षण-भर मैं सोच न सकी कि मुझे क्या करना चाहिये। सहानुभूति की सामान्य अभिव्यक्ति का कोई फल न निकलता। अभी तो बैरक निर्जन थी; मगर घंटे-भर के भीतर सब लोग काम पर से लौट आते; और निश्चय ही उनमें सबके सब तो इस इंसानी अवशेष के प्रति सहृदय और सहानुभूतिपूर्ण न रहते।

जीवन में कभी ही हमें सही अंतःप्रेरणा होती है, और वह सचमुच वरदान होती है—दूसरे मानव के लिए सर्वथा स्वार्थमुक्त सच्चा गहरा प्यार। वह प्यार मुझमें आविर्भूत हुआ; और मातृत्व का भाव भी, जो कि मैं समझती हूं, प्रत्येक स्त्री में निहित होता है। मैंने गुर्राहट की उपेक्षा कर दी। जब मैंने फिर बोलना शुरू किया तो दुबारा गुर्राहट हुई। पूरे दस मिनिट या अधिक समय तक मैं जो भी विषय सूझा, उस पर बोलती रही—बिलकुल नगण्य चीजों से लेकर पुस्तकों और संगीत तक तमाम विषयों पर। और सारे समय मैं महसूस कर रही थी कि जनरल कोर्श ध्यान से देख रहे हैं कि तख्ते पर दुबकी उस धूसर आकृति पर कोई प्रतिक्रिया होती है कि नहीं।

काफी अंधेरी जगह थी वह। दरवाजे के निकट रखा तेल का दीया एकमात्र स्रोत था प्रकाश का। मैं प्रोफेसर का मुखड़ा ठीक से देख नहीं सकती थी; मगर कुछ वक्त बाद मैंने देखा कि उनका पूरा शरीर तनाव से मुक्त हो रहा है। उन्होंने अपने पांव फैलाये और मेरी ओर मुंह फेरा। बस मैं बोलती ही गयी। मैंने कहा कि मुझे विश्वास है, यहां आपको बहुत सारे मित्र मिल सकेंगे। और हम सब आपको अपने बीच पाकर बहुत ही प्रसन्न हैं.....और आखिरकार मैंने बोलना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाप्त किया।

क्षण-भर चुप्पी रही; और तब तख्ते पर से एक आवाज आयी। बिलकुल अप्रत्याशित थे वे शब्द। पीछा किये जाते हुए वन्य पशु और मनुष्य के बीच की दीवार टूट चुकी थी। 'अगर मैं नीचे न आऊं तो मुझे माफ कर दीजियेगा,' उस आवाज ने कहा—'मैं किसी भद्र महिला के सामने आने की हालत में नहीं हूं। मैं चिथड़ों में लिपटा हूं।'

० ० ०

'संस्कृति' को बढ़ावा देने की परिपाटी थी और दूसरे शिबिरों की तरह यहां पर (पश्चिम साइबेरिया में अल्ताई पर्वतों के निकट बोरोब्लियांका में) भी कर्मचारियों ने अपने तथा शिबिर-अधिकारियों के मनोरंजन के लिए एक नाटक आयोजित किया। वेशभूषा, अन्य सज्जा और कई अभिनेता-अभिनेत्रियां हमारे शिबिर से थे। नाटक के दिन अभिनेत्रियों की वेश सज्जा की जिम्मेदारी मैंने संभाली थी।

मैं वेशसज्जा की कोठरी में सामान खोल रही थी कि एक अत्यंत सुसंस्कृत पुरुष की आवाज आयी कि क्या आप मेरी टाई बांध देंगी? मैंने मुड़कर देखा अपने पीछे, प्रारंभिक उन्नीसवीं सदी की काली पोशाक में सजे एक पुरुष को खड़े पाया। मैंने उसकी लेस-युक्त टाई बांधी और सोचती रही कि ऐसा गजब का अभिजात-वर्गीय दिखने वाला कैदी भला कहां से चला आया! कमरे से जाते हुए उसने मुझसे पूछा कि आप कौन हैं? मैंने कहा—'उसका कोई महत्त्व है क्या? मैं तो यहां आप लोगों के वेशसज्जक की सहायता करने आयी हूं।'

सचमुच आश्चर्य की बात थी कि उस सांझ कितनी बार इस युवक की वेशभूषा को संवारना जरूरी हो उठा था—सो भी हर बार मेरे ही हाथों। सांझ बीतने तक वह मेरा नाम जान चुका था, मुझे अपना परिचय दे चुका था और कई बार एक सुंदर युवती द्वारा (जो कि 'नाचालिक' यानी कैंप-नायक की बेटी थी) वापस बुलाया जा चुका था और मेरे 'यश' को और उजागर कर चुका था।

उसका नाम दिमित्री ओलोंब्स्की था। मुझसे वह कई-एक साल छोटा था। उसे तीन साल की सजा हुई थी, जिसमें से अब एक ही साल बाकी था। उसने बहुत जोर देकर कहा कि हम फिर मिलें। प्रतिभा तो उसमें रत्ती-भर भी नहीं थी। चूंकि नाचालिक की बिटिया उस पर फिदा हो गयी थी, इसलिये उसे भूमिका मिल गयी थी। अगली बार जब मेरी उससे मुलाकात हुई, तब भी वह उसके साथ थी। मगर मुझे देखते ही वह उसे छोड़कर सीधे मेरी तरफ चला आया और कैंप के दरवाजे तक मुझे पहुंचाने भी आया। मैंने उसे आगाह किया कि तुम आग से खेल रहे हो। सुंदरी जरूर तुम्हारे व्यवहार की शिकायत अपने पापा से करेगी।

मुझे मील-भर दूर जंगल में टमाटरों के एक विशाल खेत में भेज दिया गया था। वहां जब एक रविवार को हमारे वन-कुटीर में मेरा नाटकीय प्रशंसक नमूदार हुआ, तो मैं चकित रह गयी। उसने मुझसे मिलने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुमति कैसे प्राप्त कर ली थी, मैं नहीं सोच पायी; मगर मेरे सामने वह खड़ा था, पुराने कपड़ों में भी बड़े सलीके से सजा हुआ और सदा की तरह साफ-सुथरा। मैं उसकी भावनाओं के बारे में ज्यादा नहीं कहूंगी। मैं उसकी मोहिनी मूरत और नारी का अनुरंजन करने की नितांत शिष्ट रीति से अप्रभावित न रह सकी थी; मगर मुझे यह असंभव-सा लगा और हमारी उम्र के अंतर को देखते हुए गलत भी।

टमाटर के खेत पर मेरे रहते हमारी टोली में १२ कैदी और जोड़ दिये गये थे। ये सब अशक्त और रोगी थे, जिन्हें थोड़े समय बाद रिहा कर दिया जाने वाला था। और इन सब अभागों को रिहा इसलिए किया जा रहा था कि इनके जीने के सिर्फ चंद दिन अब बाकी रह गये थे। ज्यादातर ये तपेदिक के मरीज थे। इनमें से एक तो हरदम इसी खोज में रहता था कि आंतों को दिन-रात कुतरती हुई खौफनाक भूख से त्राण देने वाली कोई चीज मिल जाये। कितनी ही बार मुझे उसे टांगों से पकड़कर कूड़े के गढ़े पर से खींचना पड़ा था। गढ़े के किनारे वह पेट के बल लेट जाता और धीमे-धीमे रेंगकर, कूड़े में मुंह देकर वहां जो कुछ मिले उसे दांतों से उठा लेता। खास कुछ मिलता नहीं था—आलू व चुकंदर के छिलकों और सड़ी मछलियों के टुकड़ों के सिवा।

टमाटर के खेत पर का शांत जीवन चार दिन चला। फिर अचानक आदेश आ गया कि बोरिया-बिस्तर बांधो और रात के ८ बजे तक बोरोव्लियांका कैंप में पहुंच जाओ। केवल चीनी माली, अशक्त कैदी और मुट्ठी-भर कर्मचारी फार्म पर रह गये।

दूसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय मैंने अपना सामान बांध लिया, उसे उन गाड़ियों में से एक में रख दिया, जो हमारा सामान ३५ मील दूर बोरोव्लियांका ले जाने वाली थीं, और गाड़ीवान को उस पर नजर रखने को कहकर ओर्लोव्स्की की खोज में निकली, ताकि उसे बता दूं कि दूसरी औरतों के साथ मेरा भी यहां से तबादला किया जा रहा है। हमें जाइवित्सा शिबिर (चीड़ का बीरोजा इकट्ठा करने वालों का शिबिर) भेजा जा रहा था। जानकारों का कहना था कि वहां जाने का निश्चित अर्थ है तिल-तिल करके मरना।

शाम के पांच बजे मैं बोरोव्लियांका पहुंची और मैंने ओर्लोव्स्की के नाम एक पुर्जा लिखकर किसी तरह दफ्तर के एक क्लर्क को पकड़ा दिया और प्रार्थना की कि जैसे भी हो फौरन यह उस तक पहुंचा दो। क्लर्क बोला—'मुझे मालूम है, तुम्हें जाइवित्सा भेजा जा रहा है। मैं फौरन ओर्लोव्स्की को खोज लूंगा।'

अपने पहुंचने की सूचना दफ्तर में देकर मैं शिबिर और उसके बाहर बनी गैरबंदियों की गंदी बस्ती की सीमा पर स्थित छोटी-सी झील के तट पर पहुंची। किसी ने तट पर अलाव सुलगाया था और उसके पास लकड़ी का एक लट्ठा रख दिया था। अपने माल-असबाब की पोटली नीचे रखकर मैं लट्ठे पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठ गयी और जाइवित्सा जाने वाले काफिले के तैयार होने की प्रतीक्षा करने लगी। मुझे आशा थी, दिमित्री ओर्लोव्स्की मुझे खोज लेगा और यहां आ पहुंचेगा।

एकदम शांति छायी हुई थी। दूरी ने शिविर के शोर-गुल को दबा-सा दिया था। बीच-बीच में कोई इक्की-दुक्की चिड़िया पंख फड़फड़ाती हुई ऊपर से गुजर जाती थी। इर्द-गिर्द की शांति ने मेरे भय को सुला-सा दिया था। फिर तेज कदमों की आहट निकट-निकटतर आती चली गयी, और ओर्लोव्स्की लट्ठे पर मेरी बगल में आ बैठा। काफी देर तक हम कुछ नहीं बोले। हममें वह आपसी समझ उत्पन्न हो गयी, जिसमें शब्द आवश्यक नहीं रहते। अंधकार-भरे जंगल से रेंगकर आते हुए झुटपुटे ने झील के पानी को रिक्त स्थान का-सा रूप दे दिया था; फिर एक-एक करके कई तारे उसमें प्रतिबिंबित होने लगे।

काफी ठंड हो गयी थी अब। मैं कांपने लगी और मेरा सहचर आग को जिलाये रखने के लिए सूखी टहनियां और लकड़ी बटोरने लगा। वह एक घुटना जमीन पर टेककर अलाव के पास बैठ गया, राख को कुरेदकर उसने लकड़ियां आग में डालीं। जब लकड़ियों ने आंच पकड़ ली, एक घुटने के बल बैठे-बैठे ही वह एकाएक मेरी ओर मुड़ा और बोला—'मुझसे विवाह करोगी?' यह बात इतनी सहजता और सचाई से कही गयी थी कि इसकी उपेक्षा करना असंभव था। मैंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। उसने बोलना जारी रखा—'हां, इस क्षण से मैं तुम्हें अपनी पत्नी मानूंगा।' बस इतना ही, और कुछ नहीं। वह तब तक चुप बैठा रहा, जब तक आसमान को छोड़कर कहीं कोई रोशनी नहीं रह गयी। हां, जब वह बुझते अलाव को किसी टहनी से कुरेदता तो कोई इक्की-दुक्की लौ भड़ककर उसके हाथों को चमका जाती। फिर एक औरत मुझे बुलाने आ पहुंची।

जब हमारा काफिला तैयार हुआ, तो रात के १० बज गये थे। निहायत बूढ़े घोड़ों द्वारा खींची जा रही सामान की गाड़ी बहुत धीरे-धीरे घने जंगल में प्रविष्ट हुई। चार पहरेदार हमारे साथ थे—दो आगे, दो पीछे। सब मिलाकर कोई १५० स्त्री-पुरुष थे। मेरी सब संगिनियां, जिनकी संख्या ५० थी, हट्टी-कट्टी थीं। उन सभी को फसल कटाई के बाद कोल्खोस और सोव्खोस के खेतों में से दाने बीनने के अपराध में दस-दस वर्ष की सजा हुई थी। वे सब वोल्गा के इलाके की थीं, खुले खेतों और चरागाहों की रहनेवालीं, और जंगल से उन्हें डर लग रहा था।

दो घंटे तक तो अच्छी सड़क रही, फिर तंग कच्ची राह शुरू हो गयी, जिसमें वृक्षों की जड़ों का जाल बिछा हुआ था। अंधेरे के कारण जड़ें दिखाई भी नहीं देती थीं। इस कारण काफिले की चाल जरा मंद हो गयी, मगर अब भी इतनी तेज तो थी ही कि हम हांफती हुई औरतें बार-बार पीछे छूट जाती थीं। मुझे जोरों की प्यास लग आयी।

जंगल और अधिक अंधेरा, और अधिक घना होता जा रहा था, पाइन वृक्ष भी अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक ऊंचे मिल रहे थे। वृक्षों की कलगियों में से अजीब फुसफुसाहट आ रही थी और नीचे उगे झाड़-झंखाड़ में से अजीब सरसराहट। औरतें आपस में पास-पास सिमट आयीं-डरी और सहमी हुई। वे अधिक तेज चलने और पुरुषों के अधिक पास व काफिले के बीचों-बीच रहने की चेष्टा कर रही थीं। पुरुष पहले तो मजाक करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहे थे; मगर अब वे भी चुप हो चले थे। हमारा काला मानव-समूह एक लंबी चलायमान परछाईं में बदल गया। पहरेदारों के सिवा कोई किसी से बात नहीं कर रहा था।

जब हम शिविर में पहुंचे तो दोपहर बीत चुकी थी। कैंप के रसोईघर के बाहर पड़ी मेजों के पास बैठकर हम भोजन की अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करने लगे। तभी जंगल में से एक आदमी घोड़े पर सवार होकर आया और सीधे पहरेदारों के पास जा पहुंचा, जिन्हें अब खाना परोसा जा रहा था। उसने पहरेदारों की छुट्टी कर दी और हमारे पास आकर घोषणा की कि तुम लोगों को यहां खाना नहीं मिलेगा, घंटे-भर में मैं तुम्हें मंजिल पर ले जाऊंगा। हम भला कर ही क्या सकते थे! मेरे पास कुछ बिस्कुट बाकी थे, मैंने बैठी हुई औरतों में बांट दिये। फिर मैंने जाकर पास के एक छोटे नाले में पांव धोये। पानी के पास ही घास पर लेटकर सो गयी।

घंटे-भर या उससे ज्यादा समय बाद हम फिर कूच कर रहे थे। इस बार कच्ची सड़क पर नहीं, बल्कि पगडंडी पर जो कि बीच-बीच में बिलकुल ही अदृश्य हो जाती थी। हमारे नये नेता ने अपना घोड़ा पीछे ही शिविर में छोड़ दिया था। पगडंडी से वह बहुत अच्छी तरह परिचित जान पड़ता था। हम अब कतार बांधकर एक के पीछे एक चल रहे थे और ऊंचे पाइन वृक्षों की जड़ों से ठोकर खाने व गिरने से बड़ी सावधानी से अपना बचाव कर रहे थे।

चारों ओर का दृश्य इतना सुंदर था कि मैं दुखते पांव, खाली पेट और जब-तब अजीब ढंग से धुक-धुक कर उठने वाले दिल की बात भूल ही गयी। एक जगह पगडंडी एक गोल मैदान के पास से गुजरी, जो कि जंगली फूलों से इतनी रंगारंग थी कि मैं झुककर कुछ फूल बीनने का प्रलोभन रोक न सकी। अभी मैं सीधी भी नहीं हो पायी थी कि मेरे पास से एक बिलकुल बेजान आवाज आयी—'रोटी, मुझे रोटी दो बहन!' एक प्रेत सरीखा आदमी मेरे बिलकुल पास खड़ा था। और उसने मैले-भदरंग टाट की पतलून पहन रखी थी और उसी कपड़े का छोटा-सा कोट। भूख से कृश और हरापन लिये सफेद चेहरे में से वह सूनी आंखों से मुझे देख रहा था। 'रोटी', वह पुनः बोला—'क्या तुम्हारे पास रोटी बिलकुल नहीं है?' मैं बोली—'नहीं!' और अपनी टोली में जा मिलने को दौड़ पड़ी। लोगों ने हमारे यहां भेजे जाने की बात सुनकर सिर हिलाते हुए, दया-भरी दृष्टि से हमें जो निहारा था और हमें कुछ भी नहीं बताया था, उसका कारण यह था! तो हमारी किस्मत में यही सब बदा है! और तब मुझे

१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन लोगों की आहट सुनाई दी, जो जंगल में काम कर रहे थे और धीरे-धीरे मर रहे थे, और जिनका स्थान हम लेने जा रहे थे। आहट पहले एक ओर से आयी, फिर दूसरी ओर से। बड़ी ही स्पष्ट और संक्षिप्त खट-खट की आवाज थी यह, जो शुरू में तो कठ-फोड़वे के चोंच मारने की आवाज का वहम करा सकती थी, मगर उससे भारी थी और ज्यादा अंतर से होती थी। मैंने अपनी टोली के एक पुरुष से पूछा कि यह क्या है और उसने बताया कि अब से हम जो काम किया करेंगे, यह उसकी आवाज है। लोग वृक्षों से बीरोजा इकट्ठा कर रहे थे। उसने यह नहीं बताया कि यह काम किया कैसे जाता है। कुछ देर के लिए पाइन वृक्षों का साथ छूट गया और हम घनी झाड़ियों में से चलते रहे। इसके बाद फिर हम पगडंडी पर पहुंच गये, जिसके किनारे ऊंचे घने वृक्ष खड़े थे, जिनमें से सूरज की धूप बिलकुल भी छन नहीं पाती थी।

एक बार फिर नीले कपड़ों वाला एक आदमी हमारी राह काटता हुआ निकला। वह भूत की तरह चल रहा था। उसके केवल अस्थि-चर्ममय हाथ छोटी आस्तीनों से बाहर लटक रहे थे। मृतक-तुल्य चेहरे वाले ऐसे कई आदमियों से हमारी मुलाकात हुई। कुछ लोग बालटियां उठाये हुए थे और कुछ लोग अजीबोगरीब हथियारों जैसे दिखाई देने वाले औजार थामे हुए थे।

मुझे ऐसा लगा कि ये मनुष्य नामधारी पुतले किसी दुष्ट जादूगर के कब्जे में हैं, जो इन्हें अपने पंजों में पकड़े हुए है और इनके प्राण चूस रहा है। आखिरकार चंद दिनों बाद अचानक ही तमाम औरतों में भय की लहर दौड़ गयी। जंगल और उसमें छिपे हुए अज्ञात खतरों का भय। पुरुष भी आतंकित हो गये। इस भय का जी. पी. यू. के प्रति-शोधों से कोई संबंध नहीं था। अस्पष्ट और तर्कहीन भय था यह।

एक दिन मैं जब जंगल में राह भटक गयी, तो मुझे बड़ा आघात-सा लगा। मैं शार्टकट से एक जगह पहुंचना चाहती थी, जहां मुझे काम दिया गया था। मगर गलती से उलटी दिशा में मुड़ गयी। बहुत कोशिश करके भी मैं सही राह नहीं ढूंढ़ पायी। शिविर से दूर ही दूर होती जा रही थी मैं। सभी कुछ नया और अनजाना लग रहा था। मैंने फैसला किया कि मुड़कर वापस उसी राह लौट पड़ूं और अपने साथी श्रमिक की प्रतीक्षा करूं। इसी चीज ने मेरी जान बचायी।

मेरे साथी श्रमिक ने देखा कि मैं शाम के खाने पर हाजिर नहीं हूं, जब कि मैंने कहा था कि मैं लौट आऊंगी। शाम को जब उसने अपने हिस्से का काम पूरा कर लिया, तो वह मेरी खोज में निकला। भला आदमी था, किसी को उसने यह किस्सा बताया नहीं। अगर शिविर के अधिकारियों को पता लग जाता तो मुझ पर भाग निकलने की कोशिश करने का इल्जाम मढ़ सकते थे वे।

पतझड़ के आरंभ में शिविर में एक आदेश आया। 'कैदी फ़ॉन मेक को सभी कठोर और शारीरिक काम-काज से बरी कर दिया जाये और बिना पहरे के वापस बोरोव्लियांका के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुख्य कार्यालय में भेज दिया जाये।' तमाम शिविर में तरह-तरह की अटकलें लगायी जाने लगीं। औरतों को मेरी जुदाई का दुःख था; पुरुष अंदाज भिड़ा रहे थे कि क्या इसका मतलब रिहाई है; और शिविर के अधिकारी मुझसे जरा अदब से पेश आने लगे थे। मगर मैंने बहुत ज्यादा आशा नहीं करना ही ठीक समझा।

जिस दिन मैं वापस बोरोव्लियांका लौट चली, अच्छी धूप खिली हुई थी। मैं घोड़ा-गाड़ी में अपने होल्डाल पर जा बैठी। गाड़ी एक औरत हांक रही थी। कोई पहरेदार नहीं था, सिर्फ दो सामान्य कैदी साथ थे। मंजिल काफी दूर थी, तीस मील से ज्यादा दूर; सड़क भी अच्छी नहीं थी। पर पूरा दिन हमारे पास था, इसलिए कोई जल्दी नहीं थी।

पाइन वृक्षों की गंध, सड़े पत्तों की बास और झाड़ियों की महक हवा में बसी हुई थी। जीव-जंतु तो जैसे वन से गायब ही हो गये थे। इससे वन की निःशब्दता स्पष्ट इंद्रिय-ग्राह्य हो गयी थी। हमारे घोड़े पैर घसीटते हुए चलते रहे। जहां भी चढ़ाई आती, हम गाड़ी से कूद पड़ते और पैदल चलते हम लोग ज्यादा बात नहीं कर रहे थे; बहुत प्यारी शांति और नीरवता में हम लिपटे हुए थे।

मेरी समस्त एकाकिता, स्वजनों के लिए हसरत और चिंताएं एक साथ उमड़ आयीं। मैं गाड़ी के एक पार्श्व की ओर मुंह किये, पांव नीचे लटकाकर बैठी हुई थी, ताकि मेरी संगिनी मुझे ठीक से देख न सके, और मैं प्रार्थना कर रही थी। दोपहर को हम घोड़ों को चारा देने के लिए ठहरे और मैं रेत के एक ढूह पर धूप में सो गयी। अपने एक साथी की आह से मेरी नींद खुल गयी। मैंने पूछा—'क्या बात है?' बोला—'खास कुछ नहीं। बस चारों ओर इतनी शांति है कि जरूर ही यहां से परमात्मा बहुत पास होगा।' थोड़ी देर बाद हम फिर रवाना हो गये और रात पड़े बोरोव्लियांका पहुंचे।

मुझे जरा अच्छे मकान में भेजा गया, जहां जरा ज्यादा साफ-सुथरी औरतें रहती थीं। अगले दिन मैं मुख्य कार्यालय गयी। हर किसी के चेहरे पर मुस्कान थी। मुझे कठोर श्रम से बरी करने का आदेश सीधे मास्को से आया था। इसका अर्थ था कि मास्को में मेरा प्रभावशाली लोगों से संबंध है।

दफ्तर में मुझे ओर्लोव्स्की कहीं नजर नहीं आया और मुझे चिंता हुई: परंतु किसी से पूछने की हिम्मत नहीं हुई; खासकर इसलिए कि दफ्तर के किसी कर्मचारी से मेरा परिचय नहीं था। जब मैं दफ्तर से लौट चली, तो एक क्लर्क मेरे पीछे-पीछे आया और उसने एक मुहरबंद लिफाफा मेरे हाथ में थमाया। यह ओर्लोव्स्की का विदाई-पत्र था।

एक ही सप्ताह पहले वह अन्य बहुत-से लोगों के साथ सुदूर पूर्व को निर्वासित कर दिया गया था, बैकाल-आमूर रेल-लाइन के निर्माण का काम करने। उसने मुझसे संपर्क साधने की कोशिश की थी, मगर विफल रहा था। जिस रात मैं जंगल में भेजी गयी थी, उस रात का अपना कथन वह भूला नहीं था। पत्र पर संबोधन था—'मेरी पत्नी को।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ते बचपन का साथी – इनक्रिमिन*!

ये छलकता उत्साह, ये चुस्ती, ये फुर्ती...ये हंसते खेलते तन्दरुस्त बच्चे...इन दिनों जब इनका शरीर दिन दुगनी रात चौगुनी गति से बढ़ता और विकसित होता है, इन्हें इनक्रिमिन जरूर दीजिये। लाभदायक विटामिन, लोहतत्व और आवश्यक अमीनो एसिडस युक्त इनक्रिमिन बढ़ते बच्चों के लिये बहुत आवश्यक है।

बढ़ता बचपन!

ड्रॉप्स–२ महीने से २ साल तक के बच्चों के लिये।
सिरप–१ वर्ष तक के बच्चों के लिये।

इनक्रिमिन*

इनक्रिमिन टॉनिक – बढ़ते बच्चों के लिये वरदान!

डॉक्टरों का विश्वासपात्र नाम (Lederle) सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग।

*अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क.

SISTA'S-INC-48 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—कन्हयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

मेरा आधी शताब्दी का अनुभव है कि जीवन नियमित हो, तो थकान कम से कम होती है। मेरे लिए नियमित जीवन का अर्थ है—श्रम, विश्राम, भोजन और मनोरंजन का समन्वय। यह बिगड़ा कि थकान आयी।

मैं शारीरिक रूप से थक जाता हूं, तो एकांत में अपनी देह को ढीला छोड़कर कुछ देर लेट जाता हूं, हल्की झपकी लेता हूं; ज्यादा थकान हो तो पैरों में घी मलवाता हूं, उठकर हाथ मुंह-पैर धोता हूं या गर्म पानी में नहा लेता हूं, चाय का प्याला पीता हूं, गपशप करता हूं और बस एकदम ताजा हो जाता हूं।

शारीरिक रूप से ठीक हूं और मानसिक रूप से ऊबा हूं, तो हाथ-मुंह-पैर धोकर पार्क या किसी दूसरे प्राकृतिक स्थान में बैठकर कोई उत्तम पुस्तक पढ़ता हूं और ताजा हो जाता हूं। कभी ज्यादा ऊब हो, तो तुरंत किसी श्रेष्ठ पुरुष के पास चला जाता हूं और उसकी उदात्त मानवता के स्पर्श का सुख अनुभव करता हूं।

मानसिक थकान की दवा आनंद है। वह जिसे जैसे प्राप्त हो वही करना चाहिये, और शारीरिक थकान की दवा विश्राम है, वह जिसे जसे मिले, वही करना चाहिये।

थक-ऊब जाने पर

—विष्णु प्रभाकर

थकने और ऊबने के नाना रूप हैं। पहाड़ों में बहुत घूमा हूं, थका भी हूं। तब कहीं बैठकर उस मधुर-कठोर सौंदर्य में डूब जाना तन-मन को सहला गया है। यों पैरों की थकान मिटाने के लिए दीवार के सहारे उन्हें टिकाकर लेट गया हूं। मेरे लिए घूमना अपने आपमें ऊब का प्रतिकारक है।

लिखते-लिखते थक जाता हूं तो शवासन की मुद्रा में लेटकर शरीर को मुक्त छोड़ देता हूं। धीरे-धीरे कल्पनाओं में डूब जाता हूं। उस समय कहीं दूर से आती संगीत की मादक ध्वनि यदि प्राणों को छू जाये तो जैसे जी जाता हूं। खिलखिलाते शरारती बच्चे और प्रिया का सहवास थकावट को न जाने कहां धकेल देता है।

और अब तो 'विपश्य' साधना के द्वारा मन का मूर्धन्य स्थापित करके अंग-अंग का सर्वेक्षण करने में जिस आनंद की अनुभूति होती है, वह सभी प्रकार की थकावट और ऊब को मिटाने में सहायक होती है।

*

'क्या कल रेस में आपकी किस्मत चमकी ?'

'बस थोड़ी-सी ही चमकी। मैं सब कुछ हारकर उठा ही था कि वहां पड़ी अठन्नी मुझे मिली। सो, पैदल चलकर घर आने के बजाय बस में बैठकर आया।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीतगिरीशम्

त्रि. शूलपाणि

पीयूषवर्षी कवि जयदेव का 'गीतगोविंद' संस्कृत काव्य के रसिकों में बहुत समादृत है अपनी अत्यंत रसमय और गेय गीतात्मक शैली के कारण। 'गीतगोविंद' की ही परंपरा में कविनृपति रामभट्ट ने 'गीतगिरीशम्' काव्य की रचना की। (देवभाषा प्रकाशन, दारागंज, प्रयाग ने इसे साहित्याचार्य श्री प्रभातशास्त्री द्वारा संपादित कराकर संवत् २०२७ में प्रकाशित किया है।)

'गीतगिरीशम्' के रचना-काल तथा कृतिकार के विषय में निश्चयात्मक रूप से कुछ भी कहना कठिन है। विद्वान संपादक ने लिखा है—'केवल अनुमान के आधार पर इसका जन्म सोलहवीं शताब्दी के पूर्वभाग में होना कहा जा सकता है।'

इसी प्रकार काव्य के रचना-काल के संबंध में भी वे लिखते हैं—'प्राचीन काल में आज की भांति यातायात एवं मुद्रणादि की सुलभ व्यवस्था न थी। अतः किसी ग्रंथ के प्रचार पाने तथा ख्यातिप्राप्त होने में सौ वर्ष व्यतीत होते थे। इस तर्क के आधार पर "गीतगिरीशम्" का रचना-काल सोलहवीं शताब्दी के पूर्वभाग को स्वीकार करना अनुचित नहीं है।'

भूमिका में यह भी बताया गया है कि जिन दो पांडुलिपियों के आधार पर संपादन-कार्य हुआ है, उसका प्रतिलिपि-काल प्रायः १७०२ ई. है। संपादक ने काव्य को 'राग-काव्य' कहा है।

कवि ने काव्यारंभ में मंगलाचरण के उपरांत श्रीहर्ष, भारवि, कालिदास आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। जयदेव के प्रति उसने अपनी विशेष कृतज्ञता इन शब्दों में व्यक्त की है:

हर्यक्षं कपिरनुवर्तते यथायं
खद्योतो रविमपि निर्धनो यथाढ्यम्।
औत्सुक्यादहमधना तथानुकुर्वे लालित्यं
कविजयदेवभारतीनाम्॥ (सर्ग १·३)

—जैसे वानर सिंह का, खद्योत रवि का और निर्धन धनिक का अनुसरण करता है, उसी तरह मैं औत्सुक्यवश जयदेव की भारती के लालित्य का अनुसरण कर रहा हूं।

परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि 'गीतगिरीशम्' मात्र 'गीतगोविंद' का अनुसरण है।

कवि ने काव्यारंभ में गणपति की वंदना की है, फिर शिव के अष्टरूपों का स्मरण। काव्य के नायक शिव व नायिका पार्वती हैं।

रागकाव्यों में कथा-संदर्भ अत्यंत अल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है और कवि उस संदर्भ का पल्लवन भाव-अनुभावों के माध्यम से करता है। प्रेमियों के वियोग-संयोग से काव्य का आदि-अंत होता है। इस सुनिश्चित रीति का अनुसरण 'गीतगिरीशम्' में किया गया है।

शिव, पार्वती, गंगा, जया-विजया (दो सखियां) ये पांच पात्र हैं। काव्य बारह सर्गों में विभाजित है। कथासंयोजन इस प्रकार है:

शिव तथा गंगा के प्रणय-व्यापार का परिज्ञान होने पर पार्वती का रूठना एवं वसंत-वर्णन (प्रथम सर्ग);

पार्वती का शिव के वियोग में विरहतप्त होना (द्वितीय सर्ग);

पार्वती का जया-विजया नामक सखियों के अनुरोध पर लौटकर शिव के समीप आगमन, किंतु उनके मस्तक पर पुनः गंगा को देखकर प्रत्यागमन (तृतीय सर्ग);

पार्वती को लौटते हुए देखकर शिव का दुःखी होना (चतुर्थ सर्ग);

विरहतप्त शिव का सखी जया को अपनी दूती बनाकर पार्वती के समीप भेजना (पंचम सर्ग);

शिव के अनुराग का आभास होने पर पार्वती की दशा अत्यंत शोचनीय हो जाना (षष्ठ सर्ग);

पार्वती के विरह का मार्मिक वर्णन (सप्तम सर्ग);

अपनी व्यथा के शमनार्थ पार्वती का प्रातःकाल लौटकर शिव के पास आना और शिव का उन्हें प्रसन्न करने के लिए अनुनय-विनय करना (अष्टम सर्ग);

पार्वती का उपालंभ देकर पुनः शिव को छोड़कर चली जाना (नवम सर्ग);

पार्वती की सखी जया के प्रयास से शिव-पार्वती का पुनर्मिलन (दशम सर्ग);

पुनः शिव द्वारा पार्वती की चाटुकारिता में की गयी विनय का वर्णन (एकादश सर्ग);

और अंत में, शिव-पार्वती के रतिविलास का वर्णन (द्वादश सर्ग)।

कवि को अपने कवित्व पर बहुत गर्व है। अपने मुखचंद्र से निस्सृत वाणी को वह पृथ्वी-मंडल के विद्वत्समाज के लिए अमृत-सदृश सुखदायिनी घोषित करता है तथा अपनी कविता में इक्षु, शर्करा आदि से भी अधिक माधुर्य का दावा करता है:

कविनृपतिरमजिद्वदनचन्द्रच्युता
भूविबुधसुखकरसुधेयम्।
हरतु हरसेवकश्रुतियुगलचुलुकिता
भवदहनबलमपरिमेयम्॥
श्रीकविरामभणितमतिसुन्दर-
गिरिजोद्यमनसुगीतम्।
ऐक्षवमधुमाकन्दसिताऽमृत-
रसमधुरत्वमतीतम्॥

काव्य को द्वादश सर्गों में विभाजित करके शायद कवि इसे महाकाव्य की कोटि में परिगणित कराना चाहता था; परंतु शास्त्रकारों द्वारा निरूपित महाकाव्य-लक्षण इसमें नहीं हैं।

कथा-संयोजन को अविच्छिन्न रखने की दृष्टि से कवि ने गीतों के साथ-साथ बीच-बीच में तथा प्रारंभ में भी छंदों का प्रयोग बड़े कौशल के साथ किया है। छन्दों में अनु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ष्टुप्, आर्या, द्रुतविलंबित, पुष्पिताग्रा, पृथ्वी, प्रमाणिका, प्रहर्षिणी, भुजंगप्रयात, मंदाक्रांता, मालभारिणी, मालिनी, वसंततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा, स्रग्विनी और हरिणी का उपयोग हुआ है।

गीत मालवगौडी, रामगिरि, धन्यासी, असाउरी, ललित, वसंत, गुर्जरी, गौडी, कर्णाट, केदार, सामेरी, विराडी, कल्याण, मल्हार, भैरव, मारुणी, टोडी तथा देशाख्य रागों में निबद्ध हैं।

प्रथम सर्ग में से वसंत-वर्णन की बानगी देखिये :

सरसरसालकुसुममंजरिका-
मधुपिंजरितदिगन्ते।
स्मरसूणिकिंशुकलग्नविरहिजन-
कालखण्डनिभवृन्ते।
विहरति पुररिपुरिह मधुमासे।
रमयति सुररमणीरधिकं
प्रतितरुकतकुसुमविकासे॥

'गीतगोविंद' के 'विहरति हरिरिह सरसवसन्ते। नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते॥' की छाया यहां बहुत स्पष्ट है।

यह शृंगार-प्रधान काव्य है। 'जगतः पितरौ' शंकर और पार्वती इसमें सर्वतोभावेन लौकिक भावभूमि पर अवतरित होकर अपनी लीलाओं का विस्तार करते दृष्टिगत होते हैं। कामारि शिव यहां मन्मथ-सेवक बन गये हैं।

जगज्जननी पार्वती को भी चिंता व्याप्त होती है कि गंगा के प्रणय में शिव पूर्णतया आबद्ध हैं। शिव के करों द्वारा जटाजाल का संवारा जाना उनके लिए अपनी प्रिय गंगा के मधुर-संस्पर्श का व्याज प्रतीत होता है। वे सोचती हैं—वाह, शिवजी गंगा को तो उसी प्रकार नहीं त्यागना चाहते, जैसे कोई कृपण धनराशि को नहीं छोड़ना चाहता :

बिहरन्तीषु रतिप्रतिबिम्बितनूषु
वृषध्वजचित्तम्।
मुञ्चति सुरसरितं न कृपण इव
कृच्छ्रोपनतं वित्तम्॥
(सर्ग १, अष्ट. ४-७)

जयदेव के विपुल प्रभाव के साथ-साथ कवि रामभट्ट के 'गीतगिरीशम्' में भवभूति, मुरारि, राजशेखर आदि की भांति शब्द-चमत्कृति तथा भाषा की कलात्मकता भी मिलती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कृत की एक स्त्रीद्वेष-भरी सूक्ति (सच कहें तो दुरुक्ति) है—'स्त्रियश्चरित्रं पुरुष-स्य भाग्यं देवो न जानति कुतो मनुष्यः' अर्थात् स्त्री का चरित्र और पुरुष का भाग्य भगवान भी नहीं बूझ सकता, निरे मनुष्य की तो बात ही क्या। इसे मैं स्त्रीद्वेष-भरी इसलिए कह रहा हूं कि चरित्र केवल स्त्री का ही नहीं पुरुष का भी दुर्ज्ञेय ही होता है—दुर्ज्ञेयता मानव-मात्र के चरित्र का लक्षण है। नहीं तो हमें जीवन में कदम-कदम पर यह महसूस करने का मौका न पड़ता—अरे! मैंने तो इस व्यक्ति को कुछ और ही समझ रखा था!

मानव-चरित्र दुर्ज्ञेय है; लेकिन दूसरों के चरित्र को भांपने की शक्ति लोकव्यवहार के लिए और अपनी हितरक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है। साथ ही यह बुद्धिमत्ता और विवेक की निशानी भी है। शायद यही कारण है कि हम अक्सर अपने आपको दूसरों के चरित्र को भांपने में प्रवीण मानते हैं।

आइये, इस दृष्टि से अपने आपको तौलें।

१. क्या आपको वे लोग भाते हैं, जो हर बात में आपसे सहमत हो जाते हैं?

२. क्या आपको लोग तभी अच्छे लगते हैं, जब वे आपको सुख दें, आपका साथ दें?

३. क्या आप संपन्न और सफल व्यक्तियों की संगति में रहना और उनके मित्र के रूप में जाने जाना पसंद करते हैं?

४. क्या आप ऐसे लोगों से बचने का यत्न करते हैं, जो भीड़ के साथ नहीं चलते?

५. जब अधिकांश लोग किसी को पसंद करने लगें, तब क्या आप भी उन्हें पसंद करने

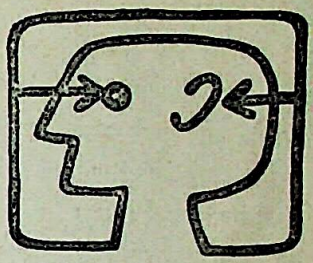

लगते हैं?

६. क्या आप 'यह हमारे ही स्कूल में पढ़ा हुआ (पढ़ी हुई) है', इत्यादि संबंधों को बहुत महत्त्व देते हैं?

७. क्या आप 'स्नॉब' हैं? (धनी का निर्धन को, विद्वान का कम पढ़े-लिखे को हिकारत की नजर से देखना ही 'स्नॉब' होना नहीं है; वह मजदूर-यूनियन का कार्यकर्ता भी 'स्नॉब' है, जो श्रमिक वर्ग से बाहर के सब लोगों को नीची नजर से देखता है।)

८. क्या आप परिमार्जित भाषा में धारा-प्रवाह बातचीत करने वालों से चमत्कृत हो उठते हैं?

९. क्या आप खुशामद पर पिघल जाते हैं—खासकर अपने से विपरीत सेक्स के व्यक्ति

• सुधीर गुप्ता •

अपने मन को तौलें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की की हुई खुशामद पर ?

१०. क्या आपमें पूर्वग्रह हैं और ऐसे रुझान हैं, जिससे कुछ लोग आपको सहज ही पसंद आते हैं और दूसरे पसंद नहीं आते ? (पूर्वग्रहों के नाना रूप हो सकते हैं। रंगभेद पूर्वग्रह का एक रूप है। सुबह जल्दी उठने वाले को ही श्रेष्ठ समझना भी एक पूर्वग्रह है। पक्षियों में दिलचस्पी लेना, क्रिकेट का शौकीन होना, काव्यप्रेमी होना ये भी पूर्वग्रह का रूप धारण कर सकते हैं, अगर हम पक्षियों, क्रिकेट और काव्य में दिलचस्पी लेने वालों को ज्यादातर बातों में तरजीह देते हों और इनसे वास्ता न रखने वालों से विमुख रहते हों।)

११. क्या आपके मित्र व स्वजन आसानी से आपको बाहर के लोगों के प्रति विमुख बना सकते हैं ?

१२. क्या लोगों का हुलिया आप पर बहुत ज्यादा प्रभाव डालता है ?

१३. क्या आप आकर्षकता के अभाव, रूखे तौर-तरीके या खिजाने वाले हाव-भाव से आसानी से चिढ़ जाते हैं ?

१४. क्या पहली नजर में ही लोगों को नापसंद करने की प्रकृति आपमें है ?

१५. क्या आप सहज ही ऐसे लोगों से बचने की कोशिश करते हैं, जिन्हें अटपटा, अजीब या औरों से भिन्न समझा जाता हो ?

१६. शरमीले या संकोची स्वभाव के लोगों से खुद आगे होकर मेलजोल बढ़ाना, उन्हें अपने निकट लाना आपको इल्लत जान पड़ती है ?

१७. क्या दूसरों के द्वारा पहुंचाये गये आघात को भुला पाना आपको बहुत कठिन लगता है ?

१८. क्या 'उसने मुझे आघात पहुंचाया' यह बात आपके मन पर इस तरह हावी हो जाती है कि फिर आप उस आदमी में कोई भी अच्छाई देख ही नहीं पाते ?

१९. क्या लोगों के प्रति आपकी मान्यता अपनी उस क्षण की भावना पर ही निर्भर होती है ?

२०. जब कोई आपके साथ अच्छा सुलूक करे, तो क्या फौरन आपके मन में यह विचार उठता है कि जरूर यह मुझसे कोई मतलब निकालना चाहता है ?

प्रत्येक 'हां' के ५ अंक दीजिये। कुल प्राप्तांक जितने कम हों, समझिये कि लोगों के चरित्र को समझने की योग्यता आपमें उतनी अधिक है। ३० या उससे कम अंक पाना गौरव की बात है। ३० से ४० तक भी संतोषजनक स्थिति है। अगर इससे बहुत अधिक अंक आपने पा लिये हैं, तो लोक-व्यवहार और आर्थिक व्यवहार में आपको ज्यादा सोच समझकर चलना चाहिये।

*

'मैं फिर कभी शर्त नहीं लगाया करूंगा।' एक आदमी ने अपने साथी से कहा।
'मुझे पूरा विश्वास है कि तुम जरूर लगाओगे।'
'तो शर्त लगाकर देख लो कि लगाता हूं या नहीं।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

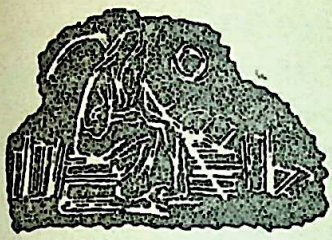

* मानस का हंस

* मानस-मणि

पुस्तकास्वादन

*मानस का हंस; लेखक: अमृतलाल नागर; प्रकाशक: राजपाल एंड संस; पृष्ठसंख्या: ४४१; मूल्य २५ रुपये।

श्री अमृतलाल नागर की नवीनतम उपन्यास कृति 'मानस का हंस' मात्र तुलसीदासजी की जीवन-गाथा नहीं है; स्वयं में काव्य-साधना है, जिसे पढ़कर एक प्रबल हूक पाठक के मन में जागती है कि मुझे संपूर्ण तुलसी-साहित्य का, विशेषतया रामचरितमानस का, फिर से अध्ययन करना है।

नियति के आगे गोस्वामी तुलसीदास नतशिर हैं सही, परंतु अवसाद का उनमें लेश नहीं। राम में उनकी एकांत आस्था उनके पुरुषार्थ को कहीं हतप्रभ नहीं करती। उनकी संस्कारिता उनमें शुचिता व सुरुचि का आधान करती है, पर कट्टरता व संकीर्णता नहीं लाती। इन परस्पर विरोधी गुणों का एक ही फलक पर सफल व सशक्त चित्रण नागरजी की परम उपलब्धि है। वस्तुतः इस कृति में गोस्वामीजी का ही नहीं, नागरजी का भी रूप अत्यंत मनोहारी हो उठा है। वे अपने पाठकों के प्रशंसा, श्रद्धा, वात्सल्य और आशीर्वाद के एक साथ पात्र हो उठे हैं।

उपन्यास का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग बन पड़ा है—'तुलसीदास का पत्नीत्याग' ऐसा मालूम होता है, उस प्रसंग के चित्रण में नागरजी एक ओर तुलसीदास को इस क्रूर-कर्म के लिए सर्वात्मना क्षमा नहीं कर सके, दूसरी ओर तुलसीदास की भावनाओं एवं विवशताओं के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति का पूर लहराता रहा। परंतु जिस दक्षता के साथ वे अपने 'असिधारा व्रत' को निभा गये, दो विरोधी आस्थाओं में अपनी ईमानदारी को कायम रख पाये—वह नागरजी के ही वश की बात थी। परिणाम यह है कि लेखक के साथ-साथ पाठक भी अंत तक रत्नावली के प्रति करुणा से द्रवित तो रहता है, पर तुलसी के प्रति सहानुभूति-शून्य नहीं होता।

उपन्यास अपने उपसंहार की ओर तेज, किंतु जमे हुए कदमों से दौड़ रहा है। अचा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नक कृतिकार को खयाल आता है, रत्नावली के प्रति न्याय होना अभी शेष है, तुलसी के प्रति श्रद्धा की भाव-धारा बहाने में वह शायद अधिक स्याही खर्च कर गया है। तुरंत वह कलम रोक लेता है।

उपन्यास समाप्त होने से पूर्व रत्नावली एकाएक प्रकट होती है।

कहती है—'एक बात और पूछना चाहती हूं। आज्ञा है?'

'पूछो देवी।'

'महर्षि वाल्मीकि ने उत्तरकांड में धोबी की निंदा सुनकर श्रीराम के द्वारा सीताजी का त्याग कराया। आपने मानस में वह प्रसंग क्यों नहीं उठाया?'

तुलसीदास सुनकर चुप। चुप्पी लंबी रही।

'यदि मेरा प्रश्न अनुचित हो, तो क्षमा करें।'

'नहीं, तुम्हारा प्रश्न जितना सहज है, मेरे लिए उसका उत्तर देना उतना सरल नहीं है।'

'कोई बात नहीं, जाती हूं।'

'उत्तर सुन जाओ देवी, मैं तुमसे कुछ न छिपाऊंगा। जो अन्याय मैं तुम्हारे प्रति कर सका, वह मेरे रामचंद्र जगदंबा के प्रति नहीं कर सकते थे।'

रत्नावली की आंखें बरस पड़ीं। कुछ देर रुककर तुलसी गोसाईं ने पूछा—'गयीं?'

रुदन-कंपित स्वर में रत्नावली बोली—'जा रही हूं।'

'रो रही हो रत्ना?'

'संतोष के आंसू हैं।'

रत्नावली के वे 'संतोष के आंसू' रत्नावली की हार्दिक क्षमा के प्रतीक होकर जब तक झलके नहीं, तब तक पाठक भी तुलसीदास को हृदय से क्षमा नहीं कर सका। कलम को एक हल्की-सी चोट देकर कृतिकार ने अपने नायक को उनके ऊंचे सिंहासन से टूक नीचे उतारा, वे 'देवी' संबोधन से 'रत्ना' संबोधन पर आ गये। एकबारगी पाठक का हृदय तुलसीदास के प्रति सहानुभूति से गदगद हो उठा।

रत्नावली के वे 'संतोष के आंसू' अनायास भवभूति की सीता का चित्र खींच जाते हैं। परित्याग के पश्चात् वन में भी वह अपने 'रामभद्र' की पीड़ा को समझती है, चोट खाकर भी उसका हृदय पति के प्रति करुणा से पूर्ण है—'दयितकरुणैर्गाढकरुणम्'।

रत्नावली ने अंतिम अभिलाषा प्रकट की। बोली—'जाती हूं। एक भिक्षा और मांग लूं?'

'मांगो।'

'मेरी मृत्यु से पहले एक बार मुझे अपना श्रीमुख दिखलाने की कृपा करें।'

'वचन देता हूं, आऊंगा।'

तुलसीदास एक साथ प्रणयी और संत थे। पत्नीप्रेम के शृंगार-चित्र इस उपन्यास के वैराग्य-चित्रों से कहीं भी कमजोर नहीं। इन दो प्रकार के विरोधी चित्रों में से किसी एक को अधिक श्रेष्ठ कहना कठिन है।

पत्नीत्याग की प्रचलित कहानी को नागरजी ने मान्यता नहीं दी। पत्नी के मायके चले जाने पर पीछे-पीछे जाना और रात के वक्त रस्सी फेंककर ऊपर चढ़ना नागरजी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसीदास के चरित्र के साथ मेल खाने वाला सर्वथा नहीं लगा। मेल खाने वाला वह था भी नहीं। पत्नी की झिड़की से वैराग्य हो जाने की किंवदंती को मान्यता देने से तुलसी का संपूर्ण वैराग्य स्मशान-वैराग्य—जिसे निकृष्टतम वैराग्य कहा गया है—सिद्ध हो जाता। नागरजी को वह अभिप्रेत नहीं था। ज्ञान-वैराग्य को उत्कृष्टतम वैराग्य माना गया है। परंतु नागरजी को तो मानो उससे भी संतोष नहीं हुआ। शायद वे अपने नायक को संसार-त्याग के बावजूद वैरागी चित्रित ही नहीं करना चाहते थे। सच तो यह है कि नागरजी के तुलसी अंत तक संसारत्यागी नहीं हुए। संसार की कल्याण कामना उनके मन में अंत तक तीव्र रही। बनारस की गलियों में घूम-घूमकर प्लेग की महामारी से जिस तरह वे संघर्ष करते रहे, वह संसारत्यागी के बस का रोग ही नहीं था। उन्हें संसार से विरक्ति नहीं, ममता थी। वे आत्मत्यागी तो पूर्ण थे, पर संसारत्यागी नहीं थे। रत्नावली का त्याग भी उनके आत्मत्याग के अंशरूप में प्रस्फुटित हुआ, रत्नावली सच्चे अर्थों में उनकी 'प्रियतमा' थी—उसे त्यागे बिना तो उनका आत्मत्याग ही अपूर्ण रह जाता।

'मानस के हंस' में तुलसीदास औघड़ प्रेमी के रूप में अंत तक चित्रित हुए हैं। वे प्रेम की जिस धारा में उतरे, हाथ-पर छोड़कर उसमें वह गये। मोहिनी की लौ लगी, तो उसी लौ में जलते रहे। पत्नी की लौ लगी, तो बड़े से बड़े प्रेमी पति का आदर्श फीका दिखाई देने लगा। राम की लौ लगी, तो वे राममय हो गये। और फिर तो उनका राम भी संसार के प्राणिमात्र का हाड़-मांस का रूप धरकर आ विराजा। उस अंतिम लौ में वे ऐसे जले कि समाज से बहिष्कृत होना उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया, परंतु चमार को गले लगाने से गुरेज नहीं किया। प्रेम की डोर थामकर ही सीढ़ी-दर-सीढ़ी तुलसीदास ऊपर चढ़े हैं। उनका चित्र उत्तरोत्तर निखरा है। और यहीं, कलाकार नागरजी की तूलिका अपनी पूरी चकाचौंध चारों ओर बिखेर गयी है।

'मानस का हंस' में दूसरा अद्भुत चित्र गायिका मोहिनी का है। तुलसी और मोहिनी की चक्षु-मैत्री में जो गहराई है, उसने मोहिनी को मात्र वेश्या नहीं रहने दिया।

तुलसीदास के चरित्र-प्रस्फुटन में गुरु-पत्नी 'आई' का हाथ भी कम नहीं। तुलसीदास के संयम व सच्चरित्रता पर 'आई' का अटूट विश्वास है। वे कहती हैं—'मैं अपनी पाठशाला के अन्य किसी युवक को तेरी जैसी रूपसी और चतुर गायिका के घर भेजने की बात तक नहीं सोच सकती थी। किंतु तुलसी पर मुझे पूरा भरोसा है। वह समुद्रतल में डूबकर भी उबर सकता है और आग की लपटों में घिर करके भी सुरक्षित बाहर निकल सकता है।' (पृष्ठ १६८)

उपमा-चमत्कार तो पुस्तक में बिखरा ही हुआ है। अभिव्यंजना के चमत्कार के विषय में इतना कहना पर्याप्त होगा कि भाषा के विविध रूपों पर सधे हुए खिलाड़ी की तरह नागरजी निश्शंक खेले हैं। अवधी की मिठास,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महत्त्वपूर्ण आयुर्वेदिक पुस्तकें

आरोग्य प्रकाश (हिन्दी)	५.००
आरोग्य प्रकाश (मराठी)	५.००
आयुर्वेदीय क्रियाशारीर	१६.२०
आयुर्वेद सारसंग्रह	१२.००
आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान	३.००
आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान	१५.००
औषधिविज्ञान शास्त्र	१५.००
द्रव्य गुण विज्ञानम्	१२.००
पदार्थ विज्ञान	५.००
पारद विज्ञान	६.००
यौवन विज्ञान पर नया प्रकाश	३.००
शार्ङ्गधर संहिता	७.००
वैद्य सहचर	४.००

- विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगावें।
- ग्राहक आर्डर देने से पहले अपने शहर के पुस्तक विक्रेता से पता कर लें।
- एजेन्सी के लिये पुस्तक विक्रेता पत्र-व्यवहार करें :-

श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि.
ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९.

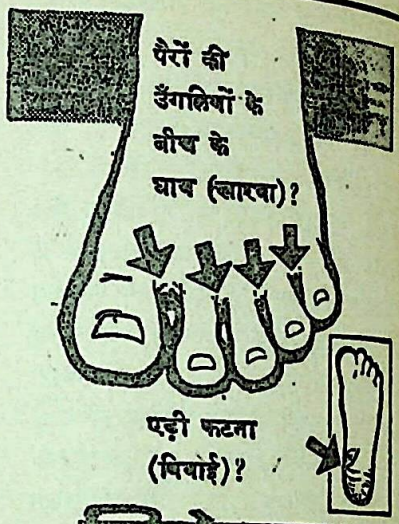

सफेद दाग का अचूक इलाज

'सफेद कुष्ट बूटी' रक्त के समस्त विकारों को तेजी से बाहर निकालकर बिलकुल शुद्ध रक्त शरीर में प्रवाहित करता है तथा सिर्फ सात दिनों में पुराने से पुराने सफेद दाग के स्थान पर भी शारीरिक चमड़े का प्राकृतिक रंग बदलने लगता है, जिससे गौरपूर्वक निरीक्षण करने पर भी रोग के नामोनिशान नहीं मिल पाते। साथ ही भविष्य में इस रोग के लौटने का भय नहीं रहता। सेवन विधि-बिलकुल सरल है। प्रचारार्थ एक फायल दवा मुफ्त के लिए लिखें।

पता—सरयुग फार्मेसी
पो.—कतरी सराय (गया)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू की शोखी और संस्कृत की गंभीरता—दोनों का एक साथ पुट देकर हिन्दी का जो रूप उन्होंने निखारा है, वह अनुपम है। प्राचीन संस्कृत काव्यों से 'रामभद्र' का प्रयोग अत्यंत सुंदर रूप में किया गया है। इसी प्रकार 'भूयसी दक्षिणा' (पृष्ठ २२९) का प्रयोग करके उन्होंने शब्द-चुनाव के अद्भुत विवेक का परिचय दिया है। इस स्थल पर भूयसी की जगह भारी, बड़ी या बहुत कुछ भी कहा जाता, तो वह बेवजन लगता।

'मानस का हंस' में तुलसीदासजी की लोकमंगलकारी तेजस्विता और भाव-विभोरता का अभूतपूर्व मेल है। ग्रंथ की समाप्ति तक आते-आते उस मेल का दिग्दर्शन पाठकों को एक बार फिर से कराये बिना लेखक को संतोष नहीं हुआ। अत्याचार के विरुद्ध तुलसीदास का तीव्र अमर्ष सहसा जाग उठा। कैदी तुलसीदास ने सामने के खंभे पर दृष्टि गड़ाकर स्थिर नेत्रों से देखा, अपने इष्ट हनुमान का आवाहन किया, शायद आदेश दिया, और पल-भर में उनके अटसंकल्प की तरंगों ने चारों ओर के वातावरण को उग्र रूप से आंदोलित कर दिया। देखते ही देखते धीवर नवयुवकों की वानर-सेना आ धमकी और उसने तुलसीदास को पाशमुक्त कर दिया।

पुस्तक की समाप्ति राम नाम की लवलीनता से होती है। घोर शारीरिक कष्ट के बीच तुलसी के मुंह से अंतिम बोल फूटते हैं—

तातें तनु पेखियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन राम राय को।

'मानस का हंस' एक ऐसे प्रतिभाशाली और सतत-अभ्यासी लेखक की ऐसी प्रौढ़, परिपक्व एवं परिपूर्ण रचना है कि मन में संशय होने लगता है कि क्या इस लेखनी से इससे उत्कृष्ट रचना फिर कभी प्रसूत हो सकेगी? नागरजी की किसी पूर्ववर्ती रचना ने यह संशय या कातरता मन में पैदा नहीं की थी।

—सत्यपाल विद्यालंकार

० ० ०

* मानस-मणि; संकलनकर्ता : राधेमोहन अग्रवाल; प्रकाशक : शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा—३; पृष्ठसंख्या : १६९; मूल्य : ५ रुपये।

अमर ग्रंथ रामचरितमानस के सातों कांडों से कतिपय प्रसंगों का चयन करके तैयार की गयी पुस्तक का यह द्वितीय और संवर्धित संस्करण है—मानस-चतुःशती के अवसर पर।

यदि मान लिया जाये कि 'मानस' की एक भी अर्द्धाली महत्त्वहीन नहीं है, तब कहना पड़ेगा कि संग्रह अत्यंत महत्त्वपूर्ण और सुंदर है; क्योंकि पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति 'मानस' की ही है। किंतु चयन का यह आधार कुछ ठोस प्रतीत नहीं होता। मानस का संक्षेप कथा, ज्ञान, भक्ति, उपदेश, नीति, अध्यात्म आदि कई विभिन्न दृष्टियों से किया जा सकता है। जैसा कि संकलन के शीर्षक से भासित होता है, और संकलनकर्ता ने भी स्पष्ट किया है, 'मानस-मणि' में ज्ञानपूर्ण उपदेशात्मक स्थल ही संगृहीत हैं, यथा—'बिनु सतसंग विवेक न होई', 'काहु न कोउ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

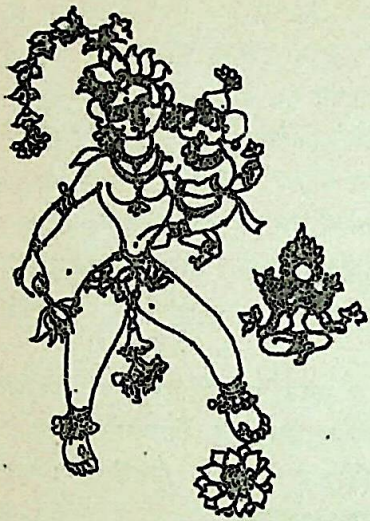

चित्र: सत्यकाम राहुल

सुख-दुख कर दाता', 'राम बिमुख काहु न सुख पायो', 'परहित सरिस धर्म नहि भाई' आदि। किंतु तव 'अवधपुरी रघुकुल मनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊं॥', 'चले राम लछिमन मुनि संगा। गए जहां जगपावनि गंगा।' तथा 'अस कहि कीन्हेसी चरन प्रहारा।' आदि केवल कथावस्तु-बोधक पंक्तियों में क्या मणित्व है? संभवतः संकलनकर्ता का यह भी प्रयत्न है कि कथासूत्र टूटने न पाये। परंतु अनेक स्थलों पर तो कथाक्रम कुछ इस तरह भंग होता है कि बीच का सारा प्रसंग ही लुप्त हो जाता है। जैसे शूर्पणखा को स्वीकार करने में लक्ष्मण असमर्थता प्रकट करते हैं और ठीक इसके बाद वह प्रसंग आता है, जिसमें राम खर-दूषण से कह रहे हैं कि तुम्हारे-जैसे दुष्ट पशुओं का शिकार करने की ताक में हम क्षत्रिय तत्पर रहते हैं। इसी तरह पर्वत लिये हनुमान को राक्षस समझकर बाण मारकर गिरा देने के बाद सब ज्ञात होने पर भरत पश्चात्ताप कर रहे हैं; ठीक इसके बाद हम देखते हैं कि रावण के जागने पर कुंभकर्ण उसे उपदेश दे रहा है।

'मानस' पारायण किया जाने वाला ग्रंथ है, और अब तो उसका प्रचार-प्रसार अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में भी पर्याप्त हो गया है। इस दृष्टि से यह खेद का विषय है कि मानस-मणि में वर्तनी की अनेक भूलें हैं। यथा—चहुं का चहूं (पृष्ठ २५), सरूप का सरुप, सकुचाऊं का सकचाऊं (पृ. ४५), जाते का जात (पृ. ७३), तरइ का तरह (पृ. १४६) आदि। जिनके समक्ष मानस की चौपाइयां पहली बार आयेंगी, वे अशुद्ध को शुद्ध समझेंगे।

'मानस-मणि' में अनेक गुण भी हैं, जिनके कारण विनोबा भावे, काका कालेलकर तथा वियोगी हरि-जैसे संतों, साहित्य-मनीषियों ने इसकी प्रशंसा की है (और वह पुस्तक के आदि में मुद्रित है)। अतः मैं उन गुणों का पुनःकथन नहीं कर रहा हूं।

अंत में संकलनकर्ता को मेरा सुझाव है कि तृतीय संस्करण के समय वे संकलन का आधार निर्धारित कर लें। यदि ज्ञानोपदेश ही रखना हो, तो कथावस्तु-बोधक पंक्तियां हटा दें; और यदि कथाक्रम को भी बनाये रखना हो, तो लुप्त आवश्यक प्रसंगों की कुछ पंक्तियों का समावेश और कर लें। इससे संकलन अधिक सुंदर बन जायेगा।

—च. पांडेय

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजनेताओं के अराजनैतिक खेल

वासुदेवन् नायर

कुछ वर्ष पूर्व चीन के चेयरमैन माओ त्से-तुंग हांग-हो (पीली नदी) में नौ मील तैरे थे, अपनी प्रजा को विश्वास दिलाने के लिए कि शासन की बागडोर संभाले रखने की शारीरिक क्षमता उनमें अब भी भरपूर है। प्रजा को आश्वस्त करने के लिए न सही, मगर विश्व के अन्य भी अनेक देशों के कर्णधार खेल-कूद और व्यायाम में दिलचस्पी रखते हैं।

अखबारों में ब्रिटेन के प्रधान-मंत्री एडवर्ड हीथ के चित्र राजनीति के सिलसिले में जितने छपते हैं, लगभग उतने ही नौका-प्रतियोगिताओं के सिलसिले में भी छपते हैं। सन १९७१ में वे एडमिरल्स कप जीतने वाले नौका-दल के कप्तान थे।

हीथ के प्रशंसकों का कहना है कि खेल-कूद की इन विषयों से उनकी राजनैतिक लोकप्रियता बढ़ती है। विरोधियों का कहना है कि लगभग एक लाख रुपये की लागत की अपनी किश्ती खेने में वे जितना समय लगाते हैं, उसे यदि वे राज्य की किश्ती खेने में लगायें, तो ब्रिटिश जनता का ज्यादा भला हो। ५७ वर्षीय हीथ का दूसरा मनोविनोद है आर्गन बाजा बजाना और संगीत 'कंडक्ट' करना।

ब्रिटेन के विरोधी दल के नेता हेरोल्ड विल्सन जब प्रधान-मंत्री थे 'युवा और गतिमय' (यंग एंड डाइनेमिक) विशेषण उनके साथ अक्सर जोड़ा जाता था। मगर राजनीति के बाहर उनकी गतिमय क्रीडात्मक गतिविधियां फुटबाल देखने तक सीमित थीं, आज भी हैं।

रूस के साथ फिर से रोटी-बेटी का संबंध शुरू करने वाले पश्चिम जर्मनी के प्रधान मंत्री विली ब्रांट जब राजकाज से थक जाते हैं, तो बंसी लेकर मछली पकड़ने बैठ जाते हैं—राजनैतिक मछलियां नहीं, असली मछलियां। जवानी के दिनों में जब वे पत्रकार थे, तो मछली पकड़ने के विषय में एक अखबार में स्तंभ भी लिखा करते थे।

मछली-शिकार के एक और शौकीन हैं—रूस के प्रधान-मंत्री अलेक्सी कोसीगिन। पिछले साल जब वे राजनैतिक वार्ता के लिए स्वीडन गये थे, तो उनके संमान में एक मछली-शिकार आयोजित किया गया था। समूचे शिकारी-दल में केवल कोसीगिन के कांटे में मछली फंसी—कोई छोटी-मोटी मछली नहीं, पूरे ३१ पौंड की काड।

तीन-चार बरस से कोसीगिन का स्वास्थ्य

१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

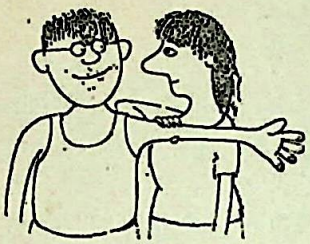

उतना अच्छा नहीं है, और पिछले कुछ ही महीनों में तो उसमें तेजी से गिरावट हुई है। इसके पूर्व वे बड़े शौक से वालीबाल खेलते थे, बर्फ पर स्केटिंग और पानी की स्कीइंग भी किया करते थे। अब तो बेचारे मास्को की सड़कों पर लंबी सैर करके मन को मना लेते हैं। एक बात और, वे जाज़ संगीत के बड़े प्रेमी हैं और जाज़-रेकार्डों का उनका संग्रह रूस में बेजोड़ माना जाता है।

रूस की साम्यवादी पार्टी के महामंत्री लियोनिद ब्रेजनेव काफी शराब पीते हैं और खूब धूम्रपान करते हैं। मगर नौका-सैर व सूअर और बतख के शिकार द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ-चुस्त बनाये रखते हैं।

शिकार राजनेताओं का बहुत ही प्रिय शौक जान पड़ता है—खासकर साम्यवादी देशों के राजनेताओं का। बल्गारिया के राष्ट्रपति जुकोव अक्सर शिकार पर जाते हैं। युगोस्लाविया के ८२ वर्षीय राष्ट्रपति थल पर पशु-पक्षियों का शिकार करते हैं और जल में मछलियों का। घर में उन्होंने एक वर्कशाप बना रखा है। जब मौसम शिकार के लायक न हो, वे इस वर्कशाप में औजारों और मशीनों से खुटर-पुटर किया करते हैं।

स्पेन के जनरल फ्रैंको अब ८८ के हो चले हैं। वे न शराब पीते हैं, न सिगरेट। यों भी उन्हें पार्किन्सन रोग है। फिर भी शिकार और मछली पकड़ना उनका प्रिय व्यायाम और मनोविनोद है।

कनाडा के प्रधान-मंत्री प्येर ट्रूडू शीतकालीन खेलों के प्रेमी हैं। विवाह के बाद उन्होंने अपनी पत्नी के साथ बर्फ पर स्कीइंग करके हनीमून मनाया था। स्कीइंग के दूसरे भक्त हैं बेल्जियम के राजा बोदुई और हालैंड का राज-परिवार।

नार्वे के राजा ओलाव और यूनान के पदच्युत राजा कान्स्टेंटाइन नौका-चालन में ऐसे दक्ष हैं कि ओलिंपिक में स्वर्ण-पदक पा चुके हैं।

*

पहली बार घुड़दौड़ देखने आये आदमी से उसके पास बैठे एक आदमी ने कहा—'वह तीसरा घोड़ा जरूर जीतेगा। मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि जरूर जीतेगा।'

'जिस बात का खुद घोड़ों को पता नहीं, वह बात आप इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हैं?' नवागंतुक ने उससे हैरानी से पूछा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपग्रह क्या करते हैं

डा. जगदीश लूथरा

अखबारों में तुम जब-तब यह समाचार पढ़ते रहते हो कि अमरीका ने या रूस ने फलाना उपग्रह छोड़ा। हजार से ज्यादा उपग्रह अभी तक छोड़े जा चुके हैं। इनमें से कई खत्म हो चुके हैं, कई अभी कार्यरत हैं, और कई तो अंतरिक्ष की गहराइयों में भटक गये हैं। उपग्रह भेजने का सिलसिला अभी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। सवाल उठता है कि यह सारा प्रयास किसलिए ?

अंतरिक्ष में घूमता हुआ उपग्रह एक प्रकार से मंच का कार्य करता है। उस ऊंचाई से वह पृथ्वी का अवलोकन ऊपर से करता है और जानकारी इकट्ठी करके उसे पृथ्वी पर भेजता है। ज्यादातर उपग्रह मानव-रहित होते हैं; परंतु उनके पास मशीनी आंखें होती हैं। ये मशीनी आंखें असल में विशेष उपकरण हैं, जो पृथ्वी के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और उसे टेलिमीटरी विधि (दूरमापी) से पृथ्वी पर भेजते हैं। इन सूचनाओं को इकट्ठा करने के लिए पृथ्वी पर भू-स्टेशन होते हैं। टेलिमीटरी का सबसे सरल उदाहरण है मोटर-कार में लगा हुआ रफ्तार बताने वाला मीटर। उसकी मदद से ड्राइवर कार में बैठे-बैठे ही पता लगा सकता है कि कार का पहिया किस रफ्तार से गति कर रहा है।

उपग्रहों के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं और उसी के अनुसार उनका वर्गीकरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, संचार-उपग्रह का उद्देश्य संचार-संबंधी कार्य करना है; वैज्ञानिक उपग्रह का उद्देश्य है वैज्ञानिक जानकारी जुटाना अर्थात् पृथ्वी की सही आकृति, अंतरिक्ष में उपस्थित विविध विकिरण, सौर ऊर्जा, जीवन पर भारहीन अवस्था का प्रभाव इत्यादि की जानकारी प्राप्त करना; फौजी उपग्रह का काम है दुश्मन के सामरिक प्रतिष्ठानों, फौजी जमावों एवं उनकी हलचल आदि भेदों का पता लगाना और उनकी सूचना देना; और मार्ग-निर्देशक उपग्रह का लक्ष्य है नौचालन में सहायता प्रदान करना।

टाइरस और निम्बस नामक मौसम-उपग्रहों से वैज्ञानिक अध्ययन में काफी प्रगति हुई है। इनका मुख्य कार्य था मौसम-विज्ञान के लिए आवश्यक जानकारी जुटाना—बादलों के चित्र लेना, समुद्री तरंगों का अध्ययन करना, भूमि के तापक्रम इत्यादि के बारे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंकड़े इकट्ठे करना, ताकि मौसम की सही भविष्यवाणी की जा सके।

मौसम के बारे में जानकारी प्राप्त करना इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है? हर रोज आकाशवाणी पर खबरों के अंत में 'अब मौसम का हाल सुनिये' कहकर 'गरज के साथ छींटे पड़ने' आदि की बातें क्यों बतायी जाती हैं?

हमारा देश कृषि-प्रधान है। जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई आदि कृषि-कार्यों का मौसम से गहरा संबंध है। अगले चौबीस घंटों के मौसम की जानकारी किसान को पहले से हो, तो वह उसके अनुसार अपना कार्यक्रम बना सकता है।

वायुयान-चालकों को भी मौसम का हाल थोड़ी-थोड़ी देर में बताया जाता रहता है, ताकि अचानक आंधी, तूफान, कोहरे आदि में फंसकर भटकने या दुर्घटनाग्रस्त होने से वे वायुयानों को बचा सकें।

मौसम-विज्ञान तेजी से उन्नति कर रहा है। कुछ वर्षों में मनुष्य मौसम के बारे में लगभग सही भविष्यवाणी करने में समर्थ हो जायेगा। इसमें उपग्रह बहुत सहायक होंगे। तब मौसम-समाचार आज की तरह कार्टूनों का विषय नहीं रह जायेंगे।

समाचार और संदेश भेजने के साधन आज बहुत विकसित हो चुके हैं; इसमें उपग्रहों ने भी काफी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। कुछ ही साल पहले टेलिविजन-चित्र ५२ मील से ज्यादा दूर नहीं भेजे जा सकते थे; अब टोक्यो से प्रसारित टेलिविजन कार्यक्रम न्यूयार्क में देखा जा सकता है—यह उपग्रह की कृपा से ही हुआ है।

विश्व के अन्य भागों से प्रेषित टेलिविजन-चित्रों को हम क्यों नहीं देख पाते थे? बात यह है कि टेलिविजन तरंगें (टी. वी. तरंगें) काफी लंबी होती हैं और सीधी रेखा में चलती हैं। मगर पृथ्वी है गोल, इसलिए ये तरंगें पृथ्वी पर बहुत दूर तक नहीं जा पातीं और इसीलिए टी. वी. चित्र बहुत दूर तक नहीं भेजे जा सकते।

टी. वी. तरंगें रेडियो की तरंगों से भिन्न होती हैं। दूर देशों में जब रेडियो पर समाचार (रेडियो-संदेश) भेजे जाते हैं, तो वे किस प्रकार पृथ्वी की गोलाई के बावजूद ग्रहण किये जा सकते हैं? सन १९२० में आलिवर हेविसाइड ने यह पता लगाया कि

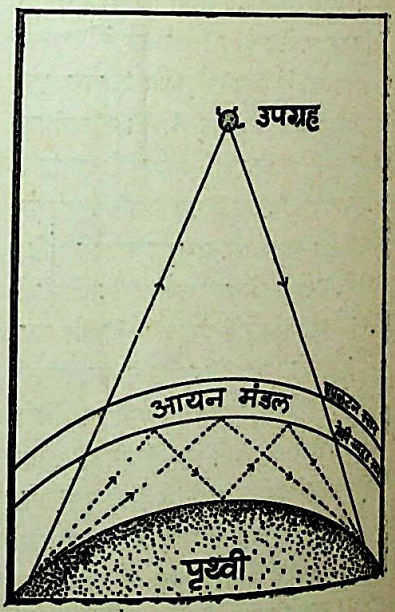

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वी से करीब ६० मील ऊपर आकाश में एक आयनित स्तर है, जिसे आयन-मंडल कहते हैं। जब रेडियो-तरंगें वहां पहुंचती हैं, तो उससे टकराकर पृथ्वी पर वापस आती हैं।

इसी कारण छोटी तरंगें सुदूर देशों में पहुंच जाती हैं (चित्र)। परंतु तरंगों को लौटाने के मामले में आयन-मंडल पर बहुत भरोसा भी नहीं किया जा सकता। टी. वी. तरंग आदि माक्रो-तरंगें भी सीधी रेखा में चलती हैं; परंतु वे आयन-मंडल से टकराकर वापस नहीं लौटतीं, बल्कि उसके पार चली जाती हैं।

इसलिए क्षितिज के पार टी. वी. तरंगों को भेजने के लिए हमें रिपीटर (दोहराने वाले) स्टेशनों की आवश्यकता पड़ती है। ये स्टेशन काफी ऊंचे टेलिविजन-स्तंभ से प्रसारित की गयी टी. वी. तरंगों को पकड़कर फिर से प्रसारित करते हैं। दो रिपीटरों के बीच की दूरी ५० से ८० किलोमीटर तक होती है।

यह व्यवस्था धरती पर कुछ सौ किलोमीटर तक आसानी से काम कर सकती है। परंतु यदि हम पेरिस से न्यूयार्क को टी. वी. तरंगें भेजना चाहें, तो यह व्यवस्था काम नहीं दे सकती। क्योंकि इसके लिए हमें ६५० किलोमीटर ऊंची मीनार बनानी पड़ेगी, जो कि असंभव है। यों भी पेरिस और न्यूयार्क के बीच अटलांटिक महासागर पड़ता है, उसमें सैकड़ों रिपीटर स्टेशन बनाना बहुत कठिन और बेहद खर्चीला काम होगा।

लेकिन उपग्रह ये सब समस्याएं सुलझा देता है। उपग्रह एक तरह से हवा में लटकती हुई मीनार है (चित्र- देखिये)। उसकी सहायता से कई स्थानों से एक साथ संबंध स्थापित किया जा सकता है। एक लाभ उसमें यह भी है कि उसका स्थान भी बदला जा सकता है।

संचार-उपग्रह दो प्रकार के होते हैं—१. दोहराने वाले (रिपीटर) २. लौटाने वाले (परावर्तक)। दोहराने वाले (रिपीटर) उपग्रहों में रेडियो-रिसीवर (ग्राहक) और ट्रांसमीटर (प्रेषक) दोनों रहते हैं। परंतु लौटाने वाले (परावर्तक) उपग्रहों में कोई विशेष उपकरण नहीं होते। उनका काम तो तरंगों को वापस भेजना मात्र है। उनसे वापस आने वाली ये तरंगें सब दिशाओं में फैल जाती हैं और टेलिविजन सेट उन्हें ग्रहण करते हैं। [देखिये पृष्ठ १७]

—१२ए, अल्मोडा, अणुशक्ति नगर, बंबई-८८

*

पत्नी ने शिकायत के सुर में कहा—'आपको तो बस बिलियर्ड खेलने का ऐसा व्यसन है कि और सब कुछ भूले रहते हैं। यहां तक कि आपको यह भी याद नहीं कि हमारी शादी किस दिन हुई थी।'

'वाह, याद क्यों नहीं।' पति महाशय बोले—'अच्छी तरह याद है.....शादी के अगले दिन मैं बिलियर्ड में ऐसी बुरी तरह हारा था कि जैसा आज तक कभी नहीं हारा।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वैदिक पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

आओ– एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि. गोलागोकर्णनाथ, जि. खेरी, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप बांस पर कपास नहीं उपजा सकते!

SOBHAGYA. GR7A HN

हम भी यह नहीं दावा करते कि बांस के ऊपर कपास उपजाया जा सकता है। फिर भी हम दूसरा श्रेष्ठतम काम कर रहे हैं। हम बांस को कपास के रेशे जैसा बनाते हैं। ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर जैसा कि हम इसे कहते हैं, बिल्कुल प्राकृतिक कपास जैसे है। जब इसे कपास में मिला दिया जाता है तो इससे जो वस्त्र बनता है वह हमेशा नया आकर्षक और अधिक चमकदार होता है। ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर कपास मिश्रण से बने कपड़े स्पर्श, रख रखाव तथा अलंकरण में बेहतर हैं। ये अधिक टिकाऊ तथा धोने में सुगम हैं और आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह खर्चीला भी कम है। इसलिए आप जब भी कपड़ा खरीदें तब मांगिये—

ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर-मिश्रित कपड़ा

अधिक विवरण के लिए लिखिये:
ग्वालियर रेयान सिल्क मैन्युफैक्चरिंग (विविंग) कम्पनी लिमिटेड, नागदा (म.प्र.)
आज आवश्यकता है ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर के मिश्रण की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रोपॅक

साल्टीज

आपके स्वास्थ्य के लिए
आवश्यक शक्तिदायक बिस्किट

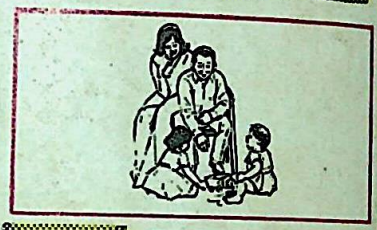

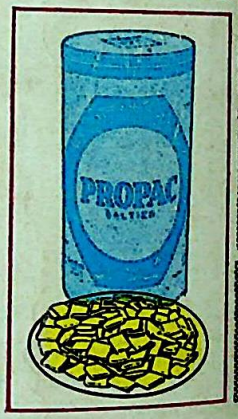

प्रोपॅक : वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया
३-गुना शक्तिदायक बिस्किट

★ दूध व ग्लुकोज— त्वरित शक्ति
★ सोया व मूंगफली—
रगपुट्ठों की मजबूती के लिए प्रोटीन
★ विटामिन, लोह व कैल्शियम—
स्वस्थ रक्त और मजबूत हड्डियों के लिए

प्रोपॅक
साल्टीज
स्वास्थ्य के लिए आवश्यक
प्रोटीन से भरपूर

युनिकेम का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जनवरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुपम विचार ऐसे के साथ ही जन्म लेते हैं

डिज़ाइन

शानदार...जानदार...सदाबहार...
मगर स्वाभाविक जैसे सिर्फ़ सूती कपड़े

सैन्चुरी
१००% सूती कपड़ों के लिए

दि सेन्चुरी टिप. एण्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड, बम्बई-१०० ०३

Adroit-CM-533 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़िया अचार बनानेवाले केवल दो।

वे कौन है? विचार की कोई जरूरत नहीं क्योंकि उसमें पहला क्रम है आपका। कोई सन्देह नहीं कि आपके हाथों बनाया अचार बडा मजेदार होता है। परन्तु आपके बाद का स्थान होगा हमारा—बेडेकर का। कभी आपको अचार बनाने की फुरसत न भी हो तो बेडेकर अचार आपकी सेवामें होगा। आप महसूस करेंगे कि आपके बनाये अचार और बेडेकर अचार के स्वाद में कोई फर्क नहीं है।

व्ही. पी. बेडेकर ॲन्ड सन्स प्रायव्हेट लि. बम्बई-४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग, भांडुप, बंबई ७८ एन. बी.

तार : 'लकी' भांडुप फोन : ५८२४२१ (३ लाइनें)

१. नानफेरस यूनिट

सेमिस रोलिंग विभाग ।

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल,
नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग ।

एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मेटल्स
गनमैटल्स और ब्रोज़ेन्स, ब्रेज़िंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स
फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स 'इस्माक ३', अल्युमिनियम बेस्ड डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड ।

२. फेरस यूनिट ।

फाउंड्री डिविजन

एस० जी० आयर्न और स्पेशल स्टील कास्टिंग्स
मेलिएबल आयर्न कास्टिंग्स

आइ० एस० एस०; बी० एस० एस०, एस० एस० आइ० एम० के स्पेसिफिकेशन्स तथा ग्राहक की विशेष आवश्यकता के अनुसार सप्लाई किये जाते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरपुर-
उत्तम काग़ज
के लिये

- बैंक पेपर
- बौंड पेपर
- ग्लेजड एअर मेल पेपर
- एज़्युरलेड पेपर
- सुपर वाइटलेड पेपर
- सुपर वाइट मैपलिथो पेपर
- क्रोमो पेपर
- एम० एफ० रैपिंग पेपर
- आर्ट पेपर
- क्रोमो बोर्ड
- आर्ट बोर्ड

ASP 1SPM/1-71-A-HIN

दि सिरपुर पेपर मिल्स लि०,
सिरपुर-कागजनगर, आन्ध्र प्रदेश

अच्छे ट्रांस्फ़ॉर्मरों को देश से बाहर जाने से कोई नहीं रोक सकता!

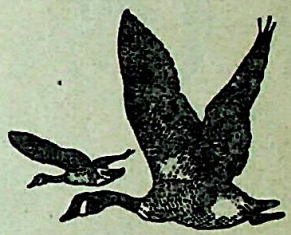

जिस प्रकार आप एक अच्छे व्यक्ति को दबाकर नहीं रख सकते उसी प्रकार अच्छे और विश्वसनीय ट्रांस्फ़ॉर्मरों को भी देश के बाहर जाने से कोई नहीं रोक सकता।

हमारे ट्रांस्फ़ॉर्मरों की नवीनतम मंज़िल है मलाएशिया। भोपाल में भारत के सबसे बड़े, बिजली के उपकरण बनाने वाले कारख़ाने ने ७.५ मिलियन (७५ लाख) रुपये का यह ठेका कठोर अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता के बावजूद प्राप्त किया है। इन ट्रांस्फ़ॉर्मरों के स्थापन और चालूकरण के लिए टेक्निशियन भी यही कारखाना भेज रहा है।

हमारे ट्रांस्फ़ॉर्मरों और सम्बद्ध उपकरणों की विशाल श्रेणी :

- ४००,००० केवीए तक रेटिंग और ४०० केवी तक वॉल्टेज के लिए ट्रांस्फ़ॉर्मर।
- ट्रैक्शन ड्यूटी तथा एल्युमिनियम, केमिकल और इसी प्रकार के उद्योगों में अनेक रेक्टिफ़ायर उपयोगों के लिए विशेष ट्रांस्फ़ॉर्मर।
- इलेक्ट्रो-मैगनेटिक और कैपिसिटर, दोनों प्रकार के वॉल्टेज ट्रांस्फ़ॉर्मर, २२० केवी के लिए १६०० एम्प्स तक निरंतर करंट रेटिंग और १०,००० एमवीए के फ़ॉल्ट लेवल के लिए उपयुक्त करंट ट्रांस्फ़ॉर्मर।
- भारत में बने ट्रांस्फ़ॉर्मरों की सम्पूर्ण श्रेणी के लिए लोड टेप चेंजर पर।

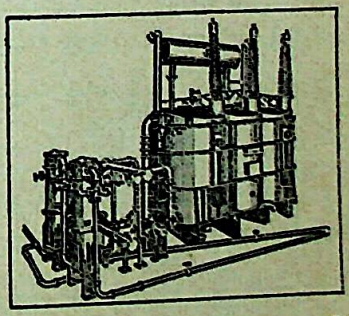

हेवी इलेक्ट्रिकल्स (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान)

भोपाल

जनता के लिए विद्युत शक्ति

HE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'को र स'

पत्र-व्यवहार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला भारत का सर्वोत्तम औद्योगिक प्रतिष्ठान

कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप, स्टेंसिल्स, डूप्लिकेटिंग स्याही इत्यादि के निर्माता

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर डिजाइन मनमोहक रंग

मधुर मनमोहक

अब! मधुर शीतकाल का इन्तजार करिए
ठंडा और सर्द—परन्तु 'हंसा' कम्बलों के
कारण गर्म और आरामदेह
बढ़िया से बढ़िया कोटि की ऊन की
तरह गर्म
'हंसा' जैसे सुन्दर और मनमोहक कम्बल
आपने शायद ही पहले कभी देखे होंगे—
चमकीले सजीव रंग—मनोखे और
मनपसन्द डिजाइन
और यह सब अनेक किस्मों और मुनासिब
कीमतों में...

हंसा कम्बल

आपकी रंगीली रातों की शुरुआत...

अमृतसर स्वदेशी वूलन मिल्स

राम तीर्थ रोड, अमृतसर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

की तीन नई रचनाएं जो एक लाख रुपये के ज्ञानपीठ पुरस्कार वितरण के अवसर पर

हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली

द्वारा प्रस्तुत की जा रही हैं

रश्मि लोक

दिनकर जी की गत २५ वर्षों की प्रकाशित-अप्रकाशित कविताओं का संग्रह—जो प्रत्येक काव्य प्रेमी के लिए अनमोल है—मूल्य ३०/-

आधुनिक बोध

जीवन पद्धति पर दिनकर जी के निबन्धों का नवीनतम संग्रह। मूल्य ८/-

विवाह की मुसीबतें

भारतीय विवाह पद्धति पर दिनकर जी के सुचिन्तित एवं व्यंगात्मक निबन्ध—मूल्य ८/-

कुछ अन्य नवीन प्रकाशन

उड़े हुए रंग (उपन्यास)
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

आओ कि कोई ख्वाब बुनें
(उर्दू शायरी) साहिर लुधियानवी)

दिनकर के गीत (संकलन)
रामधारी सिंह दिनकर—४/५०

— ये तथा देशभर की प्रकाशित —
अन्य सभी हिन्दी पुस्तकें

हिन्दी बुक सेन्टर

आसफ अली रोड, नई दिल्ली-१
से प्राप्त करें

सफेद दाग का रामबाण

आयुर्वेद का महान चमत्कार

वर्षों के अनुसंधान से हम कायाकल्प नामक दवा बनाने में सफल हुए हैं। यह बिलकुल निर्दोष एवं सुपरीक्षित है। मात्र पांच दिनों में अपना चमत्कार दिखा देती है। चाहे किसी भी कारण से दाग क्यों न हो, कुछ दिनों में दाग को पूर्णतः मिटाकर प्राकृत रंग ला देती है। झूठे विज्ञापनों के चक्कर में न रहें। लोककल्याणार्थ एवं धर्मार्थ, मैं इसकी एक फायल मुफ्त बांटा करता हूँ। इस व्याधि से पीड़ित जनों तक मेरा संदेश पहुँचाकर यश कमायें।

पता : सर्यूग फार्मेसी.
पो० कतरी सराय (गया) इंडिया

अपस्मार

(मिर्गी – FITS)

मुफ्त सलाह योजना

मिर्गी के विशेषज्ञ डा. विनायकराव ब्रापट L. A. M. S. ने मिर्गी के रोगियों को मुफ्त सलाह देने की कृपा की है। इच्छुक छपा हुआ फार्म मंगवाने के लिए डाक टिकट लगा लिफाफा भेजें।

Medical Officer
Govt. Ay. College Graduates' Assn. Dispensary
7th Main Road, Srirampuram
Bangalore–560021

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज़ेनिथ के कटर

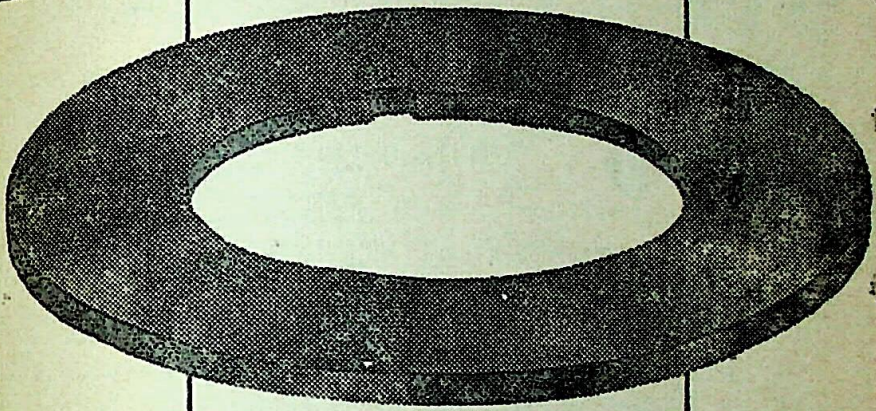

आपके कारख़ाने में कटाई के हर काम के लिए आदर्श

ख़र्च घटाते हैं... उत्पादन बढ़ाते हैं।

- अव्वल दर्जे के टूल-स्टील से कड़े प्रतिमानों के अनुसार बनाये हुए
- वैज्ञानिक विधि से हीट-ट्रीटमेंट दिये हुए
- कटाई का काम सफ़ाईदार और एक-सा होने के लिए बहुत ही तेज़ धारवाले

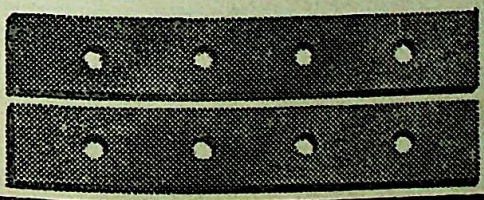

ज़ेनिथ स्टील
पाइप्स लिमिटेड
टूल्स मैन्युफ़ैक्चरिंग डिवीज़न
१२५, पर्वतोट रेक्लेमेशन,
बम्बई-२० (वी. आर.)
टेलिफ़ोन: २९४४४५
तार: ZENPIPES
टेलेक्स: ०११-२७९८
बान्द्रा बैंक घर: ZENPIPES

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वविख्यात प्रतिष्ठित हस्तरेखा वैज्ञानिक प्रो. घनश्याम जोशी, एम. ए. लियो क्लब तथा पोलीकेम रीक्रिएशन क्लब की तरफ से अर्पण किये गये सन्मान पत्र

Certificate of Appreciation

May it be Known that
PROFESSOR GHANSHYAM JOSHI
Was the Guest Speaker at the
LEO CLUB OF MAHIM
on 21st OCTOBER 1973
As an Expression of Appreciation for Courtesies extended to this Club, we hereby present this Certificate

Bela Bhow
Secretary

Kamal Kaul.
President

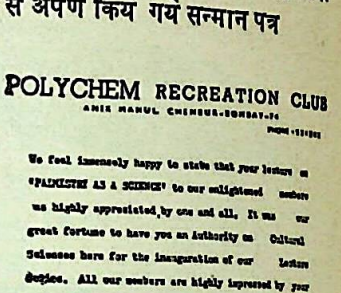
POLYCHEM RECREATION CLUB
ANIK MANUL CHEMBUR-BOMBAY-74

We feel immensely happy to state that your lecture on 'PALMISTRY AS A SCIENCE' to our enlightened members was highly appreciated by one and all. It was our great fortune to have you as Authority on Cultural Sciences here for the inauguration of our lecture series. All our members are highly impressed by your profound knowledge on the subject and your oratory. We congratulate you for your such a fine achievement and thank you for your scintillating talk on 18th April 1972.

We wish you world-wide FAME in your profession.

For POLYCHEM RECREATION CLUB

S.V. Kirtikumar
Secretary

J.K. Kumar
Vice-Chairman

To: Prof. Ghanshyam Joshi
Bombay.

DATE: April 20, 1972

विश्वविख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ रोटरी लायन्स, फीमेशन, एस्ट्रालाजिकल सोसायटी, संडे स्टैंडर्ड, आनलुकर, चित्रलेखा, फेमिना प्रशस्त ताज इन्टरकॉन्टीनेंटल द्वारा गौरव प्राप्त पु. मुं. यूनिकालेज के प्रोफे. सप्रमाण मार्गदर्शन करेंगे। हैंडलूम हाउस के पास २३५डी.एन. रोड, सोराब हाउस, फोर्ट, बंबई —१. फोन :२६१२६७.

ता. क. : हस्तरेखा विज्ञान रहस्य की जानकारी
प्रो. घनश्याम जोशी
सीमित भाई-बहनों को देंगे ।
अधिक जानकारी के लिए मिलें या लिखें

प्रो. घनश्याम जोशी एम.ए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

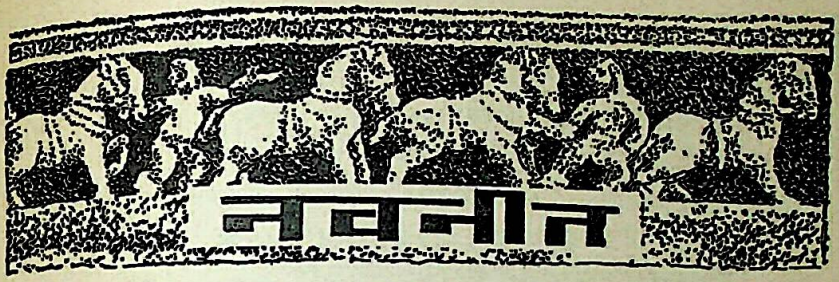

वर्ष २३ : अंक १ * इस अंक में * जनवरी १९७४

पत्र - वृष्टि	१३	संपादक की डाक से
एक गणतंत्र की अर्धशती	१८	किशोर व्यास
कोहौटेक धूमकेतु	२३	श्यामलाल शर्मा
विज्ञान-यात्रा	३०	केजिता
संपूर्ण वस्त्र	३३	माताजी
मन को बदलो	३४	आर्थर आस्बोर्न
कारा का कष्ट	३६	सुभाषचंद्र बसु
एकमात्र अपने सहारे (कविता)	४०	राजेंद्र प्रसाद सिंह
कवि	४२	काका कालेलकर
आचार्य रघुवीर बाली में	४४	डा. लोकेशचंद्र
किरणों का राजहंस	५३	ललितचंद्र चंदोला
वाक्यदीप	६०	धम्मपद से
ईरानी हम्माम	६१	डा. यूनुस जाफरी
थक-ऊब जाने पर	६४	बच्चन, रावल
एक पत्रिका की मृत्यु	६५	वीरेंद्र सिंह
एक जिंदगी बदनाम-सी	७३	सुशील कुमार दोषी
खतरा है शांति को उसके रखवालों से	७६	डा. कुसुम भार्गव
पैट्रिक ह्वाइट	८१	पृथ्वीनाथ शास्त्री
भयंकर बिल्लियों का टापू	८७	शंकरदेव विद्यालंकार
जूते भी चुगलखोर होते हैं	८९	कौटिल्य उदियानी

संचालक	संपादक	परामर्शदाता	व्यापार-व्यवस्थापक
जीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सत्यकाम विद्यालंकार	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	सहसंपादक	सहकारी	प्रबंध : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	सुरेश सिन्हा	गिरिजाशंकर त्रिवेदी	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविताएं	९२	रवींद्रनाथ ठाकुर
लेसी-श्वान : एक वंश-परंपरा	९३	सुजाता
एक और स्वाधीन राष्ट्र का उदय	९७	उषा माहेश्वरी
प्रतिबिंब (हिन्दी कहानी)	१०५	केशव दुबे
वह अभागा आविष्कारक	१११	सुहर्गेन ओस्टरमेयर
घोंसला (डोंगरी कहानी)	११६	ओम गोस्वामी
गुर्दा-प्रतिरोपण अनेक बाधाएं	१२६	....
ऐसे भी अंग्रेज थे	१२९	व्योहार राजेंद्रसिंह, रामशरण दास
यादों की महक	१३४	मनजीत, 'शुम्मी', कुमार, 'सलिल'
बड़ी कृपा होगी (कविता)	१३६	बलबीरसिंह 'रंग'
हंसी के बुलबुले	१३७	....
अपने पर विश्वास कीजिये	१३९	केशवदेव मिश्र 'कमल'
गुरुत्व बल और गुरुत्वाकर्षण	१४१	डा. जगदीश लूथरा
मेरी टाड लिंकन : एक अभागिन	१४५	जस्टिन जी. टर्नर और लिंडा टर्नर
पुराने शब्द नये प्रकाश में	१६९	स्व. हरिभाऊ उपाध्याय
अंतरिक्ष के मेहमान	१७४	डा. प्रकाश चंद्र दीक्षित
पुस्तकास्वादन	१८०	भटनागर, सिन्हा, पाषाण, पांडेय, भट्ट
मन के आवर्त-विवर्त	१८६	विमलेंदु श्रीवास्तव
कारें ..... स्वयंचलित	१८८	प्रेमेंदु प्रकाश माथुर

चित्र सज्जा : ओके, शेणै, सत्यकाम राहुल, जोजेफ आर्थर, भटनागर, प्रशांत बसरूर

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, ३४१ ताडदेव बंबई-३४

फोन : ३९२८८७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५ बेलासिस रोड, ताडदेव बंबई-३४.

फोन : ३७२८४७

चंदे की दरें जनवरी १९७४ से :

स्वदेश में : एक वर्ष : २० रु.; २ वर्ष : ३८ रु.; तीन वर्ष : ५४ रु.; ।

विदेशों में : (हवाई डाक से) एक वर्ष : ७० रु.; दो वर्ष : १२५ रु.; तीन वर्ष : १८० रु.;।

(समुद्री डाक से) एक वर्ष : ४० रु.; दो वर्ष : ६५रु.; तीन वर्ष : ९० रु.।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ ताडदेव, बंबई –३४ के लिए प्रकाशित तथा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ३६।४८ खतवाड़ी बैक रोड, बंबई -४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

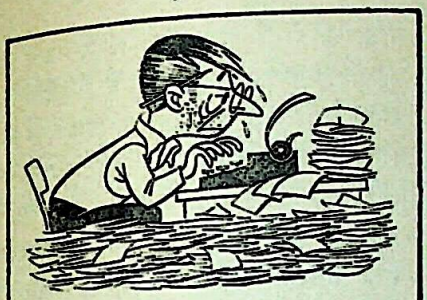

पत्र-वृष्टि

नवंबर का नवनीत पढ़ा। मुझे तो बहुत रोचक लगा। विभिन्न रुचियों की सामग्री उसमें सन्निहित है। पुराने उद्धृत लेख मुझे विशेष अच्छे लगे। सामग्री के संयोजन में जो श्रम किया गया है, वह अभिनंदनीय है। तदर्थ हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

—डा. मंगलदेव शास्त्री, दिल्ली-७

ooo

विशेषांक मिला। उसका एक लेख 'तीन राजतिलक' मैंने पढ़वाकर सुना। दूसरा श्री खांडेकरजी का पढ़ा, और तीसरा स्वर्गीय पाब्लो नेरूदा वाला बढ़िया स्केच भी हृदयंगम कर लिया। निःसंदेह तीनों लेख सुपाठ्य और प्रेरणाप्रद हैं। इतना सात्त्विक मानसिक भोजन आपने इस अंक में दे दिया है कि उसके प्रति न्याय करने में पंद्रह दिन तो लग ही जायेंगे। कृपया मेरी बधाई स्वीकार कीजिये।

—बनारसीदास चतुर्वेदी,
ज्ञानपुर, जि. वाराणसी

दिसंबर का नवनीत पढ़ा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसी विभूतियों से लेकर सामान्य पाठकों तक के भेजे हुए प्रशस्ति-पत्र उसमें थे। मेरी आलोचना भी स्वीकार करें। क्या आप अभी तक इस तथ्य से अनभिज्ञ ही हैं कि शनैः शनैः नवनीत व्यक्ति-पूजक होता जा रहा है? 'तीन प्रधान मंत्री' में चागलाजी ने पिटी-पिटायी बातें दोहरायी हैं। 'थक-ऊब जाने पर' स्तंभ भी व्यक्तिपूजा के सिवा कोई नयी बात नहीं करता। 'मैं संतुष्ट हूं' डा. गोविंददास का आत्मकथ्य है, तो 'क्या पढ़ा क्या नहीं' विनोबाजी का। 'एक भक्ति-प्रवण दार्शनिक' पढ़कर आचार्य मधुसूदन की अर्चना करने को मन होता है, 'बीता यह जीवन ज्योति-दान में' पढ़कर श्रीमती ताराबाई मोडक के चरणों में शीश नवाने की प्रेरणा मिलती है। क्या ऐसा ही कुछ संदेश 'जाक लिप्शीट्स', 'दो अंग्रेज न्यायाधीश' जैसे लेख नहीं देते? यदि ये लेख क्रमशः दिये जाते, तो सचमुच इनका भी सौंदर्य बना रहता और 'वास्तविक साहित्य' जैसी चीज के लिए भी इस उत्कृष्ट मासिक में स्थानाभाव नहीं होता।

—चंद्रशेखर शर्मा, रायपुर, म. प्र.

ooo

* इसी अंक में पृष्ठ ८१-८६ पर नोबेल-पुरस्कृत-आस्ट्रेलियाई साहित्यकार पैट्रिक ह्वाइट की कृतियों का जो परिचय छपा है, उसके प्रसंग में उस लेख के लेखक श्री पृथ्वीनाथ शास्त्री के एक पत्र का अंश यहां दिया जा रहा है:

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ह्वाइट का "विविसेक्टर" (१९७०) मैं पढ़ रहा हूं। इस उपन्यास में ह्वाइट ने श्रमजीवी वर्ग के प्रति अपनी समवेदना को रूपायित किया है। हर्ट्ल डफील्ड हैं तो एक धोबिन और कबाड़ी मां-बाप का बेटा, लेकिन अपनी प्रतिभाशालिता के कारण बन जाता है एक धनी परिवार (कोर्टनी) का पालितपुत्र। उनके यहां कोई 'लड़का' नहीं, सिर्फ एक बीमार-सी लड़की रोडा ही सारी जमींदारी वगैरह की वारिस थी। हर्ट्ल अंत तक उच्चवर्ग की मनोवृत्ति और दंभ, पाखंड, छलावे तथा दिखावे से भरी जिंदगी को अपना नहीं पाता। वह एक कुशल चित्रकार के रूप में अपना विकास करता है।उसकी सहानुभूति भी अधिकांशतः निम्न और दलितवर्ग के लोगों के प्रति ही बनी रहती है। अपने सभी कार्यों में विशेषतः चित्रों में, वह उच्च वर्ग के लोगों की जिंदगी के खोखलेपन को रूपायित करता रहता है। रोडा शादी नहीं करती, उसी के साथ रहती है।'

—संपादक

०००

श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह का लेख 'क्रौंच कौन-सा पक्षी ?' (नवनीत अक्टूबर ७३) विवादास्पद कम, भ्रामक अधिक है। संस्कृत के कोशकार ही तत्कालीन शब्दज्ञान और शब्द-व्यवहार के प्रतिनिधि होने के कारण संस्कृत शब्दों के अर्थ के मामले में प्रमाण हैं। 'क्रौंच' का अर्थ सारस होता है। 'क्रौंच वक इति' या 'क्रौंचो वकभदे' की परिभाषाएं पूर्णतया उस पर घटित होती हैं; क्योंकि सारस 'वक' के आकार-प्रकार का ही पक्षी है। 'क्रौंच' की बोली के लिए 'निनाद' और 'चक्रवाक' की बोली के लिए 'रुदन' या 'क्रंदन' शब्द का प्रयोग संस्कृत साहित्य में हुआ है। इसके अलावा संस्कृत में 'क्रौंच' का अर्थ 'चक्रवाक' कभी नहीं हुआ। यही नहीं, क्रौंच की बोली के लिए 'रुदन' या चकवा-चकई के स्वर के लिए 'निनाद' शब्द का भी प्रयोग मुझे कहीं नहीं मिला। सच पूछिये तो 'क्रौंच' शब्द स्वयं ही सारस की बोली को ध्वनित करता है। इस प्रकार क्रौंच पक्षी सारस है। यों भी कोशकार की परिभाषा के अनुसार, चकवा-चकई 'बक' के आकार के भी नहीं होते। लेखक ने स्वयं स्वीकार किया है कि क्रौंच का दांपत्य-प्रेम अद्वितीय है। अतः इस संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना। रही 'क्रौंच-निनाद' के कर्णकटु होने की बात, सो वह चकई-चकवा के 'क्रंदन' से अधिक मधुर तो है ही।

—विजया त्रिपाठी, इलाहाबाद

०००

'विज्ञान-यात्रा' की अक्टूबर की किस्त के प्रथम प्रसंग में श्री केजिता ने कार्बनिक खादों के बारे में जो लिखा है, उससे पाठक को यह भ्रम हो सकता है कि पौधा कार्बन की अपनी समूची आवश्यकता मृत्तिका स्थित कार्बन से पूरी करता है और इसीलिए अब कार्बनिक खादों को इतना महत्त्व दिया जा रहा है।

पौधा अपनी जड़ों से कार्बन का (जो साधारणतः ह्यूमस के रूप में मृदा में रहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है) अवशोषण कर ही नहीं सकता। कार्बन-स्वांगीकरण तो केवल पत्तों में प्रकाश-संश्लेषण विधि द्वारा होता है। भारतीय कृषि में जैव खादों की महत्ता असल में इस कारण है कि मिट्टी में समाविष्ट कार्बन उसकी उर्वरता को बनाये रखने में विशेष भूमिका अदा करता है। ह्यूमस के अभाव में मिट्टी की नमी को धारण करने की क्षमता का बड़ी तेजी से ह्रास होता है। ह्यूमस मिट्टी को जल-वायु द्वारा होने वाले अपरदन से बचाता है तथा मिट्टी के भौतिक लक्षणों का संवर्धन करता है।

जैव खाद ह्यूमस के अलावा यथा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश जैसे अन्य पोषक तत्त्वों का भी स्रोत है।

—श्यामलाल शर्मा, आगरा-३

०००

सितंबर अंक के 'विज्ञान-यात्रा' स्तंभ में 'परिवार-नियोजन में योग' की उपयोगिता की चर्चा थी, जो उत्साहवर्धक थी। श्री राव ने परिवार-नियोजन के लिए किन योगाभ्यासों का सुझाव दिया है, यदि इसकी भी जानकारी अगले किसी अंक में दें, तो पाठकों को लाभ होगा।

—जयकिशन मूंधड़ा, हैदराबाद, आ. प्र.

०००

पाठकों के पत्रों के संदर्भ में कुछ शब्द-चर्चा देखी। कुछ मैं भी निवेदन करना चाहता हूं।

आप 'छः' छापते हैं। साथ ही 'छहों' भी। 'छहों' तो 'छह' से ही होगा। और 'छह' ही शुद्ध भी है। हिन्दी का कोई अपना शब्द विसर्गांत नहीं होता। 'बारह', 'तेरह', 'सोलह' के समान ही 'छह' भी है। जिसे भ्रमवश एक बहुत बड़ा वर्ग 'छः' लिखता है। नवनीत तो हिन्दी का परिनिष्ठित रूप प्रस्तुत करता है। उसे शुद्ध रूप ही लिखना चाहिये।

—जयंत सावर्ण्यायन, गोरखपुर, उ. प्र.

* आपकी बात सही है। शुद्ध रूप 'छह' ही है। भविष्य में वही रूप नवनीत में चलेगा। **—संपादक**

०००

मैं आपका ध्यान अक्टूबर अंक में गलत वर्तनी में छपे कुछ शब्दों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। ये हैं – संमिलित, ससंमान, संमेलन, संमति। इनकी शुद्ध वर्तनी यों है – सम्मिलित, ससम्मान, सम्मेलन, सम्मति। इस विषय में नियम यह है :

जिस शब्द में किसी वर्ग का पांचवां वर्ण उसी वर्ग के चार में से किसी वर्ण से पहले आता हो, तो उसके स्थान पर अनिवार्य रूप से अनुस्वार ही आयेगा, जैसे—संपादक, गंगा आदि। किंतु यदि पांचवां वर्ण किसी अन्य वर्ग के किसी वर्ण से पूर्व आता हो या स्वयं ही दुबारा आता हो, तो उसके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता, बल्कि वह अपने रूप में ही प्रयुक्त होता है। यथा—वाङ्मय, अन्य, सम्मति, उन्मुख आदि। (देखिये – केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'स्टैंडर्डाइजेशन आफ हिन्दी स्पेलिंग'।) **—महावीर ठाकुर, मुरादनगर**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने लेखकों से

'श्री संपादकजी, कृपया मुझे बतायें कि नवनीत में आप कैसी रचनाएं लेते हैं?' इस आशय के अनेक पत्र हमें प्रतिदिन मिलते हैं। नवनीत के कुछ अंक देखने से भी इस प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा; फिर भी यदि आप हमसे ही जानना चाहें, तो हम कहेंगे कि निम्नलिखित ढंग की रचनाएं हमें नहीं चाहिये:

क. जो जीवन में अनास्था जगायें, देश के विभिन्न समुदायों में स्नेहसूत्र तोड़ें, व्यक्तिगत आक्षेप करें, सहज-स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुंचायें; या जो कैलेंडर देखकर पर्वों, जयंतियों और पुण्यतिथियों के उपलक्ष्य में लिखी गयी हों।

ख. आपके अन्यत्र प्रकाशित लेख का नया संस्करण, कश्मीरी कविता का वाया तमिल उल्था, अल्बर्तो मोराविया के 'रोम की औरत' का भारतीय रूपांतर 'कौशांबी की कामकन्या', सर्वविदित हास्योक्तियों का श्रेय आपके जिला-महाकवि या तहसील-राजनेता को देने वाले विनोद-प्रसंग।

ग. इन विषयों से हमें परहेज है – वेदों में हृदय-प्रतिरोपण, कोसी कलां के जंगल में जिराफ और बबरशेर की मुठभेड़, कामायनी में क अक्षर का प्रयोग, महावानर पुराण में मिर्जापुर का उल्लेख, कड़वी लौकी के रस से सर्वरोगों का उपचार, इत्यादि-इत्यादि।

* लेखमालाएं या मास-भविष्य लिखने के आश्वासन कृपया हमें न दें। न एक साथ सवा सत्ताईस कविताएं भेजें।

* रचना पर्याप्त हाशिया और पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान छोड़कर साफ अक्षरों में कागज के एक ओर लिखकर या टाइप करवाकर भेजें। भेजने से पहले उसे एक बार पूरे मनोयोग से अवश्य पढ़ लें, भले उस दिन के बजाय अगले दिन की डाक में भेजनी पड़े। कार्बन-कापी न भेजें। लेख के आरंभ या अंत में अपना पूरा डाक-पता दें।

* रचना के साथ टिकट लगा और पूरा पता लिखा लिफाफा अवश्य रखें; अन्यथा रचना लौटायी नहीं जायेगी, न उसके बारे में पत्रव्यवहार होगा।

* रचनाएं किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं, निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक–नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट,
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई–३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* जिन रूपों को आप गलत बता रहे हैं, निश्चय ही वे गलत नहीं हैं। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की पुस्तिका मैंने देखी है और उसके जिस 'नियम' का आपने हवाला दिया है, उससे मैं सहमत नहीं हूं। आपने जो 'गलत' शब्द दिखाये हैं, उन सभी में उपसर्ग 'सं' के आगे मकार है। संस्कृत में पाणिनि के सूत्र 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' के अनुसार, इन स्थलों पर अनुस्वार का 'म्' करके 'ससम्मान' आदि लिखा जाता रहा है। परंतु प्रसिद्ध संस्कृत कोशकार श्री आपटे ने परसवर्ण के नियम को लाजमी न मानते हुए अपने 'द प्रैक्टिकल संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी' में संमान, संमति, संमेलन आदि रूप ही दिये हैं। मराठी और गुजराती के प्रामाणिक कोशों में भी इन शब्दों के अनुस्वार-युक्त रूप ही स्वीकार किये गये हैं। (देखिये—प्र. न. जोशी कृत 'आदर्श मराठी शब्दकोश' और गुजरात विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित 'जोडणी कोश'।) 'हिन्दी शब्दसागर' इत्यादि में दोहरे मकार वाले सम्मति आदि रूप ही शुद्ध माने गये हैं। 'शब्दसागर' की संपादकीय भूमिका मैंने नहीं देखी; मगर शायद दोहरे मकार वाले रूपों को सही मानने के पीछे दो तर्क रहे होंगे—१. हिन्दी में इन शब्दों के उच्चारण में सकार प्रायः बिना अनुनासिक के उच्चरित होता है; २. संस्कृत के इन शब्दों में दोहरे मकार वाले रूप मानने पर मरम्मत, मुहम्मद, मुकम्मिल, मुलम्मा आदि अरबी शब्दों और निकम्मा आदि हिन्दी शब्दों में भी अनुस्वार बाधित हो सकेगा।

केंद्रीय निदेशालय का बनाया गुर इसी विचार-सरणी पर आधारित प्रतीत होता है। उसे मैं 'गुर' इसलिए कह रहा हूं कि 'नियम' कहलाने के लिए आवश्यक शास्त्रीय शुद्धता उसमें नहीं है। उसमें यह मान लिया गया है कि सर्वत्र पंचम वर्ण ही मूलतः है और केवल यह तय करना है कि कहां उसे अनुस्वार बनाया जाये और कहां नहीं। मगर पाणिनि के सूत्र 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' के शब्द ही यह बताते हैं कि गंगा, संमति आदि के अनुस्वार को पंचमाक्षर बनाकर गङ्गा, सम्मान आदि रूप बनाये गये हैं। दूसरी बात यह है कि वाङ्मय, उन्मुख आदि शब्दों में ङ, न् आदि को अनुस्वार में बदलने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि इनमें संस्कृत के संधि-नियमों के अनुसार क् (वाक्+मय), न् (उन्+मुख) आदि को ङ, न् आदि बनाया गया है। —संपादक

भूल-सुधार

पृष्ठ ७६ पर लेख 'खतरा है शांति को उसके रखवालों से' के प्रथम पैराग्राफ में यह छपा है कि सोल्जेनित्सिन को पिछले वर्ष नोबेल-पुरस्कार मिला। यह संमान उन्हें १९७० में मिला था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक गणतंत्र की अर्धशती

किशोर व्यास

तुर्की ने अपने गणतंत्र स्थापना की ५०वीं सालगिरह २९ अक्टूबर १९७३ को मनायी। आधी सदी पहले १९२३ में इसी दिन देश की नयी राजधानी अंकारा में तुर्की की संसद् ने गणराज्य की स्थापना की घोषणा करके आधुनिक तुर्की के राष्ट्रपिता मुस्तफा कमाल को राष्ट्रपति चुना था। तब से पंद्रह वर्ष बाद अपने निधन तक इस सैनिक राजनेता ने अपने देश का स्वरूप ही बदल दिया।

मुस्तफा कमाल ने तुर्की के ओटोमन साम्राज्य के युग के अपमानों को धोया। उन्हीं के नेतृत्व में तुर्की का आधुनिकीकरण अभियान आरंभ हुआ। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के व्यापक कार्यक्रम द्वारा एक ओर तो देश के संविधान को धर्म-निरपेक्ष बनाया, दूसरी ओर महिलाओं को मताधिकार दिया। स्त्री-पुरुष के बीच व्याप्त सामाजिक विषमता को समाप्त करके देश की स्त्री-शक्ति को भी राष्ट्रनिर्माण में उपयोग करने के लिए सन्नद्ध उस तुर्की राष्ट्रनेता ने बुर्के पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

पुरानी वेशभूषा को नये औद्योगिक युग के प्रतिकूल मानकर उन्होंने तुर्रेदार तुर्की टोपी पहनने की भी मनाही कर दी और यूरोपीय लिबास को राष्ट्रीय वेशभूषा बना दिया। उनका विश्वास था कि आधुनिकीकरण का अर्थ यूरोपीयकरण है। इसके लिए वे यूरोपीय उत्पादन-प्रणाली को ही नहीं, रहन-सहन के ढंग तक को अपनाने के लिए उत्सुक थे।

तुर्की के नवनिर्माण का मुस्तफा कमाल का यह अभियान इतना व्यापक और प्रभावशाली था कि हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के कई नेता उनसे प्रभावित और प्रेरित हुए।

भूमध्य सागर और काले सागर के संधिस्थल पर पश्चिम एशिया तथा यूरोप के बीच एक सेतु की तरह से स्थित तुर्की इस शताब्दी के पूर्वार्ध में अपनी प्रगति के लिए यूरोप की ओर देखे, यह नितांत स्वाभाविक भी था। तब तक यूरोपीय साम्राज्यवाद का पराभव आरंभ भी नहीं हुआ था। इतिहास का सारा प्रवाह यूरोपीय सभ्यता के पक्ष में था। १९वीं सदी तक यूरोपीय क्षेत्र में भी पसरे हुए तुर्की साम्राज्य की स्मृतियां अभी ताजा थीं।

इन सब प्रेरणाओं और कारणों से मुस्तफा कमाल ने देश के यूरोपीयकरण का जो सिलसिला शुरू किया, वह आज भी इतना बलवान है कि गणतंत्र की अर्धशताब्दी के समारोहों का एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम था-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बासफोरस पर नवनिर्मित पुल का उद्घाटन। इस पुल के निर्माण से एशिया माइनर और यूरोप के बीच पहली बार स्थल-मार्ग बना है और यातायात की एक जबर्दस्त आवश्यकता पूर्ण हुई है। साथ ही यह अतातुर्क (तुर्कों के राष्ट्रपिता) की यूरोप-अभिमुख नीति के प्रति तुर्की की निष्ठा का भी प्रतीक है।

किंतु जीवन प्रतीकों पर नहीं जीता। वह उनसे कहीं अधिक उलझा हुआ, समस्याग्रस्त और नयी चुनौतियों से घिरा रहता है। इन समस्याओं और चुनौतियों के कारण तुर्की के समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था में काफी कुछ परिवर्तन आये हैं। परिणामतः आज का तुर्की कमाल अतातुर्क के समय के तुर्की से बहुत भिन्न है।

यह भिन्नता सबसे स्पष्ट दिखाई देती है तुर्की के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में। उदाहरण के लिए, सुधारवादी अतातुर्क ने राजनीति एवं सामाजिक जीवन में धार्मिक कट्टरता के महत्त्व को कम करने का भरसक प्रयास किया था। इसके लिए उन्होंने तुर्की संविधान में (जो उनकी मृत्यु के एक वर्ष पूर्व, १९३७ में पारित किया गया) तुर्की गणतंत्र की धर्म-निरपेक्षता का भी उल्लेख कराया था। किंतु अतातुर्क के बाद तुर्की में धर्म का महत्त्व कम नहीं हुआ, बढ़ा ही है। तुर्की में मस्जिदों की संख्या में वृद्धि और धार्मिक कट्टरता में विश्वास रखने वाले राजनीतिज्ञों के प्रभाव में बढ़ौती दोनों इसके प्रमाण हैं।

कुछ लोग इसे राजदंड के बल पर अतातुर्क द्वारा किये गये सुधारों की प्रभावहीनता का द्योतक मानते हैं; जब कि कई तुर्क समाजशास्त्रियों का मत है कि अतातुर्क के बाद तुर्की की सरकारें देश के कृषक समाज को आधुनिक बनाने में विफल रही हैं, उसका यह परिणाम है।

जो भी हो, यह एक तथ्य है कि हाल में वहां हुए आम चुनावों में धार्मिक भावनाओं को राजनीति में लपेटने वाली नेशनल साल्वेशन पार्टी ४५० में से ४८ सीटें हासिल कर सकी है और संसद् में १८६ स्थान पाने वाली रिपब्लिकन पीपल्स पार्टी को सरकार रचने के लिए उसका सहयोग लेना पड़ेगा।

अक्टूबर १९७३ के आम चुनावों में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी रिपब्लिकन पीपल्स पार्टी तुर्की में सत्तारूढ़ होने वाली पहली वामपंथी पार्टी है। यह समाजवादी आर्थिक

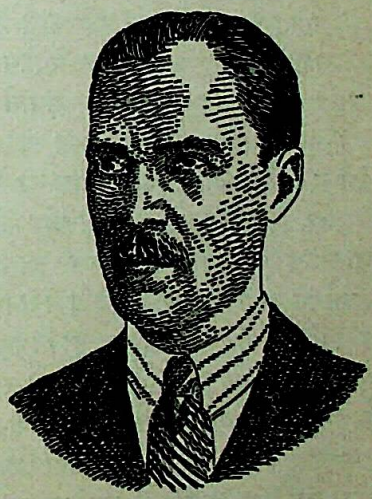

कमाल अतातुर्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुधारों में विश्वास रखती है और इसके नेता हैं बुलेंट इसेविट।

अभी कुछ महीनों पहले तक तुर्की में भी शायद ही कोई सोचता था कि इसेविट का दल विजयी होगा। कहते हैं, स्वयं इसेविट भी १९७७ के आम चुनाव में ही अपने दल की विजय की आशा करते थे, न कि १९७३ में। परंतु पिछले दो चुनावों में लगातार जीतने वाला सुलेमान डेमिरेल का दल जनता में इतना अप्रिय हो चुका था कि इसेविट और उनकी पार्टी की बन आयी।

प्रजातंत्र की इन सब बातों से यह नहीं समझना चाहिये कि तुर्की सेना राजनीति से बिलकुल अछूती है। वस्तुतः तुर्की सेना आज भी अपने को मुस्तफा कमाल की परंपरा की संरक्षक और उत्तराधिकारी मानती है। पिछले तेरह वर्षों में दो बार सेना देश की शासन-सत्ता अपने हाथ में ले चुकी है।

सन १९६० में, जब एदनान मेंदेरेस की सरकार ने विरोधी दलों पर रोक लगाने की कोशिश की थी, तब सेना ने मेंदेरेस का साथ देने के बजाय, स्वयं हुकूमत संभाल ली थी। १९७१ में उसने दूसरी बार हस्तक्षेप किया और देश में 'निर्देशित लोकतंत्र' स्थापित करने की कोशिश की। इस अवधि में सेना ने वामपंथियों और साम्यवादियों को निर्ममता से दबाया। सिर्फ राजनीतिज्ञों को ही नहीं, छात्रों और अध्यापकों को भी तनिक-सी शंका पर ही लंबी सजाएं दे दी गयीं। उदाहरण के लिए, अंकारा विश्वविद्यालय के राजनीति-विभाग के भूतपूर्व डीन प्रो. सोयसाल को साम्यवाद फैलाने के अभियोग में सात साल की कैद की सजा दी गयी। उनके विरुद्ध सबूत में तुर्की संविधान का परिचय देने वाली एक पाठ्यपुस्तक पेश की गयी।

इतनी सब जोर-जबर्दस्ती के बावजूद सेना गत वर्ष अपने उम्मीदवार जनरल गुरुप को राष्ट्रपति नहीं चुनवा सकी। गत अक्टूबर के संसदीय चुनाव में तुर्की जनता ने वामपंथियों के पक्ष में बड़ी संख्या में मतदान करके सेना की नीतियों के प्रति अप्रसन्नता व्यक्त कर दी।

बुलेंट इसेविट का कहना है कि देश के आर्थिक विकास के कारण अब जरूरी हो गया है कि सेना और नागरिक शक्ति के बीच के संबंध नये सिरे से तय किये जायें। आज की आर्थिक जटिलताओं को देखते हुए, सेना की एकतरफा कार्रवाई से सामाजिक-आर्थिक सुधार हो नहीं सकेंगे। इसेविट ने यह आशा व्यक्त की है कि सेना इस नयी वास्तविकता को समझेगी। लेकिन इसके लिए राजनीतिज्ञों को भी समझदारी से काम लेना सीखना होगा।

तुर्की की अर्थ-व्यवस्था पिछले कुछ वर्षों में बड़ी तेजी से आगे बढ़ी है। १९६३ से ७२ के बीच कार्यान्वित हुई दो पंचवर्षीय योजनाओं में कुल राष्ट्रीय उत्पादन में प्रतिवर्ष ७ प्रतिशत औसत वृद्धि का लक्ष्य क्रमशः पूरा होता रहा है। इसी तरह कुल राष्ट्रीय उत्पादन का औसतन १८.५ प्रतिशत नयी पूंजी के रूप में लगा है।

सन १९७२ में ३ करोड़ ८० लाख जन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संख्या के देश तुर्की का कुल राष्ट्रीय उत्पादन करीब ७०० करोड़ पौंड रहा और प्रति-व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादन १९० पौंड। उस वर्ष उसने करीब ६४ करोड़ पौंड का आयात और ३६ करोड़ २७ लाख पौंड का निर्यात किया। लेकिन इन सारे आंकड़ों से भी बड़ी बात यह है कि १९६३ से १९७२ की अवधि में वहां थोक भावों का निर्देशांक (इंडेक्स) करीब-करीब दुगुना हो गया। सोच लीजिये, इस १०० प्रतिशत भाववृद्धि से तुर्की के सबसे निर्धन वर्ग पर क्या बीती होगी।

यूरोप की ओर अभिमुख होते हुए भी तुर्की अन्य एशियाई देशों की तरह उग्र आर्थिक विषमता और व्यापक अशिक्षा का देश है। राजधानी अंकारा का मुख्य बाजार 'अतातुर्क बूल्वा' आधुनिक स्थापत्य और व्यवस्थित परिवहन से मंडित है, तो गांवों में आज भी पारंपरिक खेती और उसकी सहेली दरिद्रता का राज है। पुरुषों में साक्षरों का प्रतिशत अभी भी ७० से ऊपर नहीं गया है और महिलाओं में १०० के पीछे ६० निरक्षर हैं।

अतातुर्क की मृत्यु के ३६ वर्ष और गणराज्य की स्थापना के ५० वर्ष बाद तुर्कों के सामने सबसे बड़ा काम है देश के आधुनिक शहरी मध्यवर्ग और परंपरावादी निर्धन देहातियों के बीच की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक खाई पाटने का। तुर्की का कहना है कि वे इस दिशा में अग्रसर हो चुके हैं और इसके समर्थन में तुर्की बुद्धिजीवी संकेत करते हैं, एनातोलिया के कस्बों और गांवों में हो रहे परिवर्तनों की ओर।

एनातोलिया के अधिकांश भागों में किसान और कस्बाई लोग यह स्वीकार करते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में उनका जीवन तेजी से बदला है। लेकिन वे और अधिक परिवर्तन चाहते हैं, अपने जीवनयापन-स्तर को और भी उन्नत करना चाहते हैं। बहुत संभव है, इसेविट की समाजवादी पीपल्स रिपब्लिकन पार्टी की अप्रत्याशित सफलता भी इसी उन्नति-भूख की अभिव्यक्ति हो। अब देखना है, इसेविट अपने मतदाताओं की इन अपेक्षाओं को किस हद तक पूरा करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दूसरे महायुद्ध के बाद की अवधि में तुर्की की विदेश-नीति ने साम्यवादी संकट के विरुद्ध प्रतिरक्षा संघटनों की सदस्यता से लेकर सोवियत रूस के साथ संबंधों में उत्तरोत्तर सुधार तक की दौड़ लगायी है। तुर्की को साम्यवादी आतंक का खतरा लगा था महायुद्ध के तुरंत बाद। तब स्तालिन ने रूसी सीमा से लगे तुर्की के तीन प्रांतों और बास्फोरस जलडमरूमध्य पर सोवियत नियंत्रण की मांग की थी। तुर्की सरकार ने स्तालिन की इस मांग को अस्वीकार कर दिया और अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा का निर्णय किया था। तब तक शीतयुद्ध जोर पकड़ चुका था और रूस के साथ कंधा मिलाकर हिटलर से लड़ने वाले पश्चिमी देश साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए सैनिक संधियों और सामरिक सहायता की नीति अपना चुके थे। इस नीति से अमरीका ने तुर्की और यूनान को सैनिक तथा आर्थिक सहायता देने का निर्णय किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९५२ में तुर्की उत्तर अतलांतिक संधि संघटन (नाटो) में शामिल हो गया।

करीब एक वर्ष बाद रूस ने तुर्की इलाकों पर अपना दावा छोड़ने की घोषणा की। लेकिन अभी भी शीतयुद्ध तेजी पर था और तुर्की को पश्चिमी देशों के साथ घनिष्ठता रखने में ही कल्याण दिखा। इसीलिए मध्य पूर्व संधि संघटन (सेंटो) बनने पर वह उसमें भी शामिल हो गया।

किंतु ख्रुश्चेव के शासन काल में शीत-युद्ध की ठिठुरन कम होने लगी और रूस-अमरीका के संबंधों में सुधार शुरू हुआ। तब तुर्की ने भी रूस के साथ अच्छा आर्थिक संबंध बनाना आरंभ कर दिया। अब तक वह रूस से करीब २७३ करोड़ रुपये के विकास-ऋण पा चुका है। रूसी सहयोग से भूमध्य सागर के तुर्की बंदरगाह इस्केंदरन पर लोहे और इस्पात का एक बड़ा कार-खाना बन रहा है।

सातवें दशक में साइप्रस के सवाल पर तुर्की और यूनान के बीच काफी तनातनी रही। उसने भी तुर्की को रूस के साथ संबंध सुधारने की प्रेरणा दी। अल्पसंख्यक तुर्कों के साथ बहुसंख्यक यूनानियों के व्यवहार को लेकर एक बार तो तुर्की साइप्रस में हस्त-क्षेप के लिए भी आतुर हो गया। तब अम-रीकी राष्ट्रपति जान्सन ने उसे इसके विरुद्ध चेतावनी दी थी। इससे भी तुर्कों को प्रेरणा मिली कि सिर्फ एक महाशक्ति का दामन थामने के बजाय दोनों से ही अच्छा संबंध रखना अच्छा है। किसी हद तक वह इसमें सफल भी हुआ है।

किंतु विदेश-नीति में इतना सजग और संतुलित तुर्की स्वदेश के लेखकों व बुद्धि-जीवियों के साथ अपने व्यवहार में इतना असंतुलित क्यों है? कवि नाजिम हिकमत, उपन्यासकार सेतिन अलतान और फ्रंकी बेकुर्त्त आदि अधिकांश बड़े तुर्की साहित्य-कारों को कभी न कभी सरकार से टकराना और जेल जाना पड़ा है। आज भी अनेक तेजस्वी साहित्यकार अन्याय-विरोधी लेखन के कारण वहां की जेलों में लंबी सजाएं भुगत रहे हैं।

यह दैवीय संयोग है कि गणतंत्र की अर्ध-शती के वर्ष में देश के संभावित प्रधान-मंत्री इसेविट स्वयं प्रतिष्ठित गद्य-लेखक, कवि और समालोचक हैं। क्या बंदी साहित्यकारों को साहित्यकार प्रधान-मंत्री के शासन-काल में रिहाई मिलेगी? क्या तुर्की सरकार स्वदेशी रचनाकारों के साथ भी उसी तरह संतुलित व्यवहार करना सीखेगी, जैसा कि वह विदेशी शक्तियों के साथ अब कर रही है? बहुत कुछ इस पर निर्भर रहेगा कि फौजी अधिकारी इसेविट की सलाह को मानकर राजनीति से अलग रहने को तयार होते हैं या नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोहौटेक धूमकेतु

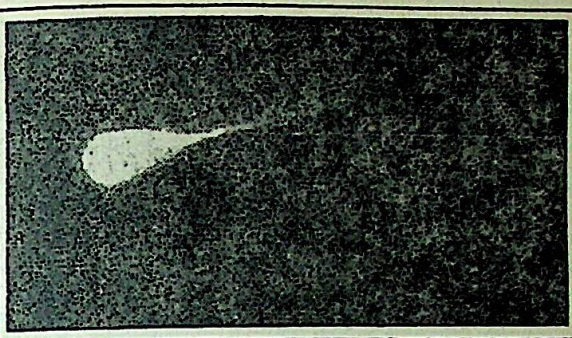

'संडे वर्ल्ड', नयी दिल्ली में छपे श्री एम. पी. राव के लेख पर से

श्यामलाल शर्मा

कोहौटेक धूमकेतु आजकल कुतूहल और चर्चा का विषय बना हुआ है। इसके अस्तित्व की खोज करने वाले डा. लूबोस कोहौटेक चेकोस्लोवाकिया में जनमे थे और इन दिनों हैंबर्ग (पश्चिम जर्मनी) की खगोलीय वेधशाला में काम करते हैं।

पिछले साल ७ ही मार्च की रात को वे आकाश के छायाचित्रों का अवलोकन कर रहे थे, तो उनमें उन्हें एक बहुत ही क्षीण प्रकाश-बिंदु दिखाई दिया। उस समय तो उसके पूंछयुक्त होने का कोई संकेत नहीं था। कुछ दिनों पश्चात् आकाश के उसी भाग के छायाचित्रों में इस प्रकाश-बिंदु के साथ पूंछ भी जुड़ी हुई स्पष्टतः दिखाई दी। तब १८ मार्च १९७३ को डा. कोहौटेक ने खगोलज्ञों को सूचना दी कि एक धूमकेतु सौर मंडल की ओर तीव्र गति से आ रहा है।

उन दिनों डा. कोहौटेक ३२-इंची श्मिड दूरबीन द्वारा उन ५० क्षुद्रग्रहों का अवलोकन कर रहे थे, जिन्हें उन्होंने ही १९७१ में खोज निकाला था। इस दूरबीन पर हैंबर्ग श्मिड ८०/१२० एफ-२४० सेंटिमीटर वाला कैमरा लगा हुआ था। साथ ही डा. कोहौटेक गायब हो चुके वेला नामक धूमकेतु के चिन्हों की भी तलाश में थे। ७ मार्च को देखा गया धूमकेतु उस वर्ष का छठा नया धूमकेतु था। अतः डा. कोहौटेक ने वैज्ञानिकोचित विनम्रता से उसे सिर्फ '१९७३ एफ' का नाम दिया। ('एफ' अंग्रेजी वर्णमाला का छठा अक्षर है।) परंतु उनके संमानार्थ सभी प्रमुख खगोलज्ञ उसे 'कोहौटेक धूमकेतु' कह रहे हैं।

कोहौटेक धूमकेतु इस शताब्दी में अब तक का सबसे बड़ा तथा प्रकाशमान धूमकेतु है। इसका परिक्रमा-पथ परवलयाकार (पैराबोलिक) है और उसकी कक्षा भूकक्षा से १४ अंश का कोण बनाती है (चित्र २६)। २८ दिसंबर को यह सूर्य से निकटतम दूरी—१.३ करोड़ मील—पर था। पृथ्वी से इसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकटतम दूरी ३.५ करोड़ मील होगी, जो कि ब्रह्मांड के विस्तार को देखते हुए सर्वथा नगण्य है। और उस समय इसका वेग ५० मील प्रति सेकेंड होगा।

नवंबर के प्रथम सप्ताह में यह सूर्योदय से लगभग डेढ़ घंटा पहले पूर्वी क्षितिज में उगता था और किसी उपकरण की सहायता के बिना भी देखा जा सकता था। नवंबर के अंत में यह शनैः-शनैः चित्रा (स्पिका) नक्षत्र के दक्षिण में पहुंच गया और उसकी चमक बढ़ती रही; फिर सूर्य के पास आने के कारण क्षीणतर होने लगी। तदनंतर सूर्य के दूसरी ओर होने के कारण वह कुछ समय के लिए लोप हो गया।

जनवरी १९७४ के आरंभ में सूर्यास्त के पश्चात् यह पश्चिमी क्षितिज में खाली आंख से देखा जा सकेगा। उस समय यह एक प्रकाश-पुंज की तरह उदय हुआ करेगा और इसकी पूंछ सदा सूर्य की विपरीत दिशा में होगी।

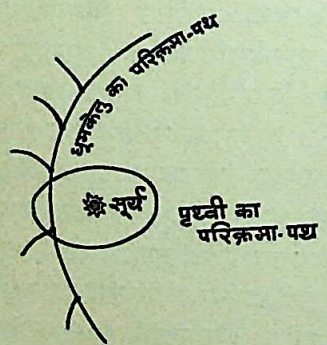

धूमकेतु की पूंछ सदा सूर्य की विपरीत दिशा में रहती है।

पृथ्वी से दूर होते जाने के कारण शनैः-शनैः इसकी चमक क्षीणतर होती जायेगी और फरवरी के अंत में तो इसे देखने के लिए दूर-बीन की आवश्यकता होगी। मार्च समाप्त होते-होते यह सामान्य दूरबीन की पहुंच के भी बाहर चला जायेगा और असीम ब्रह्मांड में विलुप्त हो जायेगा। अभी कहा नहीं जा सकता कि यह पुनः हमारे सौर जगत् की सैर करने आयेगा भी कि नहीं।

यही पहला धूमकेतु है, जिसे मनुष्य पृथ्वी के बाहर से भी देख रहा है। अंतरिक्ष प्रयोगशाला (स्काइलैब) पर से इसका अव-लोकन किया जा रहा है। सुझाव तो यह भी था कि समुचित उपकरणों से परिपूर्ण एक मानव-रहित राकेट इसकी दिशा में छोड़ा जाये, ताकि पृथ्वी-स्थित प्रकाशीय दूरबीनों तथा रेडियो-दूरबीनों द्वारा जुटाये गये सभी तथ्यों व आंकड़ों की पुष्टि और व्याख्या की जा सके। निश्चय ही इससे धूमकेतु के विषय में नयी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने में सहायता होती। परंतु सुझाव कार्यान्वित न हो सका।

पश्चिम जर्मनी के हैंबर्ग की वेधशाला तथा चिली में स्थित यूरोपीय दक्षिणी वेधशाला (यूरोपियन सदर्न आब्जर्वेटरी) में पिछले नवंबर के आरंभ से इस धूमकेतु का विशेष प्रेक्षण किया जा रहा है, जो फरवरी ७४ के अंत तक चलेगा।

अमरीका में नासा (राष्ट्रीय वैमानिक तथा नभीय प्रशासन) के कुशल निर्देशन में 'आपरेशन कोहौटेक' कार्यान्वित हो रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके अंतर्गत खगोलज्ञ किटपीक वेधशाला की ३०० फुट लंबी मेकमैथ सौर दूरबीन से इस धूमकेतु के अनुसूर्य-बिंदु में से (सूर्य के सबसे निकट से) गुजरने की अवधि में वर्णक्रम दर्शकीय प्रेक्षण करेंगे और लोहे, निकल तथा मैग्नीशियम की उत्सर्जन रेखाओं का ठीक-ठीक पता लगा सकेंगे। अंतरिक्षीय प्रयोगशाला के विज्ञानी इसके अनुसूर्य-बिंदु पर पहुंचने के पूर्व तथा पश्चात् छायाचित्र लेंगे। अन्य देशों के खगोलज्ञ भी विविध प्रकार के प्रेक्षण कर रहे हैं।

संस्कृत के 'धूमकेतु' शब्द का अर्थ है—जिसके साथ धुएं की पताका जुड़ी हुई हो। अंग्रेजी का 'कॉमेट' शब्द यूनानी भाषा के 'कोमेटेस' का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है—लंबे बालों वाला तारा। दोनों ही शब्दों से उसका वह स्वरूप प्रकट होता है, जो जन-साधारण को दिखाई देता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें, तो धूमकेतु के दो भाग होते हैं। शीर्षभाग साधारणतया १-२ मील व्यास का, तारे के समान चमकता नाभिक है। इस 'मटमैले हिमपिंड' में उल्का-पदार्थ (यथा—लोहा, निकल, कैल्शियम, मैग्नीशियम, सिलिकन तथा सोडियम) के छोटे-छोटे टुकड़े रहते हैं। यह तथाकथित 'हिमपिंड' जमी हुई मीथेन, अमोनिया तथा जल का बना होता है। यह नाभिक एक गैसीय वातावरण से आवृत रहता है, जिसे अंग्रेजी में 'कोमा' (जटा) कहते हैं। नाभिक तथा कोमा मिलकर धूमकेतु का शीर्ष बनाते हैं, जिसका व्यास करीब २५,००० से लेकर

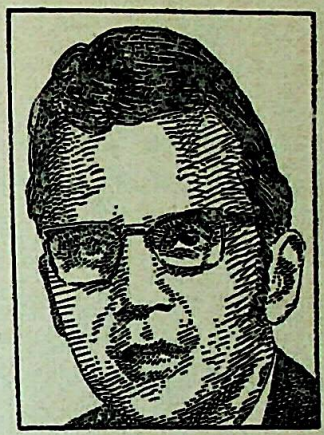

डा. लूबोस कोहौटेक

१,००,००० मील तक हो सकता है।

शीर्ष से संलग्न पूंछ, जो शीर्ष का विस्तार है, २ से ३ करोड़ मील तक लंबी हो सकती है। १८४३ में देखे गये एक असामान्य धूमकेतु की पूंछ तो २० करोड़ मील तक फैली हुई थी। यह पूंछ साधारणतया सूर्य से विपरीत दिशा में होती है (चित्र पृ. २४)। भौतिकीविदों का यह निश्चित मत है कि प्रकाश अत्यंत सूक्ष्म कणों पर दबाव डालकर उन्हें अपनी प्रवाह-दिशा में उसी प्रकार उड़ाता है, जिस प्रकार वायु रजकणों को अपने साथ ले जाती है। पूंछ को सूर्य से विपरीत दिशा में धकेलने वाली दूसरी शक्ति है सौर पवन, जो कि आवेशित कणों (मुख्यतया प्रोटानों) का प्रवाह है। कुछ धूमकेतुओं की दो-दो पूंछें होती हैं – एक गैसीय तथा दूसरी धूलि की।

यदा-कदा बड़ी पूंछ के अलावा एक और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

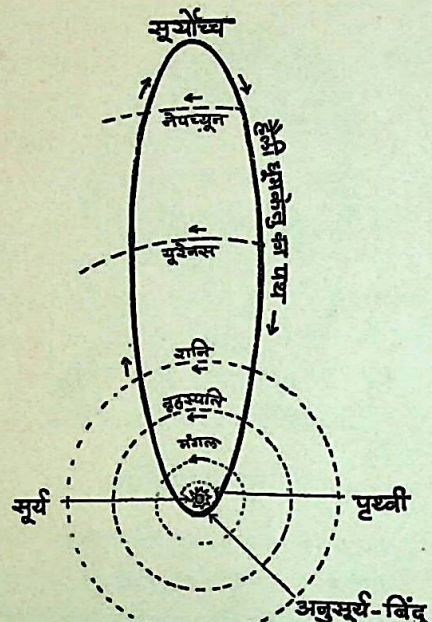

हैली धूमकेतु, जो अगस्त १९८६ में फिर उदय होगा।

छोटी पूंछ सूर्य की ओर भी होती है, जैसी कि अवेंद-रोलेंड धूमकेतु (१९५६-एच) में २५ अप्रैल १९५७ को देखी गयी थी। कुछ समय पश्चात् उसकी दिशा बदल गयी और फिर वह लुप्त हो गयी। सेकी-लाइन्स धूमकेतु (१९६२-सी) में भी ९ अप्रैल १९६२ को 'विपरीत पूंछ' पायी गयी थी।

धूमकेतु में स्वयं अपना प्रकाश नहीं होता है। चंद्रमा की तरह यह भी मुख्यतया सूर्य के प्रकाश के कारण चमकता है, जो इसके छितरे हुए ठोस तथा गैसीय पदार्थ से प्रतिक्षिप्त होता है। हाल ही में धूमकेतु के कणों में प्रकाश की प्रतिदीप्त आभा (फ्लुओरेसेन्स) का भी पता चला है।

साधारणतया एक वर्ष में छोटे-बड़े छह धूमकेतु दिखाई देते हैं। इनकी उत्पत्ति के विषय में अभी तक वैज्ञानिकों का कोई निश्चित मत नहीं है। प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार की धारणाएं प्रचलित थीं। अरस्तू का विचार था कि जो गैसीय पदार्थ पृथ्वी से निकलकर वायु-मंडल में तैरा करता है, वही धूमकेतु है। एक मत यह भी था कि धूमकेतु की दूरी चंद्रमा से अधिक नहीं होती।

साधारणतया धूमकेतु के उदय को किसी महान घटना की पूर्वसूचना माना जाता था। प्रभु यीशु के जन्म पर देखा गया 'बेतुलहम का सितारा' संभवतः कोई पुच्छलतारा ही था। परंतु इनके उदय का संबंध प्रायः राजा की मृत्यु, भीषण बाढ़ तथा महामारी आदि अशुभ घटनाओं से ही जोड़ा जाता है।

लंदन में १६६५ की प्लेग तथा १६६६ की भयानक आग से पूर्व अति प्रकाशमान धूमकेतु देखे गये थे। डेनियल डीफो ने अपनी 'जरनल आफ प्लेग इयर' में इन पुच्छलतारों का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा है कि ये दोनों शहर के ऊपर घरों के इतने पास से गुजरे थे कि यह स्पष्ट था कि इनका कुछ कुछ अनिष्ट प्रभाव शहर पर अवश्य पड़ेगा।

हैली धूमकेतु १० मई १९१० को उदय हुआ, उसके दो दिन पश्चात् १२ मई १९१० को एडवर्ड सप्तम का देहांत हो गया। मार्च १९७० में बैनेट धूमकेतु उदित हुआ; परंतु कोई बड़ी शुभ अथवा अशुभ घटना उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ संबंधित नहीं हैं।

दूरबीन के आविष्कार के पहले शून्य में सेइनका अकस्मात् प्रकट होजाना मानवीय ज्ञान की परिधि से परे था और उसके बारे में अटकलें लगाया जाना स्वाभाविक ही था। परंतु अब विज्ञान ने अंधविश्वासों के लिए कोई गुंजाइश नहीं रखी है। शेक्सपियर की ये प्रसिद्ध पंक्तियां अब निरर्थक हो गयी हैं :

नहीं उदय होते हैं धूमकेतु,
भिखारियों की मृत्यु पर
नभ आलोकित हो उठता है
यदि कोई सम्राट मरे।

(जूलियस सीज़र)

आज के खगोलज्ञ सदा सजग रहते हैं। जैसे ही तारों के स्पष्ट प्रतिबिंबों में कोई संदेहजनक धुंधलापन दिखाई देता है, तारा-सारिणी के आधार पर उसके विषय में शोध आरंभ हो जाती है। प्रतिदिन उसकी गति-विधि का निरीक्षण होता है। यदि धुंधला पिंड धूमकेतु हो, तो उसके परिक्रमा-पथ का परिकलन किया जाता है, जैसा कि डा. कोहौटेक ने किया।

डेन्मार्क के नामी खगोलज्ञ टाइको ब्राहे (१५४६-१६०१) ने सर्वप्रथम १५७७ में यह मत प्रतिपादित किया कि धूमकेतु करोड़ों मील विस्तीर्ण ब्रह्मांड से सौर मंडल में आते हैं। आर. ए. लिटलटन का मत है कि जब सूर्य अंतर-ताराकीय धूलि तथा गैस में से गुजरता है, तो उनके संघनन से धूमकेतु की उत्पत्ति होती है।

हालैंड की लेइडन वेधशाला के जे. एच. ऊर्ट ने यह विचार रखा है कि मंगल तथा वृहस्पति के परिक्रमा-पथों के बीच कभी एक ग्रह था। वह किसी बाहरी शक्ति के प्रभाव से या आंतरिक प्रतिबलों के कारण बिखर गया। उसके कुछ टुकड़े तो सौर मंडल के बाहर चले गये। कुछ टुकड़े वृत्ताभ परिक्रमा-पथों में पूर्ववत् सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते रहे। इन्हें क्षुद्रग्रह (एस्टेरायड) कहते हैं। कुछ और लंबोतरे (दीर्घ वृत्तीय) परिक्रमा-पथों में सूर्य के गिर्द घूमने लगे और फिर धूमकेतु बन गये। ऊर्ट का अनुमान है कि ५ प्रतिशत

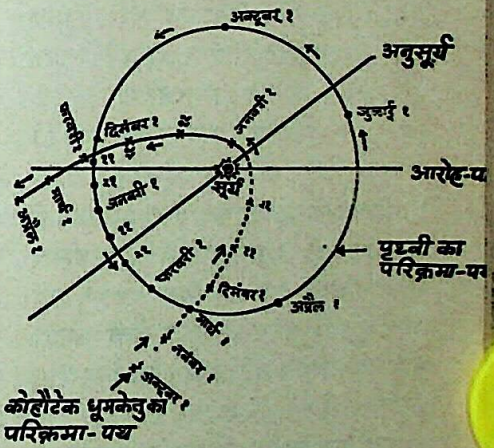

कोहौटेक धूमकेतु तथा पृथ्वी के अक्टूबर १९७३ से अप्रैल १९७४ तक के परिक्रमा-पथों का आरेखीय निरूपण। धूमकेतु के परिक्रमा-पथ का वह भाग जो पृथ्वीकक्ष से नीचे है, खंडित रेखा द्वारा दिखाया गया है। (स्मिथ सोनियन एस्ट्रोफिजिकल लैबोरेटरी का चार्ट)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टुकड़े सौर मंडल के बाहर चले गये थे। धूमकेतुओं की संख्या $१०^{१४}$ (दस नील) के आस-पास कूती गयी है।

धूमकेतुओं में सबसे प्रसिद्ध है हैली धूमकेतु। इसका पता एडमंड हैली ने लगाया था। उन्हीं ने यह सिद्ध किया कि कुछ धूमकेतुओं का परिक्रमा-पथ परवलयाकार (पैराबोलिक) होता है। उन्होंने समस्त अभिलेखों का अध्ययन-विश्लेषण करके २४ चुनिंदा धूमकेतुओं के परिक्रमा-पथों का निर्धारण किया। उन्होंने देखा कि १६८२ का दीर्घकाय धूमकेतु वही है, जो १५३१ तथा १६०७ में भी देखा गया था; क्योंकि इसका उदय साधारणतया ७६ वर्ष के बाद होता है। (इसमें पड़ने वाला अंतर बृहस्पति तथा शनि के प्रभाव के कारण है।)

इन बातों के आधार पर हैली ने भविष्यवाणी की कि यह धूमकेतु १७५८ के अंत में अथवा १७५९ के आरंभ में फिर उदय होगा। और सचमुच यह १२ मार्च १७५९ को प्रकट हुआ। परंतु खगोलज्ञ हैली अपनी भविष्यवाणी को फलित होते देखने के लिए जीवित न थे।

हैली धूमकेतु नेपच्यून ग्रह के परिवार का सदस्य है (पष्ठ २६) इसे चीनी विशेषज्ञों ने २४० ई. पू. में देखा था। यह तब से अब तक २८ बार दिखाई दे चुका है। अगली बार यह १ अगस्त १९८६ के लगभग प्रकट होगा। पिछली बार यह १९ मई १९१० को पृथ्वी और सूर्य के बीच से गुजरा था। तब यह पृथ्वी के इतने निकट था कि पृथ्वी इसकी पूंछ में से निकली। परंतु पृथ्वी को कोई क्षति नहीं हुई। हां, हिंद महासागर में चलने वाले जहाजों ने रात को क्षितिज को आलोकित होते अवश्य देखा।

कभी-कभी धूमकेतु टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाते हैं और सदा के लिए लुप्त हो जाते हैं। बेला धूमकेतु इसका अच्छा उदाहरण है। यह बृहस्पति के परिवार का सदस्य था और हर ६.६ वर्ष बाद प्रकट होता था। इसकी खोज १७७२ में हुई थी और फिर १८१५ तथा १८२६ में इसके परिक्रमा-पथ का सही-सही परिकलन किया गया था। जब १३ जनवरी १८४६ में यह उदित हुआ, तो इसके दो टुकड़े हो चुके थे। ये दोनों टुकड़े धीरे-धीरे एक दूसरे से दूर होते गये और १८५२ में जब ये फिर प्रकट हुए, तो इनके बीच १३ लाख मील का अंतर था।

सन १८६६ में सूर्य के अति निकट होने के कारण ये दिखाई नहीं दिये। परंतु १८७२ में जब इनका परिक्रमा-पथ पृथ्वी की कक्षा से केवल कई हजार मील दूर था, तो २७ नवंबर को कई घंटे तक आकाश में अद्भुत उल्कापात हुआ। जब यह आकाशी आतिशबाजी सबसे ज्यादा तेजी पर थी, तब प्रति मिनिट १०० उल्काएं तक देखी गयी थीं।

इस प्रकार धूमकेतु के बिखरने के अन्य उदाहरण हैं — पेरीन, टाइलर, एनसर तथा वेस्टफाल धूमकेतु, जो क्रमशः १८९७, १९१६, १९२६ तथा १९३० में सूर्य के अतिनिकट आने पर लुप्त हो गये।

यह शंका उठना स्वाभाविक है कि क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी पृथ्वी की टक्कर किसी धूमकेतु से नहीं हो सकती ? खगोलज्ञों ने हिसाब लगाया है कि एक करोड़ वर्ष में केवल एक बार ऐसा होने की संभावना है। परंतु इसी सदी में ऐसा हुआ था, इसका प्रमाण है। रूसी विज्ञानियों की नयी खोजों से प्रकट होता है कि साइबेरिया प्रदेश में ३० जून १९०८ को हुई दुर्घटना धूमकेतु के कारण हुई, न कि उल्कापात के कारण।

उस दिन लगभग १० बजे सवेरे एक अग्निपिंड को आकाश में दौड़ते देखा गया। मीलों तक धरती कांप उठी और रेलगाड़ी पटरी से उतर गयी। आस-पास चर रहे कोई ५,००० रेनिडीयर मर गये। परंतु किसी मनुष्य की मृत्यु नहीं हुई। उसके बाद बहुत दिनों तक यूरोप के आकाश में रात के दस बजे से मध्यरात्रि तक इतना प्रकाश रहता था कि पुस्तक सुगमता से पढ़ी जा सकती थी। इसका कारण यह बताया जाता है कि वायु-मंडल के ऊपरी भाग में धूमकेतु की पूंछ का पदार्थ फैल गया था और वह सूर्य के प्रकाश को प्रतिक्षिप्त करता था।

बड़े ग्रहों के अपने-अपने धूमकेतु-परिवार हैं। बृहस्पति के परिवार में ३० धूमकेतु हैं, जिनके परिभ्रमण-काल ३ वर्ष से ८ वर्ष तक के हैं। वेला धूमकेतु भी इन्हीं में से एक था। नेपच्यून ६ धूमकेतुओं का स्वामी है, जिनकी परिभ्रमण-अवधि ५० से ८० वर्ष है। हैली धूमकेतु इसी से संबद्ध है। शनि-परिवार में केवल दो धूमकेतु हैं। सूर्य के सबसे दूर वर्ती ग्रह प्लूटो के परिवार के विषय में अभी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

★

चतुर्थ अखिल भारतीय हिन्दी विज्ञान लेख प्रतियोगिता, १९७४—प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी परिषद की ओर से अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी विज्ञान-लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित हैं।

विषय:—वर्ग 'क' : आधारभूत (प्राकृत) विज्ञान, यथा भौतिकी, रासायनिक, जीव-विज्ञान, भूगर्भ-विज्ञान आदि से संबंधित कोई विषय; **वर्ग 'ख'** : व्यावहारिक विज्ञान, यथा विज्ञान के नवीनतम उपयोग, इंजीनियरी, डाक्टरी आदि से संबंधित कोई विषय।

आकार : अधिकतम २,००० शब्द, कागज पर एक ओर सुलिखित अथवा टाइप की हुई दो प्रतियां। **अंतिम तिथि** : १५ फरवरी १९७४। परिणामों की घोषणा विभिन्न पत्रिकाओं तथा 'वैज्ञानिक' के अप्रैल-जून १९७४ के अंक में प्रकाशित की जायेगी।

पुरस्कार : (प्रत्येक वर्ग में) : प्रथम-१५० रु.; द्वितीय-१०० रु.; तृतीय-५० रु.।

प्रत्येक वर्ग में तीन प्रोत्साहन-पुरस्कार भी दिये जायेंगे। अहिन्दी-भाषी प्रतियोगियों में एक विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। ऐसे प्रतियोगी अपनी मातृभाषा घोषित करें। लिफाफे पर 'प्रतियोगिता १९७४ के.....वर्ग के लिए' अवश्य लिखें। रचना भेजने का पता:

प्रतियोगिता- व्यवस्थापक, हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद,
सूचना-प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, बंबई —४००-०८५।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान-यात्रा

केजिता

चाय महज शौक या सर्दियों का गर्म पेय-भर नहीं, एक आश्चर्यजनक दवा भी हो सकती है। यह बात सामने आयी है एक ताजे रूसी वैज्ञानिक प्रयोग से। कीव के 'बोगोमोलेट्स इंस्टिटयूट आफ फिजियोलाजी' में कुछ चूहों को कुछ समय विकिरण की मौजूदगी में रखा गया। जब विकिरण के प्रभाव से वे ल्यूकेमिया के शिकार हो गये, तो उन्हें दो वर्गों में विभाजित कर दिया गया। एक वर्ग को कोई दवा नहीं दी गयी और दूसरे वर्ग को चाय की पत्तियों से प्राप्त एक कार्बनिक यौगिक का नियमित सेवन कराया गया। चाय-पोषित चूहे ही जीवित रह सके। इससे वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इन कैटेकिन्स की सहायता से ल्यूकेमिया की एक नयी दवा का विकास किया जा सकता है।

चाय के घटकों में कैफीन, थ्योब्रोमीन तथा टैनिन प्रमुख हैं। कैफीन एक उत्तेजक पदार्थ है। टैनिन शोथ को घटाने में सहायता करता है। ये तथ्य नये नहीं हैं, परंतु चाय के घटकों का सामूहिक प्रभाव ल्यूकेमिया पर भी पड़ सकता है, यह जानकारी नयी है।

मास्को के बायोकैमिस्ट्री इंस्टिटयूट के शोधकर्ताओं ने भी चाय के घटकों के औषधीय प्रभावों का स्वतंत्र अध्ययन किया है। उनका कहना है कि रासायनिक दृष्टि से कैटेकिन्स विटामिन-बी से मिलते-जुलते प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार विटामिन-सी के साथ देने पर विटामिन-पी अधिक प्रभावशाली हो जाता है, उसी प्रकार कैटेकिन्स के प्रभाव भी विटामिन-सी की मौजूदगी में अधिक व्यापक देखे गये हैं। और चाय में विटामिन-सी तत्त्व रहता है। इस सदी के आरंभ में चाय के ज्ञात घटकों की संख्या केवल तीन-चार थी। अब यह संख्या १३० तक पहुंच गयी है।

बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। जार्जिया (रूस) के डा. म्गालोब्लिशविलि की खोजों पर विश्वास किया जाये, तो गहरी हरी चाय पेट की भयंकर गड़बड़ियों को ठीक कर सकती है; वह मूत्राशय में पथरी को बनने से रोकती है; त्वचा को उत्तेजित करके सक्रिय और लचीला बनाती है, उसके छिद्रों को साफ करती है और उसे साफ रंगदार बनाती है।

लगता है न यह सब चाय का विज्ञापन?

बादल-बम

लड़ाइयों की दुनिया में बमों का बोलबाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। आग बरसाने वाले नापाम बम, आगे आने वाली पीढ़ियों तक को अंगविकल और बुद्धिविकल बना देने वाले परमाणु और हाइड्रोजन बम, क्रूरकर्मा कोबाल्ट बम और शत्रु-खेमों में बीमारी फैला देने वाले जैव-रसायन बमों के नाम-काम से आप काफी वाकिफ हैं ही। मगर अमरीका के केंद्रीय खुफिया संघटन (सी. आई. ए.) का कहना है कि अब तो रूस ने बादल-बम बनाने की तकनीक खोज ली है।

बादल-बम के पीछे कल्पना यह है कि युद्ध-क्षेत्र में शत्रु की सेनाओं के ऊपर विस्फोटक द्रव-ईंधन के बादलों को फाड़कर तबाही मचायी जा सकती है। सूचना है कि अमरीकी सरकार की नौसेना एवं वायुसेना के शोध-संस्थान भी इस तकनीक पर प्रयोग कर चुके हैं और शायद चालू वित्त-वर्ष में वायव-विस्फोटकों को आकाश में भेजने के परीक्षण किये जायेंगे।

स्वाभाविक ही है कि बचाव-तरीकों के बाबत भी खोज पर ध्यान दिया जाये। कृत्रिम आंधी और वर्षा की व्यवस्था करके बादल-बम को किसी अन्य दिशा में मोड़ देने की संभावना पर ध्यान दिया जा रहा है।

रसायन-बंधन

दो इकाइयों के पारस्परिक बंधन के जरिये प्रकृति न जाने कब से सृष्टिक्रम को चलाती आ रही है। आधुनिक प्रौद्योगिकी ने भी प्रकृति के इस सूत्र को खूब समझा है। नतीजे की शक्ल में सामने आये हैं नये-नये गुणों से युक्त उपयोगी और महत्त्वपूर्ण नूतन पदार्थ। इन्हीं में से एक है रसायन-बंधित चमड़ा।

मद्रास के केंद्रीय चमड़ा शोध-संस्थान ने हाल में प्राकृतिक चमड़े और संश्लिष्ट पालिमरों की सहायता से एक नये प्रकार के चमड़े का विकास किया है, जो प्रचलित चमड़े की अपेक्षा कहीं अधिक मजबूत, एकसार और टिकाऊ होगा। इसके निर्माण की तकनीक का नाम है—ग्राफ्ट पालिमराइजेशन। इस तकनीक की सहायता से चमड़े को स्थायी रूप से परिष्कृत-सुसज्जित किया जा सकेगा। कहा जा रहा है कि चमड़ा कमाने में आज जितनी प्रक्रियाओं की आवश्यकता पड़ती है, उनमें से कई इस तकनीक के बाद अनावश्यक हो जायेंगी।

निर्बंध मिलन

एक से अधिक दवाओं को शौकिया या बिना किसी जानकारी के यों ही मिलाकर खा लेने से अमरीका में प्रतिवर्ष लगभग ७,५०० मनुष्यों की मृत्यु हो जाती है। यों इनमें से अधिकांश दवाएं अलग-अलग खाने पर खतरनाक नहीं होतीं।

बात यों है, प्रत्येक दवा—चाहे वह कितनी भी उपयोगी क्यों नहीं हो—कुछ न कुछ अवांतर प्रभाव (साइड इफेक्ट) भी जरूर डालती है। जब कई दवाएं मिलाकर खायें तो उनके संमिश्रण का सामूहिक प्रभाव कभी-कभी प्राणहारी हो उठता है।

मसलन नाक में डाली जाने वाली कुछ दवाएं (नोज ड्राप) रक्त-दाब को कम करने वाली गोलियों को निष्प्रभाव बना देती हैं। इसी प्रकार दिल के दौरे के पश्चात् दी जाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाली एन्टीकोएग्युलैंट (थक्का बनना रोकने वाली) दवाओं पर एस्पिरीन का प्रभाव पड़ता है। एक और दवा के विषय में देखा गया है कि वह पनीर के कुछ घटकों के साथ क्रिया करके आदमी के रक्त-दाब को काफी बढ़ा देती है। इसी तरह एस्पिरीन खाने के बाद जांच की जाये, तो स्वस्थ आदमी के बारे में भी धोखा हो सकता है कि वह उच्च रक्त-दाब रोग का मरीज है।

सो बंधनों को तोड़ते और नये बंधन जोड़ते समय सोच-विचार से काम लीजिये।

रेलों से सुरक्षा

प्रतिवर्ष दस-पांच रेल-दुर्घटनाओं में देश के सौ-पचास बेकसूर मुसाफिर मौत के शिकार हो ही जाते हैं। इसे रोका जाना चाहिये, इंसान की जान अनमोल होती है। दूसरे, हर दुर्घटना में हजारों रुपये हर्जाने के देने पड़ते हैं; और अब तो हर्जाने की उच्चतम रकम भी २० हजार से बढ़कर ५० हजार रुपये की जा रही है।

बंबई के भाभा परमाणु-अनुसंधान केंद्र तथा लखनऊ के 'रेलवेज रिसर्च, डिजाइन एंड स्टैंडर्ड्स आर्गनाइजेशन' के संयुक्त प्रयत्नों से अब ऐसी यांत्रिक व्यवस्था विकसित की गयी है, जो इंजन-ड्राइवरों पर नियंत्रण रख सकेगी और यदि वे खतरे पर ध्यान देने से चूक जायें, तो स्वयं आवश्यक कदम उठा सकेगी।

पटरी के सहारे लगे खतरे के किसी भी लाल निशान पर पहुंचते ही यह यांत्रिक-व्यवस्था एक अलार्म बजा देगी, जो ड्राइवर को आगाह करने का काम भी करेगी। यदि ड्राइवर उस पर ध्यान न दे, तो यह स्वयं ब्रेक को संभालकर गाड़ी को रोक देगी। साथ ही यह ड्राइवर की ऐसी सब लापरवाहियों का रिकार्ड भी रखेगी।

दो सौ किलोमीटर प्रतिघंटे की गति तक यह व्यवस्था उपयोगी बनी रह सकती है। नतीजे का इंतजार है।

उदासीन युवती

आप जानते हैं, अब तक टीकों का प्रयोग केवल उन्हीं बीमारियों से बचने के लिए किया जा रहा है, जो वाइरस जनित होती हैं और जिन पर एंटी बायोटिक पदार्थों का कोई असर नहीं हो पाता। मगर नयी दिल्ली के आल इंडिया इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल सायंसेस के वैज्ञानिकों ने हाल में एक टीके पर परीक्षण किये हैं, जिसे लगाने पर मादाएं गर्भधारण के मामले में उदासीन तथा निष्क्रिय हो जायेंगी।

यह टीका अभी जानवरों पर ही आजमाया गया है और अभी भी परीक्षण की अवस्था में है; परंतु अनुमान है कि स्त्रियों पर भी यह कारगर साबित होगा। गर्भ-निरोध के लिए अब तक जितने तरीके खोजे और काम में लाये गये हैं, संभवतः यह उनमें सबसे अधिक सरल है।

हां, इन सभी तरीकों में एक बात समान है — आदमी को अपने पर नियंत्रण रखने के लिए कोई बाहरी बेजान चीज चाहिये। जानदार बातें उस पर तो कोई असर नहीं डाल सकतीं। पौरुष भी शायद यही है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

संपूर्ण वस्त्र

कालिडया की प्राचीन संस्कृति में नव-दीक्षितों को जब प्रतीक-स्वरूप उप-वस्त्र पहनाया जाता, तब उन्हें समझाया जाता था—इसके एक-एक दाग को धोने का प्रयत्न न करना; संपूर्ण वस्त्र को धोकर साफ करना।

अपनी खामियों को एक के बाद एक को सुधारने का प्रयत्न मत करो; वैसा करने से तुम्हें खास मदद नहीं मिलेगी। तुम्हें तो संपूर्ण चेतना को ही बदल डालना है। चेतना को समूचा उलट-पुलट कर देने की आवश्यकता है। तुम जिस अवस्था में हो, उसमें से तुम्हें बाहर निकल आना है और एक ऊर्ध्व अवस्था में पहुंचना है। उस ऊर्ध्व अवस्था में रहते हुए तुम जिस भी दुर्बलता को मिटाना चाहोगे, मिटा सकोगे; और जो काम करना है, उसका पूरा अंदाज तुम्हें हो जायेगा।

—माताजी

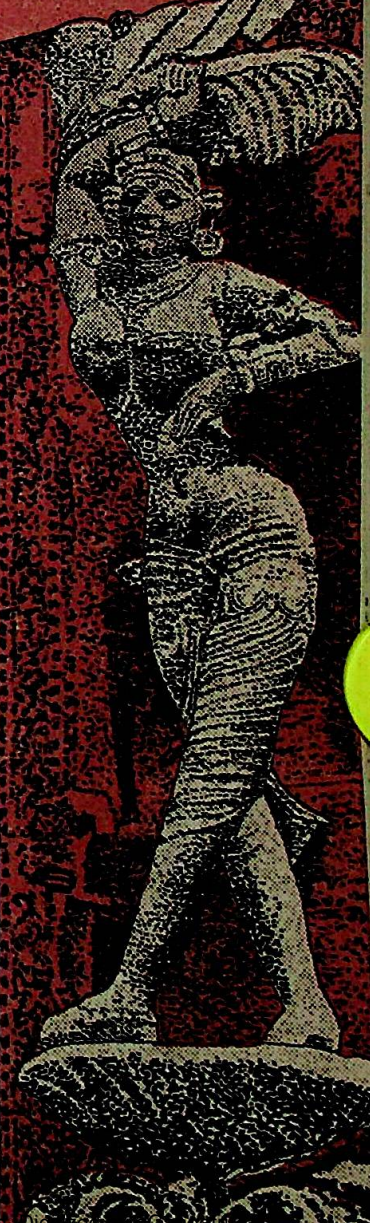

मन को बदलो

आर्थर आस्बोर्न

बहुत-से भक्त भगवान रमण महर्षि से संसार-परित्याग के संबंध में पूछा करते थे। भगवान सदा इसे हतोत्साहित किया करते थे। नीचे के वार्तालाप से यह स्पष्ट हो जायेगा कि परित्याग निवृत्ति नहीं, अपितु प्रेम का विस्तार है।

भक्त : मेरी इच्छा है कि मैं अपना काम छोड़ दूं और सदा श्रीभगवान के चरणों में रहूं।

भगवान : भगवान सदा आपके साथ हैं, आपमें हैं। आपकी आत्मा भगवान है। आपको इसी का साक्षात्कार करना है।

भक्त : परंतु मेरी यह उत्कट इच्छा है कि मैं संन्यासी के रूप में सभी आसक्तियों को छोड़ दूं और संसार का परित्याग कर दूं।

भगवान : परित्याग का अर्थ वस्त्र-परिवर्तन या गृह-परित्याग से नहीं है। वास्तविक परित्याग तो इच्छाओं, आवेशों और आसक्तियों का परित्याग है।

भक्त : परंतु भगवान की हार्दिक भाव से भक्ति संसार-परित्याग के बिना संभव नहीं है।

भगवान : नहीं, जो वस्तुतः संसार का परित्याग करता है, वह तो संसार में निमग्न हो जाता है और अपने प्रेम की परिधि इतनी विस्तृत कर लेता है कि उसमें समस्त विश्व समा जाता है। गेरुए वस्त्र धारण करने के लिए गृह-परित्याग की अपेक्षा सार्वलौकिक प्रेम के रूप में भक्त की वृत्ति का वर्णन अधिक उपयुक्त होगा।

भक्त : घर पर प्रेम के बंधन बहुत दृढ़ होते हैं।

भगवान : जो व्यक्ति उस समय गृह-परित्याग करता है, जब वह इसके लिए परिपक्व नहीं हुआ हो, वह केवल दूसरे बंधन पैदा कर लेता है।

भक्त : क्या परित्याग आसक्तियों के तोड़ने का सर्वोत्तम साधन नहीं है?

भगवान : ऐसा उस व्यक्ति के लिए हो सकता है, जिसका मन पहले ही बंधनों से मुक्त हो। परंतु आपने परित्याग के गंभीर अर्थ को हृदयंगम नहीं किया। सांसारिक जीवन का परित्याग करने वाली महान आत्माओं ने पारिवारिक जीवन के प्रति विरक्ति के कारण वैसा नहीं किया, बल्कि अपनी विशालहृदयता और समस्त मानव-जाति तथा संसार के समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम के कारण वैसा किया है।

भक्त : पारिवारिक बंधनों को कभी न कभी तो तोड़ना ही है, तो मैं उन्हें अभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से क्यों न तोड़ दूं, ताकि मेरा प्रेम सबके प्रति समान हो ?

भगवान : जब आप वस्तुतः सबके लिए समान प्रेम का अनुभव करेंगे, जब आपका हृदय इतना विशाल हो जायेगा कि उसमें समस्त सृष्टि समा जायेगी, तब आप निश्चय ही इस या उस वस्तु के परित्याग के संबंध में नहीं सोचेंगे; आप सांसारिक जीवन से इस प्रकार पराङ्मुख हो जायेंगे, जिस प्रकार पका हुआ फल वृक्ष की शाखा से अलग हो जाता है। आप यह अनुभव करेंगे कि सारा संसार आपका घर है।

भगवान रमण प्रायः कहा करते थे कि सच्चा परित्याग मन में है। न तो भौतिक परित्याग से इनकी प्राप्ति होती है और न भौतिक परित्याग के अभाव में इसके मार्ग में बाधा पड़ती है।

'आप यह क्यों सोचते हैं कि आप गृहस्थ हैं? इसी प्रकार के विचार कि आप संन्यासी हैं, अगर आप घर-गृहस्थी छोड़कर बाहर भी चले जायें, फिर भी आपका पीछा नहीं छोड़ेंगे। चाहे आप गृहस्थी में रहें या गृहस्थी का परित्याग कर दें और जंगल में चले जायें, आपका मन ही आपका पीछा करता रहता है।

'अहंही विचारों का स्रोत है। यही शरीर और संसार की सृष्टि करता है और यही आपको यह सोचने पर बाध्य करता है कि आप गृहस्थ हैं। अगर आप परित्याग कर देंगे, तो आप केवल परिवार के स्थान पर

अरविंदाश्रम की अध्यात्म-ज्योति माताजी का देहावसान गत १७ नवंबर को हुआ। उन्हें नवनीत-परिवार की श्रद्धांजलि।

परित्याग के विचार और घर के स्थान पर जंगल की परिस्थितियों को प्रतिष्ठित करेंगे। परंतु मानसिक बाधाएं सदा आपके सामने रहेंगी। नयी परिस्थितियों में तो वे और भी अधिक बढ़ जाती हैं।

'परिस्थितियों के परिवर्तन से कोई लाभ नहीं। हमारी बाधा मन है, चाहे घर हो या जंगल हमें इस पर विजय प्राप्त करनी है। अगर आप जंगल में मन पर विजय पा सकते हैं, तो घर में क्यों नहीं? इसलिए परिस्थितियों को क्यों बदला जाये? कोई भी परिस्थितियां हों, आप अभी से प्रयत्न प्रारंभ कर सकते हैं।'

[लेखक की पुस्तक 'रमण महर्षि एंड द पाथ आफ सेल्फ-नॉलेज' के हिन्दी अनुवाद 'रमण महर्षि' में से प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी की अनुमति से उद्धृत; अनुवादक हैं वेदराज वेदालंकार।]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांडले जेल से दक्षिण कलकत्ता सेवक समिति के उपमंत्री श्री अनाथबंधु दत्त को दिसंबर १९२६ में लिखित पत्र का अंश :

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि जिसने जेलखाना नहीं देखा, उसने दुनिया में कुछ नहीं देखा। उसे देखे बिना दुनिया के बहुत सारे सत्य प्रकट नहीं होते। मैंने अपने मन का विश्लेषण करके देखा है कि मेरी यह चिंतना ईर्ष्याजन्य नहीं है। मैंने वास्तव में जेल में आकर बहुत कुछ सीखा है, बहुत सारे सत्य जो कभी धुंधले थे, अब आकर साफ हो गये हैं; बहुत सारी नयी अनुभूतियों ने भी मेरे जीवन को सामर्थ्य और गहराई दी है।

जेलखाने में रहते - रहते 'सब्जेक्टिव ट्रुथ' और 'आब्जेक्टिव ट्रुथ' एक हो जाते हैं। भावना और स्मृति मानो सत्य में परिणत हो जाती हैं। मेरी दशा बहुत-कुछ ऐसी ही है। कम से कम इस समय तो भाव ही मेरे लिए वास्तविक सत्य हैं; क्योंकि एकत्व-बोध में ही शांति मिलती है।

मांडले जेल से ही श्रीयुत दिलीप कुमार राय को लिखे गये एक पत्र का अंश:

मेरा खयाल है, अधिकांश अपराधियों की जेल में नैतिक उन्नति नहीं होती, बल्कि वे और भी हीन हो जाते हैं। इतने दिनों जेल में रहने के बाद यह तो कहना ही पड़ेगा कि जेल के शासन में आमूल परिवर्तन की बहुत जरूरत है एवं भविष्य में जेलखाने की प्रणाली में परिवर्तन लाना भी मेरा एक काम होगा। भारतीय जेल-प्रणाली बहुत ही खराब है अर्थात् ब्रिटिश प्रणाली के आदर्श का अनुसरण मात्र है—ठीक जैसे कलकत्ता विश्वविद्यालय वाहियात है, यानी लंदन विश्वविद्यालय का अनुकरण मात्र है। जेल-सुधार के विषय में हम लोगों को अमरीका जैसे उन्नत देशों की व्यवस्था का ही अनुसरण करना उचित है।

इस व्यवस्था में जो सबसे अधिक प्रयोजनीय है, वह है एक नया जीवन या कहो अपराधियों के प्रति सहानुभूति के भाव पैदा करना। अपराधियों की प्रवृत्तियों को मानसिक व्याधि मानना पड़ेगा एवं उसी के अनुसार व्यवस्था करना भी उचित होगा। प्रतिशोधमूलक दंडविधान को...अब सुधारवादी नये दंड विधान के लिए राह खोजनी होगी।

• सुभाषचंद्र बसु •

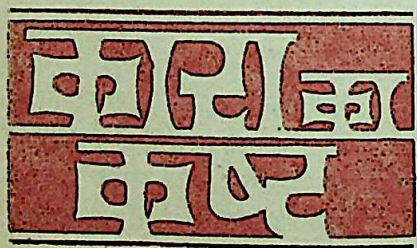

मुझे नहीं लगता है कि यदि मैं खुद जेल में न आता, तो एक कैदी को या अपराधी को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देख पाता। परंतु इस विषय में मुझे संदेह नहीं है कि हमारे देश के आर्टिस्ट या साहित्यिकों को यदि थोड़ा-सा भी जेल-जीवन का अनुभव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता, तो हमारी कला एवं साहित्य की बहुत-कुछ समृद्धि हुई होती। काजी नजरुल इस्लाम की कविताएं उनके जेल-अनुभव की कितनी ऋणी हैं, इस तथ्य पर विचार ही नहीं किया जाता।

साधारणतः एक दार्शनिक-भाव कैदी मनुष्य के भीतर शक्ति का संचार करता है। मेरी भी दशा वैसी ही है और दर्शन के विषय में जितना जो पढ़ा-गुना उसका तथा जीवन के विषय में मेरी जो धारणा बनी है, उसका उचित उपयोग हो रहा है। विचारने का यथेष्ट विषय मनुष्य अपने अंतर में ढूंढ़ पाता है, कैदी होने पर भी उसे कोई कष्ट नहीं रह जाता है, अवश्य यदि उसका स्वास्थ्य साथ दे। किंतु हम लोगों का कष्ट सिर्फ आध्यात्मिक ही तो नहीं है, शारीरिक भी है। शरीर समय-समय पर सावधान रहने पर भी कमजोर हो जाता है।

लोकमान्य तिलक ने कारावास में गीता की टीका लिख डाली। निस्संदेह मैं यह कह सकता हूं कि मन की ओर से उन्होंने सुखी दिन व्यतीत किये थे। किंतु यह भी मेरी निश्चित धारणा है कि वही मांडले जेल में ६ वर्ष कैदी रहना, उनकी अकाल मृत्यु का भी कारण हुआ।

..... जेल की जिस निर्जनता में मनुष्य विवश होकर दिन काटता है, वही निर्जनता उसे जीवन की चरम समस्याओं को गहरे पैठकर सोचने-समझने का सुअवसर देती है। हम अपने संबंध में यह कह सकते हैं कि हमारे व्यक्तिगत और समिष्टगत जीवन के बहुत-सारे जटिल प्रश्न एक वर्ष के पहले से अब बहुत-कुछ समाधान के निकट हैं। जो सभी विचार कभी बहुत ही हल्के सोचे-विचारे गये या प्रकट किये गये होते थे, आज जैसे वे सभी स्पष्ट एवं सहज हो गये हैं। और चाहे कुछ न हो, इतना तो है ही कि अपनी मियाद समाप्त होने तक मैं आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत-कुछ लाभान्वित हो जाऊंगा।

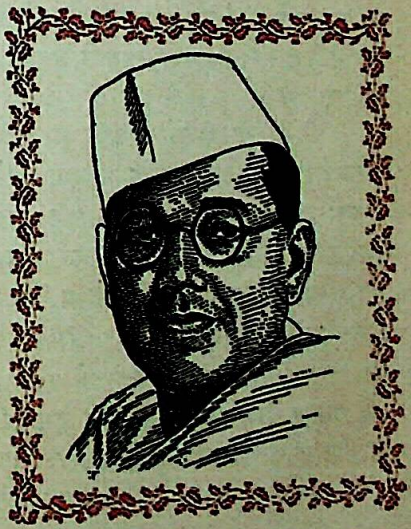

मेरा विश्वास है, बहुत लंबे दिनों की सजा में सबसे भयानक खतरा यह है कि उसके (कैदी के) अनजान में ही, असमय बुढ़ापा घेर लेता है। अतः इस ओर से उसे विशेष रूप से सावधान रहना चाहिये। कैसे मनुष्य लंबे अर्से तक कैद की कोठरी में रहकर धीरे-धीरे तन और मन से असमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़ा होता जाता है। निश्चय ही इसके बहुत-से कारण है – अस्वास्थ्यकर खाद्य, व्यायाम और खेल-कूद का अभाव, समाज से कटे रहना, मन पर एक अधीनता का बोझ, मित्रों का अभाव एवं संगीत का अभाव, जो सबके अंत में उल्लिखित होने पर भी सबसे बड़ा अभाव है। कितने ऐसे अभाव हैं जिन्हें आदमी भीतर से पूरा कर सकता है; किंतु कुछ ऐसे भी हैं जो बाहरी विषयों से ही पूरे होते हैं और यह बाहर से पूरे होने वाले विषयों से वंचित होना असमय बूढ़े होने में कम 'जिम्मेवार' नहीं होता।

पिकनिक, विश्रंभालाप, संगीत-चर्चा, भाषण का आयोजन, खुली जगहों में खेल-कूद, काव्य-साहित्य की आलोचना—ये सभी विषय हम लोगों के जीवन को इतना सरस और समृद्ध करते हैं कि हम उसका अंदाज भी नहीं लगा पाते। उसका महत्त्व तो तब मालूम होता है, जब हमें कैद की कोठरी में डाल दिया जाता है। जब तक जेलों में अच्छे ढंग से स्वास्थ्यकर और सामाजिक विधि-विधान की व्यवस्था नहीं होती, तब तक कैदियों की दशा में सुधार असंभव है; और तब तक जेल आजकल की तरह नैतिक विकास की ओर अग्रसर न करके अवनति का केंद्र बनी ही रहेगी।

जो राजनैतिक अपराधी हैं, वे यह जानते हैं कि जेल की कोठरी से निकलने पर समाज उन्हें स्वीकार कर लेगा, मगर साधारण अपराधियों को इसकी कोई आशा नहीं रहती। वे संभवतः अपने घर-परिवार के अलावा और कहीं से भी सहानुभूति की अपेक्षा नहीं रखते और इसीलिए वे लोगों से मिलने-जुलने में लज्जा अनुभव करते हैं। हम लोगों के वार्ड में जिन कैदियों को काम करना पड़ता है, उनमें से किसी-किसी का यह कहना है कि उनके अपने लोग यह तक नहीं जानते कि वे जेल में बंद हैं। शर्म से वे घरों में समाचार तक नहीं भेजते। यह मुझे बहुत सालता है। 'सभ्य-समाज' अपराधियों से सहानुभूति क्यों नहीं रखता?

कैदियों के जीवन की पीड़ा शारीरिक की अपेक्षा मानसिक अधिक है। जहां कहीं अत्याचार और अपमान के आघात थोड़े-बहुत कम हैं, वहां कैदी-जीवन उतना पीड़ा-दायक नहीं होता। ये सब सूक्ष्म-सूक्ष्म आघात बने ही रहते हैं, जेल-अधिकारियों का उसमें कोई हाथ नहीं होता, कम से कम मेरा ऐसा ही अनुभव है। यह जो तमाम आघात या उत्पीड़न है—यह उत्पीड़क के प्रति मनुष्य के मन को और भी कालुषिक कर देता है एवं इस दृष्टि से लगता है कि वह सब व्यर्थ ही है। किंतु बाद को हम लोग अपना पार्थिव अस्तित्व भूल जाते हैं और अपने अभ्यंतर में एक आनंद धाम की स्थापना कर लेते हैं। तभी तो यह सब आघात पहुंचा-पहुंचाकर हमारी स्वप्नाविष्ट आत्मा को झकझोरते हुए यह बोध कराया जाता है कि मनुष्य की पारिपार्श्विक अवस्था कितनी कठोर और निरानंद है।

जनसाधारण की यह धारणा है कि जिन अपराधियों को फांसी दी जाती है, उनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक प्रकार की स्वाभाविक दुर्लवता आती है और जो किसी महत् उद्देश्य के लिए प्राण न्योछावर करते हैं, मात्र वे ही बहादुरी के साथ मरण-वरण करते हैं। यह धारणा गलत है।

इस विषय में मैंने कुछ प्रमाण इकट्ठे किये हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि अधिकांश क्षेत्रों में बहुत से साधारण अपराधी साहस के साथ ही प्राण न्योछावर करते हैं और फांसी का फंदा गले में पड़ने के पूर्व वे भगवान् को नमन करते हैं। वे बिलकुल टूट जाते हैं, यह बात नहीं। एक बार एक जेल अधिकारी ने मुझे बताया कि फांसी के एक कैदी ने उनके निकट यह स्वीकार किया था कि उसने एक ही हत्या की है। उससे पूछा गया कि वह अपने किये के प्रति दुःखी है या नहीं, तो उसने कहा कतई नहीं; कारण, उस व्यक्ति के विरोध में उसका कदम उचित था। और वह बहादुरी के साथ फांसी के तख्ते पर चढ़ गया, उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं थी।

[भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित एवं श्री छेदीलाल गुप्त द्वारा
अनूदित पुस्तक 'तरुणाई के सपने' से साभार]

दिल्ली जाकर भूल गया

दो साल पूर्व सोवियत संघ की यात्रा पर गया था, तो बहुत-सी अनुभूतियों के साथ वापस आया। उनमें सबसे अधिक झकझोर देने वाली अनुभूति यह थी :

मास्को हवाई अड्डे पर उतरने के बाद शहर की ओर जाते हुए रास्ते में जब क्रेमलिन आया, तो मैंने अपने साथ के रूसी मार्गदर्शक से अंग्रेजी में पूछा – 'यह क्या है ?'

'यही सुप्रसिद्ध क्रेमलिन है', उन्होंने हिन्दी में उत्तर देकर मुझे विस्मय में डाल दिया।

'आप क्या हिन्दी जानते हैं ?' मैंने सुखद आश्चर्य के साथ पूछा।

'जानता था, लेकिन दिल्ली में जाकर भूल गया।' उन्होंने बड़े सहज ढंग से उत्तर दिया। पर मुझे लगा, जैसे मेरे गालों पर किसी ने अनगिनत तमाचे जड़ दिये हैं।

उत्तर देने वाले रूस-भारत मैत्री संघ के मंत्री श्री जिजिन थे, जो बहुत वर्षों तक सोवियत दूतावास में दिल्ली रह चुके थे। उनका कहना था कि बहुत परिश्रम करके जब कोई विदेशी हिन्दी सीखकर दिल्ली पहुंचता है, तो उसे इस बात से दुःख होता है कि वहां कोई हिन्दी बोलने के लिए तैयार नहीं होता, सभी अंग्रेजी में ही बातें करते हैं। अतः कोई स्वदेश से हिन्दी सीखकर भी जाये, पर दिल्ली में जाकर उसे भूल जाता है।

क्या इस बात से हमारे देश के लोग कुछ भी प्रेरणा ले सकेंगे ? —शंकर दयाल सिंह

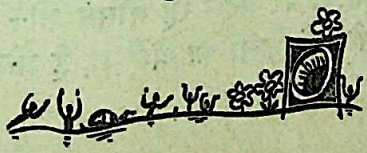

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

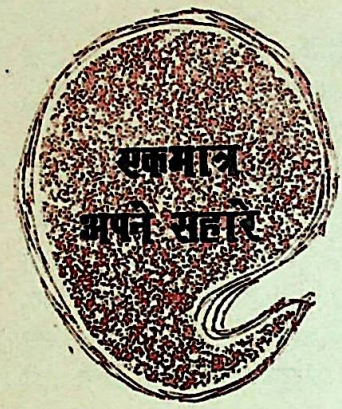

एकमात्र–अपने आकाश में उड़ते
जुगनुओं के सहारे
तमिस्र अवकाश में भटकती
नीहारिकाओं की खोज
और खो देना, खो जाने देना–
अपने असंख्य पदचिन्हों के नक्षत्र–
बस, उसी का काम था, है और रहेगा;
जिसने विराट् को अंजुरी-भर जल में
झांक लेने को पुकारा,.....और उसने झांका,
जो अपनी परिक्रमा की असंख्य परिधियों में
निरंतर बढ़ता ही रहता है !
एकमात्र–अपनी टहनियों से फैली
खुशबुओं के सहारे,
पृथ्वी की दुर्गंधित, जल-पंकिल सांसों में
औषधि, अनाज, धूप-चंदन और इत्र की
सुरभि-लहर भर देना, उत्सर्ग भी कर देना–
टहनियों पर बदल रहे मौसम को–
उसी कृष्टिकर्त्ता का श्रेय था, है और रहेगा;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

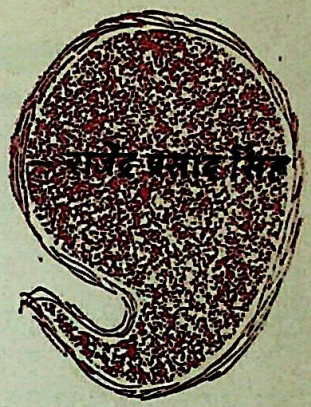

जिसने संसरण को सृजन, सृजन को कृति
और कृति को भी संस्कृति बनाकर,
–एक ही शाश्वत चमत्कार पैदा किया!
ज्ञेय भी नहीं जो, उसे ही अभिव्यक्तियों में
बार-बार बंधने को प्रेरित कर,
यों कृतार्थ करना और होना–शाश्वत चमत्कार !
एकमात्र–अपनी आवाज़ में तरंगित
अणु-वीचियों के सहारे,
दो हथेलियों के बीच का शून्य सदा भरते ही जाना
और खाली कर देना, बांटते ही जाना–
समय में निर्मित ऐश्वर्य, स्थान में रूपायित भाव,
–सभी के लिए–किसका स्वभाव था, है और रहेगा ?
उसी एकांत निर्माता का, जिसने
एक के बहुत हो जाने से घटित
अंतराल... अनस्तित्व या... शून्य को–
उसी एकमेकता का लक्षण बना डाला;
जो अस्तित्व में, लघुता की सारी सीमाओं को जोड़ती,
महत् प्रक्रिया की रचनात्मक शक्ति है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि

काका कालेलकर

कवि शब्द या तो 'कव्' धातु से आया है अथवा 'कु' धातु से। 'कु' का अर्थ होता है आवाज करना, विलाप करना अथवा गुन-गुनाना, कूजन करना; और 'कव्' धातु का अर्थ होता है कविता करना, गाना, स्तुति करना। दोनों अर्थ यहां बैठते हैं।

वेदों में कवि शब्द का प्रधान अर्थ होता है—सर्वज्ञ अथवा क्रांतदर्शी। 'क्रांत' का अर्थ सर्वज्ञ कैसे हुआ, यह सोचने की बात है। 'क्रम्' यानी जाना, आगे बढ़ना, पहुंचना।

जो आदमी आलस्य किये बिना अल्प-संतोष में फंसे बिना, आगे बढ़ता जाता है, इंद्रियों की और मन-बुद्धि की जहां तक पहुंच है, वहां तक प्रयत्न किये बिना नहीं रहता है, वही आदमी 'क्रांतदर्शी' बन सकता है। अपने जमाने में संस्कृति का जितना विकास हुआ हो, उससे लाभ उठाकर और जीवन प्रयोग के लिए जितने भी साधन उपलब्ध हों, उनसे लाभ उठाकर जो आदमी पुरुषार्थ की पराकाष्ठा करता है, उसके अंदर परमात्मा की कृपा से अद्भुत शक्तियां प्रकट होती हैं।

जो आदमी जीवन के प्रयोग करता है और उस पर चिंतन करता है, उसे कहते हैं, 'मनीषी', और जिसे अंतःस्फूर्ति से सर्व-समन्वित ज्ञान एकाएक प्रकट होता है और उसके मुंह से जीवन शब्दों में जाहिर किया जाता है, वह है 'कवि'।

ईशोपनिषद् में 'कवि' और 'मनीषी' दोनों का जिक्र एक साथ आया है। वहां कहा गया है कि मनीषी 'परिभू' होता है, वह हर एक चीज को आगे से, पीछे से, सब बाजुओं से देखता है। कालक्रम से उसमें क्या-क्या परिवर्तन होता है, उसे भी ध्यान में लेता है और इस तरह से वह ज्ञान को सर्वांग-परिपूर्ण करने की कोशिश करता है।

इससे भिन्न, जो कवि है वह 'स्वयंभू' होता है। पूर्वसाधना के द्वारा उसकी इतनी तैयारी होती है कि सर्वांग-परिपूर्ण ज्ञान क्रमशः नहीं, किंतु अंतःस्फूर्ति से उसमें एकाएक उग आता है, मानो उसका स्फोट होता है। जो बात मनीषी के लिए प्रयत्नसाध्य है, वह कवि को उत्स्फूर्त हो जाती है। ऐसे ज्ञान को हम 'हृदि संस्फुरत्' ही कहते हैं।

इतने विवेचन परसे अब आसानी से स्पष्ट हो जायेगा कि 'सब कवियों का कवि तो स्वयं परमात्मा ही है।' कवि शब्द का मूल अर्थ क्रांतदर्शी सर्वज्ञ तो है ही, लेकिन कवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल चिंतनमग्न नहीं रहता, कार्यशील भी होता है। पंडितों के बारे में जो कहा गया है 'यः क्रियावान सपंडितः,' वही वच न कवि पर भी लागू करना चाहिये।

कवि को अंतःस्फूर्ति से जो मिला हो, उसे जगत् के सामने प्रकट करने और लोगों के हृदय में उसे उगाने का मिशन भी उसी का होता है। इसलिए कवि एक तरह से 'ऋतु' भी होता है। सहस्रनाम में भगवान को 'ऋतु' भी कहा है। उस नाम का विवरण कवि के साथ भी आ सकता है और यज्ञ के साथ भी।

मेरे खयाल से भगवान के लिए जो असंख्य नाम हैं, उनमें सर्वांग-परिपूर्ण नाम है—कवि।

विचार-मंथन

कला एक लंबी यात्रा है, साधना करो। यदि तुममें मौलिकता है, तो सर्वाधिक आवश्यक बात यह है कि वह तुमसे मुक्त होनी चाहिये। यदि वह तुममें नहीं है, तो मुख्य बात यह है कि तुम उसे प्राप्त करो।

इस जीवन की साधारण से साधारण बात का कोई कोना कितना भी छोटा होते हुए अछूता रह गया होगा। उसकी खोज करो।

सृष्टि की कोई भी दो बातें समान नहीं हैं—दो हाथ, दो चेहरे, रेत के दो कण, समान नहीं हैं। हर वस्तु को काट-छांटकर अलग बैठाकर उसका दर्शन करो। तुम देखोगे, वह न्यारी होगी, निज होगी। उस वस्तु के सिर्फ उसी हिस्से को अभिव्यक्ति दो।

छपवाने के लिए मत लिखो। इस वक्त जो लिख रहे हो, रख दो। आगे चलकर अच्छा लगे, तो फिर छपवाओ। मैं सैंतीस वर्ष का था, जब 'मादाम बोवारी' छपा।'

अपनी रचना को किसी भी अर्थ या उद्देश्य से मत जोड़ो, सिवा इसके कि तुम्हें कला का सृजन करना है; अपनी दृष्टि से देखकर, अपने ढंग से देकर।

कहीं एकांत में जाकर, गहरे अध्ययन में बैठकर बिना किसी फल की इच्छा के, बिना किसी परिश्रम अथवा पुरस्कार के लिखना आरंभ करो।

कोई भी बात—अच्छी या बुरी—लेखक के लिए मात्र इतना महत्त्व रखती है कि वह उसके कला-सृजन के लिए कच्चा माल है। वह बात अपने में न अच्छी है, न बुरी है।

—गुस्टाव फ्लोबा (अनुवाद : सुरेश पांडेय)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य रघुवीर

बाली में

डा. लोकेशचंद्र

पिताजी (आचार्य रघुवीर) का विश्वास था कि स्वतंत्रता के लिए क्रांति करना प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध दायित्व है। इसलिए अंग्रेजी राज में उन्हें देश से बाहर जाने की अनुमति नहीं मिली थी। एशिया के हृदयांचलों में फैली भारतीय संस्कृति की खोज के लिए भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति प्रथम आवश्यकता थी। दोनों लक्ष्य अन्योन्याश्रित थे।

पिताजी ने लिखा था—'भारतीय संस्कृति की उपासना का अर्थ निरंतर तपस्या और गंभीर यातना है। कई वर्ष पूर्व एक फ्रेंच विद्वान ने "बाली के संस्कृत ग्रंथ" शीर्षक से एक पुस्तक लिखी। यद्यपि पुस्तक छोटी-सी थी, किंतु उसका अध्ययन रोमांचकारी हुआ। हृदय में तीव्र कामना उत्पन्न हुई कि इस द्वीपरत्न के दर्शन किये जायें।' पर यह स्वप्न ही रहा।

सन १९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ और स्वप्न वास्तविक सत्य घटित होता दीखने लगा। परंतु १९४७ से १९४९ तक, तीन वर्ष लगातार हिन्दी को राजभाषा बनवाने के यज्ञ में वे घोर परिश्रम करते रहे। 'पुनाव देवता' अर्थात् देवद्वीप बाली और अन्य एशियाई देशों की गवेषणा-यात्रा उन्हें स्थगित रखनी पड़ी।

इंडोनीसिया के राष्ट्रपति सुकर्ण २६ जनवरी १९५० को दिल्ली आये हुए थे। राष्ट्रपति-भवन में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पिताजी को राष्ट्रपति सुकर्ण से मिलाया, यह कहकर—'आचार्य रघुवीर हमारे सबसे बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषावेत्ता हैं। आपके देश के साहित्य और भाषा के भी विशेषज्ञ हैं।'

राष्ट्रपति सुकण ने कहा—'मैं तो इनसे बीस वर्ष पहले ही मिल चुका हूं—इनकी पुस्तक "अहिंसा का सिद्धांत और व्यवहार" द्वारा, जिसमें इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का डच भाषा में इतिहास लिखा है। हम इन्हें अपने इंडोनीसिया के स्वतंत्रता-संग्राम के प्रेरकों में मानते हैं। हमारे अधिकांश नेता डच भाषा ही पढ़ सकते थे, और डच भाषा में केवल आचार्य रघुवीर की पुस्तक ही उपलब्ध थी। मैं इन्हें अपना गुरु मानता हूं।'

राष्ट्रपति सुकर्ण पिताजी की ओर मुड़े और बोले—'आप हमारे देश क्यों नहीं आते?' पिताजी ने इस सुअवसर का लाभ उठाते हुए कहा—'अवश्य आऊंगा, मर्डेका के देश में। मुझे सहस्रों लोन्तार (अर्थात् ताडपत्रों की पांडुलिपियां) चाहिये।' राष्ट्रपति सुकर्ण बोले—'आइये, सब कुछ मिल जायेगा।'

फिर १९५१ का ग्रीष्म आ पहुंचा। 'इंडोनीसिया राया मूल्या मूल्या' के अनमोल देश की पुकार सत्य बन चली। २८ जून १९५१ को विमान ने जकार्ता की भूमि छुई। पिताजी की दैनिकी के अनुसार, 'हृदय गद्-गद हुआ कि आज चिरप्रतीक्षित मनःकामना की पूर्ति होगी।'

जकार्ता में 'इस्ताना मर्डेका' अर्थात् राष्ट्रपति-भवन में राष्ट्रपति सुकर्ण ने पिताजी को रात-भर के महाभारत के छाया-नाटक (वायाङ) के लिए निमंत्रित किया। पिताजी को वे स्वयं विभिन्न पात्रों की विशेषताएं बताते रहे और कहने लगे—'मेरे पिता को "प्रभु कर्ण" का दानवीर चरित्र बहुत प्रिय था। उन्होंने निश्चय किया कि मैं अपने पुत्र का नाम कर्ण रखूंगा। कर्ण का चरित्र स्वयं में बहुत उदार और महान था, पर परिस्थिति-वश वे असत् पक्ष के साथी

हो गये थे। मेरे पिता ने जब मेरा नाम रखा तो उसके पहले "सु" लगा दिया और मैं "अच्छा कर्ण," अर्थात् "सुकर्ण" बना।' दस घंटे तक राष्ट्रपति सुकर्ण महाभारत की चर्चा-विवेचना करते रहे।

पिताजी की दैनिकी में राष्ट्रपति सुकर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अपने हाथ के बने कई रेखाचित्र हैं। विशेषतः अर्जुन का विशद रेखांकन है। इंडोनीसिया के साहित्य में 'अर्जुन-विवाह' नामक काव्य विख्यात है। राष्ट्रपति सुकर्ण अर्जुन के शौर्य और प्रणयों से मोहित थे। अर्जुन का जीवन उन्हें पूर्ण ऐहिक अभिव्यक्ति लगता था।

राष्ट्रपति सुकर्ण को पिताजी ने इंडोनीसिया के प्राचीन साहित्य के २,००० ग्रंथों की सूची दी और कहा कि मुझे ये ताडपत्र-ग्रंथ चाहिये। सुकर्ण चकित होकर बोले—'क्या हमारा साहित्य इतना समृद्ध था? मुझे पता नहीं था। मैं तो आपको इसलिए इंडोनीसियाई प्रयोग में महागुरु (प्रोफेसर) ही नहीं कहता, परंतु संस्कृत अर्थ में गुरु मानता हूं। मैंने सुना है कि हमारा स्वतंत्रता-वाचक शब्द "मर्डेका" भी संस्कृत से है। आप जानते हैं कि हमारा झंडा "द्विवर्ण" कहलाता है। इसका अर्थ स्पष्ट है। पर "मर्डेका" की क्या व्युत्पत्ति है?'

पिताजी ने उन्हें 'मर्डेका' शब्द का इंडोनीसिया के साहित्य में इतिहास समझाकर बताया कि किस प्रकार १४ वीं शती के 'नागरकृतागम' में इस शब्द का अर्थ आधुनिक हो जाता है। यह शब्द वहां शुद्ध संस्कृत रूप में मिलता है 'महर्द्धिक' (महा+ऋद्धि+क) अर्थात् 'संपन्न लोग, स्वतंत्र लोग।' राष्ट्रपति ने आश्चर्य से सुना और कहा—'कितना प्राचीन शब्द है, पर कितनी आधुनिक दृष्टि है! यह शब्द सर्वथा उपयुक्त है। आपको भी अपनाना चाहिये। आप मुझे इसका पूरा इतिहास लिखकर भेजिये।' इस प्रकार साहित्य-वार्ता, राजनीति-चर्चा और व्यक्तिगत संस्मरणों में सारी रात बीत गयी और दिन निकल आया।

सुकर्ण अपने अतिथियों की परीक्षा लिया करते थे कि उसमें कितना प्राण है, कितनी सौंदर्यानुभूति है, कहीं वायाङ के बीच जम्हाई तो नहीं लेने लगता। पिताजी से वे इतने प्रसन्न हुए कि कहने लगे—'हमारी बातचीत आगे चलेगी। मेरे साथ विमान में सुमात्रा चलिये। हमारे देश की जनता देखियेगा। जन-उल्लास और प्रकृति-सुषमा।' पिताजी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। और पंद्रह दिन वे राष्ट्रपति के साथ रहे। राष्ट्रपति की पत्नी पद्मा पिताजी के निरामिष भोजन को अधिक से अधिक स्वादिष्ट बनवाने का प्रयास करतीं और राष्ट्रपति की नन्ही पुत्री 'मेघवती सुकर्णपुत्री' इंडोनीसिया के अभिनय की नन्ही मुद्राओं से पिताजी को आह्लादित करती। राष्ट्रपति सुकर्ण की जाज्वल्यमान वाग्मिता और एक-एक अक्षर पर बल देकर भाषण करने की उनकी शैली की विलक्षण प्रभाविता से पिताजी मुग्ध हुए।

राष्ट्रपति और उनमें वैयक्तिक स्नेह बन गया। सुकर्ण उनसे कहते थे—'मुझे महामहिम मत कहा करो, केवल कार्नो (कर्ण), यह छोटा-सा काव्यमय संबोधन है। आपके लिए मैं कपाला नगारा, पादुका, यं मूल्या, बुं कार्नो (कपाला नगारा=राष्ट्रनायक, पादुका=श्रीपाद, यं मूल्या=परम मूल्यवान्, महामहिम, बुं=भाई) नहीं हूं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रपति सुकर्ण के साथ दो सप्ताह व्यतीत करके पिताजी वाली द्वीप की ओर चले—विशुद्ध भारत को मूर्तिमान देखने, उसे अनुभव करने और उसके जीवन का अंग बनने। पिताजी के शब्दों में—'विमान-क्षेत्र से समुद्र नीलमणिमय, शांत, किंतु मित्रों के कथनानुसार भयानक, रुद्ररूप, नहाने वालों के प्राण हरण करने वाला, तथापि निरुपम शोभा वाला। पूर्वप्रबंध के अनुसार, वाली होटल की गाड़ी हमें लेने आयी। हृदय की उत्सुकता वायुमंडल में प्रतिबिंबित थी। होटल के द्वारों पर प्राचीन देवी-देवताओं की महाकार मूर्तियां स्वागत तथा रक्षा के लिए विराजमान थीं। इनकी सौम्यता, वैभव और मनोज्ञता में भी दृढ़ता, प्रतिष्ठितता इतनी बलवती थी कि हृदय को आश्वासन होता था कि यह देश और इस देश के निवासी संसार में अविचलित हैं और रहेंगे।

'होटल में निरामिष भोजन अच्छा स्वादु मिला। सायंकाल को बाली द्वीप के राज्यपाल सुशांतो आये। इनके साथ वाली के रेसिडेंट इगदुङ्ग वागुस् ओका तथा इ वायान् भद्र थे। सुशांतो महोदय ने बड़े आदर और स्नेह से आलिंगन किया और अपने देश में स्वागत किया। आप यवद्वीप के निवासी हैं। मुसलमान हैं, तब भी भारतीय साहित्य, दर्शन और कला, नृत्य और नाटक से आपका अथाह प्रेम है। इनके अनुग्रह से बाली में सब प्रकार की सुविधाएं मिलीं। आप तो अगले दिन प्रातः पास के द्वीप लंबक में चले गये, परंतु आपके पीछे श्री ओका और वायान् भद्र ने जो आतिथ्य किया, वह जीवन-भर स्मरण रहेगा।

'प्रातः ९ बजे श्री ओका और वायान् भद्र मुझे अपने साथ ले गये। हमारा ध्येय देन्पसार से (जो बाली के सर्वथा दक्षिण में है) सिंहराज को (जो बाली के सर्वथा उत्तर में है) जाने का था। मार्ग में चिंतामणि नाम के पर्वत पर मध्याह्न-भोजन के लिए ठहरे। यहां पर ही तो पंडित जवाहरलाल नेहरू दो वर्ष पूर्व उतरे थे और कहा था—"यह समाधिस्थान मेरे जीवन का उत्कृष्ट स्थान है।" इसके चारों ओर हैं ज्वालामुखी पर्वत, धान की हरी-भरी घाटियां, धुआं और धुंध तथा शीतल सुखवाही वायु।

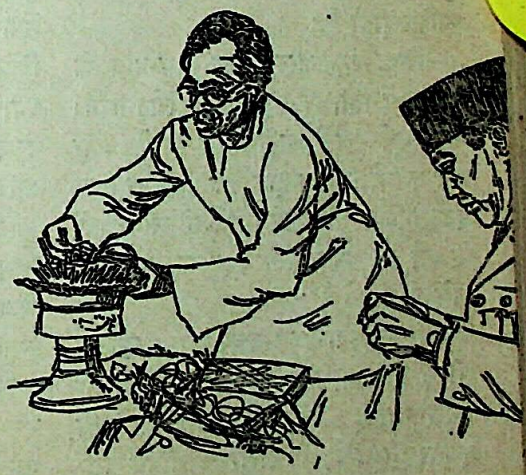

आचार्य रघुवीर और डा. सुकर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'वायान् भद्र शूद्र हैं, किंतु द्वीप के प्रमुख विद्वान हैं, और क्या राजा क्या ब्राह्मण सभी आपका यथायोग्य समादर करते हैं।

'बाली के अधिकांश ब्राह्मण और पुजारी संगीत, नृत्य, स्थापत्य और मूर्तिकला, चित्र-कला तथा पूजा-पाठ में प्रवीण हैं। किंतु जो आक्षेप मुसलमान और ईसाई इन पर करते हैं, उनका उत्तर देने में ये असमर्थ हैं। प्रकृति और मंदिर, आमोद-प्रमोद, श्रद्धामूलक नृत्य तथा उपासना ये सब मिलकर इनका जीवन बनाते हैं। उपासना के बिना इनका जीवन नीरस हो जायेगा। उपासना में ही तो उत्सव, अच्छा खाना, अच्छा पहनना समाविष्ट हैं। पर्वत-शिखर, वृक्ष-गुल्म, झील और गुफा—सभी मनोरम स्थान तो भगवान के निवास हैं। बाली का सबसे बड़ा पर्वत गुनुङ आगुङ ज्वालामुखी है। इस पर्वत से निकलने वाले धुएं में भी तो देवों की शक्ति की अभि-व्यक्ति होती है।

'शिव, ब्रह्मा और विष्णु गांव-गांव के मंदिरों में नहीं, घर-घर के मंदिरों में मिलेंगे। कहीं मूर्त रूप में, कहीं अमूर्त रूप में। जहां मूर्त रूप में नहीं, वहां उनके बैठने के लिए ईंट और ज्वालामुखी पर्वतों के कोमल पत्थरों के बने हुए पद्मासन नामक आठ-दस हाथ ऊंचे स्तंभ बने हैं।

'मंदिर, स्त्री-पुरुष-बच्चे तथा प्राकृतिक सौंदर्य तीनों एकरस हैं — यही बाली की रमणीयता है। यदि भारत और बाली की तुलना की जाये, तो बाली का जीवन शुद्ध-तर है। शालिरोपण ब्राह्मण पुजारियों के आशीर्वाद से होता है, शालि का कटना भी। ब्राह्मण और पुजारी आलसी और दुराचारी न मिलेंगे। पूजा के समय शुद्ध भावना से जल-पात्र पर मंत्रोच्चारण विशेष दर्शनीय है।

'केवल चार वर्ण ही तो बाली में विद्य-मान हैं— ब्राह्मण, देव अर्थात् क्षत्रिय, गुस्ति अथवा वैश्य, शूद्र अथवा कौल। मनुविहित अनुलोम विवाह गांव-गांव में होते रहते हैं। ब्राह्मण की चार पत्नियां—एक ब्राह्मणी, एक क्षत्रिया, एक वैश्या और एक शूद्रा सामान्य बात है। क्षत्रियों का तो पहला विवाह शूद्रा से ही होता है। कोई भी त्रिवर्ण अथवा त्रिवंश ऐसा न मिलेगा, जिसके निकट संबंधी अपने से नीचे वर्ण के न हों। इसका परिणाम यह है कि परस्पर कोई घृणा अथवा छुआ-छूत नहीं है।

'अपने राज्य के प्रारंभ में डचों ने बाली में ईसाई प्रचारक भेजे; किंतु उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। लोगों ने उनका स्वागत किया, किंतु आगम ईसा की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वर्षों के निरंतर यत्न के पश्चात् भी कोई बाली-निवासी ईसाई न बना।

'१८६६ में एक प्रचारक ने दृढ़ संकल्प किया। उसने इनकी भाषा का अध्ययन किया, इनकी लिपि का अभ्यास किया और इन्हीं के समान रहने-सहने लगा। किंतु जब उसने अपने देश को अपने कार्य का विव-रण भेजा, तो उसमें केवल एक व्यक्ति का उल्लेख था — वह भी आधा पागल। उसका नाम निकोडेमुस रखा गया। अन्यों को आगम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम, सीता और लक्ष्मण वन जाते हुए – बोरोबुदर के विमान-क्षेत्र पर बने पाषाण-चित्र से।

ईसा में मिलने के लिए निकोडेमुस के द्वारा कहलवाया जाता रहा कि यदि ईसाई न बनोगे, तो मृत्यु के पश्चात् नरक में जलते रहोगे। किंतु बाली के निवासी हंस दिया करते थे।

'निकोडेमुस अकेला रह गया। उसके साथ अब कोई बात भी न करता। सायं और रात्रि मंदिरों की गोष्ठी, संगीत और भोज अब उसे कहां मिलते! अपने देशवासियों से विरहित जब वह ईसाई प्रचारक के घर के पास जाता, तो उसे नरक की यातनाएं स्मरण हो जातीं। उसका मन भय से व्याप्त हो गया। अपना गांव छोड़कर एक बस्ती से दूसरी बस्ती में घूमने लगा। जब लोगों ने उसे कहीं न अपनाया, तब उसने क्रोध के आवेश में निशीथ के समय ईसाई प्रचारक को मार डाला। बाली-निवासियों ने उसे बांस के पिंजरे में बंद किया और चारों ओर उठाये फिरते रहे, जिससे शासकों तथा अन्य बाली-निवासियोंको शिक्षा मिले। निकोडेमुस लज्जित हुआ। वह सर्वत्र यही कहता रहा कि मैं सच्चा बाली-निवासी नहीं हूं।

'सिंहराजमें "माया" नाम का सिनेमा है और पाठशाला का नाम "भक्तियश" है। "उद्यान ज्ञान भुवन" नामक सार्वजनिक पुस्तकालय है। एक गली का नाम "गिरि-पुत्री" है। यहां की अन्वेषण-संस्था का नाम "गदुङ कीर्त्या" है।

'कीर्त्या के द्वार के दोनों ओर चित्र बने हैं। दायीं ओर हस्ति-आरूढ व्याध ने धनुष खींचकर बाण चलाया, बायीं ओर यह बाण शत्रु को लगा और वह कालधर्म को प्राप्त हुआ। इन चित्रों का क्या अर्थ है, अनुमान कीजिये। पूछने पर वायान् भद्र ने, जो कीर्त्या के अध्यक्ष हैं, बताया कि पुरुष, गज, बाण और मृत्यु का अर्थ क्रमशः १, ८, ५ और ० हैं। पुरुष १ है, दिग्गज ८, बाण ५ और निर्वाण ० है। यह शक-संकाल अर्थात् शक-संवत् की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिथि है।

'कीर्त्या में पूजा नाम की महिला लोन्तारों का अध्ययन कर रही थी। "लोन्तार" का अर्थ है ताडपत्र। "लोन" शब्द "पत्र" वाची और "तार" संस्कृत ताड का रूपांतर है। इन महिला से मैंने प्रश्न किया, तो उत्तर मिला कि हां मेरे प्रयास का उद्देश्य लोन्तार पढ़ना तथा उनके शुद्ध मूल रूप संस्कृत को जानना है। संस्कृत केवल भारत का ही प्राण नहीं, किंतु बाली का भी प्राण है।

'बाली में लड़कियों के सामान्य नाम शिखरिणी, मालती, रतिः, शशी, लक्ष्मी आदि हैं।

'कीर्त्या के वृद्ध पंडित वायान् मेंद्र (महेंद्र) ने अपने मधुर कंपस्वर में जयद्रथ की मृत्यु और कर्ण के विरुद्ध लड़ने के लिए घटोत्कच के प्रति कृष्णोपदेश के ७ वृत्त सुनाये। पहला वृत्त स्रग्धरा, दूसरा शार्दूल, तीसरा अश्वललिता, चौथा गिरीशा, पांचवां शिखरिणी, छठा पृथ्वीतल और सातवां वसंततिलका। इन वृत्तों की भाषा संस्कृत-मिश्रित है। उदाहरणार्थ– महामुख सं द्विजेन्द्र कृप शल्य कर्ण्ण शल्य गुरुपुत्र कुरुकुल। "कृष्ण" शब्द का उच्चारण "क्रस्न," "ज्ञान" का उच्चारण "द्न्यान," एक ओर उत्तर प्रदेश, और दूसरी ओर महाराष्ट्र का स्मरण दिलाता है।

'सिंहराज का समुद्र-पत्तन बुलेलेङ में है। यह राजा आनक् आगुङ न्योमान् पंजी तिष्ण के राज्य के अंतर्गत है। समुद्र-तट पर अद्भुत, अदृष्टपूर्व, नहीं-नहीं, अनुमानातीत तीन वरुण-मंदिर हैं। उत्तर भारत में कब किसी ने वरुण के मंदिर की कल्पना की! इन मंदिरों को "पुरसगार" अथवा "वटार ब्रूण" कहते हैं। बाली में "पुर" का अर्थ मंदिर, "पुरी" का अर्थ प्रासाद, "वटार" का भट्टार अथवा भगवान्, और "ब्रूण" का अर्थ वरुण है। हम वरुण-मंदिर के सामने जाकर खड़े ही हुए थे कि तीन-चार नौकाएं आती हुई दिखाई पड़ीं और मेरे मित्र वायान् भद्र ने बताया कि स्त्री-पुरुषों से भरी ये नौकाएं अन्युत् क्रिया से लौटकर आ रही हैं। अन्युत् की व्याख्या–पुष्पप्रवहण।

'१४ अगस्त को कारांगासम् के बूढ़े राजा से भेंट हुई। आपका नाम आनक् आगुङ आगुङ आङलोरा कतूत् जलान्तिक है। आपने जंबुद्वीप के संबंध में अनेक प्रश्न किये क्या हस्तिना (हस्तिनापुर), गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी आज भी विद्यमान हैं? क्या आपने इनके दर्शन किये हैं? क्या मैं भी इनके दर्शन करके अपनी आत्मा की चरम तृप्ति प्राप्त कर सकता हूं। अयोध्या में अब क्या-कुछ शेष हैं? क्या भारत और लंका के बीच में श्रीराम के बनाये पुल पर अभी तक आ-जा सकते हैं? इत्यादि। फिर आपने पूछा कि क्या जंबुद्वीप में अभी तक शुक्लब्रह्मचारी, शबलब्रह्मचारी और कृष्णब्रह्मचारी विद्यमान हैं? (शुक्लब्रह्मचारी का अर्थ नैष्ठिक ब्रह्मचारी है।)

'१५ अगस्त को राजा ग्यान्यार से तथा बालीद्वीप की संसद् के अध्यक्ष श्री अमृत से भेंट हुई। मध्याह्न में जावातन् पूर्वकाल अथवा पुरावशेष के अधिकारी क्राइस्मान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेदान्त पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

बाली द्वीप से सीताजी की अग्निपरीक्षा का पटचित्र।

के साथ चंगिनी मंदिर में आये। यह मंदिर साकर् ग्राम में स्थित है। यहां ९९३, १०६९, १०९८ तथा ११४६-५० के संस्कृत ताम्र-लेख मिले हैं। जीप-यात्रा की थकावट, अपर्याप्त तथा अरुचिकर भोजन की खिन्नता इन लेखों को देखकर उड़ गयी।

'रात के ९ बजे के लगभग "जांगेर" नृत्य देखा। सुवर्ण-मुकुटों की अदृष्टपूर्व शोभा ने सारे मंडप को जगमगा दिया। इसमें ११ कन्याएं और १२ लड़के थे। यह अभिनय "जांगोर सख्य" ने किया था। "सख्य" शब्द का अर्थ क्लब है। लड़के-लड़कियों ने लांग वाली धोती पहनी थी। लड़कियां आमने-सामने दो पंक्तियां बनाकर घुटने टेककर बठ गयीं। इसी प्रकार से लड़के भी। चारों पंक्तियों का एक वर्ग बन गया। इस वर्ग के मध्य में अर्जुनपति: के प्रथम मंत्री उनके नृत्य और गान का नियंत्रण करते रहे।

'कुछ समय पश्चात् पांडववीर अर्जुन-पति: नृत्यवर्ग के मध्य में समाधि में मग्न हो जाते हैं। अर्जुनपति: का उद्देश्य देवताओं से ऐसे अस्त्र की प्राप्ति है, जिससे निवात-कवच राक्षस का विध्वंस किया जा सके। निवातकवच ने महान उत्पात मचा रखा है। देवता अर्जुन की धीरता की परीक्षा के लिए दो सुंदरतम अप्सराओं को भेजते हैं। अप्सराएं अर्जुन के बाहु को उठाकर हाव-भावपूर्वक अपने कंधों और गलों पर रखती हैं, किंतु समाधि में विघ्न नहीं होता। समय बीतने पर साक्षात् निवातकवच उपस्थित होते हैं। युद्ध में विजय होते न देख वे भीम-काय पक्षिराज को भेजते हैं, जिसे अर्जुन शीघ्र ही बाण से बींधकर यमलोक में पहुंचा देते हैं।

'इस अभिनय के दर्शक संसार के नाना दिग्दिगंतर देशों से आये हुए कोटिपति, विद्व-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वर तथा राजनीति-विशारद यात्री थे, जो बालो के सौंदर्य तथा वैचित्र्य के जादू का अनुभव करने के लिए आये थे। उनके औत्सुक्य की पूर्ति आशा से कहीं बढ़कर हुई, और अपनी यात्रा को उन्होंने सफल माना।

'गुहा - गज (अथवा भारतीय क्रमानुसार, गजगुहा) अविस्मरणीय स्थल है। सड़क पर जीप छोड़ नीचे उतरे। गुहा में गणेश और लिंग, तथा शयनार्थ निर्मित चार अश्मशय्याएं मन पर अलौकिक प्रभाव डालते हैं। तपस्वियों की आध्यात्मिक साधना और निवास का यह पुण्यतम स्थान है।'

ऊपर पिताजी की अप्रकाशित दैनिकी से कुछ झांकियां प्रस्तुत हैं। जीवन के अंतिम क्षणों में भी बाली द्वीप पिताजी के मन में सर्वोपरि था। बाली-निवासी अपने द्वीप को अष्टदल पद्म मानते हैं, जिसमें भगवान शिव की अष्टशक्तियां अथवा अष्टैश्वर्य विराजमान हैं। पद्म के आठ दलों में आठ शक्तियां आठ मंदिरों के रूप में विद्यमान हैं। ये आठ मंदिर बाली द्वीप की आठ दिशाओं में फैले हैं और इसमें सर्वोच्च है गुनुङ आगुङ का धधकता ज्वालामुखी, जिसके राष्ट्रमंदिर बसाकिः में भगवान शिव का निवास है। भारत के शिव हिमशीत कैलास पर स्थित हैं, परंतु बाली द्वीप के शिवजी का धधकते ज्वालामुखी पर अधिवास है।

सन १९६३ में बाली-वासियों ने एकादश रुद्र का महायज्ञ किया, जिसका अनुष्ठान शताब्दी में एक बार ही किया जाता है। महायज्ञ की अवधि में ही गुनुङ आगुङ प्रज्ज्वलित हो उठा – भगवान शंकर जाग उठे। अनेक ग्राम ज्वालामुखी के विस्फोट से ध्वस्त हो गये। पिताजी बाली-वासियों की सहायता के लिए सज्जा कर ही रहे थे कि उनकी जीवन-लीला का अंत हो गया।

बाली-वासी भी पिताजी को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। श्री पुण्यात्मज ओका (आज इंडोनीसिया के संसद्-सदस्य) जो पिताजी के शिष्य हैं, कहते हैं–'आचार्य का प्रत्येक स्थल हमारे लिए पुण्यस्थल है।' चोकोर्दा रै सुधार्थ (इंडोनीसिया के संसद्-सदस्य) भी पिताजी के विद्यार्थी हैं और इन्होंने पिताजी को श्रद्धांजलि देने के लिए अपने पुत्र का नाम 'वीरजय' रखा है। (प्रथम पद 'वीर' पिताजी के नाम का अंतिम पद है।) बाली द्वीप की अग्रणी विदुषी श्रीमती गदोङ गिरिपुत्री ओका ने, जिनके पति पिताजी की यात्रा के समय बाली द्वीप के उपराज्यपाल थे, अपने दो पुत्रों के नाम भी पिताजी पर रखे हैं–वीरगुण व वीरधर्म।

चलते समय ओका-परिवार ने पिताजी को श्रद्धांजलि देने के हेतु मुझे एक विशाल पटचित्र दिया, जिस पर समुद्रमंथन चित्रित है, और अष्टांग नैवेद्य अर्पित किया, जिसमें रंगे अक्षत, पुष्प, तांबूल, कदली, मिष्ठान्न, कायु मानिस् (मुलेठी), इक्षु और प्रतीक रूप में देवीश्री थी। और चौदहवीं शती के 'काकाविन् शिवरात्रिकल्प' नामक काव्य से ये वचन उच्चारित किये–"सिरा प्रतिष्ठित हनें हृदयकमल-मध्य नित्यशः।।"

–जे. २२, हौजखास एन्क्लेव, नयी दिल्ली-१६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंगों का रासायनिक

ललितचंद्र चंदोला

घटना आस्ट्रेलिया की है। भेड़ों को एक विचित्र बीमारी हो गयी थी— वे दुर्बल होकर मर जाती थीं। पशु-चिकित्सकों ने भेड़ों की परीक्षा की। कुछ निदान नहीं कर पाये। एक वर्णक्रमविज्ञ ने उस चरागाह की मिट्टी की परीक्षा की। उसने पाया कि वहां की मिट्टी में कोबाल्ट तत्त्व की कमी है। उसने सोचा, संभव है कि मिट्टी में कोबाल्ट की कमी का भेड़ों के मरने से कोई संबंध हो।

इस बात को दृष्टि में रखकर अनुसंधान करने पर उस वर्णक्रमविज्ञ की धारणा सत्य निकली और उस खोज के आधार पर एक नया विटामिन बी-१२ ढूंढ़ निकाला गया। यह नया विटामिन कोबाल्ट-युक्त कार्बनिक धातु से बना हुआ पाया गया।

एक और घटना है अलौह धातु जस्ते (जिंक) के उद्योग से संबंधित। देखा जाता था कि जस्ते के सांचे बनते तो मजबूत थे, पर कुछ ही महीनों के बाद टूटने लगते थे। पूरा उद्योग इससे बहुत परेशान था।

वर्णक्रम-रासायनिकी के द्वारा विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि केवल वे सांचे टूटते थे, जिनमें सीसे की अशुद्धि बाकी रह गयी हो। जस्ते के एक लाख भागों में केवल पांच भाग जितना भी सीसा बचा हो, तो वह धातु बेकार साबित होती थी। आज तो जस्ता जितना ही अधिक सीसा-रहित हो, उतनी ही ऊंची कीमत उसकी उठती है।

ये दो घटनाएं दिखा देती हैं कि जीवन के विभिन्न पहलुओं में वर्णक्रमदर्शिकी का उपयोग किस प्रकार हो रहा है।

वर्णक्रमदर्शिकी भौतिकशास्त्र की उस शाखा का नाम है, जिसका संबंध मनुष्य की आंख को दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले दोनों ही प्रकार के विद्युत्-चुंबकीय विकिरण के अध्ययन से है।

विद्युत्-चुंबकीय विकिरण लघुतम गामा किरणों से शुरू होकर विशाल रेडियो-तरंगों में समाप्त होते हैं। गामा किरणों का तरंग-दैर्घ्य बहुत ही कम $१०^{-१२}$ सें. मी. होता है। दूसरे छोर पर, रेडियो-तरंगों का तरंग-दैर्घ्य बहुत अधिक $१०^{६}$ सें. मी. तक होता है। इन दो सीमाओं के बीच बढ़ते तरंग-दैर्घ्य के क्रम में क्ष-किरणें, पराबैंगनी किरणें, दृश्य-प्रकाश, अवरक्तकिरणें, ऊष्मा-किरणें, राडार और टेलिविजन-तरंगें समाहित होती हैं। इतना विशाल क्षेत्र होने के कारण इसके भिन्न-भिन्न अंशों के अध्ययन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यंत्र काम में लाये जाते हैं।

सीमित रूप में, 'वर्णक्रमदर्शिकी' शब्द का प्रयोग परावैंगनी (अल्ट्रावायलेट), दृश्य प्रकाश तथा अवरक्त किरणों (इन्फ्रारेड रेज़) के क्षेत्रों को दरशाने के लिए किया जाता है।

वर्णक्रमदर्शिकी के अध्ययन में काम आने वाले यंत्रों को वर्णक्रमदर्शक (स्पेक्ट्रोस्कोप), वर्णक्रममापी (स्पेक्ट्रोमीटर) या वर्णक्रम-आलेखी (स्पेक्ट्रोग्राफ) कहा जाता है। मूल रूप से ये यंत्र दो प्रकार के होते हैं। एक में विभिन्न तरंग-दैर्घ्यों को अलग करने के लिए प्रिज्म का इस्तेमाल होता है, तथा दूसरे में ग्रेटिंग का। प्रिज्म या ग्रेटिंग ही इन यंत्रों के हृदय हैं।

प्रिज्म का प्रयोग पहले आरंभ हुआ; ग्रेटिंग का प्रयोग अपेक्षाकृत नया है। दोनों प्रकार के यंत्रों में कुछ लाभ तथा कुछ कमियां हैं। इस कारण दोनों प्रकार के यंत्रों का प्रचलन बराबर है। वर्णक्रम बनाने के लिए प्रिज्म में प्रकाश-अपवर्तन (रिफ्रैक्शन) के सिद्धांत का तथा ग्रेटिंग में विवर्तन (डिफ्रैक्शन) के सिद्धांत का उपयोग होता है।

प्रथम वर्णक्रमदर्शक सन १६६६ में प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन ने बनाया था। उन्होंने अपने प्रयोग के लिए सूर्य का प्रकाश एक अंधेरे कमरे में दीवार में बनाये गये एक गोल छेद द्वारा लिया था। विभिन्न रंगों के विक्षेपण के लिए उन्होंने प्रिज्म का प्रयोग किया था। इस तरह उन्होंने अपने कमरे की दीवार पर सात रंगों की एक व्यवधानहीन पट्टिका देखी। इस पट्टिका को उन्होंने 'वर्णक्रम' (स्पेक्ट्रम) नाम दिया।

वर्णक्रम के रंग एक निश्चित क्रम से आते हैं। यह क्रम है—लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नीलाभ अथवा आसमानी (इंडिगो) तथा बैंगनी। इनमें से प्रत्येक रंग को तरंग-दैर्घ्यों द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है। सारिणी - १ में प्रत्येक रंग का विस्तार-क्षेत्र दिया गया है।

अगर न्यूटन प्रिज्म में प्रकाश लेने के लिए गोल छेद के बजाय पतला-लंबोतरा छेद लेते, तो वे आधुनिक वर्णक्रमदर्शक बनाने में सफल

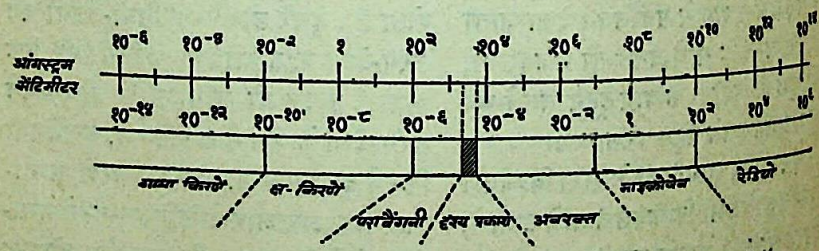

वैद्युत-चुंबकीय वर्णक्रम का विस्तार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

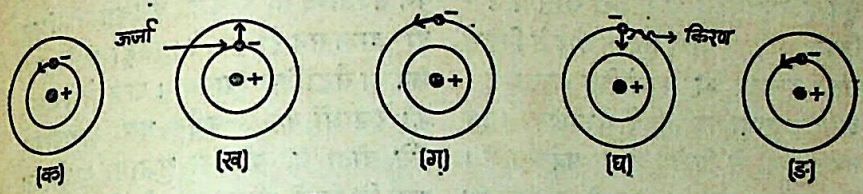

बोर परमाणु माडल में अवशोषण तथा उत्सर्जन की क्रियाएं :
(क) स्थायी परमाणु स्थिति, (ख) बाहर से ऊर्जा का अवशोषण,
(ग) उत्तेजित परमाणु की अस्थायी स्थिति, (घ) किरण का उत्सर्जन,
(ङ) पुनः स्थायी परमाणु।

हो जाते। उनके यंत्र तथा आधुनिक यंत्रों में बस यही भेद है। सन १८१४ में फ्रानहाफर ने एक पतले दीर्घछिद्र का इस्तेमाल करके आधुनिक वर्णक्रमदर्शक बना डाला।

आज से करीब एक सौ पंद्रह वर्ष पूर्व सन १८५९ में एक प्रयोग हुआ, जिससे वर्णक्रम-दर्शक दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण यंत्रों में से एक बन गया। यह प्रयोग प्रसिद्ध वैज्ञानिक बुन्सन तथा किर्चाफ ने किया था।

इन दो वैज्ञानिकों ने ज्ञात किया कि फ्रानहाफर द्वारा प्राप्त सूर्य के वर्णक्रम में पीले क्षेत्र में दिखाई देने वाली दो काली रेखाएं ठीक उस स्थान पर ही मिलती हैं, जहां पर सोडियम तत्त्व की दो पीली रेखाएं होती हैं। इस प्रकार उन्होंने निश्चयपूर्वक कह डाला कि सूर्य को बनाने वाले तत्त्वों में सोडियम भी एक तत्त्व है।

सौर-वर्णक्रम में रेखाएं काली क्यों होती हैं, यह समझाते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक तत्त्व स्वतंत्र वातावरण में जिन रेखाओं का उत्सर्जन कर सकता है, अनुकूल वातावरण में उन्हीं का अवशोषण भी कर सकता है।

सारिणी – १

रंग	तरंग-दैर्घ्यों का विस्तार आंगस्ट्रम इकाई (10^{-6} सें. मी.) में
लाल	७२०० – ६४००
नारंगी	६४०० – ५९५०
पीला	५९५० – ५६५०
हरा	५६५० – ४९५०
नीला	४९५० – ४५५०
नीलाभ (इंडिगो)	४५५० – ४२५०
बैंगनी	४२५० – ३९५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य के वातावरण के बाहरी खोल में उपस्थित सोडियम वाष्प सूर्य के क्रोड़ से निकले संतत वर्णक्रम को अवशोषित करता है। इसलिए पृथ्वी पर पहुंचने वाला प्रकाश इन तरंग-दैर्घ्यों से विहीन होकर पहुंचता है। इन प्रयोगों द्वारा वर्णक्रम से रासायनिक विश्लेषण की मजबूत बुनियाद पड़ गयी।

बुन्सन तथा किर्चाफ ने अपने प्रयोगों से यह भी सिद्ध कर दिया कि प्रत्येक तत्त्व का अपना एक विशिष्ट वर्णक्रम होता है, जिससे उस तत्त्व को पहचाना जा सकता है। स्वयं उन दोनों ने सीजियम तथा रुबिडियम नामक दो तत्त्वों की खोज भी उनके वर्णक्रम के जरिये कर डाली।

फिर तो मानो प्रत्येक रसायनशास्त्री एक-एक वर्णक्रमदर्शक लेकर नये तत्त्वों की खोज में जुट गया। हीलियम, गैलियम, इंडियम तथा थैलियम तत्त्वों की खोज विभिन्न वैज्ञानिकों ने वर्णक्रमदर्शक की सहायता से ही की।

वर्णक्रमदर्शिकी के क्षेत्र में अगली महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी डेन्मार्क के विज्ञानी नील्स बोर द्वारा सन १९१३ में हाइड्रोजन के वर्णक्रम की सैद्धांतिक व्याख्या। उन्होंने वर्णक्रम की रेखाओं का उत्सर्जन तथा अवशोषण कैसे होता है, यह भी सुझाया। उन्होंने कहा कि किसी भी परमाणु के दो मुख्य भाग होते हैं—एक भारी नाभिक, जो धन-आवेश वाला होता है; तथा दूसरा इलेक्ट्रान, जो नाभिक के चारों ओर तीव्र गति से चक्कर लगाता है। (यह चित्र ठीक सौरमंडल की तरह है, जिसमें विभिन्न ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर काटते हैं।) इलेक्ट्रान अपनी कक्षा में कायम रहता है दो बलों के संतुलन से। एक बल है इलेक्ट्रान को नाभिक की ओर खींचने वाला विद्युत्-आकर्षण; तथा दूसरा बल है नाभिक से दूर ले जाने वाला अभिकेंद्री (सेंट्रीपीटल) बल, जो इलेक्ट्रान की गति से उत्पन्न होता है।

इस इलेक्ट्रान को जब किसी अन्य कण के प्रस्फुरण से ऊर्जा दी जाती है, तो वह ऊर्जा का अवशोषण करके अपनी कक्षा छोड़कर अधिक ऊर्जा वाली बाहरी कक्षा में चक्कर लगाने लगता है। किसी भी परमाणु की ये बाह्य कक्षाएं नियत होती हैं। इलेक्ट्रान

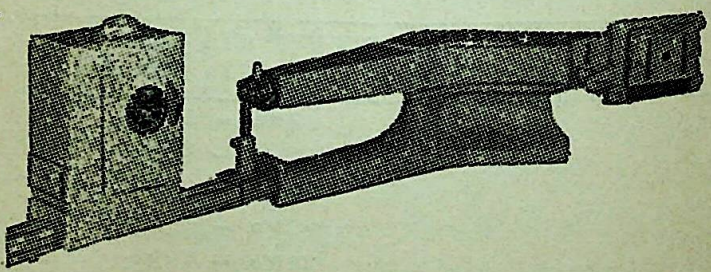

'मीडियम' स्पेक्ट्रोग्राफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की यह उत्तेजित स्थिति अस्थायी होती है, इसलिए शीघ्र ही इलेक्ट्रान अपनी स्थायी कक्षा में वापस आ जाता है। ऐसा करने में वह पहले अवशोषित ऊर्जा का उत्सर्जन करता है। यह ऊर्जा वर्णक्रम में एक रेखा के रूप में दिखाई पड़ती है।

इस प्रकार, नील्स बोर के सिद्धांत ने हाइड्रोजन के वर्णक्रम की सैद्धांतिक व्याख्या करने के साथ-साथ परमाणु की रचना पर भी प्रकाश डाला। सामरफेल्ड ने इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया और वृत्ताकार कक्षाओं के स्थान पर अंड-वृत्ताकार (एलिप्टिक) कक्षाओं का समावेश किया। क्षारीय तत्त्वों के वर्णक्रम को समझने के लिए उह्लनबाक तथा गाउडस्मिथ ने यह कल्पना प्रस्तुत की कि इलेक्ट्रान अपनी धुरी पर भी घूमता रहता है। इस तरह परमाणु के अंदर के मंडल की तुलना सौरमंडल से पूरी तरह मौजूं सिद्ध हुई।

इस शताब्दी के तीसरे दशक में भारतीय वैज्ञानिकों ने वर्णक्रमदर्शिकी में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सन १९२२ में डा. मेघनाद साहा ने वर्णक्रम द्वारा तारों का तापमान निकालने की पद्धति को विकसित किया तथा डा. सी. वी. रामन् ने प्रकाश के प्रकीर्णन (स्कैटरिंग) पर शोध करके सन १९३० में विज्ञान में भारत का प्रथम नोबेल पुरस्कार अर्जित किया। आज भी देश की विभिन्न प्रयोगशालाओं में वर्णक्रमदर्शिकी के क्षेत्र में मूलभूत अनुसंधान हो रहे हैं।

अब यह एक पूर्णतः विकसित शास्त्र है और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में विभिन्न रूपों में इसका प्रयोग हो रहा है। इसकी व्यापक उपयोगिता की कुछ कल्पना आपको निम्नलिखित उदाहरणों से हो जायेगी।

परमाणु-ऊर्जा:

वर्णक्रमदर्शिकी परमाणु-ऊर्जा उद्योग में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। रिएक्टरों में काम आने वाला ईंधन—युरेनियम, थोरियम अथवा प्लूटोनियम – बहुत ही शुद्ध होना चाहिये। विशेषतः बोरोन तथा कैड्मियम जैसी अशुद्धियों का लवलेश भी—एक करोड़ भाग ईंधन में एक भाग जितना भी—नहीं होना चाहिये। अशुद्धि की इतनी अल्प मात्राओं को वर्णक्रमदर्शक ही पकड़ पाता है।

वस्तुतः रिएक्टर में काम आने वाला प्रत्येक पदार्थ बहुत ही शुद्ध होना चाहिये। उन सबकी शुद्धता की जांच में वर्णक्रमदर्शक का उपयोग होता है।

अर्धचालक (सेमीकंडक्टर) :

ट्रांजिस्टर रेडियो में उपयोग होने वाले अर्धचालक सिलिकान तथा जर्मेनियम से बनते हैं। इस उद्योग में काम में लाने के लिए पहले तो इन्हें अत्यधिक शुद्ध बनाना पड़ता है – इस हद तक कि इनके एक अरब भाग में एक भाग जितनी भी अशुद्धि न रह पाये। और मजे की बात यह है कि इतना शुद्ध रूप तैयार करने के बाद इन्हें विशिष्ट एन (n) या पी (p) प्रकार के गुण देने के लिए इनमें बोरोन तथा गैलियम अशुद्धियां मिलायी जाती हैं। यह संकरित सिलिकान या जर्मेनियम ही अर्धचालक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का काम करता है। इन तत्त्वों की शुद्धता और मिश्रण की सही मात्रा वर्णक्रमदर्शक द्वारा आंकी जाती है।

समस्थानिक (आइसोटोप) :

किसी तत्त्व के भिन्न भार वाले परमाणु को आइसोटोप कहा जाता है। आइसोटोप में मूल तत्त्व से कुछ कम अथवा कुछ अधिक भार होता है। वर्णक्रम में रेखाएं कहां पर आती हैं, यह उस तत्त्व की परमाणु-संख्या तथा विद्युत्-आवेश के अलावा उसके नाभिक के भार पर भी निर्भर रहता है। इस भिन्न भार के कारण किसी तत्त्व के आइसोटोप का वर्णक्रम मूलतत्त्व के वर्णक्रम से थोड़ा-सा हटा हुआ होता है। इसके आधार पर विभिन्न आइसोटोपों को पहचाना जा सकता है।

आक्सिजन-१७ आइसोटोप की खोज इसी प्रकार वर्णक्रमदर्शक द्वारा हुई थी। (आक्सिजन-१८ तथा आक्सिजन-१६ तो पहले ही से रसायनज्ञों को ज्ञात थे।) इस नये आइसोटोप की खोज से रसायनज्ञ आश्चर्य में पड़ गये। अन्य बहुत-से आइसोटोप भी वर्णक्रमदर्शक द्वारा खोजे गये;

लेसर :

लेसर एक बहु-उपयोगी प्रकाश का स्रोत है। रुबी लेसर शुद्ध लाल रंग की रेखा देता है। अब गैस-लेसर भी तैयार हो चुके हैं। उदाहरण हैं—कार्बन-डाइआक्साइड लेसर तथा हीलियम-नियान लेसर। लेसर अपने मूल पदार्थों के परमाणुओं में स्थित विभिन्न ऊर्जा-कक्षाओं की आपेक्षिक स्थिति के ऊपर काम करते हैं। इन ऊर्जा-कक्षाओं की स्थिति को इन पदार्थों का वर्णक्रमदर्शकी द्वारा अध्ययन करके ही जाना जा सकता है।

आजकल दुनिया में विरल-मृदाओं (रेयर अर्थ्स) का वर्णक्रमदर्शिकी द्वारा जोरों से अध्ययन किया जा रहा है। आशा है कि कुछ विरल-मृदाएं लेसर-स्रोत के रूप में काम आ सकेंगी।

धातुकर्मिकी (मेटलर्जी) :

लौह तथा अलौह धातुओं (जैसे निकल, टिन, अल्युमिनियम, सीसा, तांबा आदि) के निर्माण में यह जरूरी होता है कि फैक्टरी में तैयार हो रहे माल का तत्काल परीक्षण करके जांच लिया जाये कि माल ठीक प्रकार का बन रहा है या नहीं। इस काम के लिए आजकल विशेष प्रकार के वर्णक्रमदर्शक का उपयोग हो रहा है, जिसे 'डाइरेक्ट रीडर' कहा जाता है। इस यंत्र में फोटो-प्लेट के स्थान पर 'फोटो मल्टिप्लायर ट्यूब' लगाये जाते हैं। ये ट्यूब उन पर पड़ने वाली रेखाओं की ऊर्जा के अनुसार विभिन्न तत्त्वों की सांद्रता एक मिनिट से भी कम समय में बता देते हैं। इस प्रकार तैयार हो रही धातु के गुण-दोष पर नियंत्रण रहता है।

खगोलशास्त्र तथा ताराभौतिकी :

खगोलशास्त्र तथा ताराभौतिकी की तो उत्पत्ति ही बुन्सन तथा किर्चाफ के प्रयोगों से हुई। आज हम तारों के वर्णक्रम द्वारा उनका तापमान, उनकी गति, घूर्णन व रासायनिक संरचना आदि अनेक बातें ज्ञात कर सकते हैं। स्व. मेघनाद साहा तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीका में जा बसे भारतीय वैज्ञानिक डा. चंद्रशेखर इस क्षेत्र में प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं।

भूगर्भ-विज्ञान :

भूगर्भवेत्ता को अक्सर चट्टानों, पत्थरों तथा मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म तत्त्वों की खोज रहती है। इन पर से वे उन चट्टानों की आयु निर्धारित करते हैं तथा उनका इतिहास ज्ञात करते हैं।

कई खनिज सूक्ष्म रूप से चट्टानों में होते हैं, फिर भी उन्हें प्राप्त करना आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होता है। इनकी खोज चट्टानों के वर्णक्रम-विश्लेषण से की जाती है। सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, निकल, वेनेडियम आदि इनके उदाहरण हैं।

रासायनिकी :

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, रुबीडियम, सीजियम, इंडियम आदि तत्त्वों की खोज वर्णक्रमदर्शिकी से ही हुई। ऊपर हम विरल-मृदाओं की भी चर्चा कर चुके हैं। ये विरल-मृदाएं चौदह तत्त्वों का एक समूह हैं, जिनके रासायनिक गुण बिलकुल एक जैसे हैं। वर्णक्रमदर्शिकी की मदद के बिना इन सब के तत्त्वों को पहचान पाना असंभव ही था।

परमाणुओं की भांति ही अणुओं (मालिक्यूल) की संरचना भी वर्णक्रमदर्शिकी की सहायता से समझी जा सकती है। उदाहरण लीजिये पेनिसिलीन तथा विटामिन—के के अणुओं का। इनकी रचना बहुत सीमा तक वर्णक्रमदर्शिकी की सहायता से ही समझी जा सकी। तत्त्वों की आवर्त-सारिणी में खाली रह गये स्थानों को वर्णक्रमदर्शिकी के सहयोग से ही भरा गया। वर्णक्रम द्वारा रासायनिक विश्लेषण अब एक जानी-मानी चीज है।

वनस्पतिशास्त्र तथा कृषि :

कहवे के पेड़ को एक रोग लग जाता है, जिससे उसके पत्तों को एक प्रकार का कोढ़ हो जाता है और वे मुड़कर विरूप हो जाते हैं। वर्णक्रम के द्वारा पत्तों का रासायनिक विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि रोगग्रस्त पत्तों में जस्ते की कमी है। जब पेड़ों पर ऊपर से जस्ते के घोल का छिड़काव किया गया, तो पत्ते फिर से स्वस्थ हो गये। यह है हमारे देश की एक कृषि-समस्या, जिसे वर्णक्रमदर्शिकी द्वारा सुलझाया गया। फसल उगाने से पूर्व उस जमीन की मिट्टी की जांच से पता चल सकता है कि कैसी खाद उस फसल के लिए उपयुक्त होगी।

कांच-उद्योग, अपराध-विज्ञान, इतिहास तथा पुरातत्त्व जैसी अलग-अलग और परस्पर असंबद्ध विद्याओं की सैकड़ों समस्याएं वर्णक्रमदर्शक की सहायता से सुलझ रही हैं।

वर्णक्रमदर्शक के जरिये यह पता लगाया जा सकता है कि आपकी रसोई के नल में आ रहे पानी में कैल्शियम, मैग्नीसियम आदि अशुद्ध तत्त्वों की मात्रा कितनी है और वर्णक्रमदर्शक का मुंह आकाश की ओर करके इससे तारों, ग्रहों और उपग्रहों की रासायनिक संरचना भी ज्ञात की जा सकती है। वर्णक्रमदर्शक इस प्रकृति की खोजबीन के लिए महायंत्र है।

—डी-५१।४८१ एम.आइ.जी.कालोनी,
गांधीनगर, बांद्रा (पूर्व), बंबई ४००-०५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्यदीप

ओवदेय्यानुसासेय्य असब्भा च निवारये ।
सतं हि सो पियो होति असतं होति अप्पियो ।।

—जो उपदेश दे, नसीहत करे, अनुचित काम से निवारण करे, वह सज्जनों को प्रिय होता है, किंतु दुर्जनों को अप्रिय ।

सेलो यथा एकघनो वातेन न समीरति ।
एवं निन्दापसंसासु न समिञ्जन्ति पण्डिता ।।

—ठोस चट्टान जैसे तेज हवा से भी नहीं डिगती, उसी तरह विवेकी मनुष्य निंदा-प्रशंसा से विचलित नहीं होता ।

अप्पका ते मनुस्सेसु ये जना पारगामिनो ।
अथा'यं इतरा पजा तीरमेवानुधावति ।।

—मनुष्यों में से कुछ ही होते हैं, जो उस पार पहुंचते हैं। शेष तो इसी किनारे दौड़ते-फिरते हैं ।

गतद्धिनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि ।
सब्बगन्थपहीनस्स परिळाहो न विज्जति ।।

—जो अपनी यात्रा पूरी कर चुका है, जो शोक से परे है, जो सब तरह से सब ओर से मुक्त है, उसे दुःख नहीं छूता ।

यस्सिन्द्रियानि समथं गतानि
अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता
पहीनमानस्स अनासवस्स
देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो ।।

—जिसने अपनी इंद्रियों को ऐसे बस में कर लिया है, जैसे कि वे सारथी के द्वारा सधे हुए घोड़े हों; जो घमंड से और समस्त कल्मषों से मुक्त है, उसकी देवता भी स्पृहा करते हैं ।

—धम्मपद से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईरानी हम्माम

डा. यूनुस जाफरी

ईरान में गुसलखाने भी होते हैं और हम्माम भी। दोनों में फर्क इतना ही है कि गुसलखाने में मुर्दे नहलाये जाते हैं और हम्माम में जिंदा आदमी स्वयं नहाते हैं और नहलाये भी जाते हैं।

तेहरान विश्वविद्यालय के जिस हास्टल में मैं रहता था, वहां तीन-तीन, चार-चार कमरों के लिए एक स्नानघर था, जिसमें हमें गर्म पानी भी मिलता था। परंतु विश्वविद्यालय के क्वार्टरों में कहीं भी गर्म पानी की व्यवस्था नहीं थी। हास्टल में भी व्यवस्था गड़बड़ा जाने से कई बार कितने ही दिनों तक गर्म पानी नहीं मिलता था।

एक बार मुझे हम्माम का सहारा लेना पड़ा। जिस मकान के दरवाजे पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'हम्माम' लिखा था, उसकी सफाई और सुंदरता देखकर मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि हम्माम भी इतना सुंदर हो सकता है। मैं संगमरमर की सीढ़ियों और संगमरमर के ही चिकने-चमकदार फर्श पर से होता हुआ मकान में दाखिल हुआ। सामने एक काउंटर था। वहां शैंपू की शीशियां, तरह-तरह के साबुन, बाल उड़ाने की दवाएं और डिबियां सजाकर रखी हुई थीं। काउंटर पर बैठे आदमी ने मेरे चेहरे पर छाये आश्चर्य और मेरी संकोच-भरी चाल पर से भांपलिया कि मैं नया आदमी हूं और मुस्कराते हुए मेरा स्वागत किया। इससे मुझमें साहस बढ़ा। 'बफरमायेद' (फरमाइये, क्या हुक्म है?) उसने मुस्कराते हुए कहा।

'हम्माम', मैं इतना ही बोला।

उसने प्रश्न किया—'उमूमी या खुसूसी?'

हम्माम में आने से पहले मैंने अपने एक ईरानी मित्र से पूछ लिया था कि वहां नहाने के कितने पैसे देने पड़ेंगे। उसने खर्च का विवरण समझाते हुए कहा था कि अपने साथ कंघा, तौलिया और साबुन लेते जाना। पर 'उमूमी' और 'खुसूसी' का अंतर उसने नहीं बताया था। मैंने बिना कुछ सोचे ही कह दिया 'उमूमी'।

उसका उत्साह ठंडा पड़ गया। उपेक्षाभाव से उसने मुझे दायीं तरफ जाने का इशारा कर दिया। अंदर गया तो सामने दस-बारह गज लंबा-चौड़ा एक कमरा था। उसकी छत गुंबद जैसी गोल और कमानीदार थी। कमरे के बीचो-बीच एक गज लंबा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उतना ही चौड़ा हौज था। उसके चारों ओर नीले रंग की टाइल का फर्श था। हौज के अगल-बगल नग्न, अर्धनग्न हालत में लोग इस तरह बैठे थे, जैसे मुर्दे हों। मुझे भौचक्का खड़ा देखकर 'दल्लाक' जान गया कि मैं अनजान हूं और आगे आया (जीवितों को नहलाने वाले 'दल्लाक' और मुर्दों को नहलाने वाले 'गस्साल' कहलाते हैं।) उसके बदन पर लाल रंग के एक झीने अंगोछे के सिवा और कुछ भी न था। उसके चेहरे और खड़े होने की अदा से मुझे लगा कि यह कोई कसाई होगा, जो अभी मुझे उलटा लटकाकर मेरी खाल उतार डालेगा। घबड़ाकर मैं बाहर निकल आया।

मैं फिर काउंटर पर आया। मुझे बिना नहाये ही वापस लौटा देख काउंटर पर बैठा आदमी समझ गया कि मुझे हम्माम-ए-उमूमी पसंद नहीं आया। वह कुछ नहीं बोला, चुपचाप हाथ में एक टोकन पकड़ाकर बायीं ओर जाने का इशारा किया। बायीं ओर एक लंबा-चौड़ा हाल था। उसकी लंबाई तीस गज से तो कम न रही होगी; चौड़ाई भी दस गज से अधिक ही थी। पूरे हाल में दीवारों से सटाकर कुर्सियां इस तरह जमाकर रखी थीं, जैसे कोई बरात आने वाली हो। थोड़ी दूर पर छोटे-छोटे टेबल रखे थे। उन पर पत्र-पत्रिकाएं पड़ी थीं।

बाहर तो बड़ी ठंड थी, पर यहां आकर मुझे इतनी गर्मी महसूस हुई कि कोट उतार देना पड़ा। हाथ के टोकन का क्या करूं, मैं समझ नहीं पा रहा था। इतने में एक महाशय मेरे पास आये। वे कमर में लाल अंगोछा लपेटे थे और वैसा ही दूसरा अंगोछा चादर की तरह ओढ़े हुए थे। मुझे लगा कि कोई सूफी दरवेश होंगे। इसी खयाल से मैंने आगे बढ़कर उन्हें सम्मानपूर्वक सलाम किया। उन्होंने मुझसे भी अधिक नम्रता दिखाते हुए झुककर बड़े ही अदब से मेरे सलाम का जवाब दिया। बाद में मालूम पड़ा कि वे महाशय सूफी दरवेश नहीं हैं, ये तो लोगों के शरीर का मैल उतारने वाले दल्लाक हैं।

मैं दीवार के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया और अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करने लगा। एक ओर दस-बारह स्त्रियां बैठी थीं। वैसे तो उनमें सभी यूरोपीय पोशाक पहने थीं, परंतु कुछ ने बुरके भी ओढ़ रखे थे।

दूसरी ओर पुरुष थे, ज्यादातर बड़ी उम्र के। कुछ दाढ़ी-मूंछ वाले तो कुछ ऐसे भी थे, जिनकी दाढ़ी-मूछें सफाचट थीं। लखनऊ के मौलवियों-जैसी पोशाक थी उनकी। दो-तीन आदमियों का वेश और व्यवहार यूरोपीयों जैसा था; परंतु ऊपर से वे लोग काला कुरता पहने हुए थे। समय काटने के लिए वे लोग तरह-तरह की चर्चाएं कर रहे थे। कुछ लोगों के हाथ में आबे-जौ (जौ की शराब) का गिलास था। सभी के हाथ में तसबीह (माला) थी। परंतु इन तसबीहों का जाप से कोई संबंध नहीं था। उनकी उंगलियों में ये इस तरह फिर रही थीं, जैसे कोई चाबियों के गुच्छे से खेल रहा हो।

मेरे सामने एक गलियारा-सा था। उस के दोनों ओर कमरे थे और यही कमरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हम्माम-ए-खुसूसी' कहलाते थे।

एक और हम्माम में से चीख-पुकार सुनाई दे रही थी, जैसे भीतर लड़ाई हो रही हो। मैंने एक से इसका कारण पूछा, तो उसने बताया कि यह 'हम्माम-ए-जनाना' है। अंग्रेजी में जिस अर्थ में 'फिश मार्केट' मुहावरा चलता है, उस अर्थ में फारसी में 'हम्माम-ए-जनाना' का प्रयोग होता है।

ढाई घंटे की तपस्या के बाद बड़ी मुश्किल से मेरा नंबर आया। मुझे एक हम्माम में ले जाया गया। जो आदमी मुझे वहां ले गया, उसने फारसी में मुझसे कहा कि कपड़े उतारकर सामने की खूंटी पर लटकता अंगोछा लपेट लो। जाते-जाते वह पूछता गया — 'कारगरमीरवाही?' (क्या आपको कारीगर चाहिये?) मैंने बिना कुछ सोचे सिर हिला दिया और कमरे में प्रविष्ट हो गया।

कुछ देर बाद 'कारीगर' साहब पधारे और मुझे पकड़कर इस तरह लिटा दिया, जैसे मेरे प्राण ही निकलने वाले हों और मरने से पहले मेरे हाथ-पैर सीधे करना चाहते हों। फिर उन्होंने दो लोटे पानी मेरे पूरे शरीर पर उड़ेला और चलते बने।

आधघंटे बाद वे फिर लौटकर आये। इस बार उनके हाथ में बकरी के खुरदरे बालों से बनी एक थैली थी। उसे उन्होंने मेरे पूरे जिस्म पर रगड़ा। थैली मैल से भरी हुई थी या मेरे ही शरीर में इतना अधिक मैल था यह तो भगवान जाने, मगर थोड़ी देर बाद उन्होंने थैली को जो निचोड़ा, तो इतना मैल निकला कि देखकर मुझे स्वयं अपने शरीर से नफरत होने लगी। फिर वे शरीर पर दो लोटे पानी डालकर चले गये।

आध घंटे बाद जब उन्होंने पुनः दर्शन दिये, तो मैंने कहा —'मुझे नहलाना है, तो नहलाकर जल्दी छुट्टी कीजिये। नहलाते-नहलाते बार-बार बाहर क्या चले जाते हैं?' उन्होंने कहा—'मैं तो इसलिए चला जाता हूं कि तब तक आपके शरीर का मैल ठीक से फूल जाये।' इस बार वे हाथ में सफेद थैली पहने हुए थे। कपड़ा धोने वाला साबुन लेकर उन्होंने मेरे शरीर को खूब घिसा, फिर दो लोटे पानी डाला और मेरा साबुन मांगा। फिर पूरे शरीर को मसला। इतने सबके बाद बोले—'अब आप स्वयं नहा लें और तौलिये से शरीर को पोंछकर बैठें।' और बाहर चले गये। उनके कहने के अनुसार मैंने किया।

कुछ देर बाद फिर आ पहुंचे। उन्होंने मुझे चित लिटा दिया और शरीर के हर एक भाग को इस तरह झटकना शुरू किया कि चट्ट-चट्ट की आवाज निकलने लगी।

दल्लाक ने मेरी हड्डी-पसली बराबर कर दी। फिर हुक्म दिया कि अब कपड़े पहन लो। कपड़े पहनकर मैं काउंटर पर गया। मेरे सामने साढ़े सात रुपये का बिल था। हम्माम में दो घंटे रहने का चार तोमान (रुपये) कारीगर की मजदूरी दो रुपये और साबुन की सफाई के डेढ़ रुपये। यहां एक बार मैंने 'दल्लाक-दल्लाक' कहकर आवाज लगायी, तो उसे बुरा लगा। उसने कहा —'आपमें तो जरा भी शऊर नहीं। मुझे आकाय कारगर (श्रीमान् कारीगर) कहिये।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—बच्चन

बचपन में मुझ पर एक अध्यापक ने संस्कार डाला कि आदमी कितना ही काम करे, वह थकता नहीं। न ही उसे किसी मनोरंजन की जरूरत होती है।

इस संस्कार से मैं आज तक मुक्त नहीं हो सका। इसकी चर्चा मैंने अपने आत्म-चित्रण में भी की है। शायद आपने देखा हो। उस संस्कार ने मुझसे बहुत काम कराया, पर किसी प्रकार के मनोरंजन से वंचित रखा। फिर आराम करने के सर्वथा अयोग्य बना दिया। मैं (अवतचेन में) हर मनोरंजन को समय नष्ट करना समझता हूं और आराम करने का समय मरने के बाद।

मेरी विकृतियों से किसे लाभ होगा ?

—रविशंकर रावल

आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि—अर्थात् आत्मा व शरीर के स्वास्थ्य के लिए विषय-वासना और धनलोलुपता को मर्यादित करके शरीर को क्षीणता और थकावट से बचाना योग्य है।

जवानी में मैं थकावट की परवाह न करके दिन-भर बहुत प्रकार के कार्यों में लगा रहता था, परिणामतः मुझे यम-सदृश रोग से पचीस वर्ष तक संघर्ष करना पड़ा। मेरा कर्तृत्व तो उज्ज्वल रहा, परंतु मेरा शरीर टूट गया। १९४३ में लाचारी में सब कार्य-कलाप छोड़कर तीन मास ग्रामवासी बनकर आयुर्वेदिक उपचार कराया। स्वस्थ होकर नगर में आया और 'आत्मानं सततं रक्षेत्' को भूलकर फिर काम-काज में जुट गया। बीमारियों ने फिर हमला किया। होमियोपैथिक दवा की मदद से तीन-चार साल बाद मुक्ति मिली।

तब से नियमित परिमित आहार, निश्चित समय पर शयन स्वास्थ्य के लिए सिद्धप्रयोग हुआ है। साथ ही थकावट का भान होते ही शवासन (रिलैक्सेशन), नाभिश्वसन (डीप ब्रीदिंग) और लेटे-लेटे व्यायाम (बेड एक्सरसाइज) करता हूं। सारे जीवन के व्यवसाय और चिंतन के कारण उच्च रक्तचाप का मैं नित्य का मरीज बन गया हूं। प्राकृतिक उपचार और रक्त-चाप के नियंत्रण की दवा रोज लेता हूं, परंतु संयम-नियम ही मेरे स्वास्थ्य का मुख्य आधार है।

सभा-समारोहों में जाना पूर्णतया त्याग दिया है। नींद कम हो गयी है; परंतु नींद की गोलियों से दूर रहता हूं। मित्र-मुलाकातियों से बातचीत करते-करते कभी-कभी उत्साह आ जाता है। परंतु अपने शरीर व मन की अवस्था का पूरा अनुभव मिल चुका है। आत्मानं सततं रक्षेत्—ईश्वर की व्यवस्था में एक तृण बनकर जीने में आनंद भी है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक पत्रिका की मृत्यु

• वीरेंद्र सिंह •

दिसंबर १९७२ के पूर्वार्ध में एक दिन न्यूयार्क में टाइम-लाइफ भवन के एक कक्ष में टाइम इन्कारपोरेटेड के प्रधान संपादक हेडली डोनावैन ने जब यह घोषणा की कि 'लाइफ' का प्रकाशन २९ दिसंबर के अंक से बंद हो जायेगा, तो कक्ष में उपस्थित 'लाइफ' के ३०० कार्यकर्ता एक क्षण को स्तब्ध रह गये। दूसरे ही क्षण कमरे में आहों, सिसकियों और मर्मभेदी आश्चर्यबोधक प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गयी।

'लाइफ' की मौत उसकी प्रकाशन-संस्था टाइम इन्कारपोरेटेड के स्वर्ण-जयंती वर्ष में हुई। उसे बंद करने का निर्णय उक्त घोषणा से केवल एक दिन पूर्व अत्यंत उच्च स्तर पर किया गया था और उसे इतना गुप्त रखा गया था कि संपादकीय-विभाग के वरिष्ठ सदस्यों को भी उसकी खबर न थी। यही नहीं, क्रिस्मस का जो अंक छपा उसमें अगले वर्ष का ग्राहक बनने का कार्ड भी पूर्ववत् लगा हुआ था।

यों लंबे समय से अफवाहें चल रही थीं कि 'लाइफ' बंद होने वाली है। परंतु 'लाइफ'

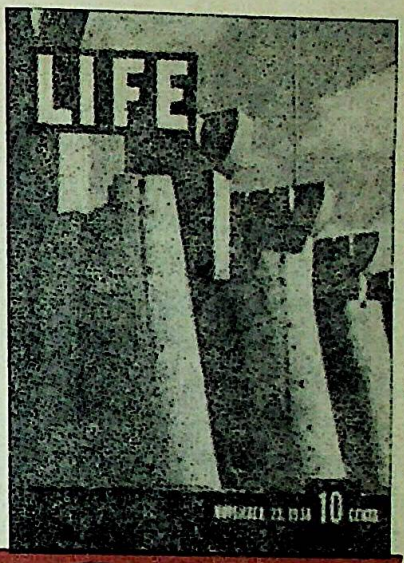

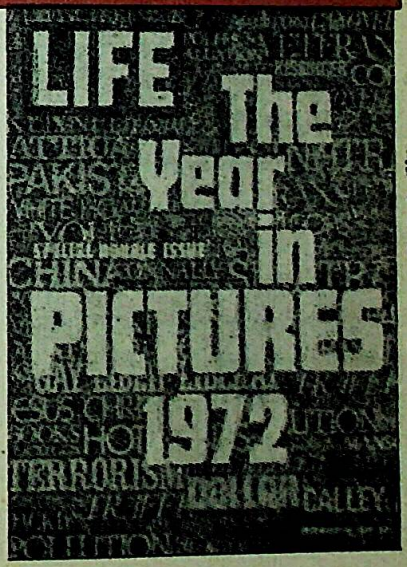

* लाइफ का प्रथम (ऊपर) व अंतिम अंक *
१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार के सदस्यों को विश्वास था कि कैसे भी हो पत्रिका को मरने नहीं दिया जायेगा।

'लाइफ' की मौत बहुत कुछ वैसी ही थी, जैसी कि 'कोलियर्स', 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट' और 'लुक' पत्रिकाओं की, जो कि फोटो-पत्रकारिता के क्षेत्र में उसकी प्रतिद्वंद्वी रही थीं। इसीलिए अमरीकी अखबारों ने इस महान पत्रिका को जो श्रद्धांजलि अर्पित की, उसमें भावना से अधिक फर्ज-अदाई की गंध आती थी।

अखबारों ने कहा कि 'लाइफ' के दफन होने का समय कभी का आ चुका था, उसकी उपयोगिता समाप्त हो चली थी...और वह पुरानी बैलगाड़ी की तरह बेकाम हो गयी थी। पत्रकार-जगत् में सभी ने करीब-करीब यह मान लिया था कि 'लाइफ' का अंतकाल आ गया है। केवल 'लाइफ' के कार्यकर्ता यह मानने के लिए तैयार नहीं थे; और मानसिक रूप से तैयार न रहने के कारण, सबसे ज्यादा आघात उन्हीं को पहुंचा।

२३ नवंबर १९३६ को 'लाइफ' के प्रथम अंक के प्रकाशन ने एक नयी प्रकार की पत्रकारिता को जन्म दिया था, जिसे फोटो-पत्रकारिता (फोटो जर्नलिज्म) कहा गया। पत्रिका इस मान्यता को लेकर चली थी कि एक बढ़िया चित्र हजार शब्दों से अधिक अभिव्यक्ति-क्षम होता है। अतः घटनाओं, व्यक्तियों और विभिन्न जीवन-तरंगों के बारे में पाठकों को जो जानकारी चित्रों द्वारा दी जा सकती है, कोरे शब्दों के जरिये उसका चतुर्थांश भी नहीं बताया जा सकता।

प्रथम अंक से ही 'लाइफ' ने जिस सुरुचि और सूझबूझ के साथ चित्रों का उपयोग किया, वह पत्रकारिता में सर्वथा नयी चीज थी। उसके पन्नों पर हर किस्म के चित्र हर कोण से, छोटा या बड़ा करके या विलकुल सहज रूप में कुछ इस तरह से रखे जाते थे कि वे जीवन की धड़कन से भर उठते थे। चित्रों का प्रयोग संवाद को संतुलन और एक तरह का सिलसिला प्रदान करने के लिए किया जाता था, जो दूसरी कोई पत्रिका नहीं कर पाती थी। सप्ताह-भर के समाचारों को चित्रों के रूप में भर देने के बजाय सूझबूझपूर्ण चयन और आकल्पन द्वारा संतुलित एकाग्रता का बोध कराया जाता था, जिसमें आदि, मध्य और अंत बड़ी खूबी से उभरकर आता था। चित्रों के चयन और मौजूं शीर्षकों के द्वारा ही 'लाइफ' तमाम समाचारों पर टिप्पणी भी करती थी, जो बड़ी सटीक, खरी और साथ ही मनोरंजक व नवीन होती थी।

इस नयी सचित्र पत्रकारिता को जन्म देने के साथ ही 'लाइफ' ने एक नयी विधा का भी संधान किया, जिसे चित्र-लेख (फोटो एस्से) कहा गया है। शुरू के उन दिनों में संपादक की आंखों का तारा था फोटोग्राफर; बेचारे संवाददाता का बस इतना ही काम था कि वह फोटोग्राफर के पीछे-पीछे चलता रहे और जब वह फोटो खींचे तो रील का फ्रेम-नंबर और अन्य जानकारी लिख ले, ताकि बाद में उन चित्रों को तर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीब में जोड़ा जा सके। कुछ साल बाद संवाददाताओं को महत्त्व मिलना शुरू हुआ और उनसे थोड़ा-बहुत लिखवाया जाने लगा– परंतु चित्रों की प्रमुखता और शान-शौकत को बिना कम किये।

इस नयी पत्रकारिता के कारण 'लाइफ' पिछली पीढ़ी के लाखों लोगों के जीवन का अंग ही नहीं, संसार को देखने का झरोखा भी बन गयी। इस झरोखे से अपने पाठकों को नये-नये अद्भुत दृश्य दिखाने के लिए 'लाइफ' के फोटो-पत्रकारों ने सूझबूझ और श्रम की कोताही नहीं की और संचालकों ने भी पानी की तरह रुपया बहाया। प्रबुद्ध शिक्षक की भांति 'लाइफ' ने अपने पाठकों को इतिहास, कला, विज्ञान और प्रकृति के रहस्यों से परिचित कराया। उसके प्रथम अंक में ही शिशुजन्म का एक दुर्लभ चित्र था।

'लाइफ' का दृष्टिकोण निस्संकोच रूप से अभिजात-वर्गीय था। फ्रांसीसी अभिजात-वर्ग की ऐश्वर्यपूर्ण पार्टियां व नृत्य-आयोजन, ब्रिटिश तथा यूरोपीय राजपरिवारों के क्रिया-कलाप प्रायः उसके पृष्ठों पर फैले रहते थे। एडवर्ड अष्टम के प्रेम-प्रकरण और सिंहासन-त्याग को उसने बड़ी ही दिलचस्पी और आत्मीयता का पुट देकर छापा था।

सन १९३९ के उत्तरार्ध में भी इन रंगा-रंग तस्वीरों से उसे इतनी भी छुट्टी नहीं मिली थी कि वह यूरोप के आकाश पर मंडराती आसन्न युद्ध की घटा को देख सके। वह तो बेंत के बने फैशनेबल हैट, पति के सामने निर्वस्त्र होने की कला और ढुलकती हुई शेमीज जैसे विषयों में उलझी हुई थी।

परंतु उसके पास आल्फ्रेड आइसेंस्टाट, राल्फ मोर्स, मार्गरेट बर्क ह्वाइट, कार्ल मीडन्स, राबर्ट कापा और लैरी बरोस जैसे महान फोटोग्राफरों का एक जत्था तैयार हो गया था, जिसने विविध विषयों की चित्र-कथाओं से अपनी कला को मांज-घिसकर निखार लिया था। इसीलिए जब युद्ध की चुनौती आयी, तो फैशनेबल ड्राइंगरूमों, भड़कीले बालरूमों, क्लबों-होटलों में घूमने वालों की पत्रिका 'लाइफ' उसमें भी अन्य पत्र-पत्रिकाओं से आगे रही। जैसा कि उसके जन्मदाता हेनरी बी. लूस ने बाद में कहा– 'लाइफ को युद्ध-पत्रिका बनाने का कोई विचार नहीं था, लेकिन हुआ यही।'

युद्ध-संबंधी रिपोर्ताज और चित्र 'लाइफ' की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं। राबर्ट कापा का लिया हुआ स्पेनी गृहयुद्ध में गोली खाकर गिरते हुए सैनिक का अविस्मरणीय चित्र, डेविड डगलस डंकन के लिये हुए द्वितीय विश्वयुद्ध तथा कोरियाई युद्ध के चित्र, और वियतनामी युद्ध में लिये लैरी बरोस के चित्र पत्रकारिता के इतिहास में मील के पत्थर हैं। नार्मंडी पर आक्रमण के समय समुद्र-तट पर मरे पड़े तीन अमरीकी सैनिकों के चित्र छापकर 'लाइफ' ने युद्ध को अमरीकी नागरिकों के घरों में पहुंचा दिया था। पचीस साल बाद उसने फिर वियतनाम के मोर्चे पर २८ मई से ३ जून १९६९ तक के सात दिनों में मारे गये २१७ अमरीकी सैनिकों के ऐसे चित्र छापे कि अमरीकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

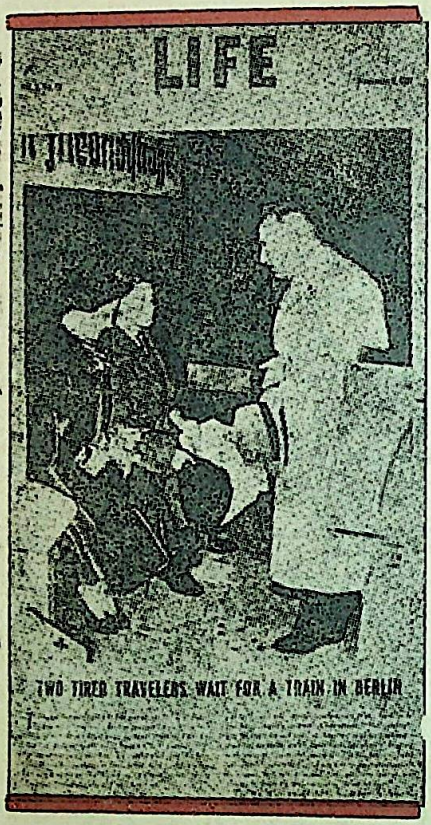

राजगद्दी-त्याग के बाद विंडसर के ड्यूक और डचेस बर्लिन के एक स्टेशन में बेंच पर बैठे हैं; और साथ खड़े हैं उनके मेजबान। 'लाइफ' में छपा एक दुर्लभ चित्र। जनता आघात से स्तब्ध रह गयी।

युद्ध के इन संवाद-चित्रों के लिए 'लाइफ' को कीमत भी देनी पड़ी। स्पेनी गृहयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का चित्रांकन करने वाले मशहूर छायाकार राबर्ट कापा की मृत्यु वियतनाम-युद्ध में सुरंग फटने से हुई। १९६७ के अरब-इस्रायली युद्ध में पाल शूत्सर ने अपनी जान गंवायी और लाओस में हेलिकाप्टर दुर्घटना के शिकार होकर लैरी वरोस खो गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 'लाइफ' की खूब उन्नति हुई। उसकी पृष्ठसंख्या भी बढ़ी और तड़क-भड़क भी। उसके संपादकीय विभाग के कार्यकर्ता संसार में सबसे ऊंचा वेतन पाने वाले पत्रकार थे। वे दफ्तर के खर्चे पर हवाई जहाजों को टैक्सी की तरह किराये पर लेकर सफर किया करते थे। चाहे उत्तरी-ध्रुव का बर्फीला वियावान हो, या सहारा का रेगिस्तान। 'लाइफ' के पत्रकार-फोटोग्राफरों की पूरी गारद कई-कई महीने वहां पड़ी रहती थी और उसके बाद भी उनके तैयार किये हुए चित्र-संवादों में औसतन ५ में से २ का ही प्रकाशन हो पाता था। एक फोटोग्राफर ने बताया कि हाथियों की एक चित्रावली तैयार करने के लिए उसे तीन हजार डालर (लगभग ढाई लाख रुपये) दिये गये थे।

इतने अधिक धनव्यय का परिणाम कई बार अत्यंत हितकारी भी सिद्ध हुआ। प्राचीन सभ्यताओं, महान धर्मों या पश्चिमी संस्कृति के इतिहास संबंधी चित्र-लेखों की शृंखलाएं इसका उदाहरण हैं। चर्चिल, आइसनहावर, द गोल और जनरल मैकआर्थर के संस्मरणों के लिए 'लाइफ' ने भारी राशि अदा की और वह सार्थक भी हुआ। लेकिन साथ ही स्वेतलाना स्तालिन के संस्मरण और रहस्यमय अरबपति हावर्ड ह्यूज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के जाली संस्मरणों के मामले में उसने धोखा खाया और धन गंवाया।

'लाइफ' की बेतहाशा फिजूलखर्ची का एक उदाहरण एडवर्ड बेर (संप्रति 'न्यूज-वीक' के पेरिस ब्यूरो के प्रमुख) ने दिया। जब वे 'लाइफ' में थे, एक बार सहारा रेगिस्तान पर चित्रलेख तैयार करने के लिए उन्हें और एक फोटोग्राफर को भेजा गया। वे लोग हवाई जहाज, ऊंट, ट्रक और हेलिकाप्टर किराये पर लेकर कोलंब बेचार से नाइजर तक सहारा की खाक दो महीने छानकर जब लौटने लगे, तो उन्हें सूचना मिली कि उस चित्र-लेख को छापने की योजना ही रद्द कर दी गयी है। इस पूरे अभियान में अनुमानतः साढ़े चार लाख रुपये खर्च हुए थे!

संसार के हर भाग में किसी न किसी बड़े संवाद की खोज में 'लाइफ' का जत्था हमेशा मौजूद रहता। १९५३ तक मध्य अफ्रीका के 'मून माउंटन' पर केवल पांच आरोही-दल पहुंच सके थे और 'लाइफ' का फोटोग्राफर इलियट एलिसोफान उनमें से एक में था। इसी तरह, उत्तर ध्रुव के नौ मील लंबे तैरते हिमशिला-खंड पर कभी किसी ने पैर नहीं रखा था। और जब पहली बार वायुसेना के एक विमान ने उपकरण, तंबू और राशन-पानी वहां पर उतारा, तो उसके साथ 'लाइफ' के फोटोग्राफर जार्ज सिल्क को भी उतारा।

एक बार पोप की ताजपोशी अंकित करने के लिए 'लाइफ' ने १०० आदमी लगाये थे। ब्रिटेन की साम्राज्ञी एलिजाबेथ के राज्याभिषेक-समारोह के व्यापक रंगीन चित्र 'लाइफ' ने घटना के दस दिन बाद ही

स्टेनी गुहयुद्ध (बायें), रीता हेवर्थ (बीच में), कोरिया का युद्ध (दायें)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छापकर प्रकाशन-जगत् में इतिहास बनाया था।

जवाहरलालनेहरू की अंत्येष्टि के रंगीन चित्र देने के लिए 'लाइफ' ने अपना अंतर-राष्ट्रीय संस्करण तीन दिन विलंब से छापा था और हवाई जहाज में विशेष लेबोरेटरी बनवायी थी, ताकि नयी दिल्ली से टोक्यो की उड़ान के दौरान ही फोटोग्राफों की प्रोसेसिंग हो जाये। उसकी तुलना में हमारे ही देश की सबसे बड़ी सचित्र साप्ताहिक पत्रिका को उस अंत्येष्टि के रंगीन चित्र छापने में कई सप्ताह लगे थे।

समाज व राजनीति के चौधरियों और उनकी अनीतियों पर खरा-तीखा प्रहार करना भी 'लाइफ' की विशिष्टता थी। ब्रिटिश प्रधान-मंत्री नेविल चेम्बरलेन को मंदबुद्धि कहना और उसके बाहर निकले हुए दांतों को उजागर करने वाला चित्र छापना उसके खरे कटाक्ष और साहस का नमूना था। लोकप्रिय अमरीकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को भी 'लाइफ' की खरी बोली बोलनेवाली फोटोग्राफी का मजा चखने को मिला। पिट्सबर्ग (अमरीका) के खान-मालिकों के शोषण-पुष्ट मोटापे, धृष्ट और आत्मतुष्ट अहंकार के जीवंत चित्र छापकर उसने बिना कोई शब्दमयी टिप्पणी किये ही बहुत कुछ कह दिया था।

राष्ट्रपति निक्सन और (अब भूतपूर्व) उपराष्ट्रपति एग्न्यू 'लाइफ' के तीक्ष्ण प्रहारों से तिलमिला चुके हैं, जिनके प्राशासनिक भ्रष्टाचार को उसने बड़ी ही निर्ममता से उघाड़ा। निक्सन द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में अपने चहेते जज एबे फोर्टास की नियुक्ति को लेकर 'लाइफ' ने फोर्टास पर इतनी खोजपूर्ण सामग्री लेखमाला के रूप में छापी कि राष्ट्रपति को वह नियुक्ति रद्द करनी पड़ी।

'लाइफ' के पन्नों पर विश्वविख्यात लेखकों का जमघट लगा रहता। अर्नेस्ट हेमिंग्वे, नार्मन मेलर, ग्राह्म ग्रीन, जेमन डिकी, एवलिन वाग आदि उन लेखकों में से थे, जिनकी नवीनतम रचनाएं पुस्तकाकार में आने से पहले 'लाइफ' के पाठकों को पढ़ने को मिल जाती थीं। खुद उसके स्टाफ में से जान हेरेसी और थियोडोर ह्वाइट जैसे लेखक उभरे।

आधुनिक लेखकों में 'पापा' कहे जाने वाले अर्नेस्ट हेमिंग्वे का उपन्यास 'ओल्ड मैन एंड द सी' जब 'लाइफ' में धारावाहिक छपना शुरू हुआ, तो उसने कहा था कि इस समय मैं जैसी उत्कंठा और प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं, वह नोबेल पुरस्कार मिलने पर भी न होती। 'पापा' को दो साल बाद उसी पुस्तक पर नोबेल पुरस्कार मिला।

प्रारंभ से ही 'लाइफ' ने विज्ञान-जगत् की हलचलों और नये-नये अनुसंधानों पर विशेष ध्यान दिया था। मगर भाग्य का व्यंग्य तो देखिये कि विज्ञान की एक उपलब्धि ही 'लाइफ' का जीवन समाप्त करने में परोक्षतः कारण बनी। अंतरिक्ष में स्थापित संचार-उपग्रहों के माध्यम से संसार के किसी भी भाग में हो रही घटना को केवल दस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिनिट बाद टेलिविजन पर देख लेना संभव हो गया, जब कि 'लाइफ' उसी घटना को दस दिन बाद दिखा पाती, सो भी उतने विस्तार से नहीं।

सन १९६५ में 'लाइफ' ने सर विंस्टन चर्चिल की अंत्येष्टि का फोटो-अंकन करने के लिए प्रोसेसिंग लेबोरेटरी से युक्त एक हवाई जहाज किराये पर लेकर लंदन भेजा था। लंदन से शिकागो की वापसी यात्रा में आकाश में ही पूरी फिल्म की प्रोसेसिंग की गयी और रिपोर्ट, चित्र-परिचय आदि सब कुछ लिखा और संपादित कर लिया गया, ताकि जहाज के उतरते ही पूरी सामग्री छपने चली जाये। अपनी समझ में 'लाइफ' ने बड़ी जल्दी की थी; लेकिन टेलिविजन की 'जल्दी' से वह कोसों पीछे रह गयी।

'लाइफ' को सबसे अधिक क्षति पहुंची, रंगीन टेलिविजन के कारण। यों पाठकों की संख्या पर कोई असर नहीं पड़ा — १९६९ के अंत में उसकी बिक्री १९६८ के मुकाबले में १७ लाख ज्यादा थी। लेकिन विज्ञापन की आय घटी। उस समय 'लाइफ' की ७५ लाख प्रतियां बिकती थीं और उसमें पूरे पृष्ठ के विज्ञापन का शुल्क ४ लाख रुपया था, जब कि टेलिविजन उससे एक तिहाई खर्चे में २ करोड़ लोगों तक विज्ञापन पहुंचा देता था। 'लाइफ' ने विज्ञापन-दर घटायी भी; लेकिन विज्ञापनदाता आकृष्ट न हुए। कहांतो वे पहले उसके पास खुद विज्ञापन लाते और मुंह मांगे दाम देते थे, अब उनके पास जाने पर भी सीधे मुंह बात न करते।

'लाइफ' का नया अवतार

सन १९६९ में 'लाइफ' को कुल मिलाकर २२ करोड़ रुपये का घाटा हुआ। जितनी खूबियां, उतना ही सिरदर्द। बड़े आकार, उत्कृष्ट कागज तथा चित्रों के कारण उसका उत्पादन-व्यय बहुत पड़ता था; और बढ़ती महंगाई के साथ बढ़ता जाता था। ऐसी स्थिति में आय में इतनी बड़ी कमी होने से 'लाइफ' की कमर टूट गयी।

अब 'लाइफ' ने पीछे हटना आरंभ किया। संपादकीय कार्यालय के ५० विभाग बंद कर दिये। खर्चीले संवाद-चित्र लाने का प्रयास छोड़ दिया। बिक्री-संख्या घटाकर ५५ लाख कर ली, ताकि उत्पादन-व्यय कम हो सके। विज्ञापन-दर घटा दी और अंक के दाम बढ़ा दिये। टेलिविजन के शक्तिबाण से म्रियमाण 'लाइफ' के लिए संजीवनी लाने का काम गैरी वाक को सौंपा गया, जो उसकी सहयोगी पत्रिका 'स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड' को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उबारन में नाम कमा चुका था। परंतु सभी उपचार नाकाफी और देर-आयद साबित हुए। 'लाइफ' की उत्पादन-लागत बढ़ती जा रही थी और आमदनी बहुत तेजी से गिरती जा रही थी। प्रति कापी पर उत्पादन लागत २० सेंट पड़ने पर भी ग्राहकों को वह १० सेंट में दी जा रही थी; क्योंकि उनका चंदा पहले से लिया जा चुका था।

इसी समय सरकार ने डाक-दरों में १७० गुना वृद्धि कर दी। जिस पत्रिका की ९० प्रतिशत बिक्री चंदादार ग्राहकों से होती हो, उसके लिए यह मर्मभेदी प्रहार था। १९७२ में 'लाइफ' की उलटी सांस चलने लगी थी और नया साल शुरू होने के कुछ दिन पूर्व उसकी धड़कन रुक गयी।

मदमाती सुंदरियों से लेकर युद्ध की विभीषिका तक सभी विषयों को संजोकर जिस पत्रिका ने अपने पाठकों को गुदगुदाया, ज्ञानवान बनाया, स्तंभित किया और उनके मानसिक–बौद्धिक स्तर को उठाया, उसके इस दुःखद अवसान से लाखों अमरीकियों को ऐसा लगा कि उनके जीवन का कोई रोचक अंश सहसा विलुप्त हो गया है।

पाठक उसे प्रायः अपने परिवार का एक सदस्य-सा मानते थे। क्लीवलैंड के एक अध्यापक ने बताया कि जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तो 'लाइफ' से चित्र काटकर अपने शिक्षक को ले जाकर देता था और उनकी मदद से वे हमें कक्षा में अनेक विषय समझाते थे। आज मैं खुद शिक्षक हूं और अपने शिष्यों को विषय समझाने के लिए 'लाइफ' के चित्र कक्षा में लाता हूं। इस तरह अध्यापक-वर्ग उसे शिक्षा के श्रेष्ठ उपकरण के रूप में देखता था।

कवि जेम्स डिकी का कहना है कि 'लाइफ' के पन्नों को देख और पढ़कर मेरे समग्र व्यक्तित्व में एक व्यापक परिवर्तन आया। प्रसिद्ध बौद्धिक पत्रिका 'न्यूयार्कर' के संपादक ने 'लाइफ' के बंद होने को अपनी निजी क्षति बताते हुए कहा – 'अमरीकी समाज को उसने ऐसा बहुत कुछ दिया, जो बेशकीमती था। उसका अवसान होते देख अत्यंत दुःख होता है। 'लाइफ' पत्रकारिता की बहुत बड़ी उपलब्धि थी।'

'लाइफ' की कमी उसके पाठकों, प्रकाशकों और संपादकों सभी के लिए असहनीय थी। मृत्यु के पांच महीने बाद 'लाइफ' का पुनर्जन्म हुआ– एक नये रूप और शरीर में। इस्रायल की २५ वीं वर्षगांठ पर 'इस्रायल की चेतना' के नाम से 'लाइफ' का एक विशेष अंक छपा। उसी पुराने आकार के ९२ पृष्ठों में लगभग १५० रंगीन चित्रों के साथ २९,००० शब्दों में। इसमें भूमध्यसागर के पूर्वी तट की बालुका- राशि पर इस्रायल के जन्म लेने और चौथाई सदी के अल्पकाल में मध्यपूर्व का सबसे समृद्ध और सशक्त राष्ट्र बन जाने की कहानी थी। सामग्री जुटाने में 'लाइफ' के पुराने कर्मियों ने हाथ बंटाया था। विज्ञापन-रहित इस अंक की कीमत डेढ़ डालर थी। चुनिंदा विषयों पर एकल अनियतकालिक अंकों के प्रकाशन की यह शुरूआत स्वागत योग्य है। –'स्वतंत्र भारत', लखनऊ-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक जिंदगी बदनाम-सी

• सुशील कुमार दोषी •

क्रिकेट के मैदान में कछुए की-सी धीमी गति से रन बनाने के लिए कोई सर्वाधिक कुख्यात व बदनाम हुआ है, तो वह है इंग्लैंड का केन वैरिंग्टन। उसके खेल ने जहां एक ओर प्रतिपक्षी खिलाड़ियों के समक्ष प्रश्नचिन्ह लगा दिया, वहीं दर्शकों को भी कई बार कुपित किया। लेकिन फिर भी खेल के जानकार उसे इंग्लैंड का अप्रतिम बल्लेबाज मानते हैं—ऐसा बल्लेबाज जिसने अपनी बल्लेबाजी की असाधारणता से इंग्लैंड को कई बार नाजुक स्थितियों से उबारा।

विश्व का महानतम क्रिकेट-कीपर स्वर्गीय बाली ग्राउट यद्यपि आस्ट्रेलिया का खिलाड़ी होने के नाते इंग्लैंड का प्रतिस्पर्धी था, फिर भी था वह वैरिंग्टन का बेहद प्रशंसक। उसने एक बार कहा था—'जब भी मैं वैरिंग्टन को बल्लेबाजी के लिए विकेट पर आते देखता हूं, मुझे उसके पीछे-पीछे यूनियन जैक भी आता दिखाई देता है। वे भी गोलंदाज व क्षेत्ररक्षक, जिन्होंने वैरिंग्टन को आउट करने के प्रयत्न में अपना खून-पसीना एक किया है, यह जानते हैं कि ग्राउट के दिमाग में ऐसा कहते हुए क्या बात थी!

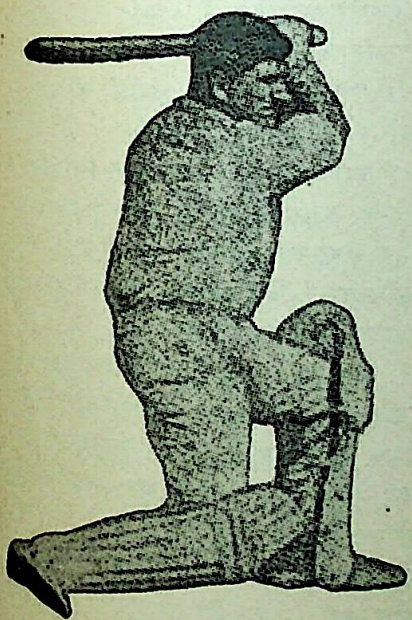

वैरिंग्टन निर्विवाद रूप से इंग्लैंड का सबसे विश्वसनीय एवं निष्ठावान खिलाड़ी हुआ है—एक ऐसा खिलाड़ी, जिसने अधैर्य या दबाव से कभी विकेट नहीं खोया, जिसकी एकाग्रता सदा अटूट रही।

भारत के विरुद्ध कानपुर टेस्ट में वह रन-आउट हो गया था। तब स्वयं अपने पर उसका गुस्सा देखने लायक था। वह जैसे पीड़ा से कराह उठा था—'रन-आउट तो व्यर्थ गंवाया विकेट होता है।' हालांकि उसने पहले ही १७२ रन बना लिये थे।

टेस्ट-मैचों में छः हजार से भी ज्यादा रन बनाने वाले वैरिंग्टन की बल्लेबाजी पूर्णतया अनुशासित थी। लोकप्रिय अंग्रेज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिलाड़ी पीटर मे और जुड़वां बेडसर भाइयों की तरह ही उसका भी जन्म रेडिंग में हुआ था। जन्मतिथि थी २४ नवंबर १९३०। बचपन में एक दिन उसने एक टेस्ट-मैच देखा और निश्चय कर लिया कि मैं भी इंग्लैंड का महान खिलाड़ी बनूंगा। ... और फिर वह पूरे मनोयोग से अभ्यास करने लगा। एक दिन वह भी आया कि उसकी खेल-प्रतिभा से प्रभावित होकर स्वयं अलेक बेडसर ने (जिसने अपने समय में २३६ टेस्ट विकेट का कीर्तिमान स्थापित किया था) घोषणा की 'हमें इंग्लैंड के लिए एक जानदार खिलाड़ी मिल गया है।'

सन १९५५ में काउंटी क्रिकेट में उसका प्रदर्शन साधारण होने पर भी उसकी परिष्कृत शैली के कारण उसे दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध पहले टेस्ट में स्थान दिया गया। लेकिन बेचारा बैरिंग्टन अभी खाता भी न खोल पाया था कि आउट हो गया और अगले मैच में हो गया उसका निष्कासन। तब दुःखी बैरिंग्टन अपने खेल पर पुनर्विचार करने को विवश हो गया ? इंग्लैंड का महान खिलाड़ी बनने का स्वप्न बुरे आरंभ के कारण धूल में मिल गया। टेस्ट-मैच में उसे पुनः स्थान चार वर्ष बाद ही मिल सका।

मगर इन चार वर्षों में उसने बल्लेबाजी की अपनी शैली में परिवर्तन कर लिया था। वह जानता था कि उसका नया तरीका नकारात्मक अवश्य है, पर सुरक्षित भी उतना ही है। अतः उसने निश्चय किया कि खतरे-भरे स्ट्रोकों पर अब प्रतिबंध लगाना होगा (इन्हीं के कारण उसने अक्सर अपने विकेट खोये थे) और दिमाग को ठंडा रखकर रन बनाने पर ही ध्यान केंद्रित रखना होगा। उसने सोचा कि अगर आउट नहीं हुआ, तो रन अपने-आप बनेंगे ही।

एक टेस्ट-मैच में १९ विकेट लेकर विश्व-कीर्तिमान स्थापित करने वाले जिम लेकर के ये शब्द उसके दिमाग में गूंज रहे थे – 'गोलंदाज कोई मूर्ख नहीं होते केन ! बगैर दंड वसूल किये वे तुम्हें अपनी गोलंदाजी पीटने नहीं देंगे। तुम्हें निरंतर जमे रहने पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिये।'... क्रिकेट-प्रेमी जानते हैं कि उसके बाद से बैरिंग्टन की एकाग्रता बेजोड़ रही।

क्रिकेट का खेल धीमा हो जाने पर अपना आकर्षण खो देता है। परंतु बैरिंग्टन की बल्लेबाजी की तकनीक का तो आधार ही था धीमे खेलना। अतः दर्शकों की झल्लाहट व क्रोध को सहने के लिए उसने अपने को आरंभ से ही तैयार कर लिया था। उसका कहना है –' मैं हूट किये जाने पर कभी बुरा नहीं मानता; उसका अर्थ मैं यही समझता हूं कि निश्चय ही उस वक्त मैं अच्छा खेल रहा हूंगा।'

बैरिंग्टन के समय में 'स्क्वेयर कट' और 'ड्राइव' करने में उसका कोई सानी नहीं था। फिर भी स्ट्रोक लगाने की पूर्ण क्षमता का वह उपयोग नहीं करता था; क्योंकि उसे आउट होने का खतरा मोल नहीं लेना था, उसे तो रन अर्जित करने थे। उसने अपने खेल का तरीका निश्चित कर रखा था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसमें उत्तेजना को कोई स्थान नहीं था। पूर्ण अनुशासनबद्ध धैर्य ही उसकी बल्लेबाजी का प्रमुख गुण था।

वह दिन-रात क्रिकेट में इतना तल्लीन रहा कि अपने स्वास्थ्य का उसे खयाल ही न था। नतीजा यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व पूरी तरह 'फार्म' में होते हुए भी उसे हृदय-रोग के कारण अपने प्रिय खेल से संन्यास लेना पड़ा।

बैरिंग्टन की धीमी बल्लेबाजी से बौखलाये दर्शक उसे उलाहने-भरी मजेदार चिट्ठियां लिखते रहे हैं, परंतु सौम्य-स्वभाव बैरिंग्टन कभी नाराज नहीं हुआ; बल्कि उसने उन्हें प्रमाण-पत्रों की तरह, सहेज कर रखा है। और बड़े गर्व से वह उन्हें दूसरों को दिखाता है। उसका कहना है—'ये तो मेरी सफलता के प्रमाण हैं।' देखिये कुछ प्रमाण:

एक—'खुशमिजाज क्रिकेट खिलाड़ी को उसके अपराजित, लेकिन मजाकिया शतक के लिए बधाइयां। कई शतक रनों व मजाकों से भरे होते हैं, लेकिन आपसे ज्यादा-मजाकिया शतक कोई नहीं बनाता। कई बल्लेबाजों का शरीर ९९ रनों पर कांप जाता है, पर आप उनमें से नहीं है। निश्चय ही आप महान व मजाकिया बल्लेबाज हैं.....'

दो—'प्रिय केन, आपका अतीव सुंदर 'स्ट्रोक प्ले' देखा और आपके विनोदी स्वभाव से मैं प्रसन्न हुआ। मैंने आपसे भेंट करने का प्रयत्न किया, पर पुलिस ने मुझे रोक लिया। क्या आप पुलिस को कह देंगे कि मुझे रोकना रोक दें .....'

तीन—'प्रिय मित्र बैरिंग्टन, आपके निर्दोष खेल से मुझे बड़ा प्यार है। आपके खेल से मैं देख सकता हूं कि आप बेरहम नहीं, बल्कि दयालु व सहृदय व्यक्ति हैं। कृपया मुझे टेस्ट-मैचों के टिकट भेजें और बदले में मेरा प्यार व सहानुभूति आपके साथ है ही.....'

चार—'प्रिय केन बैरिंग्टन, मैं १४ वर्षीय बालिका हूं, वैसे तो मैं अपनी पूरी जीवन-कहानी लिखना चाहती थी, पर आप तो क्रिकेट खेलकर मजाक करने में बहुत व्यस्त रहते हैं। मैं चाहती हूं कि आप मुझे एक मित्र की तरह मानें, चाहें तो पुत्री की तरह भी। कष्ट के लिए धन्यवाद!'

रन और मजाक — निश्चित ही ज्यादा रन और कम मजाक। लेकिन इंग्लैंड में बैरिंग्टन की सेवाएं सदा अविस्मरणीय मानी जायेंगी। बेशक बैरिंग्टन की बल्लेबाजी में टाम ग्रेवेनी जैसा आकर्षण नहीं था, पर ठोसपन और टीम के लिए उपयोगिता का जहां तक प्रश्न है, उसका कोई सानी नहीं। हर तरह से ठोस — बल्लेबाजी, गोलंदाजी और क्षेत्ररक्षण की ईमानदारी एवं चरित्र में बैरिंग्टन निश्चय ही क्रिकेट की दुनिया का अविस्मरणीय व्यक्ति है।

—१३२, जावरा कंपाउंड, इंदौर-१

पति—'स्त्री जितनी सुंदर होती है, उतनी ही मूर्ख भी होती है, पता नहीं क्यों?'
'वह सुंदर इसलिए होती है कि पति को अच्छी लगे और मूर्ख इसलिए कि पति उसे अच्छा लगे।' पत्नी बोली।

—सत्यनारायण नाटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खतरा है शांति को उसके रखवालों से

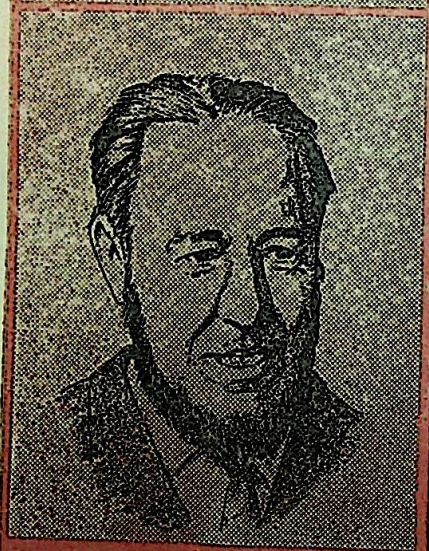

• डा. कुसुम भार्गव •

शीर्षक के साथ सोल्जेनित्सिन

आज रूस में स्वतंत्र चिंतन के अधिकार की मांग उबल रही है। स्तालिन के जमाने से ही वहां स्वतंत्र चिंतकों को सताने की लंबी और अमानवीय परंपरा चली आ रही है। वहां के अनेक बागी-विचारकों में से दो के नाम आज सारे संसार में चर्चित हैं। एक हैं साहित्यकार अलेक्जांडर सोल्जेनित्सिन और दूसरे विज्ञानी आंद्रेई दिमित्रियेविच सखारोव। सोल्जेनित्सिन को पिछले वर्ष साहित्य का नोबेल-पुरस्कार दिया गया था। बोरिस पास्तरनाक और शोलोखोव को मिलाकर वे इस पुरस्कार को पाने वाले तीसरे रूसी साहित्यकार हैं। इस वर्ष जब नोबेल शांति-पुरस्कार के लिए उपयुक्त व्यक्तियों के नाम सोचे जा रहे थे, सोल्जेनित्सिन को ऐसा लगा कि रूस में राज्य की हिंसा के विरोध में डटे हुए अहिंसक अवज्ञाकारियों के प्रतीक और प्रतिनिधि के रूप में आंद्रेई सखारोव को नोबेल शांति-पुरस्कार दिया जाना चाहिये। इसलिए उन्होंने नोबेल शांति-पुरस्कार समिति को सखारोव का नाम प्रस्तावित किया और एक निबंध के रूप में यह बताया कि राज्य की हिंसा का निराकरण करने के लिए किये जा रहे प्रयासों को विश्वशांति का प्रयास क्यों मानना चाहिये।

वैसे पुरस्कार समिति ने सोल्जेनित्सिन के सुझाव को स्वीकार नहीं किया और शांति-पुरस्कार अमरीका के विदेश-मंत्री डा. हेनरी किसिंजर और उत्तर वियतनामी राजनयिक ली डुक थो को संयुक्त रूप से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया। परंतु सोल्जेनित्सिन ने हिंसा और शांति का जो विवेचन किया है, वह बहुत तलस्पर्शी है। महावीर स्वामी से महात्मा गांधी के युग तक हिंसा-अहिंसा के प्रश्न से गहरे रूप में संबद्ध भारत के लिए वह विशेष महत्त्व का है।

हिंसा समग्र होती है

सोल्जेनित्सिन ने अपने निबंध में कहा है कि पिछली पीढ़ियां दो महायुद्ध एक के बाद एक झेलकर घबरा गयीं और उनके मन-मस्तिष्क पर युद्ध का भूत इस तरह हावी हो गया कि वे युद्ध को ही शांति के लिए एकमात्र खतरा मानने लगीं। निस्संदेह युद्ध शांति को भंग करते हैं; लेकिन आज के संसार में बिना युद्धों के भी शांति नष्ट होती जा रही है। शांति के विरुद्ध जो एक बुनियादी वृत्ति खड़ी है, युद्ध उसका एक अंश है। यह मूलभूत वृत्ति है हिंसावृत्ति, जो नानारूपों में प्रकट होती रहती है।

सोल्जेनित्सिन अभंग, सर्वग्राही और विश्वव्यापी हिंसा और अभंग, सर्वग्राही और विश्वव्यापी शांति के बीच द्वंद्वात्मक संघर्ष को इस युग का एकमात्र द्वंद्व मानते हैं। उन्होंने लिखा है—'एक ही द्वंद्व तर्क की दृष्टि से संतुलित और नैतिक दृष्टि से सही है। वह है शांति और हिंसा का द्वंद्व।' मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरा केवल युद्ध से नहीं है; बल्कि हिंसा की वे तमाम प्रक्रियाएं, जो दबे-ढंके रूप में शांति की जड़ें खोदती रहती हैं, युद्ध से भी ज्यादा खतरनाक हैं।

वे कहते हैं—'शांति समग्र होती है तथा उसका लेशमात्र उल्लंघन भी समूची शांति को भंग कर सकता है। इसी प्रकार हिंसा भी समग्र होती है। महज एक आदमी को बंधक बनाना या महज एक विमान का अपहरण भी विश्वशांति के लिए उतनी ही बड़ी चुनौती है, जितनी कि सीमांत पर गोलीबारी करना, अथवा दूसरे देश की सीमाओं के भीतर बम गिराना।'

सोल्जेनित्सिन बताते हैं कि वास्तव में आज शांति को सबसे बड़ा खतरा इस बात से है कि कुछ लोग जान-बूझकर यह भ्रांति फैलाने की कोशिश कर रहे हैं कि कोई हिंसा 'न्यायपूर्ण' होती है और कोई 'अन्यायपूर्ण' तथा 'न्यायपूर्ण हिंसा' शांति के लिए खतरनाक नहीं होती। पिछले कुछ वर्षों में इस तथाकथित 'न्यायपूर्ण हिंसा' के नारे की आड़ में सारे संसार में आतंककारी कार्रवाइयां बेतहाशा बढ़ी हैं।

उनकी राय में सबसे बड़ी विडंबना यह है कि आज का मनुष्य न तो इस प्रकार की हिंसा की ओर से सचेत है, न उसका सामना करने के लिए तैयार है और न उसमें इसका सामर्थ्य ही प्रकट हुआ है। नितांत महत्त्वहीन व्यक्तियों की आतंककारी कार्रवाइयों के फलस्वरूप वह विशृंखलता की स्थिति में जी रहा है।

इस बात का सोल्जेनित्सिन को विशेष दुःख है कि राष्ट्रसंघ भी नैतिक आधार पर आतंकवाद की निंदा नहीं कर सका है। इस विफलता के पीछे भी कारण यही है कि संसार के बड़े राष्ट्र आतंकवाद के कुछ प्रकारों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्दोष मानते हैं और दूसरे प्रकारों को सदोष। यह कैसी उपहासास्पद स्थिति है कि जब ये राष्ट्र स्वयं आक्रमण करते हैं, तो वह मुक्तिप्रेमियों का गोरिल्ला-आंदोलन हो जाता है, लेकिन जब उन पर अथवा उनके पिट्ठुओं पर आक्रमण होता है तो वह निंदनीय आतंकवाद हो उठता है।

राज्य की व्यवस्थित हिंसा

अंतरराष्ट्रीय हिंसा की चिंता छोड़कर यदि हम किसी राष्ट्र की सीमाओं के भीतर होने वाली हिंसा पर ध्यान केंद्रित करें, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि राज्य की संघटित, व्यवस्थित और खामोश हिंसा शांति के लिए सर्वाधिक घातक है। सोल्जेनित्सिन अपने ही देश के इतिहास से इसका एक दृष्टांत देते हैं।

सन १९२०-२१ में साइबेरिया के तांबोव क्षेत्र (उजबेकिस्तान) में एक विशाल किसान आंदोलन हुआ था। इसमें लाखों लोगों ने भाग लिया था और यह इतने बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था कि जिसका क्षेत्रफल यूरोप के कई देशों के संमिलित क्षेत्रफल के बराबर था। रूस की साम्यवादी सरकार ने आंदोलन को निर्ममता से कुचल डाला और उसे 'डकैती' घोषित कर दिया गया। ऐसा करते समय सरकार को तनिक भी झिझक नहीं हुई कि वह डकैती 'शब्द' का दुरुपयोग कर रही है। इतना ही नहीं, जो थोड़े-से विद्रोही गोली की मार से बच गये थे, उनकी संतान के मन पर यह शब्द इतनी गहराई के साथ अंकित कर दिया गया है कि वे अपने पूर्वजों को "डकैत" कहते हैं। और यह कहते समय उनके मन में तनिक भी रोष नहीं पैदा होता।'

वे बताते हैं—'राज्य की स्थापित और स्थायी हिंसा ने लंबे समय के दौरान समस्त प्रकार के "न्यायिक" रूप धारण कर लिये हैं, हिंसापूर्ण 'कानूनों' की मोटी संहिताएं तैयार कर डाली हैं तथा उन्हें लागू करने का भार अपने "न्यायाधीशों" के कंधों पर डाल दिया है। यही वह हिंसा है, जो शांति के लिए सबसे अधिक भयावह संकट बन गयी है। किंतु दुर्भाग्य यह है कि इस खतरे को बहुत कम लोग पहचान पा रहे हैं।'

सोल्जेनित्सिन के ये विचार उन्हें महावीर, बुद्ध और ईसा सरीखे मसीहाओं और ताल्सताय, क्रोपोटकिन और गांधी जैसे दार्शनिक-अराजकतावादियों की श्रेणी में ला खड़ा करते हैं। उन्होंने मौन और सूक्ष्म हिंसा की विभीषिका को हमारे सामने उजागर कर दिया है। वे कहते हैं—'इस प्रकार की हिंसा के लिए न विस्फोटक सुरंगें बिछाने की जरूरत होती है, न बम फेंकने की। यह हिंसा पूरी खामोशी के साथ चोट करती है। यह खामोशी विरले ही भंग हो पाती है और भंग भी होती है तो अपने शिकारों की अंतिम चीखों से ही।'

इसे तमाशा कहा जाये या विडंबना कि यह हिंसा जनहित, स्वतंत्रता, समानता और दया के नारों की आड़ लेकर मनुष्य के मानसिक व नैतिक अस्तित्व को निरंतर चुनौती दे रही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिरोध का पाखंड

इस निबंध में सोल्जेनित्सिन ने पाश्चात्य जगत् में होते रहने वाले निस्तेज युद्ध विरोधों के पीछे छिपे पाखंड का भी अच्छा विश्लेषण किया है। इस वर्ष के पूर्वार्ध में फ्रांसीसी परमाणु-परीक्षण के विरुद्ध आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड द्वारा किये गये प्रतिरोध को उन्होंने 'हताश साहस' कहा है और व्यंग्य किया है कि उनसे कहीं अधिक घातक और गंभीर परीक्षण तो चीन ने किये थे, लेकिन तब इन देशों ने प्रतिरोध नहीं किया।

हां, ऐसा क्यों हुआ ? सोल्जेनित्सिन कहते हैं–'मैं इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं। यह विश्व को असंतुलित दृष्टि से देखने का परिणाम तो था ही, साथ ही इसके पीछे कायरता भी छिपी थी। उन्हें मालूम था कि चीनी रेगिस्तान अथवा चीनी समुद्र-तट के समीपवर्ती परीक्षण-क्षेत्र में जाने के बाद कोई भी लौट नहीं पायेगा।'

वे कहते हैं–'अधिकांश पश्चिमी प्रतिरोधों के पीछे निहित पाखंड की यह पूरी कहानी है। पश्चिम के लोग प्रतिरोध को तब ही उचित मानते हैं, जब उससे उनके जीवन को कोई खतरा न हो तथा यह आशा हो कि विरोधी पीछे हट जायेगा, और वामपंथियों की ओर से आलोचना की कोई आशंका न हो।'

असंलग्नतावादी (नान - एलायन्ड) लोगों को भी सोल्जेनित्सिन पाखंडी मानते हैं। इनका कहना है कि ये लोग हमेशा एक पक्ष के सामने दंडवत् करते और दूसरे को

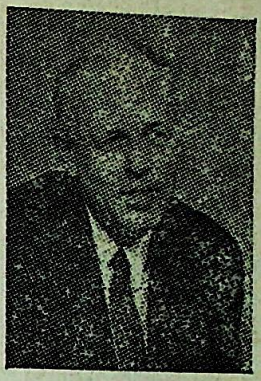

आंद्रेई सखारोव

ठोकर मारते हैं। इससे उन्हें गहरी व्यथा है।

नैतिकता विहीन लोकतंत्र कैसा ?

सोल्जेनित्सिन अमरीका के पाखंड की चर्चा के संदर्भ में कहते हैं–'वे ऐसे लोकतंत्र से क्या अपेक्षाएं करते हैं, जिसमें नैतिक बुनियादों का कोई सहज ढांचा ही न हो ? जिसमें केवल स्वार्थ-संघर्ष हो और उस संघर्ष का निपटारा किसी समग्र नैतिक संरचना के बिना ही केवल संविधान के माध्यम से होता हो ?'

साम्यवादी आस्थाएं

सोल्जेनित्सिन लिखते हैं–'यदि दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य किसी अश्वेत नेता को चार वर्ष तक उसी तरह नजरबंद रखकर सताता, जिस तरह जनरल ग्रिगेरेंको को (रूस में) सताया गया, तो क्या वह देश दंड से बच सकता था ? विश्वव्यापी रोष की आंधी ने उस जेल की छत को कभी का उड़ा दिया होता।'

उनका कहना है–'घनी गुंथी हुई इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरती पर सहअस्तित्व का वास्तविक स्वरूप केवल युद्धरहित अस्तित्व नहीं हो सकता। युद्धों का न होना ही पर्याप्त नहीं है। हिंसा के संपूर्ण निराकरण की आवश्यकता है और इस बात की भी कि इस बारे में हम पर कोई भी प्रतिबंध न रहे कि हम कैसे जियें, क्या कहें, क्या सोचें, क्या सीखें और क्या न सीखें।'

किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि सोल्जेनित्सिन की साम्यवादी आस्थाएं टूट गयी हैं। वे साम्यवादी जीवन पद्धति को विश्व की भावी व्यवस्था मानते हैं। इस बारे में उन्होंने स्पष्ट कहा है—'अब इसमें तनिक भी संदेह नहीं रहा है और बहुत-से लोग ऐसा महसूस करने लगे हैं कि सोवियत संघ में जो कुछ हो रहा है, वह महज एक देश की बात नहीं है, वरन वह मनुष्य के भविष्य का पूर्वाभास है; अतः पश्चिमी प्रेक्षकों को उसकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिये।'

त्याग-बलिदान जरूरी

सोल्जेनित्सिन की राय में आज संसार के अधिकांश देशों के नागरिक 'त्याग, बलिदान और दृढ़ता का जीवन जीने का संकल्प खो चुके हैं।'

आतंकवाद को दूर करने का उन्हें एक ही उपाय दिखता है। वह यह है कि आम आदमी दृढ़ता के साथ जीना शुरू करे और बल-प्रयोग के सामने किसी भी स्थिति में आत्मसमर्पण न करे।

शांति-सैनिक सखारोव

सोल्जेनित्सिन ने लिखा है कि हिंसकों की उदारता पर निर्भर रहने वाले ही शांति की सेवा नहीं करते, बल्कि वे भी शांति की सेवा करते हैं, जो बिना भ्रष्ट हुए, बिना झुके और बिना थके दलित, पराजित और प्रताड़ित लोगों के अधिकारों के समर्थन में खड़े रहते हैं।

अपने देश रूस में उन्हें आंद्रेई दिमित्रियेविच सखारोव में ऐसे शांति-सैनिक का दर्शन हुआ है। इसीलिए तो उन्होंने नोबेल शांति-पुरस्कार समिति को लिखा :

'नोबेल पुरस्कार विजेता होने के नाते मैं नोबेल पुरस्कार के लिए उम्मीदवार का नाम प्रस्तावित करने के अपने अधिकार का प्रयोग करना चाहता हूं और क्योंकि नोबेल समिति तक अपना मत पहुंचाने के लिए मेरे पास इस निबंध के अतिरिक्त दूसरा कोई साधन नहीं है, अतः मेरा निवेदन है कि ये पंक्तियां १९७३ के नोबेल शांति-पुरस्कार के लिए मेरी ओर से आंद्रेई दिमित्रियेविच सखारोव के नाम का विधिवत् नामांकन-पत्र मानी जायें।.....

'वे लंबे अरसे से महान बलिदानपूर्वक अथक परिश्रम कर रहे हैं..... उनके कार्य-कलाप को विश्वशांति के लिए सर्वोच्च योगदान माना जाना चाहिये। यह ऐसा योगदान है, जिसमें न कोई दिखावा है, न कोई छलावा। यह एक ऐसा मौलिक योगदान है, जिसमें एक एकाकी व्यक्ति वीरतापूर्वक अपने अल्प सामर्थ्य के अनुसार एक महाबली हिंसा के राक्षसी पंजों को थामे खड़ा है और इस तरह विश्वशांति को बल पहुंचा रहा है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैट्रिक व्हाइट

• विश्वनाथ शास्त्री •

पैट्रिक विक्टर मार्टिन्डेल ह्वाइट.....चार शब्दों का यह पूरा नाम जता देता है, श्री ह्वाइट मूलतः अंग्रेज हैं। वैसे तीन पुश्तों से वे आस्ट्रेलिया में बसे हुए हैं। पर शिक्षा-दीक्षा उनकी इंग्लैंड में हुई, रायल एयर फोर्स की इंटेलिजेंस शाखा में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वे ब्रिटिश सरकारी सेवा में रहे। कुल मिलाकर २३ वर्ष स्वदेश के बाहर रहे। अब सिडनी के बाहरी छोर पर बसे ६१ वर्षीय ह्वाइट साहब अपनी अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि का आनंद लेंगे। साहित्य-रचना तो करते ही हैं।

ह्वाइट की प्राथमिक कृतियां 'नो मोर रियलिटी' (उपन्यास, १९३५) तथा 'प्लाउमैन एंड अदर पोयम्ज' (१९३५) अपनी रूमानियत और प्रगीतात्मक तन्मयता के कारण भी पर्याप्त यशस्विनी नहीं बन सकी थीं। कविताओं के नीचे उनके रचना-स्थानों का निर्देश है, जो बताता है कि ये यूरोप-प्रवास की अवधि में जगह-जगह लिखी गयी थीं। असली ख्याति उन्हें मिली अपने उपन्यास 'हैपी वैली' (१९३९) से, जिस पर आस्ट्रेलियन लिटरेचर सोसायटी ने उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया। अपने एक अन्य उपन्यास 'वॉस' (१९५७) पर उन्हें १,००० पौंड का 'डब्ल्यू एच. स्मिथ पुरस्कार मिला था। और अब उनके संपूर्ण कृतित्व पर नोबेल पुरस्कार (लगभग ७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाख रुपये) दिया गया है। 'विविसेक्टर' (१९७०) शायद उनका अंतिम उपन्यास है; बाद की कृतियों का मुझे पता नहीं।

पैट्रिक ह्वाइट यों तो आस्ट्रेलिया के मूर्धन्य युग-प्रवर्तक उपन्यासकार, नाट्यकार, उत्तम गद्य लेखक एवं कवि (अवस्था के क्रम में) हैं; किंतु उनके निंदकों की भी कमी नहीं है। कोई उन्हें हार्डी और तालस्ताय के समकक्ष कहता है, तो किसी की राय में वे हैं तत्त्वज्ञानी, रहस्यवादी एवं घोर व्यक्तिवादी, जिसे समाज-संघटन का ठीक ज्ञान नहीं! उनके गद्य-लेखन पर भी लोग 'अति शाब्दिकता और कठिन वाक्यविन्यास' के दोष लगाते हैं; उनके नाटकों को अत्यधिक प्रयोगवादी कहते हैं और हास्य-व्यंग्य को रूक्ष तथा सहानुभूतिशून्य। परंतु उनकी साहित्यिक प्रतिभा का लोहा सभी मानते हैं। किसी को भी तो एक दर्जन किताबें लिखकर इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि नहीं मिली, आस्ट्रेलिया में। पहले यहां तिथिक्रम से ह्वाइट की रचनाओं का परिचय पा लें।

'हैपी वैली' में ह्वाइट ने एक प्रकार से महात्मा गांधी के इस कथन को कि उन्नति एवं अभ्युदय के लिए कष्ट या दुःख-भोग अनिवार्य होता है, कथा रूप दिया है। अपनी यक्ष्माग्रस्त पत्नी और दो छोटे बच्चों को छोड़कर एक युवती प्रेमिका के साथ भाग रहा डा. आलिवर हैलीडे रास्ते में एक दुःखप्रद मौत से सामना होने से वापस लौट आता है; वह अपने परिवार को क्वीन्सलैंड ले जाकर सुखी करने का अथक प्रयत्न करता है, यद्यपि इसमें पूरा सफल नहीं होता।

चेतना प्रवाही शैली में इस उपन्यास में प्रत्येक बड़े-छोटे पात्र का स्वगत-संभाषण देकर ह्वाइट ने बाहरी जगत के प्रति व्यक्तिगत यथार्थ के एहसासों की वर्णना दी है। मानवीय वासना की विध्वंसात्मक क्रिया के प्रतिरोध में डा. आलिवर हैलीडे के रूप में उन्होंने वास्तविक (आत्मिक) अभ्युदय का आभास भी कराया है और आस्ट्रेलियाई सामाजिक जीवन की क्षुद्रताओं का पर्दा-फाश किया है। शीर्षक भी व्यंग्य में है।

इसके बाद का उपन्यास 'द लिविंग एंड द डेड' (१९४१) भी मनस्तत्त्व-प्रधान है। इसका कार्य-कलाप लंदन के एक उपनगर तक ही सीमित रहता है। सात वर्ष बाद १९४८ में 'द आन्ट्स स्टोरी' छपी।

इनमें से प्रथम कृति में ह्वाइट ने इलियट स्टैंडिश की आत्मोक्तियों द्वारा यह दिखाने की कोशिश की थी कि आदमी रूपहीनता, अनस्तित्व और विनाश या नश्वरता के विरुद्ध प्रतिक्षण संघर्ष करता है। इलियट की बहन ईडेन अपने भाई की तरह किताबों को नहीं, बल्कि मानवीय रिश्तों को तरजीह देती है। वह स्पेन के जनविद्रोह में अपने प्रेमी की मृत्यु होने पर वहां भी पहुंच जाती है, जबकि इलियट अपनी किताबों की निष्क्रियता में ही डूबा रहता है—जीवन के स्पंदन से शून्य-सा।

सन १९४८ में ह्वाइट को पहली बार पूरी तरह सफलता ने वरा। 'दि आन्ट्स स्टोरी' की चाची थियोडोरा गुडमैन लंबे अर्से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक मानव-संगति से कटी जिंदगी बिताने को बाध्य होकर एक तरह की सपनों की दुनिया में खोयी रहती है। लोग उसे 'पागल' समझते हैं। अपनी झगड़ालू और अधिकार-पसंद मां की मौत के बाद जब वह मुक्त होती है, तो एक पागलखाने में रख दी जाती है। इससे पहले वह अपनी ही फंतासी के फलस्वरूप, हाल्स्टियस के रूप में मृत पिता की यह चेतावनी सुन चुकी है :

'वे हर तरह की अत्यंत करुणा दिखाकर तुझे लेने आयेंगे। वे तुझे उष्ण पेय देंगे, सादा पौष्टिक भोजन भी और वे तुझे एक श्वेत-कक्ष में आराम करने के लिए कहेंगे और अपनी बातों से तेरी जिंदगी हराम कर देंगे। सुन रही है न, उनकी बातों में न आ जाना, लेकिन खुलेआम उनसे लड़ना भी नहीं। एक हद तक हथियार डालकर आत्मसमर्पण भी बचाव का ही एक तरीका है।

थियोडोरा ने अपने बाप की तरह 'सुदूर का दर्शन' हासिल कर लिया है। वह भी उसी की तरह प्रकृति-दृश्य को मानव की अपेक्षा अधिक संवादशील मानती है। उसने 'यथार्थ की भ्रांति' की जगह 'भ्रांति का यथार्थ' अपना लिया है।

इस कृति में कथा और चरित्र को कोई महत्त्व नहीं दिया गया। पाठक को थियोडोरा की चेतना में डूबकर वास्तविकता और फंतासी का सुंदर संमिश्रण उपलब्ध होता है। वैयक्तिक एकाकिता का इतना गहरा निरूपण आस्ट्रेलिया की अन्य कृतियों में अब तक कभी नहीं हुआ था। कृति के तीसरे भाग में जब थियोडोरा अमरीका की यात्रा कर रही होती है, उसे एक तरह का दोहरा 'विजन' होता है। ह्वाइट ने इस भाग की शुरूआत ही आलिव श्राइनर के इस कथन से की है—'जब तुम्हारा जीवन अत्यंत यथार्थ हो, तब मेरे लिए तुम पागल हो।' थियोडोरा का नितांत अकेलापन (एलियनेशन) ही उसकी जीत है।

अगले सात साल तक ह्वाइट ने कोई उपन्यास नहीं छपाया। फिर १९५५ में उन्होंने 'द ट्री आफ मैन' से पुनः साहित्य जगत् का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। इससे पहले 'आस्ट्रेलियन लेटर्स' पत्रिका में 'द प्राडिगल सन' शीर्षक लेख में वे लिख चुके थे—'आस्ट्रेलिया में अब रईसों की ही पूछ हो रही है। पत्रकार और अध्यापक बौद्धिकता के ठेकेदार बन गये हैं। युवक-युवतियां नीली आंखों से (यानी अंधविलासी दृष्टि से) ही जीवन देख रहे हैं, मानवीय दांत पतझड़ की पत्तियों की तरह गिर रहे हैं, कारों के पृष्ठभाग प्रतिघंटा चमकदार होते जा रहे हैं, मांसपेशियों का बोलबाला है, खाने का मतलब केक और सींककबाब है, जनसाधारण के स्नायुतंतुओं में भौतिक कुरूपता को देखकर थोड़ी भी उत्तेजना नहीं होती। (भारत में आज इससे भी बुरी हालत है।)

आज के आस्ट्रेलियाई जीवन की आंतरिक निस्सारता, खोखलेपन या नितांत शून्यता से व्यथित होकर ह्वाइट ने व्यंग्य का भी वैसा ही इस्तेमाल किया है, जैसे हमारी हिन्दी में श्रीलाल शुक्ल एवं हरि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंकर परसाई आदि कर रहे हैं। समाज द्वारा स्वीकृत बातों का वे एक नितांत वैयक्तिक नजरिया देकर क्षणों की निजी अनुभूति की प्रामाणिकता पर प्रखर अस्तित्ववादियों जैसा जोर देते हैं। उनका विश्वास है कि असाधारण व्यक्तियों की अतींद्रिय अनुभूतियां अथवा परानुभूतियां ही जीवन की सार्थकता का अन्वेषण कर पाती हैं।

'द ट्री आफ मैन' में ह्वाइट ने स्टैन पार्कर और ऐंमी की परानुभूतियों को साकार बनाया है। आस्ट्रेलिया के प्रारंभिक जीवन से अब तक की प्रगति का लेखा-जोखा-सा इसमें बुन दिया गया है, हृद्य कथा और चरित्रांकन के ताने-बाने में। वहां के आदिवासियों पर विजय, झाड़-झंखाड़ व जंगलों की सफाई, बाढ़ें, तंबू की आग, छापामारों से लड़ाई, शहरों और उपनगरों का पतन और प्रवर्तन सभी कुछ है इसमें।

आस्ट्रेलिया में गोरे प्रवर्तकों और अगुओं की जिंदगी का ढांचा काम में लाकर ह्वाइट ने अपने पात्रों को जीवंतता प्रदान की है। इसका नायक स्टैन पार्कर सृष्टि के ऐक्य का अनुभव अपने अंतिम क्षणों में करता है। विस्मय और सौंदर्य तथा वैश्विक अनुभव इस कृति में सर्वत्र बिखरे हैं।

आलोचकों ने इसके महान गुण और 'बड़े दोष' दोनों दिखाये हैं। जैसे, इस उपन्यास में वक्तव्य ज्यादा हैं, दृश्यात्मक क्रियाएं कम और कभी-कभी तो लगता है कि यह एक कथाकृति नहीं, प्रत्युत आस्ट्रेलियाई लोगों के मनोविज्ञान का एक बृहद् ग्रंथ है, उनका सामाजिक इतिहास है।

लारेन्स की तरह ह्वाइट ने भी इसे 'मानवीय प्रेम का महान काव्य' बना दिया है। जिस 'कामाध्यात्म' की बाबत आजकल कुछ लोग बड़ा शोर मचाये हुए हैं, उसे ह्वाइट ने भी इस कृति में भली भांति देखा-परखा है, उसकी संभावनाओं पर काफी कुछ सोचा-समझा है। मानवीय वैयक्तिक एकाकिता पर भी इसमें जोर है। स्टैन और ऐंमी भी अंत तक संयुक्त 'सायुज्य' जीवन नहीं बिता पाते, न अपनी संतान में एकता का अनुमान कर पाते हैं। उनका पौत्र उस काव्य को लिखने के सपने देखता है, जिसमें समग्र जीवन को बांध लिया जायेगा।

इस उपन्यास में वस्तुओं की अतींद्रिय एवं दिव्य सत्ता के साक्षात्कार का भी प्रयत्न है। रूक्ष हास्य-व्यंग्य भी पर्याप्त है। बुड्ढा स्टैन मृत्यु से पहले अपने पास आये पादरी को थूक का चमकता बगूला दिखाकर कहता है—'यह रहा भगवान्!' यह अंश भी अवधेय है —' मेरा तो रास्ते की दरारों में यकीन है, जिसमें बने एक ढूह पर चींटियां इकट्ठी होकर ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रही हैं।'

'वॉस' (१९५७) उस उपन्यास का शीर्षक है, जिसमें ह्वाइट के कथाकृतित्व का नाटकीय प्रभाव सर्वाधिक उभरा है। इसमें मानवीय इच्छाशक्ति की विजिगीषा एवं आंतरिक महायात्रा का विनय तथा नम्रता में अंत और यह आध्यात्मिक उपलब्धि है कि 'जब आदमी को यह पता चल जाता है कि वह भगवान नहीं है, तभी वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके अधिक समीप होता है। तभी उसका दिव्यता की ओर आरोहण होता है।' संत अपनी 'खड़खड़ काया और निर्मल नेत्र' की स्थिति में ही परम शुचिता पाते हैं।

वॉस एक तरह से ईसा का ही विपर्यास है। वह भूमा का आकांक्षी 'तानाशाह' है, शहीद है, आस्ट्रेलिया के रेगिस्तान और जंगलों के पार जाकर वह स्वदेश के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचने की अदम्य मानवीय अभिलाषा का प्रतीक है, जिसकी सार्थकता अंतर की उस यात्रा के साफल्य से है, जो असीम विनय और विनम्रता की प्राप्ति करा देता है। अशरीरी रूप से लौरा (एक कुमारी) भी इसमें शामिल है। वॉस और उसमें एक तरह का अतींद्रिय रहस्यमय संवाद कायम रहता है। दोनों में यह विश्वास घर बना चुका है कि प्रत्येक व्यक्ति में एक प्रकार की प्रतिभा होती है, जिसे उद्घाटित भी किया जा सकता है, बशर्ते उसे दिन-प्रतिदिन के अस्तित्व की क्षुद्रताओं के बीच अपना गला न घोंटने दिया जाये। वॉस की धारणा है कि आस्ट्रेलिया में अनावश्यक का परिहार करके असीम की प्राप्ति का प्रयत्न दूसरे देशों की अपेक्षा सुगम है। यह उपन्यास एक सच्ची खोजयात्रा की कहानी पर आधारित है, यद्यपि उसके 'हीरो' को लोग भूल चुके हैं।.....

'राइडर्स इन ए चैरिअट' (१९६१) सातवें दशक तक पैट्रिक ह्वाइट का 'सर्वाधिक सफल' उपन्यास माना गया है। इसकी कथावस्तु भी एक तरह से 'इलहामी' मानी जा सकती है। काव्यात्मक शैली, तीखे व्यंग्य, रहस्यवादी 'विजन' और संग-साथ एवं सहकर्मिता की वफादारी के आकलन के लिए यह उल्लेखनीय है। 'मुक्ति' के रथ में बैठे चार पात्र—दो स्त्रियां, दो पुरुष—इसके मुख्य चरित्र हैं। 'महान आस्ट्रेलियाई रिक्तता' पर भी यह ह्वाइट का सबल प्रहार है। वॉस (१९५७) की तरह इसमें अतियथार्थ का लेशमात्र नहीं, बल्कि यथार्थ का निरूपण अवश्य है। इसमें भी लेखक की आम और औसत से घृणा साफ जाहिर है।

कृति के चारों पात्र हिमेल फार्ब, आल्फ डब्बो, श्रीमती गॉड बोल्ड और कुमारी मेरी हेअर समाज के बहिष्कृत व्यक्ति हैं। प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी यहूदी शरणार्थी हिमेल फार्ब आश्चर्यकर घटनाओं के फलस्वरूप नात्जी अत्याचारों से बच जाता है; लेकिन अपने संयमी, निर्धन और तपस्वी रहन-सहन के बावजूद वह आस्ट्रेलिया के परंपराभक्त दुराग्राहियों द्वारा सलीब पर चढ़ा दिया जाता है। आवारा आदिवासी कलाकार आल्फ डब्बो का रंग के प्रति तीव्र मोह उसे विषयों की खोज में 'विजन' की इलहामी गहराई में ले जाता है। ईसा में दृढ़ आस्था रखने वाली श्रीमती गॉड बोल्ड शराबी पति और कई पुत्रियों के साथ रहती है और अंत में गौरव बोध के क्षणों का अनुभव करती है। अपने पिता के बनवाये अति विचित्र महल के खंडहरों में रहने वाली चिरकुमारी मेरी हेअर सभी मानवेतर जीवों से तादात्म्य अनुभव करती है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पगली' समझी जाती है। श्रीमती जौली और श्रीमती फ्लैक इस कृति की शैतानी आत्माएं हैं। कुल मिलाकर उपन्यास आस्ट्रेलियाई समाज का जीवंत चित्र है।

ह्वाइट की कहानियों का एक संग्रह 'द बर्न्टवन्स' १९६४ में प्रकाशित हुआ, जिसमें नागरिक जीवन के मार्मिक खंड-चित्र हैं। एक कहानी का मुख्य चरित्र श्रीमती डॉकर को तो लोग आज भी भूले ही नहीं हैं।.....

१९६५ में छपे 'फोर प्लेज' में १९४०-१९६० के मध्य ह्वाइट के लिखे चारों नाटक संगृहीत हैं। पहले नाटक 'द हैम फ्यूनरल' में मानवीय संबंधों की अविच्छेद्य संश्लिष्टता और अपने निजी व्यक्तित्व की खोज को ही रेखांकित किया गया है। यह उस वक्त आस्ट्रेलिया में बहुप्रचलित 'प्रकृतवाद' पर अभिव्यक्ति, प्रतीक एवं प्रगीतात्मक लय के नये प्रयोगों को अपनाकर प्रहार करता है (इसे दर्शकों ने भी काफी पसंद किया था), दूसरा नाटक 'द सीजन आफ सार्सापैरिला' आम और औसत जिंदगी बसर करने वालों पर तीखा व्यंग्य है। तीसरा नाटक तकनीक की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसमें भी विजन और फंतासी का अद्भुत समीकरण है। चौथे, 'नाइट आन वाल्ड माउन्टेन' में केंद्रीय पात्र है कुमारी क्वोडलिंग, जो अन्य लोगों की वास्तविक दुनिया छोड़कर पहाड़ पर सिर्फ बकरे-बकरियों के बीच जीने लगती है। नाटकों से ह्वाइट को इतना यश नहीं मिला है, जितना कि उपन्यासों से।

'द सालिड मंडल' (१९६६) में आर्थर ब्राउन अपने जुड़वां भाई वाल्डो का खून कर देता है। इस उपन्यास का पैटर्न भी बड़ा अमूर्त्त-सा है। इसमें उन्हीं घटनाओं का दो बार वर्णन किया जाता है, चूंकि दोनों अधेड़ उम्र के जुड़वां भाई आर्थर और वाल्डो एक ही व्यक्तित्व के दो समानांतर किंतु पृथक, बाहरी और भीतरी पहलू पेश करते हैं। दोनों ही नायक हैं। मंडल शब्द संस्कृत का है, जिसका तंत्र और योग में विशेष महत्त्व है। ह्वाइट ने इसे अतिक्रमण या अतींद्रियता के प्रतीक रूप में लिया है। रथ तथा अन्य प्रतीकों की भी उनके साहित्य में भरमार है। लगता है, भारतीय दर्शन से उनका अच्छा परिचय है। इस उपन्यास में वे पूर्णता और सार्थकता की जो धारणा उपस्थित करते हैं, वह ईसाइयत की परिकल्पना से बाहर की है।

'द विविसेक्टर' (१९७०) और 'आई आफ स्टॉर्म' (१९७३) उनके आठवें दशक के उपन्यास हैं। इनमें से पहला ६४२ पृष्ठ का है, उसके आरंभ में ही बेन निकल्सन का एक उद्धरण है– 'चित्र-शिल्प और धार्मिक अनुभूति में गहरा साम्य है; कारण, दोनों में ही हम असीम की समझ और पकड़ की खोज करते हैं।' उसी में रिंबो का यह कथन भी उद्धृत है– सर्वज्ञ और अज्ञात तक पहुंचने वाला महान अशक्त, महान अपराधी और महान अभियुक्त–सभी कुछ हो सकता है। दूसरे उपन्यास के ५०० पृष्ठों में एक बुढ़िया के चारों ओर कथा का ताना-बाना है। (हम इन्हें अभी पढ़ नहीं सके हैं।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयंकर

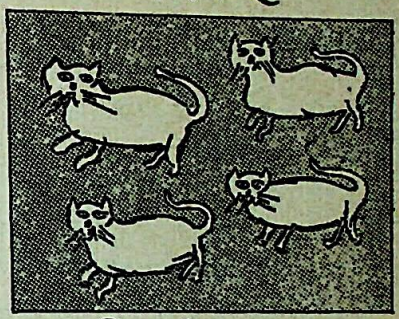

बिल्लियों का टापू

• शंकरदेव विद्यालंकार •

प्रशांत महासागर में वनस्पतियों से भरा और फल-फूलों से शोभित एक टापू है ताहिती, जिसे पिछली सदी के फ्रांसीसी चितेरे पाल गोगैं ने अपने चित्रों में अमर कर दिया है। इस नयनाभिराम पहाड़ी टापू पर फ्रांस का राज्य है और इसकी राजधानी है- पातीत।

कोई साठ-एक वर्ष पहले की बात है। यहां पर जाक्विल लेटुर्क नामक एक युवक आया। ताहिती की सुहावनी जलवायु और बढ़िया आहार से वह अच्छा हृष्ट-पुष्ट हो गया।

कुछ समय बाद ताहिती के फ्रांसीसी राज्यपाल ने उसे बुलाकर एक लुभावनी बात उससे कही—'यहां से चालीस-एक मील की दूरी पर एक छोटा-सा टापू है। वहां पर्याप्त फल-फूल होते हैं। ताजे पानी के बारहमासी झरने भी हैं। वहां का समुद्री-किनारा भी बहुत मनोहर है। यदि कोई साहसी मनुष्य वहां जाकर उसे आबाद करे, तो मैं टापू उसे भेंट में दे सकता हूं। तुम यह जिम्मेदारी लो। मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि वहां नारियल की खेती कैसे कर सकते हो। परंतु एक बात है, वहां चूहों का बड़ा उत्पात रहता है। वहां के बड़े-बड़े चूहे खाने की हर चीज को चट कर जाते हैं। इसी कारण वहां कोई जाना नहीं चाहता।

'बात ऐसी हुई कि कभी कोई जहाज वहां आ लगा था। जहाज से कुछ चूहे टापू पर उतर गये। अनुकूल जलवायु और खान-पान की प्रचुर सामग्री पाकर वे खूब मोटे-ताजे हो गये। अब उनकी संख्या अतिशय बढ़ गयी है। उन्हें भगाने के लिए आग, धुआं, जहर की गोलियां, पिंजरे आदि का पर्याप्त उपयोग किया गया; परंतु कोई असर नहीं हुआ, बल्कि उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है।'

फ्रांसीसी राज्यपाल की बातें सुनकर जाक्विल लेटुर्क का मन वहां जाने को ललचा गया। उसने सोचा, नारियल की खेती करके मालामाल हो जाऊंगा और टापू में चैन से रहूंगा।

लेटुर्क ने राजधानी पातीत जाकर अच्छे बिलाव और बिल्लियां एकत्र कीं। उन्हें उस टापू में उतारकर स्वयं पुनः पातीत लौट आया।

कुछ समय बाद लेटुर्क पुनः टापू में लौटा। चारों ओर हरियाली और वनस्पतियों की समृद्धि निहारकर खूब प्रसन्न हुआ। लताएं

शीर्षक के साथ का चित्र : प्रशांत बसरूर (उम्र ९ वर्ष)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल-फूलों से झुकी जा रही थीं। परंतु अब चूहे नहीं दिखाई दिये। उस टापू का नाम भी उसके नाम पर लेटुर्क पड़ गया। वह मन ही मन सोचने लगा – अब यह टापू आस-पास के इलाके में प्रसिद्ध हो जायेगा। और मैं धनवान बन जाऊंगा।

परंतु एक दिन उसने देखा कि उसके बाड़े में से मुर्गियां और बतखें कम हो रही हैं। उसने पहरा बैठाया। पता चला रात को बड़े-बड़े बिलाव जाली वाली बाड़ को फांद-कर मुर्गियों और बतखों को चट कर जाते हैं। खोज करने पर पता चला कि एक कगार की ओट में बहुत से बिलाव रहते हैं। वे छिछले समुद्र-तट से मछलियां पकड़कर पेट भरते हैं और खूब मौज से रहते हैं। वे ही मुंह का स्वाद बदलने के लिए उसकी मुर्गियों और बतखों पर पंजा साफ करते हैं।

लेटुर्क पातीत जाकर बंदूक ले आया और उससे बिल्लियों का सफाया करने लगा। परंतु उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उसकी गोलियां समाप्त हो गयीं। एक दिन सांझ समय लेटुर्क अपनी रसोई में मांस पका रहा था। उसकी सुगंध पाकर कई बिल्लियां वहां आ पहुंची और लेटुर्क पर झपटकर उसे नोचने लगीं। बड़ी मुश्किल से वह अपना बचाव कर पाया।

अंत में बिल्लियों के उपद्रवों से तंग आकर लेटुर्क ने वह टापू छोड़ दिया। तब से वह टापू 'बिल्लियों का टापू' के नाम से मशहूर हो गया। कोई आदमी उसे उपहार में लेने को भी तैयार नहीं होता।

अब इन बिल्लियों को लेटुर्क की मुर्गियों और बतखों का भोग लगाने का मौका तो नहीं मिलता। मगर छिछले जल में से मछ-लियां और किनारे पर आने वाले पंछी अच्छी मात्रा में मिल जाते हैं। वे जंगली और पहाड़ी बिल्लियों से भी बड़ी और शक्ति-शाली हो गयी हैं। वहां उनका कोई शत्रु नहीं है। वे बड़ी निश्चितता और मस्ती से वहां रहती हैं। किनारे पर आने वाला कोई भी प्राणी उनका शिकार हो जाता है।

–महिला कालेज, पोरबंदर, गुजरात

यह किस्सा कश्मीरी संसद- सदस्य श्री शमीम अहमद शमीम ने लोकसभा में सुनाया था।

एक सज्जन मच्छी - बाजार गये। वहां एक बढ़िया-सी मछली देखकर उनके मुंह में पानी भर आया। वे उसे खरीद लाये। मगर घर पर उनकी बीवी साहिबा ने आंखों में आंसू भरकर कहा कि यह तो पक न सकेगी, क्योंकि बाजार में तेल नहीं मिल रहा है; घासलेट भी खत्म हो चुका है, बाजार में मिलता भी नहीं है। निराश और झल्लाये हुए उन सज्जन ने मछली हाथ से उठायी और खिड़की से बाहर फेंक दी। मछली पास की तलैया में जा गिरी और क्षण-भर में फिर जी उठी। उसने जोर से नारा लगाया –'इंदिरा गांधी जिंदाबाद !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौटिल्य उदियानी

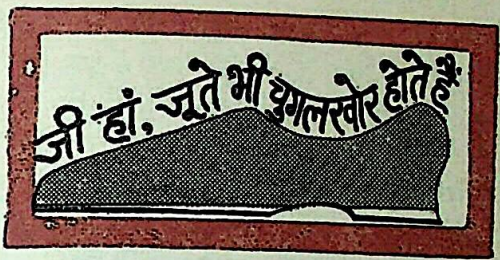

विवस्त्र लाश का अंग-प्रत्यंग सूखे ठूंठ-सा इस कदर अकड़ चुका था कि उसकी बीभत्सता को भर आंख देख पाने की ताब तो प्रख्यात जासूस भी अपने अंदर एकबारगी नहीं संजो पाया। किसी ने उस औरत का मुंह काला करने के बाद, बड़ी निर्दयता से उसकी गर्दन पर तेज छुरी फेर दी थी। पलंग पर बेतरतीब पड़ा धड़ अधर में लटके उसके मस्तक को अभी तक इसलिए संभाले था कि एक-आध निचली रक्तवाहिनी कटने से रह गयी थी। अन्यथा खून निचुड़ जाने से नीला पड़ा उसका भयावह चेहरा अब तक नीचे फर्श पर फैलकर सूख गये रक्त-ताल में डूब गया होता।

औरत के शरीर से फिसलकर उसकी नजरें जब नीचे भर आये रक्त-ताल में बने एक टापू पर टिकीं, तो दहशत की उस हालत में भी एक मीठी सुरसुरी उसके पूरे बदन में दौड़ गयी। खिली बांछों से नीचे झुककर वह बैठ गया। रक्त की ऊपरी सतह पर जमी काफी मोटी पपड़ी को न देख उसने दायीं ओर के पाये के पास जमे रक्त पर उभरा हुआ एक आकार देखा, जो निश्चय ही किसी बूट के तलवे का था। वह उसी का बारीकी से निरीक्षण कर रहा था।

खुशी से उसके दोनों ओंठ गोल हो गये और उसके मुंह से सीटी-सी बजने लगी। अगले ही क्षण बूटों के उस ठप्पे के कई चित्र उसने अपने कैमरे के सब कुछ पचा जाने वाले पेट में भर लिये।... ... और, तीसरे दिन उन बूटों का मालिक जासूस की मजबूत गिरफ्त में आ चुका था।

बूटों के बेढब चौड़े और घिसे आकार के ठप्पे को पहली ही नजर में जासूस की सूक्ष्म दृष्टि ने पढ़ लिया था कि हो न हो यह किसी फटेहाल घरेलू नौकर के बूटों का आकार होना चाहिये। मृत देह की बेतरतीब स्थिति ने भी इस संदेह की पुष्टि कर दी कि हत्यारा पेशेवर नहीं, नौसिखिया है; क्योंकि अनभ्यस्त अपराधी को ही इसका ज्ञान नहीं होता कि इस तरह तेज हथियार से सिर को धड़ से जुदा करने पर खून का तेज फव्वारा उसके अपने कपड़ों को रंग सकता है, जो खूनी होने की सबसे बड़ी शिनाख्त है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हीं सूत्रों के आधार पर जासूस ने उस घर के छः नौकरों में से असली अपराधी को छांट लिया और उसकी कोठरी से वे बूट भी बरामद कर लिये, जिनके तलवों का ठप्पा हत्या वाले कमरे में पाया गया था। वैसे अपराधी ने जूतों को धो-पोंछकर उन पर इस कदर पालिश पोत दिया था कि खून की जरा-सी भी सुर्खी उन पर नहीं बची थी। लेकिन उसे क्या पता था कि जूते के तलवे भी चुगली खा सकते हैं। नौसिखुआ बेचारा!

हत्या की बात जाने दीजिये। वह एक घृणित विषय है और उसे सुलझाना सिर्फ जासूसों का काम है। लेकिन यह बात सच है कि जूतों की हालत और बनावट से न सिर्फ आदमी की हैसियत का ठीक-ठीक पता चल जाता है, बल्कि उसके स्वभाव की भी बहुत-कुछ जानकारी मिल जाती है।

पुराने जूतों की मरम्मत का काम करने वाली लंदनवासी श्रीमती फ्लोरेंस रीप का कहना है कि हस्तरेखा-विज्ञ की तरह वे किसी के पुराने और घिसे-पिटे जूतों को देखकर उसके स्वभाव के संबंध में प्रामाणिक जानकारी दे सकती हैं। इस कथन के पीछे वर्षों का निरीक्षण जुड़ा हुआ है। उनका पति भी जूतों की मरम्मत का ही धंधा करता था और पुराने घिसे जूतों को देखकर पहली ही नजर में ग्राहक के स्वभाव और उसकी हैसियत के बारे में ठीक-ठीक अनुमान लगा लेता था।

फ्लोरेंस रीप का निश्चित मत है कि अगर किसी आदमी का जूता अंदर से फट गया है, तो समझ लें कि वह बेसब्री की जिंदगी जी रहा है और उस बेसब्री को चाहकर भी तोड़ने का सामर्थ्य उसमें नहीं है। यदि तले के मध्य-भाग में छेद हो गया है, तो इसका स्पष्ट मतलब है कि जूते का मालिक माप-तौलकर बात करता है और तदनुसार फैसला करता है। ऐसे आदमी अक्सर पैसे को दांत से पकड़े रहने पर भी मौका पड़ने पर दिल खोलकर पैसा बहाते हैं।

लेकिन रीप की रुचि उन ग्राहकों में सबसे ज्यादा थी, जिनके जूतों की बाहरी कोर कुछ-कुछ कट रही हो। उनकी दृष्टि में ऐसे आदमी खुशमिजाज और बेतकल्लुफी की हद तक मिलनसार होते हैं और कोई भी जरा-सी प्रशंसा करके आसानी से उन्हें खुश कर सकता है। मगर किसी के जूते की बाहर की कोर बुरी तरह कट रही हो तो समझें कि वह मौजी तबीयत का है और हो सकता है कि किसी हद तक गैरजिम्मेदार हो। ऐसे आदमी पैसा तो काफी दे जाते हैं, लेकिन जिंदगी को सही ढंग से जी नहीं सकते। और समय से पहले ही चुक जाते हैं।

श्रीमती रीप का दावा है कि जो लोग समस्याओं से बुरी तरह चिंताग्रस्त होते हैं, उनके जूतों के तले बुरी तरह घिसे पाये जाते हैं। ऐसे आदमी प्रायः जीवन-भर संघर्षरत रहते हैं, फिर भी सफलता हमेशा उनसे कोसों दूर रहती है और चिंताओं के बोझ के कारण वे स्वाभाविक जीवन जी नहीं पाते और असमय टिकट कटा लेते हैं।

श्रीमती रीप बताती हैं—'हम पुराने जूतों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी – लेसी

लेसी श्वान एक वंश-परंपरा

श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान – श्वान

• सुजाता •

पहले राजा-महाराजाओं और ऋषियों के वंश होते थे। विश्वास नहीं होता कि कुत्ते का भी वंश हो सकता है, वह भी यशस्वी और फिर करोड़पति। पर लेसी नामक श्वान का २९ वर्ष प्राचीन एक ऐसा वंश है, जिसने अपने अभिनय कौशल से विश्व-ख्याति ही नहीं, कई प्रसिद्ध पुरस्कार और पदक जीते हैं। वह बड़ा जमींदार है और उसकी वार्षिक कमाई करोड़ों रुपये की है।

१९३८ में स्व. एरिक नाइट ने अपनी बेटी के लिए एक कहानी लिखी, जिसका प्रमुख पात्र लेसी नामक कुत्ता था। बच्चों के लिए लिखित यह कहानी पहले लघुकथा के रूप में, बाद में पुस्तकाकार प्रकाशित की गयी और उसका नाम रखा गया—लेसी केम होम (लेसी घर लौट आया)। कहानी बड़ी प्रसिद्ध हुई और प्रसिद्ध अमरीकी फिल्म-निर्माता कंपनी एम. जी. एम. ने उस पर फिल्म बनाने का अधिकार नाइट से करीब पचहत्तर हजार रुपयों में खरीद लिया।

फिल्म के लिए लेसी का अभिनय करने योग्य कुत्ते की तलाश शुरू हुई। विज्ञापन निकाले गये। हालिवुड के एक पार्क में एक दिन प्रतियोगिता हुई और ३०० कुत्ते इकट्ठे हुए। प्रसिद्ध श्वान-प्रशिक्षक रुड वैदरवैक्स का कुत्ता पाल भी उनमें था। लेकिन निर्माता सैम मार्क्स और निर्देशक फ्रेड विल्काक्स को एक भी लेसी का अभिनय करने योग्य नहीं प्रतीत हुआ। मगर वैदरवैक्स को अपने पाल पर विश्वास था; वह प्रारंभिक निराशा के बाद भी प्रतीक्षा करता रहा कि सैम मार्क्स पाल के लिए अवश्य लिखेगा।

वही हुआ। कहानी में एक दृश्य था कि लेसी बाढ़ग्रस्त नदी को पार कर रहा है।

missing 010

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संयोग की बात कि उन्हीं दिनों उत्तर कैली-फोर्निया की सान जोकिन नदी में भयानक बाढ़ आ गयी। मार्क्स को लगा कि क्यों न वैदरवैक्स के कुत्ते पाल को इस काम के लिए बुला लिया जाये, आजमाइश भी हो जायेगी।

पाल को लेकर वैदरवैक्स हाजिर हुआ और पाल ने बाढ़ग्रस्त नदी को तैरकर पार कर लिया। वह अपने पिछले पांवों के बीच अपनी दुम दबाकर किनारे पर चढ़ा और कैमरे के ठीक सामने आकर गिर पड़ा। फिर उसने सामने की ओर फैले अपने अगले पंजों के बीच सिर रखा और धीरे-धीरे आंखें बंद कर लीं।

पाल का प्रशिक्षण इतनी कुशलता से हुआ था कि उसने नदी में से निकलने के बाद अपने बदन को झटककर पानी नहीं झाड़ा। निर्माता इस बात से बहुत प्रभावित हुआ; क्योंकि यदि पाल कुत्तों के स्वभाव के अनुसार काया झटककर पानी झाड़ता, तो सारा दृश्य अस्वाभाविक हो जाता। कहानी के अनुसार कुत्ता तैरने में इतनी बुरी तरह थक जाता है कि उसे सांस लेने में भी कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में वह बदन को कैसे झटक सकता है?

पाल अभिनय-परीक्षा में सफल हो गया और प्रशिक्षक वैदरवैक्स के साथ एम. जी. एम. ने करार कर लिया। अब पाल लेसी हो चुका था। उसका वंश भी इसी नाम से चल रहा है और फिल्मों व टेलिविजन में अभिनय करके लगभग एक अरब रुपये कमा चुका है। उसकी सालाना आमदनी लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपये है।

लेसी की पहली फिल्म तैयार हुई—'लेसी केम होम।' उन दिनों एलिजाबेथ टेलर ने फिल्मों में काम करना शुरू किया ही था। 'लेसी केम होम' में उसकी एक भूमिका थी। मगर दर्शकों ने उसकी अपेक्षा लेसी के अभिनय को अधिक पसंद किया।

सन १९४३ में फिल्म रिलीज होने से पहले उसके प्रीव्यू में कंपनी का एक डाइरेक्टर लुई मायर इतना प्रभावित हुआ कि भावुकतावश रो पड़ा। उसके आग्रह पर कंपनी ने धन खर्च करके फिल्म में कुछ और दृश्य जोड़े। फिर फिल्म रिलीज हुई और 'हिट' गयी। सन १९५२ तक लेसी फिल्म-शृंखला में छः फिल्में तैयार हुईं। फिर एम. जी. एम. ने किन्हीं कारणों से लेसी-शृंखला का निर्माण बंद कर दिया और लेसी के उपयोग का अधिकार वैदरवैक्स को लौटा दिया।

सन १९५३ में वैदरवैक्स के पास प्रसिद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेलिविजन-निर्माता राबर्ट मैक्सवेल का प्रस्ताव आया कि लेसी को सुपरमैन टेलिविजन पर प्रदर्शित किया जा सकता है। वैदरवैक्स ने लेसी के उपयोग का अधिकार मैक्सवेल को बेच दिया।

मगर पाल अब शिथिल हो गया था, अतः उसके स्थान पर एक दूसरे कुत्ते का इस्तेमाल जरूरी हो गया था। वैदरवैक्स ने पाल के पिल्लों में से ही एक कुत्ता प्रशिक्षित कर रखा था। वह पाल जैसा ही था, सूरत-शक्ल और चाल-ढाल सबमें। उधर लेसी फिल्म-शृंखला को भंग हुए एक वर्ष से अधिक बीत चला था, अतः लोगों के मन पर से लेसी की सूरत धुंधली पड़ चुकी थी। वैदरवैक्स ने पाल के स्थान पर लेसी-२ को टी. वी. पर पेश किया। उसके शो एकदम लोकप्रिय हो गये। सन १९५४ और १९५५ में लेसी के टेलिविजन शो बच्चों के लिए सर्वोत्कृष्ट घोषित किये गये और उन पर मैक्सवेल को 'एमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

लेसी-२ की ख्याति बढ़ने लगी, अतः एम. जी. एम. ने फिर से उसके उपयोग का अधिकार मैक्सवेल से २ करोड़ ४३ लाख ७५ हजार रुपयों में खरीद लिया। इस बार भी लेसी की फिल्में हिट हुईं और फिल्म-निर्माताओं ने करोड़ों डालर कमाये।

ख्याति के चरम उत्कर्ष के समय अचानक ही १९५९ में लेसी-२ की कैंसर से मृत्यु हो गयी। मगर वैदरवैक्स हार मानने वाला न था, उसने पहले से ही लेसी-वंश का एक और कुत्ता सिखा-पढ़ाकर तैयार कर रखा था। इस प्रकार लेसी-३ कैमरे के सामने आया। लेकिन इस बार दर्शकों ने पहचान लिया कि नया लेसी कोई और है। हजारों दर्शकों ने चिट्ठियां लिखकर हकीकत जाननी चाही, मगर निर्माता यही कहते रहे कि यह १९४३ वाला लेसी ही है।

मगर झूठ बोलना व्यर्थ हुआ। लेसी अपने पूर्ववर्तियों जितना कुशल अभिनेता सिद्ध नहीं हुआ और स्वयं अपनी विफलता से विक्षिप्त हो गया। अंत में वैदरवैक्स ने गोली मारकर उसे हमेशा के लिए सुला दिया।

लेसी-३ के बाद शुरू हुई लेसी-४ की गौरव-गाथा। निर्माता से लेकर दर्शकों तक सभी का यह निश्चित मत है कि लेसी-४ लेसी-वंश का सबसे अधिक कुशल अभिनेता है। वह निर्माता, निर्देशक और अभिनेताओं के साथ तो हिलमिल जाता है, पर अजनबियों से अलग-थलग रहता है। उसे यह मालूम है कि वह दूसरे कुत्तों से भिन्न और श्रेष्ठ है। जब वह अपना अंजाम देता है और स्टेज पर एकत्र लोग तालियां बजाते

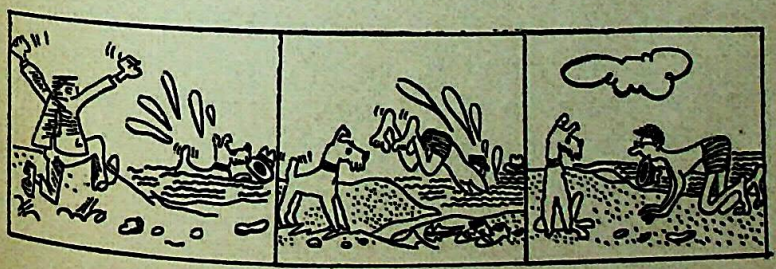

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, तो वह जानता है कि उसकी प्रशंसा की जा रही है।

वह बड़ा विनोदी है। एक बार उसे अपने मुंह में एक जीवित सांप ले जाना था। कैमरे के सामने आकर उसने सांप को वहां बैठी सह-निर्मात्री की गोद में डाल दिया। उसे पता था कि सह-निर्मात्री सांपों से घबराती है। 'कट' का अर्थ वह समझता है और शूटिंग के बीच जब निर्देशक 'कट' कहता है, तो झटपट वह आराम की मुद्रा में आ जाता है।

शूटिंग से पूर्व वैदरवैक्स लेसी को प्रत्येक दृश्य का पूरा अभ्यास कराता है, ताकि वह पहली बार में ही सफल अभिनय कर सके। एक बार लेसी को एक खरगोश का पीछा करना था। पीछा करने के लिए लेसी की जगह दूसरे कुत्ते का इस्तेमाल किया गया, लेकिन जब लेसी का अभिनय समाप्त हो गया तो उसने डरे हुए खरगोश को अपने पंजे से सहलाकर आश्वस्त किया कि डरने की बात नहीं है, यह तो नाटक था। उसे क्या मालूम था कि निर्देशक यह दृश्य भी कैमरे में उतारकर फिल्म में शामिल कर देगा।

लेसी सानफ्रांसिस्को - घाटी के एक देहाती घर में वैदरवैक्स के साथ रहता है। उसके कमरे में एक बहुत बड़ा बिस्तर है, फर्श पर कालीन है। दीवार पर उसका एक चित्र टंगा है, जो काले मखमल पर पेंट किया गया है। उसे हवाईद्वीप का संगीत सुनने का बहुत शौक है। उसकी पत्नी का नाम गर्ली है।

वैसे वैदरवैक्स ने उसका कुनबा बढ़ाने की गरज से कई कुत्तियां पाल रखी हैं; इस तरह वह बहुत-से कुत्तों का पिता है। इन्हीं से कोई लेसी-५ बनेगा। वैदरवैक्स बताता है कि उसने पिछले २९ वर्षों में लेसी के नस्ल के हजारों कुत्ते पैदा कराये और पाले हैं; लेकिन उनमें से तीन-चार ही शक्ल-सूरत से मूल लेसी (पाल) से मिलते हैं।

लेसी ठहरा अभिनेता; सभी अभिनेताओं की भांति उसने भी एक कुत्ता पाल रखा है, जिसका नाम सिल्की है। सिल्की उसका बहुत प्रिय और पक्का दोस्त है; दोनों घंटों खेलते रहते हैं। मगर पार्टियों आदि में वह पत्नी गर्ली को साथ ले जाता है।

वैदरवैक्स लेसी को नित्य व्यायाम कराता है, ताकि वह स्वस्थ और चुस्त रहे। उसके भोजन में मांस के अलावा सब्जियां, पनीर, प्याज, लहसुन, विटामिन और बोतलबंद शुद्ध पानी रहता है। खाने की तरफ वह तभी आंख उठाता है, जब उसका अपना नौकर उसकी रुचि का खाना लाये और ठीक ढंग से परोसे।

लेसी जब किसी अभिनेता या अभिनेत्री का चुंबन लेता है, तो इस बात का पूरा ध्यान रखता है कि उसके मुंह की लार न लगे। पिछले दिनों उसने हालिवुड की सबसे पुरानी अभिनेत्री जोन क्राफर्ड के साथ काम किया। मिस क्राफर्ड कहती हैं कि पहली ही भेंट में लेसी ने जब मेरा चुंबन लिया, तो मुझे मालूम हुआ कि वह सचमुच मर्द है। स्क्रीन पर मैंने अब तक जितने चुंबन पाये, उन सबमें उसका चुंबन सबसे अधिक ऊष्मा और स्नेह से भरा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

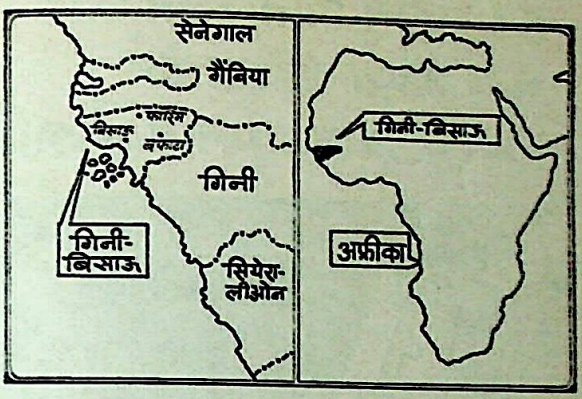

उषा माहेश्वरी

एक और स्वाधीन अफ्रीकी राष्ट्र का उदय

सितंबर १९७३ के अंतिम सप्ताह में पश्चिम अफ्रीका में एक नये राष्ट्र का उदय हुआ—गिनी-बिसाऊ का। पांच सौ साल से पुर्तगाली उपनिवेशवाद की बेड़ियों में जकड़े हुए सात लाख लोगों के इस स्वातंत्र्य-कामी राष्ट्र ने आखिरकार गुलामी का जुआ उतार फेंका। पुर्तगाली सैनिकों से आजाद कराये हुए गिनी-बिसाऊ के पूर्वी इलाके में मुक्त क्षेत्रों के निर्वाचित प्रतिनिधियों का दो दिन का अधिवेशन हुआ और स्वतंत्र गिनी-बिसाऊ राज्य की विधिवत् घोषणा कर दी गयी। गिनी बिसाऊ के साथ ही ढाई सौ मील दूर स्थित केप वर्ड द्वीप-समूह की भी मुक्ति की घोषणा कर दी गयी और भारत-सहित अनेक तटस्थ और साम्यवादी देशों की सरकारों से इस नये राष्ट्र को मान्यता प्राप्त हो गयी है।

पुर्तगाली उपनिवेशवादियों और उनके नाटो-संधि वाले हमजोलियों के लिए यह अवश्य ही सदमे-भरी घटना है। पुर्तगालियों को विश्वास हो चला था कि गिनी-बिसाऊ और केप वर्ड के राष्ट्रवादी छापामार नेता एमिलकार कब्राल की इसी साल जनवरी में हत्या होने से वहां का स्वातंत्र्य-आंदोलन शिथिल हो चला है।

यह विश्वास अकारण भी नहीं था, क्योंकि एमिलकार कब्राल इस स्वातंत्र्य-आंदोलन का सिर्फ सेनानी ही नहीं, सिद्धांत-शास्त्री और मार्गदर्शक भी था। यह कब्राल के नेतृत्व की विशेषता थी कि उसके द्वारा संघटित स्वातंत्र्य-आंदोलन अपने सर्वाधिक कर्मठ और प्राणवान नेता की धोखेपूर्ण हत्या के बावजूद कुछ ही महीनों में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो गया।

१९७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर महीने अतिरिक्त आय
बैंक ऑफ़ बड़ौदा के
मंथली इन्कम प्लान में शामिल होइये

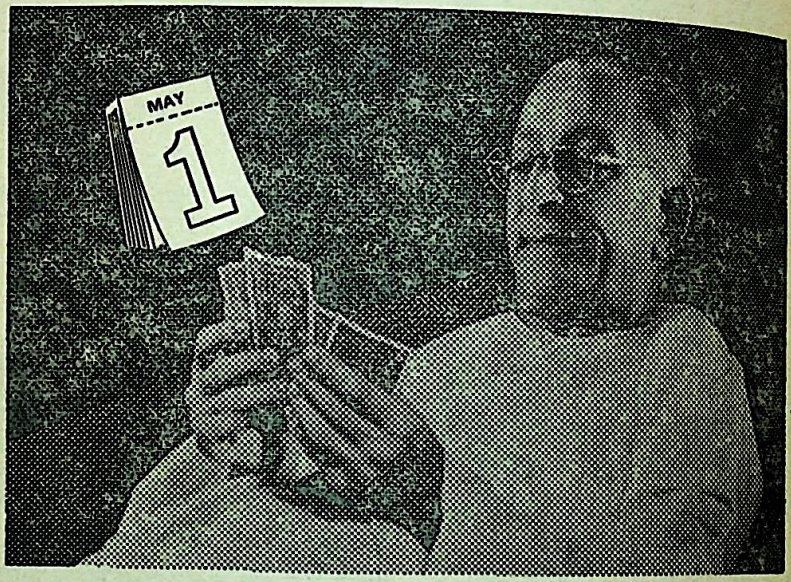

क्या आप

● उन बच्चों के माता-पिता हैं जो घर से बाहर रहकर स्कूल/कॉलेजों में पढ़ते हैं और जिन्हें मासिक खर्च की आवश्यकता होती है? ● अपने आश्रित माता-पिता या अन्य आश्रितों की सहायता करना चाहते हैं? ● रिटायरमेन्ट के बाद मिली रक़म को कहीं जमा करना चाहते हैं?

● मियादपूर्ण बीमा पॉलिसी की रकम का इस तरह उपयोग करना चाहते हैं कि आप का रुपया सुरक्षित रहे? तो इसके लिये बैंक ऑफ़ बड़ौदा में एक उचित प्लान है— मंथली इन्कम प्लान, जिसमें आपको नियमित मासिक आय मिलती रहती है.

मंथली इन्कम प्लान ब्याज-दर तालिका		
कम से कम १,००० रु. और इसके गुणक में जमा की गई रकम	२४/६० महीने ७% वार्षिक	६१ महीने और अधिक ७½% वार्षिक
रु.	रु.	रु.
१,०००	५.८३	६.०४
२,०००	११.६६	१२.०८
५,०००	२९.१६	३०.२०
७,०००	४०.८३	४२.२९
१०,०००	५८.३३	६०.४१

चिर समृद्धि का सोपान

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

(प्रमुख राष्ट्रीयकृत बैंक)

भारत तथा विदेशों –यू. के., ईस्ट अफ्रीका, मारीशस, फ़िजी द्वीपसमूह और गियाना में कुल मिलाकर ७०० से भी अधिक शाखायें.

Shilpi-BOB 14A/73 Hin.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन था यह एमिलकार कब्राल ? और कैसे हुई उसकी हत्या ?

पुर्तगालियों की निगाह में तो कब्राल समाजविरोधी था; छिपा साम्यवादी, विदेशों का दलाल, जो चोरी-छिपे हथियार लाकर 'पुर्तगाल के इस सागर-पार प्रदेश' की शांति भंग करता था। इसमें कोई शक नहीं कि पुर्तगाली दासता से मुक्ति के लिए कब्राल ने विदेशों से हथियार जुटाये थे; और यह भी सच है कि उसके संघटन को थोड़े-बहुत हथियार साम्यवादियों से भी मिले।

लेकिन साम्यवादी-गैरसाम्यवादी के स्याह-सफेद बाड़ों से अलग एमिलकार कब्राल राष्ट्रवादी था। अफ्रीका में बिलकुल नयी किस्म का राष्ट्रवादी, जो गोरे पुर्तगालियों से सशस्त्र संग्राम में जूझते हुए भी गोरों और पुर्तगालियों से घृणा नहीं करता था, जो एक छापामार संघटन का सेनानी होकर भी गुप्तता और लुका-छिपी को फिजूल मानता था; और जिसने अपने संघटन को निर्देश दिया था—'अपने देश की जनता से कुछ भी मत छिपाओ, उससे झूठ मत बोलो, अपनी असफलताओं पर परदा मत डालो और यह दावा न करो कि चुटकी बजाते ही विजयी हो जाओगे।'

सच ही एमिलकार कब्राल पेशेवर राजनीतिज्ञ नहीं था। पेशेवर छापामार भी नहीं था। बाईस-तेईस वर्ष पहले कब्राल पुर्तगाल के लिस्बन विश्वविद्यालय से कृषिशास्त्र में स्नातक हुआ था। खुद उसके शब्दों में 'मध्यवर्ग का होने के कारण सौभाग्य से मुझे

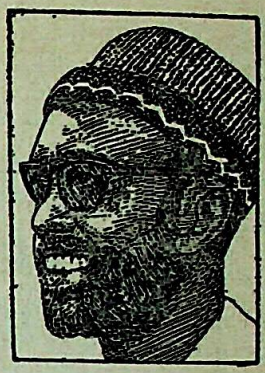

शहीद एमिलकार कब्राल
सेनानी, सिद्धांतकार, मार्गदर्शक

वजीफा मिल गया और मैं लिस्बन विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। वहीं मैंने अपने आपको दुबारा अफ्रीकी बनाया।'

अपने देश की आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन करके कब्राल १९५२ में लिस्बन से स्वदेश लौटा—राष्ट्रवादी आंदोलन का संघटन करने नहीं, उपनिवेशी शासन के कर्मचारी के रूप में जनगणना करने। और वह अपने देश की दुर्दशा देखकर स्तब्ध रह गया।

बाद में उसने लिखा—'अब मैंने अपनी आंखों से अपने देश की जनता का शोषण देखा। मैंने देखा कि मेरे देश के ग्रामवासियों को विवाह-मृत्यु आदि पर ही नहीं, पारंपरिक उत्सवों पर भी सरकार को कर देना पड़ता है; लेकिन देश के प्रशासन, राजनीति और अर्थव्यवस्था में उनके लिए अदना से अदना स्थान भी नहीं है।'

चौदह हजार वर्गमील के गिनी-बिसाऊ उपनिवेश में न तो कोई रेलमार्ग था और न ही कोई बड़ा कल-कारखाना। सबसे बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलगांव मिल्स का कपड़ा हर नागरिक के लिये, हर प्रसंग पर उपलब्ध है।

आकर्षक रंगों की पॉपलीन • बढ़िया किस्म की शर्टिंग • दफ्तर में पहनने के लिए कोटिंग्ज़ पेन्टों के लिए टिकाऊ ड्रिल्स • हर किस्म की धोतियां • सुन्दरियों की मनमोहक साड़ियां इस के अतिरिक्त लांग क्लॉथ और मारकीन्स

जब भी आप सूती वस्त्र खरीदें तो यह ट्रेडमार्क देख लें

पुलगांव
कॉटन मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारखाना राजधानी बिसाऊ में था, जिसमें कुल मिलाकर ३०० लोग काम करते थे। उपनिवेश का मुख्य व्यापार-धंधा था मूंगफली और ताड के तेल का पुर्तगाल को निर्यात और इस व्यापार पर पुर्तगाल से आकर बसे ४,००० गोरे कुंडली मारकर बैठे हुए थे। स्थानीय निवासियों के भरण-पोषण का साधन था (और आज भी है) खेती-बाड़ी या छिटपुट मजदूरी।

पढ़ाई-लिखाई की यह हालत कि स्थानीय निवासियों में से ९० प्रतिशत निरक्षर। १९६३ तक पूरे गिनी-बिसाऊ में सिर्फ एक हाइस्कूल था, और पांच-सात प्राइमरी स्कूल थे। हाल के वर्षों में वहां स्कूलों की संख्या बढ़ी है, मगर उसका कारण है छिटपुट कल्याण-कार्यों से अफ्रीकियों को भरमाने की पुर्तगाली नीति। यह अलग बात है कि अफ्रीकी इस भुलावे में नहीं फंसे। जिन जंगलों और गांवों की पुर्तगालियों ने उपेक्षा की, वे ही स्वातंत्र्य-योद्धाओं की गतिविधियों के दुर्भेद्य गढ़ बन गये।

किंतु गिनी-बिसाऊ के ग्रामों में राजनीतिक चेतना एकाएक ही नहीं आ गयी। इस चेतना का प्रसार किया वहां के राष्ट्रवादी दल ने। १९५६ में कब्राल के नेतृत्व में संघटित 'गिनी और केप वर्ड की स्वाधीनता के लिए अफ्रीकी दल' (रोमन अक्षरों में जिसका संक्षिप्त नाम है पी. ए. आई. जी. सी.) ने भी शुरू-शुरू में तो शहरों में हड़तालों और छिटपुट मजदूर-आंदोलनों को ही राष्ट्रवादी जागरण का माध्यम माना था।

लेकिन जब गोदी-कर्मचारियों की एक हड़ताल को कुचलने के लिए पुर्तगालियों ने ५० अफ्रीकी मजदूरों को गोलियों से भून डाला, तो कब्राल ने अपनी रणनीति बदल दी और कहा—'चलो गांव-जंगल-दलदल की ओर, बनाओ अपनी छापामार सेना और उपनिवेशवादियों से बात करो हथियारों की भाषा में, जिसे वे समझते हैं।'

गांव में बगावत की राह शहर की हड़ताल से सुगम रही हो, ऐसी बात नहीं। किसानों को छापामार क्रांति में सक्रिय साझीदार बनाना आसान नहीं था—विशेषतः पुर्तगालियों के दमन के बीच। १९५८ के बाद कुछ वर्षों तक तो कब्राल पड़ोसी देश गिनी (भूतपूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश) की राजधानी कोनाक्री में गिनी बिसाऊ से भागकर आये राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए स्कूल चलाता रहा।

कोई बहुत बड़ा अहाता या इमारत नहीं, शहर की चौहद्दी के बाहर दो कमरों की एक छोटी-सी कुटिया। यही थी कब्राल की राजनैतिक शाला। इस शाला में सैद्धांतिक चर्चाएं कम होती थीं, स्वदेश के लोगों से सीधा रिश्ता जोड़ने पर ज्यादा जोर रहता था। कभी-कभी तो ऐसा लगता, जैसे यह किसी नाटक का रिहर्सल-कक्ष है। बीच-बीच में निर्देशक का सरल, किंतु दृढ़ स्वर गूंज उठता—'नहीं, ऐसे नहीं! गांवों में बुजुर्गों के मन में हमदर्दी जगाने के लिए हमें अत्यंत विनम्र होना पड़ेगा। अपने तर्कों को देहाती मुहावरों में समझाना पड़ेगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियमित ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती हैं

दाँतों के डाक्टरों की राय में मसूढ़ों को मज़बूत और स्वस्थ रखने का सर्वोत्तम उपाय है उनकी नियमित मालिश...और दाँतों की सड़न से बचने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है दाँतों को हर रात और सवेरे व हर भोजन के बाद नियमित रूप से ब्रश करना ताकि सड़न पैदा करने वाले सभी अन्न-कण दाँतों में फँसे न रहें।

अपने बच्चे को दाँतों के डाक्टर द्वारा ख़ास तौर से बनाए हुए टूथपेस्ट फ़ोरहॅन्स से नियमित रूप से दाँतों को ब्रश करना और फ़ोरहॅन्स डबल एक्शन जूनियर टूथब्रश से मसूढ़ों की मालिश करना सिखाइए।

फ़ोरहॅन्स से दाँतों की देख-भाल सीखने में देर क्या, सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स

दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! "दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका* मुफ़्त प्राप्त करने के लिए २० पैसे के टिकट (डाक-ख़र्च के) इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००११, बम्बई-१

नाम _____ उम्र 06

पता _____

* कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: हिन्दी, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़

114 P-152 R-HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई चार वर्ष तक कब्राल यही सब करता रहा। १९६२ में उसका संघटन सशस्त्र संग्राम के लिए तैयार हो गया। दो वर्षों में पी. ए. आई. जी. सी. के छापामारों की संख्या तीन हजार को पार कर गयी। जब १९६७-६८ में छापामारों ने गिनी-बिसाऊ और केप वर्ड द्वीप-समूह के आधे से अधिक इलाके को मुक्त करा लिया, तो पुर्तगाल एकाएक हड़बड़ा उठा।

अब तक कब्राल के छापामार संघटन में सात हजार से अधिक नौजवान शामिल हो चुके थे। विमुक्त क्षेत्रों में पी. ए. आइ. जी. सी. ने अपना अलग प्रशासन भी आरंभ कर दिया। इस प्रशासन ने सबसे पहला काम हाथ में लिया गांवों में शिक्षा-प्रसार का। गांव-गांव में स्कूल खोले गये, जिनमें अक्षर-ज्ञान के साथ-साथ राजनीतिक विचारों और छापामार रणनीति का भी प्रशिक्षण दिया गया। की छापामार-सेना को बढ़ाने में इन स्कूलों से खासी सहायता मिली।

स्कूलों के साथ ही नयी न्याय-व्यवस्था भी कायम की गयी, जिससे विमुक्त क्षेत्र अराजक न हो जायें, और जब गिनी-बिसाऊ पूर्ण स्वतंत्र हो जाये, औपनिवेशिक परंपरा से मुक्त न्याय-प्रणाली लागू की जा सके।

जब गिनी-बिसाऊ में यह सब हो रहा था, पुर्तगाली भी निश्चय ही हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे हुए थे। आजादी की मांग का जवाब दमन से देने के आदी पुर्तगाली शासकों के पास छापामारों के बढ़ते हुए प्रभाव का एक ही इलाज था—और अधिक सैनिक, और अधिक शस्त्रास्त्र! सात हजार छापामारों को कुचलने के लिए पुर्तगाल ने तीस हजार से ज्यादा सैनिक गिनी-बिसाऊ भेजे, जो अमरीकी व जर्मन-शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित थे। पुर्तगाल को ये शस्त्रास्त्र 'नाटो' संधि के सदस्य के रूप में मिले थे।

गिनी-बिसाऊ पर अपने शिकंजे को ज्यों का त्यों बनाये रखने के लिए पुर्तगालियों ने स्थल, जल और वायु तीनों सेनाओं का उपयोग किया। सबसे अधिक उपयोग हुआ वायुसेना का। अमरीका से मिले एफ-८४ और बी-२६ बमवर्षकों से नापाम बम गिराकर गांव के गांव भून दिये गये।

ऐसी ही एक बमबारी के समय राष्ट्रवादी छापामारों के एक शिविर में मौजूद था बासिल डेविडसन। बरसों से अफ्रीकी जन-जागरण के साथ जुड़े हुए इस ब्रितानी पत्रकार ने बाद में लिखा-'उस समय कब्राल छापामारों की विमानभेदी तोपों के संचालक के पास खड़ा कुछ सलाह-मशविरा कर रहा था। ऊपर आकाश में मंडराते बमवर्षकों की ओर इशारा करके मैंने उससे पूछा—"इन बमवर्षकों और नापाम बमों के आगे आप लोग कैसे टिकेंगे?" कब्राल ने संयत स्वर में जवाब दिया—"आज से नहीं, महीनों से वे लोग ऐसे हमले कर रहे हैं; और हम टिके हुए हैं।" पास ही में एक स्वातंत्र्य-योद्धा बम का शिकार हुआ था और उसके साथी उसे उठाकर विमुक्त क्षेत्र के चिकित्सा-केंद्र की ओर ले जा रहे थे।'

बासिल डेविडसन ने गिनी-बिसाऊ के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विमुक्त क्षेत्रों का व्यापक दौरा किया। इन क्षेत्रों के प्रशासन और नागरिक व्यवस्था को स्वयं देखने-परखने के बाद उसने लिखा कि इन इलाकों के लोग पुर्तगाली व्यवस्था की तुलना में नयी व्यवस्था से संतुष्ट और खुश हैं। उदाहरण के तौर पर उसने कोमो इलाके के किसानों के साथ अपनी बातचीत का जिक्र किया है।

पुर्तगालियों के अधीन इन किसानों की कोई सुनवाई ही नहीं होती थी। खेतों की पूरी पैदावार गांव का एकमात्र पुर्तगाली व्यापारी मनचाहे भावों पर हथिया लिया करता था। अगर कोई किसान पैदावार को किसी दूसरे कस्बे में ले जाकर बेचने की हिमाकत करता, तो पुर्तगाली व्यापारी के कारिंदे उसे पीट-पीटकर अधमरा कर देते। कारिंदों का काम था पुर्तगाली व्यापारी के गोदामों और स्थानीय लड़कियों से भरे उसके हरम की हिफाजत करना।

गिनी-बिसाऊ के ग्रामीण क्षेत्रों में छापा-मारों के प्रभाव को रोकने में असमर्थ होकर पुर्तगाल ने वहां एक के बाद दूसरा प्रशासक नियुक्त किया। अंतिम प्रशासक था जनरल एंटोनियो स्पिनोला, जो भूतपूर्व तानाशाह सालाजार का रिश्तेदार था और जिसने द्वितीय महायुद्ध के दौरान नाजी जर्मनी के एक टैंक प्रशिक्षण-केंद्र में प्रशिक्षण पाया था।

जनरल स्पिनोला ने राष्ट्रवादियों के विरुद्ध दोहरी रणनीति अपनायी। उसने एक ओर तो राष्ट्रवादियों के विरुद्ध कार्र-वाइयों को तीव्र बनाया, दूसरी ओर आर्थिक सुधारों का ढकोसला भी रचा। लेकिन जनरल स्पिनोला को सफलता मिली बस एक काम में—एमिलकार कब्राल की हत्या कराने में। उसकी हत्या के लिए कुछ भाड़े के टट्टू स्वातंत्र्य-सेना में भर्ती कराये गये। इन भाड़ैतों ने कब्राल के अनुशासन से नाराज कुछ दूसरे लोगों को भी अपने साथ मिला लिया और २० जनवरी ७३ की शाम को जब कब्राल पड़ोसी देश गिनी की राजधानी कोनाक्री में एक विदेशी राजदूत से मिलकर वापस अपने अड्डे पर आया, उसकी गाड़ी रोककर उसे गोली मार दी। मगर जब वे कोनाक्री से भागकर गिनी-बिसाऊ के पुर्त-गाली इलाके में पहुंचने की कोशिश कर रहे थे कि पी. ए. आइ. जी. सी. के सैनिकों ने उन्हें बंदी बना लिया।

कब्राल शहीद हो गया। किंतु स्वातंत्र्य-संग्राम को छिन्न-भिन्न करने का पुर्तगालियों का स्वप्न पूरा नहीं हुआ। अप्रैल के आरंभ में स्वातंत्र्य-सैनिक पुर्तगालियों के बमवर्षकों को भूमि से वायु में मार करने वाले प्रक्षे-पास्त्रों से ध्वस्त करने लगे। मुक्ति-संग्राम और तीव्र हो गया। अब तो गिनी-बिसाऊ में पुर्तगाल का शासन सिर्फ शहरों तक सीमित हो गया है। वह दिन भी दूर नहीं, जब ये नगर भी मुक्त हो जायेंगे।

गिनी-बिसाऊ की स्वतंत्रता का प्रभाव स्वाभाविक ही मोजांबीक और अंगोला पर भी पड़ेगा। इस बीच समाचार मिले हैं कि इन दोनों पुर्तगाली उपनिवेशों के छापामार भी अपना संघर्ष उग्र कर रहे हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

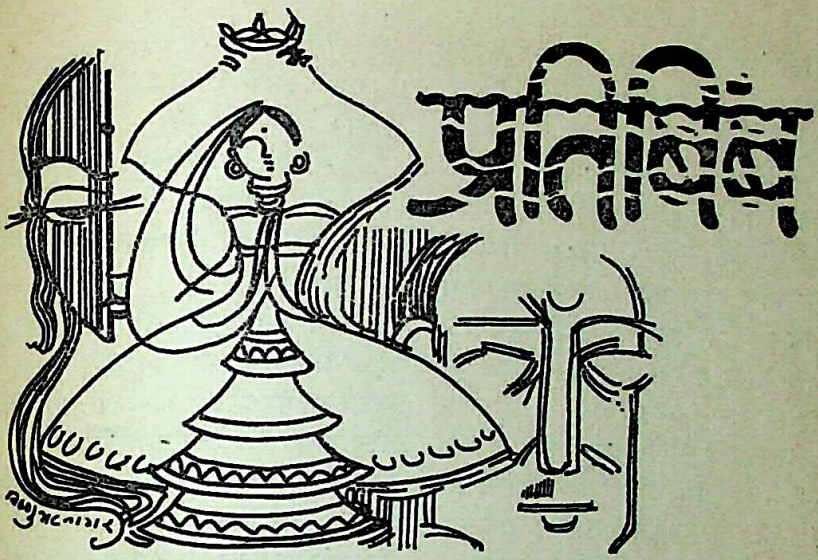

केशव दुबे की हिन्दी कहानी

वत्सला ने एक बार फिर गहरी नजर साबुन लगे भीगे कपड़ों पर डाली। बस, ये आठ-दस तो हैं ही, अभी धोकर डाल दे तो फुरसत मिले। कमर में साड़ी का पल्ला खोंसकर उकड़ूं बैठ गयी; परंतु निगाह बालटी, नल की पतली धार और फिर दीवार पर से फिसलती हुई खुले दरवाजे पर जा टिकी। अभी उनके आने में थोड़ी देर है। यहां से निबट जाये, तो आराम से बैठेगी।

'पर आराम कहां?' पूरी ताकत से हाथ की मुंगरी झाग में लिपटी चादर पर दे मारी। साबुन के ढेर-सारे बुलबुले छिटक-कर फूट गये।

'फुरसत तो मरे बाद ही मिल पायेगी।' और उसकी सारी खीज, आक्रोश और विवशता एक 'फटाक' की आवाज के साथ चादर पर बरस गयी। चादर को साफ पानी में डालकर, सीधी हुई थी कि अचानक वह चौंक पड़ी।

दौड़कर आती हुई बेबी उससे एकदम झूमकर लिपट गयी और उसके गले में दोनों बांहें डाल अपना सारा भार उस पर छोड़ दिया।

'अरे, अरे कइ ऽऽ सी छोकरी है रे..... चल सीधी तो खड़ी हो! क्या बात है?'

'मम्मी, मम्मी .....' मारे खुशी के बेबी कुछ बोल नहीं पा रही थी। उसने बढ़कर मां के कान में अपने ओंठ छुआ दिये।

वत्सला ने नकली क्रोध से कहा—'हट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पगली ! इतनी बड़ी ऊंट-सी लड़की—और ऐसा लाड़ ! साफ - साफ बोल तो, क्या हुआ है ?'

वत्सला अब बालटी से चादर निकाल चुकी थी। उसका एक छोर दबाकर निचोड़ती हुई बेबी बोली — 'मेरी अच्छी मम्मी इस साल स्कूल की सोशल-गेदरिंग में मैं डांस करूंगी। सिर्फ पांच लड़कियां चुनी हैं टीचरजी ने, एक मैं हूं उनमें। मम्मी, मुझे वही दीपनृत्य करना है।'

उत्साह के अतिरेक से बेबी का गला अवरुद्ध हो रहा था, फिर भी वह चादर निचोड़ती जा रही थी। दूसरा छोर न जाने कब वत्सला के हाथ से छूटकर गिर चुका था।

'ऐं!' वत्सला अवाक्-सी खड़ी रह गयी। उसने जोर से बेबी को बांहों में भींच लिया। साड़ी के छोर से मुंह पर छिटके साबुन के झाग को पोंछते-पोंछते वह अतीत की स्मृति में बहती चली गयी। उम्र के साथ घिसटता वर्तमान, एक क्षण में न जाने किस खिड़की से अपने बचपन को झांकने लगा।

.....बारह-तेरह साल की वत्सला। स्टेज पर दोनों हाथों में छोटे-छोटे दीप संजोये, संगीत की धीमी धुन के साथ नृत्य कर रही है। सैकड़ों आंखें उस पर केंद्रित हैं। उसकी सारी चेतना थिरकते पांवों और सधे हाथों में सिमट आयी है। ..... फिर परदा गिरता है.....तालियों की गड़गड़ाहट..... शाबाश बच्ची, वेरी-गुड वत्सला ! ..... माथे का पसीना पोंछती लड़की.....प्रथम पुरस्कार लेती वत्सला।.....

जूतों की निरंतर पास आती खट्.....खट् उसे एक झटके से वर्तमान में खींच लायी - 'वे आ गये।'

उन्होंने आते ही चीखना शुरू कर दिया- 'वाह ! अभी तक कपड़े ही धुल रहे हैं! खाना कब बनेगा ? मैं पूछता हूं, यह घर है या सराय ?'

बेबी ने अपनी दुबली-पतली काया अपनी मां की ओट में छिपा ली। दांत से नाखून कुतरते हुए दुबकी हुई वह अपने पिता का चिरपरिचित रूप देखती रही।

'जी, बस दस मिनिट लगेंगे। मगर आप तो .....' वत्सला ने पूरी ताकत से जीभ दांतों तले दबा ली। यह पूछने की हिम्मत नहीं पड़ी कि आप तो शाम को आने को कह गये थे।.....जूतों की आवाज अब दूर होती जा रही थी।

xxx

केवल दस दिन बचे थे बेबी के 'प्रोग्राम' में। 'वे' रात नौ बजे तक खाना खाकर कहीं घूमने निकल जाते। आठ बजे से ही खर्राटे भरने वाली बेबी अब जागती रहती। वत्सला सब दरवाजे बंद करके और खिड़कियों का मोटा परदा ठीक करके बेबी को नृत्य सिखाती। एक-एक अंग-संचालन, भाव, मुद्रा, ताल और लय बार-बार दोहराती। खीजकर कह उठती—'बेबी, तू क्या करेगी? तेरे दिमाग में तो गोबर भरा है, ठीक से सीखती ही नहीं।' बेबी का प्रत्युत्तर तैयार रहता — 'मम्मी, स्कूल में संगीत वाली बहनजी तो कुछ नहीं कहतीं, मगर तुम हर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दम डांटती रहती हो मुझे !'

वत्सला क्या माथा ठोक ले? 'बेबी, तेरी बहनजी को क्या मालूम ! अरे देखो तो, यह मेरी छोकरी डान्स करेगी स्टेज पर – इसे तो पैर रखने तक का शऊर नहीं ! हाथ-पांव फटकारती है बस ! वत्सला की नाक कटायेगी क्या ?' बेबी रूठ जाती। फिर मान - मनौवल के एक दौर की इति खिल-खिलाहट पर होती।

समय कम रह गया था। पांच ...चार ... दो ... एक, बस प्रोग्राम का दिन भी आ गया। इतने दिन वत्सला कितने सुहाने क्षणों में जी ली, यह आज अनुभव हो रहा था।

नयी सिगड़ी बनाने के लिए ईंट के टुकड़े तोड़ती वत्सला ने मुग्ध-भाव से बेबी का हाथ थाम लिया –'नहीं-नहीं बेटी, तू कुछ मत कर आज। थक जायेगी। और देख... सब तैयार है ना ? कपड़े वही वाले ... देख तू वहां भीड़ की तरफ तो देखना ही मत, किसी से भी आंख मत मिलाना, और जरा ठहरकर, पहले म्यूजिक की रिद्म–समझती है ना लय – पकड़ लेना ...। हाथ कितना ऊपर ले जायेगी ? ठीक.....तेज लाइट की तरफ मत देखना, और अंत में नमस्कार ... इस तरह हाथ जोड़कर।... दौड़कर मत भाग आना, पहले परदा गिरने देना।'

बेबी ने कसकर उसका हाथ पकड़ लिया–'मम्मी, मुझे तो डर लगता है, स्टेज पर कैसा होगा ?'

'और लो, इस पगली की सुनो ... डर लगता है ! मैं स्टेज के ठीक सामने बैठूंगी ...फ्रंट सीट पर, और तेरे पापा भी ! ..... ऐ छोकरी, तेरी मम्मी को जिले-भर में पहला इनाम मिला था। तू स्टेज से क्यों डरेगी भला ?' दो वात्सल्यपूर्ण आंखें अपना सारा आत्मविश्वास, दो झपकती हुई सहमी आंखों में उड़ेलने लगीं।

शाम के छः बजे बेबी चली गयी। खाना बनाकर वत्सला बैठी थी पति की प्रतीक्षा में। आज सवेरे ही कह दिया था कि जल्दी घर आना। मगर वे जाते-जाते कह गये थे– 'बच्चों की नौटंकी में अपना क्या काम ? ...मगर ठीक है, कहती हो तो आ जाऊंगा।'

घड़ी के कांटे खिसकते जा रहे थे। वत्सला का कलेजा मुंह को आ रहा था। आज क्या हो गया ? आखिर सवा आठ बजे वे दो-तीन दोस्तों के साथ आते दिखाई दिये। वह मन मसोसकर भीतर घुस गयी।

'सुनो जी, जरा चाय बनाना।'

उसने ओंठ काट लिये। उधर ठहाकों गप्पों और लंबी खुसफुसाहट का सिलसिला आरंभ हो गया सब उठकर गये, तब तक नौ बज चुके थे।

नर्तकी
मेक्सिकी शिल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये!

चाँदनी

साबुन

निर्माता- बरार ऑयल इंडस्ट्रीज. अकोला.(महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वत्सला ने साहस बटोरकर कहा – 'चलिये, जल्दी खाना खा लें, फिर वेबी का...'

आसमान टूट पड़ा – 'हां-हां, इसीलिए मरी जा रही थी! घर तो नरक हो गया है। दफ्तर से थका-हारा आया नहीं कि हुक्म शुरू। क्या वाहियात बात है। उस छोकरी का फुदकना देखना इतना जरूरी है?'

बांध टूट चुका था। वत्सला चीख पड़ी– 'नहीं! दोस्तों के साथ मटरगश्ती करना जरूरी है। हे भगवान! मुझे कब छुटकारा मिलेगा?...' वह साड़ी का छोर मुंह में ठूंसे रुलाई रोकने का असफल प्रयत्न कर रही थी। पति ने क्रोध से उसकी ओर देखा और टेबल उलट दी। कप-प्लेट, केतली, गिलास सब गिरकर फूट गये। वत्सला की हिचकी बंध गयी।

आखिर समझौता हुआ। तब तक दस बज चुके थे। मुंह पर पानी के छींटे मारकर आंसुओं के खारेपन की अनुभूति को मिटाती वत्सला शीघ्र तैयार हो गयी। पतिदेव ने खाना खाया।

स्कूल पहुंचने के लिए उन्होंने टैक्सी की। वत्सला अपने देवी-देवता से मना रही थी कि प्रोग्राम खत्म न हुआ हो। स्कूल पहुंचते ही ही उसने घड़ी पर निगाह डाली। सामने इमारत जगमगा रही थी। ग्राउंड पर स्टेज बना था और सजावट ने पूरे वातावरण को एक नया ही रंग दे दिया था। टैक्सी ठीक गेट पर जाकर रुकी। वत्सला पति से दो कदम आगे बढ़ चली।

उसके पांव अचानक थम गये। तभी परदा

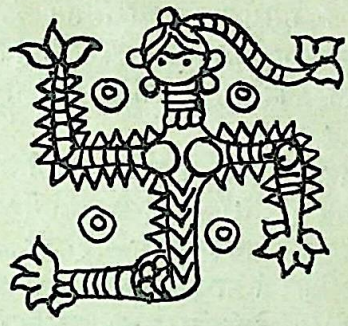

रेखांकन : सत्यकाम राहुल

गिर गया। तेज चमकती रोशनी ने एकदम सारे ग्राउंड को नहला दिया। लोग उठकर खड़े हो गये और निकलने लगे। अंतिम पंक्ति की कुर्सी थामे, वत्सला फटी-फटी आंखों से स्टेज की ओर देखने लगी। उसकी दृष्टि गहरे हरे परदे से टकराकर न जाने कहां खो गयी थी। पति का हाथ उसके कंधे पर पड़ा – 'चलो अब, लौट चलें।' दो बूंद आंसू वहीं टपक गये। वत्सला मुड़ गयी।

लौटने वाली स्कूल-बस के पास दूसरी लड़कियों के साथ खड़ी वेबी ने उसे देखा। वह चीख पड़ी–'मम्मी... मम्मी...' और पापा के सारे आतंक की अवहेलना करती उससे चिपट गयी। छलकती खुशी ने उसके बोल छीन लिये थे।

थोड़े समय के बाद वह अपने को संभालती हुई बोली–'देखा मेरा दीपनृत्य तुमने, मम्मी? कितनी तालियां बजी थीं! प्रिंसिपल ने स्टेज पर आकर मुझे शाबाशी दी – इनाम दिया। वाह मम्मी, कमाल कर दिया, इतना अच्छा नाच सिखाया तुमने!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर बेबी ने गहरी सांस खींची।

'मगर मम्मी, तुम बैठी कहां थीं? दूसरी लाइन में कोने वाली कुर्सी पर ..... शायद .....है ना?'

इतनी रोशनी में वत्सला अपने आंसू छिपाये तो कैसे? मुंह फेरकर गले में अटकता थूक निगलकर बोली – 'हां, हां,..... मेरी बेटी! मैं और.....तुम्हारे पापा वहीं बैठे थे। सामने की सीट पर जगह नहीं मिली।'

और फिर संभलकर बेबी की पीठ ठोंकते हुए बोली –'वाह भाई वाह! कमाल किया तुमने! कितना बढ़िया नृत्य था तुम्हारा! सब देखने वाले तारीफ़ कर रहे थे। आखिर मेरी बेटी है ना तू.....वत्सला की बेटी.....'

गले में कुछ अटक रहा था। रुलाई दबाने के प्रयत्न में वह भटक गयी।

'.....और बेबी, तुम्हारे पापा तो इतने खुश हुए ..... इतने खुश हुए ..... इतने खुश.....'

घर लौटकर, फूटे हुए कप-प्लेटों के टुकड़े समेटने में वत्सला इतनी व्यस्त हो गयी कि बेबी को कहना पड़ा –'मम्मी, मुझे खाना नहीं दोगी?'

प्रत्येक घिसटते हुए दिन की तरह आज का दिन भी कट चुका था। बेबी में कब तक वह अपना प्रतिबिंब देखती!

–सतपुड़ा थर्मल प्लांट, सारनी,
जि. बैतूल, म. प्र.

बचपन में बात-बात पर मेरे अहंकार को चोट पहुंचती थी और मैं क्रोध में आकर बहुतों से झगड़ पड़ता था। पिताजी पुरातन मान्यताओं और विचारों के व्यक्ति रहे हैं। दूर से ही मुझ पर निगाह रखते थे और मेरे चचेरे भाई कृष्णमोहन के प्रति अधिक वात्सल्य-भाव। प्राय: मैं भाई से किसी न किसी बात पर मारपीट कर बैठता। पिताजी बहुत डांटते और मेरे स्वभाव से दु:खी भी रहते। एक दिन मैंने भाई की जमकर पिटाई की। पिताजी ने मुझे अपने कमरे में बुलवाया। किसी तरह डरते हुए उनके सामने गया। इस बार उन्होंने डांटे बिना यह उर्दू की कविता पढ़ी :

मिटा दे अपनी हस्ती को गर कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है॥

इसका अर्थ मुझे भली भांति समझाकर अश्रुपूरित नेत्रों से देखते पिताजी बोले - 'बेटा, क्या तुम .....' और इसके बाद कुछ बोल ही नहीं पाये। उनकी वेदना ने मेरे अंतर्मन को छू लिया।

तब से धीरे-धीरे मुझमें सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती गयी। अब तो 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' को व्यवहार में उतारने की सदा चेष्टा करता हूं। और सभी वर्ग के लोगों से स्नेह पाकर अनुपम सुख की अनुभूति करता हूं।

–राधामोहन श्रीवास्तव, बड़हलगंज, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अद्भुत आविष्कारक

सुहर्गेन ओस्टरमेयर

सन १८४९'। जर्मनी ने डेन्मार्क के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा था और उसकी चिंता का कारण बना हुआ था एक पुल, जो डेन्मार्क के अधिकार में था। उस पुल को नष्ट किया जा सके, तो जर्मनी की जीत सुनिश्चित थी। लेकिन पुल की सुरक्षा के लिए तो बड़े-बड़े युद्धपोत तैनात थे।

तभी जर्मन तोपखाने से संबंधित एक युवक ने पुल नष्ट करने की अपनी योजना अधिकारियों के संमुख रखी। योजना थी, पानी के अंदर ही अंदर, सबकी नजरों से छिपकर, पुल के एक खंभे तक पहुंचना और बारूद के जरिये उसे उड़ा देना।

असंभव! कैसी बेवकूफी-भरी कल्पना है! ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई इंसान पानी के भीतर ही भीतर उतनी दूर की यात्रा कर डाले और वह भी बारूद साथ में लेकर!

अधिकारियों ने इस बारे में सोचना भी वक्त बरबाद करना समझा और निराश युवक चुप्पी लगा गया। किंतु उसकी कल्पना मूर्खतापूर्ण नहीं थी, यह उसने बाद में साबित कर दिखाया संसार की सबसे पहली पनडुब्बी का आविष्कार करके। वह युवक था, आज से १५१ वर्ष पूर्व डेन्यूब नदी के तट पर डिलिंगन (जर्मनी) में जनमा विल्हेल्म बॉर।

आकाश में उड़ने के समान ही पानी के अंदर यात्रा करने की लालसा भी मानव-मन में आदिकाल से रही है। शताब्दी पूर्व सुप्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार जूल वर्न ने ऐसी ही एक यात्रा का बड़ा रोचक खाका खींचा था और उसमें प्रयुक्त वाहन का नाम 'नॉटिलस' रखा था।

विल्हेल्म बॉर

मृत्यु-पश्चात् सफल

नॉटिलस एक प्रकार की सीप को कहते हैं और सन १९५५ में अमरीकाने परमाणुशक्ति से चालित जो पहली पनडुब्बी छोड़ी, उसका नाम भी उसने 'नॉटिलस' रखा। १९५८ में इस पनडुब्बी ने उत्तर ध्रुव के बर्फ-विस्तार के नीचे से बेरिंग डमरूमध्य से ग्रीनलैंड तक २,००० मील की दूरी तय की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका भविष्य फिर से जगमगा उठा.

एक साल पहले वह घोर अंधकार में डूब रहा था. उसकी आंख के भीतर 'रेटिना' की तुरंत शल्यक्रिया करने के लिए 'लेसर बीम' की ज़रूरत थी, जो भारत में उपलब्ध ही नहीं थी. इस तरह एक उज्ज्वल भविष्य ज़रा से नाजुक धागे में लटका था.

हमसे सम्पर्क किया गया और हमने ५ महाद्वीपों में 'लेसर बीम' की खोज करायी. क्षण-क्षण बेचैनी में बीत रहा था और उधर एयर-इंडिया के कर्मचारी संसार भर के अस्पतालों में उसकी तलाश कर रहे थे. बेचैनी तब मिटी जब अंत में उक्त यंत्र मैनहेम में मिल गया. हम बच्चे को अपने विमान से फ्रैंकफ़र्ट ले गये और वहां से दूसरी एयरलाइन के सहयोग से वह मैनहेम पहुंचा.

आज हमें कितनी ख़ुशी होती है उस बच्चे को देखकर जब वह तितली का पीछा करता है, फूलों के गुच्छे तोड़ता है. चमकीली और सुंदर चीज़ों को प्यार करता है. सचमुच, हमें अपने काम पर नाज़ होता है. हमारा काम ही है लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना, और यहां तक कि कभी-कभी तो हम अंधकार से प्रकाश में ले जाते हैं.

किसी भी परिस्थिति में आपकी सहायता के लिए हमारे पास संचार सुविधाओं की समुचित व्यवस्था है. संसार भर में हमारे १२९ कार्यालय और ३४ मंज़िलें हैं. इसलिए संसार के कोने-कोने में आपके दोस्त हैं. ऐसे दोस्त, जो ज़रूरत पड़ने पर आपकी हर तरह से मदद करने के लिए हाज़िर हैं. एक बार सेवा का मौका दीजिए और तब आप हमेशा ही एयर-इंडिया से सफ़र करना चाहेंगे.

AI 6130 (A)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और इस प्रकार परोक्ष रूप से जूल वर्न को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गत दो विश्वयुद्धों में पनडुब्बी ने अपनी महत्ता सारी दुनिया से मनवा ली है और दूसरे महायुद्ध के बाद पानी के भीतर यात्रा करने और अगाध सागर-तल के चप्पे-चप्पे को छान मारने का प्रयास किया जा रहा है। अब तो सागर-तल पर नगर बसाने और उसके प्राकृतिक साधनों का भरपूर उपयोग करने की भी बातें सोची जा रही हैं। पानी के अंदर अनुसंधान-केंद्र का निर्माण करने की तो तैयारियां आरंभ भी हो गयी हैं, जहां विज्ञानी हफ्तों अथवा महीनों रहकर खोज-कार्य कर सकें।

जाक पिकार्ड की 'ट्रीस्टे' नामक पनडुब्बी मेरियाना द्वीपसमूह के इलाके में ३६,१०० फुट की गहराई तक गोते लगा चुकी है, उनकी 'मेसोस्कोप' नामक यात्री पनडुब्बी ३,४४५ फुट तक गोते लगा सकती है और उसमें एक साथ चालीस आदमी यात्रा कर सकते हैं।

कहते हैं कि सिकंदर महान भी एक बार सागर-तल में उतरा था और इसके लिए उसने गोता लगाने की घंटी (डाइविंग बेल) का सहारा लिया था, जिसका ज्ञान प्राचीन यूनानियों को था। सन १६२४ में हालैंड के कार्नेलियस ड्रेबेल ने टेम्स नदी में १८ फुट की गहराई तक गोता लगाने में सफलता प्राप्त की थी। सन १७७६ में अमरीका के स्वातंत्र्य-युद्ध में सार्जेंट ली ने पानी के भीतर ही भीतर एक ब्रिटिश युद्धपोत तक पहुंचकर उसे बारूद से नष्ट करने की कोशिश की थी।

हां, तो हम बात कर रहे थे विल्हेल्म बॉर की। सन १८४९ के जर्मनी-डेन्मार्क युद्ध में अपने अधिकारियों की अवज्ञा के बावजूद उसने इस दिशा में सोचना बंद नहीं किया। अपनी कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए कटिबद्ध था वह। बाद में सेना में ही उसे कुछ ऐसे अधिकारियों का साथ मिला, जिन्होंने उसकी कल्पना की हंसी नहीं उड़ायी, बल्कि पनडुब्बी का माडल तैयार करने के लिए उसे आवश्यक रकम दिलवायी।

विल्हेल्म ने समुद्री जीव सील के गोता लगाने के ढंग का कुछ समय तक अध्ययन किया था। उसी अध्ययन को आधार बना-

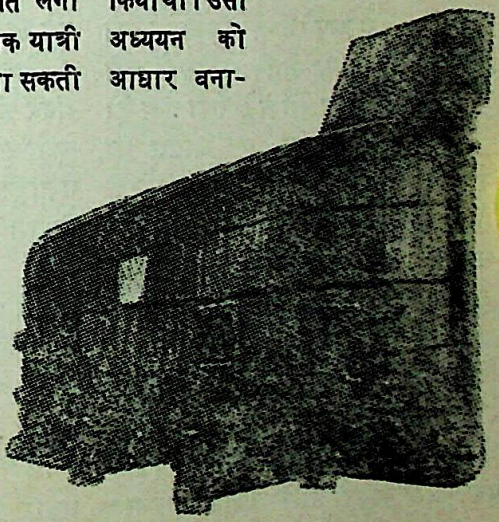

बॉर की पनडुब्बी (जहाजरानी संग्रहालय, बर्लिन)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उसन अपनी पनडुब्बी का माडल तैयार किया, जो सील की आकृति का था। माडल तांबे का बना था और उसका नोदक (प्रोपेलर) एक क्लाकवर्क मोटर द्वारा संचालित होता था।

जर्मनी के कील बंदरगाह में इस पनडुब्बी के सफलतापूर्वक परीक्षण किये गये। इसमें दो कक्ष (चेंबर) थे, जिनमें आवश्यकतानुसार पानी भरा जा सकता था और पंप के जरिये पानी निकाला जा सकता था। यह लघु पनडुब्बी पानी में गोते लगा सकती थी और सतह पर आ सकती थी। आधुनिक पनडुब्बी से इसका मुख्य अंतर था उसके इंजिन में।

लेकिन माडल की सफलता के बावजूद विल्हेल्म को पूरे आकार की पनडुब्बी बनाने का अवसर नहीं दिया गया। बल्कि आदेश मिला कि माडल अपने उच्च अधिकारियों को सौंप दो। दलील यह थी कि माडल में लगी सामग्री सरकार के पैसे से खरीदी गयी है।

विल्हेल्म झुंझलाया, पर आदेश का पालन तो होना ही था। उसने भी सरकारी नियम का अक्षरशः पालन किया। तैयार माडल को नष्ट करके उसकी सारी सामग्री अधिकारियों को सौंप दी। इसकी सजा भी उसे मिली। उसका तबादला कहीं और कर दिया गया। लेकिन वहां भी उसने अपनी योजना के समर्थक ढूंढ़ निकाले। चंदे के जरिये आवश्यक रकम जमा की गयी और बड़े पैमाने पर पहली पनडुब्बी का निर्माण आरंभ हुआ।

किंतु रकम इतनी नहीं थी कि विल्हेल्म पूरी तरह अपनी कल्पना के अनुरूप पनडुब्बी बना सके। अतः खर्च में कमी के खयाल से अनिच्छापूर्वक उसने नक्शे में कुछ संशोधन किये। पनडुब्बी का ऊपरी आवरण अपेक्षाकृत पतली चद्दर का रखा गया और नोदक-संचालन के लिए पांव-चक्की की व्यवस्था की गयी। इस काम के लिए दो भारी-भरकम नाविक चुने गये, जिन्होंने शौकिया यह काम करना स्वीकार किया।

सन १८५१ की फरवरी में यह पनडुब्बी कील बंदरगाह से कुछ दूर गोता लगाने के लिए तैयार हो गयी और सागर-तल की ओर अग्रसर हुई। कुछ दूर की गहराई तक तो वह बिलकुल ठीक चली; लेकिन इसके बाद गड़बड़ा गयी। पानी के दबाव से आवरण की पतली दीवार मुड़ गयी। पांव-चक्की का चलना बंद हो गया। कुछ पेंच ढीले हो गये और पानी अंदर आने लगा।

विल्हेल्म और उसके साथ के दोनों नाविक अंदर फंसे रह गये। उनके बचाव की कोई सूरत नजर नहीं आती थी। बाहर के लोगों ने हारकर उनके बचाव का यत्न भी बंद कर दिया। उन तीनों की जल-समाधि सुनिश्चित मान ली गयी। किंतु सात घंटों की भीषण यंत्रणा के बाद विल्हेल्म अपने दोनों सहायकों के साथ उस जलीय नरक से छूटकर ऊपर आने में सफल हो ही गया।

यह बात किसी भी निष्पक्ष पर्यवेक्षक की समझ में आसानी से आ सकती थी कि थोड़े सुधार से ही विल्हेल्म की कल्पना सचमुच साकार की जा सकती है। लेकिन जर्मनी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेनाधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। उन्हें अब भी यह सब हवाई कल्पना ही लगती थी।

विल्हेल्म तब आस्ट्रिया चला गया; किंतु वहां भी उसे सफलता नहीं मिली। प्रोत्साहन की आशा में वह इंग्लैंड आया; पर वहां भी उम्मीद पूरी नहीं हुई। वहां कुछ लोगों ने दिलचस्पी दिखायी तो सही मगर उसका नक्शा हथिया लेने में।

मगर सफलता विल्हेल्म का इंतजार कर रही थी रूस में। सन १८५६ में उसके द्वारा निर्मित पनडुब्बी 'सी डेविल' पानी में उतारी गयी और उसने १३३ बार पानी के भीतर सफलतापूर्वक यात्राएं कीं। लेकिन अगले वर्ष अपनी १३४वीं यात्रा में उसने जो डुबकी लगायी तो फिर बाहर नहीं आयी। पनडुब्बी के साथ उसके १४ चालकों की भी जल-समाधि हो गयी। पिछली पनडुब्बियों की तरह यह पनडुब्बी भी पांव-चक्की से चलती थी।

बाद में रूस के जार ने विल्हेल्म की राह में रोड़े अटकाने शुरू किये और खिन्न मन से वह बवेरिया लौट आया। रूस में उसने जो थोड़े पैसे बचाये थे, उन्हीं से काम चलाता रहा। बाद में सम्राट् लुडविग ने उसकी पेंशन बांध दी।

अंतिम बार वह चर्चा का विषय १८६० के बाद बना, जब डाक ढोने वाला स्टीमर 'लुडविग' दुर्घटना का शिकार होकर सागर की गोद में जा पहुंचा और उसे जलगर्भ से उबारने में विल्हेल्म की सूझ-बूझ काम आयी।

जो लोग विल्हेल्म के आविष्कार से सबसे ज्यादा लाभान्वित हुए, उन्होंने उसका आभार मानना तो दूर, उसके नाम की चर्चा भी नहीं की।

विल्हेल्म अपने आविष्कार को लेकर यूरोप में लगभग सर्वत्र घूमा था और पनडुब्बी-निर्माण की उसकी प्रणाली का जोरदार प्रचार हो गया था। अमरीका के गृह-युद्ध में विल्हेल्म द्वारा निरूपित ढंग से ही निर्मित एक पनडुब्बी ने एक बड़े युद्धपोत को डुबोया था और इस प्रयास में वह स्वयं भी नष्ट हो गयी थी। यह पनडुब्बी भी मानव-संचालित थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में कहीं जाकर पानी के अंदर चार्ज-बैटरियों के उपयोग और पानी के बाहर डीजल-शक्ति के उपयोग के साथ-साथ बैटरियों को पुनः चार्ज करने में इंसान पूर्णतः सफल हो पाया। लेकिन तब तक विल्हेल्म बॉर इस लोक में नहीं रहा था। कील बंदरगाह के पास डूबी उसकी पनडुब्बी को १८८७ में सागर-तल से ऊपर लाया गया; किंतु विल्हेल्म को तो यह भी देखना बदा नहीं था। सिर्फ ५४ वर्ष की आयु में १८७६ को १८ जून को मौत ने उसे अपने आगोश में ले लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह टकटकी बांधे खड़ा था। ऊंची-ऊंची डालों पर कोंपलें निकल आयी थीं। और बरगद की डालें आकाश की ओर जैसे शर्त बदकर उभर रही थीं। पत्तों से छतरी बनकर तन गयी थी और छतरी तले थे धरती में धंसे हुए दालान-सा बनाते खंभे।

नंगी कोंपलों वाले बरगद के पास पहुंचकर स्मृति में कुछ हलचल मच गयी थी। हां, क्या कहते थे इसे ? भला-सा नाम था। पर यह वैसा ही पहाड़ की तरह डटा हुआ है — इसके तले आंख-मिचौनी खेला करते थे, इसकी जटाओं से लटका करते थे, पैंग लेते थे, मियां के बच्चे ऊपर चढ़कर चिड़ियों के घोंसले उतारा करते थे। पर एक बार पता नहीं, क्या हुआ था। बड़ा डर लगा था मुझे ! छाती में जैसे कोई हथौड़ा मार रहा हो। फिर तीन रोज तक बुखार रहा।

हां, मियां के लड़के कहते थे, तोती ने ऊपर अंडे दिये हैं। तोते का बच्चा पकड़ने के लिए हम दोपहर में ऊपर चढ़े थे, पर वह हाथ नहीं आता था। संतू को पता नहीं किसने खबर दी कि तोती ने घोंसले में अंडे दिये हैं। दोनों भाई जल्दी से ऊपरी डालों पर चढ़ गये। ऊपर घोंसले में लपलप जिह्वाएं निकाले दो नाग देखकर संतू और कश्मीरू के होश उड़ गये थे। डर से मेरे तो दांत बजने लगे थे। अच्छी तरह मुझे याद है—

ओम गोस्वामी

चित्र : कमलाक्ष शर्मा

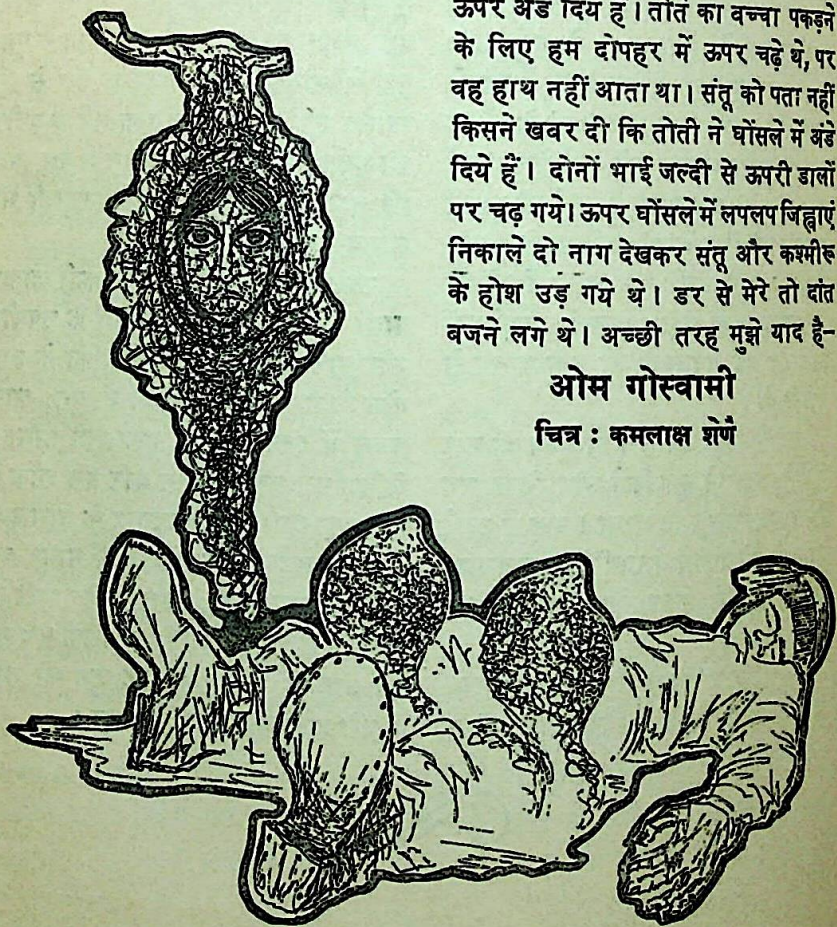

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोंसला

जैसे कल की बात हो।

तीन दिन के उस ज्वर के बाद जैसे आज ही उठा हूं। बाहर जाने पर किसी बात की याद नहीं रहती; पर वे बातें याद हैं। संतू और कश्मीरू की याद है। भूल भी कैसे सकता हूं उन्हें? तलवार के जख्म भर जाते हैं, पर जीभ के लगाये घाव तो समय भी नहीं भर सकता। वे बातें भूलने वाली हैं? तोबा-तोबा! शरीर में भूली-बिसरी यादें ताजा होकर एक अनचाही कंपन छेड़ गयी हैं। माथे पर पसीने की बूंदें झलक आयीं। कंधे से एयर-बैग उतारकर नीचे रखा, और टेढ़ी मुरकी - सा बनकर एक ऊंचे तने पर बैठ गया।

'लगता है, यहां अब सबके साथ नयी जान-पहचान निकालनी पड़ेगी।' वह अपने आप बोल पड़ा —'पंद्रह वर्ष बहुत होते हैं। न चिट्ठी न कोई संदेश, क्या पता यहां क्या कुछ बीत गया होगा। कौन-सा क्षण इस बस्ती में बेदाग होकर बीता? आदर का कहीं नाम नहीं। पंद्रह वर्षों में इनके स्वभाव नहीं बदले होंगे? इस बस्ती से ये लोग दूर चले जाते, तो इनके कलेजे की कालिमा धुल जाती। जिस जगह जैसे लोग होते हैं, मनुष्य भी वैसा ही हो जाता है।'

बरगद के पत्ते जोर से हिल पड़े। उसने नजर उठाकर देखा। लाल, बैंगनी किरणें पत्तों पर चमक रही थीं।

'तू हंसा है बाबा। बाबा बामने तेरा नाम भी अपने आप जीभ पर आ गया है। पर क्या यह झूठ है कि यह बस्ती, यह गांव रहने योग्य नहीं था। फिर तू हंसा है ..... ठीक है ..... तुझे सब पता है। तुझसे कौन-सी बात छिपी है। अम्मा कहती थी — हमारी औलाद नहीं बचती थी। तेरी डाल तले गढ़ा खोदकर उसमें उसने स्नान किया था, तब जाकर मैं बचा। अम्मा कहती थी —तुम बहुत पुराने जमाने के योगी हो — तपस्या में लीन बैठे हो, तुम्हारी तपस्या बड़ी महान है..... चींटियों ने धरती खोद-खोदकर ढेर लगा दिया.....दीमक ने शरीर खा डाला.....पर फिर भी तुम समाधि में मग्न रहे.....अपनी जटाएं बिखेरे ..... ऊंचा-ऊंचा परमेश्वर तक पहुंचते हुए.....इसीलिए अम्मा कहती थी — मनुष्य को अंत में तेरी शरण जाना है; पर तू बता, उन हालात में गांव छोड़ता नहीं तो क्या करता?

'क्या हुआ था उस रोज ..... मियां का लड़का शिकार के पीछे खेत में घुस गया था। रात को रखवाली पर बैठे हुए मैंने सोचा, कोई सूअर खेत में घुस आया है। दौड़ लगाकर जब वहां पहुंचा, तो दोनों भाइयों को वहां देखकर जो आग छाती में जल उठी थी, वह अब फिर सुलग उठी है — समय की राख तले वह दबी हुई पड़ी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'उस शिकार का मुझे इतना दुःख नहीं था, जितना इसका कि "हम तेरी मकई तोड़ने नहीं आये। शिकार खेलने आये हैं।" मैं चुप रहा था। फिर एक रात राइफल मांगने गया था। दिन में मकड़ियों का जोर होता था। सोचा, दो-तीन फायर करके उन्हें भगा दूंगा। पर दोनों भाई अकड़ गये थे— "राइफल कभी छुई भी है, जो चलाने का चाव आ रहा है! लो जी, घाइयों के बेटों को भी बेगानी बांहों में जोर देखकर, जोश आया करता है!"

'ये विषैले बोल मुझे कैसे डस गये थे! उस समय भी इस तरह ही दो नाग बैठे कराहते हुए प्रतीत हुए थे। अम्मा कहती थी, ये लड़के शहर से मजदूरी करके लौटे हैं..... पैसा कमाकर लाये हैं। इसीलिए सिर आसमान पर चढ़ा हुआ है। मेरी लातों में मरोड़ चढ़ रहे थे। कलेजे में भी एक सांप कुंडली मारे विष घोल रहा था। पैसा उनके सिर चढ़कर बोल रहा था। इसी के बलबूते पर उन्होंने पक्के मकान बनवा लिये थे।

'उसी रात मैं वहां से भाग गया था। तुमने मुझे जाते हुए देखकर सांस रोक ली थी—जैसे तुमने मेरे मन की सोच रखी थी कि इस समय कहां जा सकता हूं? तू सबका बाबा है ..... पर मेरा तो तू मित्र भी था। तुझे सुनाई दिया था कि पैसा कमाने जा रहा हूं.....राइफल लेने जा रहा हूं, ताकि हमारा सिर किसी से नीचा न रहे। तेरा ही आशीर्वाद है, आज चार पैसे लेकर आ रहा हूं—पंद्रह वर्ष की कमाई। पूरे पंद्रह वर्ष एक भी छुट्टी नहीं। तभी मेजर साहब भी कहते थे—पलटन को तुम-जैसे जवानों पर फख्र है, पर तुम्हें घर तो एक बार हो आना था। पता है, मैं क्या कहता था? मैं कहता—मेजर साहब! नौकरी से जवाब देकर चाहे भेज दें, पर घर मैं एक ही बार जाऊंगा—अपनी तनख्वाह के पूरे पैसे जोड़कर..... यह मेरा प्रण है।

'सारी दुनिया के सैर-सपाटे कर लिये। आखिर आ पहुंचा तेरे पास। दुनिया बदल गयी, पर तू वैसे का वैसा ही रहा—मौन योगी ..... मुझे पता है, तू क्यों नहीं बदला। तुझे मेरी प्रतीक्षा थी। पर मैं भी कैसा हूं। फौज में जाकर सब-कुछ भूल गया—घर-बार, जन्मस्थान और तुझे भी। एक बात बता, क्या आज भी वक्त बस्ती से वैसे ही संकोच से गुजरता है? कोई खबर सुना—बापू की, अम्मा की, मेरी सोमा की, बच्चों की। वे तो बहुत बड़े हो गये होंगे न? मुझे पता है, तू नहीं बोलेगा; क्योंकि तूने समाधि लगायी है। तू योगी है न। तेरी हवा उसी तरह चलती है .....खेतों में धान की खुशबू की लपटें मुट्ठियां भर-भरकर कौन लुटा रहा है! यह वही है न, मेरी जन्मभूमि की हवा।

'मुझे प्यास लग रही है ..... कंठ सूख रहा है ..... अच्छा बाबा, मुझे आशीर्वाद दे। मैं चलता हूं ..... कमाई करके आया हूं। अब मैं तेरी छाया तले एक कुआं बनवाऊंगा ..... तेरा चबूतरा भी पक्का करवाऊंगा। अच्छा ..... अच्छा ..... चरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूता हूं बाबा ..... ।'

एयर-बैग कंधे पर रखकर वह जाने लगा बस्ती की ओर—हवा के साथ बातें करता हुआ।

'यह धरती कैसी है..... देखते ही भूख-प्यास जाग पड़ी ..... कैसी सोंधी - सोंधी खुशबू है! जी चाहता है, मुट्ठी में मिट्टी भर लूं ..... कुछ माथे पर मल लूं ..... यह कैसी प्यास है जो पानी से भी नहीं बुझती! फौज में छः-छः रोज पानी नहीं पीते थे, तो भी प्यास पास नहीं फटकती थी .....'

हवा की सांय-सांय सुनकर उसके पैर अपने आप उस ओर उठ गये। सहसा उसकी आंखों के सामने अपने गांव का कुआं घूमने लगा। पीऊंगा तो अपने कुएं का पानी—उसने मन ही मन में प्रण किया। उसकी चाल में तेजी आ गयी।

धान के खेतों की मुंडेरें लांघकर वह गांव के बीच में जा पहुंचा और फिर वह कुएं की ओर चल पड़ा। कुएं से पंद्रह गज इधर उसकी चाल धीमी पड़ गयी। वह खड़ा हो गया। सामने एक औरत चरखी की रस्सी खींच रही थी। वह उसकी ओर देर तक देखता रहा। फिर उसने घड़ा उठाकर उसकी ओर देखा और पास से गुजर गयी।

उसकी आंखें फैली रह गयीं। 'यह तो सोमा है, मेरी सोमा! मुझे नहीं पहचाना न उसने? मैंने उसे पंद्रह वर्षों के बाद भी पहचान लिया है। मेरे लिए तो हर क्षण क्षण ही है, पर उसके लिए हर क्षण एक बीता हुआ वर्ष। संतान को पालने की चिंता और बूढ़े सास-ससुर की सेवा में डूबे कितना दुःख सहना पड़ा होगा इस अकेली को! इसका कारण मैं हूं। बेचारी आधी भी नहीं रही। मुझे अपनी आंखों के सामने बैठाये रखती थी .....भूलकर मेरी कसम नहीं खाती थी..... इसके सारे दुःखों का कारण मैं हूं। मैं, जिसे पैसा कमाने का लालच था, जिसने अपना स्वार्थ ही सोचा। बाकी कुटुंब का क्या होगा, इसकी चिंता तो दूर, खबर भी नहीं ली।

'पर सोमा के मुख पर चमक वैसी ही पहले जैसी है। मेरी प्रतीक्षा में उसकी आंखें अभी झुकी नहीं, उसका हाथ पकड़कर माफी मागूंगा.....अरे, पर इसकी गोद में यह बच्चा किसका है ..... हां किसका?'

वह सोमा के पीछे-पीछे चल पड़ा। सोचने लगा, मुझे पहचानेगी? शायद भूल गयी लगती है?

'कितनी प्यास लग पड़ी है? गला सूखने लगा है।'

वह चलता-चलता चौपाल में जा पहुंचा। वहां धूल में सने हुए नंग-धड़ंग बच्चे आंख-मिचौनी खेल रहे थे। दौड़ते हुए बच्चे उसके साथ छू जाते, क्षण-भर वह खड़ा हो जाता। नजरें चारों ओर दौड़ जातीं.....पता नहीं, क्या ढूंढ़ रही हैं .....'इनमें मेरे भी बच्चे हैं ..... ऊंह! मैं भी कितना पागल हूं ..... अब पंद्रह वर्ष हो चले हैं, यह मैं भूल चला हूं ..... बच्चे तो जवान भी हो गये होंगे। शायद ब्याहे भी गये हों। पर सोमा ने यह किसका बच्चा उठा रखा है? मेरा पोता?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ– एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि. गोलागोकर्णनाथ, जि. खेरी, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहसा उसे लगा, यह गांव भी बदल गया है ... अभी तक कोई अपनी पहचान का नहीं मिला। सोमा भी पहचानेगी या ..... ? नहीं, सोमा इस तरह नहीं कर सकती।

'अम्मा कहती थी, जिस घर पर बरगद की छाया पड़ जाये, वहां भूत नाचने आते हैं। पर मैं तो स्वयं उस बरगद का पुत्र हूं ..... बाबा बामने का पुत्र। अपने जवान पुत्रों की उसे जरूरत थी ..... बापू को, अम्मा को ..... बड़ा आघात लगा होगा उन्हें। अब मैं उनके पैरों को अपने आंसुओं से धोकर माफी मांग लूंगा। मां - बाप का दिल बहुत विशाल होता है न।'

चौपाल में और गली के दोनों ओर भी लालटेनें जलने लगी थीं। कोठरियों में पीली-सुनहरी सूइयों-जैसी किरणें अंधेरे की चादर पर कसीदा काढ़ रही थीं। सोमा अंधेरी परछाइयों के बीच से गुजरती हुई गली के मोड़ पर पहुंच गयी थी। वह भी चाल तेज करके चलने लगा। एक जगह पहुंच-कर उसने अनुमान लगाया कि इसी जगह हमारा घर होना चाहिये। पर वहां वह नहीं था। केवल निशान थे कि कभी वहां भी एक कोठरी थी।

'यह क्या ? ..... सोमा आगे चलती चली जा रही है ! किसके दरवाजे के अंदर गयी है ? अरे ! यह तो मियां का घर है। सहसा उसके पैरों पर लिपटे हुए दो नागों ने डंक मारा। उसे लगा, पैरों को दीमक और चींटियों ने चाट-चाटकर खोखला कर दिया है..... बाबा बामन का पुत्र जो हुआ। उसे यों लगा, जैसे वह चल नहीं रहा, घिसट रहा है – किसी लाचारी से बढ़ रहा है। वह लाचारी क्या है, कुछ समझ न आया।

तभी उसके पैर मियां की ड्योढ़ी के पास जाकर रुक गये। कुछ देर वह वहीं खड़ा रहा–पत्थर के बुत-जैसा। अंदर देर तक आवाज नहीं हुई। फिर गली में से गुजरता हुआ एक लड़का उसके पास आकर खड़ा हो गया–'क्या बात है जवान ?'

'मुसाफिर हूं, प्यास लगी है।'

लड़का मियां की ड्योढ़ी के अंदर चला गया। फिर थोड़ी देर के बाद एक स्त्री लोटा लेकर बाहर आयी। साथ ही लड़का भी था। उसने लालटेन पकड़ रखी थी। लड़के ने लालटेन ऊपर उठाकर जवान के मुख पर प्रकाश फेंका। और पूछा – 'क्या जात है तुम्हारी भाई ?'

'फौजियों की क्या जात होती है बेटा, इंसान हूं, बस यही जात है।' कहते हुए उसने अंजुरी फैला दी। स्त्री ने पानी डालना शुरू किया, धीरे-धीरे पानी पीते हुए वह सोच रहा था–काश ! यह धार और अंजुरी युगों के लिए यों ही रहें ..... न पानी खत्म हो न प्यास, न प्यासा थके न प्याऊ ..... काश यह धारा कुछ पतली होती ..... न जाने किस समय पानी की धारा बंद हो गयी और वह स्त्री और पानी लेने के लिए अंदर जाने लगी। जवान की टकटकी टूट गयी– 'बस-बस, पानी और नहीं। पर सुनो, इस गली में एक बूढ़ा धरमू रहता था, और उसका कुटुंब ..... ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माइक्रोफ़ाइन्ड
ऐस्प्रो

जल्द घुल जाता है
जल्द जज़्ब हो जाता है

इसलिए साधारण दर्द-विनाशक गोलियों की अपेक्षा

दर्द से दो गुना जल्दी आराम पहुंचाता है

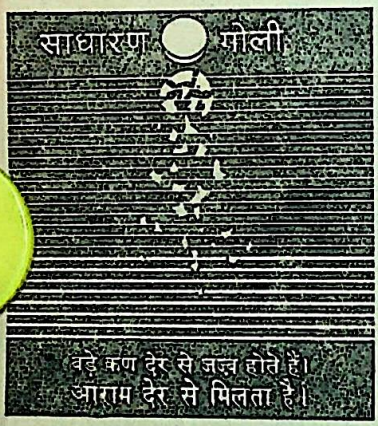

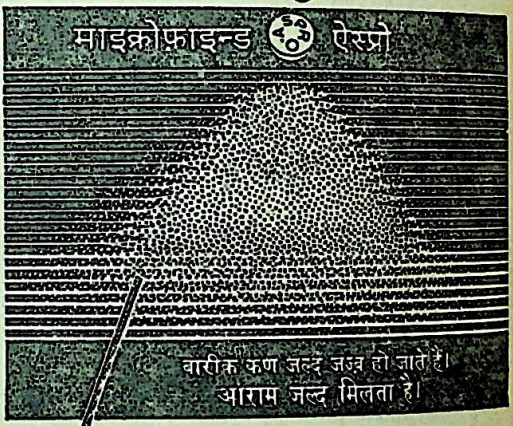

ऐस्प्रो के बारीक कण साधारण गोलियों की अपेक्षा जल्द जज़्ब हो जाते हैं। दर्द के स्थान पर जल्द पहुंचते हैं और आपको जल्द आराम मिलता है।

इन तकलीफ़ों के लिए माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो लीजिए:
सिरदर्द • शरीर का दर्द • सर्दी-जुकाम • फ़्लू • जोड़ों का दर्द • गले की खराश • दांत का दर्द

खुराक: प्रौढ़: दो गोलियां—आवश्यकता होने पर दो और लीजिए। बच्चे: एक गोली या डाक्टर की सलाह के अनुसार।

सिर्फ़ ऐस्प्रो ही माइक्रोफ़ाइन्ड है इसलिए यह दर्द को जल्दी खींच निकालता है

निकोलस उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री ने घूमकर जवान की ओर देखा। वह अनपहचाना फौजी उसे पैनी नजरों से देख रहा था। सोमा, वही सोमा है, पर यहां क्यों ?

लड़का बोला—'हां, है।'

जवान ने पूछना चाहा—है का क्या मतलब ? अब कहां है ? एक अनसोची स्थिति से सामना होने की आशंका से वह भीतर तक कांप गया। तभी अंदर से खांसने की आवाज बाहर आती हुई सुनाई दी—'कौन है भाई?' फिर ड्योढ़ी में एक फौजी को देखकर वही आवाज आयी—'क्या बात है ?'

उसने बूढ़े को झट पहचान लिया। हां यही छोटा मियां कश्मीरू था। मैंने तो इसे आवाज से ही पहचान लिया है। पर ये लोग क्यों नहीं पहचानते। चाहे पंद्रह वर्ष हो गये हैं, पर जैसे कल की बात है। एक-एक शक्ल जैसे पत्थर पर खुदी हुई मूर्तियों की तरह मेरे कलेजे में अमिट है। पर ये भूल गये कि गायब हो गये आदमी का भी एक दिन वजूद था ही। फौज और गांव की जिंदगी में यही फर्क है। पहली में अपना आप भूलता है, दूसरे में दूसरे का वजूद।

'बापू, ये दादाजी के बारे में पूछ रहे हैं।' लड़का बोला।

'अंदर आ जाओ,' छोटे मियां ने कहा। दालान में खाटें बिछी हुई थीं। तीनों प्राणी बैठ गये। सोमा रसोई की ओर जाने लगी थी, पर फौजी को बोलते सुनकर कुछ देर के लिए खड़ी हो गयी। 'पंद्रह वर्ष पहले—पंद्रह वर्ष पहले लाम पर जाते हुए एक रात मैं उनके घर ठहरा था।'

'कहां है तुम्हारा घर ?' यह मियां की आवाज थी।

'दूर पहाड़ की ओर। धरमूजी हमारे गांव कभी-कभी आया करते थे। इसलिए पहचान थी।

'वे तो अब नहीं रहे।'

'क्या ?' जवान के मुख से चीख निकलते-निकलते रह गयी।

'बूढ़े-बूढ़ी का एक लाड़ला बेटा था, पर एक रात अचानक किसी को कुछ कहे-बताये वह कहीं चला गया। बाद में बूढ़े-बूढ़ी की बड़ी खजल - ख्वारी हुई ..... घर में सेंध लगी। बरतन, कपड़ा-लत्ता कुछ न रहा। फसल बंदरों ने उजाड़ दी.....जो बचा, उसे बेवक्त की बारिश ने तबाह कर दिया।' छोटे मियां ने सिगरेट का लंबा कश लिया। फिर खांसी का दौरा—'खू खू खू.....'

'वर्ष-भर अम्मा ने हम छोटे-छोटे बच्चों के साथ मिलकर, बैल मांगकर खेत जोते, पर किस काम ? दादी कहती थी, हमारे घर भूत नाचने आने लगे हैं। उस आड़े वक्त में बापूजी हमारा सहारा बने। यही सारे गांव में हमारे काम आये.....' पास खड़ा लड़का बोला।

जवान को लगा, जैसे नीचे से सरकती-सरकती कोई चीज उसकी टांगों पर चढ़ आयी हो और उसे डंक मारने लगी हो। सहसा एक सिसकी उसके कानों में पड़ी। उसने देखा, सोमा दुपट्टे से आंखें पोंछती हुई रसोई की ओर चली गयी। बीते वक्त की याद कहीं कांटा बनकर चुभ गयी थी। कहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिटकता नहीं, न तो इसमें दरार पड़ती है और ना इसका रंग फीका पड़ता है। कभी नहीं।

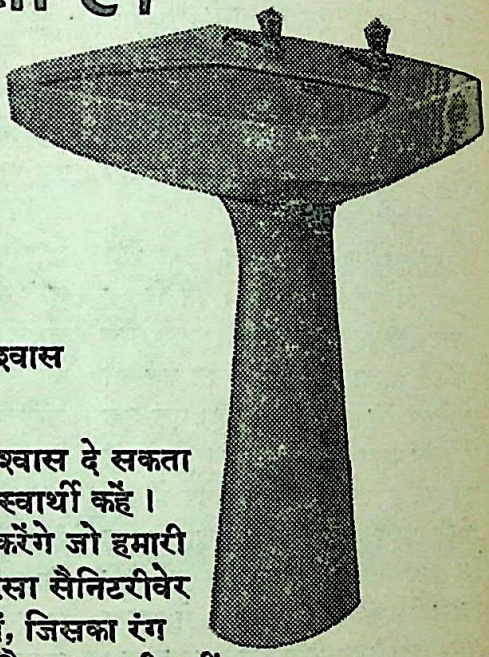

इसे कहते हैं

नाईसर पर विश्वास

भला और कौन आपको ऐसा विश्वास दे सकता है। शायद आप हमें थोड़ा स्वार्थी कहें। हम ऐसी कोई बात पसन्द नहीं करेंगे जो हमारी प्रतिष्ठा कम करे। इसलिए हम ऐसा सैनिटरीवेर बनाते हैं जो कभी चिटकता नहीं, जिसका रंग कभी फ़ीका नहीं पड़ता। और इस कभी नहीं का मतलब हमारे लिए है—बहुत-बहुत दिनों तक। उत्पादन में दोष के कारण कभी अगर ऐसा हुआ भी तो हम इसे बदल देंगे। मुफ़्त! हम चुना गया कच्चा माल प्रयोग करते हैं—ज़रूरी मज़बूती व परिसज्जा दिलवाने के लिए। आख़िर ऐसा सामान आपके लिए जीवनभर की लागत है। इसीलिए हम इसे सुंदर और मज़बूत बनाते हैं जिससे आप इसे जीवन भर चला सकें। इसकी विस्तृत श्रेणी अपने नज़दीक के विक्रेता के पास देखिए

Neycer Lic. Keramag

नाईसर—आपके बाथरूम की शोभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आग की तरह जलन डाल गयी थी। फौजी को लगा, उसकी बांहों और कंधों से टीसें उठ रही हैं। हाथ तड़प रहे हैं– किसी की गर्दन मरोड़ने को। दांत पर दांत का जोर बढ़ता जा रहा था। आंखों के सामने बाबा बामने के पत्ते और डालियां हिल रही थीं। कितने पक्षियों और चिड़ियों के घोंसले हिला करते हैं ..... घोंसलों से तिनके गिरते जा रहे हैं, मानो मतझड़ के पत्ते हों। 'मेरा घोंसला किसने उजाड़ा? तूने कश्मीरू..... अब तू बच नहीं सकता। याद है, तूने राइ-फल के समय कटाक्ष किया था। तेरे उसी कटाक्ष ने मुझे मार दिया। तेरे उसी बोल ने मेरी गृहस्थी में पहला भूत नचाया था।'

सहसा उसकी आंखों में एक फीकी-सी आकृति उभर आयी–'तू पागल है।' आकृति बोली – 'मैंने तेरे उजड़ते घोंसले के अंडे संभाल-संभालकर रखे। एक पड़ोसी का फर्ज पूरा किया मैंने।'

फौजी के मन में कोई कहने लगा – 'तू झूठा है। भोली कोयल से अंडे निकलवाने वाला दगाबाज कौआ है तू। याद कर ले उसे जो तेरा प्यारा है, यह आखिरी मौका.....'

सहसा एक बच्चे की रीं-रीं से उसकी विचार-तंद्रा टट गयी। फिर सामने सोमा आ खड़ी हुई थी। बच्चा चुप होकर उसकी गोद में लेटा दूध पीने लगा था।

'यह कौन है? यह कौन पशु बोल रहा है मेरे अंदर!' फौजी सोचने लगा।

सोमा मियां से बोली–'इनका बिस्तर आं-गन में बिछा दिया है। लेट जायें। थके होंगे।'

'नहीं पहचाना सोमा ने भी। किसी ने भी तो नहीं पहचाना। इनकी स्मृतियां इतनी मैली कैसे पड़ गयीं? ..... अंत में समय पहचानने के सारे फासले खत्म हो गये।'

'नहीं, रात ही रात में मुझे आगे जाना है.....कोई जरूरी काम है.....' वह हैरान था कि यह वह स्वयं बोल रहा था या अंदर कोई पत्थर का बुत ओंठ हिला रहा था? उसने सोचा कि उस बुत से पूछे–एक बार तू घर से निकलने के बाद जब घर वापस लौटा, तो घर नहीं मिला, केवल उसके निशान मिले। तब कैसा लगा तुझे?

वह उठ खड़ा हुआ। मन कभी भारी, कभी हल्का-हल्का-सा हो रहा था। एयर-बैग कंधे से उतारकर सोमा को पकड़ाया– 'यह रखें, लौटते हुए ले जाऊंगा।' फिर मियां की ओर देखकर वह बोला–'मियांजी, बाबा बामने का चबूतरा पक्का कराना है। इसके साथ ही एक कुआं भी वहां चाहिये। अच्छा मैं चलता हूं।'

'लौटकर एक घोंसला उजाड़ने से अच्छा है कि इस बस्ती में से समय की तरह चुप-चाप उठ जाना चाहिये?' उसने सोचा।

दहलीज पार करते हुए उसकी आंखों में पानी की बूंदें सिमट आयी थीं। अंधेरे में वे किसी को बहते हुए नहीं दिखे, न किसी ने उन्हें पोंछते हुए देखा। सुबह उस राही का कहीं कोई नामोनिशान न था। कुछ आद-मियों ने देखा, बाबा बामन के एक तने के तले एक आदमी पड़ा हुआ था। पैरों में उसके बड़े-बड़े फौजी बूट थे। अनुवाद : सुरजीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुर्दा-प्रतिरोपण अनेक बाधाएं

पिता-पुत्र दोनों के चेहरे उदास हो गये। उम्मीद की जो किरण उनके मन में जगमगायी थी, अचानक ही वह विलुप्त हो गयी। पुत्र का एक गुर्दा खराब था। सारे इलाज बेकार साबित हो चुके थे। अब यही राह शेष रह गयी थी कि उस खराब गुर्दे को हटाकर उसकी जगह स्वस्थ गुर्दा प्रतिरोपित किया जाये। बड़ी आशा के साथ वे वेल्लूर के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज के अस्पताल में पहुंचे थे। डाक्टरों ने उन्हें निराश नहीं किया, बताया कि इलाज हो जायेगा। लेकिन उन्होंने खर्चे की जो रकम बतायी, वह बहुत बड़ी थी। वह कहां से आये?

पुत्र ने जिंदगी की आस छोड़दी; पर पिता ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपने मित्रों व परिचितों से, और अखबारों के जरिये अपरिचितों से भी सहायता की अपील की। अपील कारगर हुई। देखते ही देखते आवश्यक रकम जमा हो गयी। ३२ वर्षीय रोगी पुत्र का खराब गुर्दा निकालकर उसकी जगह स्वस्थ गुर्दा प्रतिरोपित कर दिया गया। आज पिता-पुत्र दोनों अपने घर वालों के बीच प्रसन्न हैं। किंतु सभी तो इतने भाग्यशाली नहीं होते!

अब तक हमारे देश में गुर्दा-प्रतिरोपण दो ही अस्पतालों ने किये हैं— वेल्लूर (तमिलनाडु) के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज अस्पताल और दिल्ली के आल इंडिया इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल सायंसेस ने। काफी झंझटों से भरा है इलाज का यह मार्ग। अस्पताल में भर्ती किये जाने के बाद रोगी की तरह-तरह से जांच की जाती है। फिर रोगी और उसमें लगाये जाने वाले गुर्दे की कोशिकाओं का मिलान करके देखना पड़ता है। प्रतिरोपण के बाद लंबा उपचार चलता है।

खर्चा भी काफी होता है — कम से कम २०,००० रुपये। रोगी को कम से कम दो महीने अस्पताल में रहना पड़ता है। गुर्दा-मशीन से रक्तशोधन (डायलिसिस) का खर्चा ही लगभग १,००० रु. साप्ताहिक होता है।

गुर्दा-मशीन और प्रतिरोपण की सुविधाओं की दुर्लभता के कारण अभी तो प्रतिरोपण के लिए रोगी को स्वीकार करते समय उसकी उम्र, स्थान-मान आदि पर भी विचार करना पड़ता है। वस्तुतः पश्चिम के समुन्नत देशों में भी हालत बहुत भिन्न नहीं है— खासकर जब गुर्दा-प्रतिरोपण का काफी खर्चा सरकार उठा रही हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिरोपण करने के लिए गुर्दा प्राप्त करना भी आसान नहीं है। पिछले साल की बात है, समय पर स्वस्थ गुर्दा न मिल पाने के कारण एक महिला के प्रतिरोपण नहीं किया जा सका और वह मर गयी। उसने स्वस्थ गुर्दे के लिए अपील की थी, और उसकी अपील पर एक दाता गुर्दा देने को तैयार भी हो गया। मगर तब तक देर हो चुकी थी।

वेल्लूर के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज अस्पताल के डाक्टरों ने ढाई साल पहले भारत में सबसे पहली बार गुर्दा-प्रतिरोपण में सफलता पायी। ये डाक्टर बताते हैं कि स्वस्थ गुर्दा पाने में सबसे अधिक कठिनाई तब होती है, जब रोगी का कोई रक्त-संबंधी न हो, जो अपना एक गुर्दा दे सके।

वैसे अब मरीजों की अपील पर अपना गुर्दा दान करने के लिए कुछ लोग तैयार होने लगे हैं। परंतु डाक्टरों का कहना है कि प्रतिरोपण के लिए मरीज के रक्त-संबंधी का—विशेषतः सगे भाई या बहन का—गुर्दा सर्वाधिक उपयुक्त होता है; क्योंकि ऐसे गुर्दे के मरीज के शरीर द्वारा स्वीकार कर लिये जाने की संभावना अधिक रहती है।

डाक्टर यह भी बताते हैं कि जिस मनुष्य के दोनों गुर्दे स्वस्थ हों, उसके शरीर से एक गुर्दा निकाल देने से उसे कोई क्षति नहीं होती और वह आराम से स्वस्थ जिंदगी जी सकता है। किसी से गुर्दा-दान स्वीकार किये जाने के पहले उसके ऊपर कई आवश्यक परीक्षण भी किये जाते हैं और हर तरह से इत्मीनान हो जाने के बाद ही उसका गुर्दा स्वीकार किया जाता है।

विदेशों में दुर्घटनाओं में मृत व्यक्तियों के गुर्दे भी प्रतिरोपण में उपयोग में लाये जाते हैं; लेकिन हमारे यहां ऐसा नहीं हो पाता। इसमें कुछ तो मृतकों के स्वजनों की भावनाएं आड़े आती हैं, और कुछ शव-संस्कार की हमारी प्रचलित प्रथाएं।

वेल्लूर के इस अस्पताल में गत वर्ष के मध्य तक गुर्दा-प्रतिरोपण के १७ मामले निबटाये गये थे। इनमें एक महिला मरीज भी थी। १३ मरीजों को अपने संबंधियों से गुर्दे मिल गये और बाकी को परायों से।

वेल्लूर के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज अस्पताल के गुर्दा-रोग विभाग के प्रधान और प्रतिरोपण-दल के अध्यक्ष चिकित्सक डा. के. वी. जॉनी बताते हैं कि पहले काफी समय तक रोगी का रक्तशोधन (डायलिसिस) गुर्दा-मशीन से करना पड़ता है, तब कहीं रोगी प्रतिरोपण के लिए उचित शारीरिक स्थिति में पहुंचता है। इससे खर्चा बढ़ जाता है। मगर विदेशों में कृत्रिम गुर्दे के लिए इससे कहीं ज्यादा खर्च करना पड़ता है। गुर्दा-मशीन में स्वदेशी सामग्री का उपयोग करके और कुछ सामग्री के पुनरुपयोग का तरीका निकालकर वेल्लूर अस्पताल में रक्तशोधन (डायलिसिस) का खर्चा पिछले दो वर्षों में कम किया गया है।

कतिपय विकसित देशों में मरीज के घर पर ही उसके रक्तशोधन की व्यवस्था की जाने लगी है। इन रोगियों को डायलिसिस यंत्र का स्वयं उपयोग करने की समुचित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षा दी जाती है। अस्पताल खुद ही मरीज के घर में यह यंत्र लगवाता है और उससे किस्तों में उसका मूल्य वसूल करता है। कुछ अन्य देशों में गुर्दा-रोगियों ने अपने सामुदायिक केंद्र बना लिये हैं, जिनमें ऐसे तीन-चार यंत्र लगा दिये जाते हैं।

वेल्लूर का क्रिश्चियन मेडिकल कालेज अस्पताल गुर्दा-यंत्र खरीदने के इच्छुक रोगियों को उसके उपयोग का प्रशिक्षण देने की भी बात सोच रहा है। यंत्र का मूल्य लगभग ४० हजार रुपये पड़ता है। अगर सरकार या बैंक सुविधाजनक शर्तों पर कर्ज दें, तो मध्यम-वर्गीय रोगी भी इसे खरीद सकेंगे।

डा. के. वी. जॉनी की निश्चित राय है कि अगर बड़े-बड़े शहरों के सभी प्रमुख अस्पतालों और हर जिला-केंद्र के मुख्य अस्पताल में गुर्दा-मशीन द्वारा रक्तशोधन (डायलिसिस) की व्यवस्था हो जाये, तो गुर्दा-रोगियों की कठिनाइयां काफी हद तक दूर हो जायेंगी।

हमारे देश में गुर्दा-प्रतिरोपण से संबंधित एक कठिनाई और है। गुर्दा-प्रतिरोपण के बाद के उपचार-काल में रोगी को इम्युरान नामक एक दवा का सेवन करना पड़ता है। प्रतिरोपित गुर्दे को शरीर अस्वीकार न करे और साथ ही प्रतिरोपित गुर्दा विधिवत् काम करता रहे, इसके लिए यह दवा जरूरी है। मगर सरकार ने अभी तक इम्युरान को प्राणरक्षक दवाओं की स्वीकृत सूची में शामिल नहीं किया है, जिससे बहुत पैसा खर्च करके इसे विदेशों से मगाना पड़ता है। प्रतिरोपण के बाद के उपचार-काल में रोगी को दवाओं पर ही कम से कम १० रुपये प्रतिदिन खर्च करने पड़ते हैं।

प्रतिरोपण - दल के मुख्य शल्य-चिकित्सक डा. एम. मोहन राव बताते हैं, गुर्दा-प्रतिरोपण के बाद प्रथम तीन महीनों तक शरीर द्वारा उस गुर्दे के अस्वीकार कर दिये जाने का खतरा बना रहता है। प्रतिरोपित गुर्दे को शरीर बहुत धीरे - धीरे पूरी तरह स्वीकार करता है, जिसमें काफी समय लग जाता है। प्रशिक्षित डाक्टर ही अस्वीकार के लक्षणों को तुरंत पहचानकर उसकी रोक-थाम के लिए आवश्यक औषधोपचार कर सकते हैं। इस कारण गुर्दा - प्रतिरोपण के बाद मरीज को तब तक अस्पताल के निकट ही रहना पड़ता है, जब तक डाक्टरों को यह विश्वास न हो जाये कि अब अस्वीकार का खतरा नहीं है।

नयी दिल्ली के एक इंजीनियर को आपरेशन के बाद पूरे दो साल वेल्लूर में रहना पड़ा और बाकायदा अस्पताल में हाजिरी देते रहनी पड़ी।

इस स्थिति में इलाज का खर्चा किसी के लिए भी कितना भारी और असहनीय हो जाता होगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। सरकार तथा रोटरी व लायन्स क्लब - जैसी संस्थाएं अगर इस दिशा में कुछ करें और यथासाध्य आर्थिक सहायता प्रदान करें, तभी मरीजों को थोड़ी राहत मिल सकती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* व्योहार राजेंद्रसिंह * भक्त रामशरण दास *

ऐसे भी अंग्रेज थे

जबलपुर के अनेक मुहल्ले आज भी अंग्रेज अधिकारियों के नाम से प्रसिद्ध हैं—जोन्स साहब के नाम से जूनगंज, कर्नल नेम्बार्ड के नाम से निवाडगंज, लार्ड विलियम बैंटिक के नाम से लार्डगंज, ओबराइन के नाम से उपरैनगंज, कर्नल मिलौनी के नाम से मिलौनीगंज, मैक्एडम के नाम से मुकादमगंज, राइट के नाम से राइट टाउन, नेपियर के नाम से नेपियर टाउन, राबर्टसन के नाम से राबर्टसनगंज। मगर मध्यप्रदेश की जनता को और भी बहुत से अंग्रेजों की याद है, जिनके नाम पर गंज और टाउन नहीं बसे हैं।

बिलासपुर में सन १९१५-१६ में हेन्स नामक बंदोबस्त - अधिकारी थे। प्रांतीय शासन की ओर से बार-बार स्मरण-पत्र आते थे कि अपनी रिपोर्ट जल्दी से भेजो, जिससे बंदोबस्त का काम जल्दी शुरू हो सके : वे उत्तर में लिख दिया करते—'जब तक पूरी जांच मैं स्वयं नहीं कर लूंगा, तब तक बंदोबस्त करने की सिफ़ारिश नहीं कर सकता।' गर्मियों में भी हेन्स स्वयं ग्राम-ग्राम व खेत-खेत जाते, स्वयं जांच करते। इसमें काफी समय लगता था। ऊपर के अधिकारियों की डांट पड़ने पर उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया, किंतु गलत रिपोर्ट देने से इन्कार कर दिया।

सन १८९६ में सागर जिले में भयंकर अकाल पड़ा था। उस समय बर्न्स डिप्टी कमिश्नर का कार्य कर रहे थे। बार-बार लिखने पर भी ऊपर के अधिकारी दुर्भिक्ष-पीड़ितों के लिए कोई राहत-कार्य नहीं खोल रहे थे। भूखों मर रहे लोगों ने जब बर्न्स से कोई काम खुलवाने का आग्रह किया, तो उन्होंने साफ कह दिया – 'केवल आवेदन करने से कुछ नहीं होगा; सरकार तब सुनेगी, जब तुम हमारा बंगला जलाओगे या सरकारी अधिकारियों को मारोगे।' लोगों ने तोड़-फोड़ की और सरकार ने सुनवाई की।

सन १९११ में जबलपुर जिले में क्रासवेट बंदोबस्त अधिकारी थे। अकाल में राहत देने का काम जल्दी से जल्दी खुले, इसके लिए उन्होंने एक-दो जगह जांच करके ऊपर रिपोर्ट भेज दी कि सारे जिले में अकाल की स्थिति है, और शासन से राहत-काम खोलने की अनुमति ले ली। सहकारिता में उनकी विशेष रुचि थी; उन्हीं के नाम से सिहोरा में 'क्रासवेट बैंक' खोला गया था, जो कि अब 'विष्णुदत्त सहकारी अधिकोष' हो गया है।

सन १९२२ में स्लोकाक जबलपुर के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमिश्नर थे। काफी ऊंचे-पूरे व तगड़े आदमी थे। बातचीत में लोग उनके नाम का हिन्दी अनुवाद कर उन्हें 'सुस्त मुर्गा' कहा करते थे। जब उन्होंने यह सुना, तो बोले –'मैं सुस्त मुर्गा नहीं हूं, तेज मुर्गा हूं।'

उन्होंने उस समय के वाइसराय लार्ड रीडिंग से कह दिया था कि आपको सरकारी अधिकारी सदा घेरे रहते हैं, इसलिए आपको जनता की असली बातों का पता नहीं चल पाता। इस स्पष्टवादिता के कारण उन्हें चीफ कमिश्नर का पद नहीं दिया गया और सर फ्रैंकस्लाई की नियुक्ति उस पद पर कर दी गयी।

मगर सर फ्रैंकस्लाई भी बड़ी स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति थे। जब गांधीजी ने चंपारन आंदोलन चलाया, वे चंपारन जांच समिति के अध्यक्ष बनाये गये। उन्होंने सरकार के विरुद्ध सच-सच बातें लिख दीं। जब स्लोकाक ने उनसे कहा कि आप गांधी के जाल में फंस गये, तो फ्रैंक स्लाई ने उत्तर दिया – 'गांधी का व्यक्तित्व इतना बलवान है कि मैं उनसे सहमत हुए बिना नहीं रह सका। मुझे उनका विरोध करने की हिम्मत न हुई।'

विल्सन सन १९१६ में जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर थे। उस समय लोकमान्य तिलक जबलपुर पधारे। शासन ने विल्सन साहब को आदेश दिया कि उनकी सभा में जाकर भाषण के नोट लिखो और यदि वे कोई राजद्रोह की बात कहें तो गिरफ्तार कर लो। विल्सन ने भाषण के नोट लिये और रिपोर्ट में लिखा –'तिलक ने यही कहा था कि जैसे विलायत में अंग्रेज अपने देश का शासन करते हैं, उसी प्रकार भारत में हम भी स्वराज्य मांगते हैं। इसमें मुझे राजद्रोह की कोई बात नहीं दिखी। यदि मैं उनकी जगह होता, तो मैं भी यही बात कहता।'

सन १९२० से २२ तक जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर थे चेंबरलेन। उस समय पूरे प्रांत में उग्र दमन हो रहा था। जबलपुर में भी असहयोग को लेकर उग्र भाषण हो रहे थे; किंतु उन्होंने किसी को गिरफ्तार नहीं किया। जब कमिश्नर ने उनसे कहा कि आप कार्रवाई क्यों नहीं करते, तो उन्होंने उत्तर दिया–'स्ट्रांग वर्ड्स ब्रेक नो बोन्स।' कमिश्नर चुप हो गये। –व्योहार राजेंद्र सिंह, साठिया कुआं, जबलपुर

रामभक्त अंग्रेज कमिश्नर

सन १९३० में मेरठ में एक अंग्रेज कमिश्नर थे पी. डब्ल्यू. मार्श, जिनके बारे में महामना मालवीयजी ने एक बार कहा था–'मार्श - जैसे न्यायप्रिय व भारतीय संस्कृति के प्रेमी अधिकारियों की देश को भारी आवश्यकता है।'

मार्श मेरठ-स्थित किसी अंग्रेज-परिवार में जन्मे थे। किंतु जब वे बच्चे थे, उनके माता-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिता चल बसे। बालक मार्श किसी तरह तहसील बागपत (जिला मेरठ) के किसी गांव के एक जाट-परिवार के हाथों पड़ गया। उस परिवार की गृहिणी ने उसे सगे बेटे की तरह प्यार से पाला और गांव की पाठशाला में हिन्दी, संस्कृत व उर्दू की शिक्षा दिला दी।

बाद में मेरठ आकर मार्श ने अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। पढ़ने-लिखने में प्रारंभ से ही तेज थे। सब परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं और एक दिन ऐसा भी आया कि वे जिलाधीश के पद पर नियुक्त कर दिये गये। फिर कुछ ही समय में मेरठ के कमिश्नर बना दिये गये।

इन ऊंचे पदों पर पहुंचने पर भी मार्श अपनी जाटनी मां के प्रति असीम भक्ति रखते थे। वे समय निकालकर गांव आते और मां का चरण-स्पर्श करते। वे गांव के प्रत्येक व्यक्ति के घर जाकर उसके सुख-दुःख की खबर लेते तथा गांव वालों की हर संभव सहायता के लिए तैयार रहते।

मुझे भी दो-तीन बार उनसे भेंट करने का अवसर मिला था। जमींदार होने के कारण मेरे पिता लाला नारायणदासजी के अनेक मुकद्दमे उनकी अदालत में गये। मार्श साहब सभी मुकद्दमों का गहनता से अध्ययन करने के बाद ही निर्णय देते थे। उनके सच्चे न्याय से संबंधित कई घटनाएं अभी भी प्रचलित हैं।

एक दिन उनकी अदालत में एक पटवारी के विरुद्ध मुकद्दमा आया। आरोप यह था कि उसने रिश्वत लेकर किसी की जमीन का

पी. डब्ल्यू. मार्श

पट्टा दूसरे के नाम चढ़ा दिया है। पटवारी बहुत चालाक था और जानता था कि मार्श साहब भगवान राम व रामचरित-मानस के अनन्य भक्त हैं। अतः उसने उन्हें प्रभावित करने के लिए अदालत में 'मानस' की यह चौपाई सुनायी —'दीनदयाल बिरद संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी।' मार्श साहब पटवारी की असलियत भांप चुके थे, उन्होंने भी मानस की चौपाई में ही उत्तर दिया—'जो नहिं दंड करउं खल तोरा, भ्रष्ट होय श्रुति मारग मोरा।' सचमुच पटवारी दंड से नहीं बच पाया।

एक दिन एक गरीब ग्रामीण विधवा ने उनके पास आकर रो-रोकर बताया कि उसके एक पुश्तैनी बाग को जमींदार ने पटवारी से मिलकर अपने नाम लिखवा लिया है। मार्श साहब ने उसे सांत्वना दी कि मैं अमुक दिन तुम्हारे गांव आकर बाग तुम्हें दिलवा दूंगा, पर यह बात किसी को मत बताना।

उस निर्धारित दिन सवेरे उस गांव के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी बाग में पहुंचकर उन्होंने अपने अर्दली से कहा, तुम मुझे इस वृक्ष के साथ रस्सी से बांध दो। गांव में खबर फैल गयी कि साहब वृक्ष से बंधे हुए हैं। सारा गांव उमड़ पड़ा और लोगों ने रस्सी खोलकर उन्हें मुक्त किया।

गांव के प्रधान ने पूछा – 'हुजूर, आपको बांधने की जुर्रत किसने की है?' उन्होंने उत्तर दिया –'बाग के मालिक ने।' पटवारी को रिश्वत देकर बाग को अपने नाम कराने वाला जमींदार भी वहां उपस्थित था। मार्श की बात सुनकर वह डर गया और बोला – 'हुजूर, यह बाग तो अमुक बुढ़िया का है।'

मार्श साहब ने पटवारी को बुलाकर कागजात मंगवाये और उन्हें जांचकर कहा– 'बाग तो जमींदार के नाम पर चढ़ाया हुआ है। क्या यह जमींदार का है?' जमींदार बोल उठा–'हुजूर, मैंने तो पहले ही अर्ज किया कि यह बाग मेरा नहीं है।'

पटवारी ने मार्श साहब के पैरों पर गिरकर अपराध स्वीकार किया। फौरन कागजात में असली मालकिन वृद्धा का नाम चढ़ा दिया गया और पटवारी को दंडित किया गया।

एक दिन एक गरीब मालिन सिर पर सब्जी लिये बेचने जा रही थी। जैसे ही वह मार्श साहब की कोठी के सामने से गुजरी कि कोठी के दरबान ने टोकरे से एक घिया उतार लिया और पैसे मांगने पर झिड़क दिया–'लौटती बार पैसे ले जाना।'

मालिन बड़बड़ाती हुई आगे बढ़ी ही थी कि मार्श साहब की कार उधर आ निकली। उन्होंने उसे शोर मचाते देखा, तो गाड़ी रोककर पूछा –'मां, क्या बात है?' उत्तर मिला– 'साहब, मेरी बोहनी भी नहीं हुई और मेरा बच्चा बीमार है, उसकी दवा के लिए घिया बेचने निकली थी कि इस कोठी के दरबान ने बिना पैसे दिये घिया उतार लिया।'

मार्श साहब ने काफी पैसा मालिन को देते हुए अपने दरबान की गुस्ताखी की क्षमा मांगी और दरबान को भविष्य के लिए कड़ी चेतावनी दी।

पिलखुवा के बाबू वीरेश्वर प्रसाद की आंखों देखी घटना है। मेरठ में मुसलमानों का 'दुलदुल घोड़ा' निकल रहा था। लाला के बाजार में जुलूस की व्यवस्था के लिए तैनात एक वर्दीधारी मुस्लिम सिपाही अपना कर्तव्य छोड़कर मातम में शामिल होकर छाती पीटने लगा। यह देख मार्श साहब घोड़े से उतरे और उस पर बरस पड़े– 'मूर्ख, तू अपनी ड्यूटी छोड़कर इस मजहबी काम में क्यों जुटा है।'

मार्श अफसर के रूप में जितने कर्तव्यनिष्ठ और न्यायपरायण थे, निजी जीवन में भी उतने ही दयालु और विनम्र थे। अपने पास से भी वे निर्धनों की सहायता करते रहते थे। रविवार को उनकी कोठी पर अनाथों व गरीब विधवाओं की भीड़ लगी रहती थी।

एक दिन छः-सात जरूरतमंद महिलाएं उनके पास चली आयीं और अपना दुःखदर्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनाने लगीं। उनमें से कुछ ने मुख पर से परदा हटाकर बातें कीं, तो कुछ ने घूंघट में ही बहुत धीरे-धीरे अपनी आवश्यकता बतायी। अंत में मार्श साहब ने परदा उतार-कर बातें करने वाली महिलाओं को ग्यारह-ग्यारह रुपये और घूंघट में से ही व्यथा सुनाने वाली महिलाओं को पचीस-पचीस रुपये देकर विदा किया।

पास बैठे एक सज्जन ने आश्चर्य प्रकट किया, तो मार्श साहब ने समझाया—'परदा हटाकर बातें करने वाली महिलाएं काम-काज करके भी अपना पेट भर सकती हैं; जब कि घूंघट न हटाने वाली संकोची महिलाएं बाहर काम नहीं कर सकतीं, अतः उन्हें अधिक सहायता की आवश्यकता है।'

जीवन-भर उन्होंने मांस, मदिरा को हाथ नहीं लगाया। भारतीय संस्कृति को वे विश्व की महानतम संस्कृति मानते थे। श्रीराम के आदर्श चरित्र के वे बड़े भक्त थे। अंग्रेज मां-बाप के बेटे होते हुए भी वे सच्चे भारतीय थे।

—भक्त रामशरण दास
पिलखुवा, जिला मेरठ, उ.प्र.

स्मृति-धरोहर

बड़ी बहन का विवाह तो छुटपन में ही हो चुका था। घर में केवल मैं ही थी। पुत्र का अभाव मां को तो खटकता था; परंतु पिताजी ने कभी वाणी या व्यवहार से उसे व्यक्त नहीं किया। रात को वे चाहे कितने भी थके अस्पताल से लौटते हों, तो भी बड़े चाव से मुझे गणेशोत्सव, दुर्गोत्सव, कवि-संमेलन आदि में ले जाते।

पिछले वर्ष जब मुझे बी-एड. प्रशिक्षण के लिए बाहर जाना पड़ा, तो बीमार मां को रिश्तेदारों के भरोसे छोड़कर वे उतनी वृद्धावस्था में भी मेरे पास आ गये।

एक दिन दोनों का व्रत था। मैंने पिताजी से कहा कि कालेज से लौटकर फलाहार बना लूंगी। लेकिन उन्होंने सोचा बेचारी भूखी-प्यासी कालेज से आयेगी, मैं ही बना लूं और उन्होंने सिंघाड़े का हलुआ बना दिया। जब पहला ग्रास मुंह में रखा, तो वह सिंघाड़े जैसा न लगा। पता चला कि उनकी बूढ़ी आंखें धोखा खा गयी थीं और उन्होंने बेसन का हलुआ बना दिया था।

१८ फरवरी को हमारी 'पाठ' देने की तिथि निश्चित हुई थी। लेकिन १७ फरवरी की शाम को पैर पर पत्थर गिर जाने से पैर के अंगूठे का नाखून अंदर से कट गया। रात को भयंकर पीड़ा रही। तीन बजे रात को पिताजी ने एक चम्मच ब्रांडी दूध में मिलाकर दी, तो मुझे नींद आ गयी। सुबह जब आंख खुली, तो देखा कि पिताजी अभी तक पैर पर नमक के पानी से सेंक कर रहे हैं। वह देख मेरी आंखों में आंसू आ गये।

जैसे-तैसे-उस दिन 'पाठ' दे दिया। आज अपनी सफलता के साथ याद आता है पिताजी का असीम स्नेह व त्याग।

—विजयलक्ष्मी शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादों की महक

हमारी दीदी वापस इंग्लैंड जा रही थी और हम सब उसे विदा करने हवाई अड्डे पर आये हुए थे। हमारे साथ पांच-छः बच्चे भी थे। दीदी ने सब बच्चों को दस-दस रुपये दिये। बच्चे तो बहुत खुश और सबने अपने-अपने नोट अपनी जेबों में संभाल लिये। फिर जाने कब मेरा छः वर्षीय भतीजा पम्पी हम सबको बातें करता छोड़ खिसक गया। जब लौटा, तो उसके हाथ में प्लास्टिक के फूल, पेंसिलों और टाफियों के पैकेट थे। आते ही उसने सब कुछ दीदी के हाथों में थमा दिया और हम कुछ पूछें, बोला —'आंटी मुझे भी तो आपको कुछ प्रेजेंट देना चाहिये।' हम सब अवाक् देखते रहे।

—कु. मनजीत, नवाशहर, जि. जालंधर

ooo

मातृभाषा

मैं उस समय प्रीयुनिवर्सिटी में पढ़ता था। झूठी शान के खातिर महीने-भर का पैसा पंद्रह दिनों में ही खर्च कर डाला। घर जाने के लिए पैसे की जरूरत पड़ी, पर एक भी पैसा पास में नहीं था, सो बिना टिकट जाने का निश्चय किया और साथियों से छिपकर रात की गाड़ी में बैठ गया। यह डर सता रहा था कि पकड़ा गया, तो बदनामी होगी, शायद जेल भी जाना पड़े। गाड़ी बड़ा बम्बो स्टेशन में रुकी, जहां मुझे उतरना था। किंतु उतरने की हिम्मत न हुई, क्योंकि स्टेशन से मेरा गांव दूर था और रात अधिक हो गयी थी। इसलिए अगले स्टेशन चक्रधरपुर चला गया। वही गाड़ी सुबह पांच बजे फिर लौटती है। मैं रात-भर उसी में बैठा रहा। सवेरे रेल्वे पुलिस वाला मुझे स्टेशन मास्टर के निकट ले जाकर बोला —'हुजूर, ये खोका बाबू बिना टिकट के हैं।' वह मुझे बंगाली समझ रहा था।

स्टेशन मास्टर भी बंगाली थे, उन्होंने बंगला में ही मुझसे कुछ प्रश्न किये, जिनके उत्तर मैंने भी बंगला में ही दिये। (उड़िया-भाषी होने पर भी मैं बंगला जानता था।) भाषा प्रेम के कारण उन्होंने मुझे छोड़ दिया, यही नहीं मैं जो झूठ बोल रहा था, उसे भी सच समझा। मातृभाषा का जादू क्या होता है, उस दिन मैंने जाना।

—प्रेमसागर 'शुम्मी', गिरिडीह, बिहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाजवाद की प्रतीक्षा

मैं नागपुर की ट्रेन की प्रतीक्षा में बैठा था। इतने में पंजाब मेल आयी और जहां पर मैं बैठा था उसी प्लैटफार्म पर रुकी। ट्रेन की कैंटीन के बैरे जूठे बरतनों को समेटकर लाते और प्लैटफार्म पर एक जगह रख देते थे। मेरे देखते ही देखते १०-१२ साल के दो लड़के, जिनके तन पर केवल एक-एक ही कपड़ा था, उस जूठन पर टूट पड़े। बारी-बारी से वे एक-एक थाली उठाते, उसमें बचे चावल या रोटी अपने पास रखी हुई प्लास्टिक की थैली में डाल लेते और बाकी मजे से चाट-चाटकर खाते। मैं उन्हें ध्यान से देखता रहा।

यह देखकर उनमें से बड़ा लड़का बोला—'क्या देख रहे हो बाबूजी ? भीख मांग ने से तो यह अच्छा है। हम किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते। छोटे हैं इसलिए हमसे कोई सामान भी नहीं उठवाता।' मैंने प्लास्टिक की थैली की ओर इशारा करके पूछा—'यह किसके लिए है ?' बोला—'मां अंधी है बाबूजी, और छोटी बहन है घर में; उन्हीं के लिए है।'

इसके बाद मैं वहां और ठहर न सका। अब मुझे अपनी गाड़ी का इंतजार उतना नहीं था, जितना कि उस आने वाली समाजवादी गाड़ी का।

और मैं सोच नहीं पा रहा था कि वह गाड़ी कैसी होगी ?

—गयूस गेब्रिएल कुमार, भिलाई नगर

मिथ्या धारणा

सन १९७० में बिहार में नक्सलपंथियों का आतंक चरम सीमा पर पहुंच गया था। दक्षिण बिहार के औद्योगिक इलाके में प्रतिदिन लूट और हत्या की घटनाएं हो जाती थीं। मैं एक दिन एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज इंजीनियर से मिला, जो स्वतंत्र भारत में काफी अरसे तक रहने पर भी 'उच्च' भावना से पीड़ित थे। उन्होंने कहा—'गांधी ने छात्रों को दिग्भ्रमित कर दिया। भारतीय युवा इसी से असंतुष्ट एवं अनुत्तरदायी हैं। ऐसी हरकतें अंग्रेज युवा नहीं कर सकते।' मैंने समझाने की कोशिश की कि सारे संसार में युवा वर्ग में आक्रोश है और अविकसित देशों में गरीबी के कारण कुछ ज्यादा है; इसमें गांधीजी का दोष नहीं। पर वे न माने।

दूसरे दिन समाचारपत्रों में छपा कि रुइयाम (टाटा नगर के पास) के जंगलों में ५२ नक्सलपंथी गिरफ्तार हुए हैं। इनमें मिस टेलर नामक एक अंग्रेज युवती भी है। समाचार के अनुसार टेलर ने चीन में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और अब वह आतंक का आंदोलन चलाने इंग्लैंड जाना चाहती थी।

मैं यह समाचार उन अंग्रेज इंजीनियर साहब को सुनाकर पूछना चाहता था कि गांधी ने कुमारी टेलर को कैसे दिग्भ्रमित किया ? पर उसी शाम को एक वकील मित्र ने बताया कि इंजीनियर साहब का हार्टफेल हो गया। वे सवेरे पत्र पढ़ रहे थे।

—बच्चन पाठक 'सलिल', जमशेदपुर-१

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी कृपा होगी

अभी न दीप बुझाओ, बड़ी कृपा होगी
कोई कहानी सुनाओ, बड़ी कृपा होगी।

कल तो फूटेगी किरण, और उषा जागेगी
आज की रात बिताओ, बड़ी कृपा होगी।

कदम-कदम पै हैं खूंख्वार दरिंदों के गिरोह
आदमीयत को बचाओ, बड़ी कृपा होगी।

जो जाग कर भी बहाना किये हैं सोने का
उठाके उनको बिठाओ, बड़ी कृपा होगी।

'रंग' के बाद संवारेगा, कौन महफिल को
कोई तो नाम बताओ, बड़ी कृपा होगी।

—बलवीरसिंह 'रंग'
नगला कटीला, एटा, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

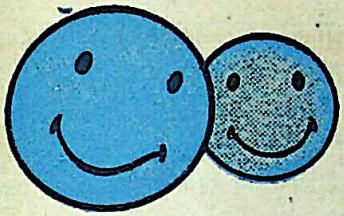

हंसी के बुलबुले

एक बहुत ही डरपोक स्त्री तब तक हवाई जहाज में चढ़ने के लिए राजी नहीं हुई, जब तक कि पाइलट ने उसे यह यकीन नहीं दिलाया कि वह चार हजार फुट से ज्यादा ऊंचाई पर नहीं जायेगा।

'हां, इससे ज्यादा ऊंचाई पर न जाना,' स्त्री ने कहा—'मेरे डाक्टर का कहना है कि इससे ज्यादा ऊंचाई पर मेरा दिल जवाब दे जायेगा।'

'लेकिन आप जहां जा रही हैं,' पाइलट ने कहा—'वह शहर तो एक मील की ऊंचाई पर बसा हुआ है।'

'तो फिर मैं नहीं जाऊंगी। मैंने तो सोचा था कि वह शहर धरती पर बसा हुआ होगा।'

ooo

हवाई जहाज उड़ने वाला था कि एक आदमी भागा हुआ हवाई अड्डे पर आया, और वहां के अधिकारी के पास जाकर बोला—'मेरी पत्नी इस हवाई जहाज में सवार हो चुकी है, और मैं देर से पहुंचा हूं। क्या इतना समय होगा कि मैं हवाई जहाज में जाकर उसे विदा का चुंबन दे सकूं?'

अधिकारी ने कहा—'यह इस पर निर्भर है कि आपकी शादी हुए कितना अरसा हुआ है, यानी आपका चुंबन कितना लंबा होगा।'

ooo

यात्री हवाई जहाज से उतर रहे थे कि होस्टेस की नजर एक आदमी पर पड़ी, जो बड़ी कठिनाई से चल रहा था। उसकी ढलकी हुई पतलून उसके पांवों में फंस रही थी।

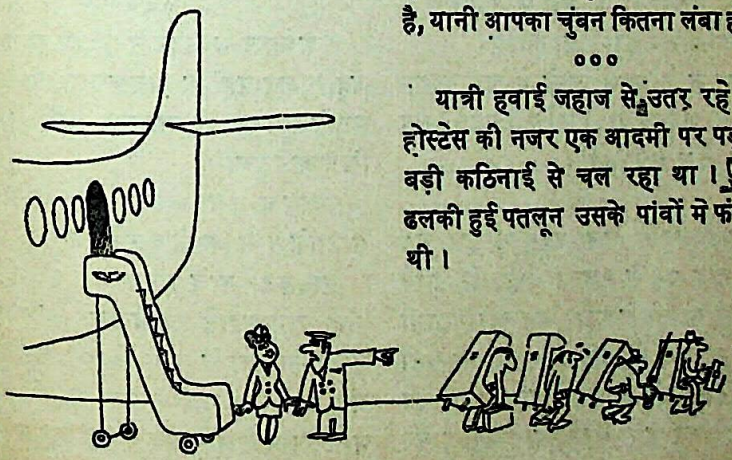

'फिर वही गलती! क्या मैंने कहा नहीं था कि यात्रियों को सेफ्टी-बेल्ट खोलने को कह दो?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होस्टेस ने उसके पास जाकर देखा कि पतलून का बेल्ट खुला हुआ था।

'यह बेल्ट क्यों खोल रखा है ?' होस्टेस ने पूछा।

'आप ही ने तो पहले बांधने और फिर खोलने के लिए कहा था।'

'पतलून का बेल्ट नहीं, सेफ्टी-बेल्ट खोलने के लिए कहा गया था।'

ooo

एक बहुत मोटी स्त्री हवाई जहाज पर सवार हुई।

हवाई जहाज अभी उड़ा ही था कि होस्टेस जल्दी से उसके पास आयी, और बोली—'आइये, इस टूरिस्ट क्लास में से फर्स्ट क्लास में चलकर बैठिये।'

स्त्री ने हवाई जहाज के अगले हिस्से में फर्स्ट क्लास की सीट पर बैठते हुए होस्टेस को धन्यवाद दिया, और फिर पूछा —'क्या मैं जान सकती हूं कि मुझे फर्स्ट क्लास में बैठने का संमान क्यों दिया गया है ?'

'जहाज के अगले हिस्से में कुछ ज्यादा वजन की जरूरत थी', होस्टेस ने सहज भाव से कहा और चली गयी।

ooo

हवाई जहाज चला रहा पाइलट जब अपने गांव पर से गुजरने लगा, तो उसने साथ बैठे पाइलट से कहा—'वह नदी दिखायी देती है न, जब मैं छोटा-सा था, तो घंटों उसके किनारे बैठकर मछलियां पकड़ा करता था, और जब कभी कोई हवाई जहाज मेरे ऊपर से गुजरता था, तो उसकी ओर देखता हुआ सोचा करता था कि मैं उसमें उड़ा जा रहा हूं।'

'आखिर वह ख्वाहिश पूरी हो ही गयी', साथी ने कहा।

'और अब नीचे देखता हुआ सोच रहा हूं कि मैं यहां बैठा मछलियां पकड़ रहा हूं।'

ooo

एक आदमी हवाई जहाज में पहली बार सवार हुआ, तो उसे बेहद डर लगा। जब हवाई जहाज का इंजन गरजा, तो उस आदमी ने अपनी सीट की बाहें कसकर पकड़ लीं, और एक से सौ तक गिनने लगा।

आखिर उसने आंखें खोलीं और खिड़की में से बाहर देखा। तभी अपने साथ वाली सीट पर बैठे हुए व्यक्ति से बोला—'वह देखिये, लोग कितने छोटे-छोटे लग रहे हैं। ऐसा लगता है, जैसे वे चींटियां हों।'

'वे चीटियां ही हैं। हम अभी उड़े नहीं हैं।'

ooo

एक शहर के ऊपर से उड़ता हुआ हवाई जहाज जब वहां के पागलखाने की इमारत पर से गुजरा, तो पाइलट खुशी से खिल-खिलाकर हंसा।

'किस बात पर हंस रहे हैं' किसी काम से उसके पास आयी होस्टेस ने पूछा।

पाइलट ने नीचे इशारा करते हुए कहा—'उस पागलखाने को देखकर मुझे खयाल आया कि वहां के लोग कितने हैरान होंगे, जब उन्हें यह पता लगेगा कि मैं वहां से भाग आया हूं और अब हवाई जहाज में बैठा हुआ हूं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने पर विश्वास कीजिये

केशवदेव मिश्र 'कमल'

आपका आत्मविश्वास आपकी सफलता की गारंटी है। जब तक आप में आत्म-विश्वास है, आपकी बुद्धि, आपका शरीर आपको कठिन से कठिन काम पूरा करने का सामर्थ्य देंगे। पर ज्यों ही अपने पर से आपका विश्वास हटा कि आपके कदम डगमगाने लगेंगे। मुक्केबाज टेरी मैक्गवर्न की पराजय और कार्बेट की विजय का यही रहस्य था।

'टेरिबल टेरी' (खूंखार टेरी) के नाम से विख्यात टेरी मैक्गवर्न अमरीकी घूंसेबाज था और दो वर्षों से विश्व फेदरवेट चैंपियन था। उसे इस पद से च्युत कराने के लिए आधे दर्जन घूंसेबाज रिंग में उतरे थे और मुंह की खा गये थे। कार्बेट टेरी के चैंपियनशिप को चुनौती देने वाला सातवां घूंसेबाज था।

टेरी ने सितंबर १८९९ में महज उन्नीस वर्ष की उम्र में तत्कालीन लाइटवेट चैंपियन पेडलर पामर को सिर्फ ७५ सेकेंडों में धराशायी कर दिया था और जनवरी १९०० में विख्यात घूंसेबाज जार्ज डिक्सन को हराकर विश्व फेदरवेट चैंपियन की उपाधि भी हथिया ली थी।

तब से सारे साल उसे विश्व चैंपियन के पद से हटाने की कोशिश की जाती रही। जनवरी १९०१ तक छः रणबांकुरे मैदान में आये और कुल सत्ताईस राउंड तक टेरी को परेशान करके ही रह गये—चैंपियनशिप छीन न पाये।

टेरी की घूंसेबाजी बड़ी तेज-तर्रार थी और वह बड़ी निर्ममता और निपुणता से घूंसे चलाने के लिए मशहूर था।

इसलिए २८ नवंबर १९०१ की रात को हार्टफोर्ड (कनेक्टिकट, अमरीका) का वह हाल मैच शुरू होने के घंटों पहले खचाखच भर गया। जब घंटों इंतजार कर रहे घूंसेबाजी-प्रेमियों और टेरी-प्रशंसकों ने 'रिंग' में मदमस्त हाथी के समान खड़े टेरी के सामने एक दुबले-पतले अनजान नौजवान को खड़े देखा, तो उनके हृदय उस 'अभागे' नौजवान के लिए सहानुभूति से भर उठे।

'अरे, यह कल का छोकरा! यह क्यों अपनी जान देने आ गया! इसका न कोई रेकार्ड है, न इसे कोई जानता है। ओह, यह तो घूंसेबाजी नहीं, हत्या होगी, सरासर हत्या।'

कार्बेट के लिए ऐसे ही उद्गार चारों ओर सुने जा सकते थे।

मैच शुरू हुआ। आत्मविश्वास और गजब की चुस्ती-फुर्ती से भरा हुआ कार्बेट हर बार टेरी का वार बचाये जा रहा था। टेरी अपनी आदत के अनुसार, शुरू ही से घूंसों की बौछार किये हुए था; लेकिन कार्बेट को उसका घूंसा छू तक नहीं पा रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। हालत यह थी कि कोई नया आदमी देखता, तो वह कार्बेट को ही चैंपियन समझता और टेरी को अनाड़ी। टेरी के तमाम प्रशंसक दंग थे।

कार्बेट मंजे खिलाड़ी-जैसे तौल-तौलकर घूंसे जमा रहा था। और टेरी? वह बिलकुल बौखला गया था और इस प्रयत्न में था कि किसी तरह भी एक घूंसा कार्बेट को लगाकर अपना विश्वास वापस पा सके। हताश खिलाड़ी की तरह वह हाथ-पैर मार रहा था।

पहला राउंड खत्म हो गया और टेरी छू तक न सका कार्बेट को। दूसरा राउंड शुरू हुआ ही था कि कार्बेट की दायीं मुट्ठी का जबर्दस्त घूंसा टेरी के जबड़े पर पड़ा। वह गिरा, और गिरा ही रह गया। रेफरी की गिनती खत्म हो गयी, टेरी बेहोश पड़ा रहा।

विस्मय और आश्चर्य से पागल दर्शक चीख रहे थे। जयमाला आत्मविश्वास से भरे कार्बेट के गले में पड़ चुकी थी और आत्मविश्वास से च्युत टेरी अपनी विश्व-चैंपियन की उपाधि खो चुका था।

टेरी का आत्मविश्वास ऐसा टूट गया था कि चार महीने बाद उसकी ही मांग पर दिया गया दूसरा मौका भी उसे जिता न सका। कार्बेट ने ग्यारहवें राउंड में उसे फिर पछाड़ दिया।

—हरिजन निवास, किंग्सवे, दिल्ली-९

लड़ने को सदा तैयार रहने वाले एक राजनीतिज्ञ महोदय पत्रकार को इंटरव्यू दे रहे थे। पत्रकार ने पूछा —'क्या बचपन में भी आप ऐसे ही लड़ाकू थे?'

उत्तर मिला —'हां, अपनी उम्र के तमाम लड़कों को धुनक सकता था।'

पत्रकार बोल उठा —तब तो रोज ही क्लास में किसी न किसी के साथ आपकी लड़ाई ठनती रही होगी।

ठंडा उत्तर मिला —'नहीं, मेरी उम्र के सब लड़के अगली क्लासों में थे।'

* * *

राजनीतिज्ञ महोदय ने मित्र को अपने एक 'अनोखे' सपने का वर्णन सुनाया, जिसमें वे संसद में भाषण कर रहे थे।

मित्र ने जिज्ञासा की —'भला इसमें अनोखी बात क्या हुई?'

'अनोखी बात यह है कि जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि सचमुच मैं संसद में भाषण कर रहा था।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुत्व बल और गुरुत्वाकर्षण

डा. जगदीश लूथरा

यह तुम्हारा रोज का अनुभव है कि ऊपर को फेंकी गयी चीज साधारणतः पृथ्वी पर ही लौट आती है। पेड़ से टपका फल पृथ्वी की ही ओर गिरता है; ऊपर की ओर नहीं जाता। आकाश में उड़ता हुआ जहाज खराब होने पर पृथ्वी पर धड़ाम से गिरता है। इस प्रकार के अन्य कई उदाहरणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है, यानी हर वस्तु पर पृथ्वी एक आकर्षण-बल थोपती है। पृथ्वी के इस बल को गुरुत्व बल कहते हैं।

सदियों से मनुष्य इस बल के स्वरूप को जानने का यत्न करता रहा है। आज हम यह तो जानते हैं कि यह किस तरह कार्य करता है। परंतु आज भी हम यह नहीं जान पाये हैं कि यह गुरुत्व बल है क्यों? साढ़े तीन सौ साल पहले इटली के विज्ञानी गेलिलियो ने एक प्रयोग किया था। उन्होंने दो गेंदें लीं—एक ठोस लोहे की थी, दूसरी लकड़ी की। उन्हें उन्होंने पीसा की झुकी मीनार से नीचे की ओर छोड़ दिया। दोनों गेंदें एक ही समय पर एक ही वेग से धरती से टकरायीं और उनके गिरने की दर पर आड़ी गति (लेटरल मोशन) का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसका मतलब यह है कि यदि हम एक मीनार से पृथ्वी की सतह के समानांतर दिशा में गोला दागें और उसी समय दूसरा गोला नीचे की ओर सीधा छोड़ दें, तो दोनों गोले एक ही समय पर पृथ्वी पर गिरेंगे।

तुमने यह मशहूर किस्सा सुना है कि आइजक न्यूटन एक बाग में बैठे चिंतन कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक सेब पेड़ से नीचे की ओर गिरा। उन्होंने इस बात पर विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पृथ्वी प्रत्येक वस्तु पर एक आकर्षण-बल आरोपित करती है। यह किस्सा कहां तक सच है, कहा नहीं जा सकता। परंतु यह जरूर कहा जा सकता है कि यदि न्यूटन ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

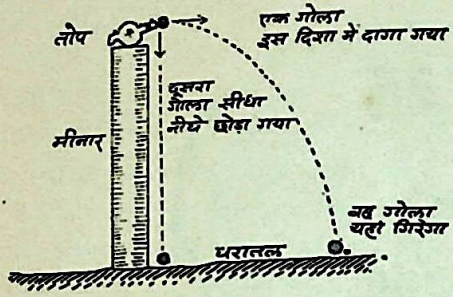

इस बारे में कोई चिंतन किया था, तो वह यह था कि सेब पृथ्वी की ओर ही क्यों गिरा, आकाश में ऊपर की ओर क्यों नहीं चला गया ? क्योंकि न्यूटन के जमाने में यह सर्व-विदित था कि पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है।

न्यूटन ने यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी द्वारा वस्तुओं पर लगाया जाने वाला बल पृथ्वी का ही कोई खास गुण नहीं है, बल्कि प्रत्येक वस्तु चाहे वह छोटी हो या बड़ी, एक ही बल से किसी भी अन्य वस्तु को अपनी ओर खीचती है, जिसे हम गुरुत्वाकर्षण का बल कहते हैं। इसी गुरुत्वाकर्षण-बल के कारण ग्रह और उपग्रह आपस में संतुलित रहते हुए अपनी कक्षाओं (पथों) में घूमते हैं।

प्रश्न उठता है कि यदि सेब भी पृथ्वी को अपनी ओर खींचता है, तो सेब ही पृथ्वी की ओर क्यों जाता है, पृथ्वी सेब की ओर क्यों नहीं चल देती ? इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है :

मान लो, तुम दो वस्तुओं को सरकाना चाहते हो, जिनमें एक बहुत भारी है और दूसरी काफी हल्की। तुम देखोगे कि हल्की वस्तु को तुम आसानी से सरका सकोगे।

दो पिंडों के बीच गुरुत्वाकर्षण-बल उन पिंडों के द्रव्यमानों के गुणनफल के सीधे अनुपात में और उनके बीच की दूरी के वर्ग के उलटे अनुपात में होता है। उदाहरण के लिए, एक मीटर की दूरी पर दो पिंडों के बीच का आकर्षण दस मीटर की दूरी पर रखे उन्हीं पिंडों के बीच के आकर्षण का सौ गुना होगा।

अब जरा देखें कि यह गुरुत्वाकर्षण हमें किस प्रकार प्रभावित करता है। हमारी पृथ्वी गोलाकार किस कारण है ? गुरुत्वाकर्षण के कारण। क्योंकि हर वस्तु हर दूसरी वस्तु को खींचती है और इस तरह पृथ्वी खिंचकर गोलाकार हो गयी है। इसी प्रकार तारों की उत्पत्ति में भी गुरुत्वाकर्षण का हाथ है। यदि धूलि का बहुत बड़ा बादल हो, तो उसके धूलि-कण आपस में एक दूसरे को खींचेंगे, इस तरह कुछ पिंड बन जायेंगे और वे पिंड आपस में खिंचकर बड़े तारे का रूप धारण कर लेंगे।

गुरुत्व-बल बड़ा ही विस्मयकारी है। हालांकि इसका खिचाव एक छोटे-से चुंबक के खिचाव से भी कमजोर है, परंतु यह हमारी पूरी जिंदगी को नियंत्रित करता है। हमारी पृथ्वी एक गोला है, जो भूमध्य रेखा पर १,५०० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चक्कर काटता रहा है। परंतु फिर भी हम उससे छिटक नहीं जाते, क्योंकि गुरुत्वाकर्षण-बल हमें दूर नहीं छिटकने देता। वही वायुमंडल को भी पृथ्वी के साथ अटकाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखता है। वही बादलों से पानी खींचता है और उसी की प्रेरणा से पानी नदी-नालों से बहता हुआ सागर में पहुंच जाता है। जब पानी वहां से भाप बनकर ऊपर उठता है और बादल का रूप लेता है, तो यह बल उसे अंतरिक्ष में विलीन हो जाने से बचाता है। इस प्रकार वर्षा का चक्र चलता रहता है। जब भूचाल इत्यादि आते हैं, तो बड़ी-बड़ी इमारतें भी इसकी वजह से नीचे गिरकर प्रलय का दृश्य उपस्थित करती हैं।

इतने सब चमत्कार करते हुए भी यह प्रकृति की एक अदना-सी शक्ति है। सारी पृथ्वी की गुरुत्व-ऊर्जा एक अश्वशक्ति (हार्स-पावर) का लाखवां भाग ही होगी। (एक सामान्य स्कूटर का इंजन १.५ हार्सपावर का होता है।) फिर भी इसकी जकड़न बड़ी ही तीव्र है। बड़ी जबर्दस्त तकनीकी प्रगति के बाद कहीं मनुष्य इसकी जकड़न से बाहर निकलने में सफल हो पाया है। हिसाब लगा-कर मालूम किया गया है कि यदि किसी वस्तु को ११.२ किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से छोड़ा जाये, तो वह पृथ्वी की जकड़न से बाहर चली जायेगी।

पृथ्वी पर लीवर जैसे मामूली से मामूली यांत्रिक उपकरण को कार्यविधि भी गुरुत्व पर निर्भर है। पेड़ और पौधों का विकास भी गुरुत्व द्वारा संचालित होता है। पौधों में एक तरह का गुरुत्व संवेदन होता है, जो उनकी जड़ों को नीचे की ओर और तनों को ऊपर की ओर अग्रसर करता है। हमारे शरीर का भार, लंबाई, अंग-विन्यास आदि भी गुरुत्व द्वारा नियंत्रित होते हैं। हमारा स्नायुतंत्र भी गुरुत्व से सुर मिलाकर चलता है। मां के पेट में बच्चे के विकास में भी गुरुत्व का हाथ है। यदि मेंढक के अंडे को वीर्य-सेचन के तुरंत बाद उलटा कर दिया जाये, तो बच्चा दो सिर वाला होगा।

पृथ्वी के सब स्थलों पर गुरुत्व का मान एक जैसा नहीं होता। पहाड़ों पर वह कम होता है, ध्रुवों पर ज्यादा। सपाट समुद्र-तल पर भी इसके मान में अंतर हो सकता है। यह मान इस पर निर्भर होता है कि पानी के नीचे वाली सतह में घनत्व कितना है। गुरुत्व-मान का यह हेर-फेर (विचरण) अगर धनात्मक है, तो इसका यह मतलब है कि समुद्र में क्रोम और निकल - अयस्क आदि भारी खनिजों के होने की संभावना है, और अगर हेर-फेर ऋणात्मक है, तो तेल या गैस के भंडारों की संभावना प्रकट होती है।

गुरुत्व को नियंत्रण में करने का कोई उपाय हमारे पास नहीं है और न हम किसी तरह उसे रद्द ही कर सकते हैं। अन्य ऊर्जाओं को हम अपनी इच्छा से पैदा कर सकते हैं, घटा-बढ़ा सकते हैं, उनकी दिशा बदल सकते हैं; परंतु गुरुत्व-ऊर्जा में ऐसा करना संभव नहीं है। वह हमेशा आकर्षित ही करती है; और न उसे कम किया जा सकता है या रोका जा सकता है।

सौर-मंडल में पृथ्वी दूसरे ग्रहों द्वारा आकर्षित होती है और दूसरों को खुद भी आकर्षित करती है, जिसके कारण अपनी धुरी पर चक्कर काटने की उसकी गति में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेर-फेर होता रहता है। पृथ्वी की सतह को सबसे अधिक प्रभावित करता है हमारे सबसे निकट के पड़ोसी चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण, जिसकी वजह से समुद्रों में ज्वार-भाटे आते हैं। सूर्य भी ज्वार-भाटे उत्पन्न करता है; परंतु उसकी ज्वार-भाटा पैदा करने की शक्ति चंद्रमा के मुकाबले में बहुत कम है।

ज्वार-भाटों से पृथ्वी पर हमारा जीवन-चक्र नियंत्रित होता है। वे समुद्री खाड़ियों से गंदगी और सड़े-गले पदार्थों को वहा ले जाते हैं। यदि ज्वार-भाटे बंद हो जायें, तो प्रकृति में वातावरण आदि का संतुलन-विगड़ जायेगा। ज्वार-भाटे की वजह से पृथ्वी के अपनी कीली पर घूमने पर असर पड़ता है, जिससे हमारे दिन लंबे होते जा रहे हैं। मगर लंबे होने की रफ्तार इतनी धीमी है कि १०० करोड़ साल बाद हमारा दिन २४ घंटे के बजाय ३० घंटे का हो जायेगा।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि गुरुत्व के उलटे बल (प्रतिगुरुत्व) का विकास करके हम गुरुत्व को काट सकते हैं। परंतु अभी तक कोई यह नहीं बता सका है कि गुरुत्व के नियम को किस तरह रद्द किया जा सकता है। अगर वैसा करना संभव हो गया, तो यह संसार कैसा होगा—इसकी अभी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अभी-अभी बड़े दिन का त्योहार हुआ। सांता क्लास ने सब ईसाई घरों के चक्कर लगाये। क्या आप जानते हैं ये सांता क्लास महाशय कौन हैं?

'सांता क्लास' शब्द 'संत निकोलास' शब्द का डच रूपांतर है। ईसाई संत निकोलास चौथी सदी में एशिया माइनर के बिशप थे। उन्हें यूनान, सिसली आदि अनेक प्रदेशों में बच्चों, स्कूली छात्रों, युवकों और नाविकों का रक्षक-संत माना जाता है। और तो और, साहूकारी के धंधे से भी उनका संबंध जोड़ा जाता है। उनके बारे में तरह-तरह के किस्से प्रचलित हैं, जिनमें वे डूबते नाविकों को बचाते हैं, चोरों को पकड़ते हैं और गरीब घरानों की बेटियों के लिए दहेज जुटा देते हैं।

* * *

ग्राहकों की भीड़ को धकेलते हुए वे देवीजी काउंटर पर पहुंची और सेल्सगर्ल से बोली—'फौरन मुझे एक पौंड कुत्तों के बिस्कुट दो।' फिर उन्होंने पास खड़े सज्जन की ओर मुड़कर कहा—'बारी तो आपकी थी, मगर मुझे पहले चीज दे दी जाये तो आपको एतराज तो नहीं होगा ?'

'नहीं देवीजी, अगर आप इतनी भूखी हैं, तो मुझे बिलकुल भी एतराज नहीं।'

* * *

सरल सुलझावों की बहुतायत के साथ-साथ सरल समस्याओं की भयंकर कमी आज की अधिकांश कुंठाओं का कारण है।

—'रोटेरियन' से उद्धृत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी टाड लिंकन एक अभागिन

शायद ही आधुनिक विश्व के किसी राजपुरुष की पत्नी को वैसी उत्कट पीड़ा और तकलीफ झेलनी पड़ी हो, जितनी अमरीकी राष्ट्रपति लिंकन की हत्या के बाद उनकी पत्नी मेरी टाड लिंकन ने झेली। उस दर्प-भरी, अविवेकी और करुण महिला की व्यथा-कथा जस्टिन जी. टर्नर और लिंडा लेविट टर्नर की पुस्तक 'मेरी टाड लिंकन : लाइफ एंड लेटर्स' के आधार पर नेमिशरण मित्तल ने अगले पृष्ठों में प्रस्तुत की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरवरी १८६१ में वाशिंग्टन में अमरीका के राष्ट्रपति-भवन 'ह्वाइट हाउस' में एक ऐसा राष्ट्रपति रहने आया, जो लकड़ी के लट्ठों से बने झोंपड़े में जनमा था, जो अठारह वर्ष की अवस्था तक भाड़े की गाड़ी हांककर पेट पालता था, और जो देखने में निहायत मामूली देहाती नजर आता था।

किंतु उसकी पत्नी एक संपन्न परिवार में जनमी थी। ह्वाइट हाउस में घुसते ही उस महिला को लगा कि यह विशाल भवन न तो सुविधापूर्ण घर है और न अमरीकी राष्ट्रपति की गरिमा के अनुरूप सरकारी निवास ही। राष्ट्रपति की पत्नी यह भी जानती थी कि मुझे एक देहाती राष्ट्रपति की फूहड़ पत्नी समझा जा रहा है। उसने इस चुनौती का सामना करने तथा अपनी सामंती सुरुचि और राष्ट्रपति के वैभव का प्रदर्शन करने का संकल्प कर लिया। उसके प्रयत्नों से अमरीकी संसद (कांग्रेस) ने ह्वाइट हाउस की मरम्मत, सफाई-पुताई और बिछायत के लिए बीस हजार डालर की मंजूरी दे दी।

जब राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन सरकार बनाने में व्यस्त थे, मेरी टाड लिंकन खरीदारी के लिए फेहरिस्तें बनाने में निमग्न थी। लिंकन के राष्ट्रपति-पद संभालते ही दक्षिणी राज्यों ने अमरीकी संघ से अलग होने की घोषणा कर दी और अब्राहम लिंकन ने उनके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। १२ अप्रैल को फोर्ट समटर पर गोलाबारी शुरू हो गयी। किंतु मेरी लिंकन राष्ट्रपति-भवन की साज-सज्जा में दत्तचित्त रही। जिस समय सेना के लिए भोजन और वस्त्रों की मांग हो रही थी, उस समय वह वाशिंग्टन, न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया के बाजारों से महंगी से महंगी चीजें खरीद रही थी।

मेरी टाड लिंकन को इस बात का भी होश न रहा कि कांग्रेस ने उसे इस कार्य के लिए कुल बीस हजार डालर दिये हैं। सामान का बिल २६,७०० डालर तक जा पहुंचा। ६ हजार ७ सौ डालर की अतिरिक्त राशि के भुगतान का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। उसमें यह साहस न था कि स्वयं इस बारे में राष्ट्रपति से कुछ कहे। उसने सार्वजनिक भवनों के आयुक्त मेजर बेंजामिन ब्राउन फ्रेंच को राष्ट्रपति के पास भेजकर यह कहलाया कि आप अपने विशेष अधिकार का प्रयोग करके इस अतिरिक्त राशि के भुगतान की अनुमति दे दें।

यह फरमाइश सुनकर लिंकन हक्के-बक्के रह गये और दृढ़ स्वर में बोले—'नहीं, मैं इस राशि की स्वीकृति किसी भी हालत में नहीं दूंगा। इसे मैं अपनी जेब से भर दूंगा। अमरीकी जनता को जब यह मालूम होगा कि उसके राष्ट्रपति ने इस पुराने-से रद्दी मकान पर कांग्रेस द्वारा निर्धारित बीस हजार डालर से अधिक राशि खर्च कर डाली है, तो उसे बेहद कष्ट होगा, विशेषतः ऐसी स्थिति में जब हमारे पास सैनिकों को जाड़े से बचाने के लिए काफी कंबल भी नहीं हैं।'

आखिर कांग्रेस ने इस अतिरिक्त राशि को अगले वर्ष के बजट में शामिल करके उसके भुगतान की समस्या तो सुलझा दी;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन अपने परिवार के लिए मेरी जो वस्त्र, आभूषण आदि खरीदती थी, उसका भुगतान तो उसे अपने पति के वेतन में से ही करना पड़ता था। लिंकन खर्च का हिसाब स्वयं रखते थे और आवश्यकता के अनुसार पैसा मेरी को देते थे। उधर मेरी को लगता था कि मुझे राष्ट्रपति की पत्नी की मर्यादा के अनुरूप साज-शृंगार रखना चाहिये। परिणाम यह हुआ कि लिंकन की जानकारी के बिना ही मेरी न्यूयार्क के बाजारों से अंधाधुंध खरीदारी करती रही और लिंकन पर कर्जा चढ़ता गया। मेरी ने यह बात अपने पति से छिपाये रखी।

राष्ट्रपति-भवन में मेरी के आने के एक दिन बाद ही श्रीमती जेफरसन डेविस ने पोशाक-निर्मात्री नीग्रो महिला एलिजाबेथ कैकले को उसके पास भेजा। मेरी ने उसे तत्काल अपनी सेवा में रख लिया। कैकले धीरे-धीरे मेरी की विश्वासभाजन बनती चली गयी, शायद अंत में विश्वासघात करने के लिए।

महंगी और फैशनेबल पोशाक और आभूषण पहनकर मेरी सराहना की आशा से राष्ट्रपति के सामने जाती; किंतु लिंकन थे कि उन्हें मेरी की ओर देखने की भी फुरसत न होती थी। हां कभी-कभी व्यंग्य जरूर कस देते थे। एक दिन मेरी साटिन की नयी पोशाक पहनकर लिंकन के पास गयी। पोशाक पीछे पांवों के नीचे घिसट रही थी। लिंकन उसे देखकर बहुत मजे में आ गये और बोले कि आज रात को हमारी बिल्ली की पूंछ बहुत लंबी हो गयी है।

मेरी पति की राष्ट्र-संबंधी चिंताओं से परिचित थी और उनके स्वास्थ्य और युद्ध दोनों के बारे में चिंतित रहती थी। वह उन्हें खूब खाने, खुली धूप में सैर के लिए जाने और बच्चों के साथ जी बहलाने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया करती थी। उनका बड़ा बेटा राबर्ट तब हारवर्ड स्कूल में पढ़ रहा था। दूसरा, ग्यारह वर्ष का बिली पिता पर पड़ा था। मेरी को वह बहुत प्रिय था। सबसे छोटा मां पर पड़ा था और उसी की तरह जल्दबाज, भावुक और जल्दी घबराने वाले स्वभाव का था। लिंकन को उससे बहुत प्यार था और वह इसका अनुचित लाभ उठाता था।

बिली परिश्रमी, अध्ययनशील, बुद्धिमान और सात्विक स्वभाव का था। फरवरी १८६२ के शुरू में उसे मामूली-सी ठंड लग गयी। आशा थी कि शीघ्र ही वह ठीक हो जायेगा; परंतु ज्वर बेकाबू हो गया और २० फरवरी को बिली चल बसा।

लिंकन और मेरी को इससे गहरा आघात लगा। लिंकन ने अपने विवेक के द्वारा व्यथा पर काबू पा लिया और वे राष्ट्र की समस्याओं में व्यस्त हो गये। किंतु मेरी तीन महीने तक भीषण शोक और वेदना से ग्रस्त रही। बीच-बीच में वह इतनी गहरी मानसिक-थकावट की शिकार हो जाती कि उसका शरीर हिल-डुल भी नहीं पाता था।

एक दिन लिंकन उसे स्नेहपूर्वक बांह से थामकर एक खिड़की के पास ले गये और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उससे बोले—'दूर पहाड़ी पर तुम वह सफेद इमारत देखती हो न? अपनी व्यथा पर काबू पाने की कोशिश करो, अन्यथा तुम पागल हो जाओगी और तुम्हें वहां भेजना पड़ेगा।' वह इमारत पागलखाने की थी। लिंकन को क्या मालूम था कि वे भविष्यवाणी कर रहे हैं और मेरी को जीवन के अंत में पागलखाने में रहना पड़ेगा।

व्यथा ने मेरी के स्नायु-संस्थान पर बुरा प्रभाव डाला था। उसके धार्मिक आचार-विचार में भी विचित्र परिवर्तन हो गया था। पहले वह आस्थावान ईसाई थी; किंतु विली की मृत्यु ने उसे मृत आत्माओं का आवाहन करने वाले ओझों के पीछे खूब भटकाया। एक-आध बार तो लिंकन भी 'मृतात्मा-आवाहन' में दर्शक के रूप में मेरी के साथ गये थे।

सन १८६३ के नववर्ष-दिवस पर मेरी से हुई अपनी बातचीत का विवरण लिंकन के एक पुराने मित्र सेनेटर आविल ब्राउनिंग ने अपनी डायरी में इस प्रकार दिया है—'श्रीमती लिंकन ने मुझे बताया कि पिछली रात वे मृतात्माओं का आवाहन करने वाली महिला श्रीमती लारी से मिलने जार्जटाउन गयी थीं। वहां उन्हें अपने नन्हें दिवंगत बेटे विली और दुनिया की अन्य बहुत-सी बातों के बारे में आश्चर्यजनक जानकारी मिली। उन्होंने मुझे इनमें से बहुत-सी बातें बतायीं और यह भी कहा कि राष्ट्रपति का मंत्रिमंडल उनका दुश्मन है तथा सभी मंत्री स्वार्थसिद्धि में लगे हैं, उन्हें शीघ्र ही पदच्युत कर दिया जायेगा।'

इनमें से अंतिम बात की चर्चा मेरी ने लिंकन से भी की थी। वस्तुतः मेरी को अमरीकी राजनीति षड्यंत्रों से भरपूर लगती थी और वह इस बारे में अपने पति को हमेशा कुछ न कुछ सलाह देती रहती थी। लिंकन इस बात से बहुत परेशान रहते थे। एक बार उन्होंने कहा था कि अगर मेरी की सलाह मानूं तो मुझे मंत्रिमंडल के बिनाही काम चलाना पड़ेगा।

मेरी एक अत्यंत सामान्य नारी थी। वह राष्ट्र की प्रथम महिला के पद की गरिमा को भूलकर स्थान-काल की मर्यादा का ध्यान रखे बिना आवेगों और उद्वेगों के अधीन हो जाया करती थी। वह स्वयं पुरुषों को रिझाने और उनका साहचर्य पाने में गर्व का अनुभव करती थी; किंतु यदि लिंकन किसी बुद्धिमती या आकर्षक युवती की ओर औपचारिकतावश भी ध्यान दें, तो वह आग-बबूला हो उठती थी। यह सचाई उसके दिमाग में पैठती ही न थी कि महिलाएं महज सौजन्यवश राष्ट्रपति के प्रति आकर्षण का प्रदर्शन करती हैं। वह तो यही मानती थी कि देर-सवेर ये संबंध प्रगाढ़ हो जाने पर वे राष्ट्रपति से कुछ न कुछ लाभ उठाने की कोशिश करेंगी।

दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के दो सप्ताह बाद लिंकन को सेनापति ग्रांट ने सिटी पाइंट (वरजीनिया) में अपने मुख्यालय के निरीक्षण के लिए आमंत्रित किया। मेरी ने भी राष्ट्रपति के साथ चलने का आग्रह किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन दिनों दोनों के बीच काफी तनाव था तथा मामूली-सी बातों पर झड़प हो जाया करती थी। २५ मार्च को श्रीमती ग्रांट और एक प्रमुख सेनाधिकारी एडम बेदू के साथ ऐंबलेंस गाड़ी में चढ़कर मेरी अग्रिम मोर्चे की ओर चली। बेदू ने मेरी को बताया कि आगे घनघोर युद्ध चल रहा है; अतः महिलाओं को पीछे ही रखने का आदेश है—केवल सेनापति चार्ल्स ग्रिफिन की युवा पत्नी को राष्ट्रपति ने अग्रिम मोर्चे तक जाने की अनुमति दे रखी है।

अब्राहम लिंकन और मेरी टाड लिंकन ने जीवन में कभी साथ फोटो नहीं खिंचवायी। लिंकन अपनी पत्नी से पूरे एक फुट ऊंचे थे। यह चित्र उनके दो अलग फोटोग्राफों को जोड़कर तैयार किया गया था।

यह सुनकर मेरी ने सोच लिया कि अनुमति प्राप्त करने के लिए निश्चय ही श्रीमती ग्रिफिन ने राष्ट्रपति से एकांत में भेंट की होगी। वह भड़क उठी और बेदू से बोली—'क्या आपको मालूम नहीं कि मैं राष्ट्रपति को किसी भी महिला से एकांत में मिलने की अनुमति नहीं देती हूं?' उसने ऐंबुलेंस रुकवायी और यह कहती हुई उसमें से कूद पड़ी कि मुझे इस बारे में राष्ट्रपति से चर्चा करनी है।

अगले दिन राष्ट्रपति घोड़े पर चढ़कर सेनाओं के निरीक्षण के लिए चले। उनके साथ मेजर-जनरल ओ. सी. ओर्ड थे। श्रीमती ग्रांट के साथ धीमी चाल वाली ऐंबुलेंस गाड़ी के जरिये मेरी जब परेड-स्थल पर पहुंची, तो राष्ट्रपति परेड का निरीक्षण कर रहे थे। वहां उसे पता चला कि परेड-स्थल तक राष्ट्रपति के साथ मेजर-जनरल की सुंदर पत्नी भी थी, तो उसके मन में यह खटका हुआ कि निश्चय ही सैनिकों ने श्रीमती ओर्ड को राष्ट्रपति की पत्नी समझा होगा, और वह क्रोध से पागल हो उठी।

जब श्रीमती ओर्ड स्वागत करने आगे बढ़ीं तो मेरी ने उस पर गालियों की बौछार कर दी। इस अप्रत्याशित प्रहार से बेचारी श्रीमती ओर्ड रो पड़ीं तथा सब लोग राष्ट्र-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पति से आंखें बचाकर खामोश खड़े रहे।

बेदू की डायरी से यह भी पता चलता है कि श्रीमती ग्रिफिन और श्रीमती ओर्ड के प्रसंगों को लेकर मेरी उनके पतियों तथा अन्य सैनिक अधिकारियों के सामने ही बार-बार लिंकन को धिक्कारती रही और बेचारे लिंकन ईसा मसीह की तरह खामोशी के साथ उस प्रताड़ना और अवमानना को सहते रहे।

दूसरी ओर मेरी के निजी जीवन में राष्ट्रपति के प्रमुख समर्थक, अविवाहित सेनेटर चार्ल्स समनर का लगभग स्थायी स्थान बन गया था। समनर पचास-एक वर्ष का सुंदर व्यक्तित्व वाला बुद्धिमान, शालीन और कुलीन सार्वजनिक कार्यकर्ता था, जिसकी एकांतप्रियता में सामंती दर्प की गंध आती थी। वह अच्छा वाग्मी और सेनेट का प्रभावशाली सदस्य था। वैयक्तिक स्वतंत्रता और नीग्रो जाति की प्रगति का वह प्रबल प्रवक्ता था तथा मानता था कि दक्षिणी राज्यों ने संघ एवं मानवता के विरुद्ध अक्षम्य अपराध किया है। अतः उन्हें पूरी तरह दबाया जाना चाहिये।

कुछ लोग सोचते थे कि समनर मेरी की मित्रता का उपयोग राष्ट्रपति को दासमुक्ति और राष्ट्र के पुनर्गठन संबंधी अपने विचारों के अनुकूल मोड़ने के लिए कर रहा है। कुछ का खयाल था कि लिंकन ने ही अपने प्रयोजनों की पूर्ति के लिए मेरी को उसके हवाले कर दिया है।

समनर ने मेरी की मित्रता शायद यह सोचकर स्वीकार की थी कि राष्ट्रपति अपनी पत्नी को उसके स्तर के अनुरूप गरिमामय आचरण का प्रशिक्षण नहीं दे पा रहे हैं, मैं यह करूंगा।

इसके अतिरिक्त, मेरी का पालन-पोषण दक्षिणी राज्य केन्टकी में हुआ था, अतः प्रारंभ में उसे दक्षिण के प्रति अज्ञात सहानुभूति थी; किंतु लिंकन को जब दक्षिण के विरुद्ध युद्ध लड़ना पड़ा, तो उसका हृदय पूर्णतया दासप्रथा-विरोधी हो गया। समनर स्वयं दासप्रथा का कट्टर विरोधी था। उसने शायद यह तय कर लिया था कि राष्ट्रपति को न सही, उनकी पत्नी को तो उग्रवादी बना दिया जाये, और इस प्रयास में वह बड़ी सीमा तक सफल हुआ।

राष्ट्रपति-भवन में समनर के आवागमन का राजनीतिक दृष्टि से कोई महत्त्व रहा हो या नहीं, किंतु उसके और मेरी के लिए वह सदा सुखद रहा। मेरी के वैधव्यकाल में भी यह संबंध वैसा ही बना रहा। मेरी को कांग्रेस से पेंशन दिलाने के लिए समनर ने कठोर परिश्रम किया।

विली की मृत्यु के पश्चात् पहली बार मेरी नवंबर १८६२ में वाशिंग्टन से बाहर गयी — उत्तर-क्षेत्र की यात्रा पर। इस समय तक वह अपनी भीषण व्यथा से उबर आयी थी। यात्रा के दौरान लिंकन को पहला पत्र उसने २ नवंबर को न्यूयार्क से लिखा :

मेरे प्रिय पति,

तुम्हारे समाचारों की प्रतीक्षा व्यर्थ रही, फिर भी क्योंकि तुम पत्र लिखने के अभ्यस्त नहीं हो, अतः उदारता का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तकाजा है कि तुम्हारी चुप्पी का वही कारण सही मानना चाहिये। वाशिंग्टन से आने वाले अजनबी लोग मुझे बताते हैं कि तुम ठीक हो। तुम्हारा नाम प्रत्येक व्यक्ति के ओठों पर है और हर घंटे तुम्हारे कुशल-मंगल के लिए प्रार्थनाएं और सदिच्छाएं ऊपर भेजी जाती हैं। मैक्केलान् और उसकी मंद गति की भी सर्वत्र चर्चा है। इस अनुकूल मौसम को यों ही गुजर जाने देना उत्तर-क्षेत्र के लोगों को कष्ट दे रहा है।

नन्हा, प्यारा टैड ठीक है और खूब आनंद ले रहा है। जनरल एंडरसन, उनकी पत्नी और मैं कल जनरल स्काट से मिलने गये थे। वे गठिया से ग्रस्त हैं, फिर भी खुश नजर आते हैं। जब से मैं यहां आयी हूं, बहुत-से लोग मुझसे कहते हैं कि यदि लिंकन जनरल मैक्के लान् के स्थान पर किसी अन्य सेनापति को युद्ध का संचालन सौंप दें, तो हम उन्हें पूजने लगेंगे। घमासान युद्ध के लिए यह अत्यंत अनुकूल मौसम है।

टैड के लिए मुझे दो जोड़ी कपड़े बनवाने पड़े, जिनका बिल २६ डालर का बैठा है। गाड़ीवान की गाड़ी को बाहर से ढंकने के लिए कुछ ऊनी लपेटन खरीदना पड़ेगा और लिजी (एलिजाबेथ) कैकले ने मुझसे ३० डालर उधार मांगे हैं। इस तरह कुल मिलाकर मुझे तुमसे सौ डालर के चेक की मांग करनी पड़ रही है। यह राशि इन चीजों पर तत्काल ही खर्च हो जायेगी। मैं यहां से बृहस्पतिवार को बोस्टन के लिए निकलना चाहती हूं, अतः चेक मंगलवार तक भेज सको, तो आभार मानूंगी।

तुम्हारी ओर से केवल यह पंक्ति ही मिल जाये कि तुम्हें यदा-कदा हम लोगों की याद आ जाती है, तो मैं उसका साभार स्वागत करूंगी।

तुम्हारी अत्यंत विश्वस्त,
मेरी लिंकन

पुनश्च : मैं श्री स्टेवर्ट का एक पत्र संलग्न कर रही हूं। वे अपने तरुण मित्र के बारे में बहुत आतुर प्रतीत होते हैं। स्टेवर्ट कट्टर एकतावादी हैं और काम-काज के लिए बहुत कम कहते हैं। यदि तुम्हें उचित लगा, तो शायद उन्हें उपकृत करना भूलोगे नहीं।

इस पत्र में जिस सेनापति मैक्केलान् का उल्लेख है, उसे इस पत्र के शीघ्र बाद ही हटा दिया गया था। श्री स्टेवर्ट न्यूयार्क के एक बहुत बड़े व्यापारी थे, जो आयातित माल बेचते थे। मेरी ने उनके यहां से बहुत-सा सामान खरीदा था और उसे उनकी एक बहुत बड़ी राशि चुकानी थी।

लिंकन १८६४ में दुबारा राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव में खड़े हुए इस चुनाव के पूर्व और उसके दौरान सबसे अधिक चिंतित रही मेरी। कारण, उसने अंधाधुंध खरीदारी कर डाली थी और लगभग २७,००० डालर उसे न्यूयार्क के बाजार को चुकाने थे। इस भारी ऋण के बारे में उसने लिंकन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

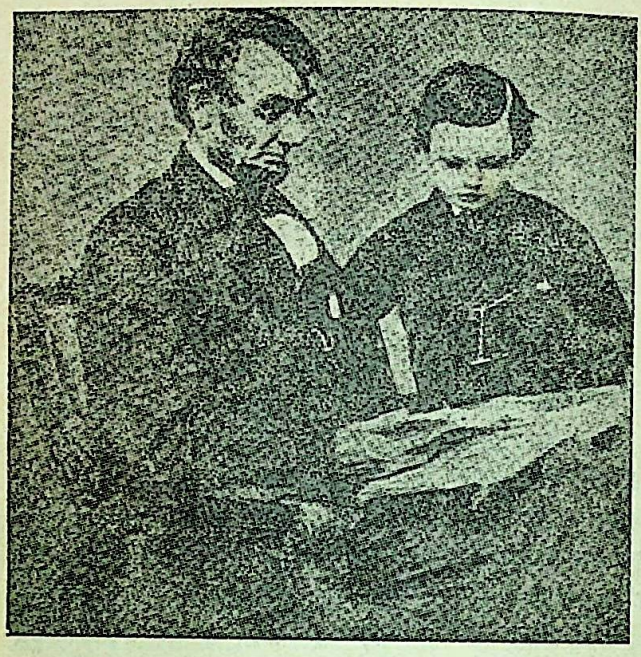

राष्ट्रपति लिंकन अपने कनिष्ठ पुत्र टैड के साथ (१८६४)

सदस्यों को बुलाकर उनके भ्रष्टाचार की चर्चा उनके मुंह पर की। इससे बात बन गयी और कुछ रकम जमा हो गयी; मगर पूरा ऋण नहीं चुक पाया। फिर ऋण तो बढ़ता ही जाता था; क्योंकि मेरी का हाथ तो रुकता ही नहीं था। आगे भी कभी नहीं रुका। खरीदारी करना उसका व्यसन बन चुका था।

लिंकन दुबारा राष्ट्रपति चुन लिये गये। इसने अगले चार वर्ष के लिए मेरी को निश्चित कर दिया और उसने फिर अंधाधुंध ऋण का भार सिर पर ले लिया। इस बीच मेरी और लिंकन के संबंध बुरी तरह बिगड़ चुके थे, बहुधा वे आपस में बोलते तक न थे। लिंकन मेरी को मन के रहस्य नहीं बता सकते थे; क्योंकि वह विश्वसनीय नहीं रह गयी थी और स्वयं भी उनसे दुराव-छिपाव रखती थी। उसे लिंकन से अधिक प्रेम राष्ट्रपति-पद से था और उससे भी अधिक उनके वेतन से।

इन सब बातों ने लिंकन को बहुत अकेला कर दिया। वे खोये-खोये से सदा रहने लगे।

को कुछ भी नहीं बताया था। केवल कैकले को इस बारे में पूरी जानकारी थी।

ऋण चुकाने के लिए मेरी ने एक व्यवस्थित योजना तैयार की। उसने फैसला किया कि रिपब्लिकन दल के जिन राजनीतिज्ञों ने राष्ट्रपति लिंकन की कृपा से धन कमाया है, उन्हें कर्ज चुकाने में मदद करनी चाहिये, अन्यथा रहस्य खुल सकता है और चुनाव पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। १८६४ के शुरू से ही उसने यह अभियान चालू कर दिया। कई बार वह बात करते-करते रो पड़ती थी। लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। अंततः उसने दल के प्रमुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे अवसर बहुत कम आते थे; जब दिन-भर के कठोर परिश्रम से थके-हारे वे सोने के लिए जाते समय मेरी के कमरे में रुकते और उससे बात करते हों। मेरी तो इस अभाव की पूर्ति दूसरे पुरुषों के संसर्ग से कर लेती थी; लेकिन लिंकन के स्वभाव में वह सब नहीं था। तिस पर भी मेरी की शंकालु आंख उन पर गड़ी रहती थी। इसका भी उन्हें दुःख था।

लिंकन मेरी के निजी मामलों और घरेलू व्यवस्था में तनिक भी हस्तक्षेप नहीं करते थे। वे पत्नी-बच्चों को प्रसन्न रखने की पूरी कोशिश करते थे और उनके प्रति अपने दायित्वों को पहचानते थे।

उस दिन १८६५ के अप्रैल की १४ वीं तारीख थी। सवेरे ही राष्ट्रपति अपनी धर्म-पत्नी को साथ लेकर नेवी यार्ड की तरफ घूमने निकल पड़े। कोचवान गाड़ी धीमे-धीमे हांक रहा था और लिंकन अपने हाथ में मेरी का हाथ लेकर अतीत से भविष्य तक यथार्थ और कल्पना के जगत् को लांघ रहे थे। अचानक उनका हृदय भर आया और वे रुंधे गले से बोले—'देखो मेरी, युद्ध और विली की मृत्यु के कारण हम काफी समय से उदास रहे हैं। अब तुम्हें अधिक प्रसन्न रहने की कोशिश करनी चाहिये।' शायद लिंकन को यह एहसास हो गया था कि जीवन-भर साथ रहने के बाद विदा की घड़ी निकट आ गयी है। पर शायद उन्हें यह बोध न था कि वह घड़ी बहुत ही करीब आ गयी है।

उसी शाम को राष्ट्रपति लिंकन विजय के उपलक्ष्य में मेरी के आदेश पर आयोजित नृत्य-नाटिका देखने फोर्ड थिएटर को चले। वे और मेरी थिएटर के भीतर राष्ट्रपति-बाक्स में जा बैठे। उस शाम वहां केवल एक प्रहरी था—जान एफ. पार्कर। कुछ ही दिन पहले मेरी ने बिना किसी प्रकार की जांच-पड़ताल कराये, उसे राष्ट्रपति भवन में ड्यूटी पर तैनात कराया था। उसे क्या मालूम था कि वह राष्ट्रपति का शत्रु है!

राष्ट्रपति अपनी विशेष हिंडोला-कुर्सी में बैठे नाटिका देख रहे थे और मेरी ने अपनी कुर्सी उनके एकदम समीप खींच ली थी। सवेरे के घूमने में उन दोनों ने जो समीपता अनुभव की थी, वह इस समय गहरा रही थी और दोनों उसमें डूब-उतरा रहे थे। मेरी धीरे-से लिंकन की बांह पर झुकी और उनकी गोदी में अपना सिर रखकर फुसफुसायी कि मिस हैरिस (पास में बैठी सचिवा) यह देख क्या सोचेगी। लिंकन ने धीरे-से कहा कि कुछ नहीं, वह कुछ नहीं सोचेगी।

इसी समय पार्कर बेचैन हो उठा और अपनी जगह से हटकर पीछे चला गया। उसने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था कि दिन में किसी ने राष्ट्रपति-बाक्स के द्वार में वह छोटा-सा छेद बना दिया था, जिसमें से भीतर की गतिविधि पर निगाह रखी जा सकती थी। शायद यह सब उसकी सहमति से ही हुआ था।

अचानक थिएटर के भीतर एक तेज धमाका हुआ ..... गोली छूटने की आवाज मेरी की चीख सबने सुनी और देखा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने हाथ बढ़ाकर लिंकन को फर्श पर गिरने से बचाया। हत्यारे जान विल्किस बूथ ने राष्ट्रपति को गोली मार दी थी और वह मंच पर गर्वपूर्वक दर्शकों को अपना चेहरा दिखाकर बाहर तैनात घोड़े पर सवार होकर भाग चुका था।

राष्ट्रपति को सड़क के उस पार के एक मकान में ले जाया गया और चिकित्सकों की खोज शुरू हुई। मेरी राष्ट्रपति के बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठी विलाप करती और हाथ मलती रही। स्नेहपूर्वक वह बारबार पति को उनके घरेलू नामों से पुकारती और आंख खोलने की प्रार्थना करती। मगर अचेत लिंकन तो अपने मानसिक एकांत का क्षितिज लांघकर किसी दूसरे चैतन्यलोक में पहुंच चुके थे। अंत में मेरी ने बेटे टैड को बुला भेजा कि अपने प्रिय पुत्र की पुकार पर ही शायद लिंकन आंखें खोल दें। टैड तो नहीं, राबर्ट आया और मां को समझाने लगा।

रात गहराने लगी, लोग आते-जाते रहे। समनर भी आया, मगर मेरी कुछ न बोली। बोलती भी क्या, वह वटवृक्ष ही धराशायी हो गया था, जिसकी छाया-तले वह निर्द्वंद्व कल्लोल-क्रीड़ा करती रही थी। सवेरे छः बजे बाहर तेज बारिश शुरू हो गयी। और भीतर राष्ट्रपति की सांस उखड़ने लगी। ७ बजकर २२ मिनिट पर लिंकन अपना पार्थिव अवशेष इस जगत् को सौंपकर परलोक सिधार गये।

पिता की सांस रुकते ही रोता हुआ राबर्ट खामोश हो गया। अब वह परिवार का मुखिया हो गया था, इस नाते उसे अपने दायित्व का बोध हुआ। मां की बांह पकड़कर वह उसे आहिस्ते-से उस कमरे से बाहर ले गया। मेरी वापस राष्ट्रपति भवन में पहुंची और चिल्लायी —'हे मेरे भगवान, हाय, मैंने अपने पति को मर जाने दिया!'

मेरी की चेतना धीरे-धीरे लुप्त होती चली गयी। उसे यह बोध ही नहीं हुआ कि लिंकन का शव कब राष्ट्रपति-भवन में लाया गया। राष्ट्रपति का ताबूत रखने के लिए तैयार किये जा रहे मंच में कीलें ठोंकने की आवाज, श्रद्धांजलि अर्पित करने आये हजारों लोगों की पदचाप और गिरजाघर की घंटियों की करुण ध्वनि, जब मेरी के कानों में पड़ रही थी, तब भी वह कुछ नहीं समझी। बेसुध-सी आंखें फाड़-फाड़कर बस वह इधर-उधर देखती रही : पूर्व दिशा में जिस कमरे में लिंकन का शव अमरीकी झंडे में लिपटाकर राजसी शोक की अवस्था में रखा गया था, उसमें अर्धविक्षिप्त मेरी एक बार भी नहीं गयी।

१९ अप्रैल को अंतिम प्रार्थना हुई, तो उसमें भी वह नहीं थी; अकेले राबर्ट ने परिवार का प्रतिनिधित्व किया। न राष्ट्रपति के प्रधान-कार्यालय में ही वह गयी, जहां विशाल गुंबद के नीचे लिंकन का शव पूरे एक दिन रखा रहा। पति की मृत्यु ने उसकी चेतना हर ली थी।

अंततः २० अप्रैल की शाम को अब्राहम लिंकन उस मिट्टी में सोने के लिए लौट पड़े, जिसमें से वे उगे और जगे थे। इस अंतिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा में भी मेरी उनके साथ नहीं थी। वह राष्ट्रपति-भवन में भीषण शोक और उन्माद में अपने कमरे में छटपटा रही थी।

राष्ट्रपति-भवन सूना राजमहल-सा लग रहा था, जिसके सबके-सब पहरेदार मानो सो गये थे या भाग गये थे। लोग अपने प्रिय राष्ट्रपति के स्मृतिचिन्ह के तौर पर कीमती बर्तन, फर्नीचर, बिछायत, परदे, आदि राष्ट्रपति-भवन से ले जा रहे थे। बड़े शौक से ये सब वस्तुएं खरीदकर राष्ट्रपति-भवन को सजाने वाली मेरी को इसका बोध तक न था।

धीरे-धीरे पीड़ा और आघात से मेरी उबरी। उसका सामान बड़ी-बड़ी पेटियों में भर दिया गया और उसे शिकागो भेजने की तैयारियां होने लगीं। मेरी ने वहां बसने का निश्चय किया था। नये राष्ट्रपति एंडरू जान्सन ने शालीनतापूर्वक मेरी को डेढ़ महीने से ऊपर राष्ट्रपति-भवन में रहने दिया। लेकिन इस अवधि में न तो उसने मेरी से मिलकर समवेदना प्रकट की और न कोई समवेदना-संदेश ही उसके पास भेजा।

शायद जान्सन को मालूम था कि मेरी उसे बहुत नापसंद करती है तथा जनता को भड़काने वाला स्वार्थी राजनीतिज्ञ (डेमेगॉग) कहा करती है। लेकिन उसे यह पता नहीं था कि मेरी उसका नाम लिंकन की हत्या के षड्यंत्र में कातिल बूथ के साथ जोड़ रही है। इस बारे में मेरी ने अपनी मित्र सेली ओर्न को लिखा था :

'मेरी वेदना इस विचार से तीव्रतर हो गयी है कि राष्ट्रपति जान्सन को मेरे पति की हत्या के षड्यंत्र के बारे में पहले से पूरी जानकारी थी। बूथ का विजटिंग कार्ड जान्सन के संदूक में कैसे मिला ? आखिर कोई न कोई परिचय तो उनके बीच रहा होगा।.....बूथ ने कहा तो था कि एक बात ऐसी है, जो मैं नहीं बताऊंगा। जान्सन ने मेरे संततुल्य पति की मृत्यु पर कहीं भी शोक प्रकट नहीं किया। उसने मुझे भी समवेदना की एक पंक्ति तक लिखकर नहीं भेजी और मेरे साथ अत्यंत बर्बर व्यवहार किया।..... मुझे पक्का विश्वास है कि जान्सन का मेरे पति की हत्या में हाथ था।'.....

असल में बात यों थी कि कातिल बूथ हत्या से बहुत पहले एक बार उपराष्ट्रपति जान्सन से मिल चुका था। हत्या के दिन भी वह उपराष्ट्रपति के सरकारी निवास-स्थान कर्कवुड हाउस होटल गया था। वहां वह जान्सन अथवा उसके सचिव विलियम ब्राउनिंग से मिलना चाहता था। लेकिन उन दोनों में से कोई भी वहां नहीं था। अतः बूथ अपने विजटिंग-कार्ड पर यह लिखकर—'मैं आपकी शांति भंग नहीं करना चाहता। क्या आप घर पर हैं ?' उसे ब्राउनिंग की पत्रपेटी में छोड़ आया था। ब्राउनिंग ने बाद में जान्सन को परेशानी में डालने के लिए और यह सोचकर कि आखिर कार्ड जान्सन के लिए ही तो था, उसे उसके सामान में रख दिया था।

मेरी दो तर्क और देती थी—'षड्यंत्रकारियों में से एक जेफरसन डेविड पर इसीलिए मुकद्दमा नहीं चलाया गया है, ताकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे रहस्य खोलने का अवसर नहीं मिले। इसके अलावा जान्सन के घनिष्ठ मित्र तट-कर-अधिकारी प्रेस्टन किंग ने आत्महत्या क्यों की? उसे सारे मामले की जानकारी थी; वह पाप के उस भार को अधिक समय तक अपने अंतःकरण पर झेल नहीं पाया। ये लोग उसे पागल कहते हैं। यह सब पाखंड है।'

२३ मई १८६५ को सिर से पांव तक काले वस्त्रों में लिपटी विधवा मेरी राष्ट्रपति-भवन से शिकागो रवाना हुई। उसे विदाई देने बहुत कम लोग आये थे।

राष्ट्रपति-भवन छोड़ने से पहले मेरी की विक्षिप्तता दूर हो चुकी थी। इसका प्रमाण है विधवा महारानी विक्टोरिया के समवेदना-पत्र के उत्तर में १२ मई को उसका लिखा गरिमामय पत्र।

मेरी ने लिखा था—'महामहिम ने कृपापूर्वक मुझे जो पत्र भेजा, वह मुझे मिला। उसमें व्यक्त कोमल समवेदना के लिए मैं आपकी अत्यंत आभारी हूं। वे एक ऐसे हृदय के उद्गार हैं, जो अपनी व्यथा के जरिये उस गहन पीड़ा को समझने में समर्थ है; जिसमें मैं आज पीड़ित हूं। महोदया, विश्वास कीजियेगा, मैं हृदय से आपका आभार मानती हूं तथा गहनतम वेदना के इन क्षणों में भी महामहिम! आपकी निष्ठावान और कृतज्ञ मित्र हूं।'

पिता की मृत्यु के कारण बड़े बेटे राबर्ट को हारवर्ड स्कूल छोड़ना पड़ा। अब वह प्रतिदिन मैककैग और फुलर के यहां कानून के अध्ययन के लिए जाने लगा। शाम पड़े वह थका-मांदा शिकागो के उपनगर हाइड पार्क में तीन छोटे-छोटे कमरों के अपने नये घर में लौटता, जहां उसकी मां और छोटा भाई संकट झेलने में उससे सहारे और शक्ति की अपेक्षा रखते थे।

मेरी वैधव्य का विक्टोरिया-युगीन कर्मकांड पूरी तरह पाल रही थी। वैधव्य ने उसके स्वभाव के समस्त दोषों को स्थायी तौर पर उभार दिया था तथा वह बहुत सीमा तक असंतुलित हो गयी थी। उसने बाहर निकलना तथा घर पर भी लोगों से मिलना-जुलना बंद कर दिया था। वह स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने का बहाना पेश करती थी; परंतु इस आत्मनिर्वासन के पीछे हीनता का भाव था। वह उन लोगों से मिलना-जुलना नहीं चाहती थी, जिन्होंने उसे वैभव और सत्ता के दर्प के काल में देखा था। एक कारण यह भी था कि शिकागो में उसके अधिकांश परिचितों ने युद्धोत्तर काल में अच्छी-खासी कमाई की थी और उनके साफ-सुथरे घरों में नौकरों और समृद्धि का दर्शन होता था।

यों लिंकन लगभग पचहत्तर हजार डालर की संपत्ति अपने पीछे छोड़ गये थे। इसमें से कुछ तो सरकारी बचतपत्र थे, शेष नकद। उन्होंने कोई वसीयत नहीं की थी, अतः प्रचलित कानून के अनुसार यह संपत्ति मेरी और उसके दो बेटों में बराबर-बराबर बांट दी गयी और उसकी व्यवस्था का भार बेटों के वयस्क होने तक लिंकन के एक पुराने मित्र न्यायमूर्ति डेविस को सौंपा गया। सरकारी बचतपत्रों से कुल डेढ़ हजार रुपये वार्षिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आय होती थी। मेरी कहती थी कि यह आय तो एक क्लर्क के वेतन के बराबर है।

मेरी के परिवार को भुखमरी का शिकार होने का कोई खतरा न था; लेकिन यह आशंका अवश्य थी कि उसकी कर्जदारी के समाचार प्रकाशित होने लगेंगे। अतः मेरी ने अनेक लोगों से सहायता प्राप्त करने की चेष्टा की। वह प्रायः बताती थी कि मुझ पर सत्तर हजार डालर का ऋण है। वास्तव में वह राशि बीस हजार डालर के लगभग थी। वह इस ऋण की अदायगी के लिए प्रयत्नशील थी; मगर उसके तरीके बड़े अनोखे थे।

अलेक्जांडर विलियम्सन ह्वाइट हाउस के जमाने में उसके बच्चों का शिक्षक रहा था, जिसे लिंकन के सामने ही वित्त-विभाग में क्लर्क की नौकरी दे दी गयी थी। मेरी ने उसकी सहायता ली। वह मेरी की ओर से कांग्रेस के सदस्यों में यह प्रचार करता था कि लिंकन के पूरे कार्यकाल का शेष वेतन मेरी को दिया जाना चाहिये। वह मेरी के लेनदारों से मिलकर राशि कम कराने की कोशिश भी करता था। समय-समय पर वह मेरी की अनुपयोगी वस्तुओं की बिक्री भी करता था। उसका सबसे कठिन कार्य था मेरी के लिए सहायता एकत्र करना। वह यह प्रकट नहीं करता था कि मैं मेरी के लिए कमीशन पर काम करता हूं, पर सचाई यही थी। विलियम्सन अपने किसी भी काम में सफल नहीं हो सका।

२१ दिसंबर १८६५ को अमरीकी संसद्

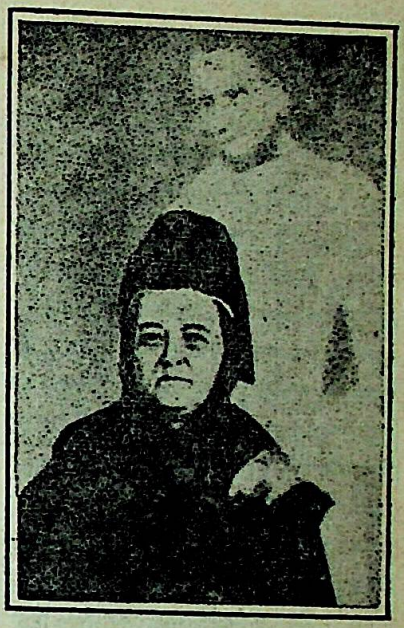

एक प्रेतविद्या-विश्वासी ने मेरी टाड लिंकन का यह अंतिम फोटो खींचा और इसमें उसके स्वर्गीय पति के प्रेत को भी घुसा दिया। श्रीमती लिंकन को स्वयं भी प्रेतविद्या में विश्वास था।

ने मेरी को दिवंगत राष्ट्रपति का एक वर्ष का वेतन देने का निश्चय किया। यह राशि २५,००० डालर बनी। इससे पहले भी राष्ट्रपतियों की विधवाओं को इतनी राशि ही दी गयी थी। परंतु मेरी ने इससे कहीं अधिक की आशा की थी। उसने इससे शिकागो की वेस्ट वाशिंग्टन स्ट्रीट पर एक शानदार बंगला खरीदा और जून १८६६ में मेरी और टैड उसमें आ गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एंडरू जान्सन राष्ट्रपति के रूप में देश का दौरा करते हुए ५ सितंबर को शिकागो पहुंच रहा था। मेरी ने उसके प्रति अवहेलना प्रदर्शित करने के लिए और संभवतः उसकी ओर से अवहेलनापूर्ण व्यवहार की संभावना को टालने के लिए, लिंकन की समाधि के दर्शन के लिए स्प्रिंगफील्ड जाने का कार्यक्रम बनाया और वकालत में लिंकन के भूतपूर्व साझीदार विलियन हर्नडन को इसकी सूचना दी। हर्नडन उससे पहले ही राबर्ट को लिख चुका था कि यदि श्रीमती लिंकन अपने पति के कुछ संस्मरण मुझे सुना सकें तो मैं उनका आभार मानूंगा; क्योंकि मैं लिंकन के बारे में लेखन और भाषण की योजना बना रहा हूं।

५ सितंबर को सवेरे सेंट निकलस होटल में हर्नडन मेरी से मिला। मेरी ने लिंकन के निजी जीवन के बारे में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर असाधारण सौजन्य और बुद्धिमत्ता से दिये। भोलेपन में वह यह भी कह गयी कि लिंकन एक धर्मप्राण और सच्चे अर्थ में ईसाई भद्र-पुरुष थे, तथापि वे औपचारिक रूप से किसी भी ईसाई संप्रदाय में दीक्षित नहीं हुए थे।

हर्नडन को वस्तुतः लिंकन से ईर्ष्या थी और वह आत्मीयता की ओट में उनकी तस्वीर को धुंधला करना और सनसनी फैलाना चाहता था। १६ नवंबर को उसने स्प्रिंगफील्ड में लिंकन की स्मृति में आयोजित भाषणमाला में चौथा भाषण दिया। इसमें उसने कहा कि मैं भूतपूर्व राष्ट्रपति का अंतरंगतम मित्र था। लिंकन ने मेरी टाड से विवाह किया और वे २३ वर्ष उसके साथ जिये, किंतु वे उससे प्रेम नहीं करते थे। उनके प्रेम की पात्र थी एक सराय-मालिक की बेटी एन रट्लेज। लिंकन अपनी संपूर्ण आत्मा से उससे प्रेम करते थे। वे उससे पहली बार अपनी वीसी में इलिनाय के न्यूसलेम में मिले थे।

दरअसल हर्नडन ने कहीं इस बारे में कुछ सुन लिया था। १८६६ में वह न्यूसलेम की मेनार्ड काउंटी गया तथा वहां उसने अपनी पूर्व-निश्चित धारणा के आधार पर इस बारे में बहुत लोगों से पूछताछ की। यह बात सही है कि लिंकन रट्लेज से परिचित थे और उनकी मृत्यु पर उन्हें खेद भी हुआ था; लेकिन हर्नडन ने जो मनगढ़ंत प्रेमकथा रच डाली थी, उसमें कोई सार नहीं था। एन रट्लेज के पति जान मैक्नामार ने भी इसे असत्य बताया।

किंतु मेरी के लिए तो यह एक बहुत बड़ा आघात था। वह तिलमिला उठी और उसे इसका अफसोस होने लगा कि मैंने इस धूर्त को यह क्यों बताया कि लिंकन किसी भी ईसाई संप्रदाय में विधिवत् दीक्षित नहीं हुए थे, यह अवश्य ही इस बात को लेकर मेरे पति पर कीचड़ उछालेगा। अपने बचाव की चिंता में उसने एक पत्र अपने पति के मित्र न्यायमूर्ति डेविस को लिखा, जिन्हें लिंकन ने सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया था और जो लिंकन की मृत्यु के बाद उनकी संपत्ति के प्रबंधक बने थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी ने इस पत्र में हर्नडन के लिए बहुत कठोर शब्दों और अभद्र भाषा का प्रयोग किया।

एक साल तक शिकागो के बंगले में रहने के बाद मेरी को विवश होकर उसे किराये पर चढ़ाना पड़ा। छोटे बेटे टैड की समुचित शिक्षा को वह अब और नहीं टाल सकती थी। १४ वर्ष का होकर भी टड अनपढ़ था। उसे कपड़े पहनने का शऊर भी न था। मेरी ने अपने लिए क्लिफ्टन हाउस में सस्ते कमरे किराये पर लिये और टेड को एक वर्ष के लिए शिकागो अकादमी में भरती करा दिया।

मेरी निरंतर दरिद्रता के एहसास से पीड़ित रहती ही थी। अब उसने कुछ पैसा बनाने का अंतिम प्रयास करने का भी निर्णय किया। उसके पास बहुत-से गाउन, रोएंदार ऊनी वस्त्र, शाल, बुनी हुई मीलों लंबी झालरें, आभूषण और तरह-तरह की कीमती चीजें थीं, जो अब वैधव्य के शाश्वत शोक में उसके किसी काम की नहीं रही थीं। उसने इन वस्तुओं को न्यूयार्क ले जाकर वहां के बाजारों में बेच देने का निश्चय किया। परंतु यह एक कांड ही बन गया।

मेरी और उसकी पोशाक-निर्मात्री एलिजाबेथ कैकले के बीच काफी कटुता उत्पन्न हो गयी थी; इसके बावजूद कैकले मेरी के आग्रह पर उससे मिलने न्यूयार्क आ पहुंची। मेरी ने कैकले से कहा कि समाचार-पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों से मैंने दलाली और आढ़त का काम करने वाली डब्लू. एच. ब्रेडी एंड कंपनी का पता लगाया है। कैकले कंपनी के दफ्तर जाकर उसके भागीदार एस. सी. केज से मिली। केज ने उसे आश्वासन दिया कि हमारे मार्फत सामान बिकवाने से श्रीमती लिंकन को एक लाख डालर मिल जायेंगे। इसके लिए वे उन लोगों के नाम पत्र लिख दें, जिन्होंने राष्ट्रपति लिंकन से लाभ उठाया था। हम पत्र लेकर उन लोगों के पास जायेंगे। उन्हें जब मालूम पड़ेगा कि श्रीमती लिंकन आर्थिक कठिनाइयों के मारे अपने कपड़े बेच रही हैं, तो वे अवश्य ही उनकी सहायता के लिए कुछ पैसा दे देंगे। यदि वे सहायता से इन्कार करेंगे, तो हम उन्हें धमकी देंगे कि ये पत्र प्रकाशित कर दिये जायेंगे।

यह योजना बहुत ही ओछी थी; लेकिन मेरी ने उसे पसंद किया। पत्र तैयार हो गये और ब्रेडी उन्हें लेकर प्रमुख राजनीतिज्ञों के पास गया; लेकिन उन्होंने उसे भगा दिया। उसके बाद बिक्री के लिए कपड़ों का प्रदर्शन किया गया। लोग उन्हें देखने तो आये, लेकिन खरीदा किसी ने कुछ नहीं। अंततः दलाल ने यह योजना बनायी कि अब्राहम लिंकन के रक्त से सनी मेरी की पोशाक व अन्य वस्त्रों की प्रदर्शनी अमरीका-भर में घुमायी जाये और टिकट लगाकर कुछ कमाई की जाये। इसकी सूचना पाकर मेरी बहुत परेशान हुई। लेकिन रोड द्वीप के अधिकारियों ने प्रदर्शनी लगाने की अनुमति नहीं दी और योजना स्वतः रद्द हो गयी।

परंतु मेरी के हथकंडों की चर्चा सर्वत्र फैल गयी और राजनीतिज्ञों के नाम उसके पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' में ज्यों के त्यों प्रकाशित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गये। मेरी को प्रत्येक ओर से भर्त्सना और उपहास के सिवा कुछ नहीं मिला। अंततः ४ मार्च १८६८ को अनबिके माल के संदूक शिकागो वापस रवाना हो गये और मेरी को दलाली के तौर पर केज को ८२४ डालर चुकाने पड़े।

न्यूयार्क से लौटने के कुछ दिनों बाद मेरी ने एलिजाबेथ को लिखा—'मेरी प्रिय लिजी, मुझे पत्र तो लिखो। तुम्हारे मौन का अर्थ मैं समझ नहीं पा रही हूं।' बेचारी मेरी को क्या मालूम था कि जिस एलिजाबेथ कैकले को उसने राज्याश्रय दिया था, वही कैकले उसके साथ विश्वासघात की तैयारी कर रही है। १८६८ के वसंत में कैकले की आत्म-कथा 'बिहाइंड द सीन्स' (परदे के पीछे) प्रकाशित हुई। कैकले ने इसमें लिंकन दंपति के वे निजी और गोपनीय संवाद दिये थे, जो उसने लुक-छिपकर सुने थे। उसमें मेरी के उस आर्थिक-व्यवहार का भी वर्णन था, जिसे श्रीमती लिंकन अपने पति से छिपाती रही थीं।

पुस्तक की बिक्री तो बहुत अधिक नहीं हुई; परंतु उससे परिचितों के दायरे में मेरी की रही-सही प्रतिष्ठा भी समाप्त हो गयी। साथ ही मेरी भी सोचने लगी कि यदि कैकले विश्वासघात कर सकती है, तो फिर बाकी बचा ही कौन है। मेरी ने इसके बाद न कभी कैकले की चर्चा की और न पत्रों में ही उसका उल्लेख किया।

अब मेरी ने यूरोप में जा बसने का संकल्प कर लिया। पिछले नवंबर में लिंकन की संपत्ति का बटवारा हो चुका था, जिसमें मेरी और उसके प्रत्येक पुत्र को लगभग छत्तीस हजार डालर मिले थे।

सितंबर में बड़े बेटे राबर्ट का विवाह आयोवा के सेनेटर जेम्स हारलन की सुंदर सुशील बेटी यूनिस के साथ हो गया और उसने घर बसा लिया। उसने वकालत शुरू कर दी और वह अच्छी चल निकली। मेरी पर अब केवल टैड की जिम्मेदारी रह गयी। उसने तय किया कि टैड को यूरोप में अच्छी शिक्षा मिल सकेगी और वहां जीवन अमरीका की तरह महंगा भी नहीं है। सबसे बढ़कर वहां वह मानसिक उद्वेग और तनाव से बची रह सकती थी।

मेरी और टैड १ अक्टूबर को सिटी आफ बाल्टिमोर नामक जहाज से रवाना होकर दो सप्ताह पश्चात् जर्मनी के ब्रेमेन बंदरगाह पर उतरे और वहां से वे फ्रैंकफर्ट चले गये। वहां मेरी ने टैड को एक बोर्डिंग हाउस में भरती कर दिया और स्वयं नगर के सबसे फैशनेबल होटल में रहने लगी। अपरिचितों के देश में मेरी मानसिक तनावों से मुक्ति महसूस करने लगी। वह शाही और सामंती परिवारों के साथ घुलती-मिलती थी। अनेक ड्यूक और डचेस होटल में उससे मिलने आते-जाते थे। अपनी पोशाकें सिलवाने के लिए उसने एक पोशाक निर्मात्री की सेवाएं प्राप्त कीं, जो महारानी विक्टोरिया की बेटियों की पोशाकें सीती थी।

मगर यह तिलस्म थोड़े ही दिन रहा और फिर दैनंदिन जीवन की कठोरताएं सामने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आने लगीं। खर्च का भार भी असह्य होता जा रहा था। मेरी ने अपनी आर्थिक कठिनाइयों के निवारण के लिए अनेक अमरीकी राजनीतिज्ञों को पत्र लिखे तथा सेनेट के नाम एक आवेदनपत्र भेजा। उसमें कहा गया था :

'मैं संयुक्त राज्य अमरीका की सेनेट के सामने अत्यंत आदरपूर्वक पेंशन के लिए प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करती हूं। मैं संयुक्त राज्य अमरीका के एक ऐसे राष्ट्रपति की विधवा हूं, जिसका जीवन देश की सेवा में बलिदान हो गया। इस दुःखद विपत्ति ने मेरे स्वास्थ्य को तबाह कर दिया है और अपने चिकित्सकों के परामर्श पर मैं खनिजयुक्त जल के सेवनार्थ और जाड़ों में इटली जाने के इरादे से जर्मनी आयी हूं; किंतु इस समय मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि मैं चिकित्सकों की सलाह का पूरा लाभ उठा सकूं। न मैं पूरी किफायतशारी के बावजूद एक महान राष्ट्र के सर्वोच्च प्रशासक की विधवा की गरिमा के अनुरूप जीवन ही बिता सकती हूं। मेरे पति की मृत्यु पर सारा देश शोकाकुल हुआ है। उनकी सेवाओं और उनकी असमय मृत्यु से—जिसे मैं बलिदान कहूंगी—मुझे लगे आघात की भीषणता को ध्यान में रखकर मैं आपके संमानित सदन के समक्ष यह आवेदनपत्र प्रस्तुत कर रही हूं और आशा करती हूं कि मुझे वार्षिक पेंशन प्रदान की जायेगी, ताकि मेरी आर्थिक चिंताएं कम हो सकें।'

३ मार्च को समनर ने श्रीमती लिंकन के प्रार्थनापत्र पर मतदान की मांग की। मतदान हुआ और २३ मत पक्ष में आये और २७ विपक्ष में। १६ सदस्य मतदान में अनुपस्थित रहे। समनर हार मानने वाला न था, दो दिन बाद उसने स्वयं दूसरा पेंशन-बिल प्रस्तुत किया, जिसमें मेरी को प्रतिवर्ष पांच हजार डालर की पेंशन देने का प्रस्ताव था। विधेयक कांग्रेस के विशेष सत्र में पेश हुआ और समिति को सौंप दिया गया, जहां वह एक वर्ष दबा पड़ा रहा।

इस बीच मेरी दक्षिण फ्रांस और स्काटलैंड में रही। फ्रैंकफर्ट लौटकर उसने दूसरी श्रेणी के एक होटल में डेरा डाला। वहां उसे फिलाडेल्फिया की अपनी पुरानी मित्र सैली ओर्न का पत्र मिला कि मैं शीघ्र ही यूरोप के दौरे के सिलसिले में फ्रैंकफर्ट पहुंच रही हूं। फ्रैंकफर्ट पहुंचने पर श्रीमती ओर्न सीधे मेरी लिंकन के होटल गयी। फिर उसने चार्ल्स समनर को लिखा :

'वेटर के पीछे-पीछे मैं चौथी मंजिल पर पहुंची, वह भी पिछवाड़े के हिस्से में। मेरी लिंकन एक छोटे-से, एक खिड़की वाले मामूली कमरे में थी, जिसमें फर्नीचर के नाम पर लकड़ी की एक मेज भर थी और रोशनी के लिए एक मोमबत्ती जल रही थी, मुझे यह देखकर घोर ग्लानि हुई कि मेरे सहृदय, न्यायप्रिय और सज्जन राष्ट्रपति की पत्नी – चहेती, सिरचढ़ी पत्नी – इस घोर दैन्य में जी रही है। ..... मेरा खून खौल उठा और मेरे हृदय के भीतर एक चीख उठी– मेरे देशवासियो, तुम्हें धिक्कार है। मुझे देखकर श्रीमती लिंकन का हृदय भर आया और उनके आंसुओं ने मेरे हृदय में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब उत्साह नहीं तो कुछ नहीं
दुर्भाग्य
निरन्तर चिन्ता
कार्याधिक्य
जीर्ण अपचन
मानसिक अतिश्रम
आकस्मिक आघात
स्नायुदौर्बल्य के सामान्य लक्षण हैं
अनिद्रा
विस्मृति
मतिभ्रम
उद्विग्नता
मिथ्या भावना
आत्महत्या के विचार
इसके भयंकर परिणाम है

यदि आप स्नायुदौर्बल्य से ग्रसित हैं, तो परामर्श करे

कविराज पं. दुर्गादत्त शर्मा, वैद्य-वाचस्पति

कल्प फार्मेसी

नवरत्न चौक, कपूरथला रोड,
जालंधर

फोन : २४०१ तार : KALPAPHAR

(कृपया पत्र-व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में ही करें ।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐंठन उत्पन्न कर दी। मैं सोचने लगी कि यदि श्रीमती लिंकन के उत्पीड़क और उन पर कीचड़ उछालने वाले लोग उन्हें देखें,तो निश्चय ही उनकी पीड़ा पर संतुष्टि अनुभव करेंगे।'

श्रीमती ओर्न ने मेरी के वाशिंग्टन के मित्रों को, विशेषत: अपने पति को (जो नये राष्ट्रपति ग्रांट के घनिष्ठ मित्र थे) और कांग्रेस के रिपब्लिकन सदस्य अपने भाई चार्ल्स ओ'नील को निरंतर पत्र लिखती रही। इस सारे प्रयास के बावजूद पेंशन-विधेयक समिति में पड़ा रहा।

अंतत: १४ जुलाई १८७० को विधेयक पारित हुआ और उसके अनुसार मेरी लिंकन को तीन हजार डालर की सालाना पेंशन देने का निश्चय हुआ। राष्ट्रपति ग्रांट ने विधेयक पर उसी दिन हस्ताक्षर कर दिये। मेरी को यह सूचना श्रीमती ओर्न के पति जेम्स ओर्न ने तार द्वारा दी, जिसका उत्तर मेरी ने आस्ट्रिया के इन्सब्रुक नामक नगर से भेजा। वहां वह अवकाश मना रही थी।

मेरी की दृष्टि में पेंशन की राशि बहुत कम थी, फिर भी उसे इस बात का संतोष था कि घोर विरोध के बावजूद आखिरकार वह सरकार को झुकाने में सफल हो गयी। यदि वह जान पाती कि उसने आने वाले राष्ट्रपतियों की विधवाओं के लिए एक शुभ परंपरा की नींव डलवायी है, तो वह निश्चय ही गर्व अनुभव करती।

मेरी को अपनी पुत्रवधू से गहरा स्नेह था। उसी स्नेह के आवेश में उसने एक दिन उससे कहा था कि मेरा सब कुछ तुम्हारा है .....ये कपड़े, जेवर और दूसरी सब वस्तुएं—जब जो चाहो इस्तेमाल कर सकती हो। अक्टूबर १८६९ में मेरी दादी बन चुकी थी। राबर्ट ने बेटी का नाम मेरी रखा—अपनी मां के नाम पर। यह खबर पाकर मेरी के मन में ममता जाग उठी और वह घर लौटने का कार्यक्रम बनाने लगी। नवंबर में वह लंदन गयी, मगर वहां सर्दी बहुत कड़ी थी। टैड घर की याद कर रहा था; लेकिन मेरी ने उसे ब्रिक्सटन स्कूल में भरती करा दिया और स्वयं इटली चली गयी। अंतत: वह टैड को लेकर २९ अप्रैल १८७० को लिवरपूल से न्यूयार्क को रवाना हुई।

समुद्र तूफानी था। राम-राम करके मेरी ११ मई को न्यूयार्क पहुंची और वहां से शिकागो, जहां राबर्ट ने वाबाश एवेन्यू पर एक खूबसूरत मकान खरीद लिया था। मेरी बहुत प्रसन्न हुई; मगर आनंद के वातावरण को टैड की अस्वस्थता ने शीघ्र ही अवसाद में बदल लिया। यूरोप और इंग्लैंड की ठंड ने टैड के फेफड़ों में खराबी पैदा कर दी थी और वह धीरे-धीरे प्लूरिसी से ग्रस्त होता चला गया। कुछ दिनों पश्चात् मेरी उसे लेकर क्लिफ्टन वाले घर में चली गयी। परंतु टैड का स्वास्थ्य निरंतर गिरता चला गया और १५ जुलाई को सवेरे साढ़े सात बजे वह अपनी मां और भाई की आंखों के सामने कुर्सी में आगे को लुढ़क गया और उसके प्राण निकल गये। मेरी का मानस पुत्रशोक से उबर तो गया, लेकिन उसकी आंतरिक शक्ति पूरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह चुक गयी।

हर्नडन ने मेरी पर एक और घातक आक्रमण किया। १२ दिसंबर १८७३ को उसने स्प्रिंगफील्ड में लिंकन की स्मृति में आयोजित एक भाषण में कहा कि राष्ट्रपति विधिवत ईसाई नहीं थे। उसने यह भी कहा कि यह बात मुझे स्वयं श्रीमती लिंकन ने १८६६ में एक भेंट में बतायी थी।

इससे मेरी ने बौखलाकर यह सार्वजनिक वक्तव्य जारी कर दिया कि हर्नडन के साथ मेरी कोई भेंट नहीं हुई और हर्नडन जो कुछ बकता-फिरता है वह सरासर झूठ है।

हर्नडन के इस विश्वासघात के बाद मेरी ने आस-पास के वातावरण और हर-एक व्यक्ति को अविश्वास और संदेह की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया वह अपने घोंघे में अधिकाधिक समाती चली गयी, परिवार से भी कटने लगी, सबमें दोष देखने लगी—बेटे और पुत्रवधू में भी।

वह स्थायी तौर पर शिकागो में ही रहती थी; परंतु इलाज की तलाश में बहुधा इधर-उधर निकल जाती थी। इससे चिंतित होकर रावर्ट ने उसकी देखभाल के लिए पूरे समय के लिए एक नर्स रख दी।

मौत ने मेरी को इतना छला था कि अब उसके मानस और चेतना पर हरदम मौत की छाया रहने लगी। उसे लगता कि रावर्ट भी मर जायेगा और इस आशंका ने उसे लगभग विक्षिप्त कर दिया। १२ मार्च १८७५ को वह फ्लोरिडा में थी। वहां से ही उसने रावर्ट के चिकित्सक को तार भेजा—'रावर्ट गंभीर रूप से अस्वस्थ, तुरंत उसे संभालो, मैं शीघ्र पहुंचती हूं।' चिकित्सक रावर्ट के घर गया और उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई की रावर्ट पूर्णतया स्वस्थ है।

मेरी भी शिकागो लौट आयी। बंदरगाह पर रावर्ट ने ही उसका स्वागत किया। उसने मां से प्रार्थना की कि आप मेरे साथ घर पर ही रहें। जब मेरी ने इन्कार कर दिया, तो रावर्ट ने ग्रंड पेसिफिक होटल में दो कमरे किराये पर लिये—एक मेरी के लिए और दूसरा अपने लिए।

होटल में मेरी के मानसिक असंतुलन के लक्षण स्पष्ट उभर आये। अनेक बार वह सोने के वस्त्रों में ही कमरे से निकल कर रावर्ट के कमरे का दरवाजा खटखटाती और कहती कि मुझे सताया और मेरा पीछा किया जा रहा है, तुम मुझे अपने कमरे में सोने दो। एक रोज वह अर्ध-नग्नावस्था में स्वयंचलित सीढ़ी (एस्कालेटर) पर चढ़ गयी। रावर्ट ने होटल के एक कर्मचारी की सहायता से उसे उसके कमरे में ले जाना चाहा, तो वह उनके हाथों से छूटकर चीखने लगी कि रावर्ट मेरी हत्या करने की कोशिश कर रहा है। उसका सिर निरंतर दुखता रहता था और वह कहती थी कि ऐसा लगता है, जैसे कोई मेरी आंखों में से तार खींच रहा है और मस्तिष्क में जलती हुई सूइयां गड़ रही हैं।

मेरी अपनी स्कर्ट की जेब में सत्तावन हजार डालर के सुरक्षा-पत्र लिये घूमती और अनावश्यक चीजें खरीद लाती—छह सौ डालर के झालरदार परदे, साढ़े चार सौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डालर की तीन घड़ियां, सत्रह जोड़ी दस्ताने, तीन दर्जन रूमाल, सात सौ डालर के आभूषण और दो सौ डालर का शृंगार-प्रसाधन आदि। राबर्ट ने एक प्राइवेट गुप्तचर उसके पीछे रहने के लिए तैनात किया, लेकिन यह बेकार सिद्ध हुआ।

अब राबर्ट को लगा कि मां को लंबे समय तक आराम तथा देखभाल की आवश्यकता है और यह भी जरूरी है कि पैसे का नियंत्रण उसके हाथों से ले लिया जाये। इसका एक ही उपाय था कि न्यायालय मेरी को विक्षिप्त घोषित करे। योग्यतम डाक्टरों के परामर्श और गहरे विचार के बाद राबर्ट को यह गंभीर और क्लेशकारी कदम उठाना पड़ा। १८ मई १८७५ को डा. इशम ने प्रमाणपत्र दे दिया –'मैंने विधवा श्रीमती मेरी लिंकन की शारीरिक जांच की तथा मेरी राय है कि वह विक्षिप्त है और अस्पताल में उसकी चिकित्सा की जानी चाहिये।'

अगले दिन कुक काउंटी न्यायालय में राबर्ट के अटार्नी ने प्रार्थनापत्र दिया, राबर्ट की मां मेरी के हित के लिए यह आवश्यक है कि मेरी को चिकित्सा के लिए पागलखाने में भरती किया जाये। सत्रह गवाहों ने पक्ष में वक्तव्य दिये। और यह भी प्रार्थना की गयी कि मेरी की जायदाद का संरक्षक उसके बेटे राबर्ट को बनाया जाये। जूरी ने निर्णय दिया कि मेरी को सरकारी चिकित्सालय में रखा जाये। शीघ्र ही इलिनाय राज्य की कुक काउंटी में पागलों के रजिस्टर में मेरी का नाम चढ़ गया। रजिस्टर में यह उल्लेख मिलता है कि मेरी में आत्महत्या अथवा दूसरों के प्रति हिंसा की प्रवृत्ति के लक्षण नहीं पाये गये।

मेरी न्यायालय की कार्रवाई ध्यान से सुन रही थी। उसे लगा कि यह विश्वासघात तो मेरी कोख से जनमे मेरे ही बेटे ने किया है। इस एहसास ने उसकी जीने की इच्छा नष्ट कर दी। उस शाम को वह अपने सेवकों की आंख बचाकर होटल से निकल गयी और दवाई की दुकानों पर विष खोजती फिरी। एक दुकानदार ने तंग आकर उसे झूठमूठ का विष दे दिया। अगले दिन सवेरे नींद खुलने पर अपने को जिंदा पाकर उसे घोर आश्चर्य हुआ और लगा कि विष में भी विश्वासघात हुआ। उसी दिन राबर्ट ने उसे शिकागो से ३५ मील दूर बटविया में महिलाओं के प्राइवेट सेनेटोरियम बैलेव्यू प्लेस में भरती करा दिया। वहां वह हवादार कमरे में रहती, दूसरों से बेरोकटोक मिलती, गाड़ी पर चढ़कर अथवा पैदल घूमती।

बाहर से शांत दिखने पर भी मेरी भीतर ही भीतर तिलमिलायी हुई थी और वहां से निकलने की योजनाएं बना रही थी। उसे विश्वास हो गया था कि राबर्ट ने कष्ट देने के लिए उसे वहां रखवाया है और वह उसका पैसा हड़पना चाहता है। अतः उसने दूसरों से मदद लेने का निश्चय किया– विशेषतः शिकागो के न्यायाधीश जेम्स ब्रैडवेल और उनकी पत्नी से। श्रीमती ब्रैडवेल इलिनाय की प्रथम महिला वकील थीं। उन्होंने खुलेआम कहना शुरू किया कि बेचारी मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को नाहक कैदी बना दिया गया है। इस मुक्ति-अभियान में मेरी की बहन और बहनोई एडवर्ड दंपति ने भी सहायता दी।

मेरी चार महीने से भी कम समय सेनेटोरियम में रही। इस बीच एडवर्ड और ब्रैडवेल दंपति ने अधिकारियों को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि परीक्षण के तौर पर मेरी को कुछ सप्ताह उसके स्प्रिंगफील्ड वाले मकान में रहने दिया जाये, जहां वह पूरे नौ महीने रही। और अगली सुनवाई में १५ जून १८७६ को न्यायालय ने घोषणा कर दी कि मेरी का मानसिक संतुलन ठीक हो गया है, अतः उसकी संपत्ति का नियंत्रण उसे लौटाया जाता है। मेरी पुनः स्वतंत्र हो गयी।

सेनेटोरियम से लौटने के तीन दिन बाद मेरी ने राबर्ट को एक पत्र लिखा। इसमें संबोधन में केवल राबर्ट टी. लिंकन लिखा था और अंत में हस्ताक्षर थे .....श्रीमती अब्राहम लिंकन। इस पत्र में राबर्ट पर तरह-तरह के आरोप थे, फब्तियां थीं और कहा गया था कि तुम्हारी पत्नी ने मेरी जो वस्तुएं ली हैं, वे सब मुझे लौटाओ; तुमने मुझे लूटने का षड्यंत्र काफी समय तक चलाया है।

अगले एक वर्ष मेरी अपनी बहन के घर पर रही और उसके बाद अपरिचित देश में जाने की दृष्टि से फ्रांसीसी पिरेनीज में पी नामक स्थान को चल पड़ी। जाते समय उसने अपनी संपत्ति का प्रबंध अपने पति के पुराने मित्र जेकब बन के सुपुर्द किया। यूरोप में १८७९ के दिसंबर में वह दीवार पर तस्वीर लटकाते समय स्टूल पर से गिर पड़ी और उसकी रीढ़ में गहरी चोट आ गयी। कोई दस महीने वह बिस्तर में पड़ी रही और अंततः १५ अक्टूबर १८८० को वह अमरीका को रवाना हुई। रास्ते में एक दिन जहाज में सीढ़ियों पर से उतर रही थी कि जहाज को जोर का झटका लगा और वह मुंह के बल गिरने को हुई। तभी किसी ने उसे संभाल लिया।

मेरी को मौत से बचाने वाली महिला थी प्रसिद्ध अभिनेत्री सरा बर्नहार्ट। मेरी ने उसे हृदय से धन्यवाद दिया। मगर जब बर्नहार्ट ने अपना परिचय दिया, तो मेरी अकड़ के साथ बोली कि मैं राष्ट्रपति लिंकन की विधवा हूं, और अवज्ञापूर्वक मुंह फेर लिया, मानो वह कोई बहुत ही निम्नस्तरीय महिला हो।

मगर जहाज जब न्यूयार्क पहुंचा और यात्रियों के उतरने के लिए तख्ता लगाया गया, तो सरा बर्नहार्ट और उसके साथी सबसे पहले उतरे। एक पुलिसमैन ने वृद्धा मेरी का कंधा छूकर कहा कि तुम यहीं खड़ी रहो। मेरी को इससे बहुत दुःख हुआ।

न्यूयार्क से मेरी स्प्रिंगफील्ड गयी और वहां अपनी बहन के घर रहने लगी। वहां वह एक पेटी में पैसा रखकर उसे कमर में बांधे रहती थी। प्रतिदिन वह घंटों तक अपना सामान उलट-पुलटकर देखती रहती। उसका सामान ६४ संदूकों में भरा था।

मई १८८१ में राबर्ट मेरी से मिलने आया। वह अपने साथ अपनी ११ वर्षीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेटी मेरी को भी लेता आया था। यदि रावर्ट अकेला आया होता, तो मेरी उस पर रोष प्रकट करने से न चूकती; लेकिन अपनी नामराशि पोती को देखकर वह शांत पड़ गयी। दूसरी बात यह थी कि रावर्ट अब गारफील्ड (लिंकन के बाद तीसरे राष्ट्रपति) के मंत्रिमंडल में युद्धमंत्री था।

सितंबर १८८१ में राष्ट्रपति गारफील्ड की हत्या कर दी गयी और उसकी विधवा एवं पांच बच्चों के पालन-पोषण के लिए संसद् ने पांच हजार डालर सालाना पेंशन निर्धारित की। पेंशन-कानून में यह व्यवस्था भी की गयी कि राष्ट्रपति लिंकन की विधवा की भी पेंशन बढ़ाकर पांच हजार डालर वार्षिक कर दी जाये। पिछले भुगतान के तौर पर उसे १५,००० डालर अलग से दिये गये। इससे मेरी को प्रसन्नता हुई—जीवन की अंतिम बड़ी प्रसन्नता।

मेरी की रीढ़ का इलाज देश का सबसे बड़ा अस्थि-चिकित्सक कर रहा था; परंतु उसका स्वास्थ्य निरंतर गिरता चला गया। जुलाई के शुरू में उस पर पक्षाघात का आक्रमण हुआ और १५ जुलाई १८८२ को रात के सवा आठ बजे मेरी टाड लिंकन आयुष्य के ६४ वर्ष पूरे करके दिवंगत हो गयी। मरते दम तक वह यही सोचती रही कि मैं बेहद गरीब हूं और किसी भी क्षण रोटियों के लाले पड़ सकते हैं। मगर वह अपने पीछे अपने पति से अधिक धन छोड़कर गयी..... एक लाख डालर और कपड़ों व आभूषणों से भरे ६४ संदूक।

मेरी का ताबूत ठीक उसी जगह रखा गया, जहां चालीस वर्ष पूर्व अब्राहम लिंकन के साथ उसका विवाह संपन्न हुआ था। ह्वेल के तेल का लैंप उसके खुले ताबूत पर रोशनी फेंक रहा था, जिसमें मेरी के ओंठों की मंद मुस्कान और उसकी अंगूठी की धुंधली चमक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। अंगूठी पर ये अक्षर खुदे हुए थे—प्रेम शाश्वत है (लव इज इटरनल)। प्रशस्ति-भाषण पादरी जेम्स रीड ने दिया।

फिर मेरी के शव को ओकरिज कब्रगाह में उसके पति की बगल में सुला दिया गया। काश, कब्र में सोयी मेरी यह जान पाती कि उसकी मृत्यु पर उसका बेटा रावर्ट कितना व्यथित था।

अब्राहम लिंकन की मृत्यु पर मेरी ने लिखा था—'काल का व्यवधान व्यथा को कम नहीं कर पाता। मैं अपने अभाव को कभी नहीं भूल सकूंगी; तब तक नहीं, जब तक कि कब्र की मिट्टी मेरी स्मृतियों को ढांप न ले और मैं फिर से 'उसके' पास पहुंच न जाऊं।' ..... आखिर कब्र ने मेरी को अपने भीतर समो लिया और मेरी अपने अभावों और अभागेपन के एहसास से उबरकर अपने प्रियतम के पास जा पहुंची।

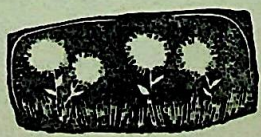

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुराने शब्द नये प्रकाश में

• स्व. हरिभाऊ उपाध्याय •

गांधीजी ने हमें एक नयी चीज दी 'सत्याग्रह', जिसके दो पाये हैं—सत्य और अहिंसा। इस विषय में मेरा जो चिंतन चला, जो कुछ अध्ययन मैंने किया, उसका परिणाम यह है :

सत्य : 'सत्' शब्द से सत्य शब्द बनता है। सत् का अर्थ है—सदा कायम रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो। विश्व में सत् केवल आत्मा, परमेश्वर या चेतन है। इसीलिए सत्य का अर्थ हुआ आत्मतत्त्व, परमेश्वर या चैतन्य। इस अर्थ में सत्य एक 'तत्त्व' हुआ, जिसकी प्राप्ति मनुष्य का ध्येय है।

तत्त्व के अलावा, सत्य एक वृत्ति या गुण भी है, जो सत्य-तत्त्व की प्राप्ति का साधन है। वृत्ति या गुण के रूप में सत्य का अर्थ है—सचाई, ईमानदारी, सरलता, निष्कष्टता..... अर्थात् भीतर-बाहर एक-सा रहना।

सबका भाव एक ही है : सत्य से सत्य को पाना। सत्य (गुण या वृत्ति) के द्वारा सत्य या एकत्व को पाना है। सत्य या आत्मतत्त्व को पाना अपने को जगत् में मिला देना है।

अहिंसा : हिंसा के अभाव को अहिंसा कहते हैं। 'हिंसा' शब्द हन् धातु से बना है, जिसका अर्थ है—हनन या वध करना। परंतु सूक्ष्म अर्थ में किसी के शरीर और मन को कष्ट पहुंचाना भी हिंसा है। अतः 'अहिंसा' का अर्थ हुआ—किसी के शरीर और मन को अपने शरीर या मन-बुद्धि के द्वारा किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचाना।

अहिंसा का उद्भव तो मनुष्य के अपने-अपने सुख, हित या लाभ की कल्पना से ही हुआ प्रतीत होता है; परंतु सहानुभूति, दया, करुणा की भावना ने उसका उच्चतम रूप संसार के सामने रखा।

आरंभ में उन्हीं मनुष्यों या पशुओं की हिंसा क्षम्य या अपरिहार्य समझी गयी थी, जिनसे मनुष्य-समाज को प्रत्यक्ष हानि पहुंचती हो। परंतु जीवदया की भावना ने उन मनुष्यों और पशु-पक्षियों को भी, जो मनुष्य-समाज को हानि पहुंचाते हों, मारना व कष्ट देना अनुचित समझा। यहां आकर अहिंसा लगभग त्रिकालाबाधित धर्म हो गया।

परंतु अहिंसा वास्तव में सत्य की ही अभिव्यक्ति है—वह सत्य से ही उत्पन्न होती है। सत्य का प्रयोग जब दूसरे पर किया जाता है, तो वह अहिंसा बन जाता है। हमसे दूसरे तक पहुंचते हुए हमारे हृदय के प्रेम और मिठास की रासायनिक क्रिया हो जाने से, पुट लग जाने से वह अहिंसा बन जाता है।

इस पुट की आवश्यकता इसलिए भी है कि सत्य जिन साधनों—व्यक्तियों—में से निकलता और जिनमें प्रवेश करता है, वे प्रायः शुद्ध नहीं होते हैं। इसलिए सत्य कहीं तीखा, कहीं कड़वा हो जाता है। सत्य मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय औद्योगिक, विशेषतः यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

डॅगर-फोर्स्ट का उत्पादन

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाना आसान काम नहीं है। उसके लिए एक विशेष प्रकार के टूल

'ब्रोच'

की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहाँ ब्रोच उत्पादन परमावश्यक होता है।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लिमिटेड ने इस आवश्यकता को पूर्ति की है। उनके बनाये ब्रोच का उपयोग कीजिये और लोहे के या किसी भी धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि., थाना (बंबई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेज और तप को चमकाता है, अहिंसा के द्वारा मैं दूसरों को उसके तेज और सत्य की रक्षा का आश्वासन देता हूं। अहिंसक वृत्ति के बिना सत्य-निर्णय असंभव है।

फिर भी सत्य अहिंसा से बड़ा है। अहिंसा एक वृत्ति मात्र है और सत्य एक स्वतंत्र तत्त्व तथा वृत्ति दोनों हैं।

हिंसा का संबंध मनुष्य के मन और शरीर से है—आत्मा से नहीं। आत्मा मरता नहीं, न सुख-दुःख ही पाता है और न कष्ट पाता है। इसलिए आत्मा-संबंधी दलीलों से हिंसा का औचित्य सिद्ध नहीं हो सकता।

स्थूल-सूक्ष्म सब प्रकार की हिंसा दोष है; परंतु यदि मन में हिंसा की भावना न हो और साधारण जीवन-व्यापार करते हुए किसी को कष्ट पहुंच जाये, तो उसका दोष कम हो जाता है। इसी प्रकार किसी अवस्था में यदि किसी को उसके हित, सुख या लाभ की दृष्टि से संकल्पपूर्वक भी कष्ट पहुंचाना पड़े, तो यह दोष नगण्य समझा जा सकता है—जैसे, डाक्टर के किये आपरेशन।

बापू की सलाह से जब बछड़ा मारा गया था, तो जहां तक मुझे याद पड़ता है, बछड़ा मारने की क्रिया को बापू ने तथा कुछ जैन पंडितों ने 'अहिंसा' माना। परंतु मेरी पूर्वोक्त व्याख्या के अनुसार, वह हिंसा तो ठहरती है, किंतु क्षम्य कोटि की हिंसा। भाव-प्रधान लक्ष्य बांधने में एक तो अतिव्याप्ति होती है और दूसरे दुरुपयोग का भय अधिक रहता है। इस दृष्टि से यह व्याख्या, जो कि परिणाम-प्रधान है, व्यवहार में उपयोगी है।

'सत्य' और 'अहिंसा' नये शब्द नहीं हैं। प्राचीन अद्वैत सिद्धांत में वे समाविष्ट हैं। सत्य, अहिंसा आदि प्राचीन तत्त्वों और आदर्शों को ही हम आज एक नवीन अथवा स्वतंत्र प्रकाश में देख रहे हैं। यह प्रगति का लक्षण है।

इसी तरह 'धर्म' और 'नीति' को भी नये प्रकाश में देखना उचित है। मेरे मत में, धर्म और नीति में अंशों का अंतर है। तत्त्व या आदर्श तक पहुंचने के मार्ग को 'धर्म' कहना चाहिये। स्थूलतया हम व्यक्तिगत विकास में बाधक बातों को 'पाप', सामाजिक विकास में बाधक बातों को 'अनीति', और समाज तथा समष्टि के मूल को हानि पहुंचाने वाली बातों को 'अधर्म' कह सकते हैं।

धर्म कोई संप्रदाय नहीं होता। विशिष्ट विचार या आचार की परंपरा को 'संप्रदाय' कह सकते हैं। धर्म सभी संप्रदायों से परे है।

यदि 'एक' से 'अनेक' का विस्तार जगत् है, तो फिर जगत् में की जाने वाली हिंसा, असत्य आदि दोषों का मूल भी उस 'एक' ही में हो सकता है। यदि वह 'एक' ईश्वर है, तो फिर वही 'कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुं' समर्थ हुआ। अब यदि मनुष्य ईश्वरत्व को पहुंच जाये, तो फिर वह क्यों न 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं' समर्थ हो जायेगा? फिर क्या वह जगत् की हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य की व्याख्याओं से परे नहीं हो जायेगा?

क्या मनुष्य का उस अर्थ में ईश्वर बनना शक्य है, जिस अर्थ में हमने ईश्वर को 'कर्तु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ अक्सीर दवाएँ

सर्दी-ज़ुकाम के ज़ोरदार इलाज

रबेक्स में!

रबेक्स एक ऐसे फॉर्म्यूले से बना है जो बंद नाक खोलता है, छाती में जमा बलगम दूर करता है और शरीर में स्फूर्तिभरी गर्माहट लाता है.

सर्दी-जुकाम जब करे हमला, तब मलें रबेक्स.

२० और ६५ ग्राम की शीशियों व ६ ग्राम की डिब्बी में मिलता है.

कॅम्फर–कपूर; नटमेग–जायफल; युकॅलिप्टस–नीलगिरी का तेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकर्तुमन्यथा कर्तुं' समर्थ माना है? ईश्वर के गुण तो मनुष्य में आ सकते हैं; पर क्या वह उसकी तरह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् भी हो सकता है? अब तक तो कोई नहीं हुआ है।

ईश्वर का प्रकाश, उसके कुछ गुण तो कई महात्माओं, महापुरुषों, अवतारी पुरुषों में पाये जाते हैं; परंतु ईश्वर की तरह समस्त सृष्टि की रचना, पालन और संहार करने की शक्ति किसी में नहीं पायी गयी। भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध आदि ने अपने-अपने ढंग से, अपने-अपने क्षेत्रों में अनेक महान चमत्कारी और दैवी कार्य किये हैं; परंतु सृष्टि-रचना जैसा नहीं किया। अतः ईश्वर-स्वरूप होने का अर्थ निर्विकार होने तक ही सीमित मानना चाहिये।

राजा का प्रश्न

तत्त्वज्ञानी कन्फ्यूशस एक बार घूमते-घूमते दूर के एक देश में पहुंचे। वहां के राजा ने तीन पिंजरे उनके सामने रखवा दिये। एक पिंजरे में चूहा था; उसके सामने मेवा-मिष्ठान्नों का ढेर लगा हुआ था, किंतु वह कुछ भी नहीं खा रहा था। दूसरे पिंजरे में बिल्ली थी; उसके सामने दूध-मलाई के कटोरे भरे थे, लेकिन उनमें से एक घूंट भी उसके गले के नीचे नहीं उतरा था। तीसरे पिंजरे में एक बाज था; उसके सामने मांस के ताजे टुकड़े एकदम अनछुए पड़े थे, चोंच तक उसने उन पर नहीं चलायी थी।

कन्फ्यूशस ने यह सब देखा। और अपने शिष्यों से कहा—'भय की महिमा देखी तुमने? चूहा भूखों मर जायेगा, किंतु भावी भय की अपेक्षा उसे आज के भय की सबसे अधिक चिंता है। वह यह नहीं सोचता कि जब आगे-पीछे मरना ही है, तो खाकर ही क्यों न मरें। यही हाल बिल्ली का है। बाज को अपने सामने देखकर उसे हर क्षण अपनी मौत ही नजर आती है। पर बाज की दशा इन दोनों से निराली है। वह कभी चूहे को खाने की सोचता है, तो कभी बिल्ली को। उसकी दृष्टि इन दोनों पर ही अटकी हुई है। उसके सामने जो खाद्य रखा हुआ है, उसे वह इन भावी खाद्यों के सामने उपेक्षित समझ रहा है। यह जीव का स्वभाव है। यदि ये तीनों इसी प्रकार पिंजरों में बंद एक-दूसरे के सामने रखे रहे तो तीनों अंत में भूखे मर जायेंगे।'

फिर कन्फ्यूशस ने अपने शिष्यों का ध्यान राजा की तरफ मोड़ा, कहा—'और इन तीनों से अधिक मूर्ख यह राजा है, जो अपने ज्ञान के अहंकार में दूसरों के ज्ञान की परीक्षा लिया करता है। ऐसे लोगों की गति एक दिन उस सपेरे की-सी होती है, जो अपनी बीन की धुन पर सांपों को नचाता है, किंतु ताल भूलकर एक दिन खुद सांप द्वारा डंस लिया जाता है।'

—जहीर कुरेशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरिक्ष के मेहमान

डा. प्रकाश चंद्र दीक्षित

ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में विचार-भेद, आस्तिकों और नास्तिकों में सिरफोड़ झगड़े, ईश्वर की साकारता-निराकारता के विषय में मतैक्य का अभाव—ये सब तो समझ में आने वाली बातें हैं। किंतु 'ईश्वर अंतरिक्षयात्री था' यह ऐसा कथन है, जो गले के नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेता। किंतु यह परिकल्पना स्विट्जरलैंड के पुरातत्त्ववेत्ता श्री एरिक फान डानिकेन ने वैज्ञानिक भाषा में प्रस्तुत की है।

श्री डानिकेन के मतानुसार, प्रागैतिहासिक काल में बाह्य-अंतरिक्ष से आग उगलते हुए यानों (रथों) में बैठकर अंतरिक्षयात्री (देवता) हमारी पृथ्वी पर आते थे तथा यहां के निरीह आदिमानव से न मालूम कैसे-कैसे सुखद वादे करके चले जाते थे। कौन जाने कि शायद स्वर्ग तथा नरक की कल्पना भी आदि मानव को इन अंतरिक्ष यात्रियों ने ही दी हो !

बड़ी ही सनसनीखेज बातें लिखी हैं श्री फान डानिकेन ने अपनी पुस्तक 'चैरियट्स आफ द गाड्स' में। पुस्तक के छपने के कुछ ही महीनों में केवल जर्मनी में उसकी पांच लाख से अधिक प्रतियां बिक गयीं। संसार की १० प्रमुख भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है।

विज्ञान, इतिहास और पुरातत्त्व के 'प्रतिष्ठित' विद्वान हंस सकते हैं, श्री डानिकेन की स्थापनाओं पर; कट्टर धार्मिक संघटन उनकी पुस्तक की प्रतियों की होली जला सकते हैं। मगर प्रागैतिहासिक काल की अंतरिक्ष-यात्राओं को श्री डानिकेन ने बड़े अधिकार और विश्वास के साथ संसार के सामने रखा है। वस्तुतः इस क्षेत्र में काम करने वाले वे अकेले विद्वान नहीं हैं। उनकी पुस्तक के प्रकाशन के कुछ ही महीने बाद प्राचीन सभ्यताओं तथा भूविज्ञान के विशेषज्ञ डा. पीटर कोलोसिमो ने अपनी पुस्तक 'नाट आफ दिस वर्ल्ड' प्रकाशित की है।

इन दोनों वैज्ञानिक लेखकों ने यहां तक कह डाला है कि ब्रह्मांड के अन्यान्य ग्रहों से आये इन अति प्राचीन अंतरिक्ष-यात्रियों ने मानव-परिवार की स्त्रियों से सहवास करके एक नवीन, चतुर एवं बुद्धिशाली मानव को जन्म दिया, जिसे विज्ञान 'प्राज्ञ मानव' (होमो सेपियन) के नाम से जानता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी परिकल्पना के पक्ष में श्री फान डानिकेन ने अनेक वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण है बर्लिन के राजकीय ग्रंथालय में रखे कुछ नक्शे।

ये नक्शे तुर्की के एक जल-सेनानी पीरी राइस से संबंधित बताये जाते हैं और १८वीं शताब्दी में किन्हीं प्राचीन नक्शों की नकल पर ये तैयार किये गये थे। इनमें भूमध्य सागर तथा मृत समुद्र के आस-पास के क्षेत्र के सारे भौगोलिक ब्योरे विद्यमान हैं।

विस्मय की बात यह है कि ये नक्शे मनुष्य-निर्मित भू-उपग्रहों द्वारा खींचे गये आधुनिकतम नक्शों से बिलकुल मिलते-जुलते हैं। इनमें दक्षिण ध्रुव महाद्वीप की पर्वत-मालाओं का भी चित्र है, जिनका पता हमें केवल १९५२ में चला है। निश्चय ही हमारे पूर्वज इस स्थिति में नहीं थे कि आकाश में उड़कर इतनी ऊंचाई से इस प्रकार के नक्शे बनायें। फिर कैसे बने ये नक्शे ?

अपनी खोज के दौरान श्री फान डानिकेन ने दक्षिण अमरीकी देश पेरू में एंडीज पर्वतमाला के ऊपर भी उड़ान भरी। यहां पाल्पा घाटी में ३७ मील लंबा तथा एक मील चौड़ा एक सपाट मैदान है। डानिकेन ने इस मैदान में अनेक सीधी रेखाएं देखीं, जिनमें से कुछ तो समानांतर रह तथा कई एक दूसरे को काटती हैं। सारा मैदान ऐसे टुकड़ों से भरा पड़ा है, जो जंग लगे लोहे से मिलते-जुलते हैं।

ये रेखाएं वहां किसने बनायीं ? पुरातत्त्व-वेत्ताओं का विचार है कि ये पहले सड़कें थीं, जिन्हें इन्का राजाओं ने बनवाया था। मगर इस प्रकार की सड़कों का उपयोग क्या था ? और वे एकाएक समाप्त क्यों हो जाती हैं ? डानिकेन के अनुसार, ये प्राचीन काल की हवाई पट्टियां थीं।

एंडीज पर्वतमाला के इन स्थलों पर शिलाओं में कांचीकरण (विट्रिफिकेशन) देखा गया है, जो बहुत ऊंचे तापमान पर चट्टानों के पिघलने से ही हो सकता है। ऐसा कांचीकरण गोबी के रेगिस्तान तथा इराक के कतिपय पुरातत्त्वीय स्थलों में भी देखा गया है। आश्चर्य की बात है कि नेवाड

उत्तर इटली में वेल-कामोनिका में अंकित यह प्राचीन चित्र आदिमानव का अंतरिक्ष-यात्रियों से परिचय दरशाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेगिस्तान में परमाणु-बम के विस्फोट से उत्पन्न हुए कांचीकरण से यह कांचीकरण हूबहू मिलता है।

प्रश्न उठता है कि इन प्राचीन स्थानों पर कांचीकरण क्यों कर हुआ ? परमाणु-बम जैसी शक्ति पैदा करने वाले अस्त्रों का प्रयोग उस अंधकारपूर्ण युग में किसने किया ?

कई अरब देशों में—मुख्यतः मिस्र तथा इराक में — मिले कतिपय प्रमाणों से ऐसा अनुमान होता है कि आज से कई हजार वर्ष पूर्व ऐसे रासायनिक पदार्थ तैयार किये गये थे, जिनका निर्माण आज की आधुनिक प्रयोगशालाओं में ही संभव है। बगदाद संग्रहालय में उसी युग की निर्मित तथा गैल्वेनिक सिद्धांत पर चलने वाली ड्राइ-बैटरियां भी रखी हैं।

कौन था वह, जिसे विद्युत् - संबंधी यह सारा ज्ञान था ? किसने बनायी ये सारी चीजें ? ये ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर हमारे पास नहीं है।

डानिकेन को इस शोधकार्य ने न जाने कहां-कहां की खाक छनवायी। कोहिस्तान की एक गुफा में उन्होंने तारों के समूह का एक ऐसा नक्शा देखा, जिसमें उन तारों की आज से दस हजार वर्ष पूर्व की स्थिति ठीक-ठीक अंकित है। हमारे किन पूर्वजों को खगोल-विज्ञान की इतनी जानकारी उस युग में थी कि वे यह नक्शा आंक पाते ?

फ्रांस, उत्तर अमरीका, दक्षिण रोडेशिया, सहारा, पेरू तथा चिली की गुफाओं में मिले अनेक चित्रों से भी यह अनुमान काफी दृढ़ होता जा रहा है कि प्रागैतिहासिक काल में हमारी धरती पर दूर किसी ग्रह से अंतरिक्ष-यात्री आये होंगे।

डानिकेन की पुस्तक प्रकाशित होने के कुछ महीने बाद ही आस्ट्रेलिया में सिडनी के पास एक गुफा में शिला पर खुदा हुआ एक चित्र मिला; वह भी उनकी परिकल्पना की एक मजबूत कड़ी बन गया है। इस चित्र में अंतरिक्ष-सूट एवं शिरस्त्राण से सुसज्जित आधुनिक अंतरिक्ष-यात्री जैसा एक मानव दिखाया गया है। उसके सिर के ऊपर एन्टेना या एरियल की सलाखें भी लगी हुई हैं। मानी हुई बात है कि हजारों साल पहले का धरती का मानव अंतरिक्ष-यात्रियों को बिना देखे ऐसा चित्र बनाने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। फिर उसने यह चित्र क्यों बनाया ? कहां से मिली उसे यह प्रेरणा ?

फान डानिकेन संसार के अनेक धर्मों के ग्रंथों के अध्ययन से भी इस मान्यता पर पहुंचे हैं कि अति प्राचीन काल में अंतरिक्ष-यान पृथ्वी पर आते थे। नाना जातियों में प्रचलित कितनी ही किंवदंतियां भी इसी ओर इंगित करती हैं।

तो ये हैं उन सैकड़ों प्रमाणों में से कुछ-एक जो श्री डानिकेन ने अपने सिद्धांत के प्रतिपादन में प्रस्तुत किये हैं।

डा. पीटर कोलोसिमो ने अपनी पुस्तक में एक अमरीकी व्यापारी का हवाला दिया है। यह आदमी तिब्बत में तुएरिन के एक मठ में लंबी बीमारी के बाद स्वास्थ्य-लाभ कर रहा था। उसी मठ के एक गुप्त सुन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सान स्थान में उसने कतिपय शव देखे। इनमें एक शव ऐसे मानव का था, जिसने अंतरिक्ष-सूट पहन रखा था। इसके कंधे पर सिर की जगह एक गेंद-सरीखा बड़ा गोला था, जिसमें आंखों की जगह दो गोल छेद थे। इन छेदों में से बिजली की तीव्र हरी रोशनी निकल रही थी।

बायें—सहारा में टसिली में मिला एक अत्यंत प्राचीन भित्तिचित्र — अंतरिक्ष से आये मेहमान शायद ऐसी ही पोशाक पहनते रहे हों। दायें — आज का अमरीकी अंतरिक्ष-यात्री।

हैरान और घबराये हुए अमरीकी व्यापारी ने मठ के प्रधान लामा के पास जाकर इस विचित्र शव के बारे में पूछा; किंतु वह उसका कोई स्पष्ट उत्तर न दे सका। लामा ने इतना ही कहा कि हमारे मठ का इतिहास हजारों साल पुराना है। फिर उसने अमरीकी व्यापारी को १ फुट लंबी एक चांदी की मूर्ति दिखायी, जो उस डरावने शव की प्रतिमूर्ति थी। उसमें से भी वैसी ही हरी रोशनी निकल रही थी। लामा के कथनानुसार, यह तारों से आये एक महान देवता की मूर्ति थी।

डा. कोलोसिमो द्वारा प्रस्तुत अन्य तथ्य भी कुछ कम हैरत-अंगेज नहीं हैं। उन्होंने मेक्सिको की मय सभ्यता के किन्हीं खंडहरों में स्थित एक समाधि का जिक्र किया है। इस समाधि के भीतर विमान-जैसी किसी चीज का एक चित्र है, जिसमें मानव से मिलता-जुलता एक यात्री बैठा है। इस यात्री के सिर पर शिरस्त्राण है तथा उसके हाथ कुछ उत्तोलकों (लीवरों) को संभालने में व्यस्त हैं। विमान में से ज्वाला उगलते दो जेट भी चित्र में दिखाये गये हैं।

भूवैज्ञानिक होने के नाते डा. कोलोसिमो ने शिलाओं से भी कुछ तथ्य प्रस्तुत किये हैं। अमरीका के नेवाड़ा राज्य में काऊ केन्यान नामक गहरी पहाड़ी नदी-घाटी की चट्टानों में मानव-जैसे जीव के पैरों के निशान देखे गये हैं। इन शिलाओं की आयु से यह स्पष्ट है कि उनके निर्माण के समय तक तो प्राचीनतम मानव का भी प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। फिर ये पदचिन्ह किसके हैं? नेवाड़ा में ही एक अन्य शिला में पेच (स्क्रू) के निशान देखे गये हैं। यद्यपि यह खोज सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८६९ में हुई, किंतु आज भी वैज्ञानिक इसके संबंध में उतने ही हैरान हैं, जितने कि उस समय थे।

श्री फान डानिकेन तथा डा. कोलोसिमो द्वारा प्रस्तुत एवं अन्य स्रोतों से प्राप्त तथ्यों तथा प्रमाणों से यह विचार दृढ़ता प्राप्त कर रहा है कि पृथ्वी पर मानव के अवतरण के पूर्व तथा उसके प्रारंभिक दिनों में बाह्य अंतरिक्ष से आग उलगते यानों में बैठकर कुछ यात्री आते रहे होंगे। परंतु कौन थे ये अंतरिक्ष-यात्री और वे कहां से आते थे ? —इस प्रश्न का उत्तर अभी तक नहीं मिला है।

कुछ वैज्ञानिकों का विश्वास है कि हमारी आकाशगंगा में ही ऐसे कई हजार ग्रह होने चाहिये, जिनमें मानव-जैसे अथवा उससे भी कहीं अधिक बुद्धिशाली जीव रहते हों। डा. विली ले के अनुसार, आकाशगंगा में ऐसे ग्रहों की संख्या १८ हजार होगी। प्रसिद्ध अंतरिक्ष-जीवविज्ञानी डाक्टर कार्ल सैगन के अनुसार, यह संख्या १० लाख तक हो सकती है। लायकेस्टर विश्वविद्यालय की चिकित्सा-शोध परिषद् के निदेशक डा. स्नीथ की पुस्तक 'प्लेनेट्स एंड लाइफ' में भी इस प्रकार का एक संदर्भ आता है। जिन पर जीवन संभव है ऐसे ग्रहों की संख्या उनके अनुमान से, आकाशगंगा में १ करोड़ २० लाख तक हो सकती है।

यह स्वयंसिद्ध बात है कि किसी भी प्रकार का जीवन केवल वहीं संभव होगा, जहां परिस्थितियां उसके अनुकूल होंगी। इसी तथ्य को आगे बढ़ाते हुए, जैक्सन तथा मूर अपनी पुस्तक 'लाइफ इन द यूनिवर्स' में लिखते हैं — 'ब्रह्मांड में ऐसे अनगिनत लोक होने चाहिये, जिनमें जीवन—अविकसित समुद्री जीवों से लेकर हमसे भी अधिक उन्नत अत्यधिक बुद्धिशाली जीवों तक—के विकास की सभी संभव अवस्थाएं विद्यमान होंगी।'

नवंबर १९७२ में बोस्टन विश्वविद्यालय के खगोल-विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित एक गोष्ठी में भाग लेने वाले सभी विशेषज्ञों का मत था कि हमारी आकाशगंगा में तथा निश्चय ही ब्रह्मांड में मानव-जैसी बुद्धिशाली जाति अकेली हमारी नहीं है।

यह मानते हुए कि हमारी आकाशगंगा में ऐसे १० लाख ग्रह हैं, जिनमें उन्नत सभ्यताएं फलती-फूलती होंगी, प्रो. कार्ल सैगन ने अपने एक लेख 'डाइरेक्ट कान्टैक्ट एमंग गैलेक्टिक सिविलिजेशन्स वाइ रिलेटिविस्टिक इंटरस्टेलर स्पेसफ्लाइट' में लिखा है कि इन ग्रहों के लोग एक दूसरे के यहां लगभग हर हजार वर्ष में आते होंगे और यह संभव है कि अतीत में ये लोग समय-समय पर हमारी पृथ्वी पर आये हों। उनके अनुसार, पृथ्वी के संपूर्ण इतिहास में इस प्रकार की यात्राओं की संख्या दस हजार तक पहुंची होगी।

ग्रीन बैंक की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय रेडियो खगोल-वेधशाला के विज्ञानी डा. फ्रैंक ड्रेक के अपने लेख 'द रेडियो सर्च फार इंटेलिजेंट एक्स्ट्रा-टेरेस्ट्रियल लाइफ' में लिखा है कि पृथ्वी पर आने वाले ये यात्री संपर्क,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधन के प्रथम कदम के रूप में कुछ कला-वस्तुएं छोड़ गये होंगे, जो अध्ययन और विश्लेषण से ऐसी यात्राओं को प्रमाणित कर सकेंगी। श्री फान डानिकेन तथा डा. कोलोसिमो भले ही ये प्रमाणभूत कलावस्तुएं प्रस्तुत न कर सकें हों, किंतु उन्होंने इसके अन्य प्रवल आधार प्रस्तुत किये हैं कि अतीत में अंतरिक्ष-यात्राएं होती रही हैं।

संसार-भर के विभिन्न स्थानों पर कांचीकरण तथा अन्य प्रमाणों को देखकर ऐसा लगता है कि इन अंतरिक्ष-यात्रियों ने पृथ्वी के कई स्थानों पर परमाणु-जैसे किसी विध्वंसकारी अस्त्र का प्रयोग किया होगा। परंतु असहाय और निरीह आदिमानव पर इतने सशक्त अस्त्रों का प्रयोग करने की आवश्यकता इन 'देवताओं' को क्यों पड़ी? उत्तर दे पाना मुश्किल दिखता है।

यदि अंतरिक्ष-यात्री हजारों वर्ष पहले पृथ्वी पर आते थे, तो आज क्यों नहीं आते? क्या वे अब यहां आने की आवश्यकता अनुभव नहीं करते? अथवा क्या यहां आने से डरते हैं? या कि वे आते तो अब भी हैं, परंतु हम उन्हें देख नहीं पाते? क्या अन्य ग्रहों से आने वाले अंतरिक्ष-यात्रियों के साथ उड़नतश्तरियों का रहस्य जुड़ा हुआ है? शायद भविष्य ही यह सब बतायेगा।

किंतु ये सभी तथ्य और प्रश्न अवश्य ही हमें एक निष्कर्ष पर पहुंचाते हैं। जैसा कि 'न्यूयार्क टाइम्स' के विज्ञान-संपादक वाल्टर सलीवन ने अपनी अनूठी पुस्तक 'वी आर नाट एलोन' में लिखा है—'हमारे ब्रह्मांड के विस्तार के आगे भी जीवन है, जिससे हम विमुख नहीं हो सकते। हम अभी तक इस बात पर भी सुनिश्चित नहीं हो सकते कि यह हमारी पहुंच में भी है या नहीं; पर किसी भी स्थिति में, हम सब इसके ही हिस्से हैं। हम अकेले नहीं हैं।'

—जियोलाजी विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़-१४

★

भगवान बुद्ध से भी दो हजार साल पुराने बीज अंकुरित हो उठें, इसकी कल्पना कभी की है आपने? जापान में ठीक यही बात हुई है। जुलाई १९७२ में जापान की अकिटा नगरपालिका के शिक्षा-विभाग की ओर से शिमोसुत्सुमी नामक पुरातत्त्वीय स्थल की खुदाई करायी जा रही थी। वहां एक प्राचीन खड्डे में पानी की मिर्च (स्मार्ट वीड) के २५० बीज मिले। खुदाई में भाग ले रहे एक शोधकर्ता ने ये बीज प्लास्टिक के एक थैले में डाल दिये। तीन दिन बाद उसने देखा कि सौ बीजों में अंकुर फूट गये हैं। उन्हें रोपा गया तो कुछ समय में वे बढ़कर ३०-३० सेंटिमीटर के पौधे बन गये।

आप पूछेंगे बीजों के ४।। हजार वर्ष पुराने होने का क्या प्रमाण? सुनिये। जापान के गाकुशुइन विश्वविद्यालय के विज्ञानी प्रो. कुनिहिको किगोशी ने रेडियो कार्बन विधि से उनकी आयु तय की है। इसमें उन्होंने कार्बनित लकड़ी के तीन टुकड़ों की मदद ली है, जो बीजों के साथ उसी गढ़े में उपलब्ध हुए थे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकास्वादन

*** बिंदु-बिंदु विचार; लेखक : रामानंद दोषी; प्रकाशक : हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नयी दिल्ली; पृष्ठसंख्या: २०५; मूल्य : पंद्रह रुपये।**

लोकप्रिय मासिक 'कादंबिनी' के कवि-संपादक स्व. रामानंद दोषी के अत्यंत लोकप्रिय स्तंभ 'बिंदु-बिंदु विचार' का यह पुस्तकाकार संकलन हिन्दुस्तान टाइम्स लि. ने उनकी स्मृति में प्रकाशित किया है।

श्री दोषीजी ने 'कादंबिनी' का संपादन-भार १९६१ में संभाला। तब से नवंबर १९७१ तक (कुछ माह छोड़कर) इस शीर्षक से छपी उनकी लिखी सामग्री यहां संचित है।

'कादंबिनी' की लोकप्रियता में वृद्धि करने वाले इस स्तंभ की विशेषता थी स्वस्थ वैचारिक दृष्टिकोण तथा सहज और मोहक शैली। इस गद्य में सर्वत्र गीत की काव्यात्मकता, लय और गति है, साथ ही अस्ति से भवितव्य का दिशा-दर्शन है। पर्व, त्योहार या सामयिक घटनाओं के प्रसंग से बात शुरू करके इसमें जो कहा गया है, सार्वकालिक है और अभिव्यक्ति में नवीन है। मुखपृष्ठ और अंदर का विन्यास आकर्षक है। पुस्तक पढ़ने में ही नहीं, संग्रह करने में भी सुखद है।

—डा. विष्णु भटनागर

०००

*** जोगी मत जा; लेखक : विमल मित्र, अनुवादिका: पुष्पा देवड़ा; प्रकाशक: राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; पृष्ठसंख्या : १४८; मूल्य: छह रुपये।**

एक रजवाड़े के अंतःपुर की कहानी और एक संन्यासी का अंतर्द्वंद्व—यही इस उपन्यास का मुख्य विषय है। कथा का नायक दिव्येंदु स्कूली पढ़ाई अधूरी छोड़कर घर से भाग जाता है और देवघर में दीक्षा लेकर संन्यासी सत्यानंद बन जाता है। शिष्य डिग न जाये, इस भय से गुरु उसे भेज देता है सुदूर छत्रगढ़। छत्रगढ़ राज्य की मानसिक विकार से पीड़ित रानी बनारसीवाई अपने आश्रित और वशीभूत पुरुषों पर अत्याचार करती है। किसी के आगे न झुकने वाली बनारसीवाई को स्वामी सत्यानंद का तेज झुका लेता है और वह उसके आगे यह सत्य स्वीकार करती है कि मैं पतिहत्या की अपराधिनी हूं, रक्त देखकर मुझे खुशी होती है। वहीं स्वामी सत्यानंद, जो यह निश्चय कर चुका था कि किसी भी तरह रानी बनारसीवाई को विकारमुक्त करूंगा, हार जाता है और फिर छत्रगढ़ छोड़कर न जाने कहां चला जाता है।

भूमिका में लेखक ने लिखा है कि दिव्येंदु उसके बालसखा अनिल का रूप है, जो बचपन में घर छोड़कर भाग गया था, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'जोगी मत जा' उसी के मुख से सुनी उसकी रामकहानी है। विमल मित्र की अपनी विशेष शैली है, जो उपन्यास की रोचकता को शुरू से अंत तक बनाये रहती है। पुष्पा देवड़ा ने मूल बंगला से हिन्दी में अच्छा अनुवाद किया है। —सुरेश सिन्हा

ooo

*** कालिदास-कृत ऋतुसंहार; अनुवादक : रांगेय राघव; प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली—६; पृष्ठसंख्या: १३२; मूल्य: पचीस रुपये।**

'ऋतुसंहार' के अभी तक जितने अनुवाद निकले हैं, उन सबमें रणजित सीताराम पंडित का अनुवाद अंग्रेजी में बहुत अच्छा था। श्री रांगेय राघव (जो अमृत राय के प्रगतिशील कैंप के प्रधान कवि थे !) का अनुवाद बहुत ही सुंदर है। हिन्दी के अनुवादों में तो शायद यह सर्वश्रेष्ठ ही हो और अंग्रेजी में भी बुरा नहीं है, हालांकि पंडित के अनुवाद से आगे नहीं बढ़ा है।

सबसे अखरने वाली चीज है — चित्र ! मैं रांगेय राघव को काफी निकट से जानता था। उन्हें यह मुगालता था कि वे अच्छे चित्रकार हैं। उनके बनाये जो चित्र इसमें छपे हैं, वे स्कूल के किसी बच्चे की ड्राइंग-बुक में से फाड़े हुए लगते हैं।

अनुवाद हिन्दी का बहुत संगीतमय है और कालिदास की मूलभाषा का सौंदर्य उसमें है।

ooo

*** एकांत; कवि : नेमिचंद्र जैन; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली; पृष्ठसंख्या : १२८; मूल्य : दस रुपये।**

तारसप्तक वाले ग्रुप के कवि श्री नेमिचंद्र जैन का यह पहला कविता-संग्रह है। कवर के परिचय पर उन्हें 'चौथे दशक के उत्तरार्ध में कविता की नयी दिशाएं खोजने वालों में अन्यतम' कहा गया है। एक मजेदार बात है कि 'तारसप्तक' के कवियों में से सिवा उसकी मूल प्रेरणा वात्स्यायन के सभी कवि ठंडे हो गये—चाहे वे पहले अंक के नेमिचंद्र जैन या रामविलास शर्मा हों, या बाद के अंक के केदारनाथ सिंह हों ! अवश्य ही वे लोग अपने नेता श्री वात्स्यायन के गुरुत्व से दब गये। जो भी हो !

इस संग्रह की समीक्षा करने का अधिकार उसी दशक के किसी कवि को मिलना चाहिये। फिर भी पुस्तक से कतराना मुश्किल है। कुछ कहने का साहस भी कम है। नमूनों से बात कहूं तो ठीक रहेगा। १९४१ से १९४४ तक का ढंग — 'अब न तुम गाओ सुमुखि, छवि के प्रणय के गान / आज जब चीत्कार से हैं त्रस्त जग के प्राण !' फिर १९४५ की रचनाओं में कुछ तो जनता की हिमायत की है—'हम तुम भी होंगे सहयोगी/ इस जीने में/ इस लड़ने में। प्राणों की पीड़ा-प्रसूत सक्षम रचना में।' सतही तौर पर स्टाक-सिचुएशन —'बाप उनका था मील का मजदूर जो कि कल हो गया शिकार एक गोली का / अमन और शांति के रखवालों की अहिंसा का/हां तो, बच्चे यह बदनसीब हैं।' कुछ और कविताएं नये ढंग से छोटी बनी हैं— 'बेसुरे इस कंठ से, प्रिय, गान क्या होगा ?/

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंतल

बालों की जड़ों तक असर करता है

A ZANDU PRODUCT

यह आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से तैयार किया हुआ तेल है जो खोपड़ी की त्वचा व बालों को पौष्टिकता प्रदान करता है

लम्बे, सुहाने, सशक्त, सदाबहार बालों का राज है कुंतल! कुंतल असरकारक आयुर्वेदिक औषधियों के विख्यात उत्पादक झण्डु द्वारा खास तौर से जड़ी-बूटियों से तैयार किया हुआ तेल है। कुंतल धीरे धीरे बालों की जड़ों की गहराई तक पहुँच कर असर करता है। आपको फौरन बड़ा चैन और आराम महसूस होने लगता है। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, सच पूछिए तो पूरे परिवार के लिए सर्वश्रेष्ठ केश तेल है–कुंतल!

हर जगह मिलता है

झण्डु फार्मास्यूटिकल वर्क्स लिमिटेड बम्बई-२५

J BROTHERS/72/HM

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, सदाबहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियों पर चाँदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

सदाबहार ताक़त के लिए
(पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग अलग टिकियाँ)
हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड लंदन-बर्लिन का उत्पादन
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहां मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD., 12 Gunbow Street, P.O. Box No 396, BOMBAY-1.

अब तुम्हारे प्रेम का प्रतिदान क्या होगा ?' फिर १९५१ की इस ढंग की कविताएं हैं – 'मोरा कहीं बोला / बदरिया झुक आयी / घिरी घनघोर / जिया डोला / मोरा कहीं बोला !' [यह उस दशक के नेता का भी ढंग है। अज्ञेयजी की कविताएं हैं–'मैं तेरा हूं, तू मेरा है / कैसा यह प्रेम घनेरा है।' (चिंता)] पृष्ठ ११० के बाद की कविताएं 'मुक्ति की कटार', 'सहसा यह क्या ?' 'पंचमढ़ी की एक शाम', 'एकांत', 'ओस', 'जो हम नहीं हैं', 'प्रस्तुत', 'हर निमिष वरण है,' 'वसंत की दो कविताएं'–इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ पठनीय कविताएं हैं; क्योंकि ' तारसप्तक ' वाला अंदाज और 'अज्ञेय' का प्रभाव – स्टेटमेंट देना, भाषा का अनगढ़पन – (अज्ञेय की कविता 'अचरज'– 'छोटे किंतु द्वित्व में इतने सुंदर – जग-हिय ईर्ष्या से भर जावे !) छायावादी प्रतीक–बाद की कविताओं में नहीं हैं। पृष्ठ ११० के बाद की कविताएं जिस नेमिचंद्र जैन का प्रतिनिधित्व करती हैं, उसकी और-और कविताएं पढ़ने को पाठक उत्सुक होगा।

जो कवि 'तारसप्तक' के थे, उनमें अब सिर्फ मुक्तिबोध को माना जाने लगा है; क्योंकि मरे हुए कवि से कोई खतरा नहीं। वह जिंदा अखाड़ेबाजों के लिए चुनौती नहीं बन सकता।

ooo

*** मानववाद और साहित्य; लेखक : नवलकिशोर; प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : २०८; मूल्य : बीस रुपये।**

उदयपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के प्राध्यापक श्री नवलकिशोर ने नयी आलोचना में अच्छा नाम कमाया है। मानववाद और साहित्य' उनकी बहुत मेहनत से लिखी हुई पुस्तक है। हिन्दी में वास्तव में इस ढंग का काम कम हुआ है, और होना चाहिये। पुस्तक 'समकालीन मानववादी चिंतन और साहित्यिक प्रतिबद्धता' का अध्ययन है। मगर एक दिक्कत हिन्दी के उस पाठक को हो सकती है, जो अंग्रेजी नहीं जानता। मानववाद राजनैतिक रूप में तो एम. एन. राय, महात्मा गांधी आदि में लिया गया है, मगर – और यह बहुत बड़ा मगर है – भारतीय साहित्य को प्रायः नहीं ही लिया गया। हिन्दी की तो बात अलग है, अंग्रेजी में लिखित भारतीय साहित्य की भी उपेक्षा की गयी है। इससे दो समस्याएं खड़ी होती हैं। एक तो यह कि यदि मानववाद का हिन्दुस्तान में कुछ असर या अभिव्यक्ति है, तो साहित्य में उसका प्रमाण क्यों नहीं है ? निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि साहित्य में भी मानववाद खूब ही है, मगर लेखक के पास जगह कम है। तो सवाल पूछा जा सकता है कि यदि यूरोपीय लेखकों को कम किया जाता और तरह दी जाती हिन्दुस्तानी लेखकों को, तो क्या हर्ज था ? जवाब हो सकता है कि लेखक का क्षेत्र प्रधानतः यूरोप है। मगर ऐसा कुछ शीर्षक में, भूमिका में, या अन्यत्र नहीं कहा गया है। वास्तव में यह एक बहुत ही परिचित स्थिति है–हम लोग स्वयं अपने समकालीन साहित्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर रायें देने से डरते हैं। मैंने लगभग तीन या चार प्रसिद्ध कवियों से पूछा था एक बार—'आपकी राय में आपके अलावा और तीन कवि कौन प्रधान समझे जायें?' वे लोग या तो चुप कर गये. या मजाक में बात उड़ा गये, या उन्होंने साफ-साफ कहा—'इस प्रश्न से मुझे बचाइये!'

दूसरी समस्या यह है कि पुस्तक को किस जगह से हम साहित्यिक आलोचना मानें? इसमें विषय (कंटेंट) पर जोर है और 'फार्म' को छोड़ दिया गया है। यदि किसी लेखक में बहुत सामाजिक दायित्व है, तो यह क्या अपने आपमें पर्याप्त है? और यदि कोई बहुत ही भावपूर्ण कविता लिखता है मगर उसमें तथाकथित सामाजिक दायित्व नहीं है, तो क्या वह घटिया कवि है? क्या टी. एस. एलियट ने राजा का समर्थन किया तो वह बुरा कवि, और मायाकोव्स्की ने लेनिन का समर्थन किया तो वह अच्छा कवि है? पुस्तक उन पाठकों के लिए उपादेय है, जो अंग्रेजी नहीं जानते। —अनंत कुमार पाषाण

०००

*** अरुणरामायण; प्रणेता : पोद्दार रामावतार 'अरुण'; प्रकाशक : किरण कुंज प्रकाशन, समस्तीपुर, बिहार; पृष्ठसंख्या: ६५०; मूल्य : बीस रुपये, पंद्रह रुपये।**

भारतीय भावभूमि पर आधुनिकता का प्रभाव लिये हुए राम-कथा की यह रचना सब मिलाकर सुंदर है। घी का लड्डू टेढ़ा-मेढ़ा कैसा भी बना हो, स्वादिष्ट ही होगा। कुछ ऐसी ही बात इस ग्रंथ के साथ भी है। भारतीय परंपरा में ग्रंथकार अपने नाम के प्रकाशन का लोभ सहर्ष संवरण कर लेता था। आलोच्य कवि ऐसा नहीं कर सका। 'रामावतार' नाम रखकर दोनों बातें बड़ी कुशलता से सध जातीं। इसी प्रकार आरंभ की वंदना में भक्तिभावपूर्ण प्रणति के स्थान पर जय की शुभकामना भी आधुनिक है।

कथाक्रम का आधार अधिकांशतः रामचरितमानस ही है। प्रायः वार्ताएं भी वैसी ही हैं। 'मानस' पर आधारित प्रसंग तो निश्चय ही रसमय बन पड़े हैं; किंतु जहां कहीं कवि ने अपनी कल्पना-क्रीड़ा की है, वहां दो - एक को छोड़कर शेष सभी स्थल अस्वाभाविक एवं असंगत लगते हैं। एक उदाहरण है, बचपन में ही राम का एक वर्ष तक वन-भ्रमण और लौटने पर विराग की तीव्र भावना। यह भगवान बुद्ध की कथा का स्मरण दिलाती है। ऐसी दशा में वैरागी राम के जनक की पुष्पवाटिका में सीता से मधुर मिलन का प्रसंग कहां तक न्यायसंगत होगा?

कवि की प्रतिभा के दर्शन भी कहीं-कहीं अवश्य होते हैं। आरंभ में चारों भाइयों की बालसुलभ क्रीड़ा का बड़ा ही सुंदर वर्णन है। वसिष्ठ के द्वारा विश्वामित्र की प्रशंसा बड़ी भावपूर्ण है। विशाला-मिथिला आदि स्थानों का प्राकृतिक चित्रण अत्यंत मनोहारी तथा विस्तृत है, जिससे कवि का प्रकृति से निकट का संपर्क प्रकट होता है। राम-वन-गमन का प्रसंग करुण एवं रसमग्न करने वाला है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि ने कविता को कोमल और दर्शन को कठोर कहकर अपनी काव्योचित मान्यता का परिचय दिया है।

है सिरिस-कोमला सीता, प्रण प्रस्तर कठोर।
कविता ज्यों एक ओर, दर्शन ज्यों एक ओर।।

विवाह के बाद अयोध्या के वर्णन में आर्य संस्कृति की निर्मल सुखद झांकी मिलती है। राम को युवराज बनाने के पहले रात्रि में दशरथ कैकेयी के पास बड़ी उमंग से जाते हैं और कुछ भी मांग लेने के लिए कहते हैं। वहां **'मेरे शासन की बची हुई एक रात'** इस एक पंक्ति से कवि ने दशरथ के अनेक मनोभावों को व्यक्त कर दिया है।

वर्णनों में कहीं-कहीं ग्राम्यता है, यथा :

कुड़कुड़ा रहे हैं लोग तिलौरी को कड़-कड़।
वे सुरुक रहे हैं सकरौरी को अब सर-सर।।

इसी प्रकार तत्सम शब्दावली के बीच फारसी के शब्द भी खटकते हैं। कुछ विचित्र पद-प्रयोग भी हैं, जैसे :

अवसर आने पर भाग्य गुलाल उड़ाता है।
केसर-कस्तूरी का प्रिय रंग पड़ाता है।।

—चंद्रशेखर पांडेय

ooo

*** भारत विरुद्ध इंग्लैंड (१९७२-७३); लेखक : सुशीलकुमार दोषी; प्रकाशक : विक्टरी पब्लिकेशन्स, १३२, जावरा कंपाउंड, इंदौर-१; पृष्ठ संख्या : ११८; मूल्य : पांच रुपये।**

मंसूर अली पटौदी उर्फ नवाब पटौदी के शब्दों में 'क्रिकेट का खेल देखने में सुंदर है। खेलने में वह जितना आनंददायी है, उस पर लिखना भी उतना ही आसान है; बल्कि कहानी लिखने से क्रिकेट की समीक्षा लिखना आसान है।' कह नहीं सकता कि हिन्दी के युवा क्रीड़ा-लेखक और कामेंटेटर सुशील कुमार दोषी ने कभी कहानी लिखने की कोशिश की है या नहीं; पर इस पुस्तक से जाहिर होता है कि क्रिकेट-कथा लिखने में वे माहिर हैं। छोटे-छोटे वाक्यों में उन्होंने इंग्लैंड के क्रिकेट - दल के भारत आगमन की जो जानकारी प्रस्तुत की है, वह बहुत रोचक है। दिल्ली में हुए प्रथम टेस्ट के लिए भारतीय क्रिकेट-दल के चयन के सिलसिले में उनके लेखन की जरा बानगी देखिये—'यों कागज पर भारतीय दल अपेक्षाकृत श्रेष्ठ लगता था, पर मैदानी संघर्ष में कागजी घोड़े सदैव सत्य कहां उतरते हैं?' बात छोटी-सी है, पर है मार्के की। और इस दौरे के हर मैच के वर्णन में यह खूबी है।

पहले टेस्ट का परिणाम—'इस तरह वेस्ट इंडीज व इंग्लैंड में टेस्ट शृंखला में विजयी रहने के बाद भारत अपने ही मैदान पर ताश के पत्तों की तरह ढह गया।' ..... 'और हां, इंग्लैंड के इस दल को द्वितीय श्रेणी का संबोधित करने वाले बुद्धिमान समालोचक अब ढूंढ़े नहीं मिल रहे थे।'

सुधीर वैद्य द्वारा प्रस्तुत परिशिष्ट 'टेस्ट क्रिकेट की कहानी : आंकड़ों की जबानी' जुड़ जाने से पुस्तक बहुमूल्य हो गयी है। पाठक को इस पुस्तक में न केवल कथा का मजा आयेगा, बल्कि जानकारी का भरपूर खजाना मिलेगा। —प्रमोद शंकर भट्ट

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

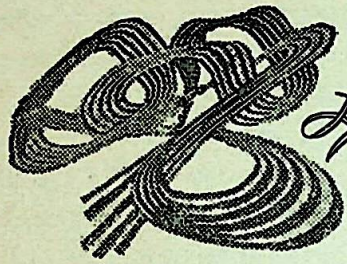

मन के आवर्त-विवर्त

विमलेंदु श्रीवास्तव

क्या आप अपने बच्चों से चिढ़ते हैं? सवाल ऐसा है कि कोई सहज ही इसका उत्तर हां में नहीं देगा। मगर अपने बच्चों से मां-बाप का चिढ़ना कोई अस्वाभाविक बात नहीं, न विरली बात ही है।

हमारा मन बहुत चालाक होता है। वह हमारी अनेक कमजोरियों और खामियों को हमसे छिपाये रखता है। मगर ये दोष हमारे व्यवहार में, हमारे शब्दों और सलूक में प्रकट हो ही जाते हैं।

अतः निम्नलिखित प्रश्नावली से अपने आपको जांच लीजिये कि कहीं अपने बच्चों से आप चिढ़ते तो नहीं। क्योंकि यदि सचमुच आपके मन में चिढ़ का ऐसा भाव है, तो न आप उन्हें समझ पायेंगे, न वे आपको समझ पायेंगे और परिणाम होगा—दो पीढ़ियों के बीच भयानक खाई।

हां तो इन बीस सवालों को पढ़िये और प्रत्येक प्रश्न के साथ दिये क, ख, ग, घ में से जो आपका उत्तर हो उस पर सही का चिन्ह बना दीजिये। क=बहुधा; ख=कभी-कभी; ग=बहुत कम; घ=कभी नहीं।

१. क्या आप बच्चों पर बरस पड़ते हैं? क,ख,ग,घ

२. क्या आप अपने बच्चों को दूसरों के बच्चों से घटिया जताते हैं? क,ख,ग,घ

३. क्या आप अपने बच्चों में एक को दूसरे से घटिया जताते हैं? क,ख,ग,घ

४. क्या आप अपने बच्चों को कृतघ्न समझते हैं? क,ख,ग,घ

५. क्या आप अपने बच्चों की अपने बचपन से तुलना करके उन्हें घटिया जताते हैं? क,ख,ग,घ

६. क्या आप महसूस करते हैं कि आपके बच्चे आगे चलकर मुसीबत में पड़ेंगे? क,ख,ग,घ

७. क्या आप जानते हैं कि आपके बच्चे पैसे की कीमत नहीं जानते? क,ख,ग,घ

८. क्या पैसों और चीज-वस्तु के बारे में अपने बच्चों का गंभीरताहीन रवैया आपको अखरता है? क,ख,ग,घ

९. क्या आप का खयाल है कि घर और स्कूल में आपके बच्चे पर्याप्त मेहनत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं करते ? क,ख,ग,घ

१०. क्या आपको विश्वास हो गया है कि आप जिन चीजों को महत्त्वपूर्ण समझते हैं, उन्हें आपके बच्चे गंभीरता से नहीं लेते ? क,ख,ग,घ

११. क्या आपको लगता है कि कक्षा में बहुत मामूली अंक, खेल, फिसड्डीपन आदि जिन चीजों से बचपन में लज्जा अनुभव करते, उनमें भी आपके बच्चे सहज ही तृप्त हो जाते हैं ? क,ख,ग,घ

१२. क्या आप महसूस करते हैं कि आपके बच्चे जिस तरह आपको जवाब देते हैं, वैसा जवाब आपके माता-पिता हर्गिज बर्दाश्त न करते ? क,ख,ग,घ

१३. क्या आपको महसूस होता है कि आपके बच्चे भौतिक चीजों की जरूरत से ज्यादा कद्र करते हैं ? क,ख,ग,घ

१४. क्या आपको लगता है कि मां-बाप या पति-पत्नी बनकर आपने कुछ गंवाया है ? क,ख,ग,घ

१५. क्या बच्चों के साथ आपकी बातचीत में गर्मी और तनाव आ जाता है ? क,ख,ग,घ

१६. क्या बच्चों के साथ बातचीत में आप अस्वस्थता अनुभव करते हैं ? उनके उत्तरों का बुरा मान जाते हैं ? क, ख, ग, घ

१७. क्या आपको अपने बच्चों पर शरम आती है ? क, ख, ग, घ

१८. क्या आप अपने बच्चों के व्यवहार के लिए मित्रों और रिश्तेदारों से क्षमा मांगा करते हैं ? क, ख, ग, घ

१९. क्या आप अनुभव करते हैं कि आपके बच्चे नजरचोर और डरपोक हैं ? क, ख, ग, घ

२०. क्या आपका खयाल है कि आपके बच्चे गैरजिम्मेदार हैं। क, ख, ग, घ

अगर आपके सोलह या अधिक उत्तर घ में हैं, तो हमारी बधाई स्वीकार कीजिये। निश्चय ही अपने बच्चों को अपनी बात समझाने और उनकी बात और भावनाओं को समझने में आपको कष्ट नहीं होगा, और पीढ़ियों की खाई का विवाद भी आपके घर नहीं उठेगा।

अगर आपके सोलह या अधिक उत्तर ग में हैं, तो आपको अपने बच्चों के साथ अपने संबंधों के विषय में बहुत चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। बच्चे भी जानते हैं कि आप भी मानव हैं, कभी-कभी आपका चिढ़ जाना स्वाभाविक है।

अगर आपके सोलह या अधिक उत्तर ख में हैं, तो आपको चिंता करनी चाहिये। निश्चय ही माता या पिता के रूप में आपमें काफी कमजोरी है, उसे दूर करने का प्रयत्न कीजिये।

अगर आपके सोलह या अधिक उत्तर क में हैं, तो हमें आपके बच्चों से गहरी सहानुभूति है। निश्चय ही वे अधिक अच्छे माता-पिता पाने के अधिकारी हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारें...

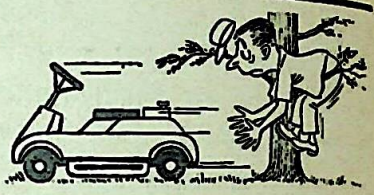

स्वयंचलित

प्रेमेंदु प्रकाश माथुर

स्वयंचलित घड़ियों और कंप्यूटरों के बारे में आप सुनते रहे हैं। अतः स्वयंचलित कारों की बात सुनकर आपको चौंकने की आवश्यकता नहीं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, स्वयंचलित कारें बिना किसी चालक के स्वयं एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाती हैं। इंग्लैंड की 'रोड रिसर्च लैबोरेटरी' इस प्रकार की कारों का प्रदर्शन भी कर चुकी है।

स्वयंचलित कार बनाने का प्रयोग सर्वप्रथम अमरीका की जनरल मोटर्स ने १९५० ई. के लगभग प्रारंभ किया। लगभग दस वर्ष बाद इंग्लैंड की 'रोड रिसर्च लैबोरेटरी' में भी प्रयोग आरंभ हुए। स्वीडन की एक प्रयोगशाला में भी प्रयोग किये गये हैं। आशा है, सन २००० तक इस प्रकार की कारें कुछ देशों में काफी प्रचलित हो जायेंगी। बड़े पैमाने पर इनके उत्पादन की कोशिश भी चल रही है। भारत में इस दिशा में कोई प्रयोग-परीक्षण प्रारंभ नहीं किये गये हैं।

स्वयंचलित कारों को सड़क पर चलाने में मुख्य समस्या है उन्हें उचित स्थान पर मोड़ने तथा रोकने की। कार को पार्श्वनियंत्रित करने के लिए जरूरी है कि कार की पार्श्व स्थितिज त्रुटि ज्ञात हो। इसके लिए कार में एक प्रकार के तंत्र की व्यवस्था है, जिससे कार के अगले पहियों के मुड़ने का कोण ज्ञात हो जाता है।

कारों की स्थिति संबंधी त्रुटि की गणना करने के लिए कारों के मार्ग के मध्य में एक केवल गड़ा रहता है, जिसे 'मार्गदर्शक केबल' कहते हैं। इसमें एक प्रकार की एकांतर धारा बारंबार बहती है। केबलों का एक निश्चित चुंबकीय क्षेत्र होता है, जो कार के अगले भाग में लगायी गयी दो कुंडलियों में विद्युत उत्पन्न कर देता है; उसका विस्तार कर लिया जाता है, ताकि कार के स्थितिज दोष का पता लग सके। इस दोष का संकेत एक सरल इलेक्ट्रानिक धारा-मंडल देता है, जिससे स्थिति में आवश्यक परिवर्तन की दर अथवा आवश्यकतानुसार अगले पहिये के मुड़ने का कोण ज्ञात हो जाता है।

अगले पहिये के वास्तविक कोण की गणना 'पोटेन्शियोमीटर' द्वारा होती है, जो 'स्टीयरिंग' के पास लगा रहता है। इसी उपकरण की सहायता से पहिये को आवश्यकतानुसार मोड़ने का संकेत ज्ञात हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोड रिसर्च लैबोरेटरी द्वारा प्रदर्शनार्थ बनायी गयी स्वयंचलित कार में अत्यधिक दाबयुक्त इलेक्ट्रोहाइड्रोलिक तंत्र लगा है। यह कार के संतोषजनक कार्य करने में सहायक है; परंतु काफी महंगा भी है। इसी तंत्र की बदौलत कार १३० कि. मी. प्रति-घंटा की चाल से सुरक्षित चलायी जा सकती है। देखा गया है कि स्वयंचलित तंत्र मानवीय चालक की अपेक्षा लगभग १०० गुना अधिक विश्वसनीय होता है।

स्वयंचलित कारों को बड़े पैमाने पर बनाने में भी यह तंत्र काफी खर्चीला पड़ेगा; पर अनुमान है कार का संपूर्ण पार्श्वभाग रेडियोयुक्त आधुनिक कारों से शायद कुछ कम व्यय पर बन जायेगा।

स्वयंचलित कारों को अनुदैर्घ्य (लांगिटयूडिनल) रूप में नियंत्रित करने के लिए कारों में रोकने तथा गति प्रदान करने का तंत्र अत्यंत विश्वसनीय होता है। और गति प्रदान करने के लिए 'इलेक्ट्रोवैक्यूअम गति-दायक' प्रयुक्त होते हैं। अनुसंधानकर्ताओं का विश्वास है कि रेलगाड़ी को रोकने के लिए प्रयुक्त तंत्र का प्रयोग करके इन कारों की कीमत कम की जा सकेगी।

कई स्वयंचलित कारों को एक साथ पास-पास सुरक्षित चलाना काफी कठिन परंतु मनोरंजक कार्य होगा। इसके लिए कई विधियां प्रस्तावित की गयी हैं, जिनमें 'यात्री बालटी' तथा 'मार्गदर्शक का पीछा' नामक तंत्र उल्लेखनीय हैं। 'यात्री बालटी' विधि चौराहों, मोड़ों पर काफी लाभप्रद है; परंतु उसमें हानि यह है कि जब आगे चल रही कार खराब हो जाये, तो पीछे से आती कार उससे टकरा सकती है। इससे बचने के लिए कारों में समुचित दूरी आवश्यक है। लेसर किरणें, प्रकाशित दूरीमापक, राडार तथा पराश्रव्य यंत्र कारों के बीच में दूरी तथा बराबर वेग बनाये रख सकते हैं। प्रकाशित तथा पराश्रव्य युक्तियां खराब मौसम में काफी दूर देख नहीं सकतीं। इसलिए राडार से प्रयोग किये जा रहे हैं।

इसके विपरीत 'मार्गदर्शक का पीछा' तंत्र में सभी कारें अपने आगे चल रही कार के पीछे चलती हैं तथा विशेष उपकरणों द्वारा उनके बीच में एक निश्चित दूरी बनी रहती है। कारों में एक सहयोगी क्रमिक नियंत्रण तंत्र होता है, जिसके कारण कारों में अथवा मार्ग पर किसी प्रकार के विशेष उपकरणों की आवश्यकता नहीं है।

एक ही सड़क पर स्वयंचलित व साधारण कारों दोनों का चलना कठिन है। स्वयंचलित यातायात के लिए पैदल यात्रियों, साइकल चालकों तथा अन्य साधारण वाहनों से अवरोध उत्पन्न नहीं होना चाहिये। ऐसे भी प्रयोग चल रहे हैं कि मोटरों, कारों तथा ट्रकों के मालिक अपनी मोटरगाड़ी में स्वयंचलित तंत्र भी लगवा लें, ताकि वह गाड़ी आवश्यकतानुसार स्वयंचलित या चालक द्वारा चलायी जा सके।

स्वयंचलित कारों व मोटरों के व्यापक प्रचलन में कई वर्ष लग जायेंगे। इंग्लैंड की रोड रिसर्च लैबोरेटरी का अनुमान है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनसाधारण को पुसानेवाले दाम पर आकर्षक चमक-दमक देनेवाला एकमात्र पेण्ट

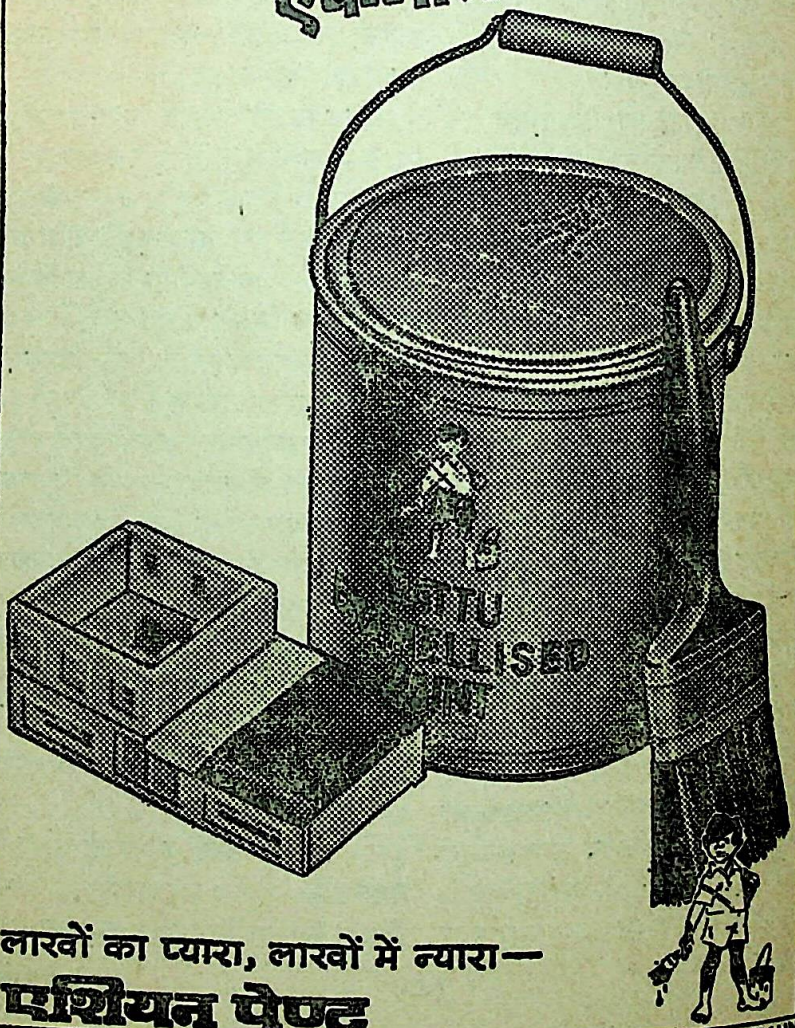

लाखों का प्यारा, लाखों में न्यारा—

एशियन पेण्ट

AIYARS-AG2.396HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस शतक की समाप्ति तक इंग्लैंड में इनकी संख्या काफी अधिक हो जायेगी।

स्वयंचलित वाहनों से कई लाभ होंगे। ये रात्रि में केवल एक ही चालक द्वारा माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने में काफी सहायक होंगे, तथा माल कम समय में ही दूसरे स्थान पर पहुंचाया जा सकेगा। फलस्वरूप दिन में सड़कों पर यातायात कम हो सकेगा। सड़क-दुर्घटनाएं भी काफी कम हो जायेंगी; क्योंकि सड़कों पर मोटर-दुर्घटनाओं में लगभग ७५ प्रतिशत मृत्यु तथा गंभीर चोटें मनुष्य की त्रुटि के कारण होती हैं।

—द्वारा डा. ओ.पी. माथुर, के.ई. हास्टल, कमच्छा, वाराणसी-१.

गरीबी हटाओ

देश में नारा लगा—गरीबी हटाओ। ऊपर से नीचे तक अफसरों को आदेश मिले—गरीबी हटाओ। जिला-अधिकारी ने तहसीलों में आदेश भेजा—फौरन गरीबी हटाओ। तहसीलदार ने अपने नायब को आदेश दिया — फौरन रिपोर्ट दीजिये कि तहसील में ऐसे लोगों की संख्या कितनी है, जो गरीबों की श्रेणी में आते हैं; यह भी बतायें कि उनकी प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह आमदनी क्या है। नायब तहसीलदार से कानूनगो और कानूनगो से लेखपाल तक यही आदेश पहुंच गया। आदेश पाकर और देकर वे सब इस अहम काम से छुट्टी पा गये। कुछ माह बाद रिमाइन्डर का क्रम आरंभ हुआ। सभी अफसरों ने अपने नीचे वालों से जवाब-तलब किया। धीरे-धीरे कार्रवाई होने लगी।

नायब तहसीलदार ने अपनी रिपोर्ट दी—तहसील में लगभग दो सौ व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें गरीबों की श्रेणी में रखा जा सकता है। उनकी अनुमानित आय प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह १५ रुपये है।

तहसीलदार ने नायब को बुलाकर कड़ी हिदायत दी—'देखिये, इन दो सौ व्यक्तियों को महीने-भर के भीतर इतना परेशान किया जाये कि इनमें से कम से कम सौ-सवा सौ तंग आकर तहसील छोड़कर चले जायें। बस, प्रतिव्यक्ति माहवार आय २० रु. हो जायेगी।' अपने साहब की बुद्धिमत्ता पर नायब चकित रह गया।

दूसरे दिन तहसीलदार ने जिला-अधिकारी को अपनी रिपोर्ट भेज दी, जिसका सार यह था कि तहसील में गरीबी हटाने का कार्य पूरी लगन तथा मुस्तैदी से किया जा रहा है। अभी तक यहां के गरीबों की अनुमानित आय लगभग १५ रु. रही है। अपने प्रयत्नों के आधार पर हमें पूर्ण विश्वास है कि एक माह के अंदर-अंदर उनकी अनुमानित आय लगभग २० रु. प्रतिव्यक्ति हो जायेगी।

—आलोक मेहरोत्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
काशी, वाराणसी

शिक्षा

शिक्षा हर एक के लिए नितांत आवश्यक है—
आपके बच्चे के लिए और कन्या के लिए भी!

परन्तु ऊँची शिक्षा चाहे वह डाक्टरी हो, इंजीनियरी हो या तकनीकी—इतनी महँगी होती जा रही है कि बगैर योजना के आपके मनसूबे धरे-के-धरे रह जाते हैं। आज के स्पर्धा-संघर्ष के युग में ऊँची शिक्षा सफलता का एक साधन जैसी है। आप अपने लाड़लों के लिए, जीवन बीमा के जरिये, ऊँची शिक्षा का प्रबन्ध कर सकते हैं।

यदि आपने अभी तक ऐसा प्रबन्ध न किया हो, तो आज ही कर लीजिए। समय के साथ चलना समय को पहचानना है।

योगक्षेमं वहाम्यहम्

शिक्षा और सुख का अनुपम साधन—जीवन बीमा!

B-LIC-8

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप बांस पर कपास नहीं उपजा सकते!

SOBHAGYA. GR7A HN

हम भी यह नहीं दावा करते कि बांस के ऊपर कपास उपजाया जा सकता है। फिर भी हम दूसरा श्रेष्ठतम काम कर रहे हैं। हम बांस को कपास के रेशे जैसा बनाते हैं। ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर जैसा कि हम इसे कहते हैं, बिल्कुल प्राकृतिक कपास जैसे है। जब इसे कपास में मिला दिया जाता है तो इससे जो वस्त्र बनता है वह हमेशा नया आकर्षक और अधिक चमकदार होता है। ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर कपास मिश्रण से बने कपड़े स्पर्श, रख रखाव तथा अलंकरण में बेहतर हैं। ये अधिक टिकाऊ [illegible] धोने में सुगम हैं और आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह खर्चीला भी क[illegible]। इसलिए आप जब भी कपड़ा खरीदें तब मांगिये—

ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर–मिश्रित कपड़ा

अधिक विवरण के लिए लिखिये:
ग्वालियर रेयान सिल्क मैन्युफैक्चरिंग (विविंग) कम्पनी लिमिटेड, नागदा (म.प्र.)
आज आवश्यकता है ग्रेसिम स्टेप्ल फाइबर के मिश्रण की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१-१-१९७४) मूल्य रु. २-०० Regd. No. BYW 31

प्रोपॅक

साल्टीज

आपके स्वास्थ्य के लिए
आवश्यक शक्तिदायक बिस्किट

प्रोपॅक : वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया
३-गुना शक्तिदायक बिस्किट

★ दूध व ग्लुकोज— त्वरित शक्ति
★ सोया व मूंगफली—
रगपुट्ठों की मजबूती के लिए प्रोटीन
★ विटामिन, लोह व कैल्शियम—
स्वस्थ रक्त और मजबूत हड्डियों के लिए

प्रोपॅक
साल्टीज

स्वास्थ्य के लिए आवश्यक
प्रोटीन से भरपूर

युनिकेम का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक ...२०१८...
दिनांक .....

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी
आगत क्रमांक ...२५३९...
दिनांक .....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri